मवाइज़
मौलाना तारिक़ जमील साहब
तर्तीब
मुहम्मद अरसलान बिन अख़्तर
Maktab_e_Ashraf

मवाइज़

मौलाना तारिक़ जमील साहब

तर्तीब

मुहम्मद अरसलान बिन अख़्तर

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

मवाइज़ मौलाना तारिक़ जमील साहब
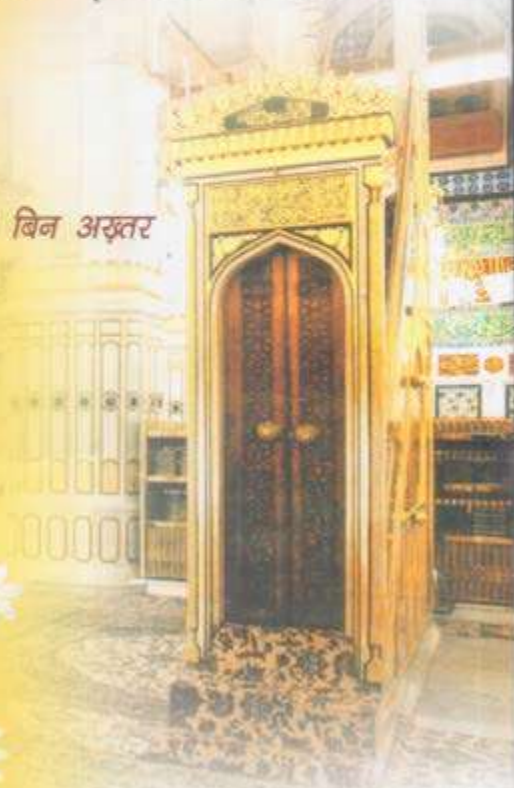
तर्तीबः मुहम्मद अरसलान बिन अख़्तर

प्रथम संस्करणः 2007

पृष्ठः 660

मुल्यः 175/-

प्रस्तुत-कर्ताः
जनाब मुहम्मद नासिर ख़ान

प्रकाशकः

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street,
Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-110002
Tel.: 011-23247075, 23289786, 23289159 Fax: 23279998
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in www.faridexport.com, faridbook.com

Mavaiz Maulana Tariq Jameel Sahab

Muhammad Arslan bin Akhtar

Ist Edition: **2007**

Price: **Rs. 175/-**

Price: 660

Composed at: QAYAM GRAPHICS, Delhi-13 Ph. 65851762, 9990438635

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

विषय-सूची

अल्लाह की तख़्लीक़ पर ग़ौर करने की दावत

○ ○ ○

अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर का हुक्म

O O O

इत्तिबाए सुन्नत

O O O

अल्लाह तआला की अज़्मत

○ ○ ○

अल्लाह तआ़ला की तारीफ़

○ ○ ○

अल्लाह के अपने बन्दों पर इनाम

○ ○ ○

अल्लाह की बड़ाई और तौबा

○ ○ ○

हिदायत अल्लाह के हाथ में है

O O O

निज़ामे काएनात

○ ○ ○

दुनिया की नेमतें

O O O

शाने ख़ुदावन्दी

O O O

काएनात के अजाइबात

○ ○ ○

अल्लाह की बादशाहत

○ ○ ○

हमारी पैदाइश का मक़्सद

○ ○ ○

इस्मे मुहम्मद

○ ○ ○

दुनिया आज़माइश की जगह है

O O O

जन्नत के हसीन नज़ारे और अंबिया के वाक़िआत

अल्लाह की तख़्लीक़ पर ग़ौर करने की दावत

मेरे भाइयों और दोस्तों! अल्लाह तआ़ला ने इस जहां को बेकार पैदा नहीं फ़रमाया। ﴿ما خلقنا السموت والارض وما بينهما باطلا﴾ तो यह सारा जहां बेकार नहीं है और फिर कहा ﴿ما خلقنا السموت والارض وما بينهما لاعبين﴾ जो कुछ बनाया है वह कोई खेल तमाशा भी नहीं है बेकार भी नहीं खेल तमाशा भी नहीं। यह हमारे चारों तरफ़ के माहौल के बारे में फ़रमाया, फिर हमारे बारे में फ़रमाया ﴿افحسبتم انما خلقنكم عبثا﴾ तुम्हारा क्या ख़्याल है कि तुम बेकार पैदा हुए हो, कोई मक़्सद सामने नहीं, खाना पीना और बस मर जाना यही ज़िन्दगी है फिर दूसरी जगह फ़रमाया ﴿ايحسب الانسان ان يترك سدى﴾ क्या ख़्याल करता है इंसान कि उसको कोई नहीं पूछेगा। ﴿يترك سدى﴾ ऐसे छोड़ दिया जाएगा। कोई नहीं पूछने वाला। ﴿ايحسب الانسان ان يترك سدى﴾ क्या ख़्याल है उसको कोई पूछेगा नहीं क्या मर कर मिट्टी हो जाएगा। ﴿الم يك نطفة من منى يمنى﴾ वह ज़माना याद नहीं जब तुम टपकता हुआ गंदे पानी का क़तरा थे। ﴿ثم كان علقة فخلق فسوى﴾ फिर मैंने उसको एक लोथड़ा बनाकर इंसान बनाया ﴿فجعل منه الزوجين الذكر والانثى﴾ फिर किसी को मर्द बनाया और किसी को औरत बनाया, किसी पर तजल्ली पड़ी तो लड़का बन गया किसी पर तजल्ली पड़ी तो लड़की बन गई। यह पिछली बात को अल्लाह तआ़ला

आगे समझा रहा है कि क्या तुम बेकार पैदा किए गये हो, क्या तुम्हें कोई नहीं पूछेगा जो मर्ज़ी करते रहो कोई पूछने वाला नहीं, अब अल्लाह तआला उसको तर्तीबवार समझा रहे हैं कि एक ज़माना तुम पर वह था कि जब तुम मनी थे और उससे भी पहले का एक ज़माना है ﴿لم يكن شيئا مذكورا﴾ कि जब तुम कुछ भी न थे फिर उससे अगला ज़माना कि जब तुम्हें अल्लाह ने वजूद बख़्शा तो उसको अल्लाह बता रहे हैं कि एक ख़ून का क़तरा, एक मनी का क़तरा, फिर उस पर अल्लाह की तजल्ली पड़ी, अल्लाह का अम्र मुतवज्जोह हुआ और तीन अंधेरों के अन्दर यह परवरिश का निज़ाम चला। ﴿ثم كان علقة فخلق فسوى﴾ फिर ठीक ठाक बनाया। ﴿فجعل منه الزوجين الذكر والانثى﴾ फिर तुम्हें मर्द ओर औरत बनाया। अब अगली बात जो पिछले से अल्लाह तआला से मुताल्लिक़ करके कह रहा है ﴿اليس ذالك بقدر على ان يحى الموتى﴾ तो क्या यह सब कुछ करने वाले को यह ताक़त नहीं है कि तुमको दोबारा ज़िन्दा कर दे तुम जब मर जाओगे तो तुमको दोबारा ज़िन्दा कर दे क्या उसको यह ताक़त नहीं है ﴿اليس ذالك﴾ क्या उसको क़ुदरत नहीं है? इसके जवाब में ﴿بلى﴾ कहना ठीक है। कोई यह आयत पढ़े ﴿اليس ذالك بقدر على ان يحى الموتى﴾ तो जवाब में कहना चाहिए ﴿بلى، بلى﴾ का मतलब है कि बेशक क़ादिर है कि सब मुर्दों को ज़िन्दा कर देगा तो अल्लाह तआला ने यह जहां न बेकार बनाया, न बातिल बनाया, न खेल कूद के लिए बनाया, फिर हमें भी न बेकार बनाया, न हमें छोड़ दिया कि जो मर्ज़ी करो, न बिल्कुल आज़ादाना इख़्तियार दिया है, ख़बर दी है। ﴿وما تيسبن الله غافلا عملا يعمل الظالمون﴾ तुम्हारे ज़ुल्म से तुम्हारा रब ग़ाफ़िल नहीं है, ज़ालिम

ज़ुल्म कर रहा है कोई पकड़ता नहीं, क्या इस अंधेरे में कोई है। नहीं नहीं इस अंधेरे में कोई नहीं है, दुनिया और आख़िरत सुनसान हो रहा है लेकिन देखने वाला देख रहा है और हमें ख़बर सुना दी है कि ज़ालिम को बताओ कि तुमसे भी बड़ा एक है जो तुम्हें देख रहा है। एक दिन तेरी गर्दन मरोड़ देगा, सारे कस बल निकल जाएंगे फिर इंसान जो कुछ अमाल करता है उन सबकी अल्लाह ख़बर दे रहा है।

अल्लाह तआ़ला से कोई चीज़ भी छिपी हुई नहीं:

कमरे में बन्द हो गया, कुन्डियां लगा दीं, पर्दे लगा दिए कि अब तो कोई नहीं देख रहा, ऐसा तो कोई नहीं देख रहा, अब उसको अल्लाह ने ख़बर दी ﴿ما يكون من النجوى الا هو رابعهم﴾ तुम तीन बेठे हुए हो, तो चौथा अल्लाह है ﴿ولا خمسة الا هو سادسهم﴾ तुम पांच हो तो छठा अल्लाह है ﴿ولا ادنى من ذالك﴾ इससे थोड़े हो चार-पांच तीन-दो, एक ﴿ولا اكثر﴾ पाँच-पाँच हज़ार हों ﴿الا هو معهم أين ما كانو﴾ तुम्हारा रब तुम्हारे साथ है। ﴿ثم ينبئهم بما عملوا﴾ फिर जो कुछ तुमने किया एक दिन तुम्हें दिखा देगा कि यह क्या था तुम से फिर अल्लाह तआ़ला कह रहे हैं ﴿واسروا قولكم﴾ आहिस्ता बोलो ﴿او اجهروا به﴾ ज़ोर से बोलो ﴿انه عليم بذات الصدور﴾ वह तुम्हारे दिल के अन्दर को भी जानता है। ﴿ونعلم ما توسوس به نفسه﴾ कुछ बातें ऐसी हैं जो आदमी अपने दिल ही दिल में करता है जिसको वह खुद भी नहीं सुनता न उसके कान सुनते हैं तो पराया कैसे सुनेगा। वह जो खुद नहीं सुन रहा उसको हदीसुन नफ़्स भी कहते हैं और इसको इख़्फ़ा कहते है। अल्लाह तआ़ला यह कह रहे हैं कि यह जो तुम अपने दिल में अपने

आप से बातें करते हो मैं उसको भी सुनता हूँ, अब अल्लाह से कोई बात कैसे छुपे। ख़्याल में भी नज़र यूँ उठी या यूँ उठी कि फ़रिश्तों को भी पता नहीं चलता कि यह बद-नज़र है या अच्छी नज़र है या बुराई की नज़र से देखा या नेक नज़र से देखा किसी को इज़्ज़त से देखा, किसी भी चीज़ को देखा, फ़रिश्तों को भी पता नहीं चलता, ज़ेहन में जो बातें घूम जाती हैं जिसके साथ चालाक बनते हैं अल्लाह तआ़ला उसको अलग समझ रहा है। ﴿يعلم خائنة الاعين﴾ कि तुम्हारी नज़र ग़लत हुई, तेरे रब ने उसको भी देख लिया। ﴿وما تخفي الصدور﴾ नज़र के ग़लत होने से दिल में ग़लत ख़्याल आया, उसको भी अल्लाह ने देख लिया और पकड़ लिया जो कुछ इंसान कर रहा है ﴿ويعلم ما جرحتم بالنهار﴾ दिन में जो कुछ तुम करते हो अल्लाह जानता है सिर्फ़ दिन में करने को नहीं रात को नहीं ﴿سواء منكن من اسر القول ومن جهر به ومن هو مستخف باليل وسارب بالنهاره له معقبات منبين يديه منه يحفظونه من امر الله﴾ कि यह नहीं कि रौशनी होगी तो अल्लाह को पता चलेगा या लाउड़ स्पीकर का ऐलान होगा तो अल्लाह को पता चलेगा। अल्लाह तआ़ला यह नहीं फ़रमा रहे कि तुम ज़ोर से बोलो तुम आहिस्ता बोलो बल्कि अल्लाह ने वह सबकुछ सुना जो तुमने दिन में कहा अल्लाह ने वह सब कुछ देखा जो तुमने रात को किया अल्लाह ने देखा ﴿مستخف باليل﴾ रात तो छिपी हुई है ﴿وسارب بالنهار﴾ दिन में कर रहा है अल्लाह पाक के यहाँ रात का अंधेरा और दिन की रौशनी बराबर है। अल्लाह तआ़ला के लिए अंदर कमरे में आदमी अकेला और एक लाख की भीड़ बराबर है, अल्लाह के लिए समुन्दर के नीचे की दुनिया और अर्श की दुनिया ऊपर और नीचे बराबर है, जैसे वह जिब्रील को देख रहा है उसी तरह

इस ज़मीन पर चलने वाली च्यूंटियों को भी देख रहा है और वह जिब्रील, इस्राफ़ील, मीकाईल की भी सुनता है और समुन्दर में तैरने वाली मछलियों की भी सुनता है और वह अपनी जन्नत को अपने सामने देख रहा है उसके सामने दूर दराज़ और क़रीब बराबर है बल्कि दूर क़रीब कुछ नहीं सारा ही क़रीब है, वह अपनी ज़ात में इतना दूर है कि ﴿لا يراه العيون﴾ कि आँखें नहीं देख सकतीं फिर आँख तो बस यहां तक देखती है ﴿لا تخالطه الظنون﴾ कि आदमी ख़्याल करे या तसव्वुर करे फिर उसको भगाए, दौड़ाए। अल्लाह तआ़ला यही कहता है कि तुम्हारा ख़्याल भी अल्लाह तक नहीं पहुंच सकता, भई जब अल्लाह इतना दूर हो गया तो काम कैसे बनेगा तो यूँ इर्शाद फ़रमाया उसका ऊपर होना उसे तुमने दूर नहीं करता ﴿نحن اقرب اليه من حبل الوريد﴾ वह तुम्हारी शहे रग से ज़्यादा तुम्हारे क़रीब है। तो सारा जहां उसके सामने बराबर है। ज़ालिम ज़ुल्म कर रहा है, मज़्लूम ज़ुल्म सह रहा है, आदिल अदल कर रहा है और ज़ालिम ज़ुल्म कर रहा है, दियानत दार दियानत से चल रहा है, बद-दियानत बद-दियानती कर रहा है, सच्चा सच बोल रहा है, झूठा झूठ बोल रहा है, ज़ानी ज़िना कर रहा है, पाकदामन अपनी इज़्ज़त के साथ चल रहा है, हराम खाने वाला हराम में चल रहा है, हलाल खाने वाला अपनी ज़रूरतों में पिस रहा है।

अल्लाह की शान:

सब अल्लाह देख रहा है क्यों (उसे) ﴿لا تاخذه سنة﴾ न ऊंघ है ﴿ولا نوم﴾ न सोना ﴿ولا غافل﴾ और न ग़ाफ़िल ﴿ولا جاهل﴾ और न जाहिल ﴿لا يعزب عنه مثقال ذرة﴾ एक ज़र्रा उससे छिप नहीं सकता,

एक लम्हे के लिए वह आराम नहीं करता, करवट बदले न पहलू बदले, मश्रिक़-मग़रिब उसके लिए बराबर, शुमाल-जुनूब बराबर, ऊंचे-नीचे बराबर, माज़ी-हाल बराबर और आने वाला कल बराबर, अर्श और फ़र्श बराबर, उसके लिए सब बराबर है, न वह खाने का मोहताज है और न पीने का मोहताज, और न सोने का मोहताज, न थके, न सोए न रोए, न आराम करे, न करवट बदले, न पहलू, न रुख़ बदले, वह न आँखें झपकाए, न बन्द करे, न वह ग़ाफ़िल हो, सारी काएनात को एक पल में इस तरह देखे जैसे अपने अर्श को देखे, अपनी मख़्लूक़ को देखे और अर्श फ़र्श लोहो क़लम कुर्सी और सात समुन्दर, सात ज़मीनें, सारे जंगल, सारे दरिया, सारे पहाड़, सारे इंसान, सारे चरिन्द-परिन्द, चौपाए, रेंगने वाले, उड़ने वाले तेरने वाले, सब उसके सामने खुली किताब की तरह हैं और न वह उन सब से एक पल के लिए ग़ाफ़िल है, न जाहिल है, न आजिज़ है, न थकता है, न अंगड़ाई लेता है कि बहुत थक गया हो, हर चीज़ से पाक, सुब्हान बे-ऐब, बे-ऐब भी पूरा तर्जुमा नहीं है, सुब्हान, सुब्हान ही है। सुब्हान हर ऐब से पाक, हर ज़ोफ़ से पाक, हर कमी से पाक, हर सिफ़्त में कामिल, बड़ाई में कामिल, क़ुव्वत में कामिल, जबरूत में कामिल, हैबत में कामिल, क़ुदरत में कामिल, मुल्क में कामिल, शहंशाहियत में कामिल, महाल्बियत में कामिल, मग़्फ़िरत में कामिल, फ़ख़्र में कामिल, आज़ादी में कामिल, बख़्शिश में कामिल, देने में कामिल, इल्म में कामिल, क़ुव्वत में कामिल, हर कमाल अल्लाह पर जाके ख़तम होता है उसके आगे कोई कमाल नहीं तो यह सारा जहां बेकार बनाकर बैठा हुआ है, ज़ालिम ज़ुल्म कर रहा है, ज़ानी ज़िना कर रहा है और शराबी शराब पी रहा है और सियासतदान मुल्क

को लूट रहे हैं तो क्या यह सारा तमाशा अल्लाह तआ़ला देख रहा है और चुप बैठा हुआ है, नहीं ऐसा नहीं है ख़बर आई है।

क़ियामत की हौलनाकीः

﴿ان يوم الفصل كان ميقاتا يوم ينفخ فى الصور فتاتون افواجا وفتحت السماء فكانت ابوابا وسيرت الجبال فكانت سرابا﴾ ख़बर आई है ﴿ان يوم الفصل ميقاتهم اجمعين. يوم لا يغنى مولىً عن مولىً شيئا ولا هم ينصرون﴾ अल्लाह के रसूल ने ख़बर दी क्या ख़बर आई कि मेरे हबीब आप इनको बताएं एक दिन फ़ैसले का तुम्हारे रब ने मुक़र्रर कर दिया है, एक लाइन खींच दी है इससे न आगे होगा और न इससे पीछे होगा, एक लाईन है वह एक दिन है ऐसा ही एक दिन है जैसा यह दिन चढ़ता है एक दिन है जो ज़मीन को हिला देगा अल्लाह का फ़ैसला बदल जाएगा ﴿ما ينظرون الا صيحة واحدة تاخذهم وهم يخصمون فلا يستطيعون توصية ولا الى اهلهم يرجعون﴾ एक चीख़ सुनने वाला यही सुनेगा, सारा जहां पाकिस्तान, पंजाब, बलूचिस्तान, अमरीका, मलेशिया, अफ़्रीक़ा, ऐशिया, आस्ट्रेलिया, यूरोप, रूस, जब आवाज़ तेज़ होगी तो माँए अपने दूध पीते बच्चे उठाकर फैंक देंगी। ﴿يوم ترونها تذهل كل مذمعة عما ارضعت﴾ अल्लाह तआला कहता है, दूध पीता बच्चा, दूध पीता बच्चा क्यों कहा है कि यह ज़्यादा प्यारा लगता है जो बड़ा हो जाता है वह भी प्यारा होता है लेकिन वह वक़्त जो माँ की गोद में हो वह ज़्यादा दिल से क़रीब होता है और जब वह आवाज़ तेज़ होगी और फिर दीवारें हिलने जुलने लगेंगी और पेड़ गिरने लगेंगे और पहाड़ उड़ने लगेंगे तो उस वक़्त मांए अपने बच्चे उठाकर फैंक देंगी और हर रूह कहेगी कि मेरी जान बच जाए चाहे मेरा बच्चा ग़ाइब हो जाए,

माँ, बाप, भाई, बहन, दोस्त, अलग। ﴿فاذا جاءت الطامة الكبرى﴾ अल्लाह कह रहा है वह बहुत बड़ा शौर होगा कितना बड़ा शौर होगा उसको अल्लाह बता रहा है बहुत बड़ा शौर होगा, अल्लाह अकबर ﴿فاذا جاءت الصاخة﴾ जब वह चीख़ आएगी तो वह नाफ़रमान वक़्त गुज़ारने के साथ साथ सब भूल रहा है मगर उसका अमल महफ़ूज़ हो रहा है, अदल हो रहा है, ऊपर महफ़ूज़ हो रहा है, नमाज़ पढ़ी जा रही है, ऊपर महफ़ूज़ है, नमाज़ छोड़ी जा रही है ऊपर महफ़ूज़ हो रहा है रोज़े रखे जा रहे हैं या छोड़े जा रहे हैं, हलाल कमाया जा रहा है हराम कमाया जा रहा है सब ऊपर महफ़ूज़ हो रहा है, सिस्टम मौजूद और तैयार है, अब एक दिन आया जब यह निज़ाम अल्लाह ने तोड़ा, सूरज टूटा ﴿اذا الشمس كورت﴾ सितारे टूटे ﴿واذا النجوم انكدرة﴾ चाँद टूटा ﴿وانشق القمر﴾ ज़मीन फटी ﴿اذا زلزلت الارض زلزالها، واذا الارض مدت والقت ما فيها وتخلت﴾ पहाड़ उड़ गए ﴿ربى نفسا﴾ समुन्दर में आग लग गई ﴿واذا البحار فجرت﴾ और आसमान टूटा ﴿واذا السماء انفطرت﴾ सितारे बिखर गए ﴿واذا الكواكب انتثرت﴾ इंसान पतंगों की तरह उड़ गए ﴿وتكون الجبال كالعهن المنفوش﴾ पहाड़ हो गए रूई के गालों की तरह, इंसान हो गए ﴿كالفراش المبثوث﴾ पतंगे उड़ते हुए परवानों की तरह यह अल्लाह के नबी की ख़बर हम तक आई है कि यह दिन मौजूद है और वह दिन आने वाला है। यह सोचने की जगह नहीं है दस आदमी का क़ातिल जिसको दस क़तल के बदले में दस बार क़तल करना चाहिए वह सिर्फ़ एक बार फांसी चढ़ता है और मर कर ख़तम हो जाता है अब नौ का बदला कैसे लिए जाए, नही ले सकते और जो आदमी माल लूटता है फिर खुद ही फ़क़ीर हो जाता है अब उससे माल वापस

कैसे लिया जाए, सज़ा की जगह जज़ा तो हुई आगे गिनें आप, अल्लाह ने ज़मीन तोड़ी, फिर आसमान तोड़ा, फिर इंसान मारे, फिर फ़रिश्तों को मारा फिर काएनात के ज़र्रे-ज़र्रे को मौत दे दी, जिब्रील, मीकाईल को कहा कि मर जाओ तो अल्लाह का अर्श भी कांप गया, सिफ़ारशी बन गया ऐ अल्लाह जिब्रील मीकाईल को तो छोड़ दो, फिर अल्लाह का ऐलान हुआ उस वक़्त ﴿فقد كتبت الموت على من كان تحت العرش﴾ मेरे अर्श के नीच कोई ज़िन्दा नहीं रह सका सबको मरना है ﴿لو كانت الدنيا تدوم لواحد لكان رسول الله فيها مخلداً﴾ अगर दुनिया में किसी को बाक़ी रहना होता तो अल्लाह का हबीब होता जो क़ियामत तक बाक़ी रहता, अल्लाह ने उसको भी मौत का प्याला पिला दिया फिर जिब्रील, मीकाईल फिर इस्राफ़ील वह सूर फूंकने वाला भी गया और सूर उसका अर्श पर लगा फिर अर्श के फ़रिश्ते भी गए फिर ऊपर अल्लाह नीचे अर्श। फिर अल्लाह फ़रमाएंगे तू भी मर जा, तू भी मेरी एक मख़्लूक़ है मेरे एक हुक्म से पैदा हुआ था वह भी गया।

واحد لا شريك له، لا مشير له، لا وزير له، لا عديل له، لا
بديل له، لا بدله، لا ندله، لا عزيز له، لا مثل له، لا شريك
له، لا مثال له، ليس كمثله شيء وهو السميع العليم

अल्लाह की बादशाहतः

उस जैसा कोई है ही नहीं, वह अकेला, आज भी अकेला, फिर भी अकेला, पहले भी अकेला ﴿لم يتخذ صاحبة﴾ बीवी से पाक ﴿ولا ولداً﴾ बच्चे से पाक। कोई उसके काम में हाथ बटाने वाला नहीं, कोई उसको सहारा देने वाला नहीं, कोई उसको मशवरा देना वाला नहीं, कोई उसकी ज़ात में शरीक नहीं, कोई

उसके मुल्क में शरीक नहीं, कोई उसकी ताक़त में शरीक नहीं, उसकी क़ुदरत में शरीक नहीं, कोई उसकी किबरियाई में शरीक नहीं, कोई उसकी किसी सिफ़्त में शरीक नहीं, वह हर चीज़ से पाक ज़ात ﴿وقال﴾ हां भई ﴿الم ترید بعد فی الدنیا لم تکن شیئا وانا بعیدها﴾ मैं ही हूँ जिसने दुनिया को बनाया और फिर मिटा दिया मैं दोबारा बनाऊंगा फिर अल्लाह ज़मीन और आसमान को मुट्ठी में लेकर झटका देगा ﴿انا ملك﴾ मैं बादशाह हूँ, फिर दूसरा झटका देगा ﴿وانا قدوس السلام المؤمن﴾ मैं हूँ क़ुद्दूसुस्सलामुल मोमिन फिर तीसरा झटका देगा ﴿انا المهيمن العزيز الجبار المتكبر﴾ मैं हूँ मुहईमिन, अज़ीज़, जब्बार, मुतकब्बिर, फिर अल्लाह तआला कहेगा ﴿ايـن المالك؟﴾ बादशाह कहाँ है? ﴿ايـن الجابرون؟﴾ वह ज़ालिम कहाँ है? ﴿ايـن المتكبرون؟﴾ वह तकब्बुर करने वाला कहां हैं? ﴿ايـن الملوك﴾ बादशाह, वज़ीर, मुशीर, वह ताजिर, वह ज़मींदार, वह काशतकार, वह सियासतदान, वह साइंसदान, वह डाक्टर, वह इन्जिनियर, आज कोई भी नहीं है, अल्लाह ही अल्लाह है। ﴿لمن الملك اليوم﴾ अल्लाह पूछेगा किसका हुक्म है कोई जवाब नहीं देगा फिर खुद कहेगा ﴿لله الواحد القهار﴾ आज अकेले अल्लाह की हुकूमत है, यह ख़बर आई है कि यह होगा फिर से अगले दिन आया ﴿ان يوم الفصل﴾ यह लो आ गया क़ियामत का दिन।

क़ियामत का मंज़र:

अब आ गया फ़ैसले का दिन ﴿ونفخ فى الصور﴾ फिर आवाज़ पड़ेगी फिर कहेगा ﴿فاذاهم من الاجداث الى ربهم ينسلون﴾ फिर वह अपनी क़ब्रों से निकलेंगे अपनी क़ब्रों से उठ रहे हैं ﴿فتاتون افواجا﴾ फ़ौज दर फ़ौज निकल रहे हैं ﴿وفتحت السماء﴾ आसमाल खुला

﴿فكانت ابوابا﴾ दरवाज़ा बन्द ﴿وسيرت الجبال﴾ पहाड़ चले गए ﴿فكانت سرابا﴾ रूह बन गए, इंसान सामने आ गए, कैसे निकले क़ब्र में से, कुछ क़ब्रों से निकले, नाफ़रमान उस दिन पुकारेगा ﴿ياويلنا من بعثنا من مرقدنا﴾ हाए किसने हमें उठा दिया क्यों उठा दिया, क़ियामत का पहला सूर, और फिर फ़ैसले के दिन का सूर उसके दर्मियान का जो वक़्त है उसमें सब बेहोश होंगे, सज़ा जज़ा ख़तम हो जाएगी, सज़ा जज़ा ख़तम, सब बेहोश नेक भी बेहोश, बुरे भी बेहोश, सबकी रूहों पर बेहोशी छा जाएगी, इसलिए सज़ा वाले की सज़ा ख़तम, जज़ा वाले की जज़ा ख़तम, इससे बेहोश को कोई पता नहीं चलता फिर दूसरी आवाज़ उस पर अल्लाह ने क़ब्रों से उठाया उठते ही नाफ़रमान पुकारेंगे वह दिन आ गया जिससे लोग हमें डराते थे और हम कहते थे जो होगा वह देखा जाएगा अब वह कहेंगे ﴿من بعثنا﴾ हाए हमें किसने उठा दिया ﴿من مرقدنا﴾ हमारी क़ब्रों से फिर, हम तो आराम में आ गए थे, फिर जो दर्मियान का वक़्त था वह आराम से गुज़रा इसलिए वह कहेंगे क्यों उठाया इसका जवाब वह लोग देंगे जो ज़िन्दगी में अल्लाह से डर कर रहे, वह इसका जवाब देंगे ﴿هذا ما وعد الرحمن﴾ यही वह दिन है जिसका रहमान ने वादा किया था ﴿وصدق المرسلون﴾ और रसूलों ने सच कहा था यह वही दिन आ गया यह तो आपने सुनीं अच्छों की और बुरों की बातें, इसके जवाब में अल्लाह फ़रमाएगा। अर्श के ऊपर से आवाज़ आएगी ﴿الم اعهد اليكم يبنی آدم﴾ ऐ आदम की औलाद, मैंने तुम्हें कहा नहीं था ﴿الا تعبدو الشيطن﴾ शैतान की ग़ुलामी न करना ﴿انه لكم عدو مبين﴾ यह तुम्हारा बड़ा दुशमन है ﴿وان اعبدونی﴾ मेरी इबादत करना मेरे बन्दे बनना, मेरे ग़ुलाम बनना ﴿هذا صراط

﴿مستقيم﴾ यह सीधा रास्ता है हर कोई कहता है, मोटर-वे से जाओ, साफ़ सड़क से जाओ, अपने लिए ज़िन्दगी के लिए उलटे रास्ते इख़्तियार क्यों करते हैं, खढ्ढे वाले रास्ते। इस्लाम को छोड़कर हर रास्ता टेढ़ा रास्ता है, सिरातल मुस्तक़ीम सिर्फ़ एक रास्ता है जिसको हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लेकर आए बाक़ी सब टेढ़े रास्ते हैं, उलटे रास्ते हैं, ग़लत रास्ते हैं, सिरातल मुस्तक़ीम एक है जिस पर हज़रत मुहम्मद सल्ल० खड़े हुए जिसकी तरफ़ जिसकी तरफ़ बुलाया ﴿انك لعلى هدى الى صراط مستقيم﴾ अल्लाह के नबी की सब तारीफ़ फ़रमायिए, ऐ मेरे नबी आप हैं सीधा रास्ता दिखाने वाले, आप हैं सीधे रास्ते पर क़ायम। ﴿لعلى هدى مستقيم﴾ और आपने कहा ﴿تركتكم على ما حجتم بيان ليلها تنهار ال يزيد عنها الا﴾ मैं तुमको ऐसे रास्ते पर छोड़कर जा रहा हूँ जिसकी रात भी इस तरह रौशन है जैसे दिन रौशन होता है, जो इसको छोड़ेगा वह हलाक हो जाएगा, बरबाद हो जाएगा, यह अल्लाह की तरफ़ से फ़ैसले का दिन आ गया। ﴿عراة ننك حفاة جوتا﴾ कोई नहीं ﴿غراخته﴾ कोई नहीं, अकेले अकेले। ﴿لقد احصٰهم﴾ घेरा डाला हुआ है, ﴿وعدهم عدا﴾ गिनती की हुई है, न कोई भाग सकेगा, ﴿اين المفر﴾ न कोई छुप सकेगा, ﴿فانفذوا لا تنفذون الا بسلطٰن﴾ तीन रास्ते हैं दुनिया में निकलने के, भाग जाए, क़ाबू में न आए, छिप गया पता नहीं चला, ताक़त वर था टकराया और अपनी ताक़त पर रास्ता ले लिया। अल्लाह तआला ने तीनों रास्ते बन्द किए।﴿اين المفر﴾ आज भाग कर दिखाओ। ﴿لا تخفى منكم خافية﴾ आज छिपके दिखाओ, ﴿فنفذوا﴾ आज निकल कर दिखाओ ताक़त है तो आ जाओ, ﴿فليدع ناديه﴾ बुलाओ अपनी उस जमात को ﴿نادوا شركاء﴾ बुलाओ जिन्होंने

मुझे शरीक ठहराया था, बुलाओ उनको फिर सारे टूट गए।

मैदाने हशर का मन्ज़र:

अकेला तो अल्लाह तआला का अर्श आएगा सिरों के ऊपर ﴿ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية﴾ अल्लाह का अर्श सिरों पर आ गया, जब अल्लाह का अर्श आएगा सब बेहोश होकर गिर जाऐंगे। यह दूसरी बेहोशी होगी। जब अल्लाह का अर्श सिर पर आएगा फिर सब बेहोश हो कर गिर जाऐंगे। बुख़ारी शरीफ़ में रिवायत है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सबसे पहले मुझे होश आएगा।﴿حتى اذا جاؤها فتحت ابوابها﴾ काफ़िरों को हांका जाएगा जहन्नुम की तरफ़, जब वे दरवाज़े पर आऐंगे तो वह दरवाज़ा खुल जाएगा और वे सीधे जहन्नुम में चले जाएंगे। अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथी मुनाफ़िक़ीन हैं। ईमान वालों को जन्नत में पहुँचाना है तो पुल सिरात आख़िरी घाटी है, जिससे गुज़रेगा ईमान वाला, कुछ बिजली की तरह, कुछ हवा की तरह, कुछ घाड़े की तरह, कुछ ऊँट की तरह, कुछ तेज़ चलने वाले की तरह, कुछ आहिस्ता आहिस्ता, कुछ रफ़्ता रफ़्ता और कुछ गिरते पड़ते और कई ऐसे होंगे जिनको काँटें चुभेगें और कई ऐसे होंगे कि जिनके कपड़े फटेंगे और बहुत सो को ज़ख़्म लगेंगे और बहुत सों के वे छुरियाँ आर पार हो जाएंगी और उनको क़ीमा क़ीमा करके जहन्नुम में डाल देंगे। कुछ ऐसे भी होंगे जब पुल सिरात से गुज़रेंगे तो नीचे दोज़ख़ की आग कहेगी कि अल्लाह के वास्ते जल्दी गुज़रजा तेरे ईमान से मुझे ठंडक आ गई और कोई कहेगी ﴿جزء جزء﴾ क्या कहेगी जल्दी करो जल्दी करो ﴿فقد اطفاء نورك لهبي﴾ तेरे ईमान ने तेरे नूरे ईमान ने

मुझे ठंडा कर दिया, मुझे बुझा दिया, दोज़ख़ कहेगी अल्लाह के वास्ते जल्दी गुज़र जाओ और कुछ ऐसे नाफ़रमान गुज़रेंगे कि उनको उठाकर नीचे पटख़ देगी। यह पुल सिरात उनके लिए है और फिर मुनाफ़िक़ गुज़रेंगे।

मुनाफ़िक़ों का हशर

﴿يوم يقول المنفقون والمنفقٰت للذين امنوا انظرونا﴾ यह पुल सिरात की बात हो रही है। ﴿نقتبس من نوركم قيل ارجعوا ورآء كم فالتمسوا نورا، فضرب بينهم بسور له باب، باطنه فيه الرحمة وظاهره من قبله العذاب ينادونهم الم نكن معكم﴾ जब ये ईमान वाले अपने नूर में चलेंगे ﴿يسعى نورهم بين ايديهم وبايمانهم﴾ ईमान वाले का नूर है। सबसे थोड़ा नूर जिसको पुल सिरात पर मिलेगा उसके पाँव के अगूंठे में से रौशनी निकलेगी और उसकी रौशनी पुल सिरात पर चलेगी और कुछ ऐसे होंगे कि सूरज की तरह उनके ईमान का नूर चमकता हुआ उनके साथ होगा तो वे मुनाफ़िक़ कहेंगे ठहर जाओ हमारा इन्तिज़ार करो हम को भी नूर दे दो। वे कहेंगे हम तो पीछे से लेकर आऐं हैं तुम भी वहीं से ले आओ। जब वे पीछे मुड़ेंगे तो दरवाज़े बन्द हो जाऐंगे। इस पर मुनाफ़िक़ उनसे कहेंगे ﴿الم نكم معكم﴾ अरे भाई हम भी तो दुनिया में तुम्हारे साथ रहा करते थे, नमाज़ पढ़ते थे, रोज़ा रखते थे, सब कुछ करते थे तो क्या हुआ, हमें भी तो साथ लेकर जाओ। ﴿قالو بلى ولكنكم فتنتم انفسكم وتربصتم وارتبتم وغرتكم الامانى﴾ ठीक है मगर तुम नफ़्स के धोके का शिकार हो गऐ थे, शैतान के दाँव में आ गए थे, शैतान के फंदे में आ गए थे और दुनिया को मक़सद बना लिया था और आख़िरत को भूल गए थे अब कुछ भी नहीं हो सकता आज तुम्हारे लिए।

मैदाने अद्ल और जन्नती इन्साफ़ का तराज़ूः

उधर पुल सिरात, इधर जहन्नुम, उधर जन्नत, इधर अर्श, उधर अल्लाह, इधर इन्सान, उधर फ़रिश्ते, इधर तराज़ू, उधर मीज़ान, इधर पुकार पड़ी फ़लाँ को लाओ भई, फ़लाँ फ़लाँ का बेटा आजाऐ, फलाँ फलाँ की दुख़्तर आ जाए। गर्दन में हाथ देकर फ़रिशते खींच कर ला रहे हैं, तराज़ू के सामने खड़ा कर रहें हैं। इधर नेकी रखी जा रही है उधर बुराई रखी जा रही हैं, अगर नेकी घट जाती है, बुराईयाँ बढ़ जाती हैं तो साथ ही ऐलान होता है फ़लाँ इब्ने फ़लाँ, फ़लाँ फ़लाँ का बेटा उसकी नेकियां कम निकलीं, ले जाओ इसको जहन्नुम में। उसका चेहरा काला पड़ गया, जिस्म बढ़ गया, कपड़े आग के, टोपी आग की, लिबास आग का, शलवार आग की कुर्ता आग का, हाथ में हथकड़ी, पाँव में बेड़ी, गर्दन में तौक़, फिर फ़रिशतों ने उसको ख़ींचा और उसको घसीट कर ले गए जहन्नुम में, वह कहेगा मेरे ऊपर रहम करो। फ़रिशते उसको कहेंगे तुम पर सबसे बड़े रहीम ने रहम नहीं किया, हम कैसे रहम करें ये किधर को जा रहे हैं ﴿وسيق الذين كفروا الى جهنم زمرا﴾ ये जहन्नुम को जा रहे हैं ﴿اعمى وابكم واصم﴾ वे अन्धे, वे बहरे, वे गूंगे और उनके हाथ पाँव बन्धे हुए और उसकी नेकियों का पलड़ा झुकता है बढ़ता है।

मैदाने हशर में नेकियों का तोला जानाः

तो फ़रिशतों का ऐलान होता है ﴿من ثقلت موازينه﴾ फ़लाँ इब्ने फ़लाँ के बेटे की नेकियां बढ़ गयीं, फ़लाँ की बेटी की नेकियां बढ़ गयीं वे कामयाब हो गए। अब दोज़ख़ नहीं देखेंगे, अब

नाकामी नहीं देखेंगे। इस ऐलान के होते ही उनका क़द आदम अलैहिस्सलाम के क़द पर साठ हाथ ऊँचा हो जाएगा। क़द आदम अलैहिस्सलाम, युसुफ़ अलैहिस्सलाम का हुस्न, अय्यूब अलैहिस्सलाम का दिल, दाऊद अलैहिस्सलाम की मीठी ज़ुबान, ईसा अलैहिस्सलाम की उमर, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़लाक़ और लिबास पहनाने वाला जन्नत के जोड़े ला रहा।﴿يلبسون﴾ रेशमी जोड़े, दुनिया में अल्लाह तआला ने सोना मर्द के लिए हराम किया औरतों के लिए हलाल किया। क्या लज़्ज़त है, किसी ने सोने की अगूंठी पहनी हुई है भाई आग पहनी हुई है आग। आप सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम ने कहा जिसने दुनिया में सोना पहना वह जन्नत में सोने से महरूम हो जाएगा। जिसने दुनिया में शराब पी वह जन्नत की शराब से महरूम हो जाएगा। जो यहाँ की शराब पी ले बदबू दस फ़िट से उसकी आती है खुद उस पागल को पता नहीं होता पेशाब अन्दर ही कर रहा होता है। कभी इधर कर रहा होता है कभी उधर कर रहा है।

जन्नत की नेमतें:

जन्नत की शराब क्या है, एक क़तरा उगंली पर लगा लें और आसमान पर बैठ जाएं। आसमान कितनी दूर है, आज तक कोई नहीं जान सका, फिर उँगली को नीचे कर दिया तो यह सारी काएनात इस एक क़तरे से खुशबूदार हो जाएगी। यह जन्नत की शराब है तो जिसने दुनिया में शराब पी ली, अल्लाह तआला जन्नत की शराब से महरूम कर देगा। यहाँ का पिया हुआ तो वहाँ की तसनीम से और अल्लाह के अम्र से तैयार की हुई

शराब से महरूम हो गया। यहाँ ज़िना किया वहाँ की पाक दामन औरतों से महरूम हो गया जिनकी एक उँगली सूरज को दिखा दी जाए उगंली नहीं उँगली तो बहुत ज़्यादा है इतना हिस्सा बनान, उँगली में तीन जोड़ होते हैं यह जो ऊपर वाला जोड़ है इसको बनान कहते हैं और उर्दू में पोरा। अल्लाह का हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहता है, इतना हिस्सा सूरज को दिखा दिया जाए तो सूरज उसके सामने नज़र नहीं आएगा। ऐसी ख़ूबसूरत औरतों से महरूम हो गया। अब वे थूकती नहीं। जन्नत की औरत का थूक नहीं लेकिन अगर उसके मुहँ में थूक आ ज़ाए और वह थूक सात समंदर में फेंक दे तो सातों समंदर शहद से ज़्यादा मीठे हो जाएं। यह उसके थूक की मिठास है, अगर मुर्दो से बात करे तो उनमें ज़िदगी की लहर दौड़ जाए और आसमान पर बैठे-बैठे अपने चेहरे को खोल दे और हम यहाँ हों और इतने फ़ासले हों दर्मियान में जिनकी कोई इन्तेहा नहीं, काएनात कितनी बड़ी है? तो वह आसमान पर बैठ कर हमें देखे, हम ज़मीन पर वह आसमान पर। हम यहाँ से उसे देखें तो उसके हुस्न को कोई बर्दाश्त नहीं कर सकेगा, सब मर जाएंगे, दिल फट जाएंगे, ख़ुशी से मर जाएंगे, बर्दाशत नहीं कर सकेगें और वह आग, पानी, मिट्टी, हवा से नहीं बनी मुश्क अम्बर, ज़ाफ़रान, काफ़ूर से अल्लाह ने उसको बनाया है। उसमें कोई गंदी चीज़ इस्तेमाल नहीं हुई। मुश्क है पाँव से घुटने तक, ज़ाफ़रान घुटने से छाती तक, मुश्क है छाती से गर्दन तक, अम्बर है गर्दन से सिर तक काफ़ूर है। सिर के बाल पाँव की ऐड़ी तक हैं। दो बाल तोड़कर ज़मीन पर डाल दिए जाएं तो सारा जहान रौशन हो जाए। काले बालों में ऐसा नूर है कि सारे जहान रौशन

हो जाए, ऐसी ख़ुशबू है कि सारा जहान मौत्तर हो जाए। फ़रमाया जिसने नापाक ज़िंदगी गुज़ारी वह इन पाक बीवियों से महरूम हो जाएगा। ﴿يحلون فيها من اساور من ذهب﴾ और अल्लाह सोने के कंगन पहना रहा है कि आओ भई, मैं पहनाता हूँ। ﴿يلبسون ثيابا خضرا﴾ तुम्हें रेशमी लिबास पहने का शौक़ है ना तो मैं पहनाता हूँ और शराब पीने का शौक़ है तो अब मैं पिलाता हूँ। शराब पीने वालों के दर्जे सुनों तो वे तीन दर्जे हैं:

﴿يشربون من كاس مزاجها كافورا﴾ कुछ ऐसे हैं जो ख़ुद पी रहे होंगे काफ़ूरी शराब, एक दर्जा। फिर उससे ऊपर वाला दर्जा ﴿يسقون فيها كاسا كان مزاجها زنجبيلا﴾ कुछ होंगे जिनको ज़न्जबील वाली शराब पिलाई जाएगी। वे पी रहें हैं, उनको पिलाई जाएगी। पिलाने वाले मजहूल है यानी ख़ुद्दाम हैं, बीवियां, हूरें, फ़रश्तिें हैं। फिर उससे ऊपर का दर्जा ﴿وسقاهم ربهم شرابا طهورا﴾ कुछ ऐसे होंगे जिनको उनका रब पिलाएगा, अल्लाह पिलाएगा। क्या पिलाएगा ﴿شرابا طهورا﴾ पाक शराब, यह नहीं गन्दी नहीं पाक शराब। पिलाने वाला अल्लाह, मैदाने जन्नत, हाथ अल्लाह का, जाम जन्नत का, शराब जन्नत की, आदमी जन्नत का, पड़ौस नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का। इससे आला चीज़ और क्या होगी भई? ﴿وسقاهم ربهم شرابا طهورا﴾ क्यों? ﴿ان هذا كان لكم جزاء﴾ यह तुम्हारी मेहनत के सिले में तुम्हें दे रहा हूँ। यह क़ियामत का मन्ज़र है जो अल्लाह दिखाएगा। ﴿كان سعيكم مشكورا﴾ तुम्हारी मेहनत हम ने क़ुबूल कर ली जाओ चले जाओ जन्नत में।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जन्नत का दरवाज़ा खुलवानाः

सब जमा हो रहें हैं एक तरफ़ जन्नत वाले, एक तरफ़ दोज़ख़ वाले। दोज़ख़ वाले दोज़ख़ को चले, जन्नत वाले जन्नत को चले। जन्नतियों को घोड़ियों पर सवारियों पर, दोज़ख़ी मुजरिम बनकर जाऐंगे और जन्नती ये वफ़्द बन कर जाऐंगे। वे मुजरिम बन कर ये मेहमान बन कर, वे जेल में जा रहें हैं ये जन्नत में जा रहे हैं। दोनों के रुख़ अलग अलग हो रहे हैं, एक वफ़्द ठहरा फ़रिशतों का, एक के लिए इस्तिक़बाल है फ़रिशतों का, जब पुल सिरात से उतरे तो सामने सवारियां खड़ी हुई हैं वे सब अपनी अपनी सवारियों पर सवार होंगे। वे सवारियां उड़ाकर जन्नत के दरवाज़े पर ले जाऐंगी। जन्नत के दरवाज़े पर सारी उम्मतें उतर रहीं हैं। सब उतर रहें हैं मगर आगे दरवाज़ा बन्द है और दरवाज़े पर ताला लगा हुआ है। दो चश्में जन्नत के दरवाज़े पर हैं। एक चश्में के लिए जन्नतियों से अल्लाह तआला फ़रमाएगा इसका पानी पियो। वे पानी पिएगें तो सीने का सारा खोट ख़त्म हो जाएगा। अब हसद, बुग़ज़, लड़ाई, फ़साद सब ख़त्म, झगड़े, मुक़द्दमें, अदालतें सब ख़त्म। क़त्ल ग़ारत, लूट सब ख़त्म। वह पानी जब पेट में जाएगा तो पाख़ाना ख़त्म, पेशाब ख़त्म, थूक ख़त्म, नज़ला ख़त्म, बलग़म ख़त्म, अन्दर की सब गन्दगी ख़त्म। सब जन्नती पाक हो गए। फिर अल्लाह तआला दूसरे चश्में से वुज़ू करवाएगा कि वुज़ू करो। जन्नती वूज़ू करेंगे तो चेहरे तर व ताज़ा बारी के बग़ैर। जन्नत में बारी नहीं होगी तो वहाँ बारी के बग़ैर अल्लाह तआला कहेगा वूज़ू करो तो वे

वुज़ू करेंगे तो चेहरा तर व ताज़ा ऐसा हो जाएगा कि सूरज भी उनके सामने नज़र नहीं आएगा। अब ये पाक साफ़ हो कर बैठ गए मगर जन्नत की तरफ़ जाओ तो दरवाज़ा बन्द है। सब हैरान परेशान कि अन्दर कैसे जाएं दरवाज़ा ही नहीं खुला हुआ। तो जाऐंगे अब्बा जान आदम अलैहिस्सलाम के पास कि अब्बा जान दरवाज़ा खुलवाइए। वह कहेंगे कि मेरे इख़्तियार में नहीं है किसी और से बात करो। फिर आऐंगे नूह अलैहिस्सलाम के पास। वह कहेंगे कि मैं नहीं कर सकता। फिर लोग आऐंगे इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास। वह कहेंगे कि मैं नहीं कर सकता। फ़लॉ नबी फ़लॉ नबी। सब नबी इन्कारी हो जाऐंगे तो सारा मजमा कहेगा सय्यदुल कौनैन ताज दारे मदीना हबीबुल मुस्तफ़ा हबीबुल्लाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास चलो। सब आऐंगे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास, अल्लाह के महबूब।

अल्लाह की अपने हबीब से मुहब्बतः

जिस से मुहब्बत होती है तो उसको आदमी कई नामों से पुकारता है। अल्लाह तआला ने हर नबी को एक नाम दिया लेकिन अपने नबी को दस नाम दिए।﴿كان عند الله عشرة اسماء﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरे अल्लाह ने मेरे दस नाम रखे। ﴿انا محمد واحمد والماحى والحاشر والعاقب و الخاتم وابوالقاسم وطه ويٰسن﴾ ये मेरे अल्लाह ने मेरे नाम रखें हैं कि मैं मुहम्मद हूँ, मैं अहमद हूँ, मैं माही कुफ़्र को मिटाने वाला, मैं आक़िब पीछे आना वाला, मैं हाशिर मेरे क़दमों पर हश्र होने वाला मैं पहले पैदा होने वाला, मैं ख़ातिम, पैदाइश में सबसे

पहले और आने में सबसे आख़िर में। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप को नबुव्वत कब मिली? मतलब यह था कि चालिस साल की उमर में पचास साल की उमर में। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब दिया मुझे नबुव्वत उस वक़्त मिली जब आदम अलैहिस्सलाम का गारा बन रहा था नहीं नहीं बल्कि ﴿كنت﴾ मैं बन गया था। इससे कितना अरसा पहले बने इसका पता अल्लाह को है या उसके हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को है। यह इल्म इन्सानों में से किसी को नहीं। आपसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा ﴿كنت﴾ मैं था वह भी कब! जब आदम अलैहिस्सलाम का गारा बन गया था तो उस वक़्त मैं नबी बन चुका था। कितना पहले इसका इल्म अल्लाह ही जानता है। अल्लाह ने दस नाम रखे। मुहम्मद व अहमद व माही व हाशिर व आक़िब व फ़ातेह व ख़ातिम, पहल करने वाला, इन्तिहा करने वाला, पहले भी आख़िर भी, नबुव्वत की मोहर लेकर आए। ताहा, यासीन, अबू क़ासिम। अबू क़ासिम का वाक़िया। अबू क़ासिम सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु का लम्बा क़िस्सा है। इसका आख़िरी टुकड़ा सुनाता हूँ। वह इसाई राहिब के पास रहते थे कि अब आप तो मर रहे हैं तो मैं अब किसके पास जाऊँ? उन्होंने कहा कि बेटा अब दुनिया से सच मिट गया अब तू आख़िरी नबी का इन्तेज़ार कर। वह आने वाला है। जब वह आजाए तो उसका साथ देना। कहा उसकी निशानियां कौन सी हैं? राहिब ने कहा कि वह ज़कात नहीं खाएगा, सदक़ा नहीं खाएगा। हदिये का माल क़ूबूल करेगा और उसकी कमर के दर्मियान सीधे कन्धे के क़रीब मुहर होगी नबुव्वत की। ये तीन

निशानियां याद रखो। बस वह नबी हैं। फिर एक लम्बी कहानी चली। बहरहाल वह मदीने पहुँचे। इधर रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी मदीने पहुँच गए। अब सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु को पता चला कि हज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले आए हैं। अब पहले दिन सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु आए और कहा कि यह मैं आप के लिए सदक़ा लाया हूँ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उठाकर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को दे दिया, कहा आओ भाई खाओ। तो उन्होंने दिल में कहा ﴿هــذا اولى﴾ यह पहली निशानी है। फिर खुजूरें लेकर आए और कहा कि यह मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए हदिया लाया हूँ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद भी खायीं और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को कहा तुम भी खाओ। तो उन्होंने कहा ﴿هــذا ثانية﴾ यह दूसरी निशानी हो गई। अब सोच में पड़ गए कि तीसरी निशानी कैसे देखूं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तीसरी दिखा दूँ? आओ देख लो। कुर्ता उठाया, कहा यह देख लो तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ातिम फ़ातेह भी ओर ख़ातिम अव्वल भी, आख़िर भी, ताहा भी, यासीन भी, अबू क़ासिम भी, हाशिर भी, आक़िब भी, माही भी। तो सारी इन्सानियत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर अर्ज़ करेगी, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दरवाज़ा खुलवायिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहेंगे मैं ही खुलवा सकता हूँ, आज मेरे बग़ैर कोई नहीं खुलवा सकता। अब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह की बारगाह में सज्दा करेंगे। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, मांगो मिलेगा। तो कहेंगे या अल्लाह दरवाज़ा खोल

दे। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, तेरे बग़ैर दरवाज़ा नहीं खुल सकता तू जाएगा तो खोलूंगा। सारे नबियों पर हराम है जन्नत। जब तक तू न चला जाए कोई नबी जन्नत में नहीं जा सकता। जब तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन्नत में न चले जाऐं कोई नहीं जा सकता, कोई उम्मत नहीं जा सकती, जब तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत न चली जाए। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए ऊँटनी लाई जाएगी जन्नत में, उस पर सवार होंगे। उसकी रस्सी नीचे होगी। सब की तमन्ना होगी कि रस्सी मेरे हाथ में हो। ऐलान होगा कि रस्सी हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को दी जाए। वह सबसे आगे निकल गए।

ईमान का बदलाः

न क़ुरैशी, न हाशमी, न सय्यद, न पठान, न राजपूत, कुछ भी नहीं। बे हसब, बे नसब, बस एक नसल है, बस मुहम्मदी हैं। बअू लहब सगा चचा था हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मगर उसके बारे में क़ुरआन ने कहा ﴿تبت يدا ابى لهب وتب﴾ अबू लहब बर्बाद हो गया और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु जिनके दादा का नाम मैंने आज तक किसी किताब में नहीं देखा। ऐसा बेनाम इन्सान मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सवारी की लगाम पकड़ कर साथ साथ, क्योंकि उनका नसब मुहम्मदी बन गया। और एक मर्तबा ग़ज़वाए ख़न्दक़ के मौक़े पर सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में बहस हो गई। जब सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ख़न्दक़ खोदने लगे तो हांलाकि ये तो ईरानी थे और अरबों को अपने

नसब पर बड़ा नाज़ था और होना भी चाहिए कि सबसे आला ख़नदान अरब है फिर उसमें भी आला क़ुरैश हैं फिर इसमें सबसे आला बनू अब्दुल मुनाफ़ है फिर इसमें सबसे आला बनू अब्दुल मुत्तलिब, फिर उनमें सबसे आला बनू हाशिम है, फिर उसमें सबसे आला हज़रम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। अल्लाह ने उनका इन्तिख़ाब किया, तो अब वह तो ईरानी थे लेकिन उनके ईमान, अमल, ज़ौक़ की वजह से उनको यह दर्जा मिला कि ख़न्दक़ खोदने के लिए एक हिस्सा अन्सार को मिला यानी मदीने वालों को, एक हिस्सा मुहाजिरीन को मिला मक्का वालों को कि मक्का वाले यह हिस्सा खोदें, मदीने वाले यह हिस्सा खोदें। अब सलमान किस में जाएं? तो अन्सारे मदीना कहने लगे ﴿سلمان منا﴾ सलमान हम में से हैं यहीं रहते हैं। मुहाजिरीन ने कहा ﴿سلمان منا﴾ सलमान हम में से हैं हिजरत करके गए हैं। अब यहीं सख़्ती आ गई बात बढ़ गई। वह कहते हैं हमारे साथ होगा वह कहते हैं हमारे साथ होगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं फ़ैसला करता हूँ। ﴿سلمان من اهل البيت﴾ सलमान हम अहले बैत में से है जबकि वह तो फ़ारसी हैं तो किस चीज़ ने उन्हें अहले बैत में से बना दिया (यहाँ हक़ीक़ी अहले बैत मुराद नहीं) यह सलमान कैसे अहले बैत में से बन गया। ﴿سلمان منا اهل البيت﴾ सलमान हम में से है अहले बैत में से है किस वजह से? अपने ईमान की वजह से, अपने तक़वे की वजह से, अपने ज़ुहद व फ़ज़्ल की वजह से, हांलाकि अबू लहब भी तो सय्यदों में से था तो बिलाल हबशी रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जन्नत की तरफ़ जा रहे हैं। दरवाज़े पर दस्तक हुई, अन्दर से पूछा रिज़वान ने

कौन? कहा मैं हूँ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, तो कहेंगे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपका इन्तेज़ार हो रहा है। रब का हुक्म था जब तक आप न आएं दरवाज़ा न खोला जाए। दरवाज़ा खुलेगा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब से पहले दाख़िल होंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ आपकी उम्मत के फ़ुक़रा मसाकीन दाख़िल होंगे।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का जन्नत में मुक़ामः

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा मैं एक साथी को जानता हूँ और उसके माँ बाप को भी जानता हूँ। जब जन्नत के दरवाज़े पर आएगा तो सारे दरवाज़े उनके लिए खुल जाएंगे और हर दरवाज़ा पुकारेगा, इधर इधर, मरहबा मरहबा। सलमान फ़ारसी ने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वह कौन हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह अबू बक्र है जिसके लिए जन्नत के सारे दरवाज़े तक खुलेगें। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा मैंने जन्नत में महल देखा जिसकी एक ईंट याक़ूत की एक ईंट ज़मर्रद की। मैंने पूछा कि यह महल किसका है तो मुझे कहा गया कि एक क़ुरैशी का है। मैं समझा कि मेरा है, मैं भी क़ुरैशी हूँ। जब मैं अन्दर जाने लगा तो मुझे फ़रिश्ते ने कहा उमर बिन ख़त्ताब का है। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा ऐ उस्मान! जन्नत में हर नबी का एक साथी है मेरा जन्नत का साथी तू है। फिर आपसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली का हाथ पकड़ा और थोड़ा अपने क़रीब किया और फ़रमाया ﴿يا على اترضى ان يكون منزلك مقابل منزلى فى الجنة﴾ ऐ अली तू राज़ी है कि जन्नत में तेरा

घर मेरे घर के सामने होगा? तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा जी मैं राज़ी हूँ। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा जन्नत में हर नबी का एक हवारी होगा। मेरे जन्नत में दो हवारी होंगे। एक हवारी बाडी गार्ड कह लो, पूरा तर्जुमा नहीं है इसका मददगार है, बाडी गार्ड, उर्दू के अल्फ़ाज़ बड़े तगं हैं अरबी को पूरा ले नहीं सकते। तो आप इसको बाडी गार्ड के लफ़्ज़ में ले लें। हर नबी का एक होगा मेरे दो होंगे, तल्हा व ज़ुबैर दो होंगे, तो इस तरह यह उम्मत जन्नत में जा रही होगी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे।

आज का मुसलमान ज़ुल्म की चक्की में पिस रहा है:

तो मेरे भाईयों! अल्लाह ने ये दो अन्जाम बता दिए, दो ठिकाने बता दिए और ज़िन्दगी को बेकार नहीं बताया। यहाँ करने वाला न करने वाला, यहाँ ज़ुल्म करने वाला, अमल करने वाला आम तौर पर नहीं पूछा जाएगा। अल्लाह कभी कभी पकड़ लेता है ज़ालिम को, दुनिया में भी कभी पकड़ लेता है, आम तौर पर छोड़ देता है। लोग कहते हैं कि अल्लाह करता कुछ नहीं मुसलमान पिस रहे हैं, हाँ भाई यह जगह नहीं करने की, दोज़ख़ की एक चट्टान सारी दुनिया के पहाड़ों से बड़ी है। दोज़ख़ के पानी का एक लोटा, एक लोटे में कितना पानी आएगा, एक किलो दो किलो। अगर सात समुन्दरों में डाल दिया जाए तो सातों समुन्दर उबलने लगेंगे, खौलने लगेंगे। तो यहाँ सज़ा नहीं दी जा सकती। आने दो। ﴿يوم الفصل﴾ फ़ैसले का दिन आ गया। ﴿ان الاولون الآخرون لمجموعون﴾ जिसने अव्वल और आख़िर को जमा कर दिया। उस दिन की तैयारी के लिए

अल्लाह ने हमें भेजा है।

तबलीग़ी जमात की दावत इल्लल्लाहः

मेरे भाईयों! तबलीग़ का जो काम हो रहा है यह कोई तबलीग़ी जमात नहीं। भई, कोई तबलीग़ी जमात वाले हमारे पास आएं हैं कोई हमारा मख़सूस नज़रिया है कोई ख़ास ख़्यालात हैं कि हमें अपने मेम्बर बनाते हैं कोई अपने मुरीद बनाते हैं या अपने साथी बनाते हैं नहीं सिर्फ़ इस बात की मेहनत है कि हर मुसलमान अल्लाह को अपने सामने रखे कि मेरा अल्लाह मुझ से क्या चाहता है। इस वक़्त हम अपने अल्लाह को सामने रखकर नहीं चल रहे हैं बल्कि अपनी ख़्वाहिशात को अपनी ज़रूरियात को सामने रखे हुए हैं कि मैं जो चाहता हूँ वह मैं करना चाहता हूँ, जो मैं करना चाहता हूँ वह मैं करूंगा चाहे अल्लाह नाराज़ हो चाहे अल्लाह का रसूल नाराज़ हो। यह जहन्नुम का रास्ता है। हम क्या कह रहे हैं कि अल्लाह को सामने रखो। या अल्लाह तू क्या चाहता है? मैं तेरी चाहत को पूरा करूंगा फिर चाहे कुछ मेरा रहे या न रहे कि रुख़ मुड़ना चाहिए। यह मेहनत इस बात की मेहनत है तबलीग़। यह जो हम जानते हैं तबलीग़ी जमात का मेम्बर बनने नहीं जा रहे हैं। वह तो हमें कुछ भी नहीं देते, हां वहाँ से चले हमने यहाँ भेज दिया तो हमने तीन चार घन्टे का सफ़र किया। यहाँ आए, मोटर वग़ैरह भी अपनी लेकर आए। पैट्रोल भी अपना जलाया। राएविन्ड वालों ने एक धेला भी नहीं दिया तो हम उनके मेम्बर कैसे बन गए? फिर या तो वे हम को कुछ पैसे दें या तनख़्वाह दें या कुछ चन्दा दें कि जाओ भाई तबलीग़ करो, फिर तो बात बनी। वे तो कुछ देते भी नहीं फिर

हमारा क्यों दिमाग़ ख़राब है कि हम उनके कहने पर कभी अमरीका जा रहे हैं कभी यूरोप जा रहे हैं। पैसे भी घर से उठाकर ले जा रहे हैं। भाई किस लिए आ रहे हैं? वहाँ से तो कुछ मिलता नहीं। किस लिए आ रहे हैं? उनसे कोई वास्ता नहीं। वास्ता अल्लाह और उसके रसूल का है। उनकी मिसाल सिर्फ़ याद दिहानी करवाने वाले की है। एक आदमी याद दिहानी करवा रहा है, भाई यह चीज़ आपकी है, अगर मेरी है तो मैं उसका शुक्रिया अदा करूंगा, तेरी बड़ी मेहरबानी है कि तूने यह चीज़ मुझे दे दी। तबलीग़ का जो यह काम हो रहा है यह किसी जमात की दावत नहीं, किसी फ़िरक़े की दावत नहीं, किसी तहरीक की दावत नहीं। दो बातों की दावत है सिर्फ़ दो बातों की, हर मुसलमान अल्लाह को सामने रखकर चले या अल्लाह तू क्या चाहता है और अल्लाह की चाहत कलिमे का दूसरा हिस्सा है ﴿لا اله الا اللّه محمد رسول اللّه﴾ खुद अल्लाह तो नहीं बताएगा न अल्लाह को बराहे रास्त कोई जान सकता। अल्लाह को जानने का रास्ता रसूल हैं अबिंया हैं। अल्लाह तक पहुँचने का रास्ता अल्लाह के रसूल हैं। हम तो अल्लाह को बराहे रास्त नहीं जानते। अल्लाह बराहे रास्त हम से बात नहीं करता, अपना हाथ नहीं दिखाता, न जन्नत दिखाई न दोज़ख़ दिखाई, न फ़रिश्ते दिखाए, न अर्श दिखाया, न आसमान दिखाया, न अपनी किताब दिखाई।

हमारे लिए मुबारकबादः

अच्छा हमने तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी नहीं देखा। एक दफ़ा एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा या

रसूलुल्लाह ﴿طوبى لمن رآك وامن بك﴾ मुबारक हो उसको जिसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाया। क़ुरबान जाइए उस रसूल और उस महबूब के कि जिसने हमें उस वक़्त भी हमें अपनी रहमत में शामिल किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿طوبى، ثم طوبى، ثم طوبى، ثم طوبى، ثم طوبى، ثم طوبى، ثم طوبى﴾ कितनी दफ़ा कहा सात दफ़ा कहा मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो, मेरे इस उम्मती पर जिसने मुझे न देखा और मुझ पर ईमान ले लाया। हमें सात दफ़ा मुबारक बाद मिली तो हमने तो उनको भी नहीं देखा हमने तो सिर्फ़ उनकी बातों को सुना और उनकी किताब को देखा है। एक तसलसुल से हमारे पास आपकी ज़िन्दगी पहुँची है और इतनी पाक ज़िन्दगी और महफ़ूज़ ज़िन्दगी किसी नबी की नहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक एक हरकत घर से मस्जिद तक, मैदाने जंग से लेकर मस्जिद के मुसल्ले तक। एक एक चीज़ को अल्लाह तआला जज़ा दे अल्लाह के नबी के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को जिन्होंने एक एक चीज़ को उम्मत तक पहुँचा दिया। जिस काम को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़िन्दगी में कभी एक दफ़ा किया वह भी किताबों में मौजूद लिखा हुआ है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान बज़ुबाने रब काएनात:

अल्लाह ने हमें बताया कि मैं अपने नबी की ज़िन्दगी पर राज़ी हूँ तुम भी उस ज़िन्दगी को अपना लो। ﴿قل ان كنتم تحبون

﴿الله فتبعونی یحببکم الله﴾ अल्लाह ने अपने नबी की क़सम खाई ﴿لعمرك﴾ ऐ, मेरे नबी तेरी जान की क़सम। जिस जान की अल्लाह क़सम खाएगा वह जान कितनी क़ीमती होगी और उस जान से निकलने वाला अमल कितना क़ीमती होगा? अल्लाह ने आपके शहर की क़सम खाई ﴿وهذا البلد الامين﴾ सुब्हानल्लाह एक अजीब बात है जब कभी लोगों की तरफ़ से नबियों पर इल्ज़ाम लगा तो नबियों ने खुद जवाब दिया। नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम ने कहा ﴿انا لنرك فی ضلل مبين﴾ तू गुमरह है नूह अलैहिस्सलाम ने कहा ﴿يا قوم ليس بی ضللة﴾ ऐ मेरी क़ौम मैं गुमराह नहीं हूँ। हूद अलैहिस्सलाम से उनकी क़ौम ने कहा ﴿انا لنرك فی سفاهة﴾ यह सब क़ुरआन से बता रहा हूँ कि लोगों ने हूद अलैहिस्सलाम से कहा तू पागल है तो हूद अलैहिस्सलाम ने कहा ﴿يا قوم ليس بی سفاهة﴾ ऐ मेरी क़ौम मैं पागल नहीं हूँ। अब इधर सुनो काफ़िरों ने कहा ﴿لست مرسلا﴾ हमारे नबी से कह रहे हैं क़ुरैश मक्का तुम रसूल नहीं हो, तुम रसूल नहीं हो तो इससे पहले कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जवाब देते कि मैं रसूल हूँ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवाब देने से पहले अल्लाह ने जवाब दिया और क़सम खा कर कहा ﴿يس والقران الحكيم انك لمن المرسلين﴾ क़सम है मुझे क़ुरआने हकीम की तू मेरा रसूल है। यह नहीं कहा कि तू रसूल है, क़सम है मुझे क़ुरआन की कि तू मेरा रसूल है। फिर काफ़िरों ने कहा ﴿يا ايها الذی نزل عليه الذكر انك لمجنون﴾ ऐ, भाई तू तो हमें पागल नज़र आता है यानी हूद अलैहिस्सलाम वाली बात कही तो हूद अलैहिस्सलाम ने कहा था नहीं मैं पागल नहीं हूँ लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से अल्लाह तआला ने खुद

ही जवाब दिया और यह नहीं कहा कि तू पागल नहीं है बल्कि फिर क़सम खाई ﴿ن والقلم وما يسطرون ما انت بنعمة ربك بمجنون﴾ मुझे क़सम है क़लम की और उसके लिखे हुए की कि आप पागल नहीं हैं। अल्लाह जवाब दे रहा है ख़ुद काफ़िरों ने कहा ﴿انا لتاركو الهتنا لشاعر مجنون﴾ हम शाइर की वजह से अपने ख़ुदाओं को छोड़ दें। अब शाइर का इल्ज़ाम लगाया या शाइर कहा। फिर अल्लाह तआला ने क़सम खाई। वाह! वाह! क्या हबीब महबूब की शान है। अल्लाह ने फिर क़सम खाई ﴿فلا اقسم بما تبصرون، انه لقول رسول كريم، وما هو بقول شاعر قليلا ما تؤمنون، ولا بقول كاهن، قليلا ما تذكرون، تنزيل من رب العالمين﴾ क़सम है मुझे देखे अन देखे की कि यह शाइर नहीं है रसूल है तो भाई अल्लाह तआला क्या कह रहा है कि यह मेरा हबीब है तुम उसकी सुन्नत पर आ जाओ तो मेरे महबूब बन जाओगे।

अपने ज़ाहिर और बातिन को बनाने कि फ़िकर करें:

तबलीग़ में यही बात हो रही है कि हर मुसलमान ज़ाहिर और बातिन को अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ताबे करे। ज़ाहिर को भी ताबे करे बातिन को भी ताबे करे। ज़ाहिर का बातिन पर असर पड़ता है, बातिन का ज़ाहिर पर असर पड़ता है। बाहर का अन्दर पर और अन्दर का बाहर पर असर पड़ता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि सफ़ें सीधे करो, अगर सफ़ें टेढ़ी होंगी तो तुम्हारे दिल भी टेढ़े हो जाऐंगे। यह अजीब बात है, सफ़ों के टेढ़े होने से हमारे दिल भी टेढ़े हो जाएंगे कि बाहर की ग़लती अन्दर को गन्दा करती है। उन्होंने कहा अन्दर ठीक होना चाहिए ज़ाहिर की ख़ैर है नहीं।

अन्दर ठीक नहीं हो सकता जब तक ज़ाहिर ठीक न हो। जब तक यह हुलिया मुहम्मदी न हो तो अन्दर से मुहम्मदी नहीं बन सकता। पहले ज़ाहिर बनता है फिर बातिन बनता है। पहले बच्चा बनता है फिर रूह पैदा होती है। पहले मस्जिद बनी फिर कारपेट बिछाया गया, फिर पंखे लगाए गए, फिर रंग व रोग़न किया गया, पहले ज़ाहिर बनता है फिर बातिन बनता है। यह ज़ाहिर न बने तो बातिन भी नहीं बन सकता। इस लिए ज़ाहिरन व बातिनन नबी के सांचे में ढले। क्या पता अल्लाह को ज़ाहिर पसन्द आ जाए और मॉफ़ कर दे। जादूगरों ने मूसा अलैहिस्सलाम की शक्ल बनाई। अल्लाह ताआला ने उनको भी हिदायत दे दी, तो अगर हम ज़ाहिर को बना लें तो बातिन भी कभी बन जाएगा। फिर इसके लिए जो नमाज़ पर मेहनत करेगा अल्लाह तआला उसके एक एक अमल को नबी के अमल के ताबे करता चला जाएगा। यह नमाज़ अजीब अमल है। सारी उम्मतों को दो नमाज़ें मिलीं। आपको पाँच मिलीं और उनकी नमाज़ दो रकूआत। आपकी कोई भी नमाज़ दो रकूआत नहीं। दों रकूआत फ़ज्र दो रकूआत असर की फिर छुट्टी और उसमें वे किताब नहीं पढ़ा करते थे क्योंकि उन्हें किताब याद नहीं होती थी। तौरात, इन्जील और ज़ुबूर की तिलावत नमाज़ में नहीं होती थी सिर्फ़ तस्बीह सुब्हानल्लाह, अलूहम्दुल्लिाह, अल्लाहु-अकबर और ला इलाहा इलल्लाह। फिर इसमें कोई रुकू नहीं था, तिलावत नहीं थीं। जिससे ताल्लुक़ न हो उसको बाहर से टरख़ा दिया जाता है जिससे ताल्लुक़ हो उसको अन्दर बुला कर बिठाया जाता है। हमारे ऊपर पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ कीं और कोई भी दो रकूआत नहीं कम से कम चार रकूआत। दो सुन्नतें ऐसी कर दीं

कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी सफ़र में भी फ़ज्र की दो सुन्नतें नहीं छोड़ीं। फ़ज्र की नमाज़ दो रक्आत है मगर दो सुन्नतें ऐसी लाज़िम हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी सफ़र में भी फ़ज्र की दो सुन्नतें नहीं छोड़ीं शायद किसी ग़ज़्वे में या किसी मारके में छोड़ी हों।

खुशू खुज़ू वाली नमाज़ः

फ़ज्र की नमाज़ में हम तो पढ़ते हैं चार आयतें पाँच आयतें और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ज्र की नमाज़ में सूरहः यूसुफ़ पढ़ते थे, सूरहः ताहा पढ़ते थे, सूरहः कहफ़ पढ़ते थे। इस लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ अन्धेरे में शुरू होती थी और सूरज निकलने से थोड़ी देर पहले ख़त्म होती थी, तो इमाम शाफ़ई रह० ने कहा है कि पहले वक़्त में पढ़ना अफ़ज़ल है। हमारे इमाम साहब ने कहा है आख़िरी वक़्त में पढ़ना अफ़ज़ल। दोनों ठीक हैं फिर हमें कहा क़ुरआन पढ़ो तो हमें क़ुरआन याद करवाया। उनको याद नहीं होता था हमें याद करवाया, फिर हमें रुकू दे दिया। सारी काएनात की नमाज़ इकठ्ठी कर दी। सारे दरख़्त क़याम में खड़े हुए हैं। हमारा क़याम भी है चाहे सारी रात क़याम में खड़े रहो, पूरा क़ुरआन पढ़ दो। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु एक रक्अत में पूरा क़ुरआन ख़त्म करते थे दूसरी रक्अत के लिए कुछ नहीं छोड़ते थे एक रक्अत में क़ुरआन ख़त्म। हमने तो ﴿قل هو الله﴾ से ठेका किया हुआ है हर रक्अत में ﴿قل هو الله﴾ पढ़ कर छुट्टी। ठेका कर लिया है अल्लाह तआला से। ﴿قل هو الله﴾ पढ़ी बाक़ी छुट्टी, बाक़ी क़ुरआन उतरा ही नहीं हमारे ऊपर या आदमियों के लिए

उतरा नहीं सिर्फ़ ﴿قل هو الله﴾ कि दुआऐ क़ुनूत में भी ﴿قل هو الله﴾ यह अनोखी शरियत आई है यहाँ। पूरा क़ुरआन पढ़ दे, सारे दरख़्तों की नमाज़, क़याम हमारी नमाज़ में क़याम भी है। सारे चार पाए चौपायों की नमाज़ रुकू। हमारी नमाज़ में रुकू भी है। सारे ज़मीन पर रेंगने वाले जिनके पाँव नहीं हैं उनकी नमाज़ सज्दा है, हमारी नमाज़ में सज्दा भी है। सारे पहाड़ों की नमाज़ अत्तहिय्यात तशह्हुद है, हमारी नमाज़ में अत्तहिय्यात भी है। सारे परिन्दों की नमाज़ तस्बीह है तो हमारी नमाज़ भी तस्बीह है। "सुब्हा-न-रब्बि-यल-अज़ीम", "सुब्हा-न-रब्बि-यल-आला", "रब्बना-लकल-हम्द", "अल्लाहु अक्बर"। सबकी नमाज़ इकठ्ठी करके हमें दे दी और हमारे ऊपर पाँच नमाज़ें बतायीं और कहा अगर नमाज़ सीख लो तो हर बुराई से निकल जाओगे। इस लिए हम कहते हैं कि नमाज़ को सीखो। पंजाबी में नमाज़ न पढ़ो। अरबी में नमाज़ पढ़ो सीखो। अल्लाह कैसे सिखाता है नमाज़ सीखो। भाईयों अल्लाह की क़सम अल्लाह सुन रहा है, फ़रिश्तें भी गवाह हैं जो नमाज़ सीख जाएगा उसके मुसल्ले से सारे काम होने लग जाएंगे। उसको न किसी अमीर की ज़रूरत है न किसी वज़ीर की ज़रूरत है न किसी चेयरमैन की ज़रूरत है। चेयरमैन उसके पीछे फिरेंगे जूतें उठाके। उसको मच्छरों की तरह हक़ीर नज़र आएंगे। मियाँ मीर मुहम्मद लाहौर वाले बैठे हुए थे तो उनका एक मुरीद बाहर से अन्दर आया हज़रत, हज़रत कहता हुआ। उन्होंने पूछा क्या हुआ? बताया शाहजहाँ आ रहा है। उन्होंने कहा तेरा भला हो जाए मैं समझा तूने कोई जूँ मारी है जो कह रहा है हज़रत मैंने बड़ी जूँएं मारी हैं। शाहजहाँ उनको जूँओं से भी कम नज़र आ रहा था। जिसको नमाज़ पढ़नी आ

गई उसके सारे काम मुसल्ले से हो जाएंगे। नमाज़ सीख लें। नमाज़ का सीखना क्या है? अलफ़ाज़ सीखें, इसका इल्म हो और फिर अल्लाहु अकबर से लेकर सलाम फेरने तक अल्लाह के सिवा कोई और न आए। यह नमाज़ घर बैठे नहीं आएगी। नहीं आ सकती। अल्लाहु अकबर, अब किसी को मत आने दो, दरवाज़े बन्द कर दो दिल के। इसके लिए घर छोड़ना पड़ेगा नहीं होगा, नहीं हो सकता। यह मुफ़्त सौदा नहीं है कि अल्लाह घर में बैठे बैठे दे दें। धक्के खाने पड़ेंगे तब जाकर अल्लाह नसीब फ़रमाएगा, तो वह करो जो अल्लाह चाहता है। अल्लाह की चाहत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चाहत में है और इस पर आने का आसान रास्ता नमाज़ है कि नमाज़ को ढ़गं से पढ़ना सीखे। पैसों के बग़ैर काम। दुआओं से वे काम होंगे जो काएनात में किसी से नहीं हो सकते, दुआओं से वे काम होंगे। रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपना सब कुछ अपनी उम्मत को दे गए बाक़ी सब सारे नबी साथ ले गए। इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग ने नहीं जलाया। अबू मुस्लिम ख़ौलानी अल्लाह के नबी के सहाबी नहीं हैं। सहाबी के सहाबी हैं। नबी के ग़ुलाम के ग़ुलाम हैं। उनको यमन के काफ़िर नबुव्वत का पहला झूठा दावा करने वाले ने आग में डाला। वह आग में नमाज़ की नियत बांध कर खड़े हो गए। आग भी जलती रही और उनकी नमाज़ भी चलती रही। आग उनके बाल को न जला सकी। यह तो ग़ुलामों का हाल है उम्मत तो दूर है लेकिन एक शर्त है वह यह कि ख़ज़ाने की चाबी तलाश करो। वह चाबी मुहम्मदियत है। मुहम्मदी बनना और वह करना जो अल्लाह के नबी ने करके दिखाया। उसके लिए नमाज़ मश्क़ है,

नमाज़ पर मेहनत करे और मैंने बता दिया कि अल्लाहु अकबर से लेकर सलाम फेरने तक किसी को न आने दे। यह नमाज़ पढ़ने से नहीं आएगी, सीखने से आएगी और घर छोड़े बग़ैर नहीं आएगी और घर में तो अल्लाहु अकबर, ओहो! फ़लाँ जगह जाना है, फ़लाँ से बात करनी है, फ़लाँ से यह लेना है, फ़लाँ से वह लेना है। यह पचास साल हो गए ऐसी नमाज़ पढ़ते हुए, पचास और भी गुज़र जाएं तो इससे आगे नहीं जा सकता। दस साल की उमर में भी नमाज़ शुरू की और आज पचास साल का हुआ बैठा है। दस साल की उमर में जो नमाज़ थी तो पचास साल की उमर में भी वही नमाज़ है। एक इचं भी उसमें इज़ाफ़ा नहीं हुआ। नमाज़ बनानी है तो घर छोड़ दो। अल्लाह और रसूल से मुहब्बत पैदा करनी है तो घर छोड़ो। यह सारा जहाँ पागल नहीं है जो बिस्तर उठा उठा कर फिर रहा है।

ख़ालिके काएनात को पहचानिएः

तो भाईयों! हम तौबा करें यह पहली बात है कि अल्लाह के रास्ते में निकलो और तौबा करो और अपने अल्लाह को राज़ी करो। अल्लाह की रज़ा उसके नबी का तरीक़ा है। आज तक जो हुआ ऐ अल्लाह हमारी तौबा। नमाज़ छोड़ीं, ज़कात छोड़ी, किसी का हक़ मारा, किसी से लड़ाई की, किसी से मुक़द्दमा किया, किसी से झगड़ा किया, मॉफ़ करो, क़ब्र में ले जाना है, मॉफ़ करो। जन्नत को सामने रखो। यहाँ ज़ुल क़रनैन की ख़्वाहिश पूरी नहीं हुई तो आप की क्या पूरी पड़ेगी जो सारी दुनिया की हुकूमत करके मर गया। ज़ुल क़रनैन को छोड़ो सुलेमान अलैहिस्सलाम जैसे तख़्त छोड़ कर मर गऐ हम क्या करें। सारे

पाकिस्तान में क्या रखा है, सारी दुनिया में क्या रखा है। सब कुछ मिल भी जाए तो छोड़ कर चले जाना है तो इसके पीछे पीछे मारे मारे कहाँ की अक़्लमन्दी है तो इस लिए भाईयों! आज तक जो कुछ हुआ उससे तोबा कर लें। फ़राइज़ की कोताही, हक़ूक़ुल इबाद की कोताही, पड़ौस के हक़ में, साथी के हक़ में। इन सारी चीज़ों में जो अल्लाह की नाफ़रमानी कीं उससे तौबा करें। क्या यह सिर्फ़ तबलीग़ी जमात का काम है? हर मुसलमान का काम नहीं है? क्या यह सिर्फ़ हमारे ज़िम्मे है आप के ज़िम्मे नहीं है? तोबा करना, जो ग़लत हुआ या अल्लाह! मॉफ़ कर दे और अल्लाह को मॉफ़ करना इतना पसन्द है कि अल्लाह यूँ कहता है कि अगर तुम गुनाह करना छोड़ दो और सारे नेक बन जाओ तो मैं तुम सबको जन्नत में बुला लूं और फिर एक ऐसी क़ौम पैदा करूं जो गुनाह करे फिर रोए, तोबा करे, फिर मैं उनको मॉफ़ करूं और कहा कि अगर दुनिया में किसी को अज़ाब देता तो सब से पहले उसको अज़ाब देता हूँ जो मेरी रहमत से नाउम्मीद हो कर बैठ जाता है।

अल्लाह की बन्दों से मुहब्बत पर एक वाक़िया:

एक क़िस्सा सुनाता हूँ। जब अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम को इजाज़त दे दी कि ज़मीन तेरे ताबे है तू क़ारून को धंसा दे तो मूसा अलैहिस्सलाम ने ज़मीन को कहा कि इसको पकड़ो तो जब ज़मीन ने पकड़ा और वह अन्दर धंसा तो उसने कहा मूसा अलैहिस्सलाम मॉफ़ कर तेरी बड़ी मेहरबानी तो मूसा अलैहिस्सलाम ने ज़मीन से कहा और पकड़ लो वह अन्दर चला गया फिर उसने मॉफ़ी मांगी, मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा और

पकड़ तो वह और अन्दर चला गया फिर मॉफ़ी मांगी (सारा दिन) वह मॉफ़ी मांगता रहा वह कहते रहे और अन्दर और अन्दर। जब वह सारा धंस गया तो अल्लाह तआला ने कहा ऐ मूसा! तेरा दिल कितना सख़्त है, वह मॉफ़ी मांगता रहा तू ने मॉफ़ ही नहीं किया। ﴿وبعزتی وجلالی﴾ मेरे इज़्ज़त व जलाल की क़सम एक दफ़ा मुझ से मॉफ़ी मांगता मैं मॉफ़ करके उसको बाहर कर देता। ले भाई जो क़ारून को मॉफ़ कर दे तो हमें कैसे नहीं मॉफ़ करेगा? हम तो क़ारून नहीं हैं। अल्लाह के फ़ज़्ल से हम तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उम्मती हैं। इतनी बात में कौन सी चीज़ है जो सिर्फ़ तबलीग़ी जमात के ज़िम्मे है और आपके ज़िम्मे नहीं जो आए बैठे हैं कोई एक बात तो उँगली रख कर बता दें कि यह आप की बात है हमारी कोई बात नहीं।

ख़त्मे नबुव्वत का अक़ीदाः

दूसरी बात जो तबलीग़ में कह रहें हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे नबी आख़िरी हैं, आपके बाद कोई नबी नहीं। यह वह अक़ीदा है अगर कोई छोड़ दे तो सारा कलिमा कुफ़्र में तबदील हो जाए और जो झूठे नबूव्वत का दावा करते रहे सिर्फ़ वही काफ़िर नहीं जो उसको मान ले वही काफ़िर नहीं। एक आदमी यूँ कहे मैं किसी नबी को नहीं मानता सिर्फ़ अल्लाह का नबी नबी है लेकिन मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आख़िरी नहीं मानता तो इतने पर भी वह काफ़िर हो जाएगा यह नहीं कि वह किसी और नबी को माने तो काफ़िर हो जाएगा। ख़त्मे नबुव्वत का इन्कार कर दे, किसी झूठे नबी का कलिमा

नहीं पढ़ता, सिर्फ़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहता है कि आप आख़िरी नहीं हैं तो इतने पर भी वह काफ़िर हो जाएगा।

आख़िरी उम्मत होने की वजह से दूसरों तक दीन पहुँचाना हमारी ज़िम्मेदारी हैः

तो आप आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आख़िरी नबी होने का जो अक़ीदा है इसकी वजह से यह हमारे ज़िम्मे तबलीग़ का काम लगा हुआ है। हम रायविन्ड वालों की वजह से आप लोगों के पास नहीं आते, हम ख़त्मे नबुव्वत की वजह से आप के पास आए। हमें हमारे नबी ने बराहेरास्त कहा है, आपको कहा है, आप सबको कहा है, मिना की वादी में। कब? दस ज़िलहिज्ज को अपने दुनिया के जाने से 83 दिन पहले, मिना की वादी में जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुज़्दलफ़ा से आए थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कन्कर मारे। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने चादर से साया किया और हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऊँटनी की नकेल को पकड़ा फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वापस तशरीफ़ लाए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने 63 ऊँटों की कुर्बानी दी। 37 हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने ज़िब्हा किए और 63 आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किए फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलवाया सिर मुंढ़ने के लिए। सीधे हाथ के बाल पहले मुंढ़वाए। पहले इधर के बाल मुंढ़वाने चाहिएं, फिर इधर के। उस्तरा फिरवाया और कहा कि यह सारे बाल सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में

तक़सीम कर दो। वे सारे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में तक़सीम किए, फिर उल्टी तरफ़ से बाल मुंढ़वाए वह सारे के सारे अबू तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु को दे दिए और कहा कि यह तेरी उजरत है। वे सारे उनको अता फ़रमाए फिर उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वहाँ खुत्बा दिया। जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐलान फ़रमाया ﴿فليبلغ الشاهد الغائب﴾ और उस वक़्त अक्सर मजमा सामने था। कुछ ख़ेमों में बैठे हुए थे लकिन सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम कहते हैं कि हर आदमी को ऐसे आवाज़ पहुँच रही थी जैसे सामने खड़ा हुआ सुन रहा हो। मैं भी ऐसे ही ख़ेमे में बैठा हुआ सुन रहा था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कह रहें हैं कि मेरा पैग़ाम आगे पहुँचा दो तो जितना तबलीग़ का काम हो रहा है इसकी बुनियाद यह हदीस पाक है कि मेरा पैग़ाम आगे पहुँचाओ।

मेरे भाईयों! कोई तहरीक किसी से घर से नहीं छुड़वा सकती सिदाए लालच के या पैसा देकर या कुर्सी देकर या कोई जाएदाद दे, या कोई ओहदा दे। यहाँ घर छोड़ो, बीवी छोड़ो, बच्चे छोड़ो, मुल्क छोड़ो, पैसा भी अपना लो, धक्के भी खाओ, चौलिस्तान में भी फिरो, रेगिस्तान में भी फिरो, तुर्किस्तान में भी फिरो, ईरान में भी फिरो और किसी से कुछ न मांगो। यह कोई जमात नहीं कर सकती। यह अन्दर की चीज़ है, ख़त्मे नबुव्वत है जो मुसलमानों को उठाकर चला रही है।

मुसलमानों की बेदीनी का तज़किराः

वहाँ राएविन्ड में एक जमात ने बलुचिस्तान से ख़त लिखा कि जब उन्होंने आज़ान दी तो बस्ती के लोगों ने कहा कि आज यहाँ

कोई सौ साल के बाद आज़ान दी गई। यूरोप की नहीं बता रहा हूँ। बलूचिस्तान में, जो पाकिस्तान का हिस्सा है, साथ ही पाक लगा है, सारी नापाकियां हो रहीं हैं। तो नाम रखने से या ग़ुलाम रसूल रखने से कोई ग़ुलाम रसूल तो नहीं बनता। ग़ुलामी से ग़ुलाम रसूल बनता है नाम रखने से ग़ुलाम रसूल नहीं बनता नाम रखने से ग़ुलाम रसूल नहीं बनता, ग़ुलाम मुहम्मद से ग़ुलाम नहीं बनता वजूद को ग़ुलामी में डालने से ग़ुलाम मुहम्मद बनता है। एक अरबों की जमात गई तजाकिस्तान। जब वे निकलने लगे तो कहने लगे कि आज से सात सौ साल पहले हमारे पास अरब आए थे। वे हमें कलिमा दे गए थे। आज सात सौ साल के बाद तुम्हें देखा है। अल्लाह के वास्ते अब दोबारा सात सौ साल के बाद मत आना बल्कि बार बार आते रहना। सारे रास्ते आज़ाद हैं। मुसलमान कलिमा नहीं जानते कोई पता नहीं कलिमे का। सौ सौ दफ़ा उनसे कलिमा दोहराते हैं कलिमा उनकी ज़ुबान पर नहीं चढ़ता। रोते हैं, दीवारों पर टक्करें मारते हैं कि हमें कलिमा क्यों नहीं आता। उनको किसने सिखाना है? कौन ज़िम्मेदारी ले? क्या आपके ज़िम्मे नहीं, मेरे ज़िम्मे भी कोई नही तो फिर किसके ज़िम्मे है इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी? सब से बड़ा अज़ीमुश्शान इन्सान जो इस काएनात का सरदार है, वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है और आप इस फ़िकर के लिए पत्थर खाते फिर रहें हैं और दांत तुड़वा रहे हैं, घर छोड़ रहें हैं, पेट पर पत्थर बांध रहे हैं, काफ़िरों की गालियां सुन रहे हैं, कमर पर ओजड़ी डाली जा रही है, गर्दन में चादर डाल कर मरोड़ा जा रहा है, पत्थर पड़ रहें है, गालियां पड़ रही हैं, ज़ख़्म लग रहे हैं तबलीग़ के लिए। अब इस उम्मत को समझाना पड़

रहा है कि तबलीग़ तुम्हारा काम है। तबलीग़ी जमात किसी एक की जमात नहीं, बल्कि हर मुसलमान मुबल्लिग़े इस्लाम है, करे या न करे उसकी मर्ज़ी लेकिन हर मुसलमान तबलीग़ वाला है। हर मुसलमान के ज़िम्मे नमाज़ फ़र्ज़ है नहीं पढ़ता तो उसकी नमाज़ मॉफ़ नहीं होगी। हर मुसलमान के ज़िम्मे रोज़ा फ़र्ज़ है न रखे तो रोज़ा मॉफ़ नहीं हो गया। हर मुसलमान तबलीग़ वाला है न करे तो तबलीग़ उससे मॉफ़ तो नहीं हुई। दुनिया में चार अरब काफ़िर हैं एक अरब मुसलमान हैं। चार अरब काफ़िरों के लिए कोई नहीं। एक अरब मुसलमान हैं उन से तौबा करवाने के लिए कोई नहीं आएगा और वे कहते हैं कि काफ़िरों को तबलीग़ करो। अल्लाह के बन्दों को कोई समझाए कि मुसलमान जब बिगड़ जाता है तो अल्लाह ने बिगड़े हुए मुसलमानों में भी नबी भेजे हैं। नबी सिर्फ़ काफ़िरों में नहीं आए बल्कि नबी बदकार मुसलमानों को भी तबलीग़ करने के लिए आए। जितने बनी इसराइल में, इसराइल के नबी हैं सारे के सारे मुसलमानों में आए। ﴿ولقد ارسلنا موسیٰ بآیتنا﴾ हमने मूसा अलैहिस्सलाम को भेजा किस लिए भेज? ﴿ان اخرج قومك﴾ अपनी क़ौम को निकालो। ﴿من الظلمت الی النور﴾ ज़ुलमत से रौशनी में, अन्धेरों से रौशनी की तरफ़ उनको लेकर आओ तो यह मूसा अलैहिस्सलाम फ़िरऔन के पास ही गए हैं या बनी इसराइल के पास भी गए। मूसा अलैहिस्सलाम की नबुव्वत फ़िरऔन के लिए भी है और बनी इसराइल के लिए भी है। बनी इसराइल बिगड़ चुके हैं और फ़िरऔन काफ़िर है। काफ़िर को कहा कलिमा पढ़ो, अपनी क़ौम से कहा तौबा करो। यही काम इस उम्मत का है। इस लिए मूसा अलैहिस्सलाम का क़िस्सा 27 पारों में आता है बाक़ी इतना

किसी नबी का नहीं आया। 136 दफ़ा मूसा अलैहिस्सलाम का नाम क़ुरआन में मौजूद है और 27 पारों में उनका नाम है सिर्फ़ चौथा पाँचवा और चौदहवाँ सिपारा। इसमें नहीं बाक़ी सारे क़ुरआन में है क्योंकि इस उम्मत की मुशबिहत थी। मूसा अलैहिस्सलाम फ़िरऔन पर मेहनत कर रहे हैं, कलिमा पढ़ो और अपनी क़ौम से कह रहे हैं तोबा करो। हमारे भी यह दो काम हैं। हम सारी दुनिया से कहें कि कलिमा पढ़ो, अपनों से कहेंगे तोबा करो। अपनों से तौबा करवाना खुद तोबा करना और सारी दुनिया के काफ़िरों को कलिमे की दावत। यह इस उम्मत की ज़िम्मेदारी है किस वजह से? ख़त्मे नबुव्वत की वजह से, तबलीग़ी जमात की वजह से नहीं ख़त्मे नबुव्वत की वजह से।

मेरे भाईयों! आप के पास भी इस लिए आए हैं कि इन दो बातों को समझें अच्छी तरह। कोई दुनिया निजात नहीं पा सकता जब तक कि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर न आ जाएं। लिहाज़ा हर मुसलमान इसको सीखे और अब दुनिया में नबी नहीं आएगा दीन की मेहनत के लिए। तो मेरे भाईयों! इस्लाम कोई विरासत नहीं है। नबियों की औलाद काफ़िर हो गई। औलिया, ग़ौस, क़ुतुब व अब्दाल की औलाद काफ़िर हो गयीं। कोई रियासत नहीं चलती। इस्लाम मेहनत से आता है। मेहनत करेगा मिलेगा। बाप आलिम तो बेटा आलिम नहीं हो सकता जब तक खुद कोशिश व मेहनत न करे। मेहनत करेगा तो मिलेगा। बाप अल्लाह का वली है तो बेटा अल्लाह का वली नहीं हो सकता। मेहनत करेगा तो मिलेगा। शाह अब्दुल क़ुद्दूस गंगोही रह० बहुत बड़े चिशतिया सिलसिले के बुज़ुर्ग गुज़रे हैं उनका बेटा कबूतर बाज़ और उनके

ख़लीफ़ा चले गए बलख़। एक मर्तबा एक मिरासी ने उनके बेटे को सबक़ सिखाने के लिए पीर का भेस बदला। अब वह चोग़ा पहने आगे आगे चलने लगा और उसके पीछे पीछे मुरीद, आगे वह पीर बनकर जा रहा है तो उन्होंने ऊपर से देखकर मज़ाक़ किया कि यह मिरासियों ने गद्दियां कब से संभाल लीं तो उस मिरासी ने कहा जब गद्दी वाले ने कबूतर संभाले मिरासियों ने गद्दियां संभाल लीं। यह विरासत नहीं कि अब्दुल क़ुद्दूस गंगोही रह० का बेटा शाह अब्दुल क़ुद्दूस गंगोही रह० बन जाए। जो जान लगाएगा उस को मिलेगा जो नहीं लगाएगा गुमराह हो जाएगा। अब उनको चोट लगी नीचे आए माँ से पूछा मेरे वालिद की विरासत कहाँ है। कहा वह तो बलख़ चली गई। कहा किस के पास? कहा निज़ामुद्दीन बलख़ी। वहाँ से पैदल चले। हिन्दुस्तान से बलख़ पहुँचे। जब उनको पता चला कि मेरा पीर ज़ादा आया है तो उन्होंने इस्तिक़बाल किया गद्दी से उठ गए उनको वहाँ बिठाया, ख़ुद नीचे बैठे। इकराम हो गया। पूछा बेटे कैसे आए हो? कहा जी मैं तो अपने बाप की विरासत लेने के लिए आया हूँ। फ़ौरन रंग बदल गया खड़े हो गए एक लात मारी उठ यहाँ से या तो उसको गद्दी पे बिठाया या लात मारी। उठो यहाँ से। चल तो दरी में जाकर बैठो। वहाँ से उठाया जूतों में बिठाया और फिर कई दिन पूछा ही नहीं कौन था कौन नहीं था। फिर कहा इसका बिस्तर हमारे अस्तबल में लगा दो। घोड़ों के अस्तबल में बिस्तर लगवाया। एक ताक़ दे दिया, एक झोली दे दी और फिर इसमें बिठा कर ज़िक्र में लगा दिया। एक साल ज़िक्र करवाया एक साल के बाद एक बान्दी को भेजा। कहा इस के पास से घोड़े की लीद लेकर गुज़रो और उसके सामने गिरा दो

और देखो क्या करता है? तो उसने लीद गिराई तो कहने लगा अन्धी हो नज़र नहीं आता। उसने आ कर बताया कि यह कह रहा है। उन्होंने कहा कि कमी है एक साल और रगड़ दिया। साल के बाद फिर उसको टोकरा दिया कि उसके सामने गिरा दो तो उन्होंने जाकर गिरा दिया। तो उसको यूँ देखा, बड़ी तेज़ नज़रों से, बोले कुछ नहीं। बस यूँ ही देखा गुस्से में। उसने फिर आकर बताया तो कहा कि अभी कम है। एक साल और रगढ़ दिया। तीन साल गुज़र गए। पगड़ी बांधने से आदमी को विरासत थोड़े मिल जाती है। जान लगानी पड़ती है तो मिलती है। यह दुनिया की पगड़ियां नहीं हैं कि बाप मर गए बेटे को पगड़ी बांध दो। चल भई ज़मीन हो गई, मिल भी हो गई, कारोबार भी हो गया। यह दीन है विरासत में नहीं आता, कुर्बानी से आता है। तीन साल गुज़र गए फिर भेजा बांदी को कि अब फिर उसके सामने लीद गिराओ, अब उसने लीद गिराई तो वह एक दम उठ गए, खड़े हो गए और सारी लीद उठाकर दोबारा उसके टोकरे में डाली फिर टोकरा उठा लिया और कहा कि कहाँ ले जाना है मुझे बता दो? मैं छोड़ आऊँ। तीन साल में यह तब्दीली आई। जब उसने जाकर बताया तो कहा कि अच्छा बस ठीक है तो अगले दिन बुलवाया और कहा कि आज हम शिकार को चल रहे हैं तुम हमारे साथ चलो। शिकार पर चले तो शिकारी कुत्ते उनको पकड़ा दिए। कुत्ते से शिकार जाएज़ है। हज़रत अदी बिन हाकिम शिकारी थे और यह सारे शिकार के मसाइल उनसे रिवायत हैं। उन्होंने रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछ कर सारी उम्मत का भला कर दिया। तो कुत्ते से शिकार जाएज़ है। तो कुत्ते उनको पकड़ा दिए। कहा छूटने न

पाएं, ख़रगोश निकलने न पाए, इनको ख़्याल आया कि कुत्ते हैं जान्दार हैं। तीन साल की रगड़े खा खा कर मेरे अन्दर अब वह ताक़त तो है ही नहीं अगर कुत्तों ने झटका लगाया तो कुत्ते छूट जाएंगे तो उन्होंने रस्सी अपनी कमर से बांध ली। आगे ख़रगोश निकले, कुत्तों ने लगाया ज़ोर, तो इतनी ताक़त तो थी नहीं कि उनको साथ लेकर चल सकते और इतनी जान भी उनमें नहीं थी कि खड़े हो सकते, गिर गए और घिसटते चले गए। बहुत सारी ख़राशे आ गयीं। इतने में हज़रत निज़ामुद्दीन रह० आ गए। वह चौंक पड़े। हाथ से कहा हुज़ूर क़ुसूर हो गया मॉफ़ कर दीजिए। उसी वक़्त हुक्म दिया छुड़ा दो कुत्ते। कुत्ते छुड़ा दिए अब दूसरा रुख़ आया हज़रत निज़ामुद्दीन रह० उसके पाँव चूम रहे हैं और हाथ चूम रहें हैं माथा चूम रहे हैं। कहा बेटा जो कुछ तेरे बाप ने मुझे दिया था मैं ने तुझे दे दिया। अब तुम मुझे मॉफ़ करना। इसी तरह यह चीज़ मिलती है। इस के बग़ैर मिलती नहीं और कोई रास्ता है ही नहीं मिलने का।

फ़ज़ाइले तबलीग़ः

घर छोड़े बग़ैर कुछ नहीं आता। इस उम्मत ने घर छोड़ा तो कलिमा दुनिया में फैला। अपने घरों को अलविदा कहा तो काएनात में इस्लाम गूंजा। इस लिए भाई सारी दुनिया के इन्सान अल्लाह के हुक्मों पर आएं, यह इस पूरी उम्मत के ज़िम्मे है। घर बैठने वाला और अल्लाहक के रास्ते में फिरने वाला कभी बराबर नहीं होंगे। जन्नत में नूर की चमक उठेगी। सारी जन्नत रौशन हो जाएगी। नीचे वाले जन्नती कहेंगे या अल्लाह! यह कैसा नूर है। फ़रिश्ते कहेंगे यह जन्नतुल फ़िरदौस का जन्नती है। वह

अपने घर से निकला यह उसके चेहरे का नूर है। जिसने सारी जन्नत को रौशन कर दिया, तो नीचे वाले कहेंगे या अल्लाह! इसको यह दर्जा क्यों दिया? तो अल्लाह तआला कहेंगे तुम घर बैठते थे यह मेरे रास्ते में फिरता था तो तुम और यह कैसे बराबर हो सकते हैं।

तबलीग़ एक अज़ीम मेहनत है:

मेरे भाईयों! इस तबलीग़ के काम को जमात मत समझें। यह दो बातों की मेहनत है। उन दो बातों में कोई ऐसी चीज़ नहीं जो मेरी ज़रूरत है आपकी ज़रूरत नहीं है। जिस इन्सान ने दुनिया में आँख खोली है उसकी ज़रूरत है कि अल्लाह और रसूल का फ़रमाबरदार बनकर चले और यह काएनात का क़ानून है कि कोई काम सीखे बग़ैर नहीं आता। मुसलमान घर में पैदा होने से इस्लाम नहीं आता। इस्लाम सीखा जाता है। डाक्टर के घर में पैदा होने से बच्चा डाक्टर नहीं बनता। उसे डाक्टरी सीखनी पड़ती है। इसको (इस्लाम को) सीखें और कोई भी नहीं आएगा। इसको आगे फैलाएं। यह हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जो हमारे ज़िम्मे नमाज़ लगा गए, रोज़ा ज़िम्मे कर गए, हज ज़िम्मे कर गए, ज़कात ज़िम्मे कर गए, तबलीग़ भी ज़िम्मे कर गए। सारी दुनिया से लोग आ रहें हैं। अरब भी आ रहा है अजम भी आ रहा है। छः बर्रे आज़म के मुसलमान हर राएविन्ड में होते हैं। बाज़ ऐसे लोगा आते हैं जो ज़ुबान नहीं जानते। चार महीने लगाते हैं। अब गूंगा न समझे न सुने चार महीने लगा रहा है। भई उसको क्या चीज़ लेकर चल रहा है? भई यह ख़त्मे नबुव्वत है जो अन्दर बैठी हुई है वह लेकर चल

रही है। गूंगे माज़ूर, पाँव से, टांगों से माज़ूर चल रहे हैं। अरब के उलमा आ रहे हैं। क़ुरैश आ रहें हैं, मक्के वाले आ रहे हैं, मदीने वाले आ रहे हैं। पिछली सदियों में कोई ऐसी मेहनत नहीं हुई जिसने छः बर्रे आज़म को लपेट में ले लिया हो। पूरी दुनिया कोई ख़ित्ता इस वक़्त ख़ाली नहीं जहाँ पैदल जमातें न चल रही हों। अपने पैसों से धक्के खाते हैं। एक दफ़ा हम कोयटा से वापस आ रहे थे। दर्जा हरारत जो सिफ़र से नीचे था। चार पाँच डिगरी नीचे था। बर्फ़ जमी हुई थी सारे पहाड़ों पर। ज़ियारत के क़रीब से हम गुज़र रहे थे। वहाँ कोयटा से भी ज़्यादा ठंडक थी और गाड़ी का जो मीटर था वह काम नहीं कर रहा था। इंजन बिल्कुल ठंडा हुआ पड़ा था। मेरी नज़र ऊपर पड़ी तो पहाड़ की चोटी पर एक जमात पैदल चल रही थी। हमें मोटर में बैठकर ठंड लग रही थी और वे इस शदीद सर्दी में पहाड़ के ऊपर चल रहे थे। कौन उनको चला सकता है? अन्दर का ईमान है और ख़त्मे नबुव्वत का यक़ीन है कि मेरा नबी आख़िरी है और कोई नबी नहीं आएगा, मुझे जाना है।

तबलीग़ी काम की बरकात और समरातः

मेरे भाईयों! सारी दुनिया में नियत करके चार-चार महीने इसको लगा कर सीख लें फिर सारे आलम में फिर कर इसकी दावत कर दो। अफ़रीक़ा और अमरीका में बड़ी दुनिया पड़ी है, जहाँ आज तक कोई नहीं गया और जाना हमारे ज़िम्मे है। एक जज़ीरा था आस्ट्रेलिया। वहाँ पाकिस्तान की नहीं जुनूबी अफ़रीक़ा की एक जमात गयी। वहाँ दस हज़ार की अरब आबादी थी लेकिन वे सब ईसाइ हो चुके थे। उन्होंने एक जगह

आज़ान देकर नमाज़ पढ़ी। जब सलाम फेरा तो एक बूढ़ी औरत ने उनसे बात की कि यह जो तुम ने काम किया मेरे बाप दादा किया करते थे। हम अरब हैं लेकिन हम भूल चुके हैं सब कुछ। तो उन्होंने कहा कि तुम हमारे पास आओ। हम इस लिए आए हैं कि अपने भाईयों को भूला हुआ सबक़ याद दिलाएं। वह बूढ़ी औरत गई और मकानों से लड़के लड़कियों, बड़े छोटे सब को लेकर आई और उन्होंने पूरा ग्राउंड भर दिया। आगे उन्होंने उनको दावत दे देकर सब को कलिमा दोबारा पढ़ाया। पिछले साल हम अमरीका गए तो शिकागो से एक जमात टैक्सी ड्राइवरों की जो़ टैक्सी चलाते हैं वे भी तबलीग़ में वक़्त देते हैं। एक चिल्ले के लिए ब्राज़ील गए। 800 आदमी उनके हाथ पर मुसलमान हुए। आठ सौ। पूरा क़बीला था आठ सौ अफ़राद का। जो क़बीले का सरदार था। उसको दावत दी वह मुसलमान हुआ। सारे क़बीले को इकठ्ठा करके दावत दी तो सब मुसलमान हो गए। तो यह थोड़े थोड़े काम की बरकत है। जब सब मुसलमान तबलीग़ का काम करने लगें तो सारी दुनिया में इस्लाम फैल जाएगा। बताओ भाई कौन हिम्मत करेगा हौसले के साथ। हाँ भाई! सुना है यहाँ से नक़द जमात निकल रही है। कोई बाहर नाम लिखे, कोई अन्दर लिखे। भाई कोई मेरी बात भी समझ में आई कि नहीं (आ रही है)

हज़रत मौलाना इलयास साहब रह० का वाक़िया:

एक बूढ़े से मौलाना इलयास साहब रह० ने कहा चार महीने लगा। वह कहने लगा कि क्या चार महीने लगाऊं मुझे तो कलिमा भी नहीं आता। तो उन्होंने कहा कि ऐसा कर बस्ती

बस्ती जाओ। लोगों से यूँ कहो कि मेरी उमर सत्तर साल गुज़र गई मैंने कलिमा भी नहीं सीखा तुम यह ग़ल्ती न करना, तुम कलिमा सीख लो। उसका नाम मौजू मेराती था। इस मौजू को जो कलिमा नहीं जानता था उसके हाथ पर अठ्ठारह हज़ार आदमी नमाज़ी बने और ताएब हुए।

सबसे पहली चीज़ तौबा हैः

अगर तीन दिन के लिए जाएं तो खुद भी तौबा करें औरों से भी तौबा करवाएं। अल्लाह से काम करवाना है तो पूरे पाकिस्तान से तौबा करवाएं। यह हुकूमत कुछ भी नहीं कर सकती। ये तो हम से भी ज़्यादा बेचारे ज़रूरत मन्द हैं। हम तो इन से थोड़े ही ज़रूरत मन्द हैं। ये हम से भी ज़्यादा ज़रूरत मन्द हैं। इन से कुछ नहीं होगा, अल्लाह से होगा और अल्लाह से करवाना है तो तौबा करें और करवाएं। बोलो भाई! कल से कौन भाई हिम्मत करता है। अल्लाह फ़रमाते हैं जो लोगों के दिलों में मेरी मुहब्बत बिठाए वे मेरे महबूब हैं, तो हम लोगों से तौबा करवाएं तो अल्लाह के महबूब बन जाएंगे।

एक जादूगर का वाक़ियाः

भाई! समझ में नहीं आ रहा है कि एक डाक्टर था वह एक मिनट की एक हज़ार डालर फ़ीस लिया करता था। दुनिया के बड़े बड़े होटलों में उसके प्रोग्राम हुआ करते थे। अरब का शामी और उसने मुसख़्ख़र किये हुए थे शयातीन और पता नहीं क्या चीज़। अजीब चीज़ था वह। हमें भी उसने बहुत सी चीज़ें दिखायीं। तो एक दिन मुझसे कहने लगा, जुमे की नमाज़ के

बाद मेरे पास आकर कहने लगा मेरा शैतान आया था मेरे पास और आकर बैठ कर मेरे पास रोने लगा कहने लगा डाक्टर राकी, राकी उसने अपना नाम रखा हुआ था। अब्दुल क़ादिर था। वैसे वह अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० की नसल में से था। नसल अरबी, हस्नी, क़ादरी और काम यह कर रहा था। तो कहने लगा आज मेरा शैतान मेरे पास आया था और कह रहा था कि डाक्टर राकी तुमने बीस साल की दोस्ती को पाँच मिनट में तोड़ दिया, तो मैंने उससे कहा बीस साल मैंने झूठ को आज़माया अब कुछ दिन सच को भी आज़माने दो। आगे मुझसे कहता है कि बात तो तुम्हारी ठीक है सच ही में निजात है लेकिन फिर भी जल्दी क्या है बाद में तौबा कर लेना। यहाँ आकर मार देता है कि अभी जल्दी क्या है फिर तौबा कर लेना। इसमें बहुत से बग़ैर तौबा के मर जाते हैं। दूसरा कहता है तौबा का क्या फ़ायदा इधर करूंगा उधर टूट जाएगी। ऐसी तौबा से क्या फ़ायदा।

तौबा करने से इन्सान बिल्कुल पाक साफ़ हो जाता है:

मेरे भाईयों! शैतान ने कहा जब अल्लाह तआला ने उसको मरदूद किया कि ﴿ابرى اغوى عبادك﴾ मैं तेरे बन्दों को गुमराह करता रहूँगा। अल्लाह ने फ़रमाया ﴿ما أبرى اغفرلهم مااستغفرونى﴾ मैं भी जब तक वे तौबा करते रहेंगे मॉफ़ करता रहूँगा। इसमें एक बात और समझने की है कि अल्लाह तआला की ज़ात असर से पाक ज़ात है असर से बाला तर ज़ात है। आप मुझ से ज़्यादती करें, मॉफ़ी मांगे। मैं मॉफ़ कर दूँगा। फिर ज़्यादती करें, फिर मॉफ़ी मांगे तो मैं कुछ देर लगाऊँगा चूँकि मेरे ऊपर असर हुआ

है इस ज़्यादती का। फिर कुछ देर बाद मॉफ़ कर दूँगा। फिर मेरे ऊपर ज़्यादती करें फिर मॉफ़ी मांगे तो फिर शायद मैं मॉफ़ न करूँ कि तूने क्या खेल बनाया हुआ है। इधर बेइज़्ज़ती करते हो, इधर मॉफ़ी मांगते हो क्यों? मेरे ऊपर असर है। मैं जब गुनाह करता हूँ तो उसका अल्लाह पर कोई असर नहीं होता, जो नेकी करता है अल्लाह पर उसका कोई असर नहीं होता। ﴿ولن تبلغو ضر فتضروني ولن تبلغو نفعي فتنفعوني﴾ तुम्हारी नेकी से मुझे कोई नफ़ा नहीं होता, तुम्हारे गुनाह से मुझे कोई नुक़सान नहीं होता। तुम सारे नेक हो जाओ मेरा मुल्क ज़्यादा नहीं होता, तुम सारे बदकार हो जाओ, मेरा मुल्क घटता नहीं। लिहाज़ा जब तौबा टूटे फिर आदमी सच्चे दिल से तौबा करे। अल्लाह क़ुबूल करता है ﴿استبني﴾ मुझ से तौबा मांगता है ﴿تبت عليه﴾ मैं उनको मॉफ़ कर देता हूँ। ﴿ان استطلعني﴾ फिर यह तोड़ कर आ जाता है या अल्लाह यह टूट गई फिर कर रहें हैं हम ﴿عقلت له﴾ मैं फिर जोड़ देता हूँ, चल मॉफ़ कर दिया लेकिन तौबा सच्चे दिल से हो। फिर टूट जाए, फिर कर ले, फिर टूट जाए, फिर कर ले। एक दिन यह तौबा करना इसको तौबा पर ले आए तो यह भाई यह तो सारे भाई नियत कर लें कि तौबा करके जाना है यहाँ से। अगर नमाज़ नहीं पढ़ी तो आज से नमाज़ शुरू कर दें। रोज़ा नहीं रखते हैं तो अब के आएंगे तो रखेगें और सर्दी आए तो उसकी क़ज़ा शुरू कर दें जो नहीं रखे तो उसकी क़ज़ा शुरू कर दें। जो नमाज़ें छोड़ी हैं तो हर नमाज़ के साथ एक नमाज़ क़ज़ा पढ़नी शरू कर दें। जिसकी नमाज़ें क़ज़ा हों वह सुन्नतों के बजाए क़ज़ा नमाज़ पढ़ें उसको यह हुक्म नहीं है तो क़ज़ाऐं पढ़ता रहे पूरी हो गयीं तो ठीक है नहीं तो अल्लाह मॉफ़ कर देंगे। किसी

का हक़ मारा है तो या मॉफ़ी मांग लें, किसी का माल तबाह किया है तो वापस कर दें। किसी से लड़ाई की है तो सुलह कर लें। ये हक़ूक़ुल इबाद में आ गया। किसी बड़े का, छोटे का, बीवी का, माँ का, बाप का, भाई का, बच्चों का, पड़ौसी का। जिसके कारोबार में ग़ल्ती है वह आज तौबा करे। वह तौबा ऐसी है जो आदमी आहिस्ता आहिस्ता उससे निकलता है। कारोबारी पेचीदगियां हैं उनसे अगर आज तौबा कर ले और कल मर जाए तो उसे पकड़ नहीं होगी। लेकिन तौबा ही न करे तो मारा जाएगा। आज तौबा करली, अल्लाह आज के बाद अपने कारोबार से हराम निकाल दूँगा। यह एक दिन में नहीं निकलेगा। अब इसको निकालना है। शुरू करें सौ से निन्नानवे पर आए, निन्नानव से अठ्ठान्नवे पर आए, अठ्ठान्नवे से सत्तान्नवे पर आए, सत्तान्नवे से पिच्चान्नवे पर आए। फिर करते करते सिफ़र पर आए। न एक दम कर सकता है और न एक दम करना चाहिए। हिम्मत नहीं होगी, छोड़ देगा। आहिस्ता आहिस्ता पीछे हटना शुरू करें तो एक दिन आएगा कि अल्लाह पाक उसे हर चीज़ से निकाल देगा।

ज़िक्र की कम से कम मिक्दारः

ऐ भाई! अपनी मस्जिदों को आबाद करें। नमाज़ के वक़्त में सारे गांव में कोई आदमी बाज़ारों और घरों में न बैठे। सब मस्जिद में आ जाएं। औरतें घरों में मुसल्ले पर और मर्द मस्जिद में सफ़ों पर, मसाइल उलमा के लिए हैं फ़ज़ाइल सब के लिए हैं। जन्नत क्या है? दोज़ख़ क्या है? इसके लिए कोई पेचीदगी नहीं। यह जन्नत है, यह जहन्नुम है। कुछ वक़्त बैठ कर ज़िक्र किया

करें। इसका अदना दर्जा है एक है तीसरे कलिमे की ﴿سبحان الله والحمد لله ولا اله الا الله والله اكبر﴾ एक तस्बीह इस्तिग़फ़ार की। असतग़फ़िरुल्लाह भी पूरा इस्तिग़फ़ार भी ﴿استغفر الله ربی من کل ذنب اتوب اليه﴾ इस से अच्छा यह है ﴿استغفر الله الذی لا اله الا هو الحی القيوم واتوب اليه﴾ एक तस्बीह इस्तिग़फ़ार की, एक तस्बीह तीसरे कलिमे की, और एक दरूद शरीफ़ की, एक सुबह एक शाम तो ये तीन सौ हो गए। तीन सौ सुबह तीन सौ शाम और सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। पूरा दरूद शरीफ़ ﴿اللهم صلی علی محمد وبارك وسلم﴾ भी पूरा दरूद शरीफ़ है। ﴿اللهم صلی علی محمد واله واصحابه وبارك وسلم﴾ भी पूरा दरूद शरीफ़ है और दरूदे इब्राहीमी जो नमाज़ का है वह सबसे अफ़ज़ल है वह सबसे आला है तो कोई पढ़ ले तो दो सौ दफ़ा हो गया। सुबह सौ दफ़ा, शाम सौ दफ़ा, दो सौ दफ़ा हो गया तो यह ज़िक्र करने वाला बन जाएगा। अपने घर वालों को भी सिखाए, बच्चों को भी, बेटियों को भी औरों को भी, औरतों को भी सब सिखाएं। हर मुसलमान ज़िक्र करने वाला हो गया। और अपनी कमाइयों में ज़मींदार है तो अश्र निकाले। पैसा जमा पड़ा हुआ तो ज़कात दे मसाइले तिजारत मालूम करें, मसाइल ज़राअत मालूम करें। अल्लाह ज़मींदारों से क्या चाहता है? अल्लाह ताजिरों से क्या चाहता है? उसके मुताबिक़ करें तो हमारा हर अमल जन्नत का रास्ता बन जाएगा। ठीक है न भाई करेंगे नां अच्छा।

□□□□□

अम्र बिल मारूफ़ (अच्छाई का हुक्म) नही अनलि मुन्कर (बुराई से रोकने) का हुक्म

وقال اللّٰه تعالیٰ یاأیها الناس ان وعد الله حق فلا
تغرنكم الحيوة الدنيا ولا يغرنكم بالله الغرور ○

وقال النبی ﷺ انكم علیٰ بينة من ربكم من مالم يغرغر فيكم
سكرتان، سكرة الجهل وسكرة قيل رانتم تجاهدون فی سبيل
الله، وتامرون بالمعروف تنهون عن المنكر فاذاغير كم حب
الدنيا فلا تجاهدون فی سبيل الله ولا تامرون بالمعروف ولا
تنهون عن المنكر والقائلون يومئذ بالكتاب والسنة كالصادقين،
الأولين من المهاجرين والأنصار أو كما قال ﷺ (الحديث)

सब अल्लाह की क़ुदरत हैः

मेरे मोहतरम भाईयों और दोस्तों! अल्लाह तबारक व तआला ने अपनी ज़ात को पर्दा-ए-ग़ैब में रखा और असबाब को ज़ाहिर फ़रमाया। चीज़ों को ज़ाहिर फ़रमाया और उनके असरात को ज़ाहिर फ़रमाया। इसमें जो अल्लाह की क़ुदरत जो काम कर रही है उसको छुपा दिया। पानी का चलना, बुख़ारात बन के उठना, बादल की शकल में बदलना, क़तरे बनकर बरसना, यह सब खुद नहीं इसमें अल्लाह की क़ुदरत चलती है वह क़ुदरत नज़र नहीं आती, यह ज़ाहिर निज़ाम नज़र आता है, ज़मींदार बीज को

ज़मीन में डालता है वह फटता है, कोंपल निकलती है, जड़ नीचे को चलती हे, शाख़ें निकलती हैं, डालियां बनती हैं, फल आता है, फूल लगते हैं, शग़ूफ़े फूटते हैं, यह सब नज़र आता है। इसमें अल्लाह की क़ुदरत है, अल्लाह का इरादा है। वह इसमें नज़र नहीं आता, बरक़ी चमक नज़र आती है, अल्लाह की क़ुदरत नज़र नहीं आती, चाँद की चाँदनी नज़र आती है, अल्लाह का इरादा उसमें नज़र नहीं आता, दिन का उजाला नज़र आता है, उसमें अल्लाह की क़ुदरत नज़र नहीं आती। काएनात की चीज़ें सामने हैं, बनाने वाला अपनी क़ुदरत और ताक़त और अपने ग़ैबी लश्करों के साथ हमारी नज़रों से ग़ाएब हो जाता है। इन्सान कमज़ोर है। वह यह समझता है जो कुछ हो रहा है चीज़ों के जोड़ तोड़ से हो रहा है और जो कुछ हुआ है सोने चाँदी, रेल-पेल, पैसे से गड्डियों से हो रहा है। यह अक़ीदा ग़लत है। अल्लाह तआला के नबियों की ख़बर यह है कि ज़मीन पर कोई चीज़ वजूद में नहीं आती जब तक आसमान पर फ़ैसला न हो। पहले अल्लाह तआला आसमान पर तय फ़रमाते हैं फिर ज़मीन पर उसको वजूद मिलता है। इसलिए अल्लाह तआला अपने बन्दे से यह चाहता है कि इन चीज़ों का बन के मत चले। कारोबार का ग़ुलाम बन के मत चले बल्कि अल्लाह का ग़ुलाम बन के चले। याद रखिए यहाँ वह होगा जो अल्लाह चाहता है, वह नहीं होगा जो हम चाहते हैं। ﴿عبدی انت ترید وانا ارید ولا یکون الا ما ارید﴾ ऐ इन्सान एक तेरा इरादा है एक मेरा इरादा है। अरे इन्सान! जो तू चाहता है वह मेरे बग़ैर नहीं हो सकता। जो अल्लाह चाहता है, अल्लाह कहता है जो मैं चाहता हूँ वह तुम सब के बग़ैर मैं कर लेता हूँ, जो मैं चाहता हूँ पहले तुम वह कर दो फिर

जो तुम चाहते हो वह मैं कर दूँगा।﴿وان لم تسلمنی فیما ارید اطعتك فیما ترید ولا یکون إلا ما أرید﴾ अगर तूने मेरी चाहत के ताबे अपनी चाहत को नहीं रखा तो मैं तेरी चाहतों में थका दूँगा और होगा फिर भी वही जो अल्लाह चाहता है। मेरे भाइयों! अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत के साथ नज़रों से ओझल है लेकिन अपनी निशानियों से पहचाना जाता है। ﴿سنریهم أیتنا فی الأفاق وفی انفسهم﴾ अल्लाह निशानियां दिखाएगा हमारे अन्दर भी और बाहर भी। अपनी क़ुदरत पर वह पहचाना जाएगा कि ज़मीन और आसमान में बादशाही भी अल्लाह ही की है, बनाने वाला भी अल्लाह तआला है। ﴿هوالذی جعل الشمس ضیاءً والقمرنورا﴾ और अल्लाह तआला ही ने सूरज को रौशनी बख़्शी और चाँद को चाँदनी बख़्शी, वह भी अल्लाह ही का काम है। ﴿الم تر کیف خلق الله سبع سمٰوٰت طباقا﴾ सात आसमान अल्लाह तआला ने बनाए। ﴿وجعل القمرفیهن نورا وجعل الشمس سراجاً﴾ सूरज चाँद का उसी ने निज़ाम चलाया कोई चाँदी दी है ऊपर रौशनी दी है। ﴿والله انبتکم من الارض نباتا﴾ हमें भी अल्लाह तआला ही ने पैदा किया, ज़मीन को भी अल्लाह ने बनाया। ﴿ثم یعیدکم فیها﴾ फिर ज़मीन में वापस ले जाएगा। ﴿ویخرجکم اخراجاً﴾ ज़मीन से फिर निकालेगा। ﴿والله جعل لکم الارض بساطا﴾ अल्लाह ही ने ज़मीन को बिछौना बनाया। ﴿الم نجعل الارض مهادا﴾ कौन है मेरे सिवा जिसने ज़मीन को बिछौना बनाया हो। मैं ही तो हूँ जिसने ज़मीन को बिछौना बनाया। ﴿والجبال اوتاداً﴾ मैं ही हूँ जिसने पहाड़ लगाए। ﴿وجعلنا الليل لباسا﴾ और रात को छिपने की चीज़ बनाया, तो अल्लाह तआला ने बनाई। ﴿وجعلنا النهار معاشا﴾ दिन को काम के लिए बनाया, तो अल्लाह तआला ने बनाया, रात अल्लाह के इरादे से

आई, दिन अल्लाह के इरादे से निकला। फिर रात अल्लाह के इरादे से खड़ी हो जाए तो कोई उसे दिन में बदल नहीं सकता। ﴿قل ارايتم ان جعل الله عليكم الليل سرمداً الى يوم القيامة﴾ अगर मैं रात को खड़ा कर दूँ (कब तक) क़यामत तक बारह घन्टे के बजाए छः घन्टे, सात घन्टे, आठ घन्टे नहीं। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं अगर इस रात को क़यामत तक खड़ा कर दूँ तो? ﴿من إله غير الله يأتيكم بضياء، افلا تسمعون﴾ तो लाओ मेरे अलावा कोई और ख़ुदा जो तुम्हारे लिए दिन को ला सके, तुम्हें कोई दिन नहीं दे सकता जब तक तुम्हारा अल्लाह न चाहे। फिर अल्लाह अपनी क़ुदरत को बताता है। ﴿قل ارايتم جعل الله عليكم النهار سرمداً﴾ अगर मैं दिन को खड़ा कर दूँ, दिन के बारह बजे सूरज को दर्मियान में खड़ा कर दूँ और उसको निकलने न दूँ, रात को आने न दूँ कब तक? ﴿الى يوم القيامة﴾ क़यामत तक। ﴿من إله غير الله﴾ कोई है मेरे अलावा? ﴿يأتيكم بليل﴾ जो कोई रात को ले आए। ﴿تسكنون فيه﴾ ताकि तुम आराम कर सको। ﴿افلا تبصرون﴾ और क्यों नहीं डरते हो, देखते क्यों नहीं हो? ﴿جعل لكم الليل والنهار﴾ तेरा अल्लाह है।

अल्लाह ने हर चीज़ को बग़ैर नमूने के बनाया:

जिसने अपनी रहमत के सदक़े में दिन को बनाया, रात को बनाया। यह सब अनोखी बात हैं। ﴿لتسكنوا فيه﴾ रात को आराम करो। ﴿ولتبتغوا تشكرون﴾ और दिन में काम करके रिज़्क़ को तलाश करो। ﴿ولعلكم تشكرون﴾ शायद कि अल्लाह का शुक्र अदा कर सको। अल्लाह का ख़ालिक़ होना इन आयात से समझ आ रहा है। ﴿والجبال ارسها﴾ पहाड़ लगाए। ﴿والى الارض كيف سطحت﴾ ज़मीन पर ग़ौर करके देखो तो सही! ﴿افلا ينظرون الى الابل﴾ ऊँट

में ग़ौर क्यों नहीं करते हो, क्या ग़ौर करें? ﴿كيف خلقت﴾ बनाने वाले ने बनाया कैसे? ﴿والى السماء كيف رفعت﴾ आसमान की तरफ़ निगाहें उठाकर ग़ौर क्यों नहीं करते हो कि इसके बनाने वाले ने इसको कैसे बनाया? ﴿والسماء بنينها﴾ तेरे रब ने बनाया अपने हाथों से। ﴿وانا لموسعون﴾ और उसको फैला दिया वुसअत दे दी। चारों तरफ़ इसको हमारे ऊपर छत बना दिया। ﴿انتم اشد خلقاً ام السمآء بنها﴾ तुम्हारा बनाना सख़्त है या आसमान का बनाना। ﴿رفع سمكها فسوّها﴾ इसकी छत को ऊँचा किया बराबर किया। ﴿واغطش ليلها واخرج ضحها﴾ फिर उसमें से दिन को निकाला, रात को निकाला। ﴿والارض بعد ذلك دحها﴾ ज़मीन को बिछाया। ﴿والجبال ارسها﴾ पहाड़ों को लगाया। ﴿اخرج منها مآءها ومرعها﴾ इसमें पानी को निकाला, इसमें चारे को निकाला। ﴿والجبال ارسها﴾ इसमें पहाड़ों को कील बनाके गाड़ा, किसके लिए? ﴿متاعالكم﴾ तुम्हारे लिए। ﴿ولا نعامكم﴾ तुम्हारे जानवरों के लिए। काएनात में तख़्लीक़ अल्लाह की ज़ात को हासिल है। अल्लाह ख़ालिक़ है सारी काएनात का, पूछना था अल्लाह ने सब कुछ बनाया फिर अल्लाह बारी है। ﴿الخالق، البارى﴾ बारी उस ज़ात को कहते हैं जो बग़ैर चीज़ों के कील बना दे। हमने लोहे से ये सब कुछ बनाया, लकड़ी से मेम्बर बनाया, लोहे से सारा स्टील बनाया। लोहे से ये बार्डर बनाये, पंखे बनाए। अल्लाह पाक ने बग़ैर लोहे के लोहा बनाया, पानी के बग़ैर पानी बनाया, सोने के बग़ैर सोना बनाया, इन्सान के बग़ैर इन्सान बनाया, जिन्नात के बग़ैर जिन्नात को पैदा फ़रमाया, जन्नत के बग़ैर जन्नत को बनाया, मिट्टी के बग़ैर मिट्टी को बनाया, हवा के बग़ैर हवा को बनाया, पानी के बग़ैर पानी बनाया, पत्थर के बग़ैर पत्थर, आग के बग़ैर आग को

बनाया, चौपाए के बग़ैर चौपाए बनाए, दो पाए के बग़ैर दो पाए बनाए, रेंगने वालों के बग़ैर रेंगने वाले बनाए, तैरने वालों के बग़ैर तैरने वाले बनाए, उड़ने वालों के बग़ैर उड़ने वाले बनाए। ﴿بلى وهو الخلاق العليم﴾ वह ज़बरदस्त पैदा करने वाला है, ज़बरदस्त इल्म वाला है, चीज़ों से चीज़ें बनायीं। दरख़्त से दरख़्त पैदा फ़रमाया, आम से आम बनाया, अगूंर से अगूंर बनाया, अनार से अनार बनाया। पहला आम ख़ुद बनाया, पहला अगूंर ख़ुद बनाया, पहला अनार खुद बनाया, पहली खुजूर को खुद बनाया, पहली नारंगी खुद बनाया, यह अपनी क़ुदरत से बराहे रास्त बना दे। चीज़ों से चीज़ें बना दें। यह ख़ालिक़ है, बारी है। ﴿المصور﴾ तस्वीर बनाने वाला। बग़ैर नमूने के तस्वीर बनाई, बग़ैर किसी मॉडल के बनाया।﴿البديع﴾ बदीअ कौन सी ज़ात है? जिसके सामने कोई नमूना न हो और अपने इल्म से नमूना अता फ़रमा दे। इन्सान की शक्लों के नमूने, पहाड़ों के नमूने, चौपाए के नमूने, दो पाए के नमूने, पतंगों के नमूने, तितलियों के नमूने। यह मकड़ी सिर्फ़ एक मकड़ी जैसी ख़फ़ीफ़ मख़लूक़ दस हज़ार क़िस्में हैं। एक मकड़ी जैसी मख़ूलक़ से दस हज़ार क़िस्म की मकड़ीं पैदा फ़रमा लीं। बग़ैर मॉडल के मॉडल बनाया। मक्खी का मॉडल बनाया, पतंगे का मॉडल बनाया, इन्सान का मॉडल बनाया, दर्ख़तों का मॉडल बनाया, फलों के रंग बनाए, मॉडल बनाए, बदीअ। ﴿هو الله الذى لا اله الا هو﴾ वह एक है, वह अकेला है उसका शरीक नहीं, उसका वज़ीर नहीं, उसका मुशीर कोई नहीं। ﴿ولم يتخذ صاحبة﴾ उसकी बीवी कोई नहीं। ﴿ولا ولد﴾ उसका बच्चा कोई नहीं। ﴿ولم يكن له شريك﴾ उसका शरीक कोई नहीं।﴿ولم يكن له ولى من الذل﴾ उसकी किसी कमज़ोरी की वजह से

मददगार कोई नहीं, दोस्त कोई नहीं, अपनी ज़ात में अकेला, अपनी सिफ़ात में अकेला, अपनी क़ुदरत में अकेला, अपनी बादशाही में अकेला, अपनी किबरियाई में अकेला और सारी काएनात का अकेला, ख़ालिक़ है, तख़लीक़ उसका ख़ास्सा है और कोई उसकी ख़िलक़त में, उसकी तख़लीक़ में कोई उसका शरीक नहीं है। सारे निज़ाम को बनाकर खिलाया भी अल्लाह तआला ने, मालिक भी अल्लाह तआला है। यह सारे निज़ाम को बना के न वह थकता है न वह थका, न वह सोया। पेट में क्या है अंडा, अंडे में क्या है? सब अल्लाह के इल्म में है, पूरी किताब की तरह।﴿كل شئ عنده بمقدار﴾ हर चीज़ अन्दाज़े के साथ है।﴿عالم الغيب﴾ ग़ैब का जानने वाला।﴿والشهادة﴾ हाज़िर का जानने वाला। ﴿الكبير المتعال﴾ बड़ी ज़ात, ऊँची ज़ात, बुलन्द ज़ात। ﴿سواء منكم من اسر القول ومن جهر به﴾ तुम ज़ोर से बोलो, आहिस्ता बोलो, वह जानने वाला है।﴿ومن هو مستخف بالليل﴾ रात को छिप के चलने वाला अल्लाह से नहीं छिप सकता। इन्सान तो दिन में लोगों से छिप जाता है। अल्लाह तआला कहता है रात के अन्धेरे में भी छुपना चाहो तो मुझ से नहीं छुप सकता।﴿ وسارب بالنهار﴾ दिन में चले या रात में चले, आहिस्ता चले, ज़ोर से चले, आहिस्ता बाले, ज़ोर से बोले, ख़ालिक़ अल्लाह है फिर मालिक अल्लाह है।﴿الله مالك السموٰت والارض﴾ ज़मीन अल्लाह की, आसमान अल्लाह का।﴿الله ما فى السموٰت وما فى الارض﴾ ज़मीन भी अल्लाह की, आसमान भी अल्लाह का, जो कुछ ज़मीन व आसमान में वह भी अल्लाह तआला का, सारी काएनात।﴿الا ان الله من فى السموٰت﴾ पूरी काएनात में ज़मीन के अन्दर, ज़मीन के ऊपर, आसमान के नीचे, आसमान के ऊपर, जो भी है सब

अल्लाह का है। ﴿له ما في السموات﴾ आसमान, जो आसमानों में है।﴿وما في الارض﴾ ज़मीन, जो ज़मीन में है।﴿وما بينهما﴾ ज़मीन व आसमान के दर्मियान जो कुछ हे वह अल्लाह तआला का है, कोई उसका शरीक नहीं।﴿الله لا اله الا هو﴾ वह एक अकेला अल्लाह है।﴿الحي القيوم﴾ वह ज़िन्दा है, वह क़ायम है।﴿فان تولوا فقل حسبي الله لا اله الا هو﴾ अगर यह तेरा साथ छोड़ दे तो कह दे मेरा अल्लाह मुझे काफ़ी है, जो अकेला है जिसका कोई शरीक नहीं। ﴿رب المشرق﴾ मशरिक़﴿رب المغرب﴾ वह मग़रिब का रब है।﴿لا اله الا هو﴾ कोई उसका शरीक नहीं।﴿رب المشرقين﴾ वह मशरिक़ैन का रब﴿ورب المغربين﴾ वह मग़रिबैन का रब﴿رب المشارق و المغارب﴾ वह मशारिक़ का रब वह मग़ारिब का रब﴿رب السموات والارض وما بينهما﴾ ज़मीन का रब आसमान का रब, ज़मीन व आसमान के दर्मियान का रब। अल्लाह तआला ख़ुद फ़रमाता है﴿قل لمن الارض ومن فيها﴾ इनसे पूछो ज़मीन आसमान किस का है?﴿فيقولون الله﴾ कहेंगे अल्लाह का है, अल्लाह की बादशाही है।﴿افلا تذكرون﴾ फिर तुम नसीहत क्यों नहीं पकड़ते? उनसे पूछो﴿قل من رب السموات والارض ورب العرش العظيم﴾ कौन है सातों आसमानों का रब और कौन है अर्शे अज़ीम का रब?﴿سيقولون الله﴾ कहेंगे अल्लाह ही है। ﴿افلا تتقون﴾ और उनसे कहो डरते क्यों नहीं?﴿قل من بيده ملكوت كل شئ﴾ इन से पूछो कौन है जिसके हाथ में काएनात की बादशाही है?﴿وهو يجير﴾ जो पनाह दे सकता है﴿ولا يجار عليه﴾ जिसको वह पनाह न दे काएनात में कोई उसको पनाह नहीं दे सकता ﴿ان كنتم تعلمون﴾ अगर तुम समझ रखते हो तो बताओ कौन है ज़मीन व आसमान का बादशाह? किस के हाथ में है ज़मीन व आसमान की

लगाम? ﴿سيقولون الله﴾ कहेंगे अल्लाह ही के हाथ में है। पस तुम उनसे पूछो तुम पर किस ने जादू कर दिया? रूपए की छंक ने सोने चाँदी की चमक ने, माल की मुहब्बत ने तुम पर जादू कर दिया, अल्लाह से हटा दिया, मालिक भी अल्लाह है।

अल्लाह जो चाहता है वही होता है:

मेरे भाईयों! यहाँ सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की चलती है किसी और की नहीं चलती। बादशाह भी अल्लाह, मालिक भी अल्लाह, ख़ालिक़ भी अल्लाह और होता यहाँ वह है जो अल्लाह चाहता है। ﴿يفعل ما يشاء﴾ जो चाहे तेरा अल्लाह करे। ﴿وربك يخلق ما يشاء ويختار﴾ तेरा अल्लाह जो चाहे कर दे जो चाहे पसन्द करे। ﴿ما كان لهم الخيرة﴾ तुम्हें कोई इख़्तियार नहीं, अल्लाह को सारा इख़्तियार है। ﴿فعال لما يريد﴾ जो चाहता है कर देता है। ﴿يهدى من يشآء﴾ जिसे चाहे हिदायत दे, ﴿يضل من يشآء﴾ जिसे चाहे गुमराह कर दे, ﴿يغفر لمن يشآء﴾ जिसको चाहे मॉफ़ कर दे। ﴿يفتح الرزق لمن يشآء﴾ जिसकी चाहे रोज़ी खोल दे। ﴿تؤتى الملك من تشآء﴾ जिसको चाहे बादशाही दे दे, ﴿تنزع الملك ممن تشآء﴾ जिससे चाहे बादशाही को ले ले, ﴿وتعز من تشآء﴾ जिसको चाहे इज़्ज़त दे दे, ﴿وتذل من تشآء﴾ जिसको चाहे ज़लील कर दे, ﴿بيدك الخير﴾ सारी भलाईयों का अकेला अल्लाह मालिक है। जन्नत में डाले उसकी मर्ज़ी, दोज़ख़ में डाले उसकी मर्ज़ी। ﴿يختص برحمته من يشآء﴾ जिसको चाहे अपनी रहमत के साथ ख़ास कर ले। ﴿وينصر من يشآء﴾ जिसकी चाहे मदद कर ले, जिसको चाहे छोड़ दे।

अल्लाह की चाहत पर अपनी चाहत क़ुर्बान करोः

मेरे भाईयों! यहाँ अल्लाह की चाहत चलती है, बादशाहों की चाहत नहीं चलती, ताजिरों की चाहत नहीं चलती, मेरी चाहत नहीं चलती, आपकी चाहत नहीं चलती, हुकूमत पाकिस्तान हो, हुकूमत अमरीका हो, सात बर्रे आज़म के इन्सानों की हुकूमत हो, यहाँ जिबराइल की चले न मीकाइल की चले, यहाँ न फ़रिश्तों की चले, न नबियों की चले, यहाँ सिर्फ़ अल्लाह की चलती है, क़ुरआन की आयत खोल खोल कर बता रही हैः

يفعل الله ما يشآء ، يخلق ما يشآء، وربك يخلق ما يشآء ويختار،
ويعذب من يشآء، يغفر لمن يشآء، ويعذب من يشآء، تؤتى
الملك من تشآء، وتنزع الملك ممن تشآء، وتعز من تشاء و تذل
من تشآء، يفتح الرزق لمن يشآء، وينصر من يشآء، يختص
برحمة من يشآء ، وما تشاوون الا ان يشآء الله رب العالمين.

यह सारी आयतें बता रही हैं कि इस जहाँ में अल्लाह का चाहा चलता है, पैसे वालों की चाहत नहीं चलती, ग़रीबों की नहीं चलती, मालदारों की नहीं चलती, बादशाहों की नहीं चलती, अल्लाह की चलती है, अल्लाह की, जो अल्लाह चाहे कर दे, हम भी तो अपनी चाहत को पूरा करना चाहते हैं न, हम अपनी चाहत को उसके बग़ैर पूरा नहीं कर सकते। उसके बग़ैर हम ज़िन्दा ही नहीं रह सकते। एक रास्ता है अपनी चाहत को पूरा करने का, ﴿من يشآء﴾ जो जी में आए कर लो। एक रास्ता है नबियों ने बताया, जो अल्लाह ने बताया, अपनी किताब में बताया कि मेरी मान के चलो, इज़्ज़त चाहते हो अल्लाह देगा, अल्लाह से ले लो, माल चाहते हो, अल्लाह देगा, ज़िन्दगी चाहते

हो तो अल्लाह देगा, रिज़्क़ चाहते हो तो अल्लाह देगा, औलाद चाहते हो तो अल्लाह देगा, इज़्ज़त चाहते हो तो अल्लाह देगा, सेहत चाहते हो तो अल्लाह देगा, मुहब्बत चाहते हो तो अल्लाह देगा, औलाद चाहते हो तो अल्लाह देगा, कारोबार की बरकत चाहते हो तो अल्लाह देगा, दुश्मन से बचना है तो अल्लाह बचाएगा, फ़रवानी लाएगा तो अल्लाह लाएगा, बरकत लाएगा तो अल्लाह लाएगा, ज़मीन के ख़ज़ाने निकलेगें तो अल्लाह के इरादे से निकलेंगे, बारिश बरवक़्त होगी तो अल्लाह लाएगा, बादल रहमत के आए तो अल्लाह के इरादे से आएंगे, अज़ाब की हवाए न चलें तो अल्लाह की चाहत से रुकेंगी, रहमत की हवा चले तो अल्लाह की चाहत से चलेगी, अल्लाह के इरादे से चलेगी, मुसीबतों के बादल थम जाएं तो अल्लाह के इरादे से थमेंगे, मुहब्बतें क़ायम हों जाए तो अल्लाह के इरादे से होंगी, दुश्मनों पर रौब पड़े तो अल्लाह के इरादे से होगा, दुश्मन मरऊब हो जाए तो अल्लाह पाक के इरादे से होगा, औलाद फ़रमा बरदार होगी तो अल्लाह के इरादे से होगी, मियाँ बीवी में मुहब्बत होगी तो अल्लाह के इरादे से होगी, अड़ौस पड़ौस अच्छा मिलेगा तो अल्लाह के इरादे से होगा, हमारा रौब छा जाए तो अल्लाह पाक के इरादे से होगा, हमारी ज़िन्दगी में बरकत हो तो अल्लाह के पाक के इरादे से होगी, क़ब्र के अज़ाब से बचना है तो अल्लाह बचाएगा, ईमान पर मरना है तो अल्लाह ईमान पर मारेगा, जन्नत चाहिए तो अल्लाह देगा, दोज़ख़ से बचना है तो अल्लाह बचाएगा, हिसाब से बचना है तो अल्लाह बचाएगा, हिसाब को आसान करवाना है तो अल्लाह करवाएगा, पुल सिरात से गुज़रना है तो अल्लाह गुज़ारेगा, फ़िरदौस लेनी, जन्नत लेनी है, बख़्शिश

लेनी है यह अल्लाह के इरादे से होगा, काम अल्लाह ही से होगा, पैसे से नहीं होता, नोटों से काम नहीं बनता।

अल्लाह तआला की इबादत हर वक़्त करनी चाहिएः

काम अल्लाह बनाते हैं, दुनिया का दस्तूर कुछ और है, आख़िरत का कुछ और है। यहाँ फ़रमा बरदार को भी देगा नाफ़रमान को भी देगा। ﴿عبدی یا بن آدم﴾ ऐ इब्ने आदम! एक काम तेरे ज़िम्मे है तू मेरी मान कर चल। यह तेरे ज़िम्मे है मैं तुम्हें रोज़ी दूँ यह मेरे ज़िम्मे है। मुझे ऐसा लगता है जैसे यह शर्त है अल्लाह की मानेगा तो अल्लाह देगा, अगर अल्लाह की नहीं मानेगा तो अल्लाह नहीं देगा। अल्लाह ने आगे बात फ़रमाई तू अपना काम छोड़ भी दे तो मैं अपना काम नहीं छोड़ूंगा, तू मेरी इबादत करना छोड़ दे, मेरी इताअत करना छोड़ दे तो जो मेरे ज़िम्मे है, मैंने अपने ऊपर फ़र्ज़ कर लिया है वह मैं नहीं छोड़ूंगा। मौत तक तुझे रिज़्क़ दूँगा, मौत के बाद क्या होगा? ﴿وامتازوا الیوم ایھا المجرمون﴾ ऐ मुजरिमों! आज तुम नेकों से अलग हो जाओ, आज फ़रमा बरदारों से अलग हो जाओ। ﴿یوم یاتی﴾ जब वह दिन आ जाएगा। ﴿لا تکلم نفس الا باذنه﴾ उस दिन अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर कोई बोल नहीं सकेगा। ﴿فمنھم شقی وسعید﴾ आज कुछ नेक बख़्त, आज कुछ बद बख़्त, कुछ जहन्नुम जा रहे, कुछ जन्नत को जा रहे, वह मस्अला भी अल्लाह हल करेगा, यह मस्अला भी अल्लाह हल करेगा। अल्लाह को राज़ी किए बग़ैर मस्अला हल नहीं होगा। अल्लाह की क़सम पैसे से चार दिन मस्अला हल होगा, मरते ही पैसा पराया और दुनिया में पराया हो रहा है। पैसे से हम मुहब्बत नहीं ख़रीद सकते, पैसे से

सुकून नहीं ख़रीद सकते, हम पैसे से माँ बाप की मुहब्बत नहीं ख़रीद सकते, पैसे अमन, चैन, सकून नहीं ख़रीद सकते, तो अल्लाह तआला ही क़ादिरे मुतलक़ ज़ात। ﴾المومن﴿ अमन देने वाला, ﴾السلام﴿ कोई है सलामती देने वाला, ﴾المهيمن﴿वह निगेह बान हिफ़ाज़त करने वाला, न पैसे से हिफ़ाज़त, न हथियारों से हिफ़ाज़त, न दवाओं से सेहत, न पैसे से इज़्ज़त, न ग़ुरबत से ज़िल्लत बल्कि मुहिब अल्लाह की ज़ात, मन्ज़िल अल्लाह की ज़ात, अल्लाह की ज़ात मुहीन, अल्लाह की ज़ात जब्बार, अल्लाह की ज़ात क़ादिर।

अल्लाह का अपने बन्दों से ख़िताबः

अल्लाह की ज़ात वह क़ादिर, हम मक़्दूर, वह जाबिर हम मजबूर, वह ख़ालिक़ हम मख़लूक़, वह राज़िक हम मरज़ूक़, वह रब हम मरऊब, वह मालिक हम ममलूक, हम उसके बन्दे हैं, हम उसके ग़ुलाम हैं, उसने हमें अपने अमूरे कुन से बनाया है, गन्दे पानी से बनाया है। ﴾الم يك نطفة من منى يمنى﴿ ऐ इन्सान! तू गन्दे पानी से बना, तुम वह दिन भूल गए, तू अपनी पैदाइश को भूल गया है कभी इस पर ग़ौर तो कर। ﴾خلق من ماء دافق﴿ तू उछलते हुए पानी से पैदा हुआ। ﴾من نطفة امشاج﴿ मर्द औरत के पानी से पैदा हुआ। ﴾من حما﴿ गन्दगी बदबूदार मनी से पैदा हुआ, आज तू मेरा दुश्मन बन गया। ﴾يا ابن آدم من اوصل اليك الغذاء وانت فى بطن امك﴿ मेरे बन्दे वह दिन याद कर जब तू माँ के पेट में था तुझे रोज़ी किसने पहुँचाई थी, ﴾لم ازل ادبر فيك تدبير﴿ मेरा निज़ाम चला मेरी तदबीर चली, ﴾حتى انفذت ارادتى فيك﴿ मेरा इरादा तेरे अन्दर दाख़िल हो गया, ﴾اخرجتك الى دار الدنيا﴿ मैं तुझे दुनिया में लाया

फ़रिश्ते के पर पर लाया और तूने मेरे साथ क्या मामला किया जब तू जवान हुआ, परवान चढ़ा, ﴿فلما تراك و عبدك السوء﴾ अरे बुरे इन्सान तू मेरा नाफ़रमान बन गया, ﴿اهكذا جزاء احسن اليه﴾ अहसान करने वाले का यही बदला होता है कि मैं तेरे ऊपर एहसान करूँ और तू एहसान का बदला यह दे कि मेरा नाफ़रमान हो जाए, ﴿مع ذلك ان سالتى اعطيتك﴾ तेरी इन सारी नाफ़रमानियों के बाद तू मांगता है मैं देता हूँ, ﴿ان ستغفرنى غفرت لك﴾ तू मॉफ़ी मांगता है मैं मॉफ़ करता हूँ, ﴿ان ستقلتى فاقبلت لك﴾ तू कहता है या अल्लाह पिछली तौबा मैं ने तोड़ दी अब मैं दोबारा तौबा कर रहा हूँ, मैं तेरी तौबा दोबारा क़ुबूल कर लेता हूँ, यह नहीं कि एक दफ़ा तौबा क़ुबूल करता हूँ फिर नहीं करता हूँ तू ने एक दफ़ा की मैं ने मॉफ़ कर दिया, ﴿ان ستقالنى﴾ फिर तू ने तोड़ कर दोबारा तजदीद चाही, ऐ अल्लाह दोबारा हो जाए तौबा पिछली टूट गई, ﴿فاقبلت لك﴾ मैं फिर तेरी तौबा क़ुबूल कर लेता हूँ। कोई है मुझसे बड़ा सख़ी, सख़ावत करने वाला, कोई है मुझसे बड़ा करीमकरम करने वाला, तू मुझे छोड़ कर कहाँ जा रहा है? ﴿يا ابن آدم ان ذكرتنى ذكرتك وان نسيتنى ذكرتك﴾ तू मुझे याद रखता है मैं तुझे याद रखता हूँ तू मुझे भूल जाता है मैं फिर भी तुझे याद रखता हूँ, तू मेरी तरफ़ चल कर आता है, ﴿من تقرب الى﴾ जो मेरी तरफ़ चल कर आया, ﴿فلقيته عن بعيد﴾ मैंने आगे बढ़ कर उसका इस्तिक़बाल किया। ﴿ومن اعرض عنى﴾ और जिसने मुझसे मुँह मोड़ लिया, पीठ फेर ली और फिर नाफ़रमानी के रास्ते की तरफ़ चल पड़ा मैं फिर भी उसका ख़्याल करता हूँ, मैं क़रीब जाकर उसको आवाज़ देता हूँ कि मेरे बन्दे मेरी तरफ़ आ जा, तुझे यहाँ पनाह मिलेगी, शैतान के साए में पनाह नहीं,

ख़्वाहिशात और लज़्ज़ात के पीछे दौड़ने वाले हमेशा तबाही व बरबादी का शिकार हुए, उधर को मत चल, इधर को आ, तेरी निजात मेरे हाथ में है, मेरे साए में है, मेरे दामन में है, मेरा बन जा सब कुछ तेरा हो जाएगा। ﴿من كان لله كان الله له﴾ जो अल्लाह का हो जाता अल्लाह उसका हो जाता है।

अल्लाह को तौबा बहुत पसन्द हैः

मेरे भाईयों! हम अल्लाह के बन जाएं फिर सारे मस्अले का हल अल्लाह के हाथ में है। हमारे मसाइल तिजारत से हल नहीं होते, ज़मींदारी से हल नहीं होते, ऐटमी ताक़त बनने से हमारा मस्अला हल नहीं होगा, हुनैन का दिन याद करो मेरे भाईयों! जब बारह हज़ार मुसलमानों ने कहा आज हमें कोई नहीं हरा सकता और ये बारह हज़ार हमारे जैसे नहीं थे। ये सहाबा थे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम जिनके जैसा न धरती ने देखा न देखेगी। ﴿خير الخلائق بعد الانبياء﴾ जो नबियों के बाद सबसे अफ़ज़ल तरीन मख़्लूक़ थी, उनकी ज़ुबान से निकला हम ताक़तवर हैं, हमें कोई हरा नहीं सकता, अल्लाह पाक ने ऐसी शिकस्त दी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अकेला छोड़ कर भाग गए। ऐटमी ताक़त बनने से मस्अला हल नहीं होगा, तौबा करने से मस्अला हल होगा, अल्लाह की तरफ़ झुकने से मस्अला हल होगा, अल्लाह के दामन में पनाह लेने से मस्अला होगा, तौबा करें मेरे भाईयों अल्लाह को तौबा कितनी पसन्द है, अल्लाहु अकबर, अल्लाह की शान यह है अल्लाह यूँ नहीं चाहेगा कि अब आए तौबा करने, पहले कहाँ गए थे? अल्लाह यूँ नहीं कहेगा अब आए मॉफ़ी मांगने, पहले कहाँ गए

थे? बाप कहेगा, भाई कहेगा, दोस्त कहेगा, बीवी कहेगी, ख़ाविन्द कहेगा, अल्लाह यह नहीं कहता। हज़ार साल की ज़िन्दगी हो, दस हज़ार साल की ज़िन्दगी हो, एक लाख साल की ज़िन्दगी हो और वह गुनाह में गुज़ारीं हो तो अल्लाह यह नहीं कहेगा तूने दस साल मेरी नाफ़रमानी की और मैं तुझे दस मिनट की तौबा पर मॉफ़ कर दूँ

मेरे दोस्तों वहाँ ऐसा मामला नहीं है बल्कि हदीस क़ुदसी में आता है ﴿يا ابن آدم يوم لو بلغت ذنوبك عنان السماء﴾ ऐ मेरे बन्दे! तू इतने गुनाह करे कि सारी ज़मीन भर दे, फिर ख़ला को भर दे, आसमान तक तेरे गुनाह चले जाएं, इतने गुनाह करने के लिए कितनी ज़िन्दगी चाहिए? करोड़ों साल भी कम हैं इतने गुनाह करने के लिए, तो अल्लाह क्या कह रहा है तुझे इतनी ज़िन्दगी दूँ, इतने असबाब दूँ और इतनी ढील दूँ कि तू इतने गुनाह करे कि ज़मीन भर जाए, समन्दर भर जाएं, पहाड़ों के ऊपर चले जाएं, सूरज काला हो जाए, चाँद की चाँदनी कहीं चली जाए, सितारों में भी गुनाह भर जाएं और ख़ला में भी भर जाएं और आसमान की छत के बराबर जाकर तेरे गुनाह चले लग जाएं तो कितने करोड़ साल होंगे और कितना बड़ा यह मुजरिम होगा और अल्लाह तआला कहता है कि सिर्फ़ एक बोल बोल दे कि या अल्ल्लाह मॉफ़ कर दे तो मैं तेरे सारे गुनाह मॉफ़ कर दूँगा मुझे कोई परवाह नहीं। ﴿غفرت لك ولا ابالي﴾ हमारा मामला भी किसी दुनियावी बादशाह से नहीं, किसी थाने दार से नहीं, सिर्फ़ अल्लाह करीम की ज़ात से है। अल्लाह तआला की सिफ़ात की कोई हद नहीं।

अहले इल्म हज़रात दो सिफ़्तों में अल्लाह की तारीफ़ लिखते हैं। क़हर और ग़सब, यूँ समझ लीजिए ﴿قہار، غفار﴾ ये दो सिफ़्ती नाम अल्लाह की तमाम सिफ़ात को घेरे डालती हैं, ग़सब करने वाला, गुस्से वाला, रहम वाला, करम वाला, फिर अल्लाह तआला इन दोनों सिफ़्तों को मुक़ाबला डाला कि ऊपर एक बहुत बड़ी तख़्ती है। उसकी लम्बाई चौड़ाई अल्लाह पाक के सिवा कोई नहीं जानता तो अल्लाह ने ख़ुद अपने इरादे से इसके ऊपर लिखा हुआ है ﴿ان رحمتی سبقت غضبی﴾ मेरी रहमत मेरे गुस्से से आगे है।

अल्लाह तआला की नेमतें:

मज़े हो गए भाई, क्या करें? भाई तौबा कर लें। शैतान क्या कहता है अल्लाह बड़ा ग़फ़ूरुर-रहीम है, लिहाज़ा बस काम करो, झूठ भी बोलो, शराब भी पियो, रिशवत भी लो। बस ये काम करो, क्यों करो कि अल्लाह बड़ा ग़फ़ूरु रहीम है। यह अजीब फ़लसफ़ा चल पड़ा है। अल्लाह बड़ा मेहरबान है जी, लिहाज़ा सब झूठ, रिशवत, बदयानती, ख़्यानत तमाम काम करो क्योंकि अल्लाह बड़ा मेहरबान है। हाँ भई कुत्ते से सबक़ लो एक रोटी के साथ वह वफ़ा करता है कि सारी ज़िन्दगी आपका दर नहीं छोड़ता, आप उसको मारें तो आगे दूं करता है काटता नहीं है। आपके सामने लेट जाता है और पिटने को तैयार हो जाता है। दो दिन रोटी न डालो आपके दर को छोड़ कर दूसरे के दर पर नहीं जाता। अल्लाह थोड़ा उसे झटकारा दे दे तो सब की हाए हाए, हम ही मिलें हैं अल्लाह को और कोई मिला ही नहीं। तो भाई अल्लाह करीम है तो हम क्या करें? हम तौबा करें, जो मेरे

ऊपर इतना एहसान कर रहो है तो मैं भी इस एहसान का बदला दूँ जिसने हवाओं को हुक्म दिया कि चलों मेरे बन्दे के लिए, कभी बादलों के टोले लेकर कभी कशतियों को लेकर, जिसने ज़मीन को हुक्म दिया कि निकालो अपने ख़ज़ाने, कभी सोने की शकल में, कभी चाँदी की शकल में, कभी पीतल की शकल में, कभी लोहे की शकल में, कभी तांबे की शकल में, कभी खोट की शकल में, कभी तलवारों की शकल में। जिस तरह बादलों का हुक्म दिया कि बरसों मेरे बन्दों पर क़तरा क़तरा बन के।

انّا صببنا المآء صبا ثم شققنا الارض شقا فانبتنا
فيها حبا وعنبا و قضبا وزيتونا و نخلا و حدآئق
غلبا وفاكهة وابا متاعا لكم ولانعامكم

हवाएं चलीं, बादल उठे, फ़र्श से क़तरा क़तरा बन के ज़मीन पर फैली, दाना पानी अन्दर गया, बुलबुल ज़रख़ेज़ हुई फिर हमने दाना डाला उसकी एक शाख़ ऊपर गई, उसकी जड़ नीचे गई, उसको गिज़ा पहुँचाई। ज़मीन की रगों से पानी समेट कर जड़ तक गिज़ा को पहुँचाया फिर उसको ऊपर उठाया जो ऊपर उठाया है कहीं शाख़ निकली, कहीं डाली निकली, कहीं फूल निकले, कहीं शगूफ़ा निकला, कहीं फल निकला, उसमें मिठास डाली, उसमें रस भरा, इसमें ज़ाएक़े बदले, इसमें ज़ाएक़े भरे, हर रंग अलग, मिठास अलग, ख़ुशबू अलग। हद एक पर नाम लिखा, फ़रिश्तों को मुक़र्रर किया कि जब तक यह आम मेरे बन्दे के मुँह में चला न जाए मेरे पास लौट कर मत आना। इतने बड़े रहम करम के निज़ाम चलाने वाले के सामने सिर झुकाने के बजाए शैतान के सामने झुकाएंगे तो कहाँ जाएंगे?

अल्लाह तो तौबा क़ुबूल करने के लिए तैयार हैः

तो भाईयों! हम अल्लाह के सामने झुक जाएं, तौबा कर लें। तबलीग़ कोई पेचीदा चीज़ नहीं है, यह कोई फ़लसफ़ा नहीं है, अपने अल्लाह को राज़ी करने की आसान सी मेहनत है, हाँ भाई हम अल्लाह को राज़ी कर लें वह तो राज़ी होने को तैयार बैठा है। क्या कहा?

ولا يرضىٰ لعباده الكفر، مايفعل الله بعذابكم إن شكرتم وامنتم
وكان الله شاكراً عليما، ان تشكروا يرضه لكم (القرآن)

वह तो राज़ी होने को तैयार बैठा है कि तुम आओ और देखो रहमत को।

बनी इसराईल में क़हत आ गया। लोग आए मूसा अलहिस्सलाम के पास कि जी दुआ करो, बारिश नहीं हो रही है, वह सत्तर हज़ार आदमियों के साथ निकले या अल्लाह! बारिश दे दो, नफ़िल पढ़े धूप तेज़ हो गई। मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की या अल्लाह! हमने बारिश मांगी, आपने धूप को तेज़ कर दिया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया इस मजमे में एक आदमी है। वह चालीस साल से मेरी नाफ़रमानी कर रहा है, जब तक वह इस मजमे में मौजूद है तो मैं बारिश नहीं दूँगा, वह यहाँ से निकल जाए तो तब बारिश करूंगा, तो मूसा अलैहिस्सलाम ने ऐलान किया कि भाई जो इस क़िस्म का आदमी है वह मजमे से निकल जाए, सब को महरूम न करे। अब इस आदमी को पड़ गई मुसीबत, दाएं देखा तो कोई नहीं निकला, बाएं देखा तो कोई नहीं निकला, आगे पीछे देखा कोई नहीं निकला। सोच में पड़ा। ﴿لو خرجت لفتضحت نفسه﴾ बाहर निकलूं तो मारा जाऊंगा, ज़लील हो

जाऊंगा, रुसवा हो जाऊंगा और खड़ा रहूँ तो बारिश नहीं हो, करूं तो क्या करूं, अब तौबा का ख़्याल आया। अब यह जो तौबा कर रहा है तो यह तौबा नम्बर एक नहीं यह तो दो नम्बर है। अल्लाह की मुहब्बत में तौबा नहीं, अपनी बेइज़्ज़ती के डर से तौबा करना चाहता है, यह ज़हन में रहे कि यह तो अल्लाह के डर के लिए नहीं। यह तौबा तो अपनी बेइज़्ज़ती, अपनी ज़िल्लत के डर से तौबा और अल्लाह का मामला इसके बावजूद क्या है, कहने लगा या अल्लाह! ﴿يا الله ان يتك اربعين سنة فتمهلني فا قبلني﴾ ऐ अल्लाह! मैंने चालीस साल तेरी नाफ़रमानी की और तू मुझे मोहलत देता रहा। मेरे पर्दे रखे, मुझे बेइज़्ज़त नहीं किया, ऐ अल्लाह अगर आज तूने मॉफ़ न किया तो मैं ज़लील हो जाऊँगा, या अल्लाह मेरी तौबा क़ुबूल फ़रमा ले, अभी इसके अलफ़ाज़ पूरे भी नहीं हुए थे कि हवा चली घटा उठी, अब्र आया, बरसा, सारा रिम झिम पानी ही पानी। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा या अल्लाह! निकला तो कोई नहीं, बारिश कैसे हो गई? अल्लाह तआला ने फ़रमाया जिसकी वजह से रुकी थी उसकी वजह से कर दिया, तो अल्लाह तो इतनी जल्दी मान जाता है, इतना करीम है। इन्सान क्या कहता है? नहीं मैं ने अभी मॉफ़ नहीं करना, पहले इनको ठीक करना है। अपनी तो होश कोई नहीं। मेरे ऊपर शैतान कितना ग़ालिब है। अल्लाह को देखो कैसे मॉफ़ कर रहा है। मूसा अलैहिस्सलाम बड़े हैरान हुए कहा या अल्लाह! वह कैसे? अल्लाह ने बड़ा ख़ूबसूरत सा जुमला बोला ﴿تـــاب الـــى وتــبــت عــلــيــه﴾ उसने तौबा कर ली हमने सुलह कर ली। चल भई चालीस साल का गुनाह कबीरा, अब देखें कितने बड़े गुनाह थे कि उन गुनाहों ने मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ रोक दिया। फिर

और एक मज़े की बात कि अल्लाह ने खुद पहल की, अगर अल्लाह बारिश कर देता तो कोई बात नहीं मगर वह शख़्स गुनाह में चलता रहता। अल्लाह ने बारिश को रोका, बहाना बनाया, भई यह ज़िल्लत से डरता था। यक़ीनन मेरी तरफ़ को आएगा। तो भई हम भी अल्लाह की बारगाह में तौबा करने वाले बनें, कारोबार के ग़ुलाम न बने, कारोबार का ग़ुलाम बनने का क्या मतलब? मतलब यह है कि लूट कर सब चलाओ, ग़लत हो या सही सब चलाओ, नहीं वह करें जो अल्लाह चाहता है। ज़मींदारी वह करें जो अल्लाह चाहता है, हुकूमत में वह करें जो अल्लाह चाहता है, ज़राअत में वह करें जो अल्लाह चाहता है और शादी में वह करें जो अल्लाह चाहता है, बीवी के साथ वह सुलूक करें जो अल्लाह चाहता है, माँ बाप के साथ वह करें जो अल्लाह चाहता है, भाई के साथ वह करें जो अल्लाह चाहता है, पड़ोसी के साथ वह सुलूक करें जो अल्लाह चाहता है, छोटों के साथ वह करें जो अल्लाह चाहता है, बड़ों के साथ वह सुलूक करें जो अल्लाह चाहता है, जो अल्लाह कहे वह करें जिससे अल्लाह रोके उससे रुक जाएं यह ला इलाहा इलल्लाह है।

अल्लाह तआला का महबूब बनने का तरीक़ाः

तो यह जब तक यक़ीन न होगा कि मेरे अल्लाह से मेरे काम बनते हैं, पैसे से नहीं बनते तो कोई आदमी अल्लाह का पाबन्द बन के चलता नहीं, तो हम इस बात की मेहनत कर रहे हैं कि हर मुसलमान भाई अल्लाह की मान कर चले, अल्लाह का बन्दा बन कर चले। उसके तरीक़े के मुताबिक़ चलें, उसके तरीक़ों के मुताबिक़, उसके हुक्मों के मुताबिक़ चलें। अल्लाह ने अपनी

चाहत को बताया हैं, अपनी किताब में ज़ाहिर फ़रमाया और अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी लेकर हमारे अन्दर भेजा कि यह मेरा हबीब है। ﴿لقد كان لكم في رسول الله اسوة حسنة﴾ यह मेरा हबीब है इसके मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारोगे तो मेरे महबूब बन जाओगे, अगर इसके मुताबिक़ ज़िन्दगी नहीं गुज़ारोगे तो मेरे महबूब नहीं बन सकते।

क़ुबूले इस्लाम की वजह से इज़्ज़तः

अबू लहब चचा भी, क़ुरैशी भी, हाशमी भी, शुरका भी उसके बावजूद ﴿تبت يدا ابي لهب وتب﴾ हो गया अबू लहब, दोज़ख़ में चला गया, हाथ टूट गए, बीवी भी गयी और वह भी गया और बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु, हब्शी हो के, हब्शी का बेटा हो ने के बावजूद, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब मैं जन्नत में जाऊँगा तो मेरी सवारी की लगाम पकड़ के जन्नत में मेरे साथ दाख़िल होगा। सलमान फ़ारसी हैं, जो ईरान से आए हैं, अबू लहब चचा है, क़ुरैशी है, ख़ानदान का है, वह ख़ानदान से निकल गया ﴿تبت يدا ابي لهب وتب﴾ सलमान फ़ारस के हैं, ईरान के हैं, बाहर से हैं, अजमी हैं, अरबी भी नहीं हैं, क़ुरैशी होना तो दूर की बात है, अरबी भी नहीं हैं, लेकिन जंगे ख़न्दक़ के मौक़े पर जब ख़न्दक़ खोदी गई, अन्सार कहें सलमान हम में से हैं, मुहाजिरीन कहें सलमान हम में से हैं। दोनों में झगड़ा हो गया। अन्सार कहते हैं कि हमारे साथ इनका नाम लिखो, मुहाजिर कहते हैं कि हमारे साथ इनका नाम लिखो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल ने फ़रमाया ﴿لسلمان من اهل البيت﴾ तुम आपस में मत झगड़ो सलमान मेरे अहले बैत में से हैं। अब यह

अहले बैत में से कैसे हो गए? यह अल्लाह के हबीब की ज़िन्दगी अपनी ज़िन्दगी बनाने से हो गए।

तो मेरे भाईयों! हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सांचे में ढलने की कोशिश करें और इसी के लिए हम कोशिश करते हैं। अल्लाह तआला ने एक हबीब बनाया एक महबूब बनाया या एक ही बनाया या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रसूल बनाया, अपना महबूब बनाया, सारे नबियों से पहले बनाया ﴿اولهم خلقا اللہ﴾ अल्लाह ने मुझे सबसे पहले बनाया ﴿واخرهم بعثا﴾ अल्लाह ने मुझे सबसे आख़िर में भेजा ﴿ان لی عند اللہ عشرة اسماء﴾ अल्लाह ने मेरे दस नाम रखे।

अल्लामा सयुती रह० ने एक रिवायत में नकल किया है कि जिस दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए, उस दिन से लेकर अगले पूरे साल तक अल्लाह ने किसी औरत को बेटी नहीं दी। सबको बेटे अता फ़रमाए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए ख़तूना के साथ पैदा हुए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ख़तूना नहीं किया गया ﴿ولد مختونا﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़तूना के साथ पैदा हुए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पाक पैदा हुए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गिलाज़त नहीं लगी हुई थी, जैसे ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए सारा कमरा रौशन हो गया। हज़रत आमना फ़रमाती हैं कि मग़रिब से मशरिक़ मेरे सामने खुल गए, शाम के महल देखे, मदाइन के महल देखे, हिरा और यमन के महलात अल्लाह पाक ने दिखाया, सारी काएनात को रौशन कर दिया। अभी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए सारी दुनिया के बुत ज़मीन पर जा गिरे, बादशाहों के तख़्त

उलट गए और बुत ज़मीन पर जा गिरे, खुद ब खुद ज़मीन पर गिर गए। क्या हुआ बुतों का तोड़ने वाला आ गया, बुत शिकन आ गया, तौहीद का दावत देने वाला आ गया, अल्लाह से मिलाने वाला आ गया, ज़ुलमत का मिटाने वाला आ गया, अन्धेरों को दूर करने वाला आ गया, सारी काएनात को निजात का रास्ता दिखाने वाला आ गया। तूझे भी ज़िन्दगी गुज़ारनी है तो अल्लाह के नबी के तर्ज़ पर गुज़ार जो अल्लाह के महबूब हैं

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान बज़ुबान क़ुरान मजीदः

अल्लाह के हबीब हैं। अल्लाह ने क़ुरआन में किसी नबी की क़सम नहीं उठाई सिवाए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ﴾لعمرك﴿ ऐ मेरे नबी तेरी जान की क़सम ﴾انهم لفى سكرتهم يعمهون﴿ यह अल्लाह ने अपने हबीब की क़सम खाई है, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शहर की क़सम खाई, किसी नबी के शहर की क़सम नहीं खाई ﴾وهذا البلد الامين﴿ फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत की क़सम खाई, किसी नबी की रिसालत पर क़सम नहीं खाई ﴾يٰس والقران الحكيم انك لمن المرسلين﴿ क़सम है क़ुराने हकीम की आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे रसूल हैं फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली देते हुए क़सम उठाई क़ुरैशे मक्का की। वही नहीं आई छः महीने तो क़ुरैश कहने लगे इसके रब ने इसे छोड़ दिया, इसका रब इससे नाराज़ है तो अल्लाह तआला ने फ़ौरन क़ुरआन उतारा ﴾والضحى﴿ क़सम है दिन की ﴾والليل﴿ और रात की ﴾اذا سجى﴿ जब वह आ जाए, छा जाए, काली हो

जाए ﴿ما ودعك ربك﴾ आप के रब ने आपको हर्गिज़ नहीं छोड़ा आपका रब आपसे बिल्कुल नाराज़ नहीं। आपकी सफ़ाई पेश करते हुए क़सम खाई ﴿والنجم اذا هوى﴾ क़सम है मुझे सितारे की जब वह अपने मदार पर चलता है, जब वह टूटता है कि मेरा नबी गुमराह नहीं है, मेरा नबी वह अपने रास्ते से हटा नहीं बल्कि सही रास्ते पर है, सिराते मुस्तक़ीम पर है। अल्लाह तआला ने किसी नबी के अख़्लाक़ पर क़सम नहीं खाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदात व अख़्लाक़ की क़सम खाई। क्या फ़रमाया? ﴿ن، والقلم وما يسطرون﴾ क़सम है क़लम की और क़सम है क़लम के लिखे हुए की

ما انت بنعمت ربك بمجنون ٥ وان لك لا جرا
غير ممنون ٥ وانك لعلى خلق عظيم٥

आप बड़े ऊँचे अख़्लाक़ वाले हैं। यह तो क़ुरआन अल्लाह के नबी की सीरत बयान कर रहा है

मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला से तौरात लेने के लिए जल्दी जल्दी आए तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जल्दी क्यों आए हो? तो मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की ﴿عجلت اليك رب لترضى﴾ या अल्लाह मैं जल्दी आया हूँ ताकि आप राज़ी हो जाएं ﴿لترضى﴾ आप राज़ी हो जाएं। अल्लाह तआला ने अपने हबीब को इर्शाद फ़रमाया ﴿ولسوف يعطيك ربك فترضى﴾ ऐ मेरे हबीब मैं आप को इतना दूँगा कि आप राज़ी हो जाएं। अल्लाह तआला ने दाऊद अलैहिस्सलाम को हुकूमत दी तो इर्शाद फ़रमाया ﴿لا تتبع الهوى﴾ ऐ दाऊद ख़्वाहिश का ग़ुलाम मत बनना। दाऊद अलैहिस्सलाम का नसीहत फ़रमाई कि बाहर की ग़ुलामी न करना, और अल्लाह तआला ने अपने हबीब की सफ़ाई पेश की

﴿وما ينطق عن الهوى﴾ मेरा हबीब ख़्वाहिश की ग़ुलामी में बोलता ही नहीं। इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ की ﴿واجعلني من ورثة جنة النعيم﴾ या अल्लाह जन्नत दे दे। अल्लाह तआला ने अपने हबीब को फ़रमाया ﴿انا اعطينك الكوثر﴾ हमने आप को कौसर अता की ﴿ليطهرك تطهيرا﴾ ऐ मेरे हबीब मैं आपको और आपके घर को किलियर करके, पाक करना चाहता हूँ।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ की ﴿حسبي الله ونعم الوكيل﴾ अल्लाह मुझे काफ़ी हो जा, अल्लाह तआला ने अपने हबीब को बिन मांगे फ़रमाया ﴿يا ايها النبي حسبك الله﴾ ऐ मेरे नबी तेरा अल्लाह तुझे काफ़ी है। अल्लाह तआला की बारगाह में आप ने अर्ज़ किया:

اتخذت ابراهيم خليلا وموسٰى كريما و علمت لداؤد الحديد
وسخرت لسليمان رياحا واحييت لعيسٰى الموت فماذا جعلت لى

या अल्लाह! इब्राहीम अलैहिस्सलाम आपके ख़लील, मूसा अलैहिस्सलाम आपके करीम, दाऊद अलैहिस्सलाम के लिए लोहा ताबे, सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिए हवा ताबे, ईसा अलैहिस्सलाम के लिए मुर्दा ज़िन्दा करने की ताक़त, मेरे लिए क्या है? अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿اوليس قد اتيت افضل من كل ذلك﴾ ऐ मेरे हबीब मैं ने आपको सबसे आला चीज़ अता फ़रमाई है, वह क्या है? क़यामत तक आपका और मेरा नाम इकठ्ठा चलेगा, जुदा नहीं हो सकता, इकठ्ठा रहेगा। अब यह नहीं बदल सकता, इकठ्ठा रहेगा।﴿نشرح لك صدرك﴾ आपका सीना खोल दिया ﴿ووضعنا عنك وزرك﴾ आपके बोझ हटा दिए ﴿ورفعنا لك ذكرك﴾ आपके ज़िक्र को ऊँचा कर दिया ﴿وجعلت﴾

आपको ख़ातिम बनाया ﴿وجعلت امتك خير امة يامرون بالمعروف وينهون عن المنكر﴾ आपकी उम्मत को सबसे बेहतरीन उम्मत बनाया कि ये भलाइयों को फैलाते हैं और बुराइयों को मिटाते हैं।

अल्लाह तआला से डरते रहो सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी बन जाओगे:

तो भाईयों! ज़िन्दगी गुज़ारनी है तो बिरादरी के तरीक़े पर मत चलिए, फ़ैसला बाद के तरीक़े पर मत चलिए, पाकिस्तान के तरीक़े पर मत चलिए, क़ौम के तरीक़े पर मत चलिए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर चलिए, आप अल्लाह से रौशन रास्ता ले कर आए।

﴿ليلها كنهارها لا يزيد عنها مالك﴾

इसकी रात भी रौशन, इसका दिन भी रौशन, जो छोड़ेगा, हलाक हो जाएगा, आप ने दुनिया का रास्ता भी बताया और आख़िरत का रास्ता भी बताया, यहाँ कैसे कामयाब होना, वहाँ कैसे कामयाब होना है? अमीर ग़रीब सबके लिए आसान कर दिया।

एक बद्दू आता है या रसुलुल्लाह! ﴿اريد ان اكون اعلم الناس﴾ मैं अल्लामा बनना चाहता हूँ, बड़ा आलिम। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اتق الله تكن اعلم الناس﴾ तू तक़्वा इख़्तियार कर, अल्लाह से डर जा, सबसे बड़ा आलिम बन जाएगा। या रसूलुल्लाह! ﴿اريد ان اكون الغني الناس﴾ मैं चाहता हूँ सबसे ज़्यादा पैसे वाला बन जाऊँ, सबसे ज़्यादा मालदार बन जाऊँ। हम क्या कहेंगे मिल लगा लो, कारोबार कर लो, तिजारत कर लो, हम लोग तो यही कहेंगे, कपास में यह कर लो, गन्दुम

में यह कर लो, हम यही कहेंगे लेकिन अल्लाह के नबी ने क्या कहा ﴿اقنع تكن اغنى الناس﴾ कनाअत इख़्तियार कर ले सबसे बड़ा मालदार बन जाएगा। या रसुल्लाह! ﴿اريد ان اكون اخص الناس﴾ मैं चाहता हूँ मेरी खुसूसियत कायम हो जाएगा, वी आइ पी बन जाऊँ, मेरे ऊपर झंडे के बग़ैर झंडा लग जाए, झंडे वाले के बग़ैर मेरी इज़्ज़त क़ायम हो जाए, मेरी खुसूसियत क़ायम हो जाएगा, लो भाई कैसा आसान नुस्ख़ा बताया ﴿اكثر من ذكر الله تكن من اخص الناس﴾ अल्लाह का ज़िक्र कसरत से किया कर अल्लाह तुझे खुसूसियत अता फ़रमा देगा। अब अल्लाह के हबीब से ज़िन्दगी ले लो। भाईयों उन्होंने कहा या रसुलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ﴿اريد ان اكون اكرم الناس﴾ मैं चाहता हूँ मेरी सबसे ज़्यादा इज़्ज़त हो, बेचारा जो फुट पाथ पर जूती गांठ रहा है वह भी कहता है मेरी सबसे ज़्यादा इज़्ज़त हो, इज़्ज़त हर आदमी के अन्दर की तलब है। अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वह रास्ता बताया कि जूती गांठने वाला भी उसको हासिल कर सकता है और महल और बंगले में रहने वाला भी उसको हासिल कर सकता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿لا تشك من امرك شيئا تكن اكرم الناس﴾ अपनी हाजत अल्लाह के सिवा किसी को न बताओ अल्लाह तुझे सबसे ज़्यादा इज़्ज़त देगा। कितना आसान नुस्ख़ा बताया और कहा या रसूलुल्लाह! ﴿اريد ان يوسع على رزق﴾ मैं चाहता हूँ मेरा रिज़्क़ कुशादा हो जाए, मेरा रिज़्क़ बढ़ जाए। कौन नहीं चाहता? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿علم الطهارة يوسع عليك رزقا﴾ तू बावुज़ू रहा कर तेरा रिज़्क़ बढ़ जाएगा, या रसुलुल्लाह! ﴿اريد لا يخسفنى ربى﴾ मैं चाहता हूँ मेरा अल्लाह मुझे ज़लील न करे, आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿احفظ فرجك من الزنا﴾ तू ज़िना करना छोड़ दे, अल्लाह तुझे सारी ज़िल्लतों से बचा लेगा। या रसुलुल्लाह! ﴿اريد ان يكمل ايماني﴾ मैं चाहता हूँ मेरा ईमान कामिल हो जाए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿حسن خلقك يكمل ايمنك﴾ ईमान को कामिल करना है तो अच्छे अख़लाक़ कर ले, अख़लाक़ के बग़ैर ईमान मुकम्मिल नहीं हो सकता। ईमान का सीखना फ़र्ज़, इबादात फ़र्ज़, अख़लाक़ फ़र्ज़, अख़लाक़ का बनाना फ़र्ज़, इख़लास फ़र्ज़।

हुस्ने अख़्लाक़ का हुक्म और अज्रः

ये चार फ़र्ज़ हैं, ईमान का लाना फ़र्ज़ है, ईबादत फ़र्ज़ और अपने अख़लाक़ का बनाना फ़र्ज़ है, वरना नमाज़ें कोई और ले जाएगा, तबलीग़ कोई और ले जाएगा, हज कोई और ले जाएगा, ज़कात कोई और ले जाएगा और यह ज़ालिम ख़ाली हाथ खड़ा होगा। तो ईमान की तकमील के लिए फ़रमाया अख़लाक़ को ऊँचा करो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाया ﴿يا اباهريرة عليك بحسن الاخلاق﴾ ऐ अबू हुरैरह अपने अख़लाक़ को ख़ूबसूरत बना ले। कहा या रसूलुल्लाह! ﴿وما حسن الاخلاق﴾ अख़लाक़ की ख़ूबसूरती क्या है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿صل من قطع﴾ जो तोड़े उससे जोड़, ﴿واعط من حرمك﴾ जो न दे उसको दे, ﴿وعف عمن ظلمك﴾ जो ज़ुल्म करे उसे मॉफ़ कर दो।

بعث لا تمم مكارم الاخلاق، بعث لا تمم محاسن الاخلاق

मैं अख़लाक़ की तकमील के लिए भेजा गया हूँ, मुझे अख़लाक़ की ख़ूबियों की तकमील के लिए भेजा गया है,

अख़लाक़ के हुस्न की तकमील के लिए मुझे भेजा गया है।

मेरे भाईयों! नमाज़ पढ़नी आसान है, अख़लाक़ बनाने मुश्किल है। ज़िक्र करना आसान है, अख़लाक़ बनाना मुश्किल है, चिल्ले लगाना आसान है, अख़लाक़ बनाना मुश्किल है, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴾حسن خلق يكمل ايمان﴿

एक बदवी आया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने बैठा, कहने लगा या रसूलुल्लाह! ﴾ما الدين﴿ दीन क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया ﴾حسن الاخلاق﴿ अच्छे अख़लाक़। वह यहाँ से उठा और दाएं तरफ़ आ के बैठा, या रसूलुल्लाह! ﴾ما الدين﴿ दीन क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴾حسن الاخلاق﴿, अच्छा वह यहाँ से उठा, बायीं तरफ़ आया या रसूलुल्लाह! ﴾ما الدين﴿, दीन क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴾حسن الاخلاق﴿ अच्छे अख़लाक़। फिर वह यहाँ उठा, पीछे जाकर बैठा। कोई तगड़ा ही था। या रसूलुल्लाह! ﴾ما الدين﴿ दीन क्या है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यों पीछे मुड़ कर देखा भाई तू कब समझेगा अच्छा, दीन यह है गुस्सा मत हुआ कर ﴾وهو الا تغضب﴿ दीन यह है कि गुस्सा मत हुआ कर। जिसके अख़लाक़ ठीक नहीं हैं उसकी सारी नेकियां दूसरे उठा कर ले जाएंगे। जिसका बोल मीठा नहीं वह मुँह के बल जहन्नम में जाएगा ﴾افلا ادلك على ملاط الامر كل﴿ ऐ माल! अपने माल से फ़रमाया कि यह काम की छोटी सी चीज़ बता दूँ? सारी चीज़ों में से छोटी चीज़ बता दूँ, फिर अपनी ज़ुबान को बाहर निकाल कर यों पकड़ लिया और कहा ﴾امسك عليك لسانك﴿ अपनी ज़ुबान को पकड़ कर रख कि

किसी मुसलमान के ख़िलाफ़ तुम्हारी ज़ुबान न चले। या रसूलुल्लाह! क्या ज़ुबान की वजह से भी पकड़े जाएंगे तो फ़रमाया

अरे रोने वालियां तुझ पर रोयें तू क्या कह रहा है ﴾وهل يكب الـنـار عـلـى مـنـاخرو وجوههم الا سنتهم﴿ इन्सानों को दोज़ख़ में नाक के बल गिराने सबसे बड़ी चीज़ वाली ज़ुबान का बोल होगा। किसी को ज़लील कर देना, किसी की इज़्ज़त, किसी की पगड़ी उछाल देना, किसी की इज़्ज़त उतार देना, छोटे की तमीज़ मिट गई, अख़्लाक़ बनाने पड़ेंगे। भाईयों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सारा रास्ता बता कर गए हैं। एक सहाबी ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ﴾اريـد ان اكـون احـب الـلـه ورسـولـه﴿ मैं चाहता हूँ अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का महबूब बन जाऊँ ﴾احسن ما احبه الله ورسوله فكن من احـبـابهما﴿ तो जो अल्लाह और उसका रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चाहता है ना तू भी वह चाहत अपनी चाहत बना ले, तू अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का महबूब बन जाएगा। कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ﴾الـذيـن نـجـو مـن الـذنـوب﴿ गुनाहों से क्या चीज़ बचाती है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आंसुओं का बहाना गुनाहों का धो देता है ﴾ولـقـذوع﴿ आजज़ी मसकनत को इख़्तियार करना गुनाहों को धो देता है ﴾ولا امـراض﴿ बीमारियां भी गुनाहों को धो देती हैं। सबसे बड़ी बुराई क्या है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴾سـوء الـخـلـق﴿ बद अख़्लाक़ होना सबसे बड़ी बुराई है ﴾وسيخ المطاع﴿ और बख़ील

होना सबसे बड़ी बुराई है। ﴿كمايهن من اعظم يا رسول الله﴾ सबसे बड़ी नेकी क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा ﴿الحسن الخلق﴾ अच्छे अख़लाक़ बनाना सबसे बड़ी नेकी है, ﴿وصبر على البلاء﴾ और मुसीबत में सब्र करना सबसे बड़ी नेकी है।

इत्तेबाए सुन्नत की तरग़ीबः

भाईयों! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा हम अपनी ज़िन्दगी में ले आएं। नमाज़ पढ़ना, ज़िक्र करना, तिलावत करना, हज करना, ज़कात देना, ये तो हो गए फ़राईज़। पूरी ज़िन्दगी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर हो, पूरी ज़िन्दगी अल्लाह के हबीब के रास्ते पर चल रही हो और सुन्नत सिर्फ़ मिसवाक करना ही नहीं है, आँखों में सुरमा लगा लिया और भाई दाएं हाथ से खा लिया और भाईयों दाएं हाथ से पानी पी लिया और बैठ कर पी लिया। इसी को सुन्नत आसान कहते हैं। इनको सुन्नत समझा है। एक और सुन्नत भी है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया

يا بني ان اصبحت ان ستطعت ان تصبح
وتؤسي ولجت في قلبك غش لا حدا

ऐ बेटा! सुबह शाम इस तरह गुज़ारा कर कि तेरे दिल में किसी मुसलमान के बारे में खोट न हो, बुग़ज़ न हो, गुस्सा न हो, नफ़रत न हो फिर आगे फ़रमाया ﴿بني انه من سنتي﴾ ऐ मेरे बेटे! यह मेरी सुन्नत है। इसको कोई सुन्नत नहीं समझता। मैं अपने दिल को मुसलमानों की बदगोई और बदख़ोई वग़ैरह से साफ़ कर दूँ ﴿انه من سنتي﴾ यह मेरी सुन्नत में से है। ﴿ومن احب

﴾سنتی فقد احبنی﴿ जिसने मेरी सुन्नत से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की, ﴾ومن احبنی کان معی الجنۃ﴿ और जो मुझसे मुहब्बत करेगा मेरे साथ जन्नत में जाएगा। मुहब्बत कम है यहाँ इताअत ज़्यादा है। गुलाम नबी से आदमी ग़ुलाम नहीं बनता। नाम ग़ुलाम नबी रखने से ग़ुलाम नहीं बनता, ग़ुलामों वाले काम करने से ग़ुलाम नबी बनता है। ग़ुलाम रसूल नाम रखने से ग़ुलाम रसूल नहीं बनता, ग़ुलामी इख़्तियार करने से ग़ुलाम रसूल बनता है। हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम बन जाएं दुनिया आख़िरत की सरदारी अल्लाह तआला तशतरी में रख कर पेश कर देगा। ऐ मेरे बन्दे दुनिया भी तेरी, जन्नत भी तेरी, रज़ा भी तुझ को मिल जाएगी तो अल्लाह जल्ले जलालूहु ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना हबीब बनाया, बहर व बर पर आपकी नबुव्वत का नक़्श जमाया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ऊँट का शिकायत करनाः

क़यामत तक आने वालों इन्सानों का नबी बनाया, जिन्नात का नबी बनाया, चौपायों का नबी बनाया। ऊँट आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने आकर कहता है कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरा मालिक मुझे मारता है। मेरी जान बचाइए। ऊँट भी आकर पनाह मांग रहा है, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरा मालिक मुझे चारा नहीं खिलाता। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सीधे जा रहे हैं एक ऊँट बंधा हुआ है, कूदने लगा, वह बिलबिलाने लगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चलते चलते रुक गए। कहा इसका मालिक

कौन है। एक ने कहा मैं हूँ। कहा यह मुझसे शिकायत कर रहा है, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरा मालिक मुझे चारा थोड़ा खिलाता है, वज़न ज़्यादा डालता है, मेरी सिफ़ारिश तो फ़रमा दीजिए मुझे पेट भर के खिलाया करे (सुब्हानल्लाह)

इब्ने कसीर रह० ने एक वाक़िया लिखा है कि एक बद्दू गुज़र रहा था आपकी महफ़िल से तो उसने कहा यह कौन है? कहा यह वही है जो आसमान की ख़बरें देता है, नबी अपने आप को बताता है तो लौट आया। अरब जो थे वे गोह खाया करते थे जो जंगल का जानवर होता है एक शतर की तरह गोह कई गुना बड़ा होता है वह खाया करते थे। वह गोह शिकार करके लाया था उनके साथ बात न की अपनी गोह को उतारा और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने फेंक दिया और बद्दू कहने लगा कि यह मेरा मुर्दा गोह कहे कि तू नबी है फिर तो मैं नबी मानूंगा वरना तो मैं नहीं मानता। अपनी तरफ़ से उसने नामुमकिन बात डाल दी। मुर्दा जानवर, जानवर भी और मुर्दा भी। दो बातें नामुमकिन हो गयीं। न जानवर बोले न मुर्दा बोले तो दो बातें इकठ्ठी हो गयीं। ऐसा हो ही नहीं सकता यह कहे कि तू नबी है तो मैं तुझे नबी मान जाऊँ या नहीं (कहे) तो नहीं मानता। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गोह को देखा, एक दम गोह ने सिर उठाया और अरबी ज़ुबान में उसने कलाम किया ﴿لبيك وسعديك يا فيمن بعث يوم القيامة﴾ लब्बैक मैं हाज़िर सअदैक मेरी सआदत ऐ क़यामत के दिन को ख़ूबसूरत बनाने वाले, कैसा प्यारा लफ़्ज़ कहा ऐ क़यामत के दिन को ख़ूबसूरत बनाने वाले। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿من انت من ربك﴾ तू कौन है, तेरा रब कौन है? किसकी

बन्दगी करनी है? कहा:

من فی السمآء عرشه، وفی الارض سلطانه ومن
البحر سبیله وفی الجنة رحمه، وفی النارعقابه

मुझे उसकी बन्दगी करनी होगी जिसका अर्श आसमान में, सलतनत ज़मीन में है, रास्ते समंदर में, रहमत जन्नत में, अज़ाब जहन्नुम में। क्या ख़ूबसूरत कलाम है गोह का। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿من انا﴾ मेरे बारे में क्या कहते हो ऐ गोह? ﴿من انا﴾ उसने कहा

انت رسول رب العلمين والخاتم النبين قد
افلح من صدقك وقد خاب من كذبك

आप रब्बुल आलमीन के रसूल हैं, आप ख़ातिमुन्नबीयीन हैं जो आपको मानेगा वह कामयाब हो जाएगा, जो नहीं मानेगा नाकाम होगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वापस फ़रमाया बोल अब क्या कहता है? कहने लगा अब तो मानता हूँ।

हम कैसे उम्मती हैं?

मुरदार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आवाज़ पर लब्बैक कहे और हम उम्मती होकर लब्बैक न कहें तो कैसा उम्मती है। मुनादी ने आज़ान दी और पाँच फ़ी सद लोग भी उठ कर दुकानों से मस्जिद को न जाएं तो यह कैसा मुहम्मदी पना है। बाज़ार खुले, दुकानें खुलीं, दफ़्तर खुले, खेत में काम हो रहा है और एक आदमी भी हुक्में इलाही से डर के अल्लाह की शरियत के मुताबिक़ और नबी के तरीक़े के मुताबिक़ न तिजारत करने वाला, न ज़राअत करने वाला तो यह कैसा मुहम्मदी पना

है? हम किन के लिए अल्लाह व रसूल को नाराज़ कर रहे हैं? मेरे बच्चे के बारे में है कि बड़े फ़रमा बरदार हैं। मैं उनके लिए कमाके लाता हूँ। आज तो माँ बाप के लिए औलाद आँखों की ठन्डक नहीं है आज भी तो औलाद नाफ़रमान है, उनके लिए अल्लाह की नाफ़रमानी क्यों करे? मौत पर आदमी सब कुछ भूल जाता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जब मौत का वक़्त आया तो जिबरईल अलैहिस्सलाम ने अन्दर आने की इजाज़त मांगी कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इज़राईल अलैहिस्सलाम बाहर खड़े हैं इजाज़त दें तो अन्दर आ जाएं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि आ जाइए। इज़राईल अलैहिस्सलाम अन्दर आए और कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैंने आज तक किसी से इजाज़त नहीं ली और न आइन्दा लूँगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में अल्लाह तआला ने कहा था इजाज़त मिले तो अन्दर जाना वरना वापस आ जाना। अल्लाह तआला ने किसी को आज तक इख़्तियार नहीं दिया। आपसल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात को इख़्तियार दिया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रहना चाहें तो रह लें और अगर दुनिया में नहीं रहना चाहते हैं तो चलें और आइन्दा किसी को यह इख़्तियार अल्लाह नहीं देगा और न यह इख़्तियार पहले किसी को दिया तो जिबरईल अलैहिस्सलाम से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा क्या कहते हो? तो कहा अल्लाह तआला भी आपसे मिलना चाहते हैं। अल्लाह तआला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुलाक़ात का मुश्ताक़ है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा अच्छा पहले मेरे अल्लाह से पूछ कर आओ कि मेरे बाद

मेरी उम्मत के साथ क्या करेगा फिर मैं जवाब दूँगा हांलाकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पता है कि मेरे बाद मेरी औलाद के साथ क्या होगा, मेरा नवासा शहीद किया जाएगा, उसके मासूम बच्चे शहीद किए जाएंगे। सब पता है। बताया एक कुत्ता मेरी औलाद का ख़ून चाट रहा है, खुद बताया लेकिन उनके लिए दुआ नहीं की कि या अल्लाह उनकी हिफ़ाज़त फ़रमा। उनको अल्लाह की मशियत के सुपुर्द कर दिया। अपनी उम्मत के लिए मांगा कि जिबराइल जाओ मेरी उम्मत के लिए पूछ कर आओ कि मेरे बाद मेरी उम्मत के साथ क्या करेगा? जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ओहद की लड़ाई में पत्थर पड़े तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बेहोश हो कर गिरे। उत्बा बिन वक़्क़ास, हज़रत साद बिन अबि वक़्क़ास का जो भाई था उसने पत्थर मारा था। उस लड़ाई में क़त्ल हो गया, ओहद की लड़ाई ही में क़त्ल हो गया था लेकिन पत्थर उसने मारा था जिससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इतनी ज़र्ब लगी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नीचे गिर गए और बे होश हो गए। ग़शी थोड़ी देर के लिए आई उसमें ﴿اللهم اغفر قومي فإنهم لا يعلمون﴾ ऐ अल्लाह मेरी क़ौम को अज़ाब न देना मॉफ़ कर देना, उनको पता कोई नहीं। पत्थर खाकर भी बद्दुआ नहीं की और मौत के वक़्त कह रहें हैं मेरी उम्मत का पूछ कर आओ क्या करेगा फिर मैं जवाब देता हूँ। जिबराईल अलैहिस्सलाम वापस गंए, लौट के आए, जवाब लेकर आए या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला फ़रमा रहें हैं कि अल्लाह आपकी उम्मत को आप के बाद तन्हा नहीं छोड़ेंगे तो फ़रमाया ﴿الآن قرت عيني﴾ अब मेरी आँखें ठण्डी हैं। ﴿اللهم رفيق الأعلى﴾ अब मैं ऊपर वालों का

साथ चाहता हूँ। मौत पर भी नहीं भूले और हम औलाद की ख़ातिर अल्लाह को भुलाते हैं। यह तो औलाद की नाफ़रमानी आँखों से देख रहे हैं।

तबलीग़, अल्लाह और उसके रसूल को राज़ी करने की मेहनत हैः

तो मेरे भाईयों! हम अल्लाह और उसके रसूल को राज़ी करें तबलीग़ कुछ नहीं है। अल्लाह और उसके रसूल को राज़ी करने की ज़रा सी मेहनत है, आसान सी मेहनत है। भाई अपने घरों से निकलिए और वह तरीक़ा सीखिए जिस पर अल्लाह का रसूल राज़ी होता है। ﴿والله ورسوله احق ان يرضوه﴾ अल्लाह कहता है कि मुझे राज़ी करो मेरे रसूल को भी राज़ी करो। अब कोई नबी नहीं आएगा। सारी दुनिया के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत है। इन्सानों के लिए, जिन्नात के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत है। आने वाली नस्लों के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत है तो लिहाज़ा जब कोई नबी नहीं आएगा तो पूरी दुनिया के इन्सानों को अल्लाह का पैग़ाम सुनाना और बताना और समझाना अल्लाह तआला ने आपके ज़िम्मे किया है। मेरे ज़िम्मे भी किया है। तबलीग़ का काम हमारे ज़िम्मे तबलीग़ी जमात की वजह से नहीं है। तबलीग़ का काम हमारे ज़िम्मे ख़त्मे नबुव्वत की वजह से है। जब हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आख़िरी नबी मानते हैं तो उसके साथ साथ हमारे ज़िम्मे यह लग जाता है कि पूरी दुनिया में इस्लाम का पैग़ाम पहुँचाना तुम्हारे ज़िम्मे है, (सिर्फ़) हमारे ज़िम्मे क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने तेरह बरस तक मक्का में मेहनत फ़रमाई ढाई सौ से ज़्यादा मुसलमान नहीं हुए। थक गए, जोड़ जोड़ में दर्द हो गया। नबुव्वत का ग्यारहवां साल आया तो छः आदमी मिना की वादी में हज के मौसम में जौलाई का महीना है मुसलमान हुए। उबादा बिन रवाह, साद बिन रबी, असद बिन ज़रारा, नौमान बिन हादिमा, अब्दुल्लाह बिन रवाहा, अबुल ख़सीम रज़ियल्लाहु अन्हुम। यह छः आमदी मदीने के मुसलमान हुए और हिजरत की बुनियाद पड़ी। नबुव्वत के बारहवें साल, जून का महीना है और बारह आदमी आए और रात को बैत की जिसे बैत ऊला कहते हैं। अल्लाह तबारक तआला ने मदीने के लिए इस्लाम का दरवाज़ा खोल दिया फिर नबुव्वत का तेरहवां साल और जून का महीना है, बहत्तर आदमी मदीने से आए, सत्तर मर्द और दो औरतें उम्मे अम्मारा व उम्मे मुत्तेबा, बैत हुए और उन्होंने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब आप मदीने तशरीफ़ लाइए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरा अल्लाह जब इजाज़त देगा तब आऊँगा। नबुव्वत का चौदहवां साल आया सत्ताईस सफ़र की रात को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर से निकले, सिद्दिके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के घर गए कि हिजरत फ़रमाई जाए। दोनों ग़ारे सौर पहुँचे तीन रातें दो दिन क़याम फ़रमाया। यकुम रबिउल अव्वल को निकले आठ रबिउल अव्वल को मदीने पहुँचे। दो हफ्ते क़याम फ़रमाया मस्जिद बनाई। जुमे के दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीने को चले रास्ते में बनू सालिम का मुहल्ला था वहाँ जुमा की नमाज़ पढ़ाई और अस्र की नमाज़ के क़रीब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीने में दाख़िल हुए।

अब जो यसरिब की बस्ती थी मदीना बन गया है। तबलीग़ का काम यहाँ इज्तिमाई शुरू हो गया। अब तलवार भी उठी, क़िताल भी हुआ, जिहाद भी हुआ, दावत भी चली, तबलीग़ भी चली, तालीम भी चली, तदरीस भी चली, तज़किया भी चला और सारी ख़िदमात चलीं, इकराम भी चला, सारे दीन के शोबे। अवामिर आते चले गए दीन मुकम्मल होता चला गया। आख़िरी साल नबुव्वत का। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज का ऐलान फ़रमाया। ज़ुलहुलैफ़ा से एहराम बान्धा, बारह हज़ार सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का पहुँचे तो एक लाख चौबीस हज़ार का मजमा हो चुका था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अरफ़ात में आए तो

اليوم اكملت لكم دينكم واتممت عليكم
نعمتي و رضيت لكم الاسلام دينا (القران)

यह आयत उतर गई फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुज़दलफ़ा में रात गुज़ारी, मिना में आए और कन्कर मारे और उसके बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुर्बानी की फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिर मुंढाया फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुत्बा दिया। इस ख़ुत्बे में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया आख़िर में ﴿الا فليبلغ الشاهد الغائب﴾ अब मेरा पैग़ाम आगे पहुँचाना तुम्हारे ज़िम्मे है तो तबलीग़ का काम इस वजह से हमारे ज़िम्मे हुआ है, तबलीग़ जमात की वजह से नहीं बल्कि ख़त्मे नबुव्वत की वजह से ज़िम्मे है, नबी कोई नहीं आएगा तो सारी दुनिया को पैग़ामे

इलाही की ख़बर देना हमारे ज़िम्मे है, दुनिया को पता नहीं मौत के बाद क्या होने वाला है। यह ज़िन्दगी आसान नहीं है, यह खेल तमाशा नहीं है। मेरे बोल का सुनाना या मेरी जन्नत बनाता है या मेरी दोज़ख़ बनाता है। मेरे क़दम का उठाना या मेरी जन्नत को बनाता है या दोज़ख़ का बनाता है। मेरा सौदा करना या जन्नत को बनाता है या दोज़ख़ को बनाता है।

जहन्नुम के ख़ौफ़नाक मनाज़िरः

मेरे भाईयों! अल्लाह की क़सम नबियों की रातों की नींद उठती है दिन का क़रार उठता, है। इस लिए नहीं कि वे रोटी से परेशान होते हैं। इसलिए कि वे जन्नत और दोज़ख़ को देखते हैं फिर इन्सानियत की नाफ़रमानी को देखते हैं फिर वे बेक़रार हो जाते हैं कि इनको कैसे अज़ाब से बचाऊँ? ﴿ان عذابها كان غراما
عذاب﴾ कोई छोटा मोटा अज़ाब नहीं है वह भड़कती आग है, खाल को उतार देने वाली वह आग है। ﴿فانذرتكم نارا تلظى﴾ अल्लाह कहता है मैं तुम्हें उस आग से डराता हूँ जो भड़कने वाली आग है, मैं तुम्हें उस आग से डराता हूँ। ﴿سيصلى نارا ذات
لهب﴾ वह अंगारों वाली, वह भड़कने वाली आग है। ﴿فى عمد
ممددة﴾ वह बड़े बड़े सुतूनों में भरी हुई आग है। ﴿لهم من جهنم
مهاد﴾ उनके बिस्तर अंगारों के हैं उनकी चादरें अंगारों की हैं। ﴿فى عمد ممددة﴾ उनके पर और सुतून भी आग के हैं। ﴿يسقى من
ماء صديد﴾ उनका पानी पीप है, पीने को दिया जाएगा जो ज़ख़्मों से पीप निकलेगी उसको जमा करके गर्म किया जाएगा फिर वह पीने को दिया जाएगा। फ़रिशतें कहेंगे पियो। ﴿يتجرعه ولا
يكاد يسيغه﴾ पीना चाहेगा पी नहीं सकेगा। ﴿ويأتيه الموت من كل

﴿مكان﴾ चारों तरफ से मौत आती हुई दिखाई देगी। ﴿وما هو بميت﴾ लेकिन वह मरेगा नहीं मौत पुकारेगा, मौत आएगी नहीं। पीने को पानी है तो ऐसा ज़बर्दस्त कि जिन प्यालों में वह पानी है मुँह के क़रीब लाएगा तो प्याले की तपिश और पानी तपिश से होंट सूझ कर नीचे वाला होंट लटक कर पाँव तक चला जाएगा और ऊपर वाला होंट सूझकर सिर के ऊपर चला जाएगा न पी सकेगा, न उगल सकेगा, न निगल सकेगा और फिर फ़रिश्ते मारेंगे पियो। पिएगा तो आंते कटकर पाख़ाने के रास्ते से बाहर निकलेंगी। फ़रिश्ते उठाकर सारी आंतों को फिर उसके मुँह में ठूस कर उसके नीचे भर के फ़िट कर देंगे। उसकी खाल बयालिस हाथ मोटी खाल होगी और उसके सिर के ऊपर जब पानी डालेंगे ﴿ذق انك انت العزيز الكريم﴾ की तफ़सीर में लिखा है, फ़रिश्तें पकड़ेगे काफ़िर को, और उसके सिर के ऊपर रखेंगे कील और फिर मारेंगे हथौड़ा उसकी खोपड़ी पर, और खोपड़ी फट जाएगी और उसके ऊपर डालेंगे पानी, अन्दर चला जाएगा तो आंतों को काट के बाहर फेंक देगा और उसके ऊपर गिरेगा तो बयालिस हाथ मोटी खाल उधड़कर ज़मीन पर गिर जाएगी। अल्लाह कहेगा ﴿ذق انك انت العزيز الكريم﴾ चखो इसको दुनिया में बड़ा मुतकब्बिर था। अब किसी आदमी को सारा जहाँ मिल गया और मर कर दोज़ख़ में चला गया तो क्या देखा उसने? हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का इर्शाद है ﴿لا خير في خير تاتهم النار﴾ वह भलाई कोई भलाई नहीं जिस को दोज़ख़ मिल जाए जब देखेंगे अज़ाब ने घेरा डाल दिया तो फिर कहेंगे मालिक (फ़रिश्ता दारोग़ा) या मालिक अपने रब से कह दो हमें मौत दे दें वह कहेगें ﴿انكم ماكثون﴾ मौत नहीं आ सकती अब तो यहीं रहना

पड़ेगा कहेंगे ﴿يخفف عنا يوما من العذاب﴾ ऐ फ़रिश्तों अपने रब से कहो कि थोड़ा अज़ाब तो कम कर दे तो जवाब आएगा ﴿اولم تك تاتيكم رسلكم بالبينت﴾ तुम्हें किसी बताने वाले ने नहीं बताया था कि जो होने वाला है। कहेगा बताया तो था फिर तुम ने क्या किया? ﴿ما نزل الله من شئي ان انتم الا فى ضلال كبير﴾ हम ने कहा सब झूठ है कोई नहीं जो होगा देखा जाएगा, उन्होंने कहा अब चखो। ﴿فلنزيد كم الا عذابا﴾ अज़ाब बढ़ता जाए, ﴿ان جهنم كانت مرصادا﴾ जहन्नुम जहन्नुमी का इन्तेज़ार कर रही है, ﴿للطغين﴾ सरकशों के लिए, ﴿مابا﴾ वह ठिकाना है, ﴿لبثين فيها احقابا﴾ इसमें रहना हमेशा है, ﴿لا يذوقون فيها بردا ولا شرابا﴾ न पानी न ठण्डक, ﴿الا حميما وغساقا﴾ खौलता हुआ पानी, कांटे दार झाड़ियां, ﴿جزاء وفاقا﴾ पूरा पूरा बदला, ﴿انهم كانوا باٰيتنا كذابا﴾ उन्होंने मेरी निशानियों को झुठलाया, ﴿وكل شئي احصينه كتابا﴾ मैं ने एक एक चीज़ को लिंखा है, ﴿فذوقوا﴾ आज चखो, ﴿فلنزيدكم الا عذابا﴾ तुम्हारा अज़ाब बढ़ता जाएगा, बढ़ता जाएगा, जहन्नुम मुसलमानों के लिए है वह मुसलमान जो तौबा किए बग़ैर मर गए गुनाह करते हुए, तौबा किए बग़ैर मर गए, जहन्नुम उनके लिए है, इन्सानों के लिए, यहूदियों के लिए सईर, मजूसियों के लिए सक़र, सितारों के पुजारियों के लिए है जहीम, मुशरिकीन के लिए है हाविया, मुनाफ़िक़ीन के लिए है और हर नीचे वाला दर्जा ऊपर वाले दर्जे से ज़्यादा शदीद है, ज़्यादा सख़्त ,ज़्यादा ख़ौफ़नाक है, ज़्यादा हैबत नाक है। जहन्नुम में से किसी आदमी को निकाल कर एक लाख इन्सानों के दर्मियान बिठा दिया जाए और वह सांस ले तो उसकी हरारत से एक लाख आदमी जल के ख़त्म हो जाएंगे।

या अल्लाह! हमको रोना सिखा देः

तो मेरे भाईयों! यह बात नबियों को रुलाती है यह बात हमें भी रुलाए कि या अल्लाह हमने तेरे बन्दो को दोज़ख़ से बचाना है, हमारा रोना है कारोबार का, बीवी बच्चों का, सेहत का, बीमारी का, मुक़द्दमें का, हम एक रोना और सीख लें। हमारा रोना क्या रोना हो? ख़त्मे नबुव्वत वाला रोना, क्या नबियों वाला रोना। क्या हो? या अल्लाह तेरे बन्दे दोज़ख़ में जा रहे हैं, मैं उनको कैसे दोज़ख़ से बचाऊँ? अल्लाह की क़सम यह आंसू आप के कितने बड़े कितने लम्बे चौड़े मुजाहिदों पर, ये आंसू भारी हो जाएंगे। क़यामत के दिन नबियों वाला रोना, रोना सीखे।

इन्सानियत अज़ाब के मुँह मेंः

भाईयों! इतने बड़े अज़ाब की तरफ़ इन्सानियत क्यों जा रही है जिस अज़ाब से अल्लाह डराता हो ﴿وانذر الناس يوم ياتيهم العذاب﴾ आप भी उनको इस अज़ाब से डराएं, ﴿وانذرهم يوم الازفة﴾ आप उनको क़रीब आने वाले दिन से डराएं, ﴿فذالك يومئذ يوم عسير على الكفرين غير يسير﴾ वह दिन बहुत सख़्त है, बड़ा तंग है, ﴿ويوم تشقق السمآء بالغمام ونزل الملئكة تنزيلا﴾ आज फ़रिश्ते आ रहे हैं आसमान फट रहा,

الملك يومئذ ن الحق للرحمٰن وكان يوما على الكفرين عسيرا

आज का दिन सख़्त अल्लाह की हुकूमत, ﴿ويوم يعض الظالم على يديه﴾ आज आदमी अपने हाथ चबाएगा अपने दांतों से और चबाते चबाते पूरी कोहनी चबा जाएगा, ﴿يقول يليتني اتخذت مع

﴿الرسول سبيلا﴾ हाय मैं रसूल के रास्ते पर चलता।

मैं फ़लॉं की न मानता, अब एक दूसरे को गालियां देंगे, ﴿يلعن بعضهم ببعض﴾ उनकी पुकार होगी हाय ﴿يا ويلتى﴾ यह नबुव्वत का दर्द है। लोगों को अल्लाह के अज़ाब से बचा लिया जाए। यह ख़त्मे नबुव्वत का दर्द अल्लाह तआलाह हमें नसीब फ़रमा दे कि इन्सान जहन्नुम से बच जाएं और जन्नत में जाने वाला बने।

आज हमारे दिलों से इन्सानियत का ग़म निकल गयाः

मेरे भाईयों, दोस्तों! अब क्या हुआ भूल गए कल ही इन्सानियत को दर्द व ग़म सीने में हुआ करता था, कल इन्सानियत के लिए रोते थे। अब तो सारा रोना ही कारोबार के लिए, घर के लिए, बच्चों के लिए, सेहत के लिए, पैसे के लिए, इज़्ज़त के लिए। या अल्लाह तेरे बन्दे दोज़ख़ में जाने से बच जाएं। यह तेरा अज़ीमुश्शान ग़म है। ज़रा अल्लाह तआला हमें नसीब फ़रमा दें। ऐसी दुनिया की क़ैद पड़ी, ऐसा पिन्जरे में क़ैद हुए न यह याद रहा कि कहाँ से आएं हैं न यह याद रहा कि रास्ता किधर को जाता है।

अल्लाह अपने हुक्मों का पाबन्द बनाए। मैं न जाऊँ तो कौन जाएगा? आप न जाएं तो कौन जाएगा। अल्लाह की रहमत के साए में ले आना, अल्लाह के ग़ज़ब से बचा कर जन्नत के रौशन रास्ते पर डाल देना सारे नबी इस पर रोते थे।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नसीहतः

ऐ लोगों! दो अज़ीम चीज़ों को मत भूलना फिर आप अलैहिस्सलाम रोए इतना रोए कि दाढ़ी आंसुओं से तर हो गई

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿الجنة والنار﴾ ऐ लोगों! जन्नत को न भूलना, ऐ लोगों! दोज़ख़ को न भूलना फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اطلب الجنة جهدكم﴾ जितना जन्नत का ज़ोर लगा सकते हो लगाओ, ﴿واهرب من النار جهدكم﴾ जितना दोज़ख़ से भाग सकते हो भागो, ﴿فان الجنة لا ينام طالبها﴾ जन्नत को चाहने वाला नहीं सोता ﴿والنار لا ينام غائبها﴾ और दोज़ख़ से डरने वाला ग़ाफ़िल नहीं होता, ﴿فان الجنة اليوم محفوفة بالماره﴾ जन्नत आज ढकी हुई है मुशक़्क़तों में परेशानियों में, ﴿وان الدنيا محفوفة بالشهوات واللذات﴾ और दुनिया व दोज़ख़ ढकी हुई है लज़्ज़तों में ख़्वाहिशात में।

तुम्हें जन्नत से ये दुनिया की चीज़े ग़ाफ़िल न कर दें। इनसे तुम्हें रास्ता भुलाना नहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कोई हैं जन्नत का तलब करने वाला ﴿فان الجنة لا خطرلها﴾ जन्नत कोई ख़तरे की जगह नहीं।

जन्नत का मन्ज़र:

रब्बे काबा की क़सम जन्नत नूर है चमकता हुआ। कैसा नूर है? एक छोटी सी चीज़ का नूर बताऊँ। जन्नत में एक छोटी सी चीज़ की चमक उठेगी, सारे जन्नती हैरान हो कर देखेंगे। यह नूर कैसा नूर है? पता चलेगा कि जन्नत में एक औरत अपने ख़ाविन्द के सामने मुस्कराएगी। उसके होंटों और उसके दांतों से जो नूर निकलेगा सारी जन्नत रौशन कर देगा। एक ऐसा नूर है जन्नत की औरत की उंगली का एक पोरा सूरज को दिखा दिया जाए तो सूरज नज़र नहीं आएगा। ﴿وريحانة﴾ बाग़ात हैं फैले हुए बाग़ात हैं, फलों से लदी हुई टहनियां हैं झुकी हुई साऐ हैं, फैले

और लम्बे दरख़्त हैं सोने और चाँदी के और यह एक दिन की लकड़ी का नहीं ﴿اسفلها من ذهب اعلاها من جوهر﴾ नीचे से सोने का ऊपर जवाहरात का मुकम्मल। याक़ूत और मदनी इसमें लटके हुए हैं और महल है ऊँचा लम्बा चौड़ा एक ईंट चाँदी याक़ूत की एक ईंट ज़मुर्रद की, मुश्क का गारा, ज़ाफ़रान की घास और अल्लाह का अर्श उनकी छत बना कर डाल दिया जाएगा। नहरें उछलती हुई पानी उनका किनारों से निकलता हुआ, जन्नत दुआ करती है ﴿اللهم طابت ثمری﴾ अल्लाह मेरे फल पक गए मेरी नहर का पानी बाहर निकल रहा है ﴿اشتاقی﴾ मुझे अपने दोस्तों का शौक़ लग रहा है, रेशम और सोना मेरे अन्दर बेशुमार हो गया, रेशम और दरख़्त मेरे अन्दर बेशुमार हो गए, ﴿سندس واستبرق﴾ मोटा रेशम और बारीक रेशम बेशुमार हो गए, ﴿ذهب وفضة﴾ सोने चाँदी के अंबार लग गए हैं और शराब के जाम, दूध के जाम, शहद के जाम, पानी के जाम लबालब भरे हुए मेरे अन्दर बकसरत मौजूद हैं ﴿واعطيتنی باهلی﴾ मेरे जन्नतियों को मेरे अन्दर जल्दी से पहुँचा दे रोज़ाना जितनी ये दुआ कर रहे हैं पके हुए फल शहद से मीठे ﴿الين من الزبد﴾ मक्खन से नरम, ﴿ليس فيها﴾ गुठली के बग़ैर, ﴿اذاجز منهاشيا ادم﴾ एक काटो दूसरा लग जाए। एक बद्दू बोला या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन्नत में बेर पर कांटे होंगे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रब कहता है जन्नत में तकलीफ़ नहीं तो यह कांटे तो हमें चुभेगें, उनसे तकलीफ़ होगी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह के बन्दे अल्लाह कांटों को उतार देगा। हर कांटे के बदले एक फल लगाएगा, वह फल बहत्तर टुकड़ों में तक़सीम होकर फट जाएगा, हर टुकड़े में एक रंग

अलग, खुशबू अलग, ज़ाएक़ा अलग। यहाँ तो सात रंग हैं वहां तो बहत्तर रंग हो जाएंगे। एक फल में बहत्तर ज़ाएक़े। एक बद्दू आया या रसूलुल्लाह! ﴿هل فى الجنة من خيل﴾ जन्नत में घोड़ें हैं? ﴿نعم ياقوت فى الحمراء، لا يبول ولا يروث﴾ न पेशाब करे, न लीद करें, जहाँ तेरी नज़र पड़े वहाँ उसका क़दम पड़े और दूसरा बोला या रसूलुल्लाह! ﴿هل فى الجنة من ابل﴾ ऊँट भी हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हैं ﴿مثل نجم﴾ सितारों की तरह चमकते हुए और तीसरा बोला या रसूलुल्लाह! ﴿هل فى الجنة من نخلة﴾ खुजूर भी हैं जन्नत में? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हैं ﴿اسفلها من ذهب﴾ नीचे सोने की उसकी टहनियां और उसके पत्ते ﴿اراجينها﴾ वह टेढ़ी टहनी जिस पर गुच्छा लगता है और गुच्छे के साथ पतली पतली जैसे लड़ियां चलती हैं जिन लड़ियों पर खुजूर लगी होती है इसको अरबी में शमरूक़ कहते हैं। शमारिक़ इसकी लड़ी, अराजील वह टेढ़ी टहनी असआफ़ उसके लिए है वह सब के सब ﴿زمرد خضراء﴾ सब्ज़ ज़मुर्रद के होंगे और उसका दाना बारह हाथ लम्बा होगा। वह दाना ख़जूर का दाना, यह बताओ अगर ख़जूर का दाना बारह हाथ लम्बा होगा तो केला कितने हाथ लम्बा होगा? और भाई खाने के मज़े करो ﴿ويتغوطون﴾ खाएंगे पाख़ाना नहीं ﴿يشربون ولا يبول﴾ पिएंगे पेशाब कोई नहीं। हमारा एक साथी है उनको घुटनों की तक़लीफ़ है। पेशाब में बैठने से उनको बड़ी तकलीफ़ होती है। एक दिन कहने लगा कि जन्नत में कोई और नेमत न हो यह पेशाब पाख़ाने की छुट्टी है। यही बहुत बड़ी नेमत है आधी ज़िन्दगी तो इसी में लग जाती है। ﴿يشربو بما﴾ खाओ पियो, मज़े उड़ाओ, जाओ दुनिया में तुमने अल्लाह पाक को राज़ी कर

लिया। ﴿وفى جنة عالية﴾ जन्नत है ऊँची ﴿قطوفها دانية﴾ फल हैं नीचे, ज़िन्दगी है मज़े की, ﴿قطوفها دانية﴾ फल हैं पके हुए, ख़ोशों में झुके हुए, लटके हुए, एक ख़ोशा एक गुच्छा। एक बद्दू ने पूछा या रसूलुल्लाह! अंगूर का गुच्छा कितना बड़ा होगा जन्नत में? आप आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया एक कव्वा एक महीने उड़ता रहे तो तब जा कर अंगूर का एक गुच्छा ख़त्म होगा, मज़े करो। जानवर लड़ाई कर रहे हैं, परिन्दे लड़ाई कर रहे हैं कि मुझे खाओ, कीड़ा कहेगा मुझे खाओ। जन्नत की नहरों में चलने वाली मच्छलियाँ सिर बाहर निकालती हैं और कहती हैं ﴿يا ولى الله اتاكلون﴾ ऐ अल्लाह के वली मुझे खाओगे? तो जन्नत की मच्छली दुनिया की मच्छली से हज़ार दर्जा बेहतर होगी।

इत्तिबाए सुन्नत

26/8/1999 फ़ैसला बाद

نحمده نصلی علی رسوله الكريم اما بعد فاعوذ بالله من
شرور الشیطن الرجيم ، بسم الله الرحمن الرحيم

इन्सान कमज़ोर और मोहताज हैः

मेरे भाईयों और दोस्तों! इन्सान कमज़ोर है ﴿خلق الانسان ضعيفا﴾ सहारों के बग़ैर चल नहीं सकता। जिस्म के निज़ाम के लिए ग़िज़ा, पानी और हवा का मोहताज है। ज़रूरियाते ज़िन्दगी पूरी करने के लिए काएनात का मोहताज है। एक एक चीज़ से उसकी ज़रूरियात वाबस्ता हैं। दुनिया में कोई इतना मोहताज नहीं जितना इन्सान है। जानवर पतंगे परिन्दे उनकी क्या ज़रूरियात हैं कुछ भी नहीं। बहुत थोड़ी-थोड़ी देर में पूरी हो जाती हैं लेकिन इन्सान क़दम क़दम पर मोहताज है फिर जितना मालदार बनता है, उतना मोहताज हो जाता है, जितना ओहदों में तरक़्क़ी करता है उतना वह मोहताज हो जाता है। एक आदमी अपनी ज़रूरियात पूरी करने में हज़ारों आदमियों का मोहताज बनता है। चाहे वह झाड़ू देने वाला है या पाकिस्तान का सदर और बादशाह है या वह बाज़ार में रेढ़ी लगाता है, मोहताज है।﴿خلق الا نسان ضعيفا﴾ इन्सान कमज़ोर है, ﴿يا ايها الناس انتم الفقرآء﴾ ऐ इन्सानों तुम फ़क़ीर हो और मोहताज हो। अब मुश्किल यह है

कि जिनसे हम उम्मीदें रखते हैं वे भी हमारी तरह मोहताज हैं, हमारी तरह उनमें तमा है, हमारी तरह उनमें लालच है, हमारी तरह उनकी भी ज़रूरियात हैं और इन्सान में अपनी ज़रूरियात को पूरा करने का जज़्बा भी है, लिहाज़ा जब मोहताज ने मोहताज पर सहारा किया, कमज़ोर ने कमज़ोर पर ऐतिमाद किया तो वह बुनियाद टूट गई, इमारत टूट गई, खंडर बन गई।

इस खुदा जैसा कोई नहीं:

तो सबसे पहला सबक़ जो अल्लाह तआला मुसलमान को सिखाता है वह है ﴿لا اله الا الله محمد الرسول الله﴾ यह पहला सबक़ अल्लाह देता है और सारे नबियों की पहली दावत भी यही है कि तुम काएनात में अल्लाह जैसा कोई नहीं पा सकते ﴿ليس كمثله شيء﴾ इस जैसा कोई नहीं। लिहाज़ा तुम अल्लाह तआला को अपने साथ लो और उसके सामने हर ज़रूरत रखने की आदत बना लो और उसके मोहताज बन जाओ तो वह तुम्हारी दुनिया आख़िरत की सारी ज़रूरियात को पूरा कर देगा लेकिन उसके लिए शर्त यह है कि उसके साथ ताल्लुक़ क़ायम किया जाए।

तबलीग़ का काम अल्लाह तआला से ताल्लुक़ जोड़ने की मेहनत है

यह जितना तबलीग़ का काम हो रहा है यह अल्लाह तआला से ताल्लुक़ को ठीक करने की मेहनत हो रही है, अगर किसी से ताल्लुक़ बनाना हो तो कितना कुछ करना पड़ता है। सिर्फ़ थानेदार या एस पी है या कमिशनर, ये सारे छोटे आफ़िसर हैं। उनसे अगर ताल्लुक़ बनाना हो तो किस तरह आदमी गर्दिश

करता है, रास्ते तलाश करता है, खुशामद करता है, झूठ सच उनके सामने बोलता है। तब जा कर उनसे ताल्लुक़ क़ायम होता है तो अल्लाह से ताल्लुक़ पैदा करना जो ज़मीन व आसमान का बादशाह है। उन सबसे आसान है जितने आप इन्सान से ताल्लुक़ क़ायम करने में थकते हैं।

जो ख़ुद मोहताज हो वह कैसे मस्अला हल करेगा?

इससे कम अल्लाह तआला से ताल्लुक़ क़ायम करने में थका जाए तो मस्अला हल हो जाए। अल्लाह तआला से ताल्लुक़ क़ायम करने की ज़रूरत है दुनिया वालों से तो यह मामला है कि न ही हमें रोटी की ज़रूरत है तो जिस पर हमारी उम्मीद है वह भी रोटी खाता है और हमें ख़ौफ़ से अमन की ज़रूरत है और जिस पर हमारी उम्मीद है वह ख़ुद ख़ौफ़ ज़दा है। हमारी तमा है दौलत बढ़ जाए और जिन लोगों से हम दौलत निकालना चाहते हैं उनमें भी तमा और लालच है कि हमारी दौलत और माल बढ़ जाए और हम अपने घर को रौशन करना चाहते हैं और जिन जिन रास्तों से हम कोशिश कर रहें हैं जिनकी जेबों से रूपये निकाल रहे हैं वे ख़ुद भी चाहते हैं कि हमारे भी महल खड़े हो जाएं।

सबसे ताक़तवर कौन है?

लेकिन अगर हम अल्लाह तआला से ताल्लुक़ क़ायम कर लें तो अल्लाह तआला किसी एक चीज़ का मोहताज नहीं। न वह खाए न वह पीए, न वह सोए, न वह थके, न वह परेशान हो और न उसके ख़ज़ानों में कुछ कमी आए।

لا تأخذه سنة ولا نوم، ولا يؤده حفظهما،
ما مسنا من لغوب، ما كان ربك نسيا

काएनात के इस निज़ाम को चलाके नहीं थका कि यह कहने लगे कि मैं थक गया हूँ अब कल दरबार लगेगा। हम अपनी अपनी ज़रूरतें लेकर उसके पास आएं क्योंकि न वह सोता है न घबराता है, न ग़ाफ़िल है, न ऊँघता है, न जाहिल है, न आजिज़ है बल्कि वह ग़ालिब है ग़ैर मग़लूब, उस पर कोई ग़ालिब नहीं, सब पर उसकी ताक़त छाई हुई है उससे ताक़तवर कोई नहीं जो उस पर छा जाए। वह जाबिर है मजबूर नहीं, वह ग़ैर मख़लूक़ है वह ख़ालिक़ है मख़लूक़ नहीं, मालिक है ग़ैर ममलूक, वह मालिक है ममलूक नहीं, नासिर है ग़ैरूल मन्सूर, वह मदद करता है, मदद का मोहताज नहीं, हाफ़िज़ ग़ैर महफ़ूज़, वह हिफ़ाज़त करता है, अपनी हिफ़ाज़त कराता नहीं, रब ग़ैर मरबूब, वह पालता है और परवरिश करता है और ख़ुद अपनी परवरिश में किसी का मोहताज नहीं, शाहिद है ग़ैर मशहूद, वह सब देखता है उसको कोई नहीं देख सकता। सब चीज़ें उसकी नज़रों में हैं। ﴿لا تدركه الابصار﴾ उसको आँखें नहीं देख सकतीं, ﴿هو يدرك الابصار﴾ वह हम सबको देखता है। कितनी दूर है? ﴿لا تراه العيون﴾ आँख नहीं देख सकती। आँख तो सितारे भी नहीं देख सकती, अल्लाह को कैसे देख सकेगी? ﴿ولا تخالطه الظنون﴾ दुनिया में इन्सानी ख़्याल सबसे तेज़ सवारी है, तो अल्लाह तआला तक ख़्याल भी नहीं पहुँच सकता। सारी दुनिया के इंन्सानों के ख़्यालों को इकठ्ठा किया जाए तो वह उनसे भी ऊपर है। ख़्याल की परवाज़, तख़य्युल की परवाज़ उड़ते उड़ते थक जाए और अल्लाह को न पहुँच सके।

तमाम तारीफ़ों के लायक़ सिर्फ़ अल्लाह तआला हैः

﴿ولا يصفوه الواصفون﴾ सारा जहाँ मिलकर उसकी तारीफ़ करना चाहे तो सब मिलकर उसकी तारीफ़ न कर सके। इतने दूर और इतना ऊँचा है लेकिन उसकी अजीब सिफ़्त है कि ﴿بل هو اقرب اليه من حبل الوريد﴾ यहाँ पर दो मुताज़ाद चीज़ें आपस में मिल गई हैं। दो नामुमकिन मुमकिन हो गए हैं। इतना दूर है इतना दूर है कि ख़्यालात भी उस तक नहीं पहुँच सके और इतना ज़्यादा क़रीब है कि रगे शह (रगे जान) से भी ज़्यादा क़रीब हो जाता है। फिर उसकी फ़ौक़ियत और ऊपर होना ﴿فوقيته ما اكثر ملكه كما اعلى مكانه﴾ क्या ऊँची शान उसका मुल्क है आला उसका मकान है ﴿ما اعظم شانه﴾ क्या अज़ीम उसकी शान है। एक हदीस पाक में आता हैः

الملك الله، والكبرياء الله، والجبروت الله،
والهيبة الله، والقدرة الله، والنور الله،

या अल्लाह! सब कुछ तेरा है, मुल्क तेरा, किबरियाई तेरी, जबरूत तेरी, क़ुदरत तेरी, जमाल व जलाल तेरा। उस ज़ात को हम साथ ले लें तो काम बन गया। फिर वह ऐसा बादशाह है जो किसी का मोहताज नहीं। दुनिया के बड़े बड़े बादशाह सब मोहताज हैं। एसेम्बली पास करें, सेंट पास करें, तब जाकर कहीं उनका हुक्म चले। फिर उनके ख़िलाफ़ अद्म ऐतिमाद का वोट हो जाए तो उनकी कुर्सी उलट जाए।

हर चीज़ उसके इख़्तियार में हैः

लेकिन अल्लाह तआला ऐसा बादशाह नहीं है अहद यानी

अकेला, समद यानी बेनियाज़, ﴿الملك لا شريك له﴾ उसकी बादशाही में कोई शरीक नहीं उसका कोई मिस्ल नहीं, आली यानी ऊँचा, ﴿لا ثانيه﴾ उसके बराबर कोई नहीं, ﴿الغنى لا ظهيرله﴾ वह ग़नी है उसका मददगार कोई नहीं, ﴿لا ينفعه شئى﴾ उसको किसी चीज़ से नफ़ा नहीं पहुँता, ﴿لا يضره شئى﴾ उसको कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुँचा सकती, ﴿لا يغلبه شئى﴾ उस पर कोई चीज़ ग़ालिब नहीं, ﴿لا يؤده شئى﴾ उसको कोई चीज़ थकाती नहीं, ﴿لا يتعين بشئى﴾ वह किसी चीज़ से मदद नहीं लेता, ﴿لا يحتاج الى شئى﴾ वह किसी चीज़ का मोहताज़ नहीं, ﴿لا يعزب عنه شئى﴾ उससे कोई चीज़ छुपी हुई नहीं, ﴿ليس قبله شئى ليس بعده شئى﴾ उससे पहले कुछ नहीं उसके बाद कुछ नहीं, ﴿ليس فوقه شئى﴾ कोई चीज़ उससे ऊपर नहीं, ﴿ليس دونه شئى﴾ उससे कोई चीज़ छुपी हुई नहीं,

لطيف بكل شئى، خبير بكل شئى،عليم بكل شئى،خالق
كل شئى، مالك كل شئى، القادر كل شئى، غالب كل
شئى، قدير على كل شئى ، ليس كمثله شئى.

अल्लाह तआला के बग़ैर मसाइल हल नहीं होंगे:

अगर ऐसा बादशाह हमारी पुश्त पर आ जाए तो हम से ताक़तवर कौन होगा? हम से बड़ा इज़्ज़त वाला कौन होगा? आज सारी दुनिया में यह ग़लत ज़हन बन गया है कि पैसे से काम चलेगा और पैसा नहीं होगा तो काम नहीं चलेगा। मेरे भाईयों! हम पूरी दुनिया को बताएं कि अल्लाह साथ होगा तो काम चलेंगे। और बाज़ लोग कहते हैं कि बहुत सारे काम चलते हैं लेकिन अल्लाह साथ नहीं है? तो यह उनको ढील है और यह

उनको मोहलत है मौत तक। अल्लाह की किताब का ऐलान है:

ذرهم ياكلو ويتمتعوا، ويلههم الامل فسوف يعلمون،
وذرهم يخوضوا ويلعبوا حتى يلاقوا، يومهم يوعدون، ذرني
ومن خلقت وحيدا، ذرني والمكذبين اولى النعمة، انهم
يكيدون كيدا واكيد كيدا، فمهل الكفرين امهلهم رويدا

इन सारी आयतों का मतलब यह बनता है कि हम ने अपने नाफ़रमानों को ढील दे हुई हैं। वे झूठ बोल कर कमा रहे हैं और उनको रिज़्क़ आता है, वे लोगों के पैसे मार रहे हैं, दबा रहे हैं, हक़ मार रहे हैं, ख़्यानत कर रहे हैं, ग़लत को सही शकल में बेच रहे हैं और उनको रिज़्क़ आ रहा है तो यह अल्लाह की किताब कहती है कि हम ने उनको मोहलत दी हुई है।

ढील के बाद पकड़ बहुत सख़्त होती है

और उन सब को आप बताइए ﴿واملى لهم ان كيدى متين﴾ जब तुम्हारा रब उनको पकड़ेगा तो उसकी पकड़ बड़ी सख़्त है। ﴿وكذالك اخذ ربك اذآ اخذ القرىٰ وهى ظالمة﴾ ﴿ان اخذه اليم شديد﴾ यही तेरे रब की पकड़ का हाल है कि जब वह बस्तियों को पकड़ता है तो उसकी पकड़ बड़ी सख़्त है। ﴿ان فى ذالك لاية﴾ और इसमें बड़ी निशानियां हैं। ﴿لمن خاف عذاب الاخرة﴾ जिसको आख़िरत के अज़ाब का डर है वह इससे सबक़ हासिल करे और जिसको आख़िरत का ख़ौफ़ नहीं वह बहक जाएगा, भटक जाएगा। आख़िरत को जानने वालों के लिए इतनी ही निशानियां इसमें काफ़ी हैं। यह सब अल्लाह तआला की ढील हैं यह नहीं कि वे अल्लाह तआला से ग़ालिब होकर कमा रहे हैं।

क़ुरैशे मक्का का अबू तालिब से इसरार करना कि भतीजे को दावत से रोकेंः

मेरे भाईयो! हम अल्लाह तआला को साथ ले लें। वह खाता नहीं कि उसको तमा हो कि मैं पहले ख़ुद खाऊँ फिर तुम्हें खिलाऊँगा। माँ को भी सख़्त भूक लगी होती है तो पहले ख़ुद खा लेती है फिर बेटों को खिलाती है, तो अल्लाह न घर का मोहताज है कि पहले अपने लिए घर बनाए फिर आपको घर दे न आराम का मोहताज है कि ख़ुद आराम कर ले फिर आप को आराम कराए। हर हाजत से हर ऐब से पाक ज़ात है। फिर अपने फ़ैसलों में उसको कोई चैलेन्ज नहीं कर सकता। वह हकीम ज़ात है अगर वह ज़ात अकेली हमको मिल गई तो हमें सब कुछ मिल गया। ﴿اليس الله بكاف عبده﴾ मेरे बन्दे काफ़ी नहीं हूँ मैं? अल्लाह भी और कोई भी इसी को शिर्क कहते हैं। अल्लाह भी है ये भी है और वह भी है। यहीं से शिर्क के दरवाज़े खुलते हैं।

अबू तालिब के गिर्द क़ुरैश का घेरा है और इसरार कर रहे हैं कि अपने भतीजे को रोक लो वरना हम उसको क़त्ल कर देंगे। उन्होंने बुलाया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए, चारपाई के पाँव की तरफ़ बैठ गए, भतीजे तेरी क़ौम आई है सिर्फ़ आप इनको कुछ कहना छोड़ दें और ये तुझे कुछ नहीं कहेंगे। ﴿ام كلمة واحدة تاتونها﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ चचा! मैं एक बात इनसे करता हूँ, एक बोल मेरा मान लें तो अरब सारा इनके ताबे होगा और सारा जहाँ इनकी हुकूमत के नीचे आ जाएगा तो यह सब उछल पड़े। अबू जहल

ने अपनी रान पर हाथ मार के कहा ﴿وابيك عشرة﴾ तेरे बाप की क़सम दस दफ़ा भी तेरे बोल मानने को तैयार हूँ वह बोल क्या है जिससे अरब हमारे ताबे हो जाएं? वह क्या है जिसकी वजह से अरब व अजम हमारा ग़ुलाम हो जाए? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿لا اله الا الله﴾ बस यह मान लो तो उसने कहा ﴿اجعل الالهة الها وحدا ان هذا لشئ عجاب﴾ तू कई ख़ुदाओं को एक बनाता है यह हमारी समझ में नहीं आता। यही आज हमारी समझ में नहीं आ रहा है।

इन्सान पर अल्लाह तआला के बेशुमार एहसानात हैं:

मेरे भाईयों! अल्लाह तआला को साथ लें तो बहर व बर, फ़र्श व अर्श, लौह व कुर्सी, ज़मीन व मकान, हवा, फ़िज़ा सब अल्लाह की हैं और अल्लाह के ताबे हैं। यह आलम कुछ न था अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम के साथ इसको बनाया और इसको शकल दी। हर चीज़ को बनाया और इसका अन्दाज़ा लगाया। ﴿فقدره تقديرا، يصوركم فى الارحام كيف يشاء﴾ फिर आसमान उठाया ﴿رفع السموات بغير عمد﴾ आसमान के लिए कोई सुतून नहीं लगाया फिर ज़मीन को बिछाया ﴿والارض بعد ذلك دحها﴾ फिर इसमें से पानी निकाला ﴿واخرج منها ماء ها﴾ फिर चारा निकाला ﴿ومرعها﴾ फिर पहाड़ लगाए ﴿والجبال ارسها﴾ रात और दिन का निज़ाम बनाया ﴿يغشى الليل النهار﴾ फिर कभी दिन को लम्बा किया और कभी रात को लम्बा किया फिर सूरज को धहकाया ﴿وجعلنا سراجا وهاجا﴾ फिर अल्लाह ने चाँद की चाँदनी को ठण्डा करके ज़मीन पर बखेर दिया ﴿القمر نورا الم ترو كيف خلق الله سبع سموات طباقا﴾ तुम

ग़ौर क्यों नहीं करते हो तुम्हारे रब ने ज़मीन व आसमान को कैसे बनाया? ﴿وجعل القمر فيهن نورا وخلقناكم ازواجا﴾ तुम को जोड़ा जोड़ा बनाया ﴿وجعلنا نومكم سباتا﴾ हमें सारी चीज़ों से काट देती है नींद, रात को अल्लाह तआला ने सबके लिए तमाम मख़्लूक़ात के लिए आराम की चीज़ बनाई अगर हम खुद अपने सोने का वक़्त मुताय्यन करते तो कितनी परेशानी होती। एक आदमी आराम करता तो दूसरा काम करता जिससे शोर होता दूसरे का आराम ख़राब हो जाता इसी तरह तमाम हैवानात और परिन्दे रात को आराम करते हैं अगर परिन्दे और हैवानात भी रात को आराम न करते तो इन्सान को आराम करना मुश्किल होता। अल्लाह ने रात को तमाम जानवर, इन्सान, परिन्दों के लिए आराम करने के लिए बनाया। रात को तमाम जानवर और इन्सान तमाम मसरूफ़ियात से कट जाते हैं। अल्लाह तआला ने सब को एक सोने का वक़्त दे दिया फिर सब को एक जागने का वक़्त दे दिया। ﴿وجعلنا النهار معاشا﴾ आधा दिन अल्लाह ने हमको दिया और आधा दिन अपने लिए बनाया। ज़ोहर और फ़ज्र में लम्बा वक़्त है, ज़ोहर के बाद नमाज़ों का थोड़ा होना शुरू हो जाता है। फ़ज्र से ज़ोहर तक काम करो। ज़ोहर से अस्र तक उसे समेट लो। फिर अस्र मग़रिब और इशा का वक़्त ऊपर नीचे जो आता है यह इस बात की निशानी है कि यह वक़्त कारोबार का नहीं है, यह वक़्त मेरे लिए है। मुझे बैठकर याद करो। हमारे यहाँ कारोबार ही अस्र मग़रिब से शुरू होते हैं। ऐन वक़्त अल्लाह की मुहब्बत का, अल्लाह को याद रकने का और वह वक़्त कारोबार का हो गया है, उल्टी गंगा बहा दी।

निज़ामे क़ुदरत इन्सान के लिए मुफ़ीद हैः

अल्लाह तआला क़ुरआन के ज़रिये हमें बता रहा है कि यह हवा का निज़ाम, पानी का निज़ाम, पहाड़ों का निज़ाम, दरियाओं का निज़ाम, फलों का निज़ाम, ज़मीन का निज़ाम हमारे लिए है। अल्लाह तआला को इन चीज़ों की ज़रूरत नहीं है तो अल्लाह ही से बना कर रखो। फ़ैसलाबाद के एस पी से, मेयर से, कमिशनर से बना कर रखो और ज़मीन व आसमान के बादशाह से बिगाड़ कर रखो कैसी हिमाक़त है? लोग तो बदमाशों से बना कर रखते हैं जिनको काम पड़े तो काम आएंगे तो हम ज़मीन आसमान के बादशाह से बिगाड़ कर चलें तो हमारी ज़िन्दगी कैसे सुखी होगी हम कैसे चैन पाएंगे।

लामहदूद ख़ज़ानों का मालिक अल्लाह हैः

मेरे भाईयों! तो इस लिए अपने अल्लाह से ताल्लुक़ कर लो, हर काम में साथ ले लो। सबसे ज़्यादा अल्लाह को साथ लेना आसान है, बड़ा आसान है। बादशाह है उसकी क़ुदरत इतनी बड़ी है कि उसकी कोई हद नहीं। अपने बन्दों से ताल्लुक़ इतना है कि काएनात इजाज़त मांगती है कि नाफ़रमानों को हलाक कर दूँ तो अल्लाह कहते हैं कि नहीं छोड़ो, मैं तौबा का इन्तेज़ार करता हूँ। तो पहला काम करने का यह है कि अपने अल्लाह को साथ लेना है तो इसके लिए तौबा कर लें। तबलीग़ कोई जमात नहीं। यह एक मेहनत है कि हर मुसलमान अपने अल्लाह से जोड़ और ताल्लुक़ बना ले। मस्अले हल करवाने हैं तो अल्लाह से करवा ले। उसको लेते हुए न कोई घबराहट होती है न पीछे देखे कि

बच गया है कि नहीं जो रह गया है तो आ के ले लेना। अल्लाह के यहाँ यह नहीं, वह कहता है मुझसे लेते रहो जितने चाहिएं लेते जाओ। कितनों को मिलेगा? तो कहता है:

اولکم وآخرکم وانسکم وجنکم وحیکم ومیتکم ورطبکم
ویابسکم وذکرکم وانثی کم وصغیرکم وکبیرکم

यह सबके सब क्या करें? एक मैदान में खड़े हो जाओ ﴿فاسئلونی﴾ फिर मांगो, हर एक अपनी अपनी ज़ुबान में मांग ले, पंजाबी पंजाबी में, पठान पश्तों में, फ़ारसी फ़ारसी दान में, सिन्ध वाले सिन्धी में, बलूच बलूची में। सारे अपनी अपनी ज़ुबानों में अल्लाह से मांग लो, इकठ्ठे एक ही आवाज़ में मांग लो तो अल्लाह तआला यह नहीं कहेगा, अरे भाई क्या कर रहे हो, इतना शोर? मैं किन किन की सुनूंगा बारी बारी मांगो, जितना जी में आता है मांगो ﴿فاتیت کل انسان مسئلة﴾ मैं तुम सबका मांगा तुम सबको दें दूंगा। फिर:

مانقص ذالك مما عندی الا مما ینقص مخیة اذاادخل فی البحر

मेरे ख़ज़ाने में इतनी भी कमी नहीं आती जितनी सुई को समंदर में डाल कर बाहर निकाला जाता है, जिस तरह उस समंदर में कोई कमी नहीं आती इसी तरह तेरे रब के ख़ज़ानों में कोई कमी नहीं आती।

अल्लाह से ताल्लुक़ का क्या मतलब है?

तो मेरे भाईयों! ऐसे अल्लाह मेरे और आपके साथ हो जाएं तो क्या ख़्याल है हमारे काम बनेंगे या नहीं?

और पैसा कमाना कोई आसान होता है फिर उसको बाक़ी

रखना कोई आसान होता है। जवानी में बूढ़े हो जाते हैं। अल्लाह को साथ ले लो फिर तो ये पाँचों उंगलियां घी में और सिर कढ़ाई में। अल्लाह से यारी लगा लो, अल्लाह को अपना बना लो, अल्लाह से ताल्लुक़ पैदा कर लो। ताल्लुक़ का क्या मतलब? कहते हैं कि मेरा उससे ताल्लुक़ है ग़म न करो, शोर न मचाओ, मैं जाऊँगा काम बनेगा। अगर उसके दरवाज़े पर जाऊँगा तो नहीं ठुकराएगा, हमें नहीं रद करेगा। इसी को ताल्लुक़ कहते हैं। वह मुझे जानते हैं मैं उनको जानता हूँ, इसी तरह मैं आप को नहीं जानता, आप में से बहुत सारे मुझे जानते हैं, नाम से नहीं जानते, शकल से तो मुझे पहचान रहे हैं। तार्रुफ़ तो इसको भी कहते हैं। तार्रुफ़ और ताल्लुक़ का मतलब यह है कि जब आप उसके दरवाज़े पर जाएं तो वह आपका काम ज़रूर करे अगर वह कर सकता है, आपको वह लौटा न सके। ऐसे अल्लाह के साथ ताल्लुक़ बना लें और अल्लाह भी यही फ़रमाता है कि अपने बन्दे के हाथ ख़ाली लौटाते हुए मुझे शर्म आती है। इसका नाम ताल्लुक़ है। इस ताल्लुक़ को अल्लाह पाक के साथ आप बना लें।

मालिक बिन दीनार रह० का दिलचस्प वाक़ियाः

मालिक बिन दीनार रह० किश्ती में सवार होकर सफ़र कर रहे थे। कपड़े ऐसे ही थे। किसी आदमी का क़ीमती पत्थर चोरी हो गया। वह लाल जवाहरात का हीरा था, उसने शोर मचाया कि मेरा पत्थर चोरी हो गया, मेरा पत्थर चोरी हो गया। उसने मालिक बिन दीनार रह० पर शक किया कि मेरा चोर यह लगता है। इस किश्ती में ज़ुन्नून मिसरी रह० भी बैठे हुए थे। उन्होंने

कहा सब्र करें मैं इस आदमी से कुछ बात करता हूँ। वह मालिक बिन दीनार रह० के पास आकर कहने लगे, बेटा तुम से भूल चूक हो गई, तुमने इनका हीरा ले लिया है। उन्होंने यह नहीं कहा कि मैं कोई चोर नहीं हूँ आप मेरी तलाशी ले लें और अपना सामान खोला कि इसमें देख लें और यह मेरी जेब है इसमें भी देख लें, मैंने तो कोई चोरी नहीं की। लेकिन उन्होंने क्या किया? कोई जवाब नहीं दिया ﴿نظر نظرة فى السماء﴾ आसमान को यों देखा, हॉय वह भी लोग थे हम भी लोग हैं।

एक हदीस में आया है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया एक वक़्त ऐसा आएगा कि मेरी उम्मत का शौक़ पैसे जमा करना होगा या शहवत पूरी करना होगा बस, अच्छे अच्छे खानों का शौक़ होगा, शहवतों की ख़ातिर औरतों के पीछे भाग रहे होंगे। इसके अलावा उनका कोई शौक़ नहीं रह जाएगा। वे इन्सान नहीं होंगे इन्सान की शक्ल में जानवर होंगे।

मालिक बिन दीनार रह० का वाक़िया

मालिक बिन दीनार रह० चन्द साल पहले शराब में मस्त रहते थे, फिर अल्लाह ने हिदायत दे दी, फिर जान लगाई, मेहनत की, फिर यह मुक़ाम आया ﴿نظر نظرة فى السماء﴾ आसमान की तरफ़ यों देखा तो चारों तरफ़ से किश्ती को मच्छलियों ने घेरा डाल दिया और हर मच्छली के मुँह में एक हीरा था तो उन्होंने हर मच्छली के मुँह से एक हीरे का पत्थर निकाल कर ज़ुन्नून मिसरी रह० को दिखाया कि आप यह ले लें मैंने चोरी तो नहीं की, जिसका गुम हुआ है उसको दे दें और वह खुद किश्ती से उतरे पानी के ऊपर चलते हुए पार हो गए।

अल्लाह के भरोसे पर समंदर की ग़ुलामी

हदीसे पाक में आता है कि जिस आदमी के दिल में राई के दाने के बराबर तवक्कुल और भरोसा होगा तो वह पानी पर चले तो पानी उसको रास्ता देगा, उसको डुबो नहीं सकेगा

لو كان لا بن آدم حبة الشعير من اليقين ان يمشى على المآء.

मेरे भाईयों! अल्लाह से ताल्लुक़ बना लें

उम्मे साद के बेटे का मरने के बाद ज़िन्दा होनाः

उम्मे साद रज़ियल्लाहु अन्हा का बेटा फ़ौत हो गया तो आयीं मय्यत को ग़ुस्ल दिया था। इस मय्यत के पाँव की तरफ़ आकर बैठ गयीं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी साथ तशरीफ़ फ़रमा थे। उनसे कुछ कहा नहीं, ख़ामोशी से दुआ करना शुरू की ﴿امنت بك طوعا وهاوهاجرت اليك رغبة﴾ या अल्लाह तेरी मुहब्बत में कलिमा पढ़ा, तेरी मुहब्बत में घर छोड़ा और तेरे हबीब के घर आई और यह मेरा बेटा तुम ने ले लिया ﴿فلا تشمت بى الاعدآء﴾ या अल्लाह आप दुश्मन को क्यों मौक़ा देते हैं कि वे कहेंगे कि बाप दादा का मज़हब छोड़ा बेटा गया, या अल्लाह मेरी इज़्ज़त रख। सिर्फ़ इतना ही कहा कि ﴿فلا تشمت بى الاعدآء﴾ मेरे दुश्मनों को हंसने का मौक़ा न दें तो हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि उनके अलफ़ाज़ पूरे नहीं हुए थे कि मय्यत में हरकत हुई और अपने ऊपर से कफ़न को खोला और उठकर बैठ गया। यह ताल्लुक़ हम भी अल्लाह से बना सकते हैं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सामने हैं उनसे नहीं कहा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुआ कर दें। ख़ुद

दुआ की मुसलमान का मुसलमान के लिए दुआ करना सुन्नत है और दुआ की तलब भी सुन्नत है लेकिन हमारे मआशरें में रिवाज पड़ गया है कि करना कुछ नहीं आप मेरे लिए खुसूसी दुआ कर दें। खुसूसी दुआ तो यों हुआ कि मौलाना साहब मेरे पेट में दर्द है आप मेरे लिए हाय हाय कर दें। मैं क्यों हाय हाय करूं पेट में आपके दर्द मैं हाय हाय करूं?

अल्लाह के हुक्म से ख़ाली चक्की का चलनाः

मेरे लिए खुसूसी दुआ करें। हां दुआ ज़रूर करवानी चाहिए एक दूसरे से। खुसूसी दुआ उसे कहते हैं कि आदमी तड़प के साथ कहता है या अल्लाह! खुद अन्दर से जब आदमी तड़प के बोलता है या अल्लाह! यह ख़ुसूसी दुआ है। एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु अपने घर में आए पूछा कुछ है? बीवी ने कहा नहीं, फ़ाक़ा है। पेरशान हो गए न घर में बैठा जाए और न भूक का हाल देखा ज़ाए तो बाहर चले गए। बीवी ने सोचा कि मैं अपना फ़ाक़ा कैसे छुपाऊँ? अड़ौस पड़ौस कैसे छुपाऊँ कि हमारे घर में कुछ नहीं है। उसने तन्नूर में आग जलाई। अड़ौस पड़ौस को पता चल जाए इसने रोटी पकाने के लिए तन्नूर गर्म किया है, इधर ख़ाली चक्की चलानी शुरू कर दी कि पड़ौस को पता चल जाए कि आटा पीस रही है। यों अपने फ़ाक़े को छुपाया। इस दौरान अल्लाह तआला से दुआ कर दी कि या अल्लाह आप जानते हैं कि हम भूके हैं हमें रिज़्क़ खिला दें ﴿اللهم ارزقنا﴾ सिर्फ़ एक जुमला या अल्लाह हमें खिला दें। अभी इसके अलफ़ाज़ भी ख़त्म नहीं हुए थे कि तन्नूर से ख़ुशबुएं उठने लगीं और इतने में दरवाज़े पर ख़ाविन्द आ गया तो वह दरवाज़े पर ख़ाविन्द को

लेने गई। मियां और बीवी ने तन्नूर में झांक कर देखा तो तन्नूर में रानें भूनी जा रही हैं और चक्की पर जा कर देखा तो उससे आटा निकल रहा है। सारे बर्तन भर लिए। जब उठाकर देखा तो कुछ भी नहीं। अब वह हुज़ूरे सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह वाक़िया हुआ है, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तू उठाकर न देखता तो क़यामत तक यह चक्की चलती रहती।

मेरे भाईयों! ऐसा ताल्लुक़ अल्लाह तआला से बना लें। फिर सौदे में झूठ बोलने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, फिर हमें सूद पर सौदा करना नहीं पड़ेगा, फिर उधार का रेट अलग करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। अल्लाह तआला से अपना ताल्लुक़ बना लें। उससे मांगना आ जाए या अल्लाह! ख़ुदा की क़सम इसमें जो ताक़त है, इससे अर्श के दरवाज़े खुल जाते हैं बशर्ते कि सीखा हुआ हो।

जिसका काम करें उसका मेहमान बनें:

तबलीग़ का जो यह काम है यह इस बात की मेहनत है कि अल्लाह से ताल्लुक़ बनाया जाए। जब ताल्लुक़ बन जाता है तो यों ही काम हो जाता है। अबू मुस्लिम ख़ौलानी रह० कहते हैं कि मैं हज पर जाता हूँ तो कौन तैयार है तो कई हज़ार आदमी तैयार हो गए। कहने लगे मेरे साथ वह चले जो न तोशा लें न पानी लें न कोई पैसा लें, फिर सफ़र कैसे होगा? न खाना, न पानी, न तोशा? तो फ़रमाने लगे जिसके मेहमान हैं उससे मांगेंगे, तो सारे पीछे हट गए कोई चन्द साथ रह गए। उनको लेकर चल

दिए। चलते चलते थक गए। सवारियां भी थक गयीं तो कहने लगे अबू मुस्लिम खिलाआ भूके हैं हम भी सवारियां भी। तो अबू मुस्लिम ने नमाज़ पढ़ी। नमाज़ के बाद घुटनों के बल यों खड़े हो गए और हाथ उठाए या अल्लाह इतने लोग किसी बख़ील के दर पर जाए तो वह भी शर्मा कर सख़ी बन जाए तो तू तो सख़ियों का सख़ी है। हम तेरे घर को जा रहें हैं, तेरे सहारे पर निकले हैं, तेरे मेहमान हैं, तू ने बनी इसराइल को मन सलवा दिया हमें भी दे। अभी उनके हाथ नीचे नहीं हुए थे कि उनके ख़ेमों में खाने के दस्तरख्वान बिछे पड़े थे और उनके जानवरों के लिए गुठलियां आ चुकी थीं। चलो भाई खा लो। जब खाने के बाद जो बच गया तो साथियों ने कहा कि यह रख लेते तो अबू मुस्लिम रह० फ़रमाते हैं कि अभी खिलाया अगले वक़्त में वह दोबारा गर्म और ताज़ा खिलाएगा। सारा सफ़र इसी तरह किया। ऐसा भी मुक़ाम आता है।

दीन का काम करने वालों के लिए दरिया का मुसख़्ख़र (क़ाबू में) होनाः

चलते चलते यही अबू मुस्लिम ख़ौलानी रह० तीन हज़ार का लश्कार लेकर मुल्के शाम पहुँचे। सामने दरिया था और दरिया पार करना था पुल कोई नहीं। सवारी पर से उतरे, दो रक्आत नमाज़ पढ़ी या अल्लाह! तूने बनी इसराइल को दरिया में रास्ता दिया था और अब अपने हबीब की उम्मत को भी रास्ता दें फिर आवाज़ लगाई आओ मेरे साथ जिसका कोई जान, माल ज़ाए हो जाए मेरे ज़िम्मे लगा लो, मैं ज़िम्मेदार हूँ आ जाओ। फिर अपने घोड़े को पानी में डाला। अल्लाह तआला ने पानी को मुसख़्ख़र

फ़रमा दिया। वह पानी भी पहाड़ी था, पहाड़ी पानी पत्थरों को भी उड़ा के ले जाता है। फिर तीन हज़ार आदमी यों ही दरिया के पार निकल गए एक आदमी ने जान बूझकर खुद अपना पियाला दरिया में फेंक दिया। जब दूसरी तरफ़ पार हो गए तो अबू मस्लिम रह० ने कहा कहो भाई किसी का कोई नुक़सान हुआ? तो उस आदमी ने कहा जी हां मेरा पियाला दरिया में चला गया फिर जहां से दरिया पार किया था उसको लेकर वहाँ पहुँच गया। वहाँ पर जाके देखा लकड़ी का पियाला पड़ा हुआ था। उन्होंने कहा यह है तम्हारा पियाला? जी हां यह मेरा पियाला है, उठा लो। मेरे भाईयों ऐसा ताल्लुक़ अल्लाह से पैदा करें और यह बहुत आसान है बहुत ही आसान है न धक्के खाने पड़ें न किसी की खुशामद करनी पड़े न किसी की जूती उठानी पड़े।

सबसे पहला काम तौबा करना हैः

आज ही हम सब तौबा कर लें या अल्लाह मेरी तौबा, या अल्लाह मेरी तौबा ﴿جئتك تائبا فاقبل فی یا الله﴾ मेरी तौबा क़ुबूल कर लें तो करने का काम यह है कि आज गुनाहों से तौबा करके जाए।

दावत को अपनी ज़िम्मेदारी समझनाः

दूसरा काम यह है कि आज के बाद अपनी ज़िन्दगी को हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी के मुताविक बनाने की नियत कर ली जाए और यह सीखना शुरू कर दें और यह मेहनत हो रही है ज़िन्दगी नबी के तरीक़े पर आ

जाए। अल्लाह तआला के हां न रिश्ता, न नाता, न क़ौम, न अरबी, न क़ुरैशी, न शैख़, न पीर, न दोस्ती, न बादशाह, न दरबारी, न वज़ीर, कुछ भी नहीं सिर्फ़ एक ही सिक्का है ﴿لا الہ الا اللہ﴾ और उसके साथ क्या? ﴿محمد الرسول اللہ﴾ जिसको अल्लाह ने अपने साथ जोड़ा है उनके तरीक़े पर आ जाएं और उनकी सुन्नत पर आ जाएं तो अल्लाह तआला गोरे का भी हो जाएगा, काले का भी हो जाएगा और ग़रीब का भी हो जाएगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लााह ने अपना क़ुर्ब दिया है और अपनी माइय्यत दी है। आदम अलैहिस्सलाम के जिस्म में रूह डाली तो उन्होंने देखा कि अर्श पर ﴿لا الہ الا اللّٰہ محمد الرسول اللّٰہ﴾ लिखा हुआ है जब जन्नत में गए तो दरवाज़े पर देखा तो लिखा है ﴿لا الہ الا اللّٰہ محمد الرسول اللہ﴾ जब जन्नत की हूरों को देखा तो हर एक के माथे पर लिखा है ﴿لا الہ الا اللّٰہ محمد الرسول اللہ﴾। तो तौबा और इत्तेबा। एक काम तौबा का है दूसरा काम अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी अपनाने का है। सब से बड़ी इज़्ज़त वाली ज़ात अल्लाह के रसूल की है दुनिया में किसी ने महल बनाया, किसी ने हुकूमतें चलायीं, कोई चाँद तक पहुँचा, कोई मरीख़ तक और अल्लाह का रसूल एक ही रात में बैतुल्लाह से बैतुल मुक़द्दस पहुँचे, वहां से एक क़दम में पहला आसमान, फिर दूसरा, फिर तीसरा, आख़िर सातों आसमान तक पहुँचे, फ़रिश्तों से इस्तिक़बाल करवाया, नबियों से इस्तिक़बाल करवाया फिर अल्लाह तआला और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मकालमा हुआ, अपना दीदार कराया। ऐसे नबी की ज़िन्दगी को छोड़ कर कहाँ जाएं।

एक बद्दू से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मकालमा:

एक बद्दू आया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में और उसने तीन बातें सामने रखीं तो कहता है कि हम बाप दादा के दीन छोड़ कर तेरे दीन पर आ जाएं, बाप दादों को छोड़ कर तेरी मान लें यह कैसे हो सकता है?

दूसरी कहता है क़ैसर व क़िसरा हमारे ग़ुलाम हो जाएंगे। हमें रोटी नहीं मिलती, रूम व फ़ारस की हुकूमतें हमारी ग़ुलाम हो जाएंगी, यह कैसे हो सकता है?

तीसरी कहता है कि मर जाएंगे मिट्टी हो जाएंगे फिर उठाकर हमको ज़िन्दा कर दिया जाएगा, यह भी नहीं हो सकता

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तुझे ज़िन्दगी देगा तो देखेगा कि सारा अरब मेरा कलिमा पढ़ेगा, तू देखेगा क़ैसर व किसरा फ़तेह होंगे, रही तीसरी बात क़यामत दिन ﴿ولا خذتك بيدك هذه ولاذكرتك بمقالتك هذه﴾ मैं क़यामत के दिन तेरा हाथ पकड़ूंगा और तुझे तेरी यह बात याद दिला दूंगा। कहने लगा मैं नहीं मानता ऐसी फ़ुज़ूल बातें। वापस चला गया। उसकी ज़िन्दगी में मक्का फ़तेह हुआ, उसकी ज़िन्दगी ही में तबूक तक इस्लाम फैल गया, मुसलमान नहीं हुआ, और उसकी ज़िन्दगी में क़ादसिया लड़ाई हुई, ईरान फ़ते‍ हुआ, यरमूक की लड़ाई हुई तो रोम फ़तेह हुआ तो अब वह डर गया कि दोनों फ़तेह हुए तीसरा भी होगा तो वह मुसलमान होकर मदीना मुनव्वरा में हिजरत करके आ गया। जब मस्जिद में आया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उठ कर उसका इस्तिक़बाल किया औ इकराम किया

फिर दूसरे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से फ़रमाया कि जानते हो यह कौन है वह जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन तुम्हारा हाथ पकड़ कर याद दिलाऊँगा और क़यामत के दिन जिसका हाथ हुज़ूरे सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिसका हाथ पकड़ें तो जन्नत में पहुँचाने से पहले कभी नहीं छोड़ेंगे। यह तो पक्का जन्नती है।

माहौल आदमी को मुतास्सिर करता हैः

तो मेरे भाईयों! सबसे हाथ छुड़ाकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ में हाथ दे दो। यह तबलीग़ का काम यह तबलीग़ की मेहनत है तौबा कर लें और ज़िन्दगी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में ले आएं और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में आसानी है। झूठ में मुसीबत और परेशानियां हैं। आज तौबा करके जाओ चार महीने लगाओ या न लगाओ, तौबा तो कर लो लेकिन बात यह है कि तौबा पक्की तब होती है जब आदमी अपना माहौल छोड़ता है। इसके लिए भी निकलना फ़र्ज़ है, यहाँ तो तौबा पक्की नहीं हो रही है, टूट रही है, इधर अल्लाह रहीम तो है लेकिन हमारी तौबा मज़ाक़ न बन जाए।

अल्लाह की मॉफ़ी का बे पनाह करिश्माः

बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है कि निन्नानवें क़त्ल करने वाले ने सोचा कि तौबा कर लूं किसी अनपढ़ से पूछा कि तौबा करना चाहता हूँ तो उसने कहा आप की कोई तौबा नहीं, उसने कहा फिर सौ पूरा करूँ तो उसको भी ख़त्म कर दिया तो सौ पूरे हो

गए। फिर किसी आलिम से पूछा कि मेरी तौबा हो सकती है तो उन्होंने कहा कि हां तौबा तो है लेकिन यह जगह छोड़ के कहीं नेक लोगों की सोहबत में चले जाओ।

अब तो मुसीबत यह है कि नेक लोंगों की बस्ती कहाँ है। यहाँ चारों तरफ़ गन्द ही गन्द है तो अल्लाह तआला ने इस वक़्त हमें एक माहौल दिया है। दस बारह आदमी एक ईमानी फ़िज़ा बना कर चल रहे होते हैं उसके अन्दर जो चला जाता है तो एक ऐसी फ़िज़ा में आ जाता है कि उनके आमाल अगरचे कमज़ोर होते हैं उसके अन्दर आहिस्ता आहिस्ता उनके दिल व दिमाग़ में तौबा की ताक़त पैदा कर देते हैं। अल्लाह तआला ने चलता फिरता माहौल हमें अता फ़रमा दिया है!

तबलीग़ की बरकत से एक तवाएफ़ा का ताएब होनाः

दो साल पहले हम अमरीका गए तो हिन्दुस्तान के हैदरा बाद के अमीरुद्दीन हमारे साथ थे वह गश्त में गए। वहाँ एक अरब मुसलमान का क्लब था शराब का। जब वह उनको दावत देने गए तो वे सब शराब में मस्त थे और एक लड़की नंगी स्टेज पर नाच रही थी और एक लड़का साथ में ड्रम बजा रहा था। जब उन्होंने उन सब को इकठ्ठा करके दावत देना शुरू की तो वह लड़की उनके पीछे आकर खड़ी होकर सुनने लगी तो वे सब नशे में थे उनको क्या समझ में आए जो लड़की पीछे खड़ी सुन रही थी उसने कहा जो बात आप इनको समझा रहे हैं वह मुझे समझा दो मेरी समझ में आ रही है। ये लोग मुँह नीचे करके उसको समझाने लगे तो उसने कहा ठीक है आपकी बात, आप मुझे मुसलमान बनाएं मैं मुसलमान होना चाहती हूँ। वह जो ड्रम

बजा रहा था वह उस लड़की का ख़ाविन्द था वह भी मुसलमान हो गया। मियाँ बीवी दोनों मुसलमान हो गए। उन्होंने उस से कहा बेटी कपड़े पहन कर आ। वह कपड़े पहन कर आई। तीन चार दिन जमात वहाँ पर थी। उनसे कहा आती रहो और सुनती रहो, समझती रहो, तो वह आती रही, सुनती रही, समझती रही। तो अब उन्होंने उन से कहा जब कभी ज़रूरत पड़े तो इस फ़ोन पर बात कर लेना तो दो महीने या कितना अरसा गुज़रा तो उस लड़की का फ़ोन आया कहा कि आप मुझे पहचानते हैं कर्नल साहब? उन्होंने कहा हाँ आप वही रक़ासा लड़की हैं जिसको दो महीने पहले मैं ने क्लब में देखा था। उस लड़की ने कहा कि जब आप को अल्लाह तआला मेरी ज़िन्दगी बदलने का ज़रिया बनाया है। जब आप ने हमें दावत दी? हम मुसलमान हुए, उस वक़्त हम मियां बीवी सिर्फ़ एक रात में पाँच सौ डॉलर कमा लिया करते थे। जब आपने मुझे मुसलमान बना दिया तो पता चला कि औरत के लिए कमाना ठीक नहीं है तो मैं ने अपने ख़ाविन्द से कहा कि आप जाइए कमा कर लाइए। मैं घर में बैठती हूँ। ख़ाविन्द को कोई काम आता नहीं था। उसने मज़दूरी शुरू कर दी तो अब उनको एक दिन में सिर्फ़ चालीस डॉलर मिलते हैं। अमरीका में पाँच सौ डॉलर से चालीस डॉलर में आ जाना यह खुदकशी के बराबर है। हमने घर बेचा और गाड़ी बेची। एक छोटा सा फ़्लैट है जिसमें हम दोनों मियाँ बीवी रहते हैं और आपने हम से कहा था, हम दोनों अपने रिश्तेदारों को दावत देते हैं। हमारी गाड़ियां तो हैं नहीं, बसों से सफ़र करते हैं। आज हम जा रहे थे, मेरे हाथ में बस का डंडा था उसको पकड़ा हुआ था। जब बस को झटका लगा तो जो मेरे बाज़ू का कुर्ता है

यह इतना नीचे चला गया कि बाज़ू का चौथाई नंगा हो गया। क्या इस पर मैं दोज़ख़ में तो नहीं जाऊँगी? टेलीफ़ोन पर रोना शुरू कर दिया। चन्द दिन पहले यह लड़की स्टेज पर नाच रही थी फिर इतने दिन बाद इसके बाज़ू का थोड़ा सा हिस्सा नंगा होने पर वह रो रही है कि इससे मैं दोज़ख़ में तो नहीं जाऊँगी? यह माहौल है। माहौल ने ऐसी फ़ाहिशा औरतों को इतने तक़्वे पर पहुँचा दिया।

जब माहौल नहीं तो हमारी बेटियां उनके बाज़ू नंगे होते जा रहे हैं और स्टेज पर नाचने वाली इतने से बाज़ू नंगे होने पर रो रही है, इससे मैं दोज़ख़ में तो नहीं चली जाएऊँगा? तौबा की पुख़्तगी के लिए अल्लाह के रास्ते में निकलना यह बहुत बड़ा ज़रिया है तो उस आलिम ने कहा बेटा बस्ती छोड़ दो उसने कहा बख़्शिश हो जाएगी तो मैं तैयार हूँ। चल पड़ा तो रास्ते में मौत आई और सफ़र थोड़ा तय हुआ था। अल्लाह तआला ने क़यामत तक के लिए नमूना बनाना था तो दो फ़रिश्ते आ गए। जन्नत के भी और दोज़ख़ के भी। दोज़ख़ वाला कहता है यह हमारा है और जन्नत वाला कहता है यह हमारा है। जन्नत वाले कहते हैं तौबा कर ली है दोज़ख़ वाले कहते हैं तौबा पूरी ही नहीं हुई, वहाँ जा कर पूरी होनी थी तो अल्लाह तआला ने तीसरा फ़रिश्ता भेजा। उसने कहा कि सफ़र की मुसाफ़त नापो अगर यह यहाँ से घर के क़रीब है तो दोज़ख़ी, अगर नेक लोगों की बस्ती के क़रीब है तो जन्नती। जब फ़ासला नापने लगे तो नेक लोगों की बस्ती का फ़ासला ज़्यादा था और अपनी बस्ती का फ़ासला थोड़ा था तो अल्लाह तआला ने घर की तरफ़ की ज़मीन को कहा फैल जाओ और नेक लोगों की बस्ती वाली ज़मीन को कहा कि

सिकुड़ जाओ तो वह फैल गई और यह सिकुड़ती चली गई।

मेरे भाईयों! अगर दुकानों को बन्द करके निकलना पड़े तो बन्द करके निकल जाओ। अल्लाह की क़सम अल्लाह दुकानों के बग़ैर पाल सकता है। अल्लाह हम सबको अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آخر دعوانا عن الحمد للّٰه رب العٰلمين

□□□□□

अल्लाह तआला की अज़मत

9/8/2000

نحمده ونصلى على رسوله الكريم اما بعد.

فاعوذ بالله من الشيطٰن الرجيم بسم الله الرحمٰن
الرحيم من ضل فانما يضل عليها الخ...

قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: يا أبا سفيان جئتك
بكرامة الدنيا وكرامة الآخرة أو كما قال صلى الله عليه وسلم

इन्सान की फ़ितरत ही एहसान मन्दी है:

मेरे भाईयों और दोस्तों! अल्लाह तआला ने इन्सान में एक सिफ़्त रखी है कि यह एहसान मन्द होता है अगर कोई इस पर एहसान करे बशर्ते फ़ितरत मसख़ न हुई हो तो यह एहसान को याद रखता है और यह एहसान करने वाले के सामने झुकता है। यह जानवर की भी सिफ़्त है। कुत्ता पाँव चाटता है और घोड़ा ख़िदमत करता है। इन्सान तो उनमें सबसे अशरफ़ मख़लूक़ है।

फ़ितरत की आवज़:

मेरे दोस्तों अल्लाह पाक के जितने एहसानात इन्सान के ऊपर हैं और हमारे ऊपर मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के भी एहसानात हैं इतने और किसी के भी नहीं। फ़ितरत की आवाज़ है मोहसिन के सामने सिर झुकाया जाए। दुनिया के

ऐतबार से हम करते ही हैं और जो मोहसिने आज़म है अल्लाह की ज़ात उसके सामने सिर झुकाते हैं और मोहसिने इन्सानियत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके सामने सिर झुकाने का रिवाज ख़त्म हो गया है। अदम से वजूद दिया अल्लाह तआला ने। हम कुछ न थे अल्लाह तआला ने बनाया, सब से अच्छा बनाया ﴿لقد خلقنا الانسان فی احسن تقویم﴾ हम ने इन्सान सब से अच्छा बनाया फिर शक्ल व सूरत, रंग, ढंग हर एक चीज़ को अलग एतेदाल के साथ बनाया ﴿فسوٰك فعدلك﴾ ऐसे बेढंगे नहीं हर एक चीज़ को अगल बड़ी तरतीब के साथ अल्लाह तआला ने बनाया। माँ के पेट में थे तो न माँ कुछ कर सकती थी न बाप कुछ कर सकता है। वहाँ अल्लाह तआला का निज़ाम चला। ﴿یا ابن آدم من بعث الیك الغذآء؟ وانت جنین فی بطن امك﴾ ऐ मेरे बन्दे जब तू माँ के पेट में था तो कौन था तुझे रिज़्क़ देने वाला? ﴿غشیتك فی الغشاء کی لا تخفی من ظلمة رحم﴾ तुझे पर्दे में रखा ताकि तुझे माँ के पेट में अन्धेरों में डर न लगे

جعل لك متك عن يمينك وعن شمالك، وعلمتك
الجلوس فی بطن امك هل یقدر ذالك احد غیری

माँ के पेट में तेरे लिए दो तकिये लगाए इस पर बैठ कर तुझे बोलना सिखाया, खेलना सिखाया तो कोई और भी मेरे अलावा है जो यह काम कर सके? यह परवरिश में अल्लाह का निज़ाम है मेरे भाईयों! हमें तो एक लम्हे भी उसकी नाफ़रमानी नहीं करनी चाहिए। हमारा तो सारा वजूद ही नाफ़रमानी में फंस गया। जिस्म के हर हर हिस्से पर बाल रगों पर गुनाहों की स्याहियां छाई हुई हैं। यहाँ हमारी फ़ितरत मद्हम पड़ गई।

रबूबियत का निज़ाम:

परवरिश बड़ी मुश्किल चीज़ है अल्लाह तआला का रबूबियत को निज़ाम चला, जब दुनिया में आए तो हमारे मुँह में दांत नहीं ﴿ولالك من تقطع﴾ जिससे काट सकें ﴿لك يد تبطش﴾ हाथ नहीं कि पकड़ सकें ﴿ولا لك رجل تمشى﴾ पाँव नहीं जिससे चल सकें। न चलने की ताक़त न सुनने की ताक़त, न पकड़ने की ताक़त, अपना माज़ी ज़मीर बताने की ताक़त,

اجرت لك عرقين رقيقين ينبا ان لك لبنا خالصًا دافئا فى الشتاء باردًا فى الصيف

ऐ मेरे बन्दे तेरी ऐसी बे बसी की हालत में तेरे लिए तेरी माँ की छाती से दो चश्में जारी करता हूँ जो गर्मियों में सर्द और सर्दियों में गर्म दूध तुझे पिलाते हैं ﴿هل يقدر على ذلك احد﴾ फिर अगली मुशक़्क़त बहुत बड़ी है पेशाब कौन धोए, पाख़ाना कौन साफ़ करे, उसको खुश्क कपड़ा कौन उढ़ाए, गीला कपड़ा कौन निकाले, उसके उठने पर कौन उठे, उसके तड़पने पर कौन तड़पे? यह निज़ाम चला तो वजूद में आया। अगली बात बतौर एहसान फ़रमाते हैं कि ﴿جعلت لك نهراً فى صدر ابوك﴾ मैं तेरे माँ बाप के दिल में तेरी मुहब्बत को पेवस्त करता हूँ। ﴿لا يكن حتى تشبع ولا ينام حتى ترقد﴾ तू खाता नहीं तो वे खाते नहीं, तू सोता नहीं तो वे सोते नहीं, तेरे जागने पर जागते हैं, तेरे सोने पर सोते हैं, तेरे रोने पर रोते हैं, पेशाब पाख़ाना साफ़ करते हैं, कोई गिला और शिकवा नहीं करते। यह रबूबियत का निज़ाम ऊपर से अल्लाह चला रहे हैं। अल्लाह को यह मालूम है कि यह आगे जाकर फ़िरऔन बन जाएगा, क़ारून बन जाएगा, क़ातिल बन जाएगा, ज़ानी बन जाएगा, उसके बावजूद माँ की छाती से दूध

उसको पिलाता है, माँ बाप के दिल को उसके लिए नरम फ़रमाता है। फिर इस निज़ाम को अल्लाह आहिस्ता आहिस्ता परवान चढ़ाता है, खाने पीने की ताक़त पैदा हो जाती है तो दूध खुश्क हो जाता है, दांत निकलने शुरू हो जाते हैं फिर अल्लाह का अगला रबूबियत का निज़ाम चलता है ﴿الم نجعل الارض مهادا﴾ हमारे आने से पहले ज़मीन बिछौना बनी पड़ी है ﴿امن جعل الارض قرارا﴾ ठहरने की जगह पहले से तैयार चुकी है ﴿هوالذى جعل لكم الارض ذلولا﴾ ज़मीन को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र, ताबे करके तैयार दिया ﴿وجعل فيها رواسى﴾ यह हिलती थी इसमें कील लगाए ﴿والجبال اوتادا، قدرفيها اقوتها فى اربعة ايام﴾ इसमें तुम्हारे लिए ग़ल्ले को रखा ﴿وانزلنا الحديد﴾ और इसमें तुम्हारे लिए लोहे को रखा और मादनियात को रखा ﴿انزلنا من السمآء مآء مباركا﴾ आसमान से पानी ज़मीन के अन्दर से ग़ल्ले और मादनियात, दूसरी हज़ारों नेमतें, अल्लाह तआला का रबूबियत का निज़ाम हमारी तरफ़ मुतवज्जे हुआ। जब आँख खुली तो अल्लाह का दस्तरख़्वान तैयार है, अल्लाह का चिराग़ रौशनी दे रहा है, ज़मीन ग़ल्ला दे रही है।

इसी तरह ﴿وجعلنا كم ازواجا﴾ तुम्हें मर्द और औरत जोड़े बनाए ﴿وجعلنا نومكم سباتا﴾ नींद आराम के लिए दे दी ﴿وجعلنا النهار معاشا﴾ दिन को काम के लिए बनाया और ऊपर सात आसमान बनाए उसमें सूरज धहकाया और चमकाया, फिर सूरज की किरनों से पानी को तपाया, उसको हवा के कन्धे पर रखकर बादल की सूरत ऊपर पहुँचाया, फिर उसको ठण्डा और जमा फ़रमाया ﴿الم تر ان الله يزجى سحابا﴾ अरे भाई सोचो तो सही, ग़ौर ती करो, देखो तो सही तुम्हारा रब कैसे बादलों को जमा करता

हैं ﴿ثم يؤلف بينه ثم يجعله ركاما﴾ उनको ऊपर नीचे जमा करता है फिर अपने अम्र को उनकी तरफ़ मुतवज्जे फ़रमाता है ﴿فانزلنا من المعصرات مآء ثجاجا﴾ पानी को अल्लाह तआला बरसाता है और बहाता है फिर उसके लिए ज़मीन के सीने को चीरता है ﴿ثم شققنا الارض شقا فانبتنا فيها حبا وعنبا﴾ फिर इससे फल और ग़ल्ले वग़ैरह निकालता है ﴿وقضبا وزيتونا ونخلا وحدائق غلبا﴾ इसमें ज़ैतून, ख़जूर अंगूर और उन सारी नेमतों को निकालता है।

अल्लाह ही पालता हैः

तुम्हारे जानवर का भी अल्लाह तआला इन्तेज़ाम फरमाते हैं ये फल तुम खाते हो ﴿متاع لكم﴾ और घास चारा तुम्हारे जानवर खाते हैं ﴿ولانعامكم﴾ पानी को बादल बनाया फिर हवाओं के ज़रिये पहाड़ों तक पहुँचा कर बर्फ़ बनाया फिर पहाड़ों में उसकी हिफ़ाज़त के लिए टंकियां बना दीं। फिर वहाँ से सूरज की तपिश से उसको गरमाया और उसको गिराया फिर उसको दरों दीवारों से गुज़ारा फिर उसे नाले बनाया, नदियां बनायीं फिर उनको दरिया बनाया फिर उसको वापस समंदर में पहुँचाया, फिर उसको थका कर उड़ाता है। यह पानी बादल की सूरत में समंदर पर बरसा, शहरों पर बरसा, बयाबानों पर बरसा, सहराओं में बरसा, एक पानी से अल्लाह तआला ने अपनी रबूबियत का रंगा रंग निज़ाम रखा है। इस पानी को गाय पी रही है तो दूध बन रहा है सांप और बिछ्छू पी रहे हैं तो ज़हर बन रहा है, इन्सान पी रहा है तो ज़िन्दगी का सामान बन रहा है। दरख़्त पी रहे हैं तो फल और मेवे बन रहे हैं, फूल पी रहा है तो कलियां बन रही हैं, ख़ुशबू फैल रही है और महक रही है। हम ऊपर टंकी में पानी

पहुँचाने के लिए परेशर मोटर लगाते हैं जो पानी का पम्प करके पानी को ऊपर पहुँचाती है। अल्लाह तआला के दरख़्त हैं जो सौ, दो सौ फ़िट ऊँचे होते हैं, अल्लाह तआला ज़मीन की रग से पानी उठाता है और जड़ में पहुँता है और बग़ैर किसी परेशर मोटर के दरख़त के आख़िरी पत्ते तक ज़मीन का पानी पहुँचाता है, फिर अल्लाह तआला इस पानी को मसावी और बराबर तक़सीम करता है, तने में पहुँता है, डालियों में पहुँचाता है, टहनियों में पहुँचाता है, पत्तों और शाख़ों में पहुँचाता है, फिर पानी ख़ुशबुओं तक और फलों तक पहुँचाता है, फ़िर पानी को रस में बदलता है, फिर रस में मिठास पैदा फ़रमाता है, फिर उस को रंग में तब्दील करता है, फिर इसको ज़ाएक़ा देता है। यह सारा का सारा रबूबियत का निज़ाम है जो फ़िरऔन के लिए भी चल रहा है मूसा अलैहिस्सलाम के लिए भी चल रहा है। इतने बड़े अज़ामुश्शान रब का दरबार है जो दुश्मनों के लिए भी खुला रहता है और दोस्तों के लिए भी खुला रहता है, अपने को भी देता है और पराए को भी देता है, मानने वाले को भी देता है और न मानने वाले को भी देता है, झूठ बोलकर कमाने वाले को भी देता है और सच बोलकर कमाने वाले को भी देता है, रिश्वत देने वाले को भी देता है और हलाल पर गुज़ारा करने वाले को भी, निज़ाम उसका सारा चलता है।

ज़ुल्म और हलाकत की बातः

मेरे भाईयों! ऐसे रब को न मानना और उसकी इताअत न करना बहुत ज़्यादती, बहुत बड़ी हलाकत है और बहुत बड़ा ज़ुल्म है। मेरे दोस्तों! अल्लाह किसी पर ज़ुल्म नहीं करता, हम अपनी

जानों पर ज़ुल्म करते हैं। अल्लाह की रबूबियत का निज़ाम हमेशा से चल रहा है और आइन्दा भी चलेगा।

अल्लाह करीम ज़ात है:

मेरे भाईयों! जो ज़ात इतनी करीम है वह अगर अपनी ज़मीन को हिला दे तो हम नहीं रह सकते। सारी काएनात का मालिक और रब भी है, हम से इक़रार करवाना चाहता है ﴿انـزل لـكـم مـن الـسـمـاء مـاء﴾ पानी उतारने वाला अल्लाह है, बारिश बरसाने वाला अल्लाह है, बाग़ात लगाने वाला अल्लाह है, मीठे दरिया चलाने वाला अल्लाह है।

आसमान, ज़मीन, सूरज, चाँद, सितारे, सय्यारे, हवाऐं, पहाड़, सहरा, मैदान सब के सब अल्लाह तआला के क़ब्ज़े में हैं। उन पर अल्लाह तआला की ही बादशाही है। हवा को मुर्सिलात बनाए तो अल्लाह आसिफ़ात बनाए तो अल्लाह तआला ﴿بشـرا بـين يـديه رحمة﴾ बनाए तो अल्लाह तआला, ﴿ريـحـا صرصرا﴾ बनाए तो अल्लाह तआला, गर्मी लाए तो अल्लाह ﴿يولج الليل﴾ रात लाए तो अल्लाह, ﴿ولنهار﴾ दिन लाए तो अल्लाह, ﴿هـو الذى سخرلكم البحر﴾ दिन क़ब्ज़े में हैं तो अल्लाह के, ﴿الشـمـس والـقـمـر يسجدان﴾ सूरज और चाँद उसके क़ब्ज़े में हैं तो अल्लाह के। ये दोनों के दोनों अल्लाह के सामने सज्दा कर रहे हैं और झुके हुए हैं, ज़मीन सब्ज़े लगाए तो अल्लाह तआला के इरादे से उगाए, उसको ख़त्म कर दें तो अपने इरादे से करें और सर सब्ज़ व शादाब बनाके लहलहा दें तो अपने इरादे से लहलहा दें।

काएनात का बादशाह कौन है?

तो मेरे भाईयो! इस काएनात में बादशाही अल्लाह की, हुकूमत अल्लाह की है, इन्सान अगर हाकिम है तो अल्लाह की इजाज़त से है, उसके इरादे से है ﴿تؤتي الملك من تشاء وتنزع الملك ممن تشاء﴾ जिसकी चाहे गर्दन मरोड़ कर गुलाम बना दें, मालिके हक़ीक़ी अल्लाह, फ़ाइले हक़ीक़ी अल्लाह, राज़िके हक़ीक़ी अल्लाह, क़ादिरे मुतलक़ अल्लाह, इज़्ज़त देने वाले हक़ीक़त में अल्लाह, ज़िल्लत देने वाले हक़ीक़त में अल्लाह, मौत देने वाले हक़ीक़त में अल्लाह, ज़िन्दगी देने वाले हक़ीक़त में अल्लाह, पार्टियों से न कोई जीतता है न कोई हारता है, एलेक्शन से न कोई आता है न कोई जाता है, खुशियां लाने वाले अल्लाह तआला, ग़म लाए तो अल्लाह, ﴿اضحك وابكى﴾ मुहब्बत डालने वाला अल्लाह तआला है ﴿سيجعل لهم الرحمن ودا﴾

नफ़रत उसके हाथ में ﴿القى بينهم العداوة والبغضاء﴾ किसी शहर में मुहब्बत डालें तो मुहब्बत आ जाए, किसी शहर में नफ़रत का इरादा करें तो नफ़रत आ जाए, किसी शहर वालों को ज़लील करें तो ज़िल्लत आ जाए, किसी शहर वालों को इज़्ज़त दें तो उसके इरादे से इज़्ज़त आ जाएगी, उनको फ़क़्र का लिबास पहना दें तो फ़क़्र आ जाएगा, ग़िना का लिबास पहनाए तो ग़िना आ जाएगा, न कोई किसी को फ़क़ीर बना सकता है और न कोई किसी को ग़नी बना सकता है ﴿يبسط الرزق لمن يشاء﴾ जिसका रिज़्क़ खोल दें तो रिज़्क़ का दरवाज़ा खुल जाता है।

मशियत अल्लाह की है इन्सानों की नहीं, हम यह कर देंगे, हम वह कर देंगे। यह अक़्ल के अन्धे हैं, कानों के बहरे हैं और

जो यह कहता है कि हम से यह होगा, हम से वह होगा तो ये दिल के भी अन्धें हैं। ज़मीन में, बहर में, बर में, फ़िज़ा व ख़ला में, हवा में सिर्फ़ अल्लाह तआला बादशाह है।

अल्लाह तबारक तआला की सिफ़ातः

الم الله لا اله الا الله هو الحى القيوم، شهد الله انه لا
اله الاهو لا اله الا هو لا اله الا هو.... قائما بالقسط

वह अकेला है अपने अद्ल के साथ क़ायम है।

رب المشرق والمغرب لا اله الا هو.....هو الله الذى لا اله الا
هو عالم الغيب والشهادة، قل هو الله احد، ما اتخذ صاحبة ولا
ولد احد صمد، لم يلد ولم يولد، ولم يكن له كفوا احد

अकेला है, समद है न कोई उससे पैदा हुआ न वह किसी से पैदा हुआ और वह अपनी ज़ात में अकेला, सिफ़ात में अकेला, अपनी क़ुदरत में अकेला, अज़ाब देने में अकेला, सज़ा देने में अकेला, जज़ा देने में अकेला, काएनात बनाने में अकेला, चलाने में अकेला, उसको फ़ना करेगा तो अल्लाह, उसको बाक़ी रखेगा तो अल्लाह। मेरे भाईयों! अल्लाह का कोई शरीक नहीं।

ولم يكن له شريك فى الملك ولم يكن له ولى من الذل

अल्लाह फ़रमाता है मेरा बेटा कोई नहीं, मेरा शरीक कोई नहीं, मेरा साथी कोई नहीं, मेरा मददगार कोई नहीं, ﴿الملك لا شريك له﴾ मेरा शरीक कोई नहीं, मैं अकेला बादशाह ﴿الفرد لا مثل له﴾ मैं तन्हे तन्हा मेरा मिस्ल कोई नहीं ﴿ليس كمثله شئى﴾ बहर व बर में मेरा कोई मिस्ल नहीं। यह बड़ी अजीब आयत है ﴿هل تعلمو له سميا﴾ अल्लाह फ़रमाता है क्या तुझे पता है कोई मेरे जैसा

हो? नहीं हर्गिज़ नहीं। ﴿العالم﴾ कोई उनसे ऊँचा नहीं ﴿لا ظهير له﴾ कोई उसका मददगार नहीं। मुदब्बिर बिला मुशीर, न उसका कोई वज़ीर, न उसका कोई सेक्रेटरी, तन्हे तन्हा निज़ाम चला रहा है। वह ऐसा अव्वल जिसकी इब्तिदा कोई नहीं, अल्लाह ऐसा आख़िर जिसकी इन्तिहा कोई नहीं, वह इब्तिदा से पाक है, वह इन्तिहा से पाक है, वह छत से पाक है वह रंग से पाक है, वह जिस्म से पाक है, वह शक्ल से पाक है। ﴿اينما تولوا فثم وجه الله﴾ जिधर देखो अल्लाह ही अल्लाह है।

सबसे बड़ी ज़ात अल्लाह ही की हैः

मेरे भाईयों! अल्लाह पाक को मानना, अल्लाह पाक के सामने झुक जाना, अपने आपको झुका देना, अपने को ज़लील कर देना, यही ला इलाहा इलल्लाह का हम से मुतालबा है। अल्लाह से बढ़ कर रब कौन होगा? हफ़ीज़ कौन? अलीम कौन? ख़बीर कौन?

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है ﴿اللهم انت احق ممن ذكر واحق ممن عبد﴾ ऐ अल्लाह याद करें किसी को तो आप सबसे ज़्यादा याद करने के क़ाबिल, अगर इबादत करें किसी की तो आप सबसे ज़्यादा इबादत के क़ाबिल। ﴿ارفع من ملك﴾ सबसे ज़्यादा मेहरबान, ﴿اجود من سئل﴾ सबसे ज़्यादा सख़ी, ﴿اوسع من اعطى﴾ सबसे ज़्यादा देने वाला, ﴿الملك لك﴾ तेरे साथ कोई शरीक नहीं, ﴿الفرد لا ندلك﴾ तेरा हमसर कोई नहीं, ﴿كل شئ هالك الا وجهه﴾ हर चीज़ को हलाकत है तेरी ज़ात को बक़ा है। यह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला की तारीफ़ फ़रमा रहे हैं।

मेरे भाईयों! कौन अल्लाह की तारीफ़ कर सकता है? अल्लाह तआला खुद अपनी सिफ़ात बयान करता है ﴿ولو كان البحر مدادا﴾ अल्लाह कहता है कि समंदर को स्याही बना दो, ﴿والبحر يمده من بعده سبعة﴾ सात समंदर भी स्याही बन जाए, ﴿ولو ان ما في الارض من الشجرة اقلام﴾ सारी दुनिया के दरख़्त लेकर क़लम बना दिए जाएं। एक सन्दल के दरख़्त से कितने क़लम बनेंगे, समंदर स्याही, दरख़्त क़लम, इन्सान और जिन्नात लिखने बैठ जाएं, फ़रिश्तें भी आकर लिखना शुरू करें तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं

لنفد البحر قبل ان تنفد كلمات ربي، ولو جئنا بمثله مددا

समंदर ख़ुश्क़ हो जाऐंगे, क़लम टूट जाऐंगे, मेरी तारीफ़ ख़त्म नहीं होगी, इतने क़लम और स्याही और ले आएं तो वह भी ख़त्म हो जाएंगे। मेरे भाईयों! अल्लाह को फ़ाइले हक़ीक़ी जान कर उसके सामने झुक जाएं। अल्लाह तआला की पसन्दीदा ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी बनाएं, अल्लाह तआला जिस काम को चाहता है वह काम करें और जिस काम से रोकता उस काम से रुक जाएं। अल्लाह पाक अपने बन्दों को एहकाम देते हैं, बहुत सी चीज़ों से रोका है, मुसीबत से बचाने के लिए, अल्लाह पाक हमको चमकाना चाहत है, अल्लाह हम को अपने ख़ज़ानों से देना चाहता है। उसने बादशाहों को हुक्म सुनाए, वज़ीरों को हुक्म सुनाएं, औरतों को हुक्म सुनाए, मर्दों को अहकाम दिए, इसी तरह ज़मींदारों को, दुकान्दारों को, मज़दूरों से लेकर सारी दुनिया के बादशाहों को अपनी शरियत में जकड़ा है कि मेरी मानों।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ुशख़बरीः

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ुशख़बरी है कि अल्लाह की शरियत, अल्लाह का दीन, अल्लाह की पसन्दीदा ज़िन्दगी कोई मुश्किल नहीं, बाक़ी सब मुश्किल है ﴿ان الله شرع لكم الدين﴾ अल्लाह ने तुम्हारे लिए दीन मुक़र्रर फ़रमाया है ﴿احل الله حلالاء﴾ कुछ बातें करने की है ﴿حرم حراما﴾ और कुछ बातें छोड़ने की ﴿حد حدودا﴾ बाउन्ड्री लगाई कि करना है तो यहाँ तक करो, इससे आगे नहीं, फिर ﴿سنّ سننا﴾ करने की बातें फ़रमायीं, तो उसका तरीक़ा भी बताया न करने की बातें बतायीं तो न करने का तरीक़ा भी बयान फ़रमाया, रोकने की बातें बतायीं और उसका तरीक़ा भी बताया और हद बन्दी भी मुक़र्रर कर दी कि इन हुदूद के अन्दर रहते हुए ये सारे काम करने हैं फिर फ़रमाया ﴿وجعله سهلا﴾ और अल्लाह तआला ने दीन को आसान बनाया, बहुत नरम ﴿وما جعل عليكم﴾ बहुत कुशादा बनाया ﴿ولم يجعل ضيقا﴾ और अल्लाह तआला ने दीन में तंगी रखी ही नहीं

وما جعل عليكم فى الدين من حرج ملة ابيكم
ابراهيم وهو سمّكم المسلمين

अल्लाह तआला ने तुम्हारे दीन में किसी क़िस्म की तंगी नहीं रखी। अन्धे को हज़ार फ़ुट सड़क भी नज़र नहीं आएगी और आँखों वालों को छोटी सी सड़क भी नज़र आती है।

अल्लाह की चाहतः

मेरे भाईयों! आदमी को दीन आसान नज़र आता है दिल की आँखों से। दिल की आँखें जिस की रौशन होती हैं और जिसका

दिल ज़िन्दा होता है उसे दीन में सब कुछ नज़र आता है और अल्लाह तआला के हाथ में सब कुछ नज़र आता है। मेरे भाईयों अल्लाह पाक हम से यह चाहते हैं कि हम उसके सामने झुक जाएं और उसके हुक्मों पर आ जाएं, उसके हुक्म को सामने रख कर चलें, अल्लाह की नाफ़रमानी से अपने आपको रोकें, उसकी इताअत और फ़रमाबरदारी में अपने आपको खड़ा करें। फिर न मौत को देखें न ज़िन्दगी को, न इज़्ज़त को देखें न ज़िल्लत को, जो मानने वाले हैं वे कामयाब, उन्हीं के लिए दुनिया और आख़िरत है, उन्हीं के लिए दुनिया की इज़्ज़तें हैं और आख़िरत की इज़्ज़तें हैं।

हमारी सोच ग़लत हैः

मेरे दोस्तों भाईयों! अल्लाह पाक हम से किसी चीज़ के बारे में कहता है तो वह अपने इल्म से कहता है और हम जो उसको रद्द करते हैं अपने इल्म से करते हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया मिसाल के तौर पर कि सच बोलो, यह अल्लाह का इल्म है, हमारा इल्म है सच बोलूंगा तो सियासत गई, सच बोलूंगा तो तिजारत गई, सच बोलेंगे तो ज़राअत गई, सच बोलेंगे तो वकालत गई, सच बोलेंगे तो हमारा धन्धा गया। यह हमारा इल्म है लेकिन अल्लाह ने फ़रमाया झूठ मत बोलो, झूठे पर मेरी लानत है ﴾الا لعنت الله على الكذبين، وكونو مع الصادقين﴿ झूठों पर लानत फ़रमाई है और सच्चों के साथ रहने को फ़रमाया है। यह अल्लाह का इल्म है और अल्लाह का इल्म अपनी ज़ात के ऐतबार से है और हमारा इल्म यह है ﴾وما اوتيتم من العلم الا قليلا﴿ थोड़े इल्म वाले का फ़ैसला कभी भी कामयाब नहीं होता और

कभी सही व ठीक नहीं होता। आप छोटे वकील से मुक़द्दमा नहीं लड़वाते और छोटे डाक्टर से मालजा और मुआइना नहीं करवाते। बड़ा वकील और बड़ा डाक्टर तलाश करते हैं और अपने से बड़े इल्म वाले से मशविरा करते हैं।

हमारा इल्म और अल्लाह का इल्मः

मेरे भाईयों! हम सब अपने इल्म के एतबार से अल्लाह के इल्म के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं। अल्लाह तआला अपने इल्म के मुताबिक़ कहता है कि नमाज़ पढ़ो, अपने इल्म से कहा कि ज़कात दो, अपने इल्म से कहा रोज़ा रखो, अपने इल्म से कहा हज करो, अपने इल्म से कहा हलाल कमाई करो, उसने अपने इल्म से कहा अद्ल करो, अपने इल्म से कहा शराब न पियो, अपने इल्म से कहा ज़िना न करो, अपने इल्म से कहा तक़्वा इख़्तियार करो, अपने इल्म से कहा सूद न खाओ, अपने इल्म से कहा झूठ मत बोलो, अपने इल्म से कहा नफ़रतें मत फैलाओ, क़ौमियत, सुबाइयत, लिसानियत छोड़ दो। यह अल्लाह तआला का इल्म है। आगे हमारा इल्म कहता है यह बात नहीं चल सकती। अब भाई ज़माना बदल गया है तो भाई अल्लाह बड़ा मेहरबान है, ग़फ़ूरुर्रहीम है, बाद में मॉफ़ कर देगा। यह हमारा इल्म है। हम तो जाहिल हैं दीवाने हैं जो अल्लाह के हुक्म को रद्द करते हैं जिस ज़ात का इल्म इतना कामिल हो ﴿لا يعزب عنه مثقال ذرة﴾ उनके इल्म से एक ज़र्रा भी छुपा हुआ नहीं ﴿ما يكون من النجوى ثلثه الا هو رابعهم الخ﴾ अगर इन्सान बोले तो वह सुनता है और न बोले तो भी दिल की फ़रियाद सुनता है ﴿اسروا قولكم واجهروا به﴾ मेरे दिल में और आपके दिल में जो ख़्यालात आ रहे

हैं वह सुनता है, वह सुनने के लिए कानों का मोहताज नहीं, देखने के लिए आँखों का मोहताज नहीं, वह हमारी तरह का मोहताज नहीं ﴿الغيب عنده الشهادة، واسر عنده علانية﴾ वह हाज़िर को भी देख रहा है ग़ैब को भी देख रहा है ﴿لا توارى منه سماء سماء﴾ यह आसमान में इतनी ताक़त नहीं कि अपने नीचे की चीज़ों को अल्लाह से छिपा सके ﴿ولا ارض ارضا﴾ ज़मीन के अन्दर इतनी ताक़त नहीं कि अपने अन्दर की चीज़ें छिपा सके, समंदर में ताक़त नहीं कि अपने अन्दर की चीज़ें छिपा सके। पहाड़ में ताक़त नहीं के अपने ग़ारों की चीज़ें अल्लाह पाक से छुपा सके। अल्लाह पाक ने अपने इल्म से कहा कि मेरी मान लो, मेरी फ़रमाबरदारी में तुम्हारी कामयाबी है, मेरी नाफ़रमानी में तुम्हारी हलाकत है, सूद हलाकत है, झूठ हलाकत है, सच निजात है, पाक दामनी निजात है और बदमाशी हलाकत है, इफ़्फ़त निजात है और ज़िना हलाकत है। यह अल्लाह का इल्म बोल रहा है जबकि हमारा इल्म कहता है कि जो होगा देखा जाएगा।

हम ग़फ़लत में पड़े हुए हैं:

मेरे भाईयों! हमें इस ग़फ़लत से निकलना है और मरने से पहले निकलना है। जब इज़्ज़त अल्लाह के हाथ में है तो अल्लाह की इताअत करें। जब ज़िल्लत अल्लाह के हाथ में है तो उसकी नाफ़रमानी से बच जाएं। अल्लाह तआला एक एक आयत खोल खोल कर बताता है, सारी चीज़ें अल्लाह पाक से मिलती हैं तो अल्लाह की मान लें और उसके हुक्म पर झुक जाएं और उसकी तरतीब पर आ जाएं हर चीज़ को अल्लाह ही की मान लेना यह ला इलाहा इलल्लाह है, अल्लाह पाक के सामने झुक जाना ला

इलाहा इलल्लाह है, अल्लाह के सामने अपनी ख़्वाहिशात को तोड़ देना ला इलाहा इलल्लाह है, अल्लाह तआला जिसे कह दें तो वह कर लें और जिस से रोक लें उससे रुक जाना यह ला इलाहा इलल्लाह है, सारी काएनात कुछ नहीं कर सकती और इज़्ज़त अल्लाह देगा यह ला इलाहा इलल्लाह है, ज़िल्लत अल्लाह देगा यह ला इलाहा इलल्लाह है, रिज़्क़ अल्लाह देता है यह ला इलाहा इलल्लाह का तक़ाज़ा है, मुहब्बत अल्लाह तआला लाता है यह ला इलाहा इलल्लाह का इक़रार है, मौत और ज़िन्दगी अल्लाह के क़ब्ज़े में हैं यह ला इलाहा इलल्लाह में इक़रार है, विज़ारतें और सदारत अल्लाह देता है यह ला इलाहा इलल्लाह में इक़रार है। हमारा कलिमा धुन्दला गया है और कच्चा हो गया है। मेरे भाईयों यह नहीं कि दीन पर चलेंगे जन्नत मिल जाएगी दुनिया नहीं मिलेगी। यह तो अधूरा दीन हुआ जिसमें जन्नत मिले और दुनिया न मिले। अल्लाह तआला की मान लें तो अल्लाह तआला दुनिया भी देगा जन्नत भी देगा।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अपनी उम्मत के लिए शफ़्क़तः

मेरे भाईयों! ला इलाहा इलल्लाह कलिमे का पहला जुज़ है कि सारी दुनिया के इन्सान अल्लाह तआला के सामने झुक जाएं और मानने वाले बनें और मानने का तरीक़ा मुहम्मदुर्र रसूलुल्लाह है। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ अल्लाह की मान कर चलें। अल्लाह तआला ने एक लाख चौबीस हज़ार अंबिया अलैहिस्सलाम भेजे। सबसे ज़्यादा मेहरबान और शफ़ीक़ अपनी उम्मत के साथ वह मुहम्मद सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम की ज़ात है।

لقد جآء کم رسول من انفسکم عزیز علیه الخ

अल्लाह ने ऐसा नबी भेजा कि अल्लाह ने अपने किसी नबी को अपनी सिफ़ाती नाम से नहीं अता फ़रमाए। अल्लाह के अपने नाम हैं कोई उसके नामों में शरीक नहीं, उसकी सिफ़ात में शरीक नहीं। अपनी ज़ात के बारे में फ़रमाया ﴿ان ربکم لرؤف الرحیم﴾ और अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में फ़रमाया ﴿بالمؤمنین رؤف الرحیم﴾ मेरा नबी भी रऊफ़ और रहीम है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रऊफ़ रहीम होना अपनी ज़ात के एतबार से है और अल्लाह तआला का रऊफ़ रहीम होना अपनी ज़ात के एतबार से है। अल्लाह तआला ने नाम में मुशबिहत पैदा फ़रमाई है कि मेरा नबी किस पर रऊफ़ रहीम है अपनी उम्मत पर रऊफ़ रहीम है। अल्लाह ने नबियों के वाक़ियात सुनाए। मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम पर गुस्सा हो रहे हैं ﴿ربنا اطمس علی اموالهم وشدد علی قلوبهم﴾ या अल्लाह उनकी आँखों को ख़त्म कर दें उनके मालों को बर्बाद कर दें उनके दिलों पर मोहर लगा दें। नूह अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि ﴿رب لا تذرنی علی الارض من الکفرین دیارا﴾ या अल्लाह उन काफ़िरों में से किसी एक को भी ज़मीन के ऊपर ज़िन्दा न छोड़, कोई एक भी बाक़ी न बचे और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ताएफ़ की वादी में पत्थर खाते हैं तीन मील दौड़ते हैं, काएनात का ख़ुलासा अल्लाह का हबीब, अल्लाह का महबूब, ज़मीन व आसमान में जिसकी नबुव्वत का चर्चा, जिसकी नबुव्वत पर तमाम नबियों से इक़रार लिया गया बल्कि हदीस पाक में

आता है कि ﴿انا نبی الانبیاء﴾ मैं नबियों का भी नबी हूँ। तीन मील दौड़े, एक रिवायत में आया है कि आसमान के फ़रिश्तें भी रो रहे थे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पत्थर पड़ते देख कर, जिस ज़मीन पर लहू गिर रहा था वह ज़मीन भी रो रही थी, ताएफ़ के पहाड़ रो रहे थे, बहर व बर की मख़लूक़ रो रही थीं, इतनी मुशक़्क़त तो आयीं अल्लाह के हबीब पर, यह सारी मुशक़्क़त उठाने के बाद जब फ़रिश्ता आता है तो कहता है, अगर आप फ़रमाएं तो मैं इनको पहाड़ों में पीसकर रख दूंगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नहीं, ये न सही इनकी औलादे मुसलमान हो जाएंगी।

फिर ओहद के मौक़े पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को काफ़िरों ने चारों तरफ़ से घेरा। अब्दुल्लाह बिन मैमना ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर तलवार का वार किया तो सिर में पड़ा। ख़ुर्द अन्दर घुस गया और उत्बा बिन अबी वक़्क़ास हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु का भाई था जो कुफ़्र में ही क़त्ल हो गया उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पत्थर मारा, वह पत्थर सीधा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुँह के क़रीब लगा जिससे दांत मुबारक शहीद हो गए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़मीन पर गिर गए और बेहोश हो गए और जब होश में आए तो फ़ौरन ﴿اللهم اهد قومی فانهم لا یعلمون﴾ ऐ अल्लाह मेरी क़ौम को हलाक न करना, इनको हिदायत देना, इनको पता नहीं, अगर पता होता तो ये मुझे तकलीफ़ न देते। या अल्लाह आप इनसे कुछ न कहना। हुज़ूरे सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़क़त है अपनी उम्मत के लिए।

मैदाने अरफ़ात में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआः

मेरे भाईयों! आदमी के अन्दर शराफ़त हो तो वह एक रूपये का एहसान नहीं भूलता। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एहसान तो देखें कि पेट पर पत्थर बान्धे, घर ख़त्म हो गया। एक वक़्त था आप अमीन व सादिक़ थे। हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा जैसी मालदार तरीन औरत निकाह में थीं और या यह वक़्त आया कि आप सफ़ा की पहाड़ी पर खड़े होकर जिबराईल अलैहिस्सलाम से फ़रमाते हैं ﴿والذی نفسی بیده ما امثال اهل محمد کفة عما شعیر﴾ ऐ जिबराईल आज मुहम्मद और आले मुहम्मद के घर में रोटी पकाने के लिए, रोटी खाने के लिए एक मुठ्ठी जौ कोई नहीं, रोटी पकाने के लिए, रोटी खाने के लिए। सब कुछ क़ुर्बान कर गए उम्मत के लिए पेट पर पत्थर बान्धें, पेवन्द लगे कपड़े पहने, तीन चार दिन खाने को कुछ नहीं, दो दो महीने चुल्हा नहीं जलता, और उसके बावजूद अपनी उम्मत पर सारी सारी रात रो रहे हैं और अपनी उम्मत के लिए गिड़गिड़ा रहे हैं। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं मुझे छोड़ कर मुसल्ले पर तशरीफ़ ले जाते। एक रात मेरे पास तशरीफ़ लाए और चुपके से वापस चले गए तो मुझे ख़्याल हुआ कि मुझे छोड़ कर किसी दूसरी बीवी के पास चले गए मुझे ग़ैरत आई तो उनके पीछे चली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ओहद की तरफ़ जा रहे हैं और जन्नतुल बक़ी की तरफ़ जा रहे हैं। जन्नतुलबक़ी में जाकर दुआ मांग रहे हैं और मैं पीछे खड़ी हो

गई। जब दुआ से फ़ारिग़ होकर पीछे की तरफ़ देखा तो फ़रमाया ऐ आएशा तू यहाँ कैसे? मैंने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे ख़्याल आया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे छोड़ कर किसी और बीवी के पास चले गए तो फ़रमाया नहीं आएशा! नबी बन कर कोई ख़्यानत नहीं कर सकता। मैं तो अपनी उम्मत के लिए दुआ करने आया था। रातों को छोड़ कर अपनी उम्मत के पास आते हैं। हाजी हज़रात हज को जाते हैं, तुम में से भी बहुत से लोगों ने हज किया होगा। अरफ़ात के मैदान में अपने लिए कोई दुआ नहीं करता पन्द्रह बीस मिन्ट से ज़्यादा हाथ ही नहीं उठते, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अरफ़ात के मैदान में ऊँट पर सवार थे और माह अप्रैल की धूप है ऊँटनी की सवारी है कोई सोफ़ा नहीं और कोई फ़र्श नहीं, कुर्सी नहीं, ऊँटनी की सवारी है और उस पर बैठे हैं, धूप चिलचिलाती हुई है और पाँच घन्टे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत के लिए रो रो कर दुआ की है। जब भी हाथ ऊपर उठ जाते तो बालों की सफ़ेदी नज़र आती थी, फिर रकाब में पाँव देकर खड़े हो जाते फिर बैठ जाते। पाँच घन्टे मुसलसल रो रो कर अपनी उम्मत के लिए अल्लाह से बख़्शिश को मांगा है या अल्लाह! मेरी उम्मत को मॉफ़ कर दें।

नमाज़, आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपनी उम्मत के लिए प्यारा तोहफ़ाः

मेरे भाईयों! हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो अपनी उम्मत पर एहसान कर गए हैं कोई और नबी नहीं कर

सकता। मौत के वक़्त हर एक अपनी औलाद को बुलाता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मौत के वक़्त भी खिड़की खोल कर अपनी उम्मत को देखा। और आख़िरी वक़्त में भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी उम्मत को पुकार रहें हैं ﴿الصلوة وما ملكت ايمانكم﴾ ऐ मेरी उम्मत नमाज़ न छोड़ना, नमाज़ पढ़ते रहना, ग़ुलामों से अच्छा सुलूक करना, आख़िरी वक़्त बीवियों को कहते और कुछ हसन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुम को कहते, नहीं पूरी उम्मत की फ़िकर है।

फिर आवाज़ कमज़ोर हो गई ﴿الصلوة الصلوة الصلوة﴾ यही कहते कहते आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विसाल हो गया, नमाज़ नमाज़ कहते हुए दुनिया से चले गए।

मेरे भाईयों! आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को अपनाना यह हमारे कलिमे की तकमील है। अल्लाह तआला ने जैसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शफ़ीक़ बनाया ऐसे ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आलीशान भी बनाया। क़ुरआन में किसी नबी की क़सम नहीं उठाई और अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़सम खाई।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी उम्मत की फ़िकर:

मेरे भाईयों! अल्लाह ने ऐसा नबी हमें दिया। उसने जो कहा यह कर लो यह न करो, यह ज़ुल्म तो नहीं है, मुशक़्क़त तो नहीं, जो माँ से ज़्यादा प्यार कर गया और जो बाप से ज़्यादा शफ़्क़त दे गया, माँ के रोने से ज़्यादा रो कर गया। क़यामत के दिन माँ भी गई बाप भी गया, बच्चे भी गए, बीवी भी गई, भाई

भी गया, दोस्त एहबाब भी गए और अंबियां भी अपनी उम्मतों से गए, नफ़्सी नफ़्सी। जब जहन्नुम आएगी चीख़ मारेगी, चिंघाड़ मारेगी तो बड़े बड़े रसूल और फ़रिश्ते ज़मीन पर गिरेंगे और कहेंगे

نفسی نفسی، آدم علیه السلام نفسی نفسی، نوح علیه السلام نفسی نفسی، ابراهیم علیه السلام نفسی نفسی، داؤد علیه السلام نفسی نفسی، سلیمان علیه السلام نفسی نفسی، ایوب علیه السلام نفسی نفسی، یوشع علیه السلام نفسی نفسی، دانیال علیه السلام نفسی نفسی، یعقوب علیه السلام نفسی نفسی،یوسف علیه السلام نفسی نفسی، اسحاق علیه السلام نفسی نفسی، عیسیٰ علیه السلام نفسی نفسی،

इस काएनात में सिर्फ़ एक हस्ती ऐसी होगी जिसके हाथ उठे होंगे और कह रहा होगा या अल्लाह उम्मती! उम्मती! यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ात है जिसकी शफ़्क़त हशर के दिन नरम, उस वक़्त भी हमारा साथ न छोड़े। दुनिया से भी रोता रोता गया, ज़मीन तर कर दी, सीना मुबारक छलनी कर दिया, अपने आप को घुला दिया, पिघला दिया, आंसू बहात बहाते चले गए और हशर में भी रो रहें हैं बाक़ी तमाम ताल्लुक़ात और रिश्ते छूट गए, या अल्लाह! उम्मती, उम्मती।

मेरे भाईयों और दोस्तों! वह ज़ात अगर ऐसा कह दे कि यह करो और वह न करो। इसमें नुक़सान नहीं फ़ायदा ही फ़ायदा है रहमत ही रहमत है, भला ही भला है।

सच्चे मुसलमान की शानः

मेरे भाईयों! हम हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

ज़िन्दगी के सामने अपनी ख़्वाहिश की ज़िन्दगी को क़ुर्बान कर दें, जो कहें वह करें और वह जिस चीज़ से रोकें उससे बाज़ रहें तो यह कलिमा मुकम्मल हो गया। भाई हम कलिमा सीख रहें हैं। कलिमा आ जाएगा तो नमाज़ भी आ जाएगी, ज़िक्र भी आ जाएगा, अख़्लाक़ भी आएगा लेकिन इस से पहले कलिमा तो आ जाए, मुसलमान बनें मुसलमान। यों समझिए कि हम मुसलमान बनना सीख रहें है। मुसलमान बादशाह के रूप में भी, रिआया के रूप में भी, औरत के रूप में भी, मर्द के रूप में भी, ताजिर के रूप में भी, ग़र्ज़ ये कि हर रूप में अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा हमें बताया है। औरत बनाया तो उसका हल बतलाया ﴿وقرن في بيوتكن ولا تبرجن الخ﴾ अरे मेरी उम्मत की औरतों! घर के अन्दर बैठा करो, बे पर्दा बाहर न निकलो। अगर औरतें पर्दे पर आ जाएं तो वे कामयाब हैं अगर कहीं बाहर निकलना पड़े तो ﴿لا يبدين زينتهن﴾ अपनी ज़ीनत ज़ाहिर न करें। ताजिर बनाया तो उसका तरीक़ा बताया ﴿رجال لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله﴾ ये वे ताजिर हैं जिनकी तिजारत उनको अल्लाह के ज़िक्र से नहीं रोकती है अल्लाह की याद से नहीं रोकती है ﴿واقام الصلوة﴾ नमाज़ से नहीं रोकती है ﴿وايتاء الزكوة﴾ ज़कात अदा करने से नहीं रोकती।

ये वे ताजिर बिरादरी है जिनकी तारीफ़ अल्लाह तआला फ़रमा रहें हैं। अल्लाह पाक तिजारत छुड़वा नहीं रहे हैं, तिजारत मुहम्मदी सिखवा रहे हैं। पहले नबी का तरीक़ा बताया फिर जब इस पर चलें तो ख़ुद उनकी तारीफ़ फ़रमा रहे हैं। जमींदारों को तरीक़ा बतलाया ﴿اتوا حقه يوم حصاده﴾ इसमें जमीदार की ज़िन्दगी समझाई। जमीदार जमीदारी में ज़िन्दगी कैसे गुज़ारें? कुर्सी पर

बैठे हुए जज को तरीक़ा बताया कि

لا یجرمنکم شنآن قوم علی الاّ تعدلوا ، اعدلو اقرب للتقوی

इस आयत में उम्मत के जज को बताया है तुझे अदालत कैसे करनी है और कैसे निज़ामें अदालत चलाना है? हुक्मरान, सदर, वज़ीर को तरीक़ा बताया

الذینان مکنٰھم فی الارض اقاموا الصلوۃ واتوا
الزکوۃ وامروا بالمعروف ونھوا عن المنکر

मेरे बन्दे जो हैं मैं उनको हुकूमत देता हूँ तो वे नमाज़ को क़ायम करते हैं, ज़कात का निज़ाम क़ायम करते हैं, भलाई को फैलाते हैं, बुराई को मिटाते हैं और अन्जाम अल्लाह के हाथ में है। वे इसमें डरते नहीं। वे अल्लाह के अम्र को ज़िन्दा करते हैं और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े को ज़िन्दा करते हैं, ज़िन्दगी के तमाम शोबों को अल्लाह ने थोड़ा थोड़ा करके बताया है।

औलाद के लिए हुक्म और नसीहतः

औलाद बच्चे की सूरत में है तो उनको तरीक़ा बताया ﴿ولاتقل لھما اف ولا تنھر ھما وقل لھما قولا کریما﴾ अगर तुम बेटे की सूरत में माँ बाप के सामने हो तो वालदैन को उफ़ भी न करो, उनसे नरम बात करो और उनकी ख़िदमत करो, अगर इन्सान बाप के रूप में है तो औलाद के साथ क्या सूरत इख़्तियार करना चाहिए तो उसका तरीक़ा भी बताया ﴿یا بنی لا تشرک باللّٰہ ان الشرک لظلم عظیم﴾ अरे बेटा शिर्क न करना शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है ﴿یا بنی اقم الصلوۃ﴾ ऐ मेरे बेटे नमाज़ पढ़ ले ﴿وامر بالمعروف وانھی عن المنکر﴾

﴾واصبر علی ما اصابك﴿ अरे मेरे बेटे नमाज़ पढ़ा कर, भलाई का हुक्म दे और बुराई से हटा और इस पर आने वाली तकलीफ़ पर सब्र कर।

इज़्ज़त ज़िल्लत अल्लाह के हाथ में है:

यह बाप के ज़िम्मे है कि अपनी औलाद को यह सबक़ सिखाए अब तो वालदैन खुद तस्बीह पढ़ रहे हैं कि बेटा पढ़ लो, न पढ़ेगा तो भूका मरेगा। औलाद को यह सबक़ सिखा लें कि बेटा तक़्वा इख़्तियार न करोगे तो भूके मरोगे। डाक्टर बनों इज़्ज़त मिलेगी नहीं भाई यह तालीम दो कि अल्लाह की मानोगे तो इज़्ज़त देगा चाहे डाक्टर बन जाए या बादशाह बन जाए। बेटा तू अल्लाह की मानेगा तो तुझे इज़्ज़त मिलेगी, तक़्वा इख़्तियार कर तुझे अल्लाह इज़्ज़त देगा। अल्लाह वालदैन को सिखा रहे हैं कि बच्चों को क्या सिखाना है। मुहम्मदी ज़िन्दगी का अल्लाह ने थोड़ा थोड़ा नक़्शा खींचा है। ज़मीन पर चलने का तरीक़ा बताया ﴾ولا تمش فی الارض مرحا﴿ ज़मीन पर अकड़ कर मत चलो, ऐ ज़मींदार साहब, ऐ सदर साहब, ऐ वज़ीर साहब, ऐ एम पी साहब ज़मींन पर अकड़ कर मत चलो।

तकब्बुर अल्लाह को पसन्द नहीं:

ये तमाम पहले मनफ़ी थे कि यह न करो, वह न करो वग़ैरह अब मुसब्बित पहलू बता रहे हैं ﴾وعباد الرحمن الذين يمشون على الارض هونا﴿ मेरे बन्दे यानी रहमान के बन्दे ज़मीन पर चलते हैं तो बड़ी आजुज़ी के साथ चलते हैं अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बड़ी बादशाही किसी को नहीं दी

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में हदीस पाक में आता है कि अगर अल्लाह का हबीब ख़ुश्क लकड़ियों पर भी चलता था तो उनके क़दमों के नीचे से लकड़ियों के कड़कड़ाने की आवाज़ नहीं उठती थी। अरे तुम ज़मीन पर अकड़ कर न चलो क्यों? इस लिए तेरी ऐड़ियां मारने से मेरी ज़मीन तो नहीं फटेगी ﴿ولن تبلغ الجبال طولا﴾ अगर तू अपनी गर्दन मरोड़ दे बल्कि ऊँचा करले तो क्या तेरा क़द मेरे पहाड़ों से ऊँचा हो जाएगा? तू न पहाड़ से ऊँचा हो सकता है न ज़मीन फाड़ सकता है तो आजिज़ी से चल, मसकनत से चल। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिनको दोनों जहाँ की सरदारी मिली, जन्नत की चाबी मिली, नबियों पर नबुव्वत मिली, बहर व बर पर नबुव्वत मिली, हबीब का ख़िताब मिला, तमाम नबियों की सिफ़ात मिलीं, अरबी बनाया, क़ुरैशी बनाया और हाशमी बनाया।

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपको नबुव्वत कब मिली थी कितने साल पहले आपको नबुव्वत मिली थी? ﴿كنت نبيا و آدم بين المآء والطين﴾ मुझे नबुव्वत उस वक़्त मिली थी जब आदम अलैहिस्सलाम की मिट्टी इकठ्ठी की जा रही थी और आदम अलैहिस्सलाम का पुतला इकठ्ठा किया जा रहा था उस वक़्त मेरे सिर पर नबुव्वत का ताज रखा जा चुका था। मुहम्मदी ज़िन्दगी की अल्लाह पाक ने क़ुरआन में रहनुमाई की है और इशारे किए हैं। बादशाह ऐसा होता है, सदर ऐसा होता है, ज़मींदार ऐसा होता है, दुकान्दार ऐसा होता है, नमाज़ ऐसे पढ़ी जाती है ﴿قد افلح المؤمنون الذين هم في صلوتهم خاشعون﴾ वह नमाज़ ऐसे पढ़ते हैं कि जब खड़े हो जाते हैं, लरज़ जाते हैं, कांप जाते हैं, थर्रा जाते हैं। मुहम्मदी रात कैसे

गुज़ारते हैं? उनकी रात कैसे गुज़र जाती है? ﴿تتجافی جنوبهم عن المضاجع يدعون ربهم خوفا وطمعا﴾ मुहम्मदी रात को अपने बिस्तरों से उठ जाते हैं, मुझे पुकारते हैं, कभी शौक़ में कभी ख़ौफ़ में ﴿ومن الليل فتهجد به﴾ रात को मुसल्ले पर ﴿ومن الليل فاسجد له وسبحه ليلا طويلا﴾ उनकी रात को सज्दे में

قم الليل ٥ الا قليلا نصفه اونقص منه قليلا ٥ اوزد عليه
ورتل القرآن ترتيلا ٥ انا سنلقى عليك قولا ثقيلا ٥ ان
ناشئة اليل هى اشدو طاواقوم قيلا ٥ ان لك فى النهار
سبحا طويلا ٥ واذكر اسم ربك وتبتل اليه تبتيلا ٥

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मेरे मानने वाले और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मानने वाले को देखना हो तो सूरहः मुज़म्मिल की चन्द आयतें पढ़ कर देख लो। हर मुहम्मदी की रात कैसी गुज़रती है, उसकी रात शराब में नहीं उसकी रात रोने और धोने में है।

रोने की लज़्ज़तः

मेरे भाईयों! रातों को रोने की लज़्ज़त का हमें पता ही नहीं। इस लिए कोई रात को शराब का सहारा लेता है कोई औरत का सहारा लेता है, काश हमें रात के रोने की लज़्ज़त थोड़ी सी मिल जाती थोड़ी सी, जिन को रात के रोने की लज़्ज़त मिली उन्होंने आंसू बहा दिए और आँखों की बिनाई जाने को क़बूल किया रोना बन्द नहीं किया। अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की बिनाई जाने लगी तो उनसे कहा गया कि रोना छोड़ दो तो आँखें इलाज करने से ठीक हो जाएंगी। उन्होंने क्या ख़ूब ही जवाब दिया कि वह आँख ही क्या जो रोए नहीं, मैं बिनाई जाने

पर सब्र करूंगा रोना नहीं छोड़ सकता यह रोना मेरे मालिक के लिए है और यह रोना मेरे ख़ालिक़ के लिए है। एक हदीस में आता है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है जो दुनिया में मुझसे डर के रोएगा मैं जन्नत में उसको हंसाऊँगा।

रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूकः

तो मेरे भाईयों! पूरी ज़िन्दगी अल्लाह ने बताई है क़ुरआन में है कि मुहम्मदी कैसा होता है। अल्लाह अपने अहद में सच्चा है जो अल्लाह से किया हुआ है ﴿ولا ينقضون الميثاق﴾ वायदे का पक्का जो लोगों से किया हुआ है ﴿والذين يصلون ما امر الله به ان يوصل﴾ रिश्तेदारों के सामने बुझने वाला, रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करने वाला ﴿ويخشون ربهم﴾ अल्लाह पाक से डरने वाला ﴿ويخافون سوء الحساب﴾ आख़िरत से डरने वाला ﴿واقاموا الصلوة﴾ नमाज़ पढ़ने वाला ﴿وانفقوا مما رزقناهم سرا وعلانية﴾ ज़कात व सदक़ात देने वाला सिर्फ़ ज़कात पर क़नाअत करके नहीं बैठते हैं इसके अलावा भी देते हैं अब तो कोई ज़कात भी नहीं देता आगे का रोना क्या रोएं, फ़र्ज़ अदा नहीं करते, ज़कात देकर अपने आपको समझते हैं कि हातिम ताई से भी आगे गुज़र गए हैं। अरे भाई ज़कात देकर जहन्नुम से बच गए और सख़ावत ज़कात के बाद शुरू होती है।

और आगे फ़रमाते हैं ﴿ويدرؤن بالحسنة السيئة﴾ बुराई का बदला भलाई से देते हैं, नबुव्वत वाले अख़लाक़ से जिन्दगी गुज़ारते हैं। यह हमारे अख़लाक़ नहीं हैं कि कोई सलाम करे तो सलाम करो और जो सलाम न करे भी न करो, जो तुम को रोटी खिलाए तो तुम भी खिलाओ, जो तुम्हारा हाल पूछे तो तुम भी उसका हाल

पूछ लो, जो तुम्हारा हाल न पूछे तो तुम भी उसका हाल न पूछो। ये हमारे अख़लाक़ हैं जबकि एक मेरे नबी के अख़लाक़ हैं ﴿صل عن من قطعك﴾ जो तुम से तोड़े तुम उससे जोड़ो ﴿واعط من حرمك﴾ जो तुम को न दे तुम उसको ले जा के दो ﴿اعف عن من ظلمك﴾ जो तुम पर ज़ुल्म करे तो उसको मॉफ़ करो ﴿واحسن الى من اساك اليك﴾ जो तुम्हारे साथ बुरा सुलूक करे तुम उसके साथ अच्छा सुलूक करो। हज़रत उस्मान बिन अबी तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु मक्का बैतुल्लाह के चाबी बरदार, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस्मान दरवाज़ा खोलो मैं अन्दर जाना चाहता हूँ। उसने कहा जाओ जाओ, बहुत ज़िल्लत आमेज़ सुलूक किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह दिन कैसा दिन होगा जब बैतुल्लाह की चाबियां मेरे पास होंगी जिसको चाहूँगा दूँगा। उसने कहा क़ुरैश वह दिन नहीं देखेगें जो तू कह रहा है। फ़तेह मक्का हुआ तो हज़रत उस्मान बिन अबी तल्हा भागे वह बात याद आई जो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से की हुई थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चाबी हाथ में लेकर फ़रमाया बुलाओ उस्मान को।

हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु पास खड़े थे, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम आपके रिश्तेदार हैं और हम आपके क़ुराबत दार हैं आप चाबी हमें दें, हम चाबी के हक़दार हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे हैं बुलाओ उस्मान को, उस्मान को बुलाया जा रहा है तो नबी वाले अख़लाक़ क्या हैं? जब क़ादिर हो जाओ तो मॉफ़ कर दो, हमारे अख़लाक़ यह हैं कि जब क़ादिर हो जाओ तो ईंट के बजाए

पत्थर मारो। हम सबके यही अख़लाक़ हैं हम सब अख़लाक़ के जनाज़े निकाल चुके हैं, हया का भी जनाज़ा निकल गया है, अख़लाक़ का भी जनाज़ा निकल गया है।

उसवाए हसना पर अमल, निजात का रास्ताः

मेरे भाईयों! हदीस पाक में आया है कि क़यामत में आदमी के आमाल नामे के तराज़ू में सबसे वज़नी चीज़ अख़लाक़ होंगे। नमाज़ पढ़ना आसान है अख़्लाक़ बनाना मुश्किल है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बुलाओ उस्मान को। उस्मान डरते हुए आए और कापते हुए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उस्मान यह चाबी देख रहे हो, वह दिन याद है जब मैंने कहा था वह दिन क्या दिन होगा जब चाबी मेरे हाथ में होगी, जिसे चाहूँ दे दूँगा, आज मैं तुझे दे रहा हूँ, क़यामत तक यह चाबी तेरी औलाद में रहेगी ﴿خالدة تالدة﴾ अबदु आबाद तक, इस चाबी को तेरे घर से कोई निकाल नहीं सकता। यह नबुव्वत के अख़लाक़ हैं। हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ातिल वहशी जिसको क़त्ल करने की हर सहाबी के दिल में तमन्ना है लेकिन उसको भी मॉफ़ कर दिया। यह नबी के अख़लाक़ हैं।

बेटी का क़तिल हब्बार बिन अस्वद, जिसने हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के बरछा मारा, ज़ख़्मी हुंई और हमल गिर गया। सात बरस ज़ख़्मी हालत में रह कर इन्तिक़ाल हुआ, जब वह कलिमा पढ़ कर मक्का मुकर्रमा में आया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उठ कर उसको भी बैत फ़रमा लिया।

उम्मते मुहम्मदिया का कामः

मेरे भाईयों! हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़िरी नबी हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी नहीं है। उनकी मुबारक ज़िन्दगी, उनके पाकीज़ा तर्ज़े हयात को क़ुरआन में महफ़ूज़ किया गया है। क़ुरआन में मौजूद है, हदीस में मौजूद है। यह मुबारक ज़िन्दगी पूरी दुनिया के इन्सानों में फैले इसके लिए अल्लाह तआला ने इस उम्मत को मुन्तख़ब किया है और चुना है ﴿هو اجتبی کم﴾ तुम चुने हुए हो ﴿کنتم خیر امة﴾ क्यों कहा हमारे कोई सुरख़ाब के पर लगे हैं या हमारी कोई इबादत ज़्यादा है नहीं ﴿اخرجت للناس﴾ तुम लोगों के लिए निकाले गए हो, भलाई फैलाते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो।

मुसलमान से हमारे दो रिश्तेः

मेरे भाईयों! जो कुफ़्र पर मर गया वह तो बहुत बड़ी बर्बादी का शिकार हो गया। इसी तरह कोई गुनाहे कबीरा करके मर गया तो वह भी बहुत बड़ी हलाकत का शिकार हो गया। नबी शफ़ीक़ बन के मेहरबान बन के, सारी सारी रात अल्लाह के सामने गिड़गिड़ा कर और रो रो कर अल्लाह को मनाता है या अल्लाह इनको जहन्नुम से बचा। यही शफ़्क़त, यही रहमत, यही मुहब्बत अल्लाह तआला ने हमें अता फ़रमाई है कि सारी दुनिया के इन्सानों पर शफ़्क़त करो, पूरी दूनिया के मुसलमान हमारे इस्लामी भाई हैं और पूरी दुनिया के इन्सान हमारे इन्सानी भाई हैं। मुसलमान हमारे इन्सानी भाई भी हैं और इस्लामी भाई भी हैं। लिहाज़ा दो रिश्ते हो गए तो उनका हक़ हमारे ऊपर ज़्यादा

है। तमाम दुनिया के मुसलमान तौबा कर लें, अल्लाह की इताअत पर आ जाएं, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर आएं, ग़लत ज़िन्दगी को छोड़ दें, नाफ़रमानी को छोड़ दें, अल्लाह की अदावत को छोड़ दें और अल्लाह से सुलह कर लें, पूरी दुनिया के काफ़िरों तक अल्लाह की बात पहुँच जाए, उनके घरों में कलिमा पहुँचे, उनकी नस्लों में कलिमा पहुँचे, अल्लाह तआला ने यह ज़िम्मेदारी इस उम्मत को अता फ़रमाई है। जो शख़्स ख़त्मे नबुव्वत का अक़ीदा रखता है और यह कहता है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी नहीं आएगा तो उसके ज़िम्मे है कि पूरी दुनिया के इन्सानों तक अल्लाह का कलिमा पहुँचाए और फैलाए ﴿خیر امة﴾ अच्छी उम्मत क्यों? काम बताया कि ﴿تامرون بالمعروف وتنهون عن المنكر﴾ अगली आयत ﴿قل هذه سبيلى﴾ आप उनसे कहें कि यह है मेरा रास्ता ﴿ادعوا الى الله﴾ अल्लाह की तरफ़ बुलाना ﴿ومن اتبعنى﴾ मेरा कलिमा पढ़ने वाला मेरे ऊपर ईमान लाने वाले का भी यही रास्ता और मेरा भी यही रास्ता और अल्लाह के हबीब की खुशख़बरी मौजूद है ﴿لا يبقى على وجه الارض بيت وبر ولا مدر الا دخله الله فيه﴾ यह जुमला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी दुख़्तर को फ़रमाया ऐ फ़ातिमा तेरे बाप को अल्लाह ने वह कलिमा दिया है न कोई पक्का घर बचेगा न कोई कच्चा घर बचेगा, बल्कि हर हर घर में ख़ाल बाल के ख़ेमें में, ख़ेमा खाल का भी होता और ऊन का भी होता है चाहे ख़ेमा खाल का हो या ऊन का हो, कच्चा हो या पक्का घर हो अल्लाह तआला उस घर में तेरे बाप का कलिमा को दीन को इस्लाम को दाख़िल कर देगा, जो मानेगा इज़्ज़त पाएगा और जो न मानेगा हलाक होगा

﴿ويبلغ هذا الامر من حيث يبلغ الليل﴾ मेरा कलिमा वहाँ तक पहुँचेगा जहाँ जहाँ रात पहुँची है, यह खुशख़बरी मौजूद है और यह ज़िम्मेदारी उम्मत पर मौजूद है।

उम्मत का इम्तियाज़ः

मेरे भाईयों! अल्लाह तआला ने इस उम्मत के अन्दर जो इम्तियाज़ी चीज़ रखी है वह यही है कि यह दीन पर चलते हैं और दीन को फैलाते हैं, फैलाना हमारी ज़िम्मेदारी है। पहली उम्मतों पर दीन को फैलाना नहीं था। हर क़ौम में नबी, हर क़बीले में नबी। जब हमारे नबी तशरीफ़ लाए तो सारे जहाँ के इन्सानों के नबी बन कर आए लिहाज़ा सारी दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाना इस उम्मत के सुर्पुद हुआ है जिस तरह वालदैन की इताअत हमारे ज़िम्मे है और औलाद के हुक़ूक़ हमारे ज़िम्मे हैं।

कोई डाक्टर है तो तिब का शोबा उसके ज़िम्मे है, कोई जज है तो अदालत का शोबा उसके ज़िम्मे है, कोई ज़मींदार है तो ज़राअत का निज़ाम उसके ज़िम्मे है। इसी तरह मेरे भाईयो और दोस्तो! हम अपने नबी को आख़िरी मानते हैं और ख़त्मे नबुव्वत का अक़ीदा हैं जो इस तरह का अक़ीदा रखता है तो उसके ज़िम्मे है वह अल्लाह का पैग़ाम दुनिया के आख़िरी किनारे तक पहुँचाने में अपनी जान भी लगाए माल भी लगाए, इज़्ज़त भी लगाए, सब कुछ लगा दे और (किसी से) ले न कुछ भी तो अल्लाह तआला यहाँ भी देगा वहाँ भी देगा।

एक ज़माने से हम यह काम भूल चुके हैं। दीन पर चलने का ज़हन सबका है, कोई बहुत ही बर्बाद हो जाए तो कहेगा कि

दीन पर चलने की ज़रूरत नहीं है वरना गिरे से गिरा मुसलमान भी कहता है आप मेरे लिए दुआ करें कि अल्लाह तआला मुझे हिदायत दे तो पूरी दुनिया के इन्सानों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाना है इस बात को अच्छे अच्छे दीनदार भी अपने ज़िम्मे नहीं समझते आप यों कहें कि हमारे ज़िम्मे कोइ नहीं तो अमरीका, अफ्रीक़ा, यूरोप, आस्ट्रेलिया तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाना किसके ज़िम्मे है?

मुसलमानों की हालत:

आज पाकिस्तान ही में कितने मुसलमान शराब पीते मर गए, चोरी करते मर गए, ज़िना करते मर गए, सूद खाते मर गए। आप बताओ ये कहाँ चले गए?

जो दुनिया में शराब पीता मर गया तो जहन्नुम में ज़ानी औरतों की शर्मगाहों से पीप निकलेगी उसको अल्लाह तआला जमा करके शराब पीने वालों को पिलाएगा। जो इस हालत में मर गया तो बताओ उसका कितना बड़ा नुक़सान हुआ।

जो तकब्बुर करता हुआ मर गया उसको जन्नत की हवा भी नहीं लगेगी, अगर उससे तौबा करवा लेते तो कितने बड़े नुक़सान से वह बच जाता।

असलाफ़ का जज़बाए जिहाद और हम:

मेरे भाईयो! सहाबा जो रज़ियल्लाहु अन्हु बन गए तो उन्होंने वक़्त लगाया, पीछे मुड़कर नहीं देखा, उनकी भी औलादें थीं और उनकी भी बीवियां थीं वे वक़्त लगा के गए तो उनकी क़ुर्बानी से इस्लाम हम तक पहुँचा है। मुहम्मद बिन क़ासिम रह० के ज़रिए

सिन्ध और पंजाब मुसलमान हुआ और उनकी शादी को चार महीने हो गए थे। उनका चचा था हिज्जाज बिन यूसुफ़ और अपनी बेटी निकाह में दी थी। चार महीने बाद उनको भेजा था। सवा दो साल तक वहाँ रहे आज तक के मुसलमानों के आमाल उनके नामे आमाल में जा रहे हैं, ढाई साल के बाद गिरफ़्तार हुए, सुलेमान के ज़ुल्म का शिकार हुए, जेल में शहीद हुए। अपने घर को सिर्फ़ चार महीने आबाद देख सके और हमेशा के लिए दुनिया छोड़ गए लेकिन करोड़ों इन्सानों की हिदायत का अज्र व सवाब अपने नामे आमाल में लिखवा गए और अभी तक लिखा जा रहा है। जब उनको शहीद किया जाने लगा तो कहने लगे ﴿اضاعونی وای فتی اضاعا﴾ उन्होंने मुझे ज़ाए किया और कैसे जवान को ज़ाए किया जो उनकी हदूद की हिफ़ाज़त किया करता था और मुश्किल वक़्त में उनके काम आता था। आज उसको इन्होंने ज़ाए कर दिया। मुहम्मद बिन क़ासिम रह० का एक घर उजड़ गया और लाखों करोड़ो इन्सान इस्लाम में आ गए।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया सारी रात बारिश में खड़ा रहा रहूँ और सुबह को अल्लाह के दुश्मन पर हमला करूं तो यह मुझे पसन्द है सारी ख़ूबसूरत औरत के साथ गुज़ारने से। इधर आवाज़ लगी उधर से साद रज़ियल्लाहु अन्हु दौड़े, दुश्मन पर हमला और चहरे को छुपाया हुआ था (इसकी वजह नहीं लिखी कि क्यों छुपाया था) मुमकिन है यह ख़्याल हो कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देख लिया तो वापस न कर दें। हमला हुआ लड़ाई हुई ये पहली सफ़ में थे, उनके घोड़े को तीर लगा वह भी गिरा और यह भी गिरे। उठे तेज़ी से आस्तीनें ऊपर चढ़ायीं बाज़ू ऊपर किए। हुज़ूरे

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़रीब से गुज़रे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पहचान लिया, अरे साद तू तो शादी के लिए जा रहा था, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान हों मैं साद हूँ, अच्छा अबशर फिर मेरी बशारत ले तू जन्नती है ﴿اصبحت﴾ तू कामयाब हो गया। इसके बाद एक छलांग लगाई और अपने आपको काफ़िरों के मजमे में फेंक दिया और शहीद हो गए। सहाबा ने कहा ﴿اصيب سعد﴾ या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम साद शहीद हो गए। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके सिर को अपनी गोद में रखा और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों से आंसू दाढ़ी से गिर गिर कर हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु के चेहरे की मिट्टी और ख़ून धो रहें थे। फिर रोते रोते आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तू अल्लाह और उसके रसूल का कितना प्यारा हो चुका है। इधर घर लुट गया उधर अल्लाह का प्यारा बन गया। एक तरफ़ उजड़ गया दूसरी तरफ़ आबादी, एक तरफ़ कुछ न रहा, एक तरफ़ सब कुछ बन गया। हम थोड़ा सा ऊपर देखें और घर की चहार दीवारी से बाहर हो कर तो देखें।

शहादत का अज्रः

मेरे भाईयो! हमें ज़िन्दगी की तरतीब को सही करना है। बाज़ार को न देखें, लेबाट्री मार्केट को न देखें। आसमान से ऊपर और ज़मीने के नीचे देखो तो तब ही ज़िन्दगी ठीक होगी। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऊपर देखा और जान गए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तू मेरा और अल्लाह का प्यारा हो

गया। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोते रोते मुस्कराए फिर यों फेरा ﴿ورد الحوض ورب الكعبه﴾ खुदा की क़सम साद हौज़ पर पहुँच गया।

हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु अन्हु न रह सके फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हौज़ क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह मेरे रब ने मुझे दिया है जिसका पानी शहद से ज़्यादा मीठा, बर्फ़ से ठण्डा, दूध से ज़्यादा सफ़ेद, जो एक घूंट पिए तो कभी प्यास न लगे। फिर उन सहाबी ने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप रो रहे थे फिर मुस्कुराए फिर मुँह फेर लिया यह क्या चक्कर था? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اما بكائي سعداً﴾ मैं साद की जुदाई पर रो रहा था और ﴿اما ضحكي﴾ मैं मुस्कुराया हूँ ﴿لما رايت انزلته عند الله﴾ जन्नत में उसका दर्जा देख कर मुस्कुराया हूँ ﴿اما اعراض عنه﴾ फिर मैं ने इससे मुँह और आँखें झुकायीं हैं ﴿فلما رأيت ازواجه﴾ मैंने देखा जन्नत की ख़ूबसूरत बीवियां उसकी तरफ़ दौड़ी चली आ रहीं हैं और दौड़ने में मुसाबक़त है एक कह रही है कि मैं पहले पहुँचू दूसरी कहती है पहले मैं पहुँचूं ﴿كاشفات سوقهن﴾ तेज़ दौड़ने से उनके पिंडलियों से कपड़ा उठ गया ﴿باديات خلا خلهن﴾ उनके पाँव की पाज़ेब नज़र आ रही है तो मैं ने शर्म की वजह से मुँह फेरा, और नज़र झुकाई जाओ जाओ साद की बीवी से कह दो कि अल्लाह तआला ने साद को तुझसे ख़ूबसूरत बीवियां अता कर दीं हैं। साद रज़ियल्लाहु अन्हु का एक घर उजड़ गया और इस्लाम बहुत सी नस्लों तक पहुँच गया। कुछ मिटते हैं तो कलियों को वजूद मिलता है, कुछ पत्थर ज़मीन में दफ़न होते हैं तो इमारत को रंग मिलता है, कुछ दाने

ज़मीन में फूटते और फटते हैं तो ज़मीन का सीना सरसब्ज़ होता है। एक बाप पिसता है तो औलाद को घर बैठे रिज़्क़ मिलता है।

हर चीज़ क़ुर्बानी मांगती है:

मेरे भाईयो! क़ुर्बानी हो रही है और इस क़ुर्बानी की सतह को ऊपर लाना है कि हम भी पिस जाएं, मिट जाएं और लुट जाएं और अल्लाह के हबीब का कलिमा सारी दुनिया में ज़िन्दा हो जाए यह इस उम्मत की इम्तियाज़ी शान है और इस पर रब मेहरबान है। यह चाद महीने तो सीखने के लिए हैं यह तो सारी ज़िन्दगी का काम है, चार महीने और चिल्ले इस तरतीब को समझने के लिए हैं। इस मजमे में जितने लोग हैं ये सब के सब अभी ही से अल्लाह के रास्ते में निकल जाएं ऐसे निकलें कि घर वापस न आएं किसी की क़ब्र कहीं बने और किसी की कहीं फिर देखना कि दीन ज़िन्दा होता है कि नहीं। हां भाई नक़द चार महीने वाले। ﴿جزاك الله تعالى﴾

अल्लाह तआला की तारीफ़

11/2/2000

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه ونعوذبالله
من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله فلا مضل له
ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الله وحده لا شريك
له ونشهد ان سيدنا ومولٰنامحمدا عبده ورسوله وصلى تعالىٰ
عليه وعلى اٰله واصحابه وبارك وسلم امابعد

وقال رسول الله ﷺ اطلبو الجنة جهد كم وهربوا من النار
جهد كم فان الجنة لا ينام طالبها وان النارلا ينام هاربها، فان
الجنة اليوم مهفوفة بالكارم فان الدنيا مهفوفة بالشهوات
واللذات وتلهينكوعن الاخرة واكما قال ﷺ عليه الصلوة
والسلام

अल्लाह तआला इन्सान से एक लम्हा भी ग़ाफ़िल नहीं:

मेरे भाईयो! अल्लाह तआला अपने बन्दों से किसी हाल, किसी आन और किसी वक़्त में ग़ाफ़िल नहीं और अल्लाह के इरादे से ही बन्दे का काम होता है। असबाब ज़ाहिर में पैदा होते हैं फिर आसान तर होते हैं ﴿انتم تخلقونه ام نحن الخالقون﴾ तुम बनाते हो औलाद या हम देते हैं औलाद ﴿ام خلقوا من غير شئى﴾ या तुम खुद बने हो, अल्लाह ने खुद सवाल किया है और फिर खुद जवाब दिया है ﴿قدرنا بينكم الموت وما نحن بمسبوقين﴾ यह मौत व

हयात का निज़ाम तुम नहीं चला रहे हो बल्कि तुम्हारा अल्लाह चला रहा है ﴿خلق الموت والحيات﴾ मौत बनाने वाला और ज़िन्दगी को वजूद देने वाला है ﴿والسماء بنيناها﴾ आसमान को हमने अपने हाथों से बनाया ﴿وانا لموسعون﴾ और हमने ही उसको फैला दिया ﴿والارض فرشناها﴾ और यह ज़मीन हमने बनाई और उसको फैला दिया न बुलडोज़र लगाया न क्रेनें लगायीं, कोई आला इस्तेमाल नहीं हुआ, मिट्टी को मिट्टी ही से हमने बनाया अपने लफ़्ज़े कुन से ज़मीन को वजूद अता फ़रमाया, किसी पत्थर वग़ैरह से पहाड़ नहीं बनाए वैसे ही पहाड़ों का वजूद बख़्शा ﴿فنعم الماهدون﴾ कोई है हम से ज़्यादा बिछाने वाला ﴿الم نجعل الارض مهادا﴾ क्या हम ने ज़मीन को बिछौना नहीं बनाया? ﴿والجبال اوتادا﴾ और पहाड़ किसने लगा दिए? ﴿خلقناكم ازواجا﴾ और यह अल्लाह ही जिसने मर्द और औरत को वजूद बख़्शा ﴿وجعلنا نومكم سباتا﴾ अल्लाह ही है कि इन्सान को चारपाई पर लिटा कर ऐसी मख़्लूक़ उस पर मुसल्लत कर देता है कि इन्सान बिल्कुल बेख़बर बे शऊर पड़ा हुआ है, और इसी बेबसी की हालत में उसके मुँह और नाक से ऐसी आवाज़ें निकाल देता है और ऐसी ख़ौफ़नाक आवाज़ें आ रही हैं कि पास बैठने वाले भी बद्दुआएं दे रहे हैं कि हम इससे तंग हैं ﴿وجعلنا نومكم سباتا﴾ नींद को बनाया काटने वाला, ज़िन्दगी को काट दिया हरकात से, आमाल से, मशाग़िल से, लेन देन से और कारोबार से काट कर रख दिया ﴿وجعلنا الليل لباسا﴾ और रात को अल्लाह ले आए और छिपा दिया ﴿وجعلنا النهار معاشا﴾ दिन को काम करने के वास्ते बनाया ﴿وبنينا فوقكم سبعا شدادا﴾ और ऊपर सात आसमान बना दिए।

तमाम ज़मीन व आसमान की बादशाहत सिर्फ़ अल्लाह के लिएः

कौन है रातों को फ़रियाद करने वाले की फ़रियाद सुनने वाला ﴿وجعل كم خلفآء الارض﴾ कौन है तुम्हारी महफ़िलें चलाने वाला, क्या अल्लाह के साथ कोई शरीक है ﴿قليلا ما تذكرون﴾ फिर तुम में थोड़े हैं नसीहत हासिल करने वाले और जिनको नसीहत हासिल होती है वे दुनिया के धन्धों में पड़ कर ग़ाफ़िल नहीं होते।

अल्लाह खुद सवाल उठाकर जवाब देता है ﴿قل لمن الارض ومن فيها﴾ पूछो उनसे ज़मीन किसकी है और ज़मीन पर क़ब्ज़ा किसका है वे ख़ुद कहेंगे अल्लाह का है। हमारी कोई नाफ़रमानी करे तो हमें ग़ुस्सा आता है मगर ﴿سيقولون الله افلا تذكرون﴾ फिर शरमाते क्यों नहीं अल्लाह से, अल्लाह की ज़मीन पर उसके साथ शरीक करते हो और उसी की ज़मीन में उसी के एहकाम से इन्कार करते हो उन्हीं ही की ज़मीन पर सूद का निज़ाम चलाते हो, उन्हीं की ज़मीन पर शराब पीते हो और उन्हीं की ज़मीन पर नाच गाने की महफ़िलें सजाते हो। अल्लाह यह फ़रमाते हैं कि अगर तुम्हारे घर में और तुम्हारी ज़मीन पर तुम्हारी मर्ज़ी के बग़ैर कोई कुछ करे तो तुम उसके साथ क्या करते हो? तो तुम मेरी ज़मीन पर मेरे साथ क्या कर रहे हो ﴿قل لمن الارض ومن فيها﴾ तो तुम खुद कहते हो कि यह ज़मीन अल्लाह ही की है फिर तुम्हे हया क्यों नहीं आती सूद के निज़ाम से ज़मीन को आलूदा और गन्दा कर दिया है ﴿وربك الغنى ذوالرحمة﴾ अल्लाह फिर भी मेहरबान है ﴿لويؤاخذهم بما كسبوا﴾ अगर मैं पकड़ने वाला होता तो

ज़मीन पर कोई चलने वाला न छोड़ता, मेरी रहमत ही मेरे अज़ाब को रोक लेती है वरना मैं तुम्हें पकड़ लूँ ﴿لعجل لهم العذاب﴾ मेरे अज़ाब के दरवाज़े खुल जाएंगे फिर दुनिया में कोई बचाने वाला नहीं होगा। बरहाल तुम खुद अपने घर में किसी को कुछ करने नहीं देते लेकिन मेरी ज़मीन पर तुमने गाने की महफ़िलें सजा दीं मेरी ज़मीन को तुमने बेहयाई और फ़हाशी से भर दिया ﴿افلا تذكرون﴾ तुम्हे हया नहीं आई।

﴿قل لمن فى السموات السبع والارض ومن فيهن﴾ सब कहेंगे ﴿سيقولون الله افلا تتقون﴾ यही हमारे मिज़ाज के मुताबिक़ बात की है दुनिया के बादशाह से डरते हो, थानेदार से डरते हो जिनको अल्लाह तआला ने थोड़ा सा इख़्तियार दे दिया है और ये न इज़्ज़त दे सकते हैं न ज़िल्लत दे सकते हैं, न मौत दे सकते हैं, न हयात दे सकते हैं। जो न किसी की बना सके, न किसी की बिगाड़ सके, न दे सके, न ले सके, न मर सके, न मार सके, जो इतना बेबस और आजिज़ है उसके सामने तुम कैसे बकरी बन जाते हो और इधर ज़ुबान से कहते हो कि आसमान कर रब अल्लाह, ज़मीन कर रब अल्लाह, अर्शे अज़ीम का रब अल्लाह, काएनात का बादशाह अल्लाह फिर भी अल्लाह से नहीं डरते हो, अपने जैसे इन्सान से डर जाते हो। उसकी ज़ात की बादशाही तसलीम करते हुए फिर भी उससे नहीं डरते हो ﴿افلا تتقون﴾ हाए अफ़सोस अपने जैसे इन्सानों के सामने कांपते रहे, वासिक़बिल्लाह की आँखों में आँखे डाल कर कोई बात नहीं कर सकता था उससे शोले बरसते थे। यह ज़ालिम अब्बासी ख़लीफ़ा था।

अल्लाह तआला की अज़मत दिल में होनी चाहिएः

जब अल्लाह तआला ने उनको मौत का झटका दिया तो उसके दोनों हाथ उठे ﴿يامن لا يزال ملكه﴾ ऐ वह ज़ात जिसके मुल्क को ज़वाल नहीं उस पर रहम कर जिसके मुल्क को ज़वाल आ गया है। उसके वज़ीर ने उसकी चादर को उठाकर देखा कि मरा है या नहीं तो उलटे पाँव पीछे जा गिरा, थोड़ी देर बाद उसके कफ़न में हरकत हुई तो वहा फिर दौड़ कर आंए चादर उठा कर देखी तो एक चूहा उसके दोनों आँख खा चुका था, ऐसे बादशाहों से डरते हो जिनके ऊपर अल्लाह ने क़ब्र में जाने से पहले चूहे मुसल्लत कर दिए हैं।

जिन आँखों से शोले बरसते थे उन आँखों को चूहे ने खा लिया और अभी क़ब्र का अज़ाब बाक़ी है, ऐसों से डरें और आसमानों और ज़मीनों, अर्शे अज़ीम, लौह व कुर्सी के बिला शिरकते ग़ैर बादशाह से न डरें न चौंकें, न कांपें, न लरज़ें तो तुम्हारे दिल मुर्दा हो चुके हैं। यह पत्थर का दिल है या गोश्त का दिल है किस दिल के साथ ज़िन्दा हैं जिसको अल्लाहु अकबर की आवाज़ के बाद भी अल्लाह याद नहीं आए तो वह मर ही गया और क्या? जिसको सज्दे और रुकू में भी अल्लाह याद न आए तो उसका दिल मुर्दा है। तकबीरे तहरीमा का मतलब यह है कि आदमी सब कुछ छोड़ कर अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हो जाए। अगर फिर भी अल्लाह याद नहीं तो यह दिल मुर्दा ही है और क्या है? याद होना या याद करना यह दिल का फ़ेल है, ज़ुबान का फ़ेल उसका इज़हार है। सीने में दर्द होता है तो किसी स्पेशलिस्ट के पास दौड़ता है कि भाई सीने में शदीद दर्द है तो

क्या हो गया मरना तो है ही लेकिन दिल की सारी रगें अल्लाह से कट गयीं उसके इलाज की कोई फ़िक्र नहीं।

तो मेरे भाईयो! जब दिल का कनेक्शन अल्लाह से टूट जाता है तो उस दिल पर अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं आता जब अल्लाह का डर किसी दिल से निकल जाता है तो वह दिल सारी चीज़ों से डरता है ﴿العظمة الله﴾ सारी अज़मत अल्लाह के लिए है। मुल्क काफ़ूर अहमद बिन तूलून को नसीहत की तो उसको ग़ुस्सा आ गया उनके हाथ पाँव बान्ध के भूके शेरों के सामने डाल दिया और ऐलान करा दिया कि बादशाह के सामने गुस्ताख़ी करने वाले का अन्जाम ऐसा होता है। जब सब इकठ्ठे हो गए तो एक भूका शेर आकर अपनी ज़ुबारन से उनके पाँव और हाथों को चाटने लगा जैसे जानवर अपने बच्चों को ज़ुबान से चाटता है। यह जानवर की मुहब्बत और प्यार का तरीक़ा है। वह शेर उस आदमी के पैर चाट रहा था तो उस पर भी लरज़ा तारी हो गया कि मैं अभी इसके मुँह में जाऊँगा उसके बाद उसके हाथ पाँव खोलकर बाहर लाया गया और उस से पूछा गया कि जब शेर आपके पाँव चाट रहा था तो आप अपने दिल में क्या सोच रहे थे? तो उस ने कहा कि मैं सोच रहा था कि मेरे पाँव पाक हैं या नापाक हैं। अल्लाह की अज़मत दिल में उतर जाती है तो शेर को भी अल्लाह तआला बकरी बना देता है और हम इन्सान नुमा बकरियों से डरते हैं और अल्लाह से नहीं डरते हैं।

अल्लाह की बड़ाई दिल में आ जाएः

قل من بيده ملكوت كل شئى وهو يجير ولا يجار عليه

किसके हाथ में है ज़मीन और आसमान की लगाम और कौन

है इसको टकराने वाला जिसको वह साया दे दें तो कौन है साया हटाने वाला और जिसको वह पकड़ लें कौन है उसको पनाह देने वाला। यह तो सब कहते हैं कोई नहीं, फिर अल्लाह कहता है ﴿فانى تسحرون﴾ इतनी बड़ी ताक़तवर ज़ात को छोड़ कर पेशाब पाखाने के सामने झुक गए तो तुम पर किस ने जादू कर दिया। ऐसा काम आक़िल नहीं कर सकता अल्लाह को छोड़ कर अपनी जैसी मख़्लूक़ की ख़ुशामद करता फिरे, मेरे भाईयो ﴿لا اله الا لله﴾ यह सिर्फ़ ज़ुबानी बोल नहीं बल्कि यह हक़ीक़त है जिस से हमारे दिल ना आशना हैं।

और हम तबलीग़ में इसी बात को सीख रहे हैं और इसी की दावत दे रहे है कि भाईयो मरने से पहले अपने दिल में अल्लाह को ले लो, उसकी अज़्मत और किबरियाई, उसकी जबरूत और वहदानियत को दिल में उतार लो। न उसका कोई वज़ीर, मुशीर, न कोई मुईन व मददगार न कोई हिफ़ाज़त करने वाला, न वह खाए, न पिए, न सोए, न मरे, न मिटे। इब्तेदा से पाक, इन्तेहा से पाक, थकावट से, नींद से, ऊंघ से पाक ﴿وما كان ربك نسيا﴾ भूलता नहीं ﴿لا يضل ربى﴾ भटकता नहीं ﴿ما كان الله ليعجزه من شئى﴾ वह आजिज़ नहीं ﴿لا تحسبن غافلا﴾ वह ग़ाफ़िल नहीं ﴿يمسك السموات ولارض ان تزولا﴾ सारी काएनात का ज़र्रा ज़र्रा, बहर व बर, फ़िज़ा व ख़ला, आसमान व ज़मीन सब के सब उसके क़ब्ज़े क़ुदरत में हैं। सारी काएनात को हुक्म दिया ﴿ائتيا طوعا و كرها﴾ झुक जाओ ख़ुशी से और नागवारी से, सारी काएनात बोली ऐ अल्लाह हम ख़ुशी से हाज़िर हैं।

अल्लाह कहता है सारी काएनात मेरे सामने झुक जाती है तो

तुम भी मेरे सामने झुक जाओ, तुम भी मान लो, अपनी मन चाही छोड़कर अल्लाह की चाहत को पूरा कर लो। बस तबलीग़ में इसी चीज़ की मेहनत हो रही है और कुछ नहीं।

सब कुछ अल्लाह के ही चाहने से होता हैः

मेरे दोस्तों और भाईयो! ज़मीन और आसमान पर वह होगा जो अल्लाह चाहता है

ماشآء الله كان، يفعل الله ما يشآء، ويهدى من
يشآء، ويضل من يشآء ويغفر من يشآء الخ

वही होगा जो अल्लाह चाहेगा और हम भी चाहते हैं कि हमारी चाहते पूरी हों। आज दुनिया वालों की चाहत यह है कि माल व कमाओ नाचो, यह रास्ता नामुकम्मल भी है और ख़तरा भी है। कभी पैसे से कोई खुशहाली ले सका है? कभी नाज़नीनों को पहलू में लिटा कर भी किसी को तसकीन हुई है? शराब में ग़र्क़ होकर कभी किसी का ग़म मिटा है? सारी दुनिया में दुख ही दुख हैं जो जितना भी अल्लाह से दूर है वह बेचारा उतना ही महरूम है। इस रास्ते की नाकामी खुली आँखों अल्लाह के सामने दिखला रहा है। अल्लाह तआला बता रहा है ﴿عبدى انت تريد وانا اريد ولا يكون إلا ما اريد﴾ हम अपनी चाहतें चाहते हैं तो अल्लाह क्या इन्तेज़ाम फ़रमा रहे हैं? ﴿فإن سلمتنى فى ما اريد اتيتك فى ما تريد﴾ ऐ मेरे बन्दे! दुनिया में अपने ऊपर मेरे हुक्म को लगा दो और जारी कर दो, तारी कर दो, फिर जो कुछ तू चाहता है सब कुछ पूरा कर दूँगा।

इन्सान को अपनी इस्लाह की फ़िक्र करनी चाहिएः

अल्लाह की चाहत को पूरा कर देना हमारी ज़िन्दगी की कामयाबी है। यह पैदा करने वाले का हक़ है कि जिसने नुत्फ़े से ख़ूबसूरत शक्लें बनायीं क्या उसका हक़ नहीं कि उसकी मान कर चला जाए? आँखों में छब्बीस करोड़ बल्ब लगाए हैं क्या वह मुतालबा नहीं कर सकता कि हराम नहीं हलाल देखो? कानों में दो लाख टेलीफ़ोन लगाए हैं क्या इसका मुतालबा नहीं कर सकता कि हराम नहीं सुना और हलाल सुनो? हाथ अल्लाह ने दे दिया क्या इस का मुतालबा नहीं कर सकता कि उसके साथ अद्ल करो ज़ुल्म न करो? शहवत की ताक़त रखी है उससे ज़िना नहीं शादी करो, ज़ुबान में बोलने की ताक़त रखी है। इतनी बड़ी क़ुदरत है कि हवा की हरकत अल्फ़ाज़ में ढल रही है, आवाज़ें हरकत ही तो हैं जो हवा से पैदा होती हैं और वह हरकत कान में जाकर अल्फ़ाज़ में मुन्तक़िल हो कर दिमाग़ तक माइने को पहुँचाती हैं। कितनी बड़ी अल्लाह की क़ुदरत है ज़मीन की भी एक हरकत है जैसे गेंद फुरकती है ऐसे ही ज़मीन फुरकती है अगर अल्लाह तआला ज़मीन के इस इरतिआश (कपकपाहट) को बन्द कर दें तो ज़मीन सीधी ही घूमती चली जाए। कोई मौसम नहीं रहेगा। ये मौसम सब ख़त्म हो जाएंगे। क़ुतबी हवा चलें तो पूरी ज़मीन पर बर्फ़ बिछा देंगी। जब वें हवाएं बन्द हो जाएं तो सूरज की तपिश और शुआऐं पूरी दुनिया को चटखा देंगी तो इन्सान का क्या हाल होगा? क्या वह ज़ात इसका मुतालबा नहीं कर सकती हक़ और सच बोलो और गाली किसी को मत दो ﴿اذا هجرت امتی تساقط من عین اللّٰه﴾ जब मेरी

उम्मत गाली गलौच इख़्तियार करेगी तो अल्लाह की नज़र से गिर जाएगी। हम तो पैदा होते ही गालियां देना शुरू कर देते हैं। बच्चे गालियां देने को खेल समझते हैं। छोटा सा बच्चा जानवरों का गालियां बक रहा है ऐसा तो जानवर भी नहीं करते तो उसका मुतालबा जाएज़ है कि हक़ बोल, चुग़ली न खा, ग़ीबत न कर, लगाई बुझाई न कर और वह बोल जो अल्लाह चाहता है। ﴿ان السمع والبصر والفؤاد كل اولئك مسئولا﴾ एक दिन आएगा कि मैं तेरे कानों से पूछूंगा कि क्या सुनते रहे? तेरी आँखों से पूछूंगा कि क्या देखते रहे? तेरे दिल से पूछूंगा कि किस जज़्बे के साथ मरे हो? तो मेरे दोस्तों और भाईयो! हम मशहूर हुए या बदनाम, ग़नी हुए या फ़क़ीर हुए, अगर हम ने अल्लाह की चाहत को पूरा कर दिया तो हम कामयाब हुए। तबलीग़ इस चीज़ को सीखने की मेहनत है। पूरी तरह ﴿ادخلوا في السلم كافة﴾ दीन में मुकम्मल तौर से दाख़िल हो जाओ, एक टांग दरवाज़े के बाहर हो और एक अन्दर हो तो यह लटक गया दर्मियान में। इसको पूरा दख़ूल नहीं कहा जाता और अल्लाह कहता है कि दीन में पूरे आ जाओ, अल्लाह के सामने झुका दो अपने आपको, ख़्वाहिशात को दफ़न कर दो, यह मुतालबा अल्लाह तआला ने हम से ला इलाहा इलल्लह में किया है। यह ज़ुबान का खाली बोल नहीं, पूरी ज़िन्दगी का मुतालबा है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम कलिमे में अपने नाम के साथ जोड़ दिया है, हम अल्लाह की मान को जानते नहीं और किसी नबी के अलावा वही आती नहीं और अब कोई नबी आएगा नहीं। इस लिए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने बन्दों में नमूना बना कर भेजा कि मेरी मान कर चलना है तो यह नमूना है ﴿لـ

﴿ما آتاكم الرسول فخذوه الخ﴾ जिससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मना करें तो छोड़ दो और जिसको करने को कहें कर दो।

बराहे रास्त अल्लाह और रसूल से जंगः

आज सारी दुनिया सूद की लानत में लिपट चुकी है। मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम सब इसके अलावा तिजारत ही नहीं करते। ऊपर वाले की तरफ़ से ऐलान जंग हो रहा है। अगर इन्सान के दुश्मन ऐलाने जंग कर दें तो सारे शहर में ब्लैक आउट हो जाए, सारे मोर्चे खोल दिए जाएं और सारे दिफ़ाई निज़ाम तैयार कर लिए जाएं और अल्लाह सूद पर कहे कि मैं तुम से लड़ने के लिए आ रहा हूँ ﴿فاذنوا بحرب من الله الخ﴾ मैं अकेला नहीं बल्कि मेरा रसूल भी तुम से लड़ने आ रहा है तो बताओ यह उम्मत कैसे फ़लाह पाएगी जिनसे उसका रब और रसूल लड़ने आ जाएं। इनको ऐटमी ताक़त बनना क्या नफ़ा देगा। ऐटमी ताक़त बन भी गए तो कितने घरों को सुख मिला? हम यह नहीं कहते हथियार मत बनाओ लेकिल हम इतने पागल हैं कि इसी को अपनी मेराज समझ रहे हैं, कामयाबी और कामरानी अल्लाह के हाथ में है। अल्लाह को साथ लेने से काम बनता है फिर पत्थर भी ऐटम बम बन जाता है। जब तालूत जालूत के मुक़ाबले के लिए निकला तो दाऊद अलैहिस्सलाम छोटे बच्चे थे। कहने लगे मुझे भी साथ ले लें। जब यह रास्ते में जा रहे थे तो इधर एक पत्थर पड़ा हुआ था वह पत्थर कहने लगा कि ऐ दाऊद मुझे उठा लो। मेरे अन्दर जालूत की मौत लिखी है, छोटा सा पत्थर था उसको उठा कर जेब में डाल दिया जब मैदान में पहुँचे। जालूत लोहे के लिबास में मलबूस हो कर आया सिर्फ़ उसकी आँखें

नज़र आ रही थीं उसने ऐलान कर दिया कि कोई आओ मेरे मुक़ाबले में?

दाऊद अलैहिस्सलाम ने कहा कि इसके मुक़ाबले के लिए मैं जाता हूँ। उन्हें इजाज़त मिल गई तो यह छोटा सा नौ उम्र मैदान में उतरा तो जालूत ने कहा कि यह नौ उम्र मेरे मुक़ाबले में आकर अपनी मौत से खेल रहा है। इतने में दाऊद अलैहिस्सलाम ने वही पत्थर उठा कर उसके सिर पर मारा वह पत्थर सिर से पार निकल गया। इतना छोटा सा पत्थर सिर को पार करके दूसरी तरफ़ निकल जाए यह कोई अक्ल की बात है ﴾وما رميت اذ رميت ولكن الله رمىٰ﴿ तो तू नहीं मारता बल्कि तेरा रब मारता है।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बतः

मेरे भाईयो! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी बना लें। उनकी अदाएं अपने अन्दर पैदा करें। मुहब्बत करनी है तो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से करें। मुहब्बत से इत्तेबा पैदा होता है। जिससे मुहब्बत होती है आदमी उसके सांचे में ढलता चला जाता है जो लोग मासूम बच्चों को सुबह सवेरे टाइयां और सलीब पहना कर स्कूलों में भेज रहे हैं बचपन से बच्चों से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मतें बच्चों के दिलों से निकाल रहे हैं। यही औलाद कल इन माँ बापों के गिरेबान में हाथ डालेगी, या अल्लाह इन्होंने हमें हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों से दूर कर दिया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है ﴾لا يؤمن احدكم حتى يكون هواه تبعا لما جئت به﴿ तुम में से

कोई मोमिन नहीं जब तक अपनी ख़्वाहिशात को मेरे तरीक़े के ताबे न कर दे।

दूसरी जगह हदीस आई है ﴿لا يؤمن احدكم حتى اكون احب إليه الخ﴾ तुम में से कोई उस वक़्त तक ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक मेरी मुहब्बत औलाद पर, माँ बाप पर ग़ालिब न हो जाए।

क़ब्र की फ़िकरः

मेरे भाईयो! सारे मआशरे को यह बात समझानी है। आज हम रोटी और दाल की महंगाई पर रो रहे है लेकिन क़ब्र की भूक चली आ रही है। यहाँ पर कपड़े पर रो रहे हैं और वहाँ पर सबको नंगा खड़ा कर दिया जाएगा सिर के बालों से फ़रिश्ते घसीटते जा रहे होंगे। उस वक़्त के लिए कोई नहीं रोता, उस ग़म को कोई ग़म नहीं बनाता, रात तो कट ही जाती है चाहे हंसते कटे चाहे रोते कटे। कभी रात भी रुकी है? इस का काम जाना है और दिन का काम भी चलना है ग़म औक़ात के साथ साथ चले जाते हैं, ढल जाते हैं और जब वक़्त थम जाएगा, लैल और नहार की गर्दिशे अवक़ात की घड़ियां ख़त्म हो जाएंगी फिर अगर ग़म आया तो सदा रहेगा और राहत आई तो सदा रहेगी।

औरतों के लिए हुक्मः

मेरे दोस्तों! तबलीग़ सारी सोई हुई इन्सानियत को जगाने का नाम है। दुनिया मोहसिने आज़म होता है नबी, नबी से बढ़ कर कोई मोहसिन नहीं होता। वह इन्सानियत को जहन्नुम से बचा कर, अल्लाह की गिरफ़्त से बचा कर जन्नत के सीधे रास्ते पर लगाता है। इस वक़्त सारी दुनिया पर एहसाने अज़ीम यही है कि

उनको अल्लाह की तरफ़ फेर लिया जाए। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा मर्दों और औरतों में नज़र आए।

يا ايها النبى قل لا ازواجك وبناتك ونسآء المؤمنين الخ....

ऐ मेरे नबी बता दो अपनी बेटियों को और बीवियों को और सारी मुसलमान औरतों को कि अब पर्दे का हक्म आ गया है। जब सुबह मस्जिद में मुसलमान औरतें आयीं तो हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि ऐसा लगा कि कव्वे मस्जिद में आ गए। सारी काली चादरों में ढकी छुपी हुई, इधर हुक्म आया उधर इताअत आई। इनमें अपनी चाहत को अल्लाह पर क़ुर्बान करने का जज़्बा पैदा हो गया था।

एक औरत का ख़ाविन्द अल्लाह के रास्ते में चला गया और बीवी से कहा कि घर में रहना बाहर न जाना, अब उसका बाप बीमार हो गया तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आई और कहने लगी कि मेरे ख़ाविन्द कह कर गए हैं कि बाहर न जाना, मैं बाप से मिलने जाऊँ? सहाबी का मतलब यह नहीं था कि बाप के पास भी न जाना क्योंकि मुँह से जुमला निकला था कि बाहर न जाना लेकिन उस औरत ने उस जुमले का पास रखा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इम्तेहान में डाल दिया कि घर में बैठी रहो, फिर सकरात आ गई तो उस औरत ने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वह मरने लगा है और इन्तिक़ाल हो गया फिर वह औरत कहने लगी या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुँह देखने चली जाऊँ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बैठी रहो। इस हुक्म

को कढ़वा घूंट न समझा, शहद समझ कर पी गई। बीमारी में न गई, कफ़न में न गई, जब दफ़न से फ़ारिग़ हो कर वापस आए तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अब जाओ तेरे इस सब्र ने तेरे बाप को जन्नत दे दी। इस तरह उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल पर अपने जज़्बात क़ुर्बान कर दिये थे। हमारा मिज़ाज बदल रहा है हम मुसलमान भी रहना चाहते हैं और अपनी ख़्वाहिशात को भी पूरा करना चाहते हैं।

और अल्लाह कहता है कि मेरा क़ुर्ब हासिल करना है तो अपनी चाहतों को मेरी चाहत पर क़ुर्बान कर।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा मर्द व औरत दोनों के लिए हैः

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मर्दों को भी तरीक़ा बताने के लिए आए और औरतों को भी तरीक़ा बताने के लिए आए ﴿يا أبا سفيان جئتكم بكرامة الدنيا والاخرة﴾ ऐ अबू सुफ़यान मेरी मान कर चलना दुनिया व आख़िरत की इज़्ज़तें तुम्हारे मुक़द्दर में कर दी जाएंगी।

सारी काएनात के अन्दर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत डाली गई। इन्सान एक जज़्बाती मख़्लूक़ है किसी मन्ज़र से मुहब्बत करता है और किसी मन्ज़र से नफ़रत करता है। कोई शक्ल देखता है मुहब्बत होती है कोई शक्ल देखता है नफ़रत होती है। ये नज़ारे और शक्लें उसको अपनी तरफ़ खींचती हैं। इसी तरह जानवर भी हैं लेकिन एक बेजान चीज़ में कोई शऊर नहीं कोई ऐश और हरकत ही नहीं। मिसाल के तौर पर पहाड़ वह भी काले, सहूर व समा। आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम फ़रमाते हैं कि यह ओहद का पहाड़ भी मुझ से मुहब्बत करता है। बेजान बे हिस, ग़ैर मुताहर्रिक चीज़ भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करती है। आप जबले ओहद पर चढ़ गए तो ओहद पहाड़ झूमने लगा कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दम मुबारक मुझ पर पड़ गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اسكن﴾ ठहर जा क्यों हरकत करता है। जिसकी लम्स से बेजान चीज़ भी वजूद में आ जाएं उसकी ज़िन्दगी हमने किताबों में उठाकर रख दी। वह ज़िन्दगी घरों से निकल गई, दुकानों से निकल गई, बाज़ारों से निकल गई, अदालतों से निकल गई, हुकूमतों के एवानों में से निकल गई, मुल्की क़ानूनों में से निकल गई, बीवी और बच्चों से निकल गई, मर्दों व औरतों में से निकल गई।

तबलीग़ का असल मक़सदः

मेरे भाईयो! इस पर कौन रोए। घर की मैयत पर घर वाले न रोएं तो और कौन रोएगा। आज दीन और इस्लाम को मिटता हुआ देख कर मुसलमान न रोए तो यहूदी रोएगा। वे तो पहले से मिटाने पर लगे हुए हैं। यह तबलीग़ में इसी बात की मेहनत हो रही है कि अल्लाह तआला के अहकामात को हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों पर लेकर चलना हर मुसलमान मर्द और हर मुसलमान औरत के अन्दर उतर जाए। यही उनकी कामयाबी का रास्ता है। इसी से वे कामयाबी की मंज़िल तक पहुँच जाएंगे। इसके अलावा तमाम रास्ते नाकामियों की तरफ़ हैं, हलाकतों की तरफ़ हैं, बर्बादियों की तरफ़ हैं। यही मुहम्मर्दुरसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रास्ता है जो

उनको कामयाबी तक पहुँचाएगा।

एक वाक़िया:

दुनिया की कोई किताब पढ़ने से कुछ नहीं मिलता, अगरचे उसकी इन्तिहा पहुँचे और उसके असल फ़न तक जा पहुँचे। पढ़े हुए भी जूतियां चटख़ाते फिरते हैं। जब मैं राएविन्ड में पढ़ता था तो मेरा भाई मेडिकल में पढ़ता था। जब मैं कभी घर जाता था तो मुझ से कहता था आपके मुस्तक़बिल के बारे में बड़ी फ़िक्र है। मैं उससे कहता था तू अपनी फ़िक्र कर, हम मस्जिद में एक रोटी पर भी गुज़ारा कर लेंगे। जब वह फ़ारिग़ हो गया तो उसकी कोई मुलाज़मत नहीं मिली तो जूतियां चटख़ाने लगा तो कहने लगा मुझे अब अपनी फ़िक्र है। दुनिया में डिगरियां हासिल करने के बाद कुछ नहीं मिलता और इस तरफ़ अल्लाह की किताब उठाकर घर से निकला और मस्जिद में जाकर पढ़ने लगा तो माँ बाप के पिछले सारे गुनाह मॉफ़ हो गए। हाय जो क़ौम ज़हनी तौर से ग़ुलाम हो चुकी हो तो उसे ऐटम बम बनाना कोई इज़्ज़त नहीं दे सकता, जो ज़हनी ग़ुलाम हैं जिनको हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी और तरीक़े अपनी तरफ़ न खींच सकें और जिनको हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में हुस्न दिखाई न दे वे कहाँ जा कर फ़लाह पाएंगे। यह ज़मीन अल्लाह की है, ज़मीन वह चीज़ निकालती है जो अल्लाह कहता है और हवाएं उसके ताबे हैं जो आसमानों में रहता है। ज़मीन और आसमान की लगाम उसके हाथ में है। इसमें उसका कोई शरीक नहीं।

बेजान भी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करता हैः

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सोए हुए थे तो दूर से एक दरख़्त आया ज़मीन को चीरता हुआ, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर साया किया फिर थोड़ी देर बाद हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँख खुलने पर वापस अपनी जगह पर क़रार पकड़ा। अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह देखा कि वह दरख़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और फिर चला गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दर्याफ़्त किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह मेरे दीदार के लिए आया था और मेरे दीदार का प्यासा था उसने अल्लाह से इजाज़त मांगी जब उसे इजाज़त मिली तो आकर मेरा दीदार करके अपनी प्यास बुझाई जिसकी ख़ातिर हजूर शजूर शौक़ रखें और हम उसका शौक़ न रखें तो फिर हम अपने आपको मुर्दा न कहें तो और क्या कहें?

तबलीग़ का फ़ायदाः

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को लेकर चलना और सीखना इसके लिए घरों से निकलना शर्त है। यह मेहनत का निज़ाम अल्लाह ने चलाया, आपके मुल्क में चला दिया। इसे मैं भी सीख लूं, आप भी सीख लें ताकि जब मरें तो अल्लाह के महबूब बनकर मर जाएं, मरदूद बनकर न मरें। हज़रत शाबाना रह० ने ख़्वाब में देखा कि जन्नत सजाई जा रही है फ़रिश्ते और जन्नती दरवाज़े पर खड़े हैं तो कहने लगे क्या हो

रहा है और कौन आ रहा है? जवाब मिला एक ख़ातून आ रहीं हैं जिसके लिए सारे जन्नती दरवाज़े पर इस्तिक़बाल के लिए खड़े हुए हैं तो उन्होंने देखा उनकी अपनी बहन हज़रत शमउना रह० सफ़ेद ऊँट पर बैठ कर हवा में जन्नत की तरफ़ चली आ रही हैं जब वह जन्नत के दरवाज़े पर पहुँच कर ऊँट से उतरीं तो सारे फ़रिश्तों और जन्नतियों ने उनका इस्तिक़बाल किया। तो उन्होंने उन से पूछा कि बहन यह मुक़ाम कैसे पाया? उन्होंने कहा रातों को उठ उठ कर अल्लाह को याद करने से पाया।

जो औरतें रातों को उठकर रोती थीं उनकी गोद में जुनैद बग़दादी जैसे फूल खिलते थे और जिन औरतों की रातें गाने बजाने और सुनने में गुज़रती हैं उनकी गोद में बदमाश ही पैदा होते हैं और कौन पैदा होगा। ऐसी बन्जर ज़मीन में कांटे ही लगते हैं, गुलाब नहीं लगते।

अल्लाह और रसूल के ताबे होकर ज़िन्दगी गुज़ारें:

तो मेरे भाईयो! हम अपनी चाहतें अल्लाह की चाहत के ताबे कर लें और उन चीज़ों से नफ़रत अपने अन्दर पैदा कर लें जिन चीज़ों से अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोका है। अब सारी दुनिया के इन्सानों को इस पर लाना है। यह इस उम्मत की ज़िम्मेदारी है। एक आदमी को आपने देखा उसके पास कपड़े और जूते कुछ भी नहीं हैं तो आपके दिल में ख़्याल आया कि इसकी ज़रूरियात पूरी करूँ इतने में आपने देखा कि एक साँप दौड़ता हुआ उसकी तरफ़ आ रहा है तो बेसाख़्ता पुकार उठेंगे साँप साँप। सबसे पहले आप उसकी जान बचाने की

फ़िक्र करेंगे क्योंकि जब तक जान है तो रोटी भी होगी, कपड़ा भी होगा, जब मर गया तो यह रोटी और कपड़ा किस काम के।

इस वक़्त पूरी दुनिया की इन्सानियत सिवाए चन्द एक के सब के सब जहन्नुम की तरफ़ जा रहे हैं। इनकी सब से पहली ज़रूरत यह है कि उनसे तौबा करवा कर अल्लाह से जोड़ा जाए और जहन्नुम के साँप बिछ्छुओं से बचाया जाए। मेरे वालिद साहब फ़ौत हुए तो ख़्वाब में देखा कि वह बड़े ख़ौफ़ज़दा हैं। मैंने कहा क्या हुआ? तो कहने लगे बेटा आख़िरत के साँप बड़े ख़तरनाक हैं। मैंने कहा आपके साथ क्या हुआ? फ़रमाया अल्लाह ने मेरी हिफ़ाज़त फ़रमाई फिर भी आख़िरत के साँप बड़े ख़तरनाक हैं। जहन्नुम के बिछ्छू जिनका क़द ख़च्चर के बराबर है अगर एक बार डस लें तो चालीस साल तक आदमी तड़पता रहेगा और उसको हमेशा हमेशा डसते ही रहना है न जहन्नुम के आदमी पर मौत और न उस बिछ्छू पर मौत आएगी। तो इन्सानियत को उन बिछ्छूओं से बचाने की ज़रूरत है।

सहाबा का जहन्नुम का तज़्किरा सुन कर रोनाः

हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़रमाया कि अगर तुम्हारा दुश्मन अल्लाह का नाफ़रमान है तो उससे बदला लेने की कोई ज़रूरत नहीं अल्लाह खुद अपने नाफ़रमान का बदला चुकाएगा। जो मुजरिम बनकर मर गया तो किस इबरतनाक तरीक़े से क़ब्र उसका हश्र करेगी। सारी दुनिया के इन्सानों को इस आने वाले दिन से बचाना है और अपने आपको भी बचाना है। गर्मी सर्दी से बचाना यह हुक़ूक़ का मामला है लेकिन अपने आपको जहन्नुम से बचाने के लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया है

﴿قوا انفسكم واهليكم نارا وقودها الناس الخ﴾ जिस आग का ईंधन हम और आप हैं।

इस आयत को सुनने के बाद हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु रोते हुए बाहर निकल गए, तीन दिन ग़ायब रहे और किसी को नहीं मिले। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उनको तलाश करो। जब तलाशी हुई तो पहाड़ों में बैठे हुए थे अपने सिर पर मिट्टी डाली हुई थी और रो रहे थे कि हाय उस आग की हालत क्या होगी जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं। उनको पकड़ कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में लाय गया तो फ़रमाया कि इस आयत ने मुझे बेक़रार कर दिया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आप उनमें से नहीं हैं, सलमान तू तो वह है जिसको जन्नत ख़ुद चाहती है। जिसको जन्नत चाहे वह जंगलों और पहाड़ों में निकल जाए और जिसको कुछ पता ही नहीं जन्नत और जहन्नुम का वह मज़े की नींद सो जाए।

एक सहाबी तहज्जुद की नमाज़ में रो रहे हैं कि ऐ अल्लाह जहन्नुम की आग से बचा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आकर देखा और फ़रमाया कि अरे भाई तूने यह क्या कर दिया? तेरे रोने की वजह से आसमान में सफ़े मातम बिछी हुई है, तेरे रोने से फ़रिश्तों को भी रुला दिया है। ऐसा दर्द व ग़म उनके अन्दर उतर गया था।

दूसरों की इस्लाह की फ़िक्र करनी चाहिएः

अब ऐसे पत्थर दिलों का नरम करना है और अल्लाह के बन्दों को अल्लाह से जोड़ना इस उम्मत की मेहनत है। हम आए

हैं इसके लिए ﴿هو اجتبٰكم﴾ हमें अल्लाह ने चुन लिया है, ﴿كنتم خير امة الخ﴾ इस आयत में अल्लाह ने इस उम्मत की शराफ़त और क़दर व मन्ज़िलत बताई है। बिन बुलाए नहीं ये बुलाने पर आई है। मेहमान खुसूसी स्टेज पर मौअज़्ज़िज़ होता है और वह स्पेशल बुलाया जाता है। आप अल्लाह की तलब पर दुनिया में आए हैं और आप क्यों आए हैं? ﴿تامرون بالمعروف الخ﴾ आप लोगों को नेकियों की तरफ़ दावत देते हैं और आप उनको बुराईयों से रोकते हैं और आप अल्लाह पर ईमान रखते हैं। इस वक़्त मुसलमान की हालत यह है कि कुछ वक़्त दीन पर चलता है बाक़ी अपनी मर्ज़ी पर चलता है। पिच्चानवे फ़ी सद नमाज़ छोड़ चले हैं। कारोबार में लाखों में से चन्द एक मिलते हैं जो हराम व हलाल का ख़्याल रखते हैं। जिहालत का यह आलम है कि न बाप को पता है कि बच्चों की क्या तरबियत करनी है और न माँ को इल्म कि कैसे तरबियत बच्चों की की जाए? बाज़ार औरतों से भर गए हैं जो घर की जानशीन थीं उसको शैतान ने बाज़ार की ज़ीनत बना दिया, यह अच्छी आज़ादी है। ऐयर होस्टेस बन जाओ तीन सौ आदमियों की ख़िदमत करो यह आज़ादी है क्या आज़दी है? कर्लक बन कर सारे दिन ऑफ़िस में बैठो, यह आज़ादी है। आज़ादी अल्लाह ने दी थी कि घर में बैठ कर बच्चों की तरबियत करो और मर्द की ज़िम्मेदारी है कमाकर लाए और तुझे खिलाए। जिस रास्ते से अल्लाह रिज़्क़ देता है वे रास्ते हम ने खुद बन्द किए हुए हैं ﴿من حيث لا يحتسب﴾ का दरवाज़ा खोलो तो अल्लाह घर बैठे खिलाएगा।

अब अल्लाह ने इन्सान को कमाने का हुक्म दे कर इम्तेहान में डाला है कि हलाल कमाता है या हराम, झूठ बोलता है या

सच, रिश्वत लेता है या तनख़्वाह पर गुज़ारा करता है, वरना अल्लाह के लिए देना, लेना, खिलाना, पिलाना कोई मुश्किल नहीं वह घर बैठे खिला पिला सकता है। आज मुसलमान का हाल कि हम कमाएंगे तो खाएंगे। इस अक़ीदे को तोड़ना है। अब इन मुसलमानों को समझाना है सारी दुनिया के काफ़िरों के पास इस दीन को लेकर जाना है। अगर हम और आप कहेंगे कि हमारे पास फ़ुर्सत ही नहीं, औरतें कि हम अपने ख़ाविन्दों को अपने से जुदा नहीं होने देंगे और बच्चे कहें कि हमें खेलने से फ़ुर्सत नहीं तो फिर यह दीन किसके हवाले है? या यह बता दें कि यह काम फ़लॉं क़ौम या क़बीले के ज़िम्मे है वे जा कर यह अन्जाम देंगे। मेरे भाईयो हम ने इस काम को अपनी ज़िम्मेदारी ही नहीं समझा, यह कोई नफ़ली इबादत नहीं कि कर लिया जाए तो ठीक है न किया तो कोई हर्ज नहीं, नहीं मेरे दोस्तों! यह उम्मत की ज़िम्मेदारियों में शामिल है। हदीस में है कि जब तुम जिहाद को छोड़ दोगे तो तुम पर ज़िल्लत मुसल्लत कर दी जाएगी। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम मुल्क व माल फ़तेह करने के लिए नहीं निकले थे। पैग़ामे इलाही को फैलाने निकले थे। अल्लाह का शुक्र है कि अल्लाह ने इस पुराने काम को दोबारा ज़िन्दा कर दिया। पीछे की तरफ़ गर्दिशे अय्याम को लौटा दिया। यह उम्मत फिर से इस काम को लेकर फिरने लगी है। एक अन्सारी सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी माँ से कहने लगे मुझे अल्लाह के लिए वक़्फ़ कर दो। वालिदा ने कहा जाओ मैं ने आप को अल्लाह के लिए वक़्फ़ कर दिया तो यह सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु घर से निकले तो उन्नीस साल के बाद वापस लौटे, रात को घर के दरवाज़े पर पहुँच कर दस्तक दी तो अन्दर

से वालिदा ने कहा कौन है?

उन्होंने कहा कि मैं आपका बेटा हूँ। वालिदा ने कहा मैं आपको अल्लाह के रास्ते में वक़्फ़ कर दिया था और दी हुई चीज़ को वापस लेना बड़ी बे ग़ैरती है, जाओ क़यामत के दिन मुलाक़ात होगी। दरवाज़ा नहीं खोला। ﴿اللقاء يوم اللقاء﴾ मुलाक़ात मुलाक़ात के दिन होगी। यह बेटे की क़ुर्बानी थी। उसको कहां मुक़ाम मिला। उस लड़के ने बाद में अबू जाफ़र मन्सूर के खिलाफ़ फ़त्वा दिया। अबू जाफ़र ने हुक्म नाफ़िज़ कर दिया कि मैं आ रहा हूँ सूली तैयार की जाए और उसको मेरे सामने सूली पर लटकाया जाए। यह फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० की गोद में सिर रख कर लेटे हुए थे। सुफ़ियान बिन ऐनिया रह० आकर कहने लगे कि सुफ़ियान बिन सौरी उठो और भाग जाओ अबू जाफ़र ने तुझको सूली पर लटकाने का हुक्म दिया है। उठ कर सीधे मुलतज़िम में आके फ़रियाद की कि या अल्लाह आपने अबू जाफ़र को मक्का में दाख़िल होने दिया तो दोस्ती टूट जाएगी। अबू जाफ़र मक्का पहुँचना तो दरकिनार ताएफ़ तक नहीं पहुँच सका। ताएफ़ के पीछे ही पहाड़ों में गिर कर मर गया। आज उस जाबिर की क़ब्र का भी पता नहीं है कहां पड़ा हुआ है।

हम अपनी राह सीधी करें:

हम को माँ बाप ने कमाना सिखाया है, जवान हुए तो हमने भी दांए बांए देखा तो हमने भी सोचा कि हमें भी कमाना है, घर बनाना है। यही हमारी सोच है, यही हमारा सरमाया है। स्कूल में गए तो वहां भी कमाई की तालीम दी गई कि बड़े हो कर बड़ा आदमी बनना है। बड़ा आदमी क्या है? जिसकी शोहरत हो,

माल व दौलत हो, चारों तरफ़ चर्चा हो, हमारी नस्ल मज़लूम है बेचारी जो अपनी माँ बाप के हाथों से ज़ुल्म सह रही है, अपने उस्तादों से ज़ुल्म सह रही है। कोई उनको बताने वाला नहीं कि तुम दुनिया में क्यों आए हो? कोई यह नहीं बता रहा कि तक़्वा इख़्तियार करो अल्लाह तआला पालेगा। सारे परेशान बैठे हुए हैं कि औलाद होगी तो रिज़्क कहां से आएगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि औलाद कसरत से पैदा करो ताकि मैं अपनी उम्मत की कसरत पर फ़ख़्र करूं कयामत के दिन। आज कल यह शोर हो रहा है कि आबादी बढ़ गई है, बढ़ती हुई आबादी पर कन्ट्रोल किया जाए।

स्कूल के हैड मास्टर को पता है मेरे स्कूल में बीस बच्चे पढ़ सकते हैं उसके बाद कोई गुन्जाईश नहीं, इसी तरह एक मिल वाले को पता है कि मेरी फैक्ट्री में कितने मज़दूर होना चाहिएं। इसी तरह अल्लाह को भी उनकी शान के मुताबिक़ इल्म है कि कितने बन्दे पैदा करने हैं। मन्सूबा बन्दी पर अल्लाह तआला आ जाएं तो शहरों के शहर ज़मीन के अन्दर धंसा दिए जाएं। उसने मौत हयात का निज़ाम चलाया हुआ है और रिज़्क़ अपने हाथ में लिया हुआ है। मुक़द्दर माँ बाप नहीं बनाते। बच्चा माँ के पेट से मुक़द्दर लेकर आता है।

अल्लाह तआला ने इज़राईल अलैहिस्सलाम से फ़रमाया आपने इतने आदमियों की जान ले ली है आपको किसी पर रहम भी आया? उन्होंने कहा दो दफ़ा आया था, किस वक़्त? एक औरत किश्ती पर सवार थी किश्ती दरिया के दर्मियान टूट गई औरत एक तख़्ते पर बैठ गई और उसी वक़्त उसको दर्दे ज़े आ गया

आपने कहा था कि माँ की जान निकाल लो। मैंने कहा इस बच्चे का क्या बनेगा?

दूसरा वक़्त जब शद्दाद तीन सौ साल में मसनवी जन्नत बनाई, जब उसमें दाख़िल होने के लिए एक क़दम अन्दर रखा तो आप ने कहा इसकी जान ले लो तो मैंने उसकी जन्नत के दरवाज़े पर उसको गिरा दिया। उस पर मुझे रहम आया। अल्लाह ने फ़रमाया आप जानते हैं यह शद्दाद कौन था? फ़रिश्ते ने कहा नहीं, फ़रमाया यह वही बदबख़्त है जिसकी माँ की जान आपने किश्ती के तख़्ते पर निकाली थी।

माँ बाप के ज़िम्मे औलाद की तरबियत है और रिज़्क़ अल्लाह के हवाले है। रब अल्लाह है काएनात नहीं, बहर व बर नहीं, हवाएं और ग़ल्ले नहीं, चाँद सितारे नहीं। रब सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह ही है। बच्चे का रिज़्क़ पहले लिखा जाता है। माँ की छातियों में दूध पहले आता है बच्चा बाद में आता है। क्या वह अल्लाह बड़े होने के बाद उसको रिज़्क़ नहीं दे सकता? रब अल्लाह तआला है हमने उसकी रबुबियत को नहीं समझा, उसकी ताक़त उसकी किबरियाई को नहीं समझा। ऐ मूसा तेरे रब के ख़ज़ाने कभी ख़त्म नहीं होंगे ﴿يا موسٰى من الفقر مادام خزائن الملآء وان خزائنهم لا تنفدا ابداً﴾

हमारी निस्बत मुहम्मदी है:

तो मेरे भाईयों! हम तो दुनिया में इस्लाम को लेकर फिरने वाले हैं। पैदा होते ही हमारे कान में बताया जाता है तू मुहम्मदी है, बाक़ी बाप होने की निस्बत, बेटे होने की निस्बत, माँ होने की निस्बत, बीवी और बेटी होने की निस्बत बाद की है। वज़ीर

होने की निस्बत, सदर होने की निस्बत, ताजिर और ज़मींदार होने निस्बत, डाक्टर होने की निस्बत ये सब चीज़ें बाद में हमारे साथ लगती हैं। पहली निस्बत हमारी मुहम्मदी होने की है। इस निस्बत के ज़ैल में हमें दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाना है। जिस तरह अल्लाह ने कहा नमाज़ के लिए घर से निकल जाओ, हज के लिए निकल जाओ, ज़कात के लिए अपनी कमाई से पैसे दो। उसी अल्लाह ने कहा है तुम्हारा नबी आख़िरी नबी है उसके बाद कोई नबी नहीं। उसके अहकामात फैलाओ और पहुँचाओ यह हुक्म हमें मिला। इस लिए हम इस काम को करने के पाबन्द है। पहली उम्मतों को नहीं मिला। उन पर दो वक़्त नमाज़ फ़र्ज़ थी, हमारे ऊपर पाँच वक़्त फ़र्ज़ कोई कहता है कि उन पर दो हमारे ऊपर पाँच वक़्त क्यों है?

उनको घर छोड़ने का हुक्म नहीं मिला और हमें मिला है।

جاهدوا في الله حق جهاده الخ، انفروا خفافا الخ

जब हुक्म मिल गया तो करना ही पड़ेगा। तबलीग़ी जमात ने सिर्फ़ याद दिहानी कराई न कोई ताक़त है कि घर से उठाकर बाहर फेंक दे, बीवी बच्चों से जुदा कर दे। यह अल्लाह के अम्र की क़ुव्वत है कि लोग खुद घरों से निकल कर अल्लाह के पैग़ाम को दुनिया में फैला रहे हैं। मुल्कों के मुल्कों की फ़िज़ाएं बदल गयीं, क़बाइल के क़बाइल दायरा-ए-इस्लाम में आ गए। लाखों इन्सान इस काम से मुशर्रफ़-ब-इस्लाम हुए, यूरोप की फ़िज़ाओं में आज़ानें गूंजने लगीं, मस्जिदें बनीं, मदरसे बनें। हैरत की बात यह है कि डेढ़ हज़ार बच्चे यूरोप के एक मरदसे में थे जबकि बीस बरस पहले कोई जनाज़ा पढ़ाने वाला भी नहीं मिलता था।

सारे पादरी मुसलमानों को दफ़न करते थे। जब लोगों ने घरों को छोड़ा तो उसका यह सिला मिला। ये पागल नहीं हैं कि बिस्तर उठाए फिर रहे हैं और साल में एक दफ़ा आपको तंग करने आ जाते हैं, नहीं नहीं, यह अल्लाह का अमूर है जो आपको कह रहा है कि मेरे रास्ते में निकलो। अल्लाह के फ़ज़्ल से हम ने क़ुरआन पढ़ा और हदीस पढ़ी। हमें कोई गूंजाईश नहीं मिलती कि क़ुरआन में यह आता है और हदीस में यह आता है कि क्या ज़रूरत है घर से निकलने की, इधर बैठे रहो, गली कूचों में धक्के खाने की क्या ज़रूरत है? अल्लाह ने बीवी बच्चे दिए, सब कुछ दिया अगर कहीं से गुंजाईश नज़र आती तो हम आने लिए निकालते। हमें गुंजाईश नज़र नहीं आती। जब तीस बरस से क़ुरआन हदीस पढ़ रहे हैं तो हम आपके लिए गुंजाईश कहां से निकालें, चलो जी घर बैठे रहो, ये ऐसे ही कहते रहते हैं, नहीं मेरे भाईयो! यह हमारी ख़ैर ख़्वाहाना दरख़्वास्त है इल्तिमास है कि अपने ऊपर रहम खाएं। यह निकलना आपकी ज़ाती ज़रूरत है जो इसमें रुकावट बनते हैं वह नादान हैं, उनको कुछ पता नहीं अगर उनको पता चल जाए तो रुकावट न बनते। एक वक़्त वह था मेरे वालिद ने कहा अगर तू निकल गया उन लोगों के साथ तो मैं तेरी टांगे तोड़ दूंगा। ये अल्फ़ाज़ आज तक मेरे कानों में गूंज रहे हैं। एक वक़्त ऐसा आया मेरे छोटे भाई ने कहा कि यह काम करता नहीं घूमता रहता है तो मेरे वालिद ने कहा कि अभी मैं ज़िन्दा हूँ तुझे बोलने का कोई हक़ नहीं। यह रूपए ख़र्च करता है यह अगर मेरी बोटियां भी मांगले तो मैं अपनी बोटियां भी निकाल कर दे दूं। पहले उन्हें पता नहीं था जब बात और

काम उनकी समझ में आ गया तो कहने लगे मैं बोटियां देने को तैयार हूँ।

यह हमारे वालिदैन और बीवी बच्चों को पता नहीं कि इस निकलने में क्या ख़ज़ाने दुनिया आसमान में छुपे हुए हैं, अगर पता चल जाए तो घरों में बैठना मुश्किल हो जाए। लोगों तैयार हो जाओ। फिरते हो, पकाते हो और इस रास्ते में मरने की दुआएं मांगते फिरो। हमारा माहौल कोई माहौल है, सुनने का कोई मौक़ा ही नहीं मिलता।

अपनी औलाद की फ़िकर न करने के नुक़सानातः

मेरे दोस्तों और बुर्ज़ुगों! अल्लाह ने इस उम्मत को चुना है दुनिया में अपना पैग़ाम और आवाज़ लगाने के लिए अगर हम अल्लाह की आवाज़ नहीं लगाएंगे तो शैतान की लगाना और सुनना पड़ेगी। घरों में बैठ कर उसकी आवाज़ और नाच देखना पड़ेगा। उनके फ़हाशी के निज़ाम में अपनी औलाद को ज़हर निगलते हुए देख कर भी आप चूं न कर सके अगर अल्लाह की तरफ़ न बुलाया तो यह सब कुछ होगा। आपकी औलादें वह न करेंगी जो आप चाहते हैं बल्कि वह करेंगी जो यहूदी और इसाई चाहते हैं। हमारी बेटियां फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पीछे नहीं चलेंगीं, हमारी बेटियां फ़ाहिशा औरतों और अदा कारों के पीछे चलेंगीं। हमारे नौजवान अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को सामने नहीं रखेंगे, वे फ़ासिको, बदमाशों और फाजिरों को सामने रखेंगे। यह हक़ीक़त कोई झुठला नहीं सकता। जिस के लिए रात की नींदें ख़राब कीं, जिसके पेशाब पाख़ाना धोते रहे लेकिन जब जवान हुए तो वालिदैन की आँखें निकालता है। इन नाफ़रमान

औलादों के लिए हम अल्लाह की नाफ़रमानी करें क्यों? यह सौदा नहीं होगा। हम अपनी औलाद की ख़ैर ख़्वाही चाहते हैं तो ये भी जन्नत में जाने वाले बनें और पूरी दुनिया के इन्सान ताएब होकर अल्लाह से जुड़ जाएं तो तबलीग़ तो कोई तबलीग़ जमात का काम नहीं यह अल्लाह का अमूर है अमूर, हुक्म है हुक्म। यह हमारी महरूमी है कि ज़माने हुआ हम इस बात भूल गए।

पिंजरे में रहते रहते ऐसी ताक़त ख़त्म हुई कि उड़ने की ताक़त न रही। तो उड़े भी तो पता नहीं कि यह किस चमन का पंछी है तो यह जमाती काम नहीं है, यह इस्लाम है इस्लाम, यह दीन है दीन, और सबसे बड़ा हुक्म है दीन का, तुम खड़े हो जाओ ﴿فانذر وربك فكبر﴾ तो भाईयो! इसके लिए निकलो। चार महीने, चालीस दिन ये सीखने का ज़माना है काम सारी ज़िन्दगी का है। डाक्टर बना बीस साल में, सौ साल ज़िन्दगी रही तो डाक्टरी ही करूंगा। चार महीने सिर्फ़ सीखने के लिए हैं बाक़ी सारी ज़िन्दगी तेरा बन कर चलूंगा, लोगों को मानने वाला बनाऊंगा, नियते तो कर ले भाई। इसके लिए अपने नाम लिखवा लें।

□□□□□

अल्लाह के अपने बन्दों पर इनामात

हर चीज़ उसकी तस्बीह बयान करती है:

यह सारी काएनात अल्लाह के हुक्म से वजूद में आई है और इस में सारी चीज़ें इन्सान को नफ़ा पहुँचाती हैं अल्लाह के हुक्म से और नुक़सान पहुँचाती हैं अल्लाह के हुक्म से। अल्लाह के हुक्म से इनमें नुक़सान की शक्लें आती हैं। अल्लाह के हुक्म से बाक़ी हैं अल्लाह के हुक्म से फ़ना होगा, अल्लाह के अम्र से दोबारा उठना होगा। काएनात में कोई चीज़ खुद वजूद में नहीं आई है हर चीज़ का बनाने वाला अल्लाह तआला है। वह ज़बरदस्त बनाने वाला है ﴿وهو الخلاق العليم﴾ और जानने वाला भी है सारी काएनात अपने इरादे से बनाई है और अपनी क़ुदरत से उस पर कब्ज़ा किया हुआ है ﴿كل شي قد علم صلوته وتسبيحه﴾ हर चीज़ उसकी तस्बीह पढ़ती है, उसकी नमाज़ पढ़ती है ﴿وان من شي الا يسبح بحمده﴾ काएनात में छोटी से छोटी चीज़, बड़ी से बड़ी चीज़, जानवर हो या बेजान हो, मुतहर्रिक हो या साकित हो हर चीज़ उसकी तस्बीह पढ़ती है। हर चीज़ उसकी क़ुदरत से उसके इरादे से बाहर नहीं है वह जो चाहे कर देता है ﴿وما تشاؤن الا ان يشاء الله رب العالمين الخ﴾ अल्लाह जो चाहता है हमारे चाहे बग़ैर

कर देता है, हमारी चाहत उसकी चाहत के बग़ैर नहीं हो सकती।

उसकी चाहत का नाम वजूद है:

﴿وربك يخلق ما يشآء﴾ अल्लाह जो चाहे कर दे ﴿والله يفعل ما يشآء﴾ अल्लाह जो चाहे पसन्द करे ﴿يهدى من يشآء﴾ जिसको चाहे हिदायत दे ﴿ويضل من يشآء﴾ जिसको चाहे गुमराह कर दे ﴿تؤتى الملك من تشآء﴾ जिसे चाहे बादशाही दे दें ﴿وتنزع الملك ممن تشآء﴾ जिससे चाहे बादशाही ले लें ﴿وتعز من تشآء﴾ जिसे चाहे इज़्ज़त दे दें ﴿وتذل من تشآء﴾ जिसे चाहें ज़लील कर दें ﴿يبسط الرزق لمن يشآء﴾ जिसका चाहें रिज़्क़ बढ़ा दें ﴿وينقض من يشآء﴾ जिसका रिज़्क़ चाहें घटा दें ﴿اضحك﴾ किसी को हंसा दें ﴿وابكى﴾ किसी को रुला दें ﴿هو امات واحيى﴾ किसी को ज़िन्दा कर दें किसी को मार दें ﴿اغنى واقنى﴾ किसी को ग़नी करें किसी को ग़रीब कर दें। ज़मीन में जो कुछ होता है आसमान वाले के इरादे से होता है। पहले आसमान में फ़ैसला होता है फिर ज़मीन में नाफ़िज़ होता है। सारी दुनिया के इन्सान अल्लाह की चाहत के बग़ैर कुछ नहीं कर सकते हैं वह सबकी चाहत के बग़ैर कर सकता है। सारी काएनात की ताक़त अल्लाह की ताक़त के सामने ज़र्रा बराबर भी नहीं है। जिबराईल हो या मीकाईल हो, इज़राईल हो ये सब मख़लूक़ हैं वह ख़ालिक़ है ﴿لا يملكون لا نفسهم ضرا ولا نفع ولا يملكون موتا ولا حيوة ولا نشورا﴾ न ये नुक़सान देते हैं न नफ़ा दे सकते हैं, न ज़िन्दगी दे सकते हैं न मार सकते हैं, और न मर कर उठ सकते हैं, सारा जहां अपने वजूद में अल्लाह का मोहताज है,

नफ़ा और नुक़सान पहुँचाने में अल्लाह के हुक्म का मोहताज है। हम किसी के मोहताज नहीं सिवाए अल्लाह की ज़ात के। यह बात दिल में उतारनी है। इन्सान के दिल को अल्लाह की तरफ़ फेरना है। अल्लाह ज़मीन के ख़ज़ाने उनके लिए निकालता है, हवाऐं उनके ताबे कर देता है, बारिशों का निज़ाम उनके लिए चलाता है ﴿ويرسل السماء عليكم مدرارا، ويمددكم باموال وبنين﴾ माल और औलाद में बरकत डालता है ﴿ويجعل لكم جنت﴾ बाग़ात बड़े बड़े ﴿ويجعل لكم انهارا﴾ नहरों का जाल बिछा देता है ﴿اكلوامن فوقهم﴾ ऊपर से खाते हैं ﴿ومن تحت ارجلهم﴾ नीचे से भी खाते हैं। जब अल्लाह की मान लेते हैं तो अल्लाह आसमान व ज़मीन से रिज़्क़ खोल देते हैं। ज़मीन की धानों से रिज़्क़ का इन्तेज़ाम कर देते हैं। सारी काएनात उनकी ख़िमदत में मुक़र्रर फ़रमा देता है। जब अल्लाह के बन्दे अल्लाह की मान लेते हैं

अल्लाह की नाराज़गी के असरात सात पुश्तों तक चलते हैं:

﴿انى اعطيت اذا رضيت﴾ जब तुम ईमान में होते हो तो मैं राज़ी होता हूँ, जब राज़ी होता हूँ तो रिज़्क़ में बरकत देता हूँ ﴿ليس لى بركتى نهاية﴾ मेरी बरकत की कोई हद नहीं, अल्लह बरकत दें तो कौन रोके और अल्लाह बरकत उठा लें तो कौन लाए। ﴿واذا عصيتنى غضبت﴾ जब तुम मेरी नाफ़रमानी करते हो तो मैं नाराज़ हो जाता हूँ ﴿واذا غضبت لعنت﴾ जब मैं नाराज़ होता हूँ तो लानत बरसाता हूँ ﴿وان لعنتى عنى تبلغ سابعا من الابن﴾ तो फिर मेरी लानत सात पुश्तों तक चलती है।

हर चीज़ उसके हुक्म के ताबे हैः

मेरे दोस्तों और भाईयो! हमारे मसाइल पैसे से....ज़मीनों पर क़ब्ज़ा से....हुकूमत पर क़ब्ज़ा करने से....माल व दौलत से हल नहीं होंगे बल्कि अल्लाह को राज़ी करने से हमारे मसाइल हल होंगे ﴿وان من شي الا عندنا خزائنه﴾ सारे ख़ज़ाने अल्लाह के हाथ में हैं ﴿وعنده مفاتح الغيب لا يعلمها الاهو﴾ सारे ग़ैब के ख़ज़ानों की चाबियां अल्लाह के हाथ में हैं ﴿وما تنزل الا بقدر معلوم﴾ उतारने वाला भी अल्लाह है, आसमानों के ज़मीन के ख़ज़ानों को बनाने वाला अल्लाह ﴿وانزلنا الحديد فيه باس شديد﴾ लोहे को उतारा उसमें सख़्ती रखी, पानी को उतारा ﴿وانا على ذهاب به لقادرون﴾ पानी उठा कर वापस ले जाए, सारा पानी ख़तम, सारी ज़मीन के पानी को ख़तम कर दे और कड़वा कर दे तो हम कुछ भी नहीं कर सकते ﴿لو نشآء جعلنه اجاجاء ان اصبح مآؤكم غورا﴾ बिल्कुल ख़तम हम बे बस हैं।

हवाओं के तूफ़ान चला दें, रीह बना दें रियाह बना दें हम कुछ भी नहीं कर सकते, सरह बना दें, अक़ीम बना दें, सबा बना दें, नसीम बना दें हम कुछ भी नहीं कर सकते। अक़ीम और सिर सिरायाह अल्लाह के अज़ाब की हवाएं हैं और उसको पेश कर दें, हम रोक नहीं सकते।

सिफ़ाते बारी तआला का तज़्किराः

मेरे दोस्तों और भाईयो! हम सारे मसाइल में अल्लाह को साथ लें वह सख़ी है, देते वक़्त घबराता नहीं। दुनिया वाले देते हैं घबराते हैं, दुनिया वाले देते हैं एहसान जतलाते हैं, पीछे लगते

हैं। अल्लाह के ख़ज़ानों की, उसकी बख़्शिश की, उसकी अता की, उसकी मुहब्बत की, उसकी बरकत की, उसकी क़ुदरत की कोई हद नहीं, बेशुमार ख़ज़ाने हैं। न उनकी अव्वल है न उनकी आख़िर है। अल्लाह अपनी ज़ात में अकेला है। ऐसा अकेला उसके ऊपर कोई नहीं, जिसके बराबर कोई नहीं ﴿هو الاول والآخر والظاهر والباطن، وهو بكل شئ عليم﴾ अल्लाह ने अपनी किताब में कहा है मैं अव्वल, मैं आख़िर, मैं ज़ाहिर, मैं बातिन, मैं हर चीज़ को जानता हूँ। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

اللهم انت الاول وليس قبلك شئ وانت الاخر وليس بعدك شئ
وانت الظاهر وليس فوقك شئ وانت الباطن وليس دونك شئ

ऐ अल्लाह तू अव्वल है तुझ से पहले कुछ नहीं, तू आख़िर है तेरे बाद कोई नहीं, तू ज़ाहिर है तेरे ऊपर कुछ नहीं, तू बातिन है सबके अन्दर उतरा हुआ है। ﴿الغيب عنده الشهادة﴾ ग़ैब तेरे सामने और ज़ाहिर भी तेरे सामने और ज़ाहिर भी उसके सामने ज़ाहिर है और छुपा हुआ भी उसके सामने ज़ाहिर है।

سوآء منكم من اسر[القول ومن جهر به ومن هو مستخف بالليل
وسارب بالنهار له معقبات من بين يديه ومن خلفه يحفظونه عن امر الله

तुम में से कोई आहिस्ता बोले या ज़ोर से बोले, रात की तारीकी में चले या दिन के उजाले में चले, तुम्हारे पीछे आगे सब अल्लाह को इल्म है। तुम अल्लाह से अपने राज़ को छुपा नहीं सकते, अपने जज़्बात को छुपा नहीं सकते, जहां जाएगा अल्लाह होगा ﴿اين ما تكونوا﴾ तुम एक इमारत बना रहे हो, दरवाज़ा लगा रहे हो, अय्याशी का बदमाशी का या इताअत का फ़रमाबरदारी

का वह जो भी हो अन्दर से कुण्डी बन्द कर दो अल्लाह से छुपा नहीं सकते ﴿ما يكون من نجوى ثلاثة الا هو رابعهم﴾ तुम अन्दर से बन्द कर दो और यह ख़्याल करते रहो कि हमें कोई देख नहीं रहा है मगर अल्लाह कहता है तुम से कोई तीन होते हो तो चौथा मैं होता हूँ ﴿ولا خمسة الا هو سادسهم﴾ तुम पाँच बैठे होते हो तो छठा मैं होता हूँ तुम्हारे साथ ﴿ولا ادنى من ذلك﴾ तुम कम हो या ज़्यादा हो जाओ ﴿الا هو معهم﴾ तुम्हारा रब तुम्हारे साथ है ﴿اينما كانو﴾ जहां भी चले जाओ तुम ज़ाहिर हो या बातिन हो तुम आगे हो या पीछे हो अल्लाह से छुप नहीं सकते, अल्लाह से भाग नहीं सकते, अल्लाह से लड़ नहीं सकते ﴿اين النور﴾ भाग कहाँ भागेगा ﴿لا تخفى منكم خافية﴾ छुप कहाँ छुपेगा ﴿فتنذر﴾ निकल के दिखाओ निकल नहीं सकते।

दुनिया की कुल क़ीमत:

मेरे दोस्तों और भाईयो! जब अल्लाह सब अहवाल को जानताहै और उसने ज़िन्दगी को वजूद दिया है और उसके क़ब्ज़े में है ज़मीनों और आसमानों के ख़ज़ाने, हवाओं के निज़ाम, ज़मीन और आसमान के ख़ज़ाने, सूरज और चाँद को ताबे किया, हर चीज़ को हमारे ताबे किया तो मेरे दोस्तों भाईयो हम आपस में लड़ने के बजाए अल्लाह से क्यों न लड़ें और यह कितना आसान है कि हम अल्लाह के बन जाएं। अल्लाह हमारे मसाइल को हल कर देगा। लोगों से मांगना, लोगों से छीनना, दुनिया से लड़ना कभी मुसलमान भी दुनिया से लड़ता है? दुनिया भी ऐसी चीज़ है? अल्लाह ने इसकी क़ीमत बताई, बनाने वाले ने इसकी क़ीमत बताई।

﴿جناح بعوضة﴾ मच्छर का पर, मकड़ी का जाला, ﴿بيت العنكبوت﴾ तोते का घर, ﴿كسراب بقيعة يحسب الظمان ماء﴾ बनाने वाले से पूछो जिसके सामने दुनिया का नक़्शा है, यह जहां यह दुनिया इसकी क़ीमत तोते के घर है, यह मच्छर का पर है, यह मकड़ी का जाला है, यह मच्छर के पर के बराबर भी नहीं। यह जो नज़र आ रहा है यह भी थोड़ा है और धोका है ﴿متاع الغرور﴾ अल्लाह इसकी यह तारीफ़ कर रहे हैं, यह सब कुछ नज़र आ रहा है यह कुछ भी नहीं और इन्सान कहता है कि यह हक़ीक़त है ये लम्बी इमारतें, ये बिल्डिगें, ये गाड़ियां, ये साज़ो सामान। अल्लाह तआला दूसरी ताबीर फ़रमाता है कि तुम इसे हक़ीक़त कहते हो तो सुन लो ﴿متاع قليل﴾ बहुत छोटी सी हक़ीक़त है, बहुत थोड़ा सा सामान है। अल्लाह ने अपने नबी से फ़रमाया ﴿لا يغرنك تقلب الذين كفروا في البلاد متاع قليل، ثم ماوهم جهنم وبئس المهاد﴾ ऐ मेरे हबीब यह काफ़िरों की चमक दमक आपको धोके में न डाल दे। कभी नबी को धोका लग सकता है?

नाफ़रमान बदबख़्त धोके में हैः

यह उनको नहीं हम को कह रहे हैं। वे सब अव्वलीन व आख़िरीन सरदार हैं, अव्वलीन व आख़िरीन का इल्म उसके सामने खुल गया जो मुसल्ले पर बैठ कर जन्नत और दोज़ख़ को देख रहा है, अर्श को देख रहा हो, तहतुस्सरा में जहन्नुम को देख रहा हो, फ़रिश्तों के चलने ओर क़लम से चलने की आवाज़ सुन रहा हो, उसको भी कभी दुनिया का धोका लग सकता है? काफ़िरों की दुनिया से, फ़िरऔन की दुनिया से, ईरान व रोम की दुनिया से धोका लग सकता है? यह मुझे और आपको कह रहे

हैं कि मेरे बन्दों, मेरे नबी की उम्मत काफ़िरों की दुनिया से धोका न खाना, किसी मालदार की दमक से धोका न खाना, ﴿متاع قليل﴾ यह बहुत थोड़ा सा सामान है तो फिर क्या होगा अगर तुम मेरे नाफ़रमान बने? ﴿ثم ماوهم جهنم﴾ जहन्नुम उसका ठिकाना है यह कैसा ठिकाना है ﴿وبئس المهاد﴾ बहुत बुरा ठिकाना है ﴿اذا رائيت الله عزوجل على معاصيهم من الدنيا فانما هو﴾ (استخرج يا استقرار) अगर किसी शख़्स पर दुनिया के ख़ज़ाने खुलते जा रहे हैं और वह अल्लाह का नाफ़रमान भी है तो यह याद करो कि अल्लाह की रहमत के साए में नहीं बल्कि उसकी ख़ामोशी का उस पर हाथ होता है। अल्लाह उसको ग़फ़लत की मौत मारना चाहता है, उसको तौबा की तौफ़ीक़ नहीं होगी यह इस ग़फ़लत में मर जाएगा। सातों बर्रे आज़मों की बादशाही मिल गई। आप तो कराची में लड़ रहे हैं क्यों लड़ रहे हैं सातों बर्रे आज़मों की हुकूमत ले लो और उस पर क़ाबिज़ हो जाओ अगर अल्लाह हो जाए आप से नाराज़ तो सिवाए जहन्नुम की नाकामी के और कुछ नहीं होगा और क़यामत के दिन क्या होगा ﴿خاشعة ابصارهم﴾ नज़रें झुकी हुई होंगी ﴿ترهقهم ذلة﴾ ज़िल्लत छाई हुई होगी ﴿وجوه يومئذ خاشعة﴾ चेहरे वीरान हो चुके होंगे ﴿عاملة ناصبة تصلى نارا حامية تسقى من عين انيه ليس لهم طعام الامن ضريع لايسمن ولا يغنى من جوع﴾ सात बर्रे आज़म मिल जाएं पाकिस्तान की हुकूमत की क्या हक़ीक़त है। सारे जहां के हुकमुरान बन जाओ फिर भी सब कुछ अल्लाह का होगा।

क़यामत में नफ़सी नफ़सी का आलम होगाः

तो मेरे दोस्तों और भाईयो! वह ज़िल्लत की मार पड़ेगी वह

नाकामियां होंगी कहेगा ﴿يود المجرم لو يفتدى من عذاب يومئذ ببنيه﴾ अल्लाह मेरे बच्चों को दोज़ख़ में डाल दें मुझे बचा लें, ﴿وصاحبته﴾ अल्लाह मेरे भाई को दोज़ख़ में डाल दें मुझे बचा लें, मेरी ﴿واخيه﴾ बीवी को दोज़ख़ में डाल दें मुझे बचा लें, मेरी बहू को दोज़ख़ में डाल दें मुझे बचा लें ﴿وفصيلته التى تؤيه﴾ अल्लाह मेरी क़ौम को दोज़ख़ में डाल दें मैंने क़ौम की ख़ातिर सब कुछ किया ﴿ومن فى الارض جميعا﴾ मेरी क़ौम ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया को दोज़ख़ में डाल दें और मुझे बचा लें, नहीं नहीं ﴿كلا لا تزر وازرة وزر اخرى﴾ आज कोई किसी का बोझ नहीं उठा सकता ﴿وكل انسان الزمنه طائره فى عنقه﴾ आज मेरी मजबूरी है आप का अमल आपकी गर्दन में औरत का अमल औरत की गर्दन में आज कोई इन्कार नहीं कोई ग़ाएब नहीं हो सकता और कोई छुप नहीं सकता, कोई लड़ नहीं सकता, अल्लाह का अर्श सिर के ऊपर है ﴿ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانيه﴾ आज फ़रिश्तों ने आपके रब के अर्श को संभाला हुआ है और चारों तरफ़ से पकड़े हुए हैं ﴿وجآء ربك والملك صفا صفا﴾ फ़रिश्ते भी आ चुके हैं।

जहन्नुम को ख़ीचने वाले फ़रिश्तों का तज़्किराः

﴿وازلفت الجنة للمتقين غير بعيد﴾ और जन्नत भी आ चुकी है ﴿وبرزت جحيم للغاوين﴾ और जहन्नुम भी आ चुकी है, जहन्नुम कैसी आ रही है वह ग़ुस्से से फट रही है, चीख़ रही है और कहती है ﴿هل من مزيد﴾ और ले आओ और ले आओ। मैदाने हश्र में उसको लाया जा रहा है, सत्तर हज़ार लगामें हैं, हर लगाम पर सत्तर हज़ार फरिश्ते हैं चार अरब नब्बे करोड़ फ़रिश्ते उसको ख़ींच रहे होंगे।

अगर मैदाने हश्र में अल्लाह की तजल्ली उस पर न हो तो न इन्सान छोड़े, न जिन्नात छोड़े, न नबी छोड़े, न वली छोड़े, न फ़रिश्तों को छोड़े, न मोमिन छोड़े, न काफ़िर छोड़े। सब कुछ निगल जाए। जहन्नुम भी आ गई ﴿ونضع الموازين القسط﴾ तराज़ू भी आ गया, अल्लाह तआला भी आ गए, सारा मैदाने हश्र भी आ गया।

يوم تشقق السمآء بالغمام، ونزل الملئكة تنزيلا الملك يومئذن الحق للرحمٰن وكان يوما على الكافرين عسيرا

आज यह दिन आ गया ﴿يرونه بعيدا ونراه قريبا﴾ तुम कहते थे बड़ा दूर है जो होगा देखा जाएगा आज देखो ﴿فكشفنا عنك غطاءك فبصرك اليوم حديدا﴾ अब देख दुनिया में क्या नज़र आता था आज क्या नज़र आता है, तेरी आँखों का पर्दा उठ गया है।

क़यामत के चन्द हौलनाक मनाज़िरः

अब तो पुकारेगा ﴿ربنا ارنا الذين اضلنا من الجن والانس نجعلهما تحت اقدامنا ليكونا من الأسفلين﴾ ऐ मेरे मौला जिन लोगों ने मुझे गुमराह किया चाहे वे इन्सान थे या जिन्न थे या मेरी क़ौम थी या मेरा क़बीला था या मेरी बीवी थी या मेरा सरदार था या मेरी हुकूमत थी या मेरा साथी था मेरा भाई था या मेरी बहन थी या मेरा बच्चा था उनको मेरे हाथ में दे दीजिए मुझे दिखला दीजिए, आज मैं उनको अपने पाँव तले कुचल दूं रौंद दूं और उनको तबाह कर दूं और उनको हलाक कर दूं मैंने उनको अपने सामने रखा तुझे सामने नहीं रखा, पछताएगा ﴿يوم يعض ظالم على يديه﴾ ज़ालिम अपना हाथ चबाएगा कोहनी तक चबा जाएगा ﴿ياليتنى اتخذت مع الرسول سبيلا﴾ हाय मैं अल्लाह और रसूल का साथ देता,

﴿ياويلتى ليتنى لم اتخذ فلانا خليلا﴾ हाय मैं फ़लॉ की न मानता उसकी न मानता अल्लाह के रसूल की मानता लेकिन आज वक़्त चला गया वह दिन चला गया ﴿فاصدق واكن من الصالحين﴾ आज मैं भी कामयाब होता लेकिन वह दिन चला गया ﴿اقترب الوعد الحق﴾ वह हक़ वायदा आ गया ﴿ان وعد الله حق﴾ अल्लाह का वायदा हक़ है अल्लाह का नबी कहता है ﴿انا الساعة حق والجنة حق والنار حق﴾ क़यामत हक़ है, जन्नत हक़ है, दोज़ख़ हक़ है, तेरी मुलाक़ात हक़ है, हिसाब किताब हक़ है ﴿فريق فى الجنة وفريق فى السعير﴾ एक फ़रीक़ जहन्नुम में फेंका जाएगा एक फ़रीक़ के सिर पर जन्नत का ताज रखा जाएगा, महशर में चेहरे देखेंगे ﴿خاشعة عاملة ناصبه﴾ फटे वीरान परेशान ﴿غبرة ترهقها قتره﴾ चेहरे पर मिट्टी लगी होगी, चेहरे पर तारकोल मला हुआ आप उनका लिबास देखेंगे ﴿سرابيلهم من قطران﴾ उनकी शलवारें तारकोल की होंगी उनके कुर्ते देखेंगे ﴿لهم ثياب من نار﴾ उनके कुर्ते आग के कपड़े के होंगे उनकी टोपियां ﴿وتغشى وجوههم النار﴾ उनके सिर के चेहरों पर आग की टोपियां पहना दी जाएंगी। उनका पानी होगा जहीम, ख़ौलता हुआ पानी होगा, धुंआ का बादल, ﴿ظل من يحموم﴾ गर्म हम्माम, उनका खाना ﴿لا يغنى عن جوع﴾ न भूक मिटाए न बदन को सेहत मन्द बनाए न गले में न अन्दर जाए, न नीचे जा सके न बाहर आ सके तो कहेंगे या अल्लाह पानी पिला, पानी पिला, हां पानी पिलाते हैं ﴿من ماء الوجوه﴾ वह पानी खौलता हुआ सियाही मिला हुआ होगा जब उसका प्याला मुँह के करीब किया जाएगा तो उसकी भांप से पूरा चेहरा जल जाएगा और ऊपर वाला होंट फैलते फैलते सिर के ऊपर चला जाएगा। पानी का पहला घूंट मुँह में जाते ही काट देगा। आँखें अन्दर घुस

के पख़ाने के रास्ते बाहर आ जाएंगी। एक फ़रिश्ता उसकी आँख़े उठा कर उसके चेहरे में रख देगा।

जहन्नुम की आग का तज़्किराः

﴿يلعن بعضكم بعضا ويلعن بعضهم بعضاء﴾ एक दूसरे पर लान तान को जा रही होगी। एक दूसरे को गाली गलौच किया जा रहा है उनका बिस्तर देखें ﴿ان جهنم كانت مرصادا﴾ अंगारों के बिस्तर बिछ गए, अंगारों की मसहरियां बिछ गयीं ﴿ومن فوقهم غواش﴾ ऊपर आग की चादरें बिछा देंगे उनके कमरे देखें ﴿نارا احاط بهم سرادقها﴾ दोज़ख़ की आग मोटा करके चादर बना दी जाएगी आग का कमरा आग की दीवारें आग का बिस्तर, आग की चादरें, खौलता हुआ पानी कांटे दार खाना ﴿غساق ضريع﴾ न खाने को दिल चाहे न पीने को दिल चाहे।

उनकी पुकार है, उनकी फ़रियाद है या मालिक या मालिक, मालिक कौन है? दोज़ख़ का फ़रिश्ता है ﴿ليقض علينا ربك﴾ अपने रब से कहो हमें मौत दें। जवाब आएगा ﴿انكم ماكثون﴾ मौत नहीं आ सकती ﴿ولقد جئناكم بالحق ولكن اكثركم للحق كارهون﴾ तुम्हारे सामने दीने हक़ आया बातिल आया तुमने उसको वाज़ेह होते देखा फिर तुमने आँखों पर पट्टी बांधी और अपनी ख़्वाहिशात के ग़ुलाम बने लिहाज़ा मौत नहीं आएगी फिर क्या करें इधर फ़रिश्ते मारेंगे तो उसे कहेंगे ﴿ادعوا ربكم يخفف عنا يوما من العذاب﴾ अगर मौत आती तो थोड़ा अज़ाब कम कर दें तो वे जवाब देंगे ﴿الم يات رسلكم بالبينات﴾ तुम्हें बताने वाले ने बताया था? तो वे जवाब देंगे ﴿قالو بلى﴾ आया था फिर तुम ने क्या किया? ﴿ما نزل الله من شيء ان انتم الا في ضلل كبير﴾ कुछ नहीं झूठ है जो होगा देखा

जाएगा। तो फिर देखो जो हो रहा है ﴿ذوقو مس سقر﴾ अब चखो जहन्नुम को जिसका तुम्हारे साथ वायदा किया गया था।

क़ुदरत की अजाएबात के चन्द हसीन मनाज़िरः

मेरे दोस्तों और भाईयो! अपने आपको अज़ाब से बचाइए। वह करीम ज़ात है, हलीम ज़ात, क़दीर ज़ात, वह जाबिर ज़ात, वह क़ाहिर ज़ात, वह नसीर ज़ात, वह हकीम ज़ात, वह क़ादिर ज़ात, वह मुक़तदिर ज़ात, वह अलीम ज़ात, वह ख़बीर ज़ात, वह मुतकब्बिर ज़ात, वह नईम ज़ात, वह क़ुद्दूस अल्लाह, वह ख़ालिक़ अल्लाह, वह जब्बार अल्लाह, वह फ़ातिर समावात वल अर्द अल्लाह, मालिकुल मुल्क अल्लाह, मालिक कूनो मकान अल्लाह, ज़मीन व आसमान का बादशाह अल्लाह। वह अदालत लगा कर बैठा है इन्तेज़ार में ﴿ان ربك لبالمرصاد﴾ आओ तो सही मेरा अदल तो देखो, मेरा रहम तो देखो, मेरी पकड़ तो देखो, मेरी अता भी देखो, मेरी जन्नत भी देखो, मेरी दोज़ख़ भी देखो, मेरा अज़ाब भी देखो, खौलता पानी देखो, खौलते चश्में भी देखो, दोज़ख़ के फ़रिश्ते भी देखो, हूरें भी देखो, दोज़ख़ी की पुकार भी सुनो, जन्नत की हूर का नग़मा भी सुनो, जहन्नुम की हाए हाए भी सुनो, जन्नत का सुरूर भी सुनो, जहन्नुम के ख़ौफ़नाक मनाज़िर भी देखो, जन्नत के दिल फ़रेब मनाज़िर भी देखो।

अल्लाह को भूलने वालों को अल्लाह भी भूल जाएगाः

आज तुम्हें नज़र आएगा ﴿وسيق الذين كفروا الى جهنم زمرا﴾ सिर झुके हुए ज़ुबान निकली हुई ﴿ويوم نسوق المجرمين الى جهنم وردا﴾ नाफ़ तक ज़ुबान लटकी हुई होगी, उस पर कांटे चुभ रहे होंगे

और बिछ्छू फिर रहे होंगे, आओ भाई यह कौन सी जमात है? यह नाकाम इन्सानों की जमात है। ये दुनिया में कहते थे कि जो होगा देखा जाएगा, ये वही हैं जिन्होंने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया, अल्लाह को भुला दिया ﴿اتتك ايتنا فنسيتها وكذالك اليوم تنسى﴾ ये वे लोग हैं जिन्होंने अल्लाह के निज़ाम का इन्कार किया, अल्लह की क़ुदरत का मज़ाक़ उड़ाया, अल्लाह के क़ानून को तोड़ा, ख़्वाहिशात के और बीवी बच्चों के ग़ुलाम बन कर, हुकूमत के ग़ुलाम बन कर, पैसे और रूपए के ग़ुलाम बन कर, क़ौम के ग़ुलाम बन कर चले, आज उनकी ग़फ़लत को देखो, उनकी नाकामी को देखो, हाए हाए करना देखो। ज़ब फ़रिश्ते घसीटेंगे वे कहेंगे हम पर रहम करो, हम पर रहम करो, फ़रिश्ते कहेंगे ﴿لم يرحمكم ارحم الراحمين فكيف نرحمكم﴾ जब सबसे बड़े रहीम ने रहम न किया तो हम कैसे रहम कर सकते हैं? यह मज़ाक है? मेरे भाईयो नहीं नहीं!!!

जहन्नमियों की प्यास की शिद्दतः

उसी ने यह निज़ाम चलाया है उसी ने आपको बनाया है, वही इसको तोड़ने वाला है फिर वही इसको उठाने वाला है﴿منها خلقناكم﴾ मैंने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया ﴿وفيها نعيدكم﴾ मैं ही तुम्हें ज़मीन में वापस लौटा दूंगा ﴿ومنها نخرجكم تارة اخرى﴾ मैं ही इसी में से निकालूंगा। संभाल के चल, संभाल के देख, संभाल आ, संभाल जा। उस दिन को देख जिस दिन ﴿فشاربون شرب الهيم﴾ ला इलाहा इलल्लाह जिस दिन प्यास होगी होंट तक कौन सा होंट जिस पर वह झाड़ी लगी हुई होगी जो नमकीन झाड़ी, नमकीन झाड़ी से प्यास और भी ज़्यादा बढ़ जाती है और ख़ून का प्यास

सबसे ज़्यादा है। बारह लीटर पानी सिर्फ़ एक वक़्त में पिया जाता है और अल्लाह कहता है ﴿فشاربون عليه من الحميم﴾ खौलता हुआ पानी और कैसा खौलता हुआ? अगर उसका एक लोतड़ा मग़रिब में रख दिया जाए तो मशरिक़ तक सारा इलाक़ा फैल जाएगा उसकी भाप से और सारी काएनात पिघल जाएगी और उसको किस तरह पी रहा है ﴿فشاربون شرب الهيم﴾ जैसा प्यासा ख़ून पीता है (या घूंट) और यह आलम है ﴿اذ الاغلال فى اعناقهم﴾ गर्दनों में तौक़ है सलासिल और अग़लाल सईर में जा रहे हैं सिर झुकाए हुए और एक जमात क्या देखेगी?

जन्नती की अलामत:

﴿وجوه يومئذ ناعمة﴾ जिनके चेहरे तरो ताज़ा ﴿لسعيها راضيه﴾ अपनी मेहनत पर राज़ी ﴿فى جنة عاليه﴾ ऊँची ऊँची जन्नत में ﴿لا تسمع فيها لاغيه﴾ जिसमें कोई फ़िज़ूल चीज़ नहीं ﴿فيها عين جاريه﴾ जिसमें चश्में बहते होंगे ﴿فيها سرر مرفوعه﴾ जिसमें तख़्त बिझे हुए ﴿واكواب موضوعة﴾ शराब के जाम रखे हुए ﴿ونمارق مصفوفة﴾ गद्दे बिछे हुए ﴿وزرابى مبثوثة﴾ घर और तकिए लगे हुए ﴿فى جنت النعيم﴾ जन्नत की नेमतों में ﴿على سرر متقابلين﴾ आमने सामने तख़्तों पर ﴿يطوف عليهم ولدان مخلدون﴾ ख़ूबसूरत ग़ुलाम फिर रहे हैं ﴿باكواب واباريق﴾ जाम के साथ दस्ते वाले और बे दस्ते वाले कौन से जाम? ﴿وكاس من معين﴾ जिसमें मुईन की शराब डाली गई है यह वह मुईन है जिसमें एक उँगली डालकर आसमान पर बैठ जाएं और उसको नीचे कर दें उसका एक क़तरा ज़मीन पर हो कर गिर जाए तो आसमान व ज़मीन पर ख़ुशबू फैल जाए। यह दुनिया की शराब नहीं जिसका एक घूंट पीते ही दस दस दिन

तक बदबू आती है। यह वह शराब है जिसको अल्लाह ने अपनी क़ुदरत से बनाया है। जिसका एक क़तरा आसमान व ज़मीन के ख़िला को ख़ुशबू से भर दे। उसकी सिफ़्त यह है ﴿ولا يصدعون عنها ولا ينزفون﴾ सिर में दर्द नहीं सिर में चक्कर नहीं, लज़्ज़त की इन्तेहा ﴿يجد فى كل شربة لذة لم يجد فى اوها﴾ यहां तक आख़िरी घूंट की लज़्ज़त सबसे ज़्यादा होग ﴿حتى يؤجد فى آخرشربة آخر شربة لذة لم يجده فى اوها﴾ यहां तक कि आख़िरी घूंट की लज़्ज़त सबसे ज़्यादा होगी ﴿وفاكهة مما يتخيرون﴾ ख़्वाहिश के मुताबिक़ फल होंगे, कैसे फल हैं? ﴿احلى عن العسل﴾ शहद से ज़्यादा मीठे ﴿الين من الزبد﴾ मक्खन से ज़्यादा नरम ﴿اشد بياضا من اللبن﴾ दूध से ज़्यादा सफ़ेद ﴿ليس فيها عجم﴾ गुठली के बग़ैर ﴿لا مقطوعه ولا ممنوعة﴾ न खाने से ख़त्म न काटने से ख़त्म न तोड़ने से ख़त्म, न मौसम का पाबन्द, न हवा का पाबन्द, न दरख़्त का पाबन्द, हर हर घड़ी में मयस्सर और दस्तियाब ﴿قطوفها تذليلا ودانية عليهم ظلالها، وجنا جنتين دان، قطوفها دانيه﴾ ख़ोशे पक्के हुए, झुके हुए, लटके हुए, बैठ कर खाए, चल कर खाए, लेट कर खाए, हर लुक़में की लज़्ज़त पहले से ज़्यादा आख़िरी लुक़मे की लज़्ज़त सबसे ज़्यादा और एक क़िस्म की खजूर है एक तरफ़ से खाओ तो खजूर दूसरी तरफ़ से खाओ तो अंगूर है। एक खजूर में दो मज़े। खजूर का दाना होता है जन्नत में खजूर का दाना बारह हाथ लम्बा होगा ﴿ثمرتها اثناعشرا زراعا﴾ तो जन्नत का केला कितना लम्बा होगा ﴿ولحم طير مما يشتهون﴾

जन्नत के ग़ुलामों का तज़्किराः

मियां बीवी अपने तख़्त पर बैठे हुए हैं चारों तरफ़ ग़िलमान

खड़े हैं दरवाज़े पर दस्तक होती है, दरवाज़ा खुलता है तो फ़रिश्ता खड़ा हुआ है हाथ में रेशमी रुमाल लिपटा हुआ है और कहता है मैं अल्लाह की तरफ़ से आया हूँ, मालिक ने भेजा है, मुलाक़ात करना चाहता हूँ मैं इजाज़त लेने आया हूँ। एक रिवायत में आता है कि फ़रिश्ते अल्लाह के दरबार में बग़ैर इजाज़त जाएंगे, जन्नती के दरबार में पूछ कर दाख़िल होंगे। यह दरवाज़े के दरबान से कहता है आक़ा से कहो अल्लाह का क़ासिद आया है यह आगे से कहता है वह उससे अगले से कहता है इसी तरह सिलसिला चलता है फिर अन्दर आक़ा तक बात पहुँच जाती है वह तख़्त पर जलवा अफ़रोज़ है ﴿اذن له﴾ वह कहता है आने दो, यहां दरबान तक बात जाती है।

ख़ुदाई तोहफ़ा बन्दे के नामः

वह कहता है ﴿ادخل بسلام﴾ हो जाए सलामती के साथ, फिर वह सामने आता है। हाल पूछता है कहता है आपके रब ने आपकी ख़िदमत में भेजा है और यह हदिया भेजा है फिर रुमाल खोलता है। उसमें ख़ूबसूरत फल रखा हुआ है फ़रिश्ता कहता है अल्लाह ने फ़रमाया है आप इसको खाइए, नोश फ़रमाइए। वह कहता है ﴿رزقنا من قبل﴾ यह मैंने अभी खाया है यह तो मेरी जन्नत का फल है इसको भेजने की क्या ज़रूरत थी? फिर फ़रिश्ता कहता है आपके रब ने कहा है इसको भी ज़रा चखें, इसको भी खा के देखें वह फल उठाता है और उसका एक लुक़मा खाता है तो उसके अन्दर उसकी जन्नत के तमाम फलों का ज़ाएक़ा आ जाता है। फ़र्ज़ करें उसकी जन्नत में दस लाख क़िस्म के फल हैं इसी एक लुक़में में दस लाख क़िस्म के फलों

का ज़ाएक़ा होता है उससे कहा जाएगा ﴿واتُوا بِهٖ مُتَشَابِهًا﴾ अरे बन्दे! यह वह नहीं जो तूने खाया था बल्कि इस जैसा खाया था। यह मेरे दरबार से आया है। एक लुक़्में में सारे जन्नत के फलों का ज़ाएक़ा भर दिया।

अगर हम दो तीन चीज़ों को आपस में मिला दें तो एक ही ज़ाएक़ा बन जाता है। सबके ज़ाएक़े ख़त्म एक ज़ाएक़ा बन गया लेकिन अल्लाह तआला जन्नत में एक ही लुक़्मे में जन्नत के तमाम फलों का अलग अलग ज़ाएक़ा, अलग अलग ख़ुशबू, अलग अलग लज़्ज़त को उसकी ज़ुबान पर महसूस करवाएंगे। उसके खाने की लज़्ज़त को इन्तेहा को पहुँचा देगा।

दुनिया दारुल फ़ना हैः

मेरे दोस्तों और भाईयो! अगर जन्नत का यक़ीन हो तो कोई किसी को न सताए और किसी के ख़ून के दरपै न हो जाए और कोई किसी के ख़ून का प्यासा न हो, कोई झगड़े न हों, यह लुट गया वह लुट गया, यह खा गया वह खा गया। जिसको जन्नत मिलने वाली हो उसके सामने दुनिया की क़ीमत क्या है और क्या हैसियत है। यह धोके का घर है, फ़ना होने वाला घर है, यह लज़्ज़तों को तोड़ने वाली ज़िन्दगी है, यह मुसीबतों का घर है, परेशानियों का घर है, वहशतों का घर है, परदेस का घर है, अजनबियत का घर है, यहां हर वक़्त मौत का पैग़ाम जारी और सारी है, दाएं बाएं जमाते, दाएं बाएं मातम।

वह अहमक़ है जो इस दुनिया से दिल लगा बैठेः

मेरे दोस्तों और भाईयो! कोई बसीरत वाला ऐसा नहीं जो

इसमें दिल लगा सके, इस पर फ़रेफ़्ता हो सके, इसको दिल दे सके। बल्कि जो देखेगा ग़ौर से देखेगा तो पुकार उठेगा कि यह धोके का घर है यह कुछ नहीं, यह फ़रेब है, यह मुझे छोड़ कर जाना है, मुझे इससे दिल नहीं लगाना। जब बनाने वाले ने इसके बेक़ीमत होने का ऐलान कर दिया और इसकी क़ीमत बताई तो कौन अहमक़ ऐसा होगा जो इससे दिल लगा बैठेगा नहीं नहीं हम तो परदेसी हैं, हम तो राही हैं, मुसाफ़िर हैं। हम आपके कराची आए हुए हैं, काम पर आए हुए हैं। हमें इसमें कोई दिलचस्पी नहीं, क्यों? हमें चले जाना है। आप कराची में हैं मैं मुलतान में हूँ। जो जहां है वह परदेसी है वह मौत का राही है वह जन्नत का मुसाफ़िर है, वह दोज़ख़ का मुसाफ़िर है, या जन्नत का घर है या दोज़ख़ उसका घर है। अल्लाह की बात मान गया तो जन्नत का रास्ता खुल गया, शैतान की बात मान गया तो जहन्नुम का रास्ता खुल गया।

मेरे दोस्तों! अगर यक़ीन कामिल हो जाए तो एक आयत जहन्नुम वालों के लिए सबसे ज़्यादा शदीद है और जन्नत वालों के लिए सबसे ज़्यादा ख़ुशख़बरी सुनाने वाली है।

जन्नत में एक मजलिस ज़रूर लगेगीः

﴿فذوقوا فلن نزيدكم الا عذابا﴾ तुम्हारा अज़ाब बढ़ता ही चला जाएगा। यह आयत दोज़ख़ वालों के लिए है सबसे शदीद है। ﴿لدينا مزيد﴾ यह जन्नत वालों के लिए है। सबसे ज़्यादा ख़ुशख़बरी सुनाने वाली है। जब अल्लाह हमारे आमाल पर अपनी रहमत से जन्नत देगा तो बस नहीं करेगा बल्कि रोज़ाना दिया करेगा, हर वक़्त दिया करेगा जब तक अल्लाह चाहेगा देता

रहेगा। हमेशा नई जन्नत दी जाएगी न मेरी इन्तेहा न तुम्हारी इन्तेहा, न तुम ख़त्म न मैं ख़त्म , मेरे ख़ज़ानों की कोई हद नहीं, अता की कोई हद नहीं, बख़्शिश की कोई हद नहीं, तुम कहते न थको मैं देता न थकूं और कैसा देगा, किस तरह देगा जन्नत के मैदान में बुला रहा है आ जाओ मेरे बन्दों, सारे आ गए। एक मजलिस होगी, ऐसी मजलिस रोज़ाना लगेगी और जन्नत वालों के लिए दो मर्तबा लगेगी, आम जन्नत वालों के लिए एक दफ़ा और फ़िरदौस वालों के लिए दो दफ़ा। और बुलाया जा रहा है आओ भाईयो मांगों क्या मांगते हो आज जो मांगोगे मिल जाएगा। जन्नती कहेंगे या अल्लाह राज़ी हो जाओ, अल्लाह जवाब में कहेगा मैं राज़ी हो गया हूँ इस लिए यहां बैठा हूँ अगर राज़ी न होता तो तुम जहन्नुम के दर्मियान होते और मांगो। कहने लगे जन्नत तो मिल गई और क्या मांगे? मांगते मांगते शौक़ जज़्बात ख़त्म। अल्लाह कहेंगे और मांगो ﴿فانی اعطی الیوم بقدر اعمالکم لکن اعطیکم الیوم بقدر رحمتی﴾ आज तुम्हें तुम्हारे आमाल के बराबर देना नहीं चाहता बल्कि अपनी शान के बराबर, अपनी रहमत के बराबर, अपनी क़ुदरत के मुताबिक़ देना चाहता हूँ मांगो जो मांगना है मैं देता रहूंगा आज देखो मेरी शान कैसी है, मैं देता कैसा हूँ, फिर मांगना शुरू करेंगे, मांगते मांगते थक जाएंगे। ऐ अल्लाह कुछ समझ में नहीं आता मांगते मांगते थक गए और क्या मांगे? फिर तीसरी मर्तबा सब हाथ खड़ा करके कहेंगे या अल्लाह कुछ नहीं मांगा जाता। अल्लाह फ़रमाएगा ﴿لقد رضیتم﴾ ऐ मेरे बन्दों तुम अपनी शान का मांगते रहे मेरी शान का क्या मांगा?

सब्र का ईनामः

अब लो जो मांगा वह भी देता हूँ जो नहीं मांगा वह मेरी तरफ़ से ले लो। अरे मेरे भाईयो दुनिया में न लड़ो यहाँ लड़ना पागलों का काम है, दुनिया में लड़ना अक़्ल के मारो का काम है, जहन्नुम के रास्ते पर चलने वालों का काम है। देख लो चन्द रोज़ क़द्र कर लो चन्द दिन सब्र कर लो फिर जन्नत के मज़े लूट लो। अब अल्लाह तआला का दरबार लगा हुआ है। सबसे थोड़ा सवाल, सबसे बड़े को इख़्तियार कर लो। यह सब से थोड़ा सवाल है। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने थोड़ा बता दिया। एक आदमी क्या कहेगा या अल्लाह तुमने कहा था दुनिया को पाँव में रखो सिर पर न रखो, हक़ीर बनाओ, ज़लील बनाओ, इसके पीछे मत दौड़ो ﴿اني حقرتها و صغرتها وجعلت تحت قدمي فاسئلك هارن قطعيني مثل الدنيا من يوم خلقها الى يوم﴾ ऐ अल्लाह मैंने दुनिया को ज़लील किया, हक़ीर किया, अपने पाँव के नीचे किया आज तुम से पहला सवाल है जिस दिन आपने दुनिया को बनाया था उस दिन से लेकर जिस दिन दुनिया को फ़ना किया उसके बराबर मुझे बदला दे दें। यह सबसे थोड़ा सवाल है, ज़्यादा कितना होगा? अल्लाह कहता है तुमने मेरी शान के मुताबिक़ मांगा ही नहीं।

अल्लाह बहुत क़द्र दान हैः

मेरे दोस्तों भाईयो! अल्लाह से यारी कर लो। तबलीग़ का काम किसी जमात नहीं है। तबलीग़ का काम अल्लाह से यारी लगाने और दोस्ती जोड़ने का काम है। अल्लाह से दोस्ती जोड़ो,

बुतों से दोस्ती तोड़ो। आज दुकान बुत बन गई है, कारोबार बुत बन गया है, तिजारत भी बुत बन गई, ज़राअत बुत बन गई है, हुकूमत भी बुत बन गई है, क़ौम भी बुत बन गई है, पेशा भी बुत बन गया है, सोना चाँदी भी बुत बन चुके हैं। इन सब से हट कर इब्राहीम अलैहिस्सलाम वाला ऐलान करो ﴿انی وجهت وجهی للذی فطر السموات والارض حنیفا وما انا من المشرکین﴾ मैं सबसे हट गया, सब को छोड़ दिया, सबसे मुंह मोड़ा अल्लाह की तरफ़ रुख़ कर दिया, सब पर थूक दिया अल्लाह की तरफ़ चला। अल्लाह की तरफ़ कोई चले अल्लाह कहता है ﴿من تقرب الی فلقیته من بعید﴾ जो मेरी तरफ़ चल कर आएगा मैं आगे बढ़ कर उसका इस्तिक़बाल करूंगा ﴿من تقرب الی شیرا تقربت الیه زراعا من تقرب ای ذراعا تقربت الیه باعاً من اتینی یمشی أیتیه هرولة﴾ तुम मेरी तरफ़ एक बालिश्त आओ मैं एक हाथ आऊंगा तुम मेरी तरफ़ एक हाथ आओ मैं दो हाथ आऊँगा, तुम चल कर आओ मैं दौड़ कर आऊँगा, तुम आओ तो सही मैं इन्तेज़ार कर रहा हूँ। तुम्हारी नाफ़रमानियों के बावजूद तुम्हे मोहलत दे रहा हूँ, मेरे फ़रिश्ते ग़ुस्से में हैं आसमान और ज़मीन ग़ुस्से में हैं कि इजाज़त हो तो नाफ़रमानों के सिर क़लम कर दें, ज़मीन फट जाए, बादल गिर पड़ें, हवाऐं चल पड़ें कि उड़ा दें, पहाड़ भी चल पड़ें कि रेज़ा रेज़ा कर दें लेकिन वह रहीम करीम ज़ात है इन्तेज़ार में है कि मेरा बन्दा कभी भी तौबा कर लेगा तो मैं उसकी तौबा क़ुबूल कर लूंगा, तौबा कर लो मेरे भाईयो।

मेरे बन्दे मेरी रहमत को देखः

कोई मसअला नहीं है कोई घबराने की बात नहीं है, कितने

गुनाह किए होंगे और अल्लाह पाक कितनी बख़्शिश बता रहा है। सारी दुनिया के इन्सान मिल कर गुनाह कर लें जो मर चुके हैं उनको बुला लें जो आने वाले हैं उनको भी जमा करके इकठ्ठा होकर गुनाह करें, सब नाफ़रमानी करें तो इतने गुनाह नहीं होंगे कि अल्लाह के आसमान तक पहुँच जाएं और अल्लाह तआला कहता है कि ऐ मेरे बन्दे तू क्यों घबराता है मेरी रहमत को देख ले तुम में कोई आदमी ऐसा है जिसको मैं सारी दुनिया के वसाईल दे दूं तमाम असबाब दे दूं और सारी ताक़त दे दूं और इतने गुनाह कर दें कि पहाड़ों के बराबर हो जाएं, आसमान तक पहुँच जाएं, सूरज और चाँद को बेनूर कर दें, सितारों की झिलमिलाहट को ख़त्म कर दें और आसमान की छत तक उसके गुनाह पहुँच जाएं। इतने गुनाह होने के बाद भी घबराए नहीं। एक दिन कह दे कि ऐ अल्लाह मेरे गुनाह मॉफ़ कर दें तो मेरी इज़्ज़त की क़सम मैं मॉफ़ कर दूंगा ﴿ولا ابـــالـى﴾ मैं सारे गुनाह मॉफ़ कर दूंगा और मुझे कोई परवाह नहीं। मेरे दोस्तों दुनिया का बादशाह नहीं मॉफ़ करेगा। वह दुनिया का हुक्मुरान नहीं कि बदला लिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा। अल्लाह को मॉफ़ करने में मज़ा आता है, मॉफ़ करके ख़ुश होता है अज़ाब देने में राज़ी नहीं ﴿ما يفعل الله بعذابكم﴾ मैं तुम्हें अज़ाब देकर क्यों ख़ुश हूँ लेकिन अज़ाब देना मेरा क़ानून है मेरा अद्ल है लेकिन घबराओ नहीं, तौबा कर लो और कैसे क़ुबूल हो तौबा?

बनी इसराईल के एक नौजवान की तौबा का वाक़िया:

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में क़हत आ गया, बारिश नहीं हुई। पूरी क़ौम मूसा अलैहिस्सलाम के पास आई,

दुआ करो कि बारिश नहीं हो रही है। मूसा अलैहिस्सलाम सत्तर हज़ार आदमी लेकर बाहर निकले नमाज़ पढ़ी दुआ मांगी तो धूप और तेज़ हो गई। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा या अल्लाह नमाज़ पढ़ी दुआ मांगी धूप तेज़ हो गई तो अल्लाह ने कहा कि तुम में एक आदमी ऐसा है कि जिसने पिछले चालीस साल में कोई ख़ैर का काम नहीं किया नाफ़रमानी ही नाफ़रमानी ही की। जब तक वह ज़ालिम मजमे में है मैं बारिश नहीं बरसाऊँगा। मूसा अलैहिस्सलाम ने ऐलान किया कि कोई ऐसा आदमी है तो वह मजमे में से निकल जाए उसकी नहूसत और गुनाहों की वजह से सारी इन्सानियत परेशान है, सारे अल्लाह के बन्दे परेशान हैं। भाई निकल जाओ। उसने इधर उधर देखा, कभी पीछे देखा कभी आगे देखा, दाएं देखा बाएं देखा जब कोई न निकला तो परेशान हो गया और समझ गया कि वह तो मैं ही हूँ। अब बाहर निकल जाऊँ तो ज़लील हो जाऊँगा और खड़ा रहा तो बारिश नहीं होगी अब क्या करे? अब एक बात दर्मियान में ग़ौर फ़रमाएं आगे बताता हूँ और यह अभी तौबा करने लगा और यह तौबा असली नहीं है और तौबा असली अल्लाह की मुहब्बत में होती है और उसकी यह तौबा शर्मिन्दगी की वजह से है, अपने आपको रुसवाई से बचाने के लिए तौबा कर रहा है, अल्लाह की मुहब्बत में तौबा नहीं हो रही है। अब इसके साथ अल्लाह का मामला क्या है और वह कहता है या अल्लाह ﴿عصيتك اربعين سنة فامهلتني﴾ ऐ अल्लाह मैंने चालीस साल तेरी नाफ़रमानी की है और तू मुझे मोहलत देता रहा ﴿فاجئتك تائبا فتقبل مني﴾ अब मैं तौबा करता हूँ मेरी तौबा क़ुबूल कर लें, अभी इसकी बात ख़त्म नहीं हुई और हवा का रुख़ बदल गया, बादल उठे, घटा छाई और

बारिश हुई। मूसा अलैहिस्सलाम कहने लगे या अल्लाह निकला तो कोई नहीं बारिश क्यों हो गई। फ़रमान आ गया अल्लाह का जिसकी वजह से रुकी हुई थी उस ही की वजह से हो गई। सुब्हानल्लाह माँ नाराज़ हो जाए तो बच्चे को ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगाना पड़े फिर राज़ी होगी लेकिन अल्लाह करीम ज़ात बादशाहों का बादशाह एक ही आन में चालीस साल के नाफ़रमान से राज़ी हो गया और तौबा भी क़ुबूल कर ली। अगली बात सुनो। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा यह कैसे हो गया? फ़रमाने लगे अल्लाह मियाँ ﴿من تاب الى فقبلته﴾ उसने तौबा कर ली हमने क़ुबूल की और सुलह कर ली। एक बोल पर चालीस साल का जुर्म मॉफ़, अगर हम होते तो कहते अभी तक कहाँ थे? अब ज़िल्लत की वजह से तौबा करते हो। कम से कम कहना तो चाहिए था लेकिन अल्लाह कहता है उसने तौबा कर ली हम ने क़ुबूल कर ली। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा बताइए तो सही वह कौन थे? अल्लाह ने फ़रमाया जब उसने चालीस साल नाफ़रमानी की तो नहीं बताया अब जब तौबा कर ली है तो कैसे बता दूं। सारे जहाँ को चुग़ली से मना करूं और खुद अपने बन्दे की चुग़ली खाऊँ।

उसी का खाकर नाफ़रमानी करना इन्सानियत नहीं:

अरे मेरे भाईयो! आ जाओ तुम तौबा कर लो अल्लाह कर दरबार खुला है, वह करीम रहीम है। उसके यहाँ मायूसी कुफ़्र है, अगर वह दुनिया में किसी को पकड़ता तो सबसे पहले उसे पकड़ता जो मेरी रहमत से नाउम्मीद हो जाए लेकिन रहमान होने का मतलब यह नहीं है कि दिलेर हो जाओ, अल्लाह बड़ा रहीम

है नाफ़रमानियां करते रहें, पी लो शराब अल्लाह बड़ा रहीम है, ज़मीनें क़ब्ज़ा कर लो, छोड़ दो नमाज़ें, डालो डाके। यह कोई इन्सानियत नहीं है। कुत्ते एक रोटी खाकर सारी ज़िन्दगी वफ़ा करें आप इतने बड़े वजूद को लेकर ज़मीन व आसमान की ख़िदमत लेकर मैं और आप अल्लाह की नाफ़रमानी करें तो यह कोई इन्सानियत नहीं।

लिहाज़ा मेरे दोस्तों! तबलीग़ कोई जमात नहीं बल्कि अल्लाह के बन्दों को अल्लाह से जोड़ने की मेहनत है। मुसलमान ही इसके मोहताज नहीं सारी दुनिया के इन्सान इसके मोहताज हैं कि अल्लाह से जुड़ जाएं, अल्लाह की मान लें, अल्लाह को मना लें, अल्लाह को राज़ी कर लें, अल्लाह तो राज़ी होने को तैयार बैठे हैं। तौबा कर लें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा अपना लें, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी बना लें। अल्लाह ने दुनिया में एक ही हबीब बनाया है, एक ही महबूब बनाया है, काएनात में कोई और हबीब नहीं बनाया। जैसा के वह अपनी ज़ात में व-दहु ला शरीक है ऐसे ही उसका एक हबीब भी अकेला है। ऐसा हबीब अल्लाह ने न आसमान में बनाया और न ज़मीन में बनाया और उसको वजूद दिया कब?

दावत व तबलीग़ के लिए मेहनत शर्त हैः

तबलीग़ जमात कोई जमात नहीं है कोई फ़िरक़ा नहीं है। एक सादा और आसान सी मेहनत है कि हर मुसलमान अल्लाह और उसके हबीब मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी को सीख लें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

की मुहब्बत दिल में डाल लें। याद रखना जान माल खपाए बग़ैर मुहब्बत पैदा नहीं होती। घर बैठे अल्लाह और रसूल की मुहब्बत नहीं मिलेगी। जब तक कुछ लगेगा नहीं, खपेगा नहीं, लज़्ज़तें क़ुर्बान नहीं होंगी, कपड़े खाक आलूद न हों, पाँव न फटें, घर से निकल कर सफ़र की कड़वाहट न चखें, गर्म और सर्द हवाओं के थपेड़े न झेलें उस वक़्त तक अल्लाह की तरफ़ से मुहब्बत का फ़ैज़ान नहीं होता और मुहब्बत अल्लाह देता है और यह खुद पैदा नहीं होती। बच्चों से खुद हो जाती है, बीवी से खुद हो जाती है, अपने आप से खुद हो जाती है, अल्लाह और रसूल से मुहब्बत अता की जाती है लेकिन वह क़ुर्बानी के साथ अता की जाती है। घर बैठे नहीं होती उसे लेना है तो धक्के खाओ, मरग़ूबात को छोड़ो तब अल्लाह और रसूल से मुहब्बत मिलेगी और दिल को साफ़ कर लो। हाय, हाय अल्लाह ने एक हदीस में क्या कहा है ﴿يا ابن آدم كم تزين للناس فهل تزينت لا جلى﴾ ऐ बनी आदम तू लोगों के लिए बनता है, सवंरता है मेरे लिए बन के आ जा। अल्लाह के लिए बनना और सवंरना क्या है बस दिल को साफ़ कर लिया जाए

हर तमन्ना दिल से रुख़्सत हो गई
अब तो आ जा अब तो ख़िलवत हो गई

बुला लो अल्लाह और उसके रसूल को दिल को साफ़ करके। तो आपका दिल अल्लाह का अर्श बन जाएगा। आपका दिल अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत गाह बन जाएगा।

तबलीग़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैग़ाम को सारी दुनिया में पहुँचाने की मेहनत है:

तबलीग़ जमात कोई जमात नहीं है बल्कि अल्लाह और रसूल की मुहब्बत को दिलों में उतारने की मेहनत है और उसकी वजह यह है कि हमारे नबी आख़िरी नबी हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी नहीं है लिहाज़ा यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पैग़ाम सारी दुनिया में पहुँचाने की मेहनत है या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी आए नऊज़ुबिल्लाह, तो हम किसी कोने में बैठ कर अल्लाह अल्लाह करते, अपनी नमाज़, अपना रोज़ा, अपना हज। अब जब कोई नबी नहीं आ रहा और सारी दुनिया बेनूर हो चुकी, रौशनी के नाम से अन्धेरा छा चुका है, तारिकियां फैल गयीं हैं, तालीम के नाम से सबसे ज़्यादा वहशत और वीरानियां फैल गयीं और छा गयीं। जब नबी कोई नहीं तो कौन दुनिया के दर खटखटाए, इन सोए हुए लोगों को कौन जगाए, इन पत्थर दिलों को कौन मुसख़्ख़र करे, उनके कानों में निदा लगा कर उनके दिल की गहराईयों में ख़ुदा का पैग़ाम कौन पहुँचाए? मेरे भाईयो! ग़ौर तो करो, बाज़ार में जाकर देखो, गुनाहों की सदाएं गूंज रही हैं, गाने वाली दावत दे रही हैं, हमारी तरफ़ आओ, बड़े बड़े जुओं वाले दावत दे रहे हैं, सूद वाले दावत दे रहे हैं, सिनेमा वाले दावत दे रहे हैं, फ़िल्मों वाले दावत दे रहे हैं।

सबसे अच्छी आवाज़ जो रब को पसन्द है:

मेरे दोस्तों! ऐसी मेहनत करें कि फ़िज़ा ऐसी हो जाए कि ये

सब अल्लाह की तरफ़ दावत दें, अल्लाह के दीन की तरफ़ दावत दें, अल्लाह के हबीब की मुहब्बत की दावत दें, आज आलू की आवाज़ लग रही है, अमरूद की आवाज़ लग रही है, अंगूर की आवाज़ लग रही है, कपड़ों की आवाज़ लग रही है। मेरे भाईयो! यह आवाज़ नहीं लग रही है, कोई यह आवाज़ नहीं दे रहा है कि अरे इन्सानों अल्लाह और रसूल की मान लो। सबसे प्यारी आवाज़ ﴿ومن احسن قولا ممن دعا الى الله﴾ कोई है इससे ख़ूबसूरत बात करने वाला और इससे उम्दा बात करने वाला। या अल्लाह वह कौन सी बात है? ﴿ممن دعا الى الله﴾ जो मेरी तरफ़ बुला रहा है उससे भी किसी की बात ज़्यादा उम्दा हो सकती है? उससे भी किसी की बात आला हो सकती है? हर सदा लगाने वाले ने सदा लगाई, शैतान की दावत चली, इन्सानों की दावत चली, काफ़िरों की दावत चली, क़ौमों की दावत चली, हुकूमत की दावत चली, घरों के घर उजड़ गए। अरे अल्लाह की दावत चलती तो घरों के घर आबाद हो जाते। दुनिया में जन्नत के मज़े लूट सकते।

अल्लाह के दीन की दावत को लेकर सारी दुनिया में फैल जाओः

यह ज़िम्मेदारी हमारी तरफ़ क्यों है? हम घर क्यों छोड़ दें? मेरे दोस्तो! हम ख़त्मे नबुव्वत को माने हुए हैं। तबलीग़ तबलीग़ी जमात की वजह से नहीं, राएविन्ड वालों की वजह से नहीं, तबलीग़ ख़त्मे नबुव्वत की वजह से हमारे ज़िम्मे लगी हुई है। जब हम कहते हैं कि हमारे नबी आख़िरी नबी हैं उसके बाद कोई नहीं तो यह काम ख़ुद ब ख़ुद हमारे ज़िम्मे वाजिब हो जाता

हैं। अमरीका वालों को कलिमा बताओ, यूरोप वालों को कलिमा पहुँचाओ, अमरीका को समझाओ, आस्ट्रेलिया वालों को बताओ, अल्लाह के दीन की दावत को लेकर सारी दुनिया में फैल जाओ, पहाड़ों की चोटियां हमारे क़दमों तले रौंदी जाएं और मैदान व सहरा हमारे क़दमों की ख़ाक से आलूदा हो जाएं, सारी काएनात हमारे कलिमे की गूंज से मोअत्तर हो जाए। इस लिए अल्लाह तआला ने ख़त्मे नबुव्वत की बरकत से हमें यह काम अता फ़रमाया है, ख़त्मे नबुव्वत की वजह से यह ज़िम्मेदारी डाली है। यह काम तबलीग़ जमात की वजह से नहीं और इसको तबलीग़ी जमात का काम कहना भी सही नहीं, नमाज़ियों को नमाज़ की वजह से जमात कहना ठीक नहीं, क्योंकि नमाज़ मुसलमान पर फ़र्ज़ है, हाजियों की जमात कहना ठीक नहीं, क्योंकि हज मुसलमान पर फ़र्ज़ है, रोज़ेदारों की जमात कहना ठीक नहीं क्योंकि हर मुसलमान पर रोज़ा फ़र्ज़ है।

मेरे भाईयो! हर मुसलमान को तबलीग़ी कहना भी सही है क्योंकि ख़त्मे नबुव्वत की वजह से तबलीग़ हर मुसलमान के ज़िम्मे है, जो ख़त्में नबुव्वत को मानने वाला है उसके ज़िम्मे तबलीग़ है अब वह करे या न करे। बहरहाल काम उसके ज़िम्मे लग चुका है। नाम लिखवाने से लाज़िम नहीं होता या न लिखवाने से साकित नहीं होता। लिखवाएंगे और न जाएंगे तो गुनहगार होंगे।

एक आदमी ने कहा कि मैं नमाज़ पढूंगा उसके बाद वह कहता है अगर मैं न पढूंगा तो गुनाह गार हो जाऊँगा तो उसकी यह बात सही नहीं है क्योंकि वह कहे या न कहे नमाज़ उस पर पहले से फ़र्ज़ है।

इसी तरह एक आदमी कहता है कि मेरा नाम चिल्ले के लिए लिखो। इस तरह नाम लिखवाने से तबलीग़ ज़िम्मे नहीं है। तबलीग़ ख़त्मे नबुव्वत को मानने की वजह से ज़िम्मे है। आज दुनिया में सबसे बड़ा मातम यह है कि इन्सानियत नाचती हुई जहन्नुम जा रही है अगर उनके पास जाकर मिन्नत करके हाथ जोड़ कर उनको इस काम में लगाया जाए तो उनकी आख़िरत बन जाएगी।

बद अमाल शख़्स और अज़ाबे क़ब्रः

मेरे अपने एक क़रीबी गांव का वाक़िया है। वहां एक ज़मींदार मर गया। उसके लिए क़ब्र खोदी गई तो क़ब्र काले बिछूछुओं से भर गई। उसे बन्द करके दूसरी खोदी गई। लहद बनाई गयी तो वहां भी काले बिछूछुओं से क़ब्र भर गई। तीन क़ब्रें बनीं तीनों क़ब्रों का यही हाल हुआ यह ज़मीन बिछूछुओं की नहीं है बल्कि यह बद आमालियों के बिछूछू हैं। यह अल्लाह तआला कभी कभी पर्दा उठा कर दिख लाता है। इसी तरह हम सब से अल्लाह कहता है ज़रा संभल कर चल। सबसे बड़ा मोहसिन इस वक़्त दुनिया का कौन है जो उनको दोज़ख़ से बचा ले। वह मोहसिन नहीं है कि रोटी पर लड़ा दें, ज़मीन पर लड़ा दें, कपड़े पर लड़ा दें, मोहसिन वह है जो दुनिया वालों को दोज़ख़ से बचा ले। तबलीग़ दुनिया को जहन्नुम से बचाने की मेहनत का नाम है। यह हमारा नाम लिखवाने से लाज़िम नहीं, ख़त्मे नबुव्वत का अक़ीदा दिल में क़रार पकड़ा तो साथ ही तबलीग़ ज़िम्मे हो गई अगर हमारे ज़िम्मे नहीं मुसलमान के ज़िम्मे नहीं तो आप बता दो किसके ज़िम्मे है?

दुनिया के हालात गुनाहों की वजह से आते हैं:

हमने कारोबार को नहीं छोड़ा, दुकान को नहीं छोड़ा, ज़मीन को नहीं छोड़ा, बीवी बच्चों को नहीं छोड़ा अगर छोटी मोटी आग लग जाए तो फ़ायर ब्रिगेड का इन्तेज़ाम होता है अगर पूरे मुहल्ले में आग लग जाए तो हर आदमी बाल्टी लेकर भागता है, हर आदमी समझता है कि अगर फ़ायर ब्रिगेड का इन्तेज़ार किया तो सारा शहर जल कर ख़ाक हो जाएगा। अब जबकि पूरी दुनिया में नाफ़रमानी की आग लगी चुकी है हर एक को भागना होगा, हर एक से मिन्नत करना होगी तब जाकर लोगों में अल्लाह की तरफ़ रुजू नसीब होगा वरना सारे आमाल ऐसे हैं जो अल्लाह के अज़ाब को दावत दे रहे हैं। लोग कहते हैं मंहगाई हो गई। हम कहते हैं कि शुक्र करो कि हम ज़िन्दा हैं वरना हमारे आमाल ऐसे हैं कि ज़मीन फट कर हमें अन्दर ले जा चुकी होती जो हम कर रहे हैं। कब से आसमान की बिजलियां कड़क जाएं जो कुछ हो रहा है कब का आसमान के फ़रिश्ते उतर कर ज़मीन को पटख़ देते जो हो रहा है। यह अल्लाह का शुक्र है कि हम ज़िन्दा हैं। इस लिए हम कहते हैं कि हुकूमतों के पीछे मत भागो, हड़तालें न करो, मस्जिदों में आ जाओ, तौबा कर लो, हाथ उठा लो जैसे नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम सज्दे में गिर गई थी, अल्लाह तआला ने अज़ाब उठा दिया था। यह सब अज़ाब है, एक दूसरे से नफ़रतें, एक दूसरे को क़त्ल करना, ज़मीन छीनना, ज़ालिम हुकमुरान, बद दियानत मुलाज़िमीन, बद दियानत अफ़सर शाही यह सब अल्लाह का अज़ाब है। यह अज़ाब तौबा से उठेगा। काएनात की कोई क़ुव्वत इसको नहीं उठा सकती,

अल्लाह और रसूल के ग़ुलाम बन जाओ, सारी दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाओ। अल्लाह ने हमारे नबी को सारे जहां के लिए रहमतुललिल आलमीन बनाया।

अल्लाह के रास्ते के ग़ुबार की क़ीमतः

लिहाज़ा मेरे भाईयो! तबलीग़ का काम ख़त्मे नबुव्वत की वजह से ज़िम्मे है। यह वह मेहनत है जिस पर लगने वाले ग़ुबारकी क़ीमत अल्लाह देगा जैसे घर में काम करने वाले मज़दूर पर लगने वाली मिट्टी की क़ीमत हम देते हैं। यह वह मेहनत है जिसके ग़ुबार के बदले में भी जन्नत की ख़ुशबू दी जाएगी। अल्लाह के रास्ते में गर्द व ग़ुबार आमाल नामे में तोला जाएगा। उसके बदले में जन्नत की ख़ुशबू दी जाएगी और अल्लाह के रास्ते में निकलना सारे आलम में हिदायत का इन्तेज़ाम हमारे चलने का ज़रिया बन जाएगा और अल्लाह के रास्ते में निकलने वाला और घर बैठने वाला क़तन बराबर नहीं हो सकते हैं। मेरे दोस्तों और भाईयो अल्लाह तआला ने महज़ अपने फ़ज़ल से ख़त्मे नबुव्वत की नेमत अता फ़रमाई है और अपने हबीब का उम्मती बनाया, सारी उम्मतों का सरदार बनाया इस तबलीग़ की वजह से बनाया है।

दावत वाला काम इस उम्मत के अलावा किसी को नहीं मिलाः

यह अल्लाह के रास्ते में फिरते हैं अल्लाह का पैग़ाम सुनाते हैं, उसकी दावत देते हैं, सारे आलम को दावत देते हैं। आज यह हुक्म टूटा पड़ा है। गर्ज़ हमारी जान व माल ख़रीदी गई है। हम

दुनिया को दावत देते हैं कि आ जाओ हमारे दीन में, अगर वे आ गए तो हमारे भाई बन गए अगर नहीं आते तो जज़्बा पेश कर दो अगर यह भी न हो तो उनको मारो या खुद मर जाओ ﴿يقتلون ويقتلون﴾ दुनिया में अल्लाह का कलिमा ज़िन्दा करो। किसी उम्मत को दावत इलल्लाह का काम नहीं मिला सिवाए इस उम्मत के। इस उम्मत को अल्लाह ने ऊँचा किया।

इस उम्मत को बे हिसाब अज्र मिलेगाः

जब क़ुरआन में आया ﴿من جاء بالحسنة فله عشر امثالها﴾ जो एक नेकी करेगा तो उसको दस दूंगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह कुछ बढ़ा दें तो अल्लाह तआला ने दूसरी आयत उतारी ﴿من ذالذی يقرض الله قرضا حسنا الخ﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फिर दुआ की ﴿ربی زدنی﴾ या अल्लाह मेरी उम्मत को कुछ और बढ़ा दें तो तीसरी आयत उतारी ﴿مثل الذين ينفقون .... كمثل حبة انبتت سبع سنابل﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फिर दुआ की कि मेरी उम्मत के लिए कुछ ज़्यादा कर दें। अल्लाह तआला ने फ़रमाया आप किसी मिक़दार पर राज़ी नहीं होते चलो हम हिसाब उठा देते हैं ﴿انما يوفی الصابرون اجرهم الخ﴾ सब्र करने वालों को बे हिसाब देंगे। सारे जन्नतियों की एक सौ बीस सफ़ें हैं इस उम्मत के जन्नतियों की अस्सी सफ़ें हैं बाक़ी सफ़ें औरों की हैं। इस उम्मत के सत्तर हज़ार बग़ैर हिसाब किताब के जन्नत में जाएंगे। एक रिवायत में है कि उनमें हर एक सत्तर हज़ार की सिफ़ारिश करेगा और बग़ैर हिसाब किताब के जन्नत में जाएंगे। यह वह उम्मत है जिसके बग़ैर किसी और उम्मत के लिए जन्नत का दरवाज़ा नहीं खोला

जाएगा। इनके नबी वह नबी हैं जिनसे पहले कोई नबी जन्नत में नहीं जा सकेगा और इस उम्मत से पहले कोई उम्मत जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकती।

मुसलमानों की बरकत से सब को मिल रहा है:

मेरे भाईयो! अपनी क़द्र पहचानें। आपकी वजह से सारे जहां का निज़ाम चल रहा है। आपकी वजह से सारे इन्सानों को अल्लाह रोटी खिला रहा है और आप रोटी के लिए लड़ रहे हैं। आपकी वजह से अमरीका वाले रोटी खा रहे हैं, यूरोप वाले खा रहे हैं, एशिया वाले खा रहे हैं, अफ़रीक़ा वाले खा रहे हैं। जब दुनिया से मुसलमान मिट जाएगा तो क़यामत आ जाएगी। जब तक हम हैं क़यामत नहीं आएगी। हम में से एक भी ज़िन्दा है तो क़यामत नहीं होगी। मुसलमान के अन्दर इतनी ताक़त है कि आसमान को गिरने से रोका हुआ है, हवाओं के तूफ़ान थमे हुए हैं, पहाड़ों को उठने से रोका हुआ है, चाँद का टूटना रुका हुआ है, समन्दरों की आग रुकी हुई है क्योंकि एक मुसलमान ज़िन्दा बैठा हुआ है और उस मुसलमान के साथ न नमाज़, न रोज़ा, न ज़कात, न हज, न अख़लाक़, न सीरत, न आगे जाए न पीछे जाए, न ऊपर जाए न नीचे जाए। बस सिर्फ़ कलिमा पढ़ता है। यह सारे जहां का निज़ाम, आसमान का निज़ाम, ज़मीन का निज़ाम, हवाओं का निज़ाम, पहाड़ों का निज़ाम यह सब कुछ सिर्फ़ मुसलमान के लिए चल रहा है अगर यह ख़तम हो जाए तो यह तमाम निज़ाम टूट कर रेज़ा रेज़ा हो जाए और हम रोटी के लिए परेशान हैं। एक बरात जा रही है लोग आगे भी हैं पीछे भी हैं, उनमें से एक आदमी दूल्हा है पूछता है आप यह बताओ

आगे रोटी मिलेगी तो सब अहमक़ तसव्वुर करेंगे कि जो शख़्स उनको अपनी बेटी देने के लिए तैयार बैठा है जब वह इनको अपनी बेटी दे सकता है तो क्या रोटी नहीं देगा।

मुसलमान का घर दुनिया नहीं:

मेरे दोस्तो और भाईयो! जो अल्लाह आगे जन्नत देने को तैयार बैठा है वह ज़ात दुनिया में रोटी नहीं देगा। इज़्ज़त रूपए में मत समझो आपकी इज़्ज़त अल्लाह ने तबलीग़ में रखी है। सारी दुनिया में तबलीग़ का मैदान है। घूम जाओ सारे आलम में, अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दो यह सब ही हमारा घर है।

कभी रात में न तन्हा कभी सहरा में
जुनूं का हम सफ़र हूँ मेरा कोई घर नहीं

है न पाकिस्तान न ईरान न तेहरान, हर मुल्क मा अस्त मुल्क खुदाए मा अस्त। सारा जहां हमारा जहां मर गया वही हमारा घर है वही हमारा वतन है। अल्लाह का पैग़ाम लेकर चलते चलते फिरते फिरते मर जाएं, वहीं क़ब्र बने वहीं से अपने बदन से अल्लाह के रास्ते में लगी हुई मिट्टी झाड़ कर उठें।

अल्लाह की बड़ाई और तौबा

13/3/1998

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه ونعوذبالله
من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله فلا مضل له
ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الله وحده لا شريك
له ونشهد ان سيدنا ومولٰنامحمدا عبده ورسوله وصلى تعالٰى
عليه وعلى اله واصحابه وبارك وسلم امابعد
ان الذين امنو وعملوا الصالحات لهم جنت تجرى من تحتها الانهار
ذالك الفوز الكبير o قال تعالٰى قل ان الخاسرين الذين خسروا
انفسهم واهليهم يوم القيامة، الا ذالك هوالخسران المبين o
وقال النبى صلى عليه وسلم هل بلغت واقول يا ربى قد بلغت
فليبغ الشاهد الغائب اوكما قال صلى عليه وسلم.

अल्लाह का इल्मः

मेरे भाईयो और दोस्तो! अल्लाह ने सारे जहां में अपनी हुकूमत अपने इक्तेदार को अपने ग़लबे से इस तरह बाक़ी रखा हुआ है कि न उसका कोई शरीक न कोई उसका मुद्दे मुक़ाबिल ﴿هل تعلم له سميا﴾ अल्लाह हम से पूछता है बड़े अजीब अन्दाज़ से यूं फ़रमाया कि मेरे इल्म में तो कोई मेरे मुक़ाबिल नहीं है हाँ अगर पता है तो बता दो। क्या हम जानते हैं? हमारा इल्म ही कोई नहीं, इन्सान जाहिल है। ये बड़े बड़े डाक्टर, अल्लाह क्या कहता है ﴿ظلوما جهولا﴾ तुम सब ज़ालिम जाहिल हो तो अल्लाह की बात सच्ची हमारी बात झूठी, जानने का मतलब यह है कि

थोड़ा बहुत जानता है यह नहीं कि मैं सब कुछ जानता हूँ। जो यह कहता है कि मैं सब कुछ जानता हूँ तो वह सबसे बड़ा जाहिल है। उसे हिदायत नहीं मिल सकती। यहूद गुमराह हुए इल्म के घमंड में कि हम जानते हैं, तो अल्लाह हम से पूछता है तुम जानते हो कि कोई है जो तुम्हारे अल्लाह के मुक़ाबले में आ जाए ﴿الملك لا شريك له، الا احد لا ندله، العالى لا سمى له الغنى لا ظهورله (كل شى هالك الا وجهه) كل ملك زائل الا ملكه﴾ अल्लाह के यहाँ न कोई माज़ी है न कोई हाल न कोई मुस्तक़बिल हैं ﴿لا ينتقل من الحال الى حال﴾ वह एक हाल से दूसरे हाल में मुन्तक़िल नहीं होता ﴿لا يحويه المكان﴾ मकान की क़ैद से पाक है ﴿لا يشتمل عليه الزمان﴾ ज़माने की क़ैद से पाक है ﴿كل ظل قالص الا ظله﴾ हर साया चढ़ता और ढलता है और उसका साया हमेशा बाक़ी रहता है। इस लिए अल्लाह का मुल्क न ज़्यादा होता है न कम होता है। बढ़ना कमी की निशानी है। यहाँ ऐसा है कि वहाँ बढ़ने का कोई इमकान ही नहीं, तो सारे जहाँ को अल्लाह ने अपनी ताक़त से पैदा फ़रमाया, कुछ नहीं था सब कुछ बना दिया। अल् ख़ालिक़, अल् मुब्दी वह बनाने वाला है जिसने किसी चीज़ के बग़ैर बनाया। अल्लाह ने लोहे को बग़ैर लोहे के बनाया, चाँद को बग़ैर चाँद के बनाया वग़ैराह वग़ैराह।

अल्लाह की मख़लूक़ इतनी है कि उसकी कोई तादाद मालूम नहीं। सिर्फ़ एक मकड़ी जो जाला बनाती है उसकी दस हज़ार क़िस्में दर्याफ़्त हुई हैं पता नहीं और कितनी बाक़ी हैं। इसी तरह हर चीज़ को गिनना शुरू किया जाए तो सारा वक़्त गिनने में गुज़र जाएगा लेकिन आप इस इजमाल की तफ़सील ज़हन में लाएं कि क्या कुछ बना हुआ है। कुछ उड़ रहे हैं, कुछ रेंग रहे

हैं, कुछ तैर रहे हैं, कुछ मुतहर्रिक हैं, कुछ साकिन हैं, कुछ नूरानी हैं, कुछ नारी हैं, कुछ नूरी हैं, कुछ ख़ाकी हैं, कुछ अलमी हैं। सबको बग़ैर किसी चीज़ के बना दिया ﴿ان ربكم الله﴾ मैं हूँ तुम्हारा रब अल्लाह। कौन अल्लाह है?

ممن خلق الارض والسموت العلٰى الذى خلق سبع سموات
والارض فى ستة ايام ثم استوى على العرش، يغشى الليل
والنهار، يطلبه حثيثاً، والشمس والقمر والنجوم مسخرات با
مره الا له الخلق والامر تبارك اللّٰه رب العالمين

अल् बारी वह बनाने वाला जो बेजान में जान डाल दे, अल्लाह वह बनाने वाला है जो बेजान को जानदार बना देता है। मिट्टी के पुतले पर तजल्ली डाल दी तो आदम बन गया। ﴿رفع السموات﴾ आसमान को बुलन्द किया ﴿ولارض بعد ذلك دحها﴾ ज़मीन को बिछाया, समन्दरों को बान्ध दिया हमारे लिए ﴿هو الذى سخر البحر﴾ उसमें मछलियों को तैरा दिया ﴿لتاكلوا منه لحما طريا﴾ और मोतियों को छुपा दिया ﴿لتستخرجوا منه حلية تلبسونها﴾ इसमें तिजारत का निज़ाम चला दिया ﴿وترك الفلك مواخر فيه﴾ समन्दर न हो तो सारी दुनिया की तिजारत न होती। तिजारत का निज़ाम अल्लाह ने समन्दर के ज़रिए चला।

अल्लाह की क़ुदरत और उसकी शानः

तो यह सारी काएनात बनाई। जिस में चाहा उसमें रूह डाली, जिसको चाहा बेजान कर दिया। फिर ﴿بديع يبدى﴾ जो बग़ैर नमूने के बनाए। अल्लाह के सामने आदम अलैहिस्सलाम का नमूना पेश किया गया फिर अल्लाह उसको देखता रहा, अल्लाह के सामने लोहे को पेश किया तो लोहा बनाया, पानी को पेश किया

गया तो पानी बनाया, औरत को देखा तो औरत बनाई यह नहीं बल्कि ﴿بديع﴾ अपने इल्म से हर चीज़ को शक्ल अता फ़रमाई। किसी में सख़्ती, किसी में नर्मी, किसी में गर्मी, किसी में सर्दी, किसी में लताफ़त, किसी में कसाफ़त, किसी में नज़ाकत, किसी में जोलानी, किसी में रवानी, किसी को जमा दिया ﴿والجبال ارسها﴾ हवाओं को उड़ा दिया ﴿يرسل الرياح﴾ पानी के चश्मों को बहा दिया ﴿سخر لكم الانهار وفجرنا فيها من العيون﴾ कहीं मीठा बनाया ﴿هذا عذب فرات﴾ कहीं कड़वा कर दिया ﴿هذا ملح اجاج﴾ यह बदीअ है और यह हमारा अल्लाह है। तबलीग़ का काम यह है कि अल्लाह का तार्रुफ़ कराना और उसकी मुहब्बत दिलों में बिठाना। यह काम पहले नबी किया करते थे अब यह हमारे ज़िम्मे हुआ है कि लोगों में अल्लाह का तार्रुफ़ करा के दिलों में अल्लाह की मुहब्बत पैदा करें। मुहब्बत करने की जितनी चीज़ें वह सब से ज़्यादा अल्लाह की ज़ात में जमा हैं। अल्लाह की तारीफ़ कहाँ से शुरू करें, कहाँ जा के ख़त्म करें उसकी कोई हद नहीं। यूं कहा अल्लाह ने ﴿ولو ان ما فى الارض من شجرة اقلام﴾ सारे दरख़्त काट कर क़लम बनाओ तो कितने क़लम बन जाएंगे। सबसे बड़ा जगंल ब्राज़ील में है। हमारी हवा में साठ फ़ी सद आक्सीजन ब्राज़ील के जगंल से आ रही है तो यह काट दिया जाए। अब स्याही कहाँ से लाएं? ﴿لو كان البحر مدادا﴾ मैं समन्दर को स्याही बना देता हूँ सिर्फ़ बहरे अरब को नहीं ﴿والبحر يمده من بعده سبعة ابحر﴾ बल्कि सातों समन्दरों को स्याही बना देता हूँ फिर तुम सब मिल कर मेरी तारीफ़ लिखो, जिन्नात भी इन्सान भी, जो मर गए उनको भी बुला लाओ जो आने वाले हैं वह भी आएं। सब जमा होकर छोटे भी, बड़े भी, नबी भी, सिद्दीक़ भी,

आलिम भी, जाहिल भी, शायर भी, फ़लसफ़ी भी, अदीब भी ख़तीब भी, मुहद्दिस भी, मुफ़स्सिर भी सब आकर क़लम का ज़ोर दिखाओ, अपने इल्म के जौहर दिखाओ। स्याही सात समन्दर हैं। सिर्फ़ फ़िलीपाइन के पास जो बहरे काहिल है यह छः सौ किलो मीटर गहरा है। सबसे गहरा समन्दर बहरे काहिल है। इन तमाम समन्दरों को स्याही बना कर अल्लाह की तारीफ़ लिखो ﴿لنفد البحر قبل ان تنفد كلمات ربى ولو جئنا بمثله مددا﴾ सातों समन्दरों की स्याही ख़ुश्क हो जाएगी और यह दरख़्त के क़लम ख़त्म हो जाएंगे और इतने और भी आजाएं तो भी तेरे रब की तारीफ़ ख़त्म नहीं होगी। तो भाई हमारा काम अल्लाह की तारीफ़ कराना है। मुसलमान वह जो अल्लाह की मान कर चले और इस उम्मत की खुसूसियत है कि यह लोगों को अल्लाह की मानने पर तैयार भी करते हैं। यह हमारा इज़ाफ़ी और ऐज़ाज़ी ओहदा है। यह सिर्फ़ नबियों को मिला और उनके बाद हमें मिला कि अल्लाह की तारीफ़ करके अल्लाह की मुहब्बत दिलों में बिठाना हैं। मुहब्बत के क़ाबिल भी एक अल्लाह है।

अल्लाह दाऊद अलैहिस्सलाम से कहता है कि ऐ दाऊद ﴿لو يعلم مدبرون عنى﴾ अगर मेरे नाफ़रमानों को पता चल जाए कि मैं उन से कितनी मुहब्बत करता हूँ तो उनके जिस्म के जोड़ जोड़ अलग हो जाएं तो ऐ दाऊद तू बता कि मैं फ़रमा बरदारों से कितनी मुहब्बत करता हूंगा।

अल्लाह तआला की बड़ाई:

तो भाईयो! आज अल्लाह की मुहब्बत दिलों से निकल गई है, अल्लाह पर ऐमिमाद और यक़ीन उठ गया है। वह हमारे तमाम

मसाईल हल कर देगा। इसका इल्म तो है, इसका यक़ीन ढीला पढ़ गया है। इस उम्मत का काम है अल्लाह की अज़मत, किबरियाई, जबरूत, जलाल के क़िस्से सुना कर लोगों के दिलों में जितने बुत हैं उनको तोड़ते हैं। अन्दर के बुतों को भी तोड़ कर ला इलाहा इलल्लाह का नक़्श दिलों में रासिख़ करते हैं ﴿لا الــه الاالـلّٰـه﴾ दिल में उतर जाए। एक हदीस से आप अन्दाज़ा लगाएं ﴿والـذى نفسى بيده﴾ उस ज़ात की क़सम जो मेरी जान का मालिक है ﴿لـوجى بـالـسـمـوات الـسبـع والارضيـن السبـع ومـافيهن وما بينهن وما تحتهن فوضعن فى كفة لرجحت بهن الميزان ولا اله الا اللّٰه فى كفة﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाया इतना बड़ा तराज़ू हो कि उसके एक पलड़े में सात आसमान और सात ज़मीन रख दिए जाएं और उनके दर्मियान में जो कुछ भी है उन सब को रख दिया जाए और दूसरी तरफ़ ﴿لا الــه الاالـلّٰـه﴾ रख दिया जाए तो यह ﴿لا الــه الاالـلّٰـه﴾ सब को हवा में उठा देगा और यह वज़नी हो जाएगा। हमारी मेहनत यह है कि हम इसको दिल में उतारें, इसको सीखें और इसकी दावत दें। ﴿لا اله الااللّٰه﴾ में काएनात की ताक़त नहीं, अल्लाह की ताक़त छिपी हुई है। अल्लाह वह ज़ात है न उसकी कोई इब्तेदा है न आख़िर है

هـو الاول والآخـر والـظـاهـر والبـاطن، وهو بكل شى عليم، هو
الـظـاهر ليس فوقه الشى هو الباطن ليس دونه الشى، هو قبل كل
شـى، وبعد كل شى وفوق كل شى، دون كل شى، خالق كل شى
لا يستـعيـن بشـى بـعـد كـل شـى فـوق كـل شـى، فـاتو كل شى
لا يستـعيـن بشى لا يحتاج الى شى لا يضره شى، لا ينفعه شى، لا
يـعـزه شـى، لا يـضـلـه شـى، لا يـعـذبـه شـى

कोई चीज़ उससे छिप नहीं सकती ﴿خبيـر كـل شـى، عـليـم كل شى،

﴿ليس كمثله شيئ﴾ उस जैसी कोई चीज़ नहीं।
﴿بديع على كل شيئ﴾ हर चीज़ पर कामिल क़ुदरत रखने वाला।

هو النافع غير منفوع هو غالب غير مغلوب، هو خالق غير مخلوق، مالك غير مملوك، قادر غير مقدور، قاهر غير مقهور، جابر غير مجبور، حافظ غير محفوظ

उसको हिफ़ाज़त के लिए किसी की ज़रूरत नहीं

رب غير مربوب، الملك لله، والكبرياء لله، والعظمة لله، والهيبة لله، والجبروت لله، والقدرة لله، والسلطان لله، والجلال لله،

यह सारे हदीस के अलफ़ाज़ हैं।

ولله الاسمآء الحسنٰى، الرحمٰن، الرحيم، القدوس، السلام، المؤمن، المهيمن، العزيز، الجبار، المتكبر، الخالق، المصور، البارى، الغفار، القهار، الوهاب، الرزاق، الفتاح، العيم، القابض، الباسط، الرافع، المعز، المذل ، السميع، البصير، الحكم، العدل، اللطيف، الخبير، الحليم، العظيم، الغفور، الشكور، العلى، الكبير، الحفيظ، المقيت، الحسيب، الجليل، الكريم، الرقيب، المجيب، الواسع، الحكيم ، الودود، المجيد، الباعث، الشهيد، الحق، الوكيل، القوى، المتين، الولى، الحميد، المحصى المبدئُ، المعيد، المحى، المميت، الحى، القيوم، الواجد، الماجد، الواحد، الاحد، الصمد، القادر، المقتدر، المقدم المؤخر، الاول، الأخر، الظاهر، الباطن، الوالى، المتعالى، البر، التواب، المنعم، المنتقم، العفو الرءوف، مالك الملك، ذوالجلال والاكرام، الرب، المقسط، الجامع، الغنى، المغنى، المعطى، المانع، الضآر، النافع، النور، الهادى، البديع، الباقى، الوارث، الرشيد، الصبور، ولله الاسمآء الحسنٰى فادعوه بها.

यह ख़ूबसूरत नाम अल्लाह के लिए हैं। अल्लाह को इन नामों से पुकारा करो। वह ऐसी ख़ूबसूरत सिफ़ात का मालिक है और

यही हमारी मेहनत है। यह इस उम्मत की मेहनत है कि यह अल्लाह की तारीफ़ करके अल्लाह का दीवाना बना देते हैं। लोग अपने खोटे सौदे की तारीफ़ करके लोगों को बेवक़ूफ़ बना कर अपना सौदा बेचते हैं और इससे खरा सौदा कोई नहीं है कि हम लोगों को लोगों के ख़ालिक़ से जोड़ दें, यह तबलीग़ का काम है, यह हर मुसलमान का काम है। इसके लिए आलिम होना शर्त नहीं। अल्लाह की तारीफ़ करना कि मेरा अल्लाह ख़ालिक़ और मालिक है। हाँ दीन का कोई मस्अला बताना है तो बग़ैर इल्म के नहीं बोल सकते हैं। हम क्या कहते हैं? हम कहते हैं अल्लाह की तारीफ़ करके लोगों के दिलों में अल्लाह की मुहब्बत बिठा दो। पहला फ़ायदा यह होगा कि अल्लाह आपको अपनी मुहब्बत दे देगा। आप मेरी तारीफ़ करें तो खुद ब खुद मेरी आप से मुहब्बत हो जाएगी और मैं आपकी तारीफ़ करूं तो खुद ब खुद मेरे दिल में आपकी मुहब्बत आ जाएगी। जब हम ज़मीन व आसमान के बादशाह की तारीफ़ करेंगे और वह है ही तारीफ़ के क़ाबिल, उसकी मुहब्बत बारिश की तरह बरसेगी। अब्दुल्लाह बिन मालिक बिन मरवान बादशाह था बनू उमिय्या का, जो उस ज़माने का शायिर था बहुत बड़ा शायिर था। उसने बादशाह की तारीफ़ में क़सीदा कहा था। जिसमें एक शेअर आया ﴿الستم خير من ركب المطايا، رب العالمين بطون راحى﴾ तो अब्दुल मलिक यूं झूमने लगा और यह शेअर अपने सही माईने में सिवाए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के किसी पर सादिक़ नहीं आता। मतलब यह है आज तक जो सवारी पर सवार हुए उनमें आप सबसे अफ़ज़ल हैं और जितने सख़ी आएं उनमें आप सबसे सख़ी हैं। यह सबसे बड़ा झूठ अब्दुल मलिक के बारे में कहा गया। यह

शेअर अपनी हक़ीक़त में सिर्फ़ दो जहां के सरदार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सादिक़ आता है और किसी पर नहीं लेकिन अब्दुल मलिक शेअर को सुन कर यूं झूमने लगा और वजूद में आकर खड़ा हुआ और एक सौ ऊँट साज़ो सामान और ग़लामों के साथ उसके लिए हदिया कर दिए। झूठी तारीफ़ सुन कर मौज में आ गया तो हमारा काम यह है कि हम खुद भी अल्लाह की मानें और लोगों के दिलों में भी अल्लाह की मुहब्बत बिठाएं, अल्लाह की तारीफ़ करेंगे तो अल्लाह भी हम से मुहब्बत करने लग जाएगा।

लोगों के दिलों में अल्लाह की मुहब्बत बिठाएंः

तो मेरे भाईयो! अल्ल्लाह ने अपनी मुहब्बत हर इन्सान के सीने में रख दी है यह नहीं निकल सकती। सारी काएनात की ताक़तें मिलकर भी इस दिल से अल्लाह की मुहब्बत नहीं निकाल सकतीं, लेकिन जब तक उसको उभारा नहीं जाएगा यह उभरेगी नहीं तो नबियों की मेहनत यह होती है कि लोगों के दिलों में अल्लाह की मुहब्बत का बीज जो पड़ा होता है उसको पानी देकर परवान चढ़ा देते थे तो वह दरख़्त बन कर फलदार हो जाता था। आज इस बीज को पानी नहीं लग रहा है। इस उम्मत की मेहनत यह है कि खुद भी अल्लाह की मुहब्बत में चलें और लोगों को भी इस मुहब्बत की तरफ़ बुलाएं और अल्लाह की तारीफ़ करना सीखें।

मेरे भाईयो! हम गाड़ी चलाना सीखते हैं, साइकिल चलाना सीखते हैं, हल चलाना सीखते हैं। हम ऐसे बोल सीखें जिससे हम अल्लाह की तारीफ़ कर सकें। हमारा रब खुश हो और वह

ज़ात है ही मदद के लिए। हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा अपनी तारीफ़ पसन्द है। इस लिए अल्लाह तआला ने क़ुरआने पाक की इब्तेदा अपनी तारीफ़ से फ़रमाई ﴾الحمد لله رب العالمين﴿ और हमें सिखाया है कि मुझ से मांगना है तो अल्हम्दुलिल्लाह से शुरू करो ताकि मैं ख़ुश होकर तुम्हें दे दूं तो इस वक़्त सारे जहां का रुख़ अल्लाह से हटा हुआ है। हम मेहनत कर रहे हैं और हमारे ज़िम्मे यह मेहनत है कि हम लोगों का रुख़ अल्लाह पाक की तरफ़ फेर दें। सारी दुनिया इस में परेशान है कि हमारे मसाइल नहीं हल हो रहे हैं और मसाइल के हल का जो सहारा तलाश किया जा रहा है वह अपने जैसी मख़लूक़ का तलाश किया जा रहा है। किसी ने हुकूमत को, किसी ने सियासत को, किसी ने किसी चीज़ को जबकि वह भी हमारे तरह मख़लक़ है वह नफ़ा दे न नुक़सान दे, न ज़िन्दगी का मालिक न मौत का मालिक, न इज़्ज़त का मालिक, न ज़िल्लत का मालिक, न बीमारी का मालिक, न सेहत का मालिक, न नफ़रत का मालिक। जिसके हाथ में कुछ नहीं उनसे हमने उम्मीदें वाबस्ता की हुई हैं। यह रास्ता आख़िर में जाकर हमें जहन्नुम में पहुँचा देगा। (इलूयाऊज़ु बिल्लाह)

अल्लाह किसी का मोहताज नहीं:

मेरे भाईयो! जो ख़ुद नहीं बना वह किसी की नहीं बना सका, जो ख़ुद बना हो वजूद में किसी का मोहताज न हो, ज़िन्दगी के लिए रोटी पानी का मोहताज न हो, काम के लिए आराम का मोहताज न हो, निज़ाम चलाने के लिए किसी का मोहताज न हो, जानने के लिए आँख और कान का मोहताज न हो, ख़बरों

के लिए औरों का मोहताज न हो, देने में उसके ख़ज़ाने कम न पड़ें, अता करने में घबराए नहीं, निज़ाम चलाने में जो थके नहीं, रात के अन्धेरे में और दिन के उजाले में जिसका देखना बराबर हो, दिल की धड़कन भी सुने और ज़ुबान का बोल भी सुने, समन्दर की तह में तैरने वाली मछलियों को भी देखे, हवा में उड़ने वाले परिन्दों को भी देखे। वह जैसे अपने सामने जिबराईल को देखता है ऐसे ही चटाई के नीचे चलने वाली च्यूंटी को भी देखता है। वह अल्लाह है और कोई नहीं। जो पैदा हुआ और मर गया अल्लाह की क़सम! वह किसी का काम न बना सकता है न बिगाड़ सकता है जो अपनी ज़िन्दगी पर क़ादिर नहीं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का इर्शाद इसे लिखकर अपने घरों में लटका दो ﴿عرفت ربی بفسخ عزائمی﴾ मैंने अपने इरादों के टूट जाने से अपने रब को पहचाना। वह कौन है जो मेरे इरादों को तोड़ देता है? कोई है जो मुझ से ज़्यादा ताक़त वर है जो मेरी चाहत में हाएल हो जाता है, मेरे परोग्रामों में रुकावट बन जाता है कोई और है जो मेरे इरादों के दर्मियान हाएल हो जाता है यह वह है जिसने आसमान व ज़मीन का थामा, सूरज को धहकाया, चाँद को चाँदनी बख़्शी बग़ैर लाइटों के, सितारों को झिलमिलाहट बख़्शी बग़ैर इलैक्ट्रिसिटी के, शहद को मीठा किया बग़ैर शक्कर के, आम को ख़ूबसूरत करके बग़ैर इत्र के महकाया, पानी का बहाने वाला, हवाओं को चलाने वाला, समन्दरों को रोकने वाला ﴿انا الذی امرت البحار وفقهت قولی﴾ मैंने समन्दरों को हुक्म दिया और उन्होंने मेरे हुक्म को समझा ﴿تاتی الامواج بامثال الجبال﴾ मौजे पहाड़ों की तरह आती हैं तो मेरा हुक्म हाएल हो जाता है। मेरे हुक्म की वजह से वापस हट जाती हैं। वह कौन सी ताक़त है

जिसने कराची के समन्दरों को मुलतान और सिन्ध की तरफ़ आने से रोका हुआ है, न कोई बन्ध नज़र आता है न कोई दीवार नज़र आती है। वे तूफ़ानी मौजे रास्ते में दम तोड़ देती हैं। हदीसे कुदसी बता रही है कि मैं वह रब हूँ कि जिसने समन्दर की लगाम को रोका हुआ है। जो पैदा हुआ और मर गया वह अल्लाह की क़सम किसी का कुछ नहीं बना सकता। जो अपने वजूद में किसी का मोहताज हो, अपनी ज़िन्दगी की बक़ा में किसी का मोहताज हो तो मैं कैसे उससे उम्मीद रखूं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु इशा की नमाज़ पढ़ कर घर की तरफ़ निकले तो साथी पहरा दे रहे हैं। कहा यह क्यों पहरा है? कहा आपको ख़तरा है इस लिए पहरा दे रहे हैं। फ़रमाया किस की वजह से पहरा दे रहे हो, ज़मीन वालों से या आसमान वालों से? कहा आसमान वालों से पहरा कौन दे सकता है, हम ज़मीन वालों से पहरा दे रहे हैं। फ़रमाया जाओ सो जाओ, आसमान वाला जब तय करता है तो ज़मीन वालों के पहरे नफ़ा नहीं देते, जब आसमान वाला तय नहीं करता तो यहां तीर व तलवार कुछ असर नहीं करता जाओ आराम करो वापस भेज दिया। तो मेरे भाईयो! आज मुसीबत पर अल्लाह की तरफ़ दौड़ ख़तम, तंगी में अल्लाह याद नहीं आता, मुसीबत व परेशानी में याद नहीं आता, जब सारे असबाब टूट जाते हैं जब अल्लाह को याद करते हैं। कोई कहे डाक्टर के पास जाओ, कोई कहे थाने दार के पास जाओ, कोई कहे वकील और जज के पास जाओ तो मैं अल्लाह से ताल्लुक़ काट कर अपने जैसी मख़लूक़ के पास जाऊँ, मुझ से बड़ा अहमक़ कौन होगा। हज़रत अमीर माविया रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ से हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु का वज़ीफ़ा मुक़र्रर

था दीनार व दरहम। एक दिन आने में देर हो गई और आई बड़ी तंगी तो ख़्याल आया कि ख़त लिख कर याद दिलाऊँ। कलम दवात मंगाया फिर एक दम छोड़ दिया। कागज़ सिरहाने रख कर सो गए। ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि मेरे बेटे होकर मख़लूक़ से मांगते हो? कहा तंगी आई तो फ़रमाया मेरे अल्लाह से क्यों नहीं मांगता, कहा क्या मांगू, फ़रमाया यह मांगो ऐ अल्लाह मेरे दिल में यक़ीन भर दे ﴿وقتر رجائ عمن سواك﴾ सारी मख़लूक़ से मेरी उम्मीदों को काट दें या अल्लाह तू ही मेरे दिल व दिमाग़ में समा जाए बाकी सारी मख़लूक़ से मेरी उम्मीदें कट जाएं

اللهم دعوت عنه قوتی ویقصر عنه عملی ولم تنتهی الیه رغبتی و
تبلغ مسئلتی ولم یجری علی لسانی مما اعطیت احد الاولین
والآخرین من الیقین تخف عنی به یا رب العالمین.

या अल्लाह तेरे ऊपर तवक्कुल का वह दर्जा जो मैं ताक़त से न ले सका अपनी उम्मीद व तसव्वुर भी क़ायम नहीं कर सका, मेरा सवाल अभी तक उस तक नहीं पहुँच सका, मेरी ज़ुबान पर भी यक़ीन का वह दर्जा नहीं आ सका, वह इतना ऊँचा दर्जा है यक़ीन का जो मेरी ज़ुबान पर भी नहीं आया, मेरी दायरा-ए-मेहनत में न आया वह दर्जा या अल्लाह तूने अपने बन्दों में से किसी को दिया है, वह दर्जा मुझे भी नसीब फ़रमा दे। क्या ज़बर्दस्त दुआ है, बेटा यह दुआ मांग, कुछ दिन के बाद एक लाख के बजाए पन्द्रह लाख पहुँच गया।

सब अल्लाह के चाहने से होता है:

तो मेरे भाईयो अल्लाह से उम्मीद ग़ैरों से ना उम्मीद ला

इलाहा ने सब को काट दिया, अल्लाह सिर्फ़ एक अल्लाह से जोड़ दिया। ला इलाहा किसी से कुछ नहीं होता इलल्लाह, अल्लाह से सब कुछ करता है। ला इलाहा कोई मेरे काम नहीं कर सकता इलल्लाह अल्लाह मेरे सारे काम करता है। ला इलाहा का मतलब हम यह समझते हैं कि हम अल्लाह के सिवा किसी को सज्दा नहीं करते। ला इलाहा कोई मुझे ज़िन्दगी नहीं दे सकता इलल्लाह अल्लाह ही मुझे ज़िन्दगी देगा तो मैं ज़िन्दा हूंगा। ला इलाहा कोई मुझे ग़नी नहीं कर सकता इलल्लाह अल्लाह ही चाहेगा तो मुझे माल मिलेगा, ला इलाहा कोई मुझे फ़क़ीर नहीं कर सकता इलल्लाह अल्लाह ही चाहेगा तो मैं फ़क़ीर बनूंगा, ला इलाहा कोई मेरी हिफ़ाज़त नहीं कर सकता इलल्लाह अल्लाह चाहेगा मेरी हिफ़ाज़त करेगा, ला इलाहा कोई किसी की मुहब्बत किसी के दिल में पैदा नहीं कर सकता इलल्लाह जब अल्लाह चाहेगा तो मुहब्बत पैदा होगी, ला इलाहा कोई मुझे ख़ुश नहीं कर सकता इलल्लाह अल्लाह चाहेगा मुझे ख़ुशी होगी, ला इलाहा कोई मुझे ग़म नहीं दे सकता इलल्लाह अल्लाह चाहेगा मेरे दिल में ग़म आएगा, ला इलाहा कोई ज़मीनों को सरसब्ज़ नहीं कर सकता, इलल्लाह अल्लाह चाहेगा सरसब्ज़ी आएगी, ला इलाहा ऐटम से हमारे मुल्क इज़्ज़त नहीं पाएगा इलल्लाह अल्लाह के चाहेगा तो इज़्ज़त मिलेगी। काएनात के ज़र्रे ज़र्रे पर अल्लाह तआला ने ला इलाहा की छुरी चलाई है। सबसे दिल हटा लो एक अल्लाह की तरफ़ दिल फेर लो। इब्राहीम का क़ौल बोलो नमाज़ के शुरू में सुब्हानाकल्लाहुम्मा पढ़ते हैं। यह एक दुआ नहीं बहुत सी दुआएं हैं। यहां पढ़ने की एक वजह यह भी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पढ़ी।

انی وجهت وجهی للذی فطر السموات
والارض حنیفاً وما انا من المشرکین

सबसे मुँह मोड़ कर अल्लाह की तरफ़ फिर गया, सबसे कट गया अल्लाह से जुड़ गया, मैं मुश्रिकीन में से नहीं हूँ। अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुनो ﴾اللهم اسلمت نفسی الیك﴿ ऐ अल्लाह मैंने अपने आपको आपके हवाल कर दिया ﴾وضعت امری الیك﴿ मेरे सारे काम तेरे सुपुर्द हो गए तू ही मेरा सहारा है मैंने अपनी कमर तेरे साथ लगा दी ﴾لا ملجا ولا منجامن الله الا الیك﴿ कोई जाए पनाह नहीं कोई निजात नहीं सिवाए तेरी ज़ात के ﴾رغبة ورهبة الیك﴿ शौक़ में भी ख़ौफ़ में भी तू ही मलजा, तू ही पनाह, तू ही मौतमद, तू ही वकील, तू ही कफ़ील, तू ही शहीद, तू ही रक़ीब

کفٰی باللّٰه شهیدا، کفٰی باللّٰه وکیلا، وکفٰی با للّٰه ولیا، وکفٰی با
للّٰه علیما، وکفٰی باللّٰه نصیرا، وکفٰی باللّٰه هادیا و نصیرا

यह तबलीग़ का काम है कि अल्लाह की तारीफ़ करके लोगों का अल्लाह का दीवाना बना दो। जिसका सौदा नहीं बिकता वह शाम तक सदा लगाता है। शाम को अपने सढ़े गले सेब बेच कर घर आता है। आवाज़ में इतनी ताक़त अल्लाह ने रखी है।

इमाम ज़ैनुलआबिदीन रह० की दुआः

भाईयों! हम अल्लाह की आवाज़ लगाना सीखें। कोई दुनिया की ताक़त ऐसी नहीं जो इन्सान के दिल से अल्लाह की मुहब्बत को हटा सके। आज तक हम अल्लाह से अपनी ज़रूरते मांगते हैं और मांगने का हुक्म भी है लेकिन यह भी कभी मांगा कि या

अल्लाह तू भी बता तू मुझसे क्या चाहता है ताकि मैं तेरी चाहत को पूरा करके तुझे खुश कर दूँ, कभी मांगा है? दूसरी मेहनत यह है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़्मत दिलों में बिठा कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर खड़ा कर देना। हम खड़ा नहीं कर सकते। यह दुनिया चूँकि दारुल असबाब है लिहाज़ा जब ला इलाहा इलल्लाह की दावत चलती है तो अल्लाह अपनी मुहब्बत भी देता है अपने नबी की मुहब्बत भी दे देता है। यह मुहब्बत ऐसी चीज़ नहीं कि घर में बैठे बैठे मिल जाए। यह ऐसा क़िस्सा नहीं है। हां धक्के खाने पड़ते हैं। अल्लाह मख़्लूक़ की मुहब्बत में गिरफ़्तार कर देगा और इसी में मर जाएगा। मस्अले को हल करने का जो तरीक़ा है ﴿ففروا الی اللّٰہ﴾ अल्लाह की तरफ़ दौड़ने का मतलब यह है कि अल्लाह के कलिमों में आ जाओ और उसके नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुबारक तरीक़ा अपना लो। यह तबलीग़ की मेहनत है कि हर मुसलमान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत को दुनिया में फैलाने के लिए जान व माल से मेहनत करे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत पर, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़िस्से, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ुर्बानियां, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़ज़ाइल दिमाग़ में मुस्तहज़र हों। उनको बयान करें, उनको बताएं, ताकि लोगों के दिलों में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत पैदा हो जाए। उम्मत सोई हुई है, उम्मत बेदार हो जाए। अभी मुहब्बत का वहा दर्जा नहीं है कि जो सुन्नत के ख़िलाफ़ ज़िन्दगी को हटा दे और

इत्तेबाए सुन्नत पर ज़िन्दगी को ले आए। हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ बुला रहे हैं और अल्लाह की तरफ़ बुला रहे हैं और अल्लाह के दीन की तरफ़ बुला रहे हैं, जन्नत की तरफ़ बुला रहे हैं, आख़िरत की तरफ़ बुला रहे हैं। सारी दुनिया को सुना रहे हैं कि भाईयो अल्लाह की मान लो मसुअला हल हो जाएगा। अल्लाह कहता है मुझसे मिलो मसुअला हल हो जाएगा। अब अल्लाह से कैसे मिलें। किसी एस पी से मिलने के लिए वक़्त लेना पड़ता है, अल्लाह कितने करीम हैं कि उन से मिलने के लिए कोई वक़्त नहीं लेना पड़ता, या अल्लाह कहो लब्बैक। इमाम ज़ैनुलआबिदीन रह० जब रात को उठते तो मुसल्ले पर यह मुनाजात करते थे ﴾اللهم غابت النجوم﴿ या अल्लाह सितारे भी सो गए ﴾عادت العيوم﴿ और लोगों की आँखें भी बोझल हो गयीं ﴾نام الملوك﴿ दुनिया के बादशाह सब सो गए ﴾وقامت الحراص﴿ और पहरेदार खड़े हो गए या अल्लाह ﴾انت الحي القيوم لا تاخذك سنة ولا نوم وبابك مفتوح للسائلين﴿ तेरा दरवाज़ा दिन को भी खुला हुआ है और रात को भी खुला हुआ है ﴾وعبدك ببابك﴿ या अल्लाह तेरा ग़ुलाम तेरे दर पे आया है।

अल्लाह तास्सुर से पाक हैः

भाईयों! अल्लाह दो जहां का बादशाह किसी वक़्त भी आप अल्लाह कहते हो तो आगे वह कई दफ़ा कहता है लब्बैक, लब्बैक, लब्बैक बोल, बोल मेरे बन्दे मैं हाज़िर हूँ तो अल्लाह के दरबार तक पहुँचने के लिए तो तौबा की ज़रूरत है कि सबसे तौबा करवाई जाए और खुद भी तौबा करें और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक तरीक़े पर आने की मेहनत की

जाए। यह इस उम्मत का काम है, जो नबी काम करते थे वही काम हमारा भी है कि अल्लाह की अज़मत, हैयबत सुना कर तौबा करवा देना। अल्लाह की प्यारी सिफ़्त यह है कि अल्लाह तास्सुर से पाक हैं । जब मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचाए जब तक उसका असर है मैं मॉफ़ नहीं करता। जब असर ख़तम हो जाता है तो आदमी मॉफ़ कर देता है। जब हम गुनाह करते हैं तो अल्लाह पर कोई असर नहीं होता। कहाँ तक उनकी मिसाल सुनें। हदीस क़ुद्सी है ऐ मेरे बन्दों ﴿ولو بلغ ذنوبك الى عنان السماء﴾ तू इतने गुनाह करे कि ज़मीन भर जाए, फ़िज़ा और ख़ला भी भर जाए, चाँद व सूरज भी भर जाएं और तेरे गुनाह आसमान की छत के साथ लग जाएं। एक बात इसमें यह भी वज़ाहत करने की है कि पूरी दुनिया के मुसलमान और काफ़िर मिल कर जो पहले थे, जो अब हैं, जो आएंगे, सब मिलकर गुनाह करें तो इतने नहीं हो सकते कि आसमान तक चले जाएं, अल्लाह कहते हैं कि तुम में से एक इतने गुनाह करे कि आसमान तक चले जाएं तो ग़म न करे। कोई यूं कह दे या अल्लाह मॉफ़ कर दें तो मैं उसी वक़्त मॉफ़ कर देता हूँ। जाओ कितने मज़े की बात है अगर अल्लाह तआला यूं कहता कि जो गुनाह करेगा कोई मॉफ़ी नहीं तो हम कुछ नहीं कर सकते थे लेकिन अल्लाह कहता है कि तुम्हारा सारा दामन गुनाह करने से दाग़दार हो जाता है तो तुम्हें मॉफ़ करने से तुम्हारा दामन ऐसा साफ़ हो जाता है, जैसे सफ़ेद कपड़ा धोने से साफ़ हो जाता है। तुम्हारी पूरी ज़िन्दगी की किताब ऐसी साफ़ कर दूंगा कि तुम्हारे गुनाह का एक दाग़ उस पर बाक़ी नहीं छोड़ूंगा। ऐसे मेहरबान आक़ा, ऐसे करीम आक़ा हैं हमारे अल्लाह तआला।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत की इन्तेहाः

रसूल को राज़ी करने वाले बन जाएं। हज़रत तल्हा बिन बरा रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आकर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पाँव चूमने लगे और कहने लगे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कोई कलिमा बता दें कि मैं उसको पूरा करके आपको राज़ी करूं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं राज़ी हूँ। कहा कुछ तो फ़रमाइए। यह जो बड़े बड़े ऑफ़िसरो से ताल्लुक़ क़ायम करते हैं तो बार बार कहते हैं कि सर कोई ख़िदमत तो बताइए हांलाकि यह उनसे छोटा है, क्या करना है आगे कोई काम भी निकालना है चाहे जाएज़ या नाजाएज़। यहाँ भी कोई और नक़्शा हो रहा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कोई काम तो बताइए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे हैं मैं क्या बताऊँ? भाई मैं तो राज़ी हूँ और ख़ुश हूँ, नहीं नहीं कुछ तो बताइए, नहीं छोड़ रहा है पाँव पकड़ा हुआ है चूमते जा रहे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अच्छा, उनका इम्तिहान लिया कि जाओ माँ का सिर ले कर आओ। यह आज का ज़माना नहीं था कि माँ बाप से नौकरों वाला सुलूक हो जाए। यह वह ज़माना था जहाँ माँ बाप के लिए गर्दनें कट जाती थीं। हाँ बातों से बात निकल आती है। बुख़ारी शरीफ़ में जो दूसरी रिवायत है कि जिबराईल अलैहिस्सलाम ने पूछा कि क़यामत की निशानी तो बताइए। आप ने फ़रमाया माँएं जो हैं उनके साथ नौकरानियों जैसा सुलूक होगा। माँ नौकर

से भी कम दर्जे में चली जाएगी तो समझ लो क़यामत का डंका बजने वाला है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम माँ का सिर लेकर आओ तो यह उठे और तलवार लेकर भागे जैसे किसी काफ़िर का सिर लेने जा रहे हैं फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पीछे दौड़ाया कि अरे भाई! बुलाओ बुलाओ, कहाँ मैं तो जोड़ने आया हूँ तोड़ने नहीं आया हूँ सिर्फ़ मैं तुम्हें देख रहा था कि तुम कहाँ तक हो।

फिर यह जब हो गए बीमार वह जगह मैं देख कर आया हूँ जहाँ वह बीमार हुए और उनका इन्तेक़ाल हुआ मदीने में अब भी इस जगह निशानी मौजूद है लेकिन हर एक को पता नहीं चलता लेकिन जो मदीने के आसार जानने वाले हैं वे बता सकते हैं। जब मैं वहां गया उस वह वक़्त मस्जिदे नबवी से चार पाँच मील का फ़ासला था। जब हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हु बीमार हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हाल पूछने के लिए आए तो रास्ते में यहूद का क़बीला बनू क़रीज़ा रहता था। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वहाँ पहुँचे तो देख कर फ़रमाया लगता है कि यह बचेगा नहीं। जब इनका इन्तेक़ाल हो जाए तो मुझे बुलाना मैं इनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ाऊँगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने के बाद हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु को होश आ गया, कहने लगे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आए थे कहा हाँ। कहा क्या कहा था। कहा गया कि यह कहा था, कहने लगे न न उनको न बुलाना। जब मैं मर जाऊँ तो उनको मत बुलाना। रास्ते में यहूदी हैं रात का वक़्त होगा कोई तकलीफ़ पहुँचा दे तो ऐसा करना जब मैं मर जाऊँ तो दफ़न करके फ़ज्र की नमाज़ वहाँ जाकर पढ़ लेना और फिर

बता देना। वह जिस मस्जिद में नमाज़ पढ़ते थे वह मस्जिद अभी है उसके आसार खड़े हैं। जब इनका इन्तेक़ाल हुआ तो इनकी तजहीज़ तकफ़ीन करते करते फ़ज्र हो गई तो उनकी मैयत को लेकर जन्नतुल बक़ी आए और फ़ज्र से पहले उनको दफ़न कर दिया फिर फ़ज्र की नमाज़ में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इत्तेला दी कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु का इन्तेक़ाल हो गया, कहा अल्लाह तुम्हारा भला करे मैं ने कहा था मैं जनाज़ा पढ़ाऊँगा। कहा उन्होंने हमें मना कर दिया था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ न हो फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी क़ब्र पर जाकर हाथ उठाए ﴿اللهم ان انقل طلحه تضحك اليك وضحك اليك﴾ या अल्लाह जब तल्हा तेरे दरबार में पेश हो तो तू उसे देख कर मुस्करा रहा हो और वह तुम्हें देख कर मुस्करा रहा हो। यह दुआ दी।

दुनिया और आख़िरत के तमाम मसाइल का हल सिर्फ़ अल्लाह तआला के पास है:

तो भाईयो! दुनिया और आख़िरत बनानी है तो अल्लाह से जुड़ो और अल्लाह से जुड़ना है तो उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जुड़ो। उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को सीखना और उसकी दावत देना कि हमारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी सबसे आला है, अरफ़ा है, सब इसमें है, सबसे अशरफ़ है, सबसे अफ़ज़ल है, सबके तरीक़े टूट गए सिर्फ़ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा बाक़ी है जिस पर अमल करके जन्नत पाइए। जिसे

दुनिया चाहिए, जिसे औलाद चाहिए, जिसे मुहब्बतें चाहिएं, जिसे जो चाहिए दुनिया और आख़िरत की भलाई तो वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े बग़ैर नहीं मिल सकती। हम आप नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ दावत दें जैसा कि सियासत दान लोग कहते हैं कि हमें वोट दे दो हम तुम्हारे मस्अले हल कर देंगे तो हम कहते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर आ जाओ अल्लाह तुम्हारे मस्ले हल कर देगा। हम भी दावत दें। लोग कहते हैं कि मुस्लिम लीग को वोट दे दो सड़कें बन जाएंगी, अस्पताल बन जाएंगे, बिजली आ जाएगी मिसाल दे रहा हूँ, नहीं नहीं ये हम से ज़्यादा ग़रीब हैं जो हम से ज़्यादा फ़क़ीर हो वह हमें क्या ग़नी करेगा, जो हम से ज़्यादा ख़ौफ़ ज़दा हो वह हमें क्या अमन देगा। जो एस पी साहब बाज़ार में आ रहा हो तो आगे पीछे दाएं बाएं चारों तरफ़ पहरा। हम भी कैसे सादा मुसलमान हैं उन से कहते हैं कि हमें अमन दो, अमन क़ायम करो, क्या ये आपको अमन देंगे। उससे अमन मांगो जिसकी सिफ़्त मामून है। ये खुद महफ़ूज़ नहीं आपको क्या अमन देंगे, अमन उनसे मांगो जो खुद मामून हों और महफ़ूज़ हों और वह सिर्फ़ अल्लाह है। उनसे क्यों मांग रहे हो जो खुद पहरे के मोहताज हैं।

दुनिया और आख़िरत के मसाइल अल्लाह के हाथ में हैं उनसे लेने का रास्ता मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी है। ऊपर आसमान में अल्लाह एक और ज़मीन में हबीब एक, फिर जो इस तरीक़े पर आता है वह भी अल्लाह का हबीब बन जाता है। अल्लाह ने किसी नबी की जान की क़सम नहीं खाई, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शहर की क़सम खाई।

जिस की इज़्ज़त की ताज अल्लाह रखे और उसकी ज़िन्दगी हम उठा कर कूड़े में फेंक दे और कहें कि हमारे मस्अले हल नहीं होते। लेकिन सुन्नत की ख़ैर है। कोई बात नहीं सुन्नत ही तो है, क्या हरज है सुन्नत को छोड़ना इतना बड़ जुर्म नहीं लेकिन सुन्नत को हल्का समझना हराम है और यह बोल भी सुन्नत को छोड़ने से बड़ा जुर्म है। जो कोई अल्लाह का हुक्म तोड़ दे तो वह काफ़िर नहीं होता लेकिन अल्लाह के हुक्म का मज़ाक़ उड़ाए तो काफ़िर हो जाता है। नमाज़ छोड़ने से काफ़िर नहीं होता लेकिन नमाज़ का मज़ाक़ उड़ाने से काफ़िर हो जाएगा। एक बोरी खाद कपास से कम कर दिया जाए तो कपास का रंग पीला पड़ जाता है तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत छोड़ने से ईमान पीला नहीं पड़ेगा। आप का ईमान इतना ताक़त वर है कि सुन्नत छोड़ने उसको कुछ नहीं होता। यह कहाँ की नादानी है और जिहालत है तो इस लिए मेरे भाईयो! हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़्मत दिलों में उतारना हमारी मेहनत है। यूँ आता है सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के बारे में कि अगर उनको सुन्नत के ख़िलाफ़ कहा जाता तो उनकी आँखों में ख़ून भरने लगता था कि तुम हमें अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े के ख़िलाफ़ करवाना चाहते हो। अल्लाह के बाद सबसे बड़े हमारे मोहसिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। इससे बड़ा एहसान कोई न कर सका कि अपनी उम्मत के लिए पेट पर पत्थर बांध लिए, अपनी बेटी को भूका रखा, अपनी उम्मत के लिए अपनी औलाद की क़ुर्बानी दी उम्मत के लिए। हर मुसलमान आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी सीख

ले। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत अर्श से लेकर फ़रिश्तों तक, नबियों के भी नबी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का इर्शाद है कि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी दरख़्त के पास से गुज़रते तो दरख़्त से आवाज़ आती अस्सलाम अलैकुम या रसूलुल्लाह। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पत्थर से सलाम की आवाज़ आती। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अल्लाह ने दस नाम रखे, क्योंकि मुहब्बत ज़्यादा है एक नाम से अदा नहीं होती जैसा माँ अपने बच्चे को पुकारती है मेरा जिगर, मेरा दिल, मेरी जान, मेरी आँख वग़ैरह वग़ैरह। कभी दिल बना दिया, कभी आँख बना दिया क्योंकि माँ के अन्दर मुहब्बत ज़्यादा है इस लिए मुख़तलिफ़ नामों से पुकारती है। अल्लाह ने अपने हबीब के दस नाम रखे।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े को अपनाने में दोनों जहान की कामयाबी हैः

तो मेरे भाईयो! हम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को अपनाएं। अगर दुनिया और आख़िरत बनानी है तो अल्लाह और रसूल के दामन में आएं तो सब मसाइल हल होंगे फिर किसी के पीछे भागने की ज़रूरत नहीं।

तबलीग़ कोई जमात नहीं, तबलीग़ को जमात कहना ग़ल्ती है। हर मुसलमान के ज़िम्मे नमाज़ है इसी तरह हर इन्सान जो ख़त्मे नबुव्वत को मानता है तो उसके ज़िम्मे तबलीग़ का काम है। बहुत से मुसलमान नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात का एहतिमाम नहीं करते तो क्या ये एहकामात मॉफ़ हो गए हैं आज का मुसलमान तबलीग़ का काम नहीं कर रहा है तो इससे तबलीग़

तो मॉफ़ नहीं हो गई। यह ज़िम्मा तबलीग़ जमात ने नहीं लगाया अगर आप हम से जोड़ेंगे तो हमें देखिए कि हम अच्छे हैं तो आप कहेंगे तबलीग़ का काम अच्छा है। अगर हम बुरे हैं तो आप कहेंगे कि तबलीग़ का काम बुरा है। नहीं भाई तबलीग़ ख़त्में नबुव्वत का काम है। आप इसको नबुव्वत का काम समझें तो आप हमारी बुराई से असर नहीं लेंगे जैसे किसी नमाज़ी के अन्दर बुराई देख कर नमाज़ से नफ़रत नहीं आती लेकिन उसकी नफ़रत आती है नमाज़ की नफ़रत नहीं आती और तब्लीग़ का क़िस्सा यह है कि किसी तबलीग़ी को देख कर तबलीग़ से नफ़रत शुरू कर दो क्यों इसको तबलीग़ी जमात का काम समझते हैं, इसे राइविन्ड से मन्सूब समझते हैं, नहीं भाई तबलीग़ को ख़त्मे नबुव्वत से जोड़िए अगर नमाज़ का मैयार नमाज़ी को बनाया जाए तो आज नमाज़ छोड़ देना चाहिए। अगर हज का मैयार हाजी को बनाया जाए तो हज आज हज छोड़ देना चाहिए इसी तरह तबलीग़ का मैयार तबलीग़ वालों को बनाया जाए तो वाक़ई तबलीग़ छोड़ दें लेकिन मेरे भाईयो नमाज़ का मैयार नमाज़ी नहीं है अल्लाह का अम्र है, हज का मैयार हाजी नहीं अल्लाह का हुक्म है, रोज़े का मैयार रोज़दार नहीं अल्लाह का हुक्म है इसी तरह तबलीग़ का मैयार तबलीग़ तबलीग़ वाले नहीं हैं बलिक तबलीग़ का मैयार ख़त्मे नबुव्वत का अक़ीदा है और उसके रसूल का हुक्म है। ﴿فليبلغ الشاهد الغائب﴾ मेरे एहकाम ग़ाएबीन तक पहुँचा दो अगर आप इसे तबलीग़ वालों से जोड़ेंगे तो आप तबलीग़ से नफ़रत करेंगे लेकिन तबलीग़ वालों से नहीं करेंगे, एक ग़लत फ़हमी पैदा हो गई कि तबलीग़ को जमात समझते हैं और तबलीग़ राइविन्ड वालों का काम समझते हैं जो

बिस्तर उठा कर जा रहे हैं ये तबलीग़ वाले हैं हम तबलीग़ वाले कोई नहीं। यह ग़लत फ़हमी दूर करने की ज़रूरत है। हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दस बरस मक्का मुकर्रमा में मेहनत की नबुव्वत के गयारहवें साल मदीना मुनव्वरा आए, अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु वग़ैरह को दावत दी, ये मुसलमान हो गए, अगले साल बारह आदमी आए।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आख़री ख़ुत्बा दिया जिसके आख़री अल्फ़ाज़ ये हैं ﴿فليبلغ الشاهد الغائب﴾ अब मेरा पैग़ाम आगे पहुँचाना तुम्हारे ज़िम्मे हो गया। यह सारा पस मन्ज़र देखने के बाद आप ग़ौर करें कि यह हदीस किन मरहलों से गुज़र कर बोली गई है कि मेरा पैग़ाम आगे पहुँचा दो, तो तबलीग़ को हम से न जोड़ें अच्छा एक बात और है जो आदमी चिल्ला न लगाया तो उसके लिए झूठ बोलना और जो चिल्ला लगाए उसके लिए झूठ बोलना हलाल हो गया। दाढ़ी रखकर झूठ बोल रहा है और जो दाढ़ी मुंढवाते हैं उनके लिए झूठ बोलना हलाल हो जाता है। देखो जी दाढ़ी रखकर झूठ बोल रहा है तो क्या जो दाढ़ी न रखे उसके लिए झूठ बोलना हलाल हो गया है। अब दाढ़ी मुंडवा लें ताकि झूठ बोलना आसान हो जाए। ऐसी जहालत आ गई है कि दाढ़ी मुंडवा लो सारा हराम जाएज़ दाढ़ी रख लो तो सारा हराम नाफ़िज़ करो। भाई अब झूठ बोलना भी छोड़ दो, नाप तोल में कमी करना भी छोड़ दो क्योंकि दाढ़ी रख ली है। अरे ख़ुदा के बन्दों यह पाबन्दी कलिमे ने लगाई है दाढ़ी ने नहीं लगाई है। पाबन्दी कलिमे ने लगाई है तबलीग़ ने नहीं लगाई। तबलीग़ में है फिर भी झूठ बोल रहा है और तबलीग़ में गया फिर भी बीवी का हक़ ज़ाए कर रहा है, तबलीग़ में होकर

बदतमीज़ी कर रहा है। बदतमीज़ी न करो कलिमे ने कहा है, तबलीग़ नहीं कहा है, कलिमे ने कहा झूठ मत बोलो, कलिमे ने कहा कि ज़िना न करो, कलिमे ने कहा नाप तोल में कमी न करो, कलिमे ने कहा शराब न पियो, तबलीग ने कब कहा है? तबलीग़ भी एक हुक्म है और हुक्मों की तरह। नमाज़ भी एक हुक्म है तबलीग़ भी एक हुक्म है। इसी तरह रोज़ा, ज़कात, हज की तरह तबलीग़ भी एक हुक्म है। नाप तोल में कमी न करना भी एक हुक्म है, झूठ छोड़ना भी एक हुक्म है, दाढ़ी रखना भी एक हुक्म है तो इस ग़लत फ़हमी से मेरे दोस्तों भाईयो निकलने की ज़रूरत है।

ज़ाहिर व बातिन एक करोः

यह तबलीग़ सिर्फ़ हमारा ज़िम्मा नहीं है जो चिल्ला लगाए वह तबलीग़ वाला जो चिल्ला न लगाए वह आज़ाद है। जो दाढ़ी रखे वह पूरी शरीअ़त पर चले जो दाढ़ी न रखे वह मादर पिदर आज़ाद है। यह शैतान ने धोका दिया अन्दर का ठीक होना चाहिए बाहर की ख़ैर है। मैं आपको गन्दे गिलास में पानी दूं नापाक न हो, गन्दे से मुराद कहीं सालन लगा हुआ है, कहीं तरी लगी हुई है, कहीं तिनके लगे हुए हैं और पानी में कुछ रेत पड़ी हुई हो और कुछ तिनके पड़े हुए हों आपकी बीवी आपको ऐसे गिलास में पानी पेश करे तो आप कहेंगे कैसी बदतमीज़ है तुझे नज़र नहीं आता गन्दा गिलास और पानी भी में भी तिनके, वह कहे कि पानी बिल्कुल पाक है, गिलास पाक है पानी पाक है। इसका बातिन पाक है यानी अन्दर से पाक है आप इसके ज़ाहिर को न देखें ज़ाहिर की ख़ैर है, ज़ाहिर से कुछ नहीं होता सिर्फ़

रोटी ही तो लगी हुई है, थोड़ा सा कल का सालन ही तो लगा हुआ है, थोड़ी सी दाल ही तो लगी हुई है, नापाक थोड़े है? नापाक होने से बातिन ख़राब होता है। गन्दे होने से ज़ाहिर ख़राब होता है तो आप वही गिलास उसके मुँह पर मार देंगे कि साफ़ गिलास में पानी लाओ।

अपने लिए बातिन भी ठीक हो ज़ाहिर भी ठीक हो और अल्लाह के लिए बातिन हो गन्दा ज़ाहिर हो ठीक, जिस परनाले में गन्दगी पड़ी तो क्या उसमें पाक पानी आ सकता है। जिस परनाले में पाख़ाना पड़ा हो क्या उसमें से पानी पाक आ सकता है जिसका ज़ाहिर गन्दा हो उस का बातिन ठीक कैसे हो सकता है?

जिस का ज़ाहिर नबी के तरीक़े के ख़िलाफ़ उसका बातिन कैसे नबी के तरीक़े पर हो सकता है तो मेरे भाईयो! तबलीग़ अल्लाह के रसूल का दिया हुआ काम है।

सारी दुनिया के इन्सानों को दीन की दावत देना हमारे ज़िम्मे है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को वजूद देना यह दुनिया के इन्सानों पर सबसे बड़ा एहसान है।

सबसे बड़ा मोहसिन आज वह जो लोगों को अल्लाह से मिला दे और रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी पर लादे यह सबसे बड़ा एहसान करना वाला है। सारी दुनिया हमारा मैदान है।

हमारी ज़िन्दगी कैसी होनी चाहिए?

पूरे पाकिस्तान में एक भी बेनमाज़ी न हो तो फिर देखना

अल्लाह की रहमत के दरवाज़े कैसे खुलते हैं। अज़ान हो जाए तो सारे बाज़ार बन्द हो जाएं। कैसी अजीब बात है हड़ताल हो जाए तो बाज़ार ज़बरदस्ती बन्द करवाने पड़ते हैं, अज़ान हो तो सारे बाज़ार खुले पड़े हैं अज़ान के बाद बाज़ार बन्द करवाएं फिर देखो कैसा सोना बरसता है आपकी दुकानों में।

बाज़ार सुनसान हो जाएं, क्या हुआ नमाज़ हो रही है। इधर दुकानों को भी नमाज़ के ताबे कर देते हैं। कहीं एक बजे, कहीं डेढ़ बजे, कहीं दो बजे। एक भाई इधर पढ़ लें एक भाई उधर पढ़ लें। दुकानें चलती रहें दुकान बन्द न हो। बन्द करो दुकानों को अज़ान के बाद। जो काम अज़ान से पहले बन रहा था अभी वही काम दुकान बन्द करने से बनेगा। अल्लाह के सामने सिर झुकाओ कि नमाज़ से इश्क़ हो जाए। हदीस में ﴿جعلت قرة عينى في الصلوة﴾ मेरी आँखों की ठन्डक नमाज़ में है जो सही तरीके से नमाज़ पढ़ता है अल्लाह की क़सम मुसल्ले पर बैठ कर अल्लाह उसका मस्अला हल कर देगा फिर थानदार या किसी वज़ीर के पास जाना नहीं पड़ेगा। इसको इसकी जाएनमाज़ काफ़ी है। कौन सी नमाज़? जब कहे अल्लाहु अक्बर तो सलाम फेरने तक और कोई न आने पाए। निगह बान बिठा दें। ख़बरदार! कोई न आए। यह नमाज़ आप सीख लें। अल्लाहु अक्बर, अल्लाह के सिवा कोई सलाम फेरने तक आप हों और अल्लाह हो फिर देखो उस नमाज़ से क्या होता है। नमाज़ पढ़िए। यह नमाज़ ऐसे नहीं आएगी, मेहनत करने से यह पैदा होगी। इतनी जाज़बियत है नमाज़ में कि एक शख़्स कहता है कि मैं हरम शरीफ़ में बैठा हुआ था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आए जूता हाथ में दाढ़ी से वुज़ू का पानी टपक रहा है। जूते को रखा नमाज़ की नियत

बांधी। कहता है मैं देखता रहा कि यह कहां रुकू करते हैं जो गाड़ी चली चलती रही हत्ताकि वन्नास पे जा कर रुकू किया एक रकूअत में पूरा क़ुरआन। हमें तो ﴿قل هو الله احد﴾ भी लम्बी नज़र आती है तो नमाज़ सीखो भाई लोग चारों रकूआत में क़ुल हुवल्लाह पढ़ रहें हैं। चार सूरतें तो याद कर लें ताकि हर रकूअत में अलग अलग सूरत पढ़ ली जाए। एक ही सूरत को चारों रकूआत में पढ़ना मकरूह है नमाज़ तो हो जाएगी कम से कम चार सूरतें याद कर लें। दुआए क़ुनूत नहीं आती तो वहां भी क़ुल हुवल्लाहु अहद।

अब भाई क़ुल हुवल्लाहु अहद से दुआए क़ुनूत कैसे अदा होगी अगर ﴿ربنا اتنا فى الدنيا﴾ पढ़ लें तो ज़िक्र तो हो जाएगा लेकिन दुआए क़ुनूत की जगह क़ुल हुवल्लाहु अहद पढ़ लें तो नमाज़ लौटाना पड़ेगी, अगर दुआए क़ुनूत नहीं आती तो ﴿رب اجعلنى مقيم الصلوة﴾ पढ़ लें या ﴿ربنا اتنا فى الدنيا﴾ पढ़ लें तो नमाज़ हो जाएगी दुआए क़ुनूत याद होने तक। वितर क़ुल हुवल्लाहु अहद पढ़ने से अदा नहीं होती। मेरे भाईयो नमाज़ों को सीखें ऐसी नमाज़ अल्लाहु अक्बर से लेकर सलाम तक किसी का ध्यान न आए और अपने अख़लाक़ ठीक करना, नबी के अख़लाक़ सीखना, अपने से दूसरों को नफ़ा पहुँचाना, नबुव्वत वाले अख़लाक़ अपने अन्दर पैदा करें, जो न दे उसको दो, जो तोड़े उससे जोड़ो, जो बुरा करे उससे अच्छा करो, जो ज़ुल्म करे उसे माफ़ करो। जो यह चार काम करेगा अल्लाह उसका हाथ पकड़ कर इज़्ज़त की चोटी पर बिठा देगा। हमारा माशरा इन्तेक़ामी माशरा है। हमारी माशरत में नबुव्वत वाले अख़लाक़ कोई नहीं। अजीब बात है जो सलाम करे उसे सलाम करते हैं

जो न करे उसको नहीं करते। जो पूछ ले उसे पूछते हैं जो न पूछे उसे नहीं पूछते। जानवर को रोटी दिखाई वह क़रीब हो गया डंडा दिखाया तो वह दूर हो गया। यह तो जानवर की सिफ़्त है। मुसलमान की सिफ़्त यह हो कि जो सलाम न करे उसको भी सलाम करो, जो न दे उसको भी जा कर दो, जो ज़ुल्म करे उसे माफ़ करो, जो बुरा सुलूक करे उससे अच्छा सुलूक करो। यह चार बुनियादें हैं हुज़ुर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाले अख़लाक़ को अपनाने की।

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु आए या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे पड़ौस में एक औरत है दिन को रोज़ा रखती है रात को तहज्जुद पढ़ती है लेकिन दूसरे पड़ौसियों को तंग करती है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कोई भलाई नहीं यह दोज़ख़ में जाएगी, कोई ख़ैर नहीं।

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं चाहता हूँ कि मेरा ईमान कामिल हो जाए तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अख़लाक़ अच्छा बना ले तेरा ईमान कामिल हो जाएगा, तू अपने अख़लाक़ ठीक कर ले।

अब पूरी दुनिया में दावत देने के लिए ये आमाल हैं, अख़लाक़ बनाना, दावत देना, तालीम करना, इबादत करना, ख़िदमत करना।

हमारा दीन मुकम्मल हैः

आप ग़ौर फ़रमाएं सारी दुनिया में दीन फैलाने का ज़रिया

दावत है। दावत से ही दीन फैलता है और अल्लाह की तमाम रहमतों को लेने का ज़रिया इबादत है जितनी इबादत करेगा उतनी ही अल्लाह की रहमतें आएंगी। तमाम भलाईयों को सीखने का ज़रिया तालीम है। तालीम में जो कोई महारत हासिल करेगा, कुछ इल्म सीखेगा तब जाकर भलाईयों का पता चलेगा। तमाम लोगों में उलफ़त व मुहब्बतपैदा करने का ज़रिया ख़िदमत है। ये नबुव्वत वाले आमाल हैं, ये दीन की मेहनत करने वालों के अख़लाक़ हैं। इस उम्मत को यह काम मिला है कि ख़ुद अल्लाह से जुड़ कर औरों को अल्लाह से जोड़ना। इस पर इस उम्मत को सबसे आला और सबसे ऊँचा मक़ाम मिला है। सबसे अफ़ज़लियत है। मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से पूछा कि मेरी उम्मत से अच्छी कोई उम्मत है, आपने उन पर बादलों से साया किया, मन-सलवा खिलाया? अल्लाह तआला ने फ़रमाया मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत को सारी उम्मतों पर वह फ़ज़ीलत हासिल है जो मुझे अपनी मख़लूक़ात पर हासिल है।

अमल थोड़ा और अज्र ज़्यादा, यह इस उम्मत की शान हैः

सोच लो भाईयो! ये सबसे बाद में आए सबसे पहले जन्नत में जाएंगे। यहूदी और इसाई ऐतराज़ करेंगे कि यह बाद में आए और पहले जा रहे हैं। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे मैंने तुम से जो वायदा किया पूरा कर दिया? कहेंगे हां वह तो पूरा कर दिया। फिर फ़रमाएंगे तुम कौन हो दख़ल देने वाले, मेरी मरज़ी है जिसे जितना चाहूँ उतना दूं। बाद में आए पहले जा रहे हैं, काम थोड़ा अज्र ज़्यादा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

बनी इसराईल में चार नबियों ने अस्सी साल तक जिहाद किया तो सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ग़मगीन हो गए हमारी तो अस्सी साल उम्र भी नहीं। अल्लाह ने कहा लो ﴿ليلة القدر خير من الف شهر﴾ ऐ मेरे हबीब की उम्मत तुम एक रात खड़े होकर मेरी इबादत करो तो अस्सी साल के जिहाद से ज़्यादा अज्र दे दूंगा। इस उम्मत को क़यामत के दिन नबियों जैसी शान मिलेगी। ये सबसे ऊँची जगह पर होगी। उस दिन सारी उम्मतें तमन्ना करेंगी कि काश हम भी इस उम्मत में होते। नमाज़ उनकी ज़्यादा, रोज़े उनके ज़्यादा, उनकी ज़कात सौ में दस रूपए, हमारी सौ में ढाई रूपए, उनका रोज़ा चौबीस घन्टे का, हमारा रोज़ा सुबह से शाम तक, उनका रोज़ा बोलने से भी टूट जाएगा सच बोलें तो भी रोज़ा टूट जाएगा हम झूठ भी बोलें तो हमारा रोज़ा नहीं टूटेगा ﴿فلن اكلم اليوم انسيا﴾ मरयम कह रहीं हैं आज मेरा रोज़ा है मुझे बोलना कोई नहीं। हम सारा दिन झूठ बोलें रोज़ा टूटेगा नहीं। ऐसी आसानियां, ऐसी गुन्जाइशें तो फ़ज़ीलत किस चीज़ की वजह से? ये घरों में नहीं बैठते मेरे पैग़ाम को लेकर दुनिया में फिरते हैं:-

कभी अर्श पर कभी फ़र्श पर कभी दर ब दर कभी उनके घर
ग़मे आशिक़ी तेरा शुक्रिया मैं कहां से गुज़र गया

यानी कोई क़रार नहीं, कोई उनका घर नहीं। सारा जहां उनका घर है। हर मुल्क मुल्क मा अस्त मुल्क। उनकी सुबह उनकी शाम, जैसे सूरज चाँद उनकी गर्दिश है उसी तेज़ रफ़्तारी से उनके किलोमीटर फिरने की गर्दिश है। जैसे सूरज चाँद और उनकी गर्दिश से आलम रोशन होता है ऐसे ही इनकी गर्दिश से

लोगों के दिल रोशन होते हैं। इनकी गर्दिश मिटेगी तो जैसे सूरज गुरूब होता है तो ऐसे ही रात की अन्धेरी आ जाती है। जब इनके ईमान की मेहनत गर्दिश करेगी तो लोगों के दिलों में दुनिया तारीक हो जाएगी, रात छा जाएगी। यह तो जान खपाने की मेहनत है। सब कुछ लग गया फिर सस्ता सौदा है कि उनके और नबियों के दर्मियान सिर्फ़ एक दर्जे का फ़र्क़ होगा और अल्लाह तआला ने जन्नतुल फ़िरदौस को अपने हाथ से बनाया है बाक़ी सारी जन्नत को अपने अम्रे कुन से बनाया है। जन्नतुल फ़िरदौस को अपने हाथ से बनाया है फिर उस पर मोहर लगाई किसी को नहीं दिखाई फिर दिन में पाँच मर्तबा उसको खोलता है और उसको कहता है ﴿ازدادی طیبا لا ولیائی وازدادی حسنا لأولیائی.﴾ जन्नत मेरे दोस्तों के लिए खुशबूदार हो जा, मेरे दोस्तों के लिए ख़ूबसूरत हो जा।

हाँ भाई इस मक़ाम को हासिल करने के लिए अल्लाह के रास्ते में अपना नाम लिखवाएं। जज़ाकल्लाह कौन कौन तैयार है?

हिदायत अल्लाह के हाथ में है

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه ونعوذبالله
من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله فلا مضل له
ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الاالله وحده لا
شريك له ونشهد ان سيدنا ومولنامحمدا عبده ورسوله وصلى
الله تعالى عليه وعلى اله واصحابه وبارك وسلم امابعد

قال الله رتعالى فمن اهتدى فإنما يهتدى لنفسى ومن ضل فإنما يضل
عليها ولا تزروازرة وزراخرى، وما كان عمذبين حتى نبعث رسولا،

قال النبى صلى عليه وسلما وان ربى داعى وانه سائلى هل بلغت؟ فاقول
يا رب قد بلغت، فليبلغ الشاهد الغائب اوكما قال صلى الله عليه وسلم.

उम्र कम इल्म ज़्यादाः

मेरे भाईयो और दोस्तो! हर आदमी अपने इल्म के मुताबिक़ अपने मसाइल को हल करने की कोशिश करता है। कोई इन्सान अपने मसाइल को ख़राब करने के लिए क़दम कभी नहीं उठाता, अपने इल्म के मुताबिक़ सोचता है। बड़े बड़े साइंसदान, बड़े बड़े डाक्टर सब ही मसाइल का शिकार हैं और उनको बहुत थोड़ा सा इल्म हासिल है। किसी लिहाज़ से बहुत बड़ा आलिम है हैदराबाद में उस जैसा आलिम और कोई नहीं, बहुत बड़ा डाक्टर है हैदराबाद में उस जैसा डाक्टर और कोई नहीं। यह इस का मतलब है, यह नहीं कि सारे उलूम को उसने जान लिया है या

सारी शरीअ्त को उसने जान लिया या सारे मेडिकल को उसने जान लिया है अगर कोई इसका यह मतलब लेता है तो वह बेचारा नादान है। इन्सान जो नहीं जानता वह हमेशा ज़्यादा रहेगा और जो जानता है वह हमेशा थोड़ा रहेगा। पचास साल में आप क्या सीखना चाहते हैं। इतनी सारी ज़िन्दगी में वसाइल थोड़े हैं, वक़्त बहुत थोड़ा है। पचास साल में आप किस इल्म में महारत हासिल करना चाहते हैं? दुनिया के छोटे से छोटे फ़न में भी इतनी वुसअत है कि पचास साल तो क्या पांच सौ साल भी उस में कुछ नहीं तो हमारे पास आलाते इल्म तो मौजूद हैं अक़्ल है, दिमाग़ है, दिल है, सोच है लेकिन वक़्त बहुत थोड़ा है। पचास साठ साल में कोई भी किसी लाइन में कामिल नहीं हो सकता। यक़ीनन ज़िन्दगी की जिस भी चोटी को वह उबूर करेगा तो आगे बहुत बड़ी चोटियां उसको नज़र आएंगी यहां तक कि उसको मानना पड़ेगा कि मैं जाहिल हूँ। एक छोटा सा सैल है इन्सान के जिस्म में वह हमें नज़र नहीं आता सिवाए दूर बीन के कि उसके साथ देखने से नज़र आता है जब वह इन्सोलीन बनाना छोड़ देता है तो उसको कन्ट्रोल करने से शूगर का जो सिस्टम है वह ख़राब हो जाता है। इस एक सैल से जो दूरबीन से नज़र आता है बग़ैर उसके नज़र नहीं आता। इस वक़्त तक उस पर लाखों इन्सान पी. एच. डी. कर चुके हैं और अरबों डालर इस पर ख़र्च हो चुके हैं तो इस सैल फ़न्कशन का पूरा हाल मालूम नहीं हो सका तो इन्सानी जिस्म में कुल पच्चीस खरब सैल शामिल हैं। ये सारे अन्दाज़े हैं। पच्चीस छब्बीस खरब सैल से बना हुआ इन्सान है तो इक सैल में जहां का दिमाग़ और इतने पैसे लगे और नतीजा यही है कि अभी तक पूरा फंन्कशन

मालूम नहीं हो सका तो फिर यहां आलिम होने का कौन दावा करेगा। कोई भी इल्म हो खेती का इल्म हो, तिजारत का इल्म हो, सियासत का इल्म हो, क़ानून का इल्म हो, हिसाब किताब का इल्म हो, किसी में भी सिवाए जिहालत के एतराफ़ के कोई चारा नहीं। यह तो मानी हुई बात है कि नाक़िस इल्म वाले का मंसूबा भी नाक़िस होगा और उसकी स्कीम भी नाक़िस होगी। यह नुक़्स तो हमारा फ़ितरी नुक़सान है, हम फ़ितरी तौर पर नाक़िस हैं चाहे आईने स्टाईन हो। मैं तो कहता हूँ बाज़ार में बैठ कर जूतियां सीने वाला भी आईने स्टाईन से ज़्यादा समझदार है कि आईने स्टाईन ने अपने रब को नहीं पहचाना और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत को सोच नहीं सका और ये बूट पालिश करने वाला अपने अल्लाह को भी जान गया और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी पहचान गया है।

हम कमज़ोरे व लाचार हैंः

अच्छा एक तो इल्म नाक़िस और नाक़िस इल्म वाला स्कीम लगाएगा यक़ीनन नाक़िस होगी। फिर दूसरी चीज़ इन्सान जिन चीज़ों से इल्म लेता है वह भी नाक़िस हैं मसलन देखना कमज़ोर है फिर चश्में लगाना शुरू कर दिये। कुछ दिनों के बाद चश्में भी काम करना छोड़ देंगे। सुनना कमज़ोर है, आप सब मिल कर बोलें तो मेरी समझ में कुछ भी नहीं आएगा। कोई पश्तों में बोले तो पंजाबी वालों को समझ में नहीं आएगा हालांकि हमारा एक ही मुल्क है। फिर अपनी ज़ुबान बोलें, दो तीन इकठ्ठे मिलकर बोलें फिर भी समझ में नहीं आएगा तो सुनना नाक़िस हो गया।

सोच हमारी एक हद तक है उसके बाद सारी कलेकशन शुरू हो जाती हैं जब तक आदमी ज़रा चुस्त है तो सोचता रहता है आठ घन्टे से ज़्यादा ड्यूटी रखी जाए तो इसके बाद दिमाग़ घूमना शुरू हो जाता है। शुरू औक़ात दफ़्तरों में जो अन्दाज़ काम करने का होता है वह अन्दाज़ आख़री टाईम में नहीं होता। सब थक चुके होते हैं। हम हर तरफ़ से नुक़सान में हैं और कमी में हैं। अक़्ल की एक हद है तो अब हम सब अपनी बनाई हुई स्कीम पर एतमाद करके चलेंगे तो कभी कामयाब नहीं हो सकते लेकिन इस कमी को दूर करने के लिए अल्लाह ने एक निज़ाम बनाया है और यह नामुमकिन हे कि इल्म में कामिल होना, अक़्ल इसको तसलीम करती है। एक मिसाल है इससे पता चल जाएगा कि यह कैसे नामुमकिन है। हम एक जुज़ हैं और काएनात एक कुल है और जुज़ अपने कुल को कभी हासिल नहीं कर सकता। दूसरी मिसाल माँ के पेट में एक बच्चा है। बच्चा माँ के पेट में नौ महीने रहे या साल रहे लेकिन यह माँ की हकीक़त को नहीं जान सकता। माँ उसके ऊपर छाई हुई है वह उसके अन्दर छोटी सी जगह में पड़ा हुआ है जब तक वह बाहर न निकले तब तक वह अपनी माँ को नहीं जानेगा क्योंकि बच्चा माँ का जुज़ है और माँ बच्चे का कुल है। जुज़ कुल को अहाता नहीं कर सकती। यह काएनात इतनी लम्बी चौड़ी है कि इसमें जो कहकशाएं हैं उसमें जो सय्यारे गर्दिश कर रहे हैं उनका अगर कोई फ़र्ज़ी नाम रखा जाए जैसे हमने सूरज, चाँद, अतारद इसी तरह हर सितारे का कोई नाम रख दिया है तो इन सितारों को सिर्फ़ गिनने के लिए तीन सौ खरब साल चाहिएं और इतनी लम्बी फैली हुई काएनात में हमारी ज़मीन एक छोटी सी गेंद है।

इसमें तीन हिस्से पानी है और एक हिस्सा ख़ुश्की है। इस एक ख़ुश्क हिस्से में दो हिस्से में जंगल हैं, दरिया हैं, पहाड़ हैं, सहरा है। सिर्फ़ एक हिस्सा आबाद है। सारी काएनात में सिर्फ़ एक ज़मीन का तीसरा हिस्सा आबाद है। इस एक हिस्से में एक छोटा सा पाकिस्तान है, इसमें एक छोटा सा हैदराबाद है और उसमें एक छोटा सा डाक्टर है और प्राफ़ेसर है और वह कहता है कि मैं सब कुछ जानता हूँ तो उससे बड़ा बूवक़ूफ़ कौन होगा। अक़्ल भी इसको तसलीम नहीं करती है कि हम सब कुछ जानते हैं। पहले आम तौर से यह होता था कि अरे जी कोई नई बात बताओ, बाक़ी हम सब जानते हैं। अलहम्दुलिल्लाह आज कल यह कम हो गया है। यह सब जानने का कहना ख़ुद जिहालत का दावा है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से न बड़ा कोई आलिम आएगा न कोई आ सकता है। अल्लाह ने उनसे भी कहलवाया कि ﴿قل رب زدنی علما﴾ या अल्लाह मेरे इल्म को ज़्यादा कर दे। यह नामुमकिन चीज़ है कि हम यहाँ काएनात की गुत्थियां सुलझा लें, यह नहीं हो सकता और हम अपने लिए क़ानून सही बना सकें। यह उस वक़्त मुमकिन है जब सारी काएनात को समझ जाएं। किसी चीज़ को चलाने के लिए सारे महल को देखना पड़ेगा। पूरे इन्जन को चलाने के लिए एक जुज़ को, एक पुर्ज़े को देखना काफ़ी नहीं, सारे इन्जन को समझेगा तब जा कर उस पुर्ज़े को समझेगा। पूरे इन्जन की समझ न हो तो एक पुर्ज़े को कैसे चलाएगा तो काएनात एक इन्जन की तरह है इसमें मैं एक पुर्ज़े की तरह हूँ, आप भी इसके एक पुर्ज़े हैं यह दरख़्त एक पुर्ज़ा है, यह हवा जो चल रही है यह भी एक पुर्ज़ा है, यह रोशनी भी एक पुर्ज़ा है, यह आबी, यह ख़ाकी, यह नारी,

यह नूरी, यह चरिन्द, यह परिन्द, यह साकिन, यह हरकी, यह जामिद, यह लतीफ़, यह कसीफ़, यह सारी मख़्लूक़ हैं, यह सारी काएनात के हिस्से हैं। मैं ठीक चलूं यह जब मुमकिन है जब कि सारी काएनात का मुझे पता हो और मैं अपने इल्म पर चलना चाहता हूँ। जो मेरी समझ में आए तो मैं उस पर चलूंगा और मैं ठीक चल सकता हूँ। इस दावे को वजूद में लाने के लिए सारी काएनात को समझेगा तब तो ठीक चल सकता है। पूरे इन्जन को समझेगा तब एक पुर्ज़े को चला सकता है और यह नामुमकिन है। अल्लाह तआला ने हमें इसका बदल दिया है कि यह तुम्हारे बस का रोग नहीं है इसको छोड़ दो। मैं अपना इल्म देता हूँ। अल्लाह ने जो इल्म उतारा अरब को देख कर नहीं उतारा, काएनात के ज़र्रे ज़र्रे को, एक एक चप्पे को, एक एक पत्ते को, एक एक जानवर को, हर ज़र्रे को देख कर उतारा

تنزیل من الرحمٰن الرحیم 0 کتاب فصلت ایاته قرآنا عربیا لقوم یعلمون 0
بشیراو نذیرا، فاعرض اکثرهم فهم لا یسمعون 0 (سورة حٰم سجدة)

تنزیلاً ممن خلق الارض والسمٰوٰت العلٰی 0 الرحمٰن علی
العرش استویٰ 0 له ما فی السمٰوٰت وما فی الارض وما بینهما
وما تحت الثریٰ 0 وان تجهر بالقول فانه یعلم السر واخفیٰ 0
اللّٰه لا اله الا هو له الاسماء الحسنٰی 0 (سورة طٰه)

हर चीज़ पर ताक़त व क़ुदरत सिर्फ़ अल्लाह की है:

हर चीज़ मक़सद के तहत है, हर चीज़ अपने मक़सद पर पड़ी हुई है। कोई चीज़ अपने मक़सद ख़िलाफ़ चल ही नहीं सकती। उसकी ज़रूरतें अल्लाह ख़ुद पूरी कर रहा है। सूरज का निकलना, चमकना और आग फेंकना है, इसके बस की बात नहीं कि यह

इसके ख़िलाफ़ कर सके। चाँद का काम घटना और बढ़ना इसमें ताक़त नहीं कि इसके ख़िलाफ़ कर सके। रात अन्धेरा लेकर आती है वह उजाला नहीं ला सकती, दिन में सूरज की हल्की सी किरन सारी ज़ुल्मतों को उठा कर फेंक देती है, रात में ताक़त नहीं कि वह बाक़ी रह सके।

दरख़्त का काम फल देना है, यह दरख़्त नहीं कह सकता कि मैं थक गया हूँ, अब मैं फल नहीं दूंगा, गाय का काम दूध देना है कोई चीज़ उसे मक़सद से हटा नहीं सकती। उनकी ज़रूरतें अल्लाह की तरफ़ से उनकी दी जा रही हैं वे अपने मक़सद की पाबन्द हैं जो बकरी गिलगत के पहाड़ों में पैदा होती है तो अपने ऊपर लम्बे लम्बे बालों के साथ पैदा होती है, वही बकरी हैदराबाद में पैदा होती है तो उस पर दो सेंटीमीटर बाल होते हैं। वहा उसको कम्बल की ज़रूरत होती है। यहां उसको चादर की ज़रूरत है। अल्लाह ने उसको कम्बल वापस लेकर चादर दी। अल्लाह ने बाज़ की ग़िज़ा गोश्त बना दी तो उसकी चोंच को नोकीलदार बनाया और कई सौ मील तक उसको नज़र दे दी। उसकी ज़रूरत अल्लाह ने पूरी कर दी। उनको मक़ासिद का पाबन्द किया हुआ है वे इधर उधर नहीं जा सकते लेकिन इन्सान को अल्लाह ने अपने मक़सद में पाबन्द नहीं किया और अगर अल्लाह चाहता तो हमें भी पाबन्द कर देता। अल्लाह ने हमें इख़्तियार दे दिया और हमें बता दिया

وما خلقت الجن والانس الا ليعبدون O (سورة الذاريات)

जहान तुम्हारे लिए तुम्हारे लिए पैदा हुआ है और तुम मेरे लिए पैदा हुए हो लेकिन तुम्हारा इम्तेहान है فالهمها فجورها

﴿فالهمها فجورها وتقواها﴾ (سورة الشمس) यह तुम्हारे अन्दर बुराई की ताक़त है और अच्छाई की ताक़त है ﴿وهدينه النجدين﴾(سورة البلد) यह जन्नत का रास्ता है और यह दोज़ख़ का रास्ता है, यह रहमान का रास्ता है यह शैतान का रास्ता है। अब जब कि ये दोनों रास्ते आ गए ﴿انا هدينه السبيل﴾ रास्ते को खोल कर बता दिया अब तुम्हारी मर्ज़ी है ﴿اما شاكرا﴾ मेरे शुक्रगुज़ार बनो ﴿واما كفورا﴾ या मेरे नाफ़रमान बनो। ﴿فمن شآء فليؤمن﴾ चाहे तुम ईमान ले आओ ﴿ومن شآء فليكفر﴾ तुम चाहो तो मेरा इन्कार कर दो। मैंने तुम्हें इख़्तियार दे दिया। हमें मक़सद पर आने न आने का इख़्तियार है। जानवरों को इख़्तियार कोई नहीं, फ़रिश्तों को इख़्तियार कोई नहीं और हमें इख़्तियार है तो इन्सानी फ़ितरत का तक़ाज़ा है कि अनपढ़ पढ़े लिखों से पूछ लें, नादान दाना से पूछ लें, अन्धा आँखों वाले से पूछ ले। यह इन्सानी फ़ितरत है कोई भी पूरे इल्म का दावा नहीं करता। कोई वकील यूं कहे कि मैं बड़े बड़े पेचीदा मुक़द्दमें निपटा देता हूँ लिहाज़ा मेरे पेट में दर्द हो जाए तो ख़ुद इलाज करूंगा ऐसा नहीं होगा बल्कि वह ख़ुद डाक्टर के पास जाएगा कि मेरे पेट में दर्द है, मुझे चैक करो। इसी तरह बड़े से बड़ा डाक्टर केस के लिए वकील ही के पास जाएगा और अगर वकील के घर की दीवार गिर जाए तो वह अपनी वकालत से ठीक नहीं करेगा बल्कि वह किसी राजमिस्त्री को बुलाएगा। आप अपनी मौजूदा ज़िन्दगी में किसी चीज़ को नहीं जानते हैं तो किसी जानने वाले के पीछे जाते हैं, कभी भी अपने आपको अपने इल्म के सुपुर्द नहीं किया। हम छोटी छोटी चीज़ों अपने आपको अपने इल्म के सुपुर्द नहीं करते। डाक्टर ख़ुद बीमार हो तो वह किसी दूसरे डाक्टर से मशविरा करता है कि बीमार की

राय ठीक नहीं होती, वह खुद भी सारी बीमारियां जानता है लेकिन इल्में तिब का क़ायदा है कि बीमार अपना इलाज खुद न करें। जब वह बीमार हुआ है तो उसकी अक्ल भी साथ बीमार हुई है, उसकी सोच भी बीमार हुई है, लिहाज़ा किसी सेहतमन्द से इलाज करावाए चाहे ख़ुद रोज़ाना मरीज़ों को देखता है, लेकिन अपना इलाज दूसरे से करवाए।

अल्लाह की रहमत के सब उम्मीदवार हैं:

जब हम दुनियावी ज़रूरत में अपने से बड़े इल्म वाले के पास जाते हैं तो मेरे भाईयो! यह हमारा वजूद अल्लाह की क़सम सारी काएनात से ज़्यादा कीमती है ﴿لقد خلقنا الانسان فی احسن تقویم﴾ (سورة التين) क़ुरआन कहता है सबसे बाइज़्ज़त मख़्लूक़ इन्सान है तो हम कितनी बड़ी नादानी करते हैं कि पेट का दर्द हो तो डाक्टर के पास जाएं और यहाँ हमारी अबदी ज़िन्दगी का मस्अला है। जन्नत है या दोज़ख़। इसमें हम अपने इल्म पर ऐतिमाद करके चल रहे हैं। मौत का कितना बड़ा मस्अला इन्सान पर आता है। हदीस में आता है कि सबसे बड़ा मस्अला इन्सानों का मौत है तो क्या हमारी मौत से हमें झटका न लगेगा। सिर में दर्द हो तो कोई चीज़ अच्छी नहीं लगती। जब वजूद की एक एक रग में दर्द की लहरें उठें तो क्या होगा। मेरी कब्र के बिच्छुओं से हिफ़ाज़त हो जाए, अन्धेरे रोशनी में बदल जाएं, वहां जन्नत का बाग़ बन जाए, क़यामत के मैदान में कपड़े मिल जाएं, पानी मिल जाए, साया मिल जाए। पचास साल के लिए हमने हज़ारों मन्सूबे बनाएं हैं पचास हज़ार साल का एक दिन है उसमें साया भी चाहिए, पानी भी चाहिए, तन्हा होंगे

साथी भी चाहिए। आप अन्दाज़ा फ़रमाइए! इतना ही अज़ाब काफ़ी है कि इतनी बड़ी ख़लक़त में पचास हज़ार साल के एक दिन में अल्लाह तआला हम को अपनों तक न पहुँचने दें। हमारी क़ब्र कहां बनेगी हमें क्या पता, हमारे बच्चों को कहां मिलेगी क्या पता? बीवी कहां मरेगी क्या पता? कोई पता नहीं कहां मरना है और क़यामत में जब उठेगें तो बड़ी ख़लक़त में अल्लाह तआला हमें मिलने न दें? अपनों से तो पचास साल आदमी जुदा हो तो उसके लिए यही अज़ाब काफ़ी है।

क़ैद, तन्हाई, जेल से बड़ी जेल है और अपने न हों तो मजूमे से किसी का दिल नहीं लगता, फिर हिसाब व किताब में मेरा पलड़ा भारी हो, फिर पुल सिरात से आफ़ियत के साथ गुज़र जाऊँ, आख़िर में सलामती के साथ जन्नत में पहुँच जाऊँ, इतने बड़े प्रोग्राम के बारे में किसी ने सोचा? आज इस जहालत से निकलने के लिए बहुत बड़ी मेहनत की ज़रूरत है।

इन्सानियत पर इल्हाद की इब्तेदाः

दुनिया के बारे में यह हाल है कि छोटी से छोटी चीज़ का लोग ख़याल करके चलते हैं। इसकी मिसाल यूं है पचास लाख की गाड़ी हो सिर्फ़ एक टायर में हवा न हो और हवा दो रूपए में भर जाती हो तो उस दो रूपए की हवा की वजह से गाड़ी खड़ी हो जाएगी। छोटी से छोटी चीज़ भी अपनी एहमियत बताती है और कोई यूं कहे कि मेरी तो पचास लाख रूपए की गाड़ी है अगर दो रूपए की चीज़ न हो तो क्या हुआ? यह बिना हवा एक क़दम भी नहीं चल सकती। दो रूपए की चीज़ की कमी की वजह से पूरी गाड़ी खड़ी हो गई, दुनिया में छोटी से छोटी

चीज़ में कमी पड़ जाए तो हमारा वजूद बताता है कि कम हो गया तो दुनिया में एक एक चीज़ का ख़याल करके हम चल रहे हैं और दीन में बिल्कुल आज़ाद हो गए, परवाह ही नहीं, कितना बड़ा ज़ुल्म हो गया, कितना बड़ा हुक्म टूट गया, कितनी बड़ी नेकी को छोड़ दिया, यह इल्हाद है, यह जो इल्हाद है खुद नहीं आया इसके पीछे दो सौ साल मेहनत हुई है। जब बातिल ने यह देखा कि इनको मैदाने जंग में नहीं मार सकते तो फिर इसकी मेहनत नीचे से चली। सत्रहवी जो सदी है वह इसकी इब्तेदा है। सन् 1672 ई० न्युटन की पैदाइश है और सन् 1742 ई० में वह मरा है। यहां से एक दरवाज़ा खुला है तबदीली का, एक मेहनत वाला तबक़ा पैदा होना शुरू हुआ है। उसने यह दर्याफ़्त किया कि दुनिया का क़ानून किस ताक़त के बल पर चल रहा है? 2X2 हासिल चार तो यह सेट क़ानून है तो इस पर बुनियाद पड़ी लिहाज़ा किसी को खुदा मानने की ज़रूरत नहीं सारा निज़ाम खुद ब खुद चल रहा है। इस काएनात में इल्हाद की जो इब्तेदा है वह यहाँ से हुई। इन्सानी ज़िन्दगी में जो इल्हाद की इब्तेदा है वह ड्राउन से हुई। सन् 1809 ई० में उसकी पैदाइश है और सन् 1882 ई० में वह मरा है। माशयात में और समाज में इल्हाद की इब्तेदा वह कॉल मार्कस से हुई वह सन् 1818 ई० में पैदा हुआ और सन् 1883 ई० में वह मरा है। उसने काएनात से खुदा के तसव्वुर को निकाला फिर इन्सानियत में से अल्लाह के तसव्वुर को निकाला, फिर अख़्लाक़ियात व माशियात और समाज से अल्लाह के तसव्वुर को निकाला। ये तो इनके बड़े बड़े हैं और एक पूरा गिरोह वजूद में आया। इसके पीछे दो ढाई सौ साल मेहनत हुई जिसने पूरी दुनिया के इन्सानों को अल्लाह तआला

की लगाई हुई पाबन्दियों से आज़ाद कर दिया। एक दम कोई भी चीज़ वजूद में नहीं पकड़ती। बुराई भी एक दम नहीं आती और नेकी भी एक दम नहीं आती। एक दिन में इस्लाम नहीं आएगा और जिस हाल में मुसलमान पहुँचा है वह एक दिन में नहीं पहुँचा।

क़ौमे जो गिरती हैं एक दिन में नहीं गिरतीं, इसके लिए बहुत ज़माना लगता है और बनने में उससे ज़्यादा ज़माना लगता है तो जिस सतह पर आज मुसलमान पहुँचा है अख़लाक़ में, किरदार में, सिफ़ात में, पस्ती में, ज़िल्लत में, ख़यानत में। एक दिन का बोया हुआ कांटा नहीं है। इस कांटे को बोने में सदियों मेहनत हुई है तब जाकर यह जंगल बना है और इस जंगल को ख़त्म करने में भी जान तोड़ मेहनत की ज़रूरत है।

तब्दीली के लिए तरबियत ज़रूरी हैः

मेरे भाईयो! तरबियत के बग़ैर कोई चीज़ वजूद में नहीं पकड़ती है। एक चालीस साल ज़िन्दगी को तबाह करने वाला नौजवान है तो इस्लाम में ऐसा नुस्ख़ा कोई नहीं कि उसको खिला दिया जाए तो वह रातों रात अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० बन जाए। तरबियत ऐसा क़ानून है जिसको पागल के अलावा कोई नहीं झुठला सकता। हर चीज़ आहिस्ता आहिस्ता वजूद पकड़ती है और तरबियत के मराहिल इन्सान आहिस्ता आहिस्ता तय कर लेता है तो यह बेदीनी और इल्हाद का जो तूफ़ान आया है उसके पीछे यूरोप ने दो सौ साल मेहनत की है और यहां तक पहुँचाया है। उनको पता है जब तक अल्लाह तआला मुसलमानों के साथ है उनकी कोई तदबीर कामयाब नहीं हो

सकती। जब अल्लाह साथ है ﴿ان ينصركم الله فلا غالب لكم﴾ अगर मैं तुम्हारे साथ हूँ तो तुम पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता ﴿وان يخذلكم فمن ذا الذى ينصركم من بعده﴾(سورة آل عمران) अगर मैं तुम्हें छोड़ दूं तो कौन तुम्हारी मदद करेगा? तो इस आयत से पता चला कि अगर अल्लाह हमारे साथ होना चाहिए, हुकूमंत हमारे साथ हो या न हो, फ़ौज हमारे साथ हो या न हो, हथियार ज़्यादा हों न हों तो भी हमारा ही नाम ऊँचा होगा, हमारा ही पल्ला भारी होगा, हमारा ही बोल बाला होगा, उन्हीं को इज़्ज़त मिलेगी जिनके साथ अल्लाह है और अगर अल्लाह साथ नहीं तो हज़ारों ऐटम बम बना लें तो कोई मस्अला हल नहीं होगा। मिठाई कोई बांटने की चीज़ नहीं है हां अगर इन्सान तौबा कर लें तो यह मिठाई बांटने की चीज़ है कि अब अल्लाह साथ हो गया।

बनू अब्बास के हथियार क्या काम आए चंगेज़ियों के सामने? अलाउद्दीन ख़्वारज़मी शाही सलतनत का मुतकब्बिर तरीन इन्सान था। चार लाख फ़ोर्स थी और चंगेज़ खां लुटेरा था और दो हज़ार मील का सफ़र करके आया, थका हुआ लश्कर, पहाड़ी कोह कराक़रम के इन सिलसिलों को चंगेज़ खां ने उबूर किया। आज तक कोई हाकिम, कोई सालार, कोई फ़ौज उसको उबूर न कर सकी और अल्लाह की क़ुदरत कि कितनी पेचीदा और दुश्वार गुज़ार घाटियों से वह गुज़रा। एक सिपाही भी रास्ते में ज़ाए नहीं हुआ। नोकिली चट्टानों पर भी सफ़र किया, दो लाख के लश्कर में एक आदमी भी फिसल कर नहीं मरा। यह इतना थका हुआ लश्कर पराए देस में लड़ने के लिए आया और वहां चार लाख का ताज़ा दम लश्कर उसके इन्तेज़ार में है फिर भी अल्लाह ने उसके टुकड़े करवा दिए और चालीस साल में उसने

पूरी इस्लामी हुकूमत को ज़मीन बोस कर दिया और ख़ून की नदियां बहा दीं।

अल्लाह साथ होंगे तो काम बनेगा:

जब अल्लाह साथ छोड़ दें तो फिर ऐटम बम बनाने से काम नहीं चलता तो यह ज़हन इस वक़्त ख़त्म हो चुका है और यह एक दिन में ज़हन नहीं बनता। इसके लिए मैंने इन लोगों का हवाला दिया, उनकी ज़िन्दगी बताई उनकी पैदाईश बताई, उनकी मेहनत बताई, उनकी दो सौ साल की मेहनत है उसके बाद जा कर यह कांटेदार झाड़ियां पैदा हुईं और जंगल बना और जिन शाख़ों पर फूल आते थे जो दरख़्त फल देते थे वह बेर की शक्ल में नज़र आने लगे, पीछे मेहनत हुई कि आज़ादी है। आदमी मज़हब में आज़ाद है जो मर्ज़ी हो करो कितनी पागलों वाली बात है कि अल्लाह ने आमाल में दीन में पाबन्द किया है। हमें तिजारत में आज़ादी है, मुलाज़मत में आज़ादी है जो चाहें करें, ज़मींदारी करें या मज़दूरी करें लेकिन हम आमाल में आज़ाद नहीं हैं, पाबन्द हैं। यह ज़हन निकल गया बल्कि निकाल दिया गया। अल्लाह को साथ लेने की कोई ज़रूरत नहीं। टेक्नालोजी बढ़ाओ अल्लाह भी उनसे रोकता नहीं न शरीअ़त उनसे रोकती है लेकिन मुसलमानों के क़ानून और हैं और काफ़िरों के क़ानून और हैं। मुसलमानों को टेकनालोजी से उस वक़्त तक नफ़ा नहीं होगा जब तक ये तौबा न करें अगर तौबा न करें और टेकनालाजी में उनसे भी आगे बढ़ेंगे तो वही होगा जो अलाउद्दीन ख़ुवारज़्मी के साथ हुआ।

तबलीग़ी हज़रात के लिए अहम बातें:

मेरे भाईयो! इस ज़हन की आज़ादी को दोबारा पीछे लौटाना होगा और अपने को अल्लाह के हुक्मों के ताबे करके चलना होगा। यह इस वक़्त मसाइल का हल है। हम भी एक काम पेश कर रहे हैं, सारी दुनिया में काम हो रहा है, तहरीकें चल रहीं हैं और उनमें मुख़लिसीन भी होते हैं, दर्दमन्द भी होते हैं, उम्मत का ग़म खाने वाले भी होते हैं। यह तबलीग़ बतौर जमात के कोई जमात नहीं जैसे कि और जमातें होती हैं। हर एक मुसलमान को याददहानी कराने की एक सादा सी तरतीब है। हम यह अर्ज़ कर रहे हैं कि हमारी दुनिया और आख़रत के मसाइल का जो हल है वह अल्लाह की तरफ़ लौटने में है, अल्लाह को हम साथ ले लें और फिर जिस मैदान में हम बढ़ेंगे तो हमारा काम बढ़ेगा, हम अपने को काफ़िरों पर क़यास न करें, वह तरक़्क़ी कर गए हम क्यों नहीं कर सकते, उनके साथ अल्लाह का क़ानून यह है वे आज़ाद हैं, उनको अल्लाह ने मौत तक मोहलत दी हुई है, हमारी तो मौत तक छुट्टी नहीं है। हमें इधर ग़लती, इधर थप्पड़ पड़ेगा। आपका अपना बेटा शरारत करे तो फ़ौरन उसको तंबीह करते हैं और गली में हज़ारों बच्चे शरारत करते हैं, आपने कभी किसी को तंबीह नहीं की।

कलिमे वाले मुसलमान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत जब भी शरारत करेगी तो फ़ौरन तंबीह होगी, सीधा चलो ताकि दोज़ख़ के अज़ाब से बचाए जा सको। जब सही मुसलमान बन कर चलोगे तो हर चीज़ नफ़ा पहुँचाएगी, हर चीज़ से इसको इज़्ज़त मिलेगी, ज़िल्लत के असबाब से अल्लाह इज़्ज़त देगा, मौत

के असबाब में अल्लाह तआला ज़िन्दगी लाएगा।

आज़ादी एक नेमत है:

मेरे भाईयो! अल्लाह को साथ लिए बग़ैर हमारा काम नहीं बन सकता। इसकी दलील क़ुरआन से है ﴿ان ينصركم فلا غالب لكم﴾(سورة آل عمران) मैं जब तक साथ हूँ तब तक कोई कुछ नहीं कर सकता। दूसरी आयत ﴿ما يفتح الله للناس من رحمة فلا ممسك لها﴾ मैं जिसके लिए अपने फ़ज़्ल का दरवाज़ा खोल दूं सारा जहां मिलकर उसको बन्द नहीं कर सकता ﴿وما يمسك فلا مرسل له من بعده﴾(سورة فاطر) मैं बन्द कर दूं तो सारा जहां मिलकर खोल नहीं सकता, तीसरी आयत ﴿وان يمسسك الله فلا كاشف له الا هو﴾ मैं तुम्हें मुसीबत में डाल दूं तो पूरा जहां मिलकर उस मुसीबत को हटा नहीं सकता ﴿وان يردك بخير فلا راد لفضله﴾(سورة يونس) अब आप बाहर की दुनिया में देखिए। इस वक़्त दुनिया की सबसे बड़ी ताक़त पैट्रोल है। यह काला पानी अल्लाह तआला ख़त्म कर दें तो सारा जहां ऐसा खड़ा हो जाएगा जैसे पहाड़ हैं ताकि, पूरी दुनिया का चैन टूट जाएगा, चलती गाड़ियां, मोटर, जहाज़ जम कर रह जाएंगे। यह इस वक़्त मादे में सबसे बड़ी ताक़तवर है और इसका तीन चौथाई हिस्सा अल्लाह तआला ने मुसलमानों को दिया है, एक चौथाई हिस्सा काफ़िरों को दिया हुआ है और उनकी ज़मीन में निकाल कर अल्लाह तआला काफ़िरों को दे रहा है, उनको नहीं दे रहा, उनको रोटी मिल रही है, गाड़ियां मिल रही हैं, बंगले मिल रहे हैं, बस आराम से मस्त बैठे हुए हैं, यह आज़ादी नहीं है, समझे आज़ादी किसे कहते हैं? एक छोटी सी अंग्रेज़ी किताब में एक कहानी थी किताब का नाम तो सही याद

नहीं। उसमें लिखा था कि एक जंगली कुत्ता और एक शहरी कुत्ता था तो शहरी कुत्ता जंगल में सैर करने के लिए जाता था। वहां उसकी एक जंगली कुत्ते से दोस्ती हो गई। शहरी कुत्ता मोटा ताज़ा वह जंगली कुत्ता दुबला पतला, सूखा, सड़ा तो उसने पूछा कि भाई! तू कहां से आया है? तो उसने कहा मैं शहर से आया हूं, अच्छा तू क्या खाता है? कहा मैं पराठे खाता हूँ, अंडे खाता हूँ, गोश्त खाता हूँ, दूध पीता हूं तो जंगली कुत्ते ने कहा भाई! मैं जंगल में रहता हूँ, मुझे पराठे को छोड़, अंडे गोश्त छोड़, मुझे तो सूखी हड्डी भी नहीं मिलती तो भाई मुझे भी कराची ले चल ताकि मैं भी पराठे और अंडे खा लूं, शहरी कुत्ते ने कहा चलो तुम्हें ले चलता हूँ, तुम्हें भी खिलाउंगा। अभी वहां से निकले तो जंगली कुत्ते ने देखा कि शहरी कुत्ते के गर्दन में एक चेन ज़ंजीर पड़ी हुई है, कहने लगा भाई! यह क्या है? उसने कहा यह ज़ंजीर है तो उसने पूछा कि यह क्या होती है उसने कहा यह गुलामी की ज़ंजीर है और जंगल का कुत्ता क्या जाने गुलामी क्या होती है? उसने कहा मैं नौकरी करता हूं एक आदमी की, उसका पहरा देता हूँ, रात को जागता हूँ, उसकी कोठी के साथ बंधा होता हूँ फिर वह मुझे अंडे और गोश्त खिलाता है और वह दूध भी पिलाता है। जंगली कुत्ता कहने लगा मैं अपनी आज़ादी में भूका रहूं तो यह मुझे ज़्यादा पसन्द है बनिस्बत इसके कि किसी का गुलाम बन जाऊँ। मियां तुझे तेरे पराठे मुबारक और मुझे मेरे जंगल की हवा मुबारक, आप शहर चले जाएं, मैं इधर ही ठीक हूँ तो आज हमने आज़ादी इसी को समझा हुआ है कि गाड़ियां मिल गईं, बंगले मिल गए, बस, इज़्ज़त का मफ़हूम बदल गया। हम ज़िल्लत की पस्ती में हैं और समझते नहीं, हम ज़लील

हो चुके हैं। जिस क़ौम का इल्म ग़लत हो जाए तो उसको ऐटम बम कहाँ नफ़ा देगा, जिसका सिवाए कमाने के और काम ही नहीं रहे तो इस सिलसिले में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक ज़माना आएगा कि लोग सिवाए पेट भरने और शहवत पूरी करने के और कोई काम नहीं होगा, बस रंगारंग के खाने, कैसे खाऊँ और अय्याशी कैसे करूं, बदमाशी कैसे करूं।

अल्लाह की नाराज़गी की निशानीः

मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछा कि या अल्लाह तेरे नाराज़ होने की निशानी क्या है? अल्लाह ने फ़रमाया मेरी नाराज़गी की निशानी यह है कि उनकी खेतियां शुरू हो जाएं और पक जाएं तो बारिशें शुरू कर दूंगा, खड़ी खड़ी बर्बाद कर दूं और जब उनकी खेती बारिश मांगेगी तो बारिश को रोक दूंगा ﴿اجعل الملك إلى سفهائهم﴾ और नादान, नासमझ, नाअहल इन्सानों को हुकूमत दे दूंगा ﴿والمال إلى بخلائهم﴾ माल व दौलत उनके बख़ील लोगों को दे दूंगा, न अपने ऊपर लगाएं न ग़रीबों पर लगाएं और हुकूमत ऐसे बेवक़ूफ़ इन्सानों को दे दूंगा कि वे सारी ज़मीन ज़ुल्म व सितम से भर दें, वे ठीक भी करना चाहें तो ग़लत हो जाए। इस लिए तो कहा है कि नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा है, अच्छा या अल्लाह तेरे राज़ी होने की क्या निशानी हैं अल्लाह ने फ़रमाया ﴿امطر يزرعهم زرعهم﴾ खेती पानी मांगती है तो बारिश कर देता हूँ। एक रिवायत में आता है एक आदमी जा रहा था कि बादल से आवाज़ आई कि जाओ फ़लॉ की खेती में पानी दे दो तो वह आदमी के साथ हो लिया तो बादल एक पहाड़ी पर बरसा वहां एक दर्रे में एक नाला सा था उसमें आया आगे जा

के एक ढाल था उसमें गया तो पानी के साथ साथ एक आदमी आगे इन्तेज़ार में है पानी आया तो उसने बाग़ में कर दिया वह कहने लगा भाई क्या करता है और तेरा नाम क्या है? उसने नाम बताया कहा कि मैंने बादल में से आवाज़ सुनी कि फ़लॉं की खेती को पानी पिलाओ कहा अगर यह क़िस्सा न होता तो मैं तुम्हें न बताता। असल में बात यह है कि अल्लाह तआला ने मुझे यह बाग़ दिया है, जब यह तैयार हो जाता है तो मैं इसके तीन हिस्से करता हूँ। एक हिस्सा फ़क़ीरों को दे देता हूँ, एक हिस्सा अपने घर में अपना ख़र्चा करने के लिए रखता हूं और एक हिस्सा फिर इस बाग़ में लगा देता हूँ इसकी तैयारी के लिए। इस हदीस से यह मालूम हुआ कि ज़मींदारी में जो फ़सल आए तो उसका एक हिस्सा आगे फ़सल पर लगाना चाहिए तब जा कर फ़सल का हक़ अदा होगा माद्दी लिहाज़ से। कैसा ख़ूबसूरत तरीक़ा अल्लाह के नबी ने बताया कि एक तिहाई हिस्सा लगाओ इस पर तब जा कर सही फ़सल होगी तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿أملهم بحصادهم﴾ जब उनकी फ़सल तैयार होती है तो बारिश को रोक लेता हूँ और हुकूमत अक़लमंद लोगों को देता हूँ, दर्दमन्द लोगों को देता हूँ, बुर्दबार लोगों को देता हूँ, चश्म पोशी करने वालों को देता हूँ, मॉफ़ करने वालों को देता हूँ, खुश अख़लाक़ लोगों को देता हूँ। यह सारे माईने अलीम के हैं और पैसा सख़ियों को देता हूँ और यह मेरे राज़ी होने की निशानी है।

सोचिए कहीं अल्लाह हम से नाराज़ तो नहीं:

तो इस हदीस को सामने रख कर आप सोचें अल्लाह कितना

नाराज़ हो गया हम से। यह समंदर का पानी क्या वैसे ही उठ कर दाख़िल हो गया सिन्ध में और बदीन में ऐसे ख़्वामख़्वाह बारिश हो गई? खड़े गन्ने बहा कर ले गई, कपास उठा कर ले गई। ऐसे बादल कि जिसे चाहे बरस जाएं, समंदर का पानी क्या आवारा है कि जिधर को चाहे निकल जाए, हवा क्या इतनी बेलगाम है कि पीछे उनके कोई क़ाबू करने वाला नहीं। नहीं इन हवाओं का रब है जो उनको चलाता है, इन पानियों का रब है जो इनको बहाता है और इन बादलों का रब है जो उनको बरसाता है। मेरे भाईयो! हम यह पिछली बात अर्ज़ कर रहे हैं, बात पुरानी है, ज़ुबान नई है, क़िस्सा तो पुराना है, नया क़िस्सा तो कोई नहीं कि हम अल्लाह तआला को अपने साथ लें और अल्लाह तआला को साथ लिए बग़ैर कोई मस्अला हल नहीं होगा। अच्छा फ़र्ज़ करो कोई मस्अला हल भी हो गया वह कुत्ते की तरह अंडा और पराठा मिल गया तो क्या मौत नहीं आएगी? क्या दुनिया नहीं छूटेगी? क्या क़यामत नहीं होगी? क्या हिसाब व किताब का तराज़ू नहीं आएगा? क्या जन्नत और जहन्नुम नहीं देखेगा? क्या अल्लाह पूछेगा नहीं कि क्या किया था? तो वहां क्या जवाब देगा, रोटी भी मिल गई तो मस्अला तो फिर भी हल नहीं हुआ।

मेरे भाईयो! अल्लाह को साथ लिया जाए। अल्लाह का साथ लिए बग़ैर कोई भी मस्अला हल नहीं होगा। जब अल्लाह साथ हो जाएगा तो ﴿لفتحنا عليهم بركات من السماء والارض﴾(سورة الاعراف) तुम्हारी ज़मीन सोना उगलेगी, जब तक़्वा आएगा। अल्लाह तआला हम सब को गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

□□□□□

निज़ामे काएनात

बमुक़ाम हैदराबाद 7/4/2000

हम्द व सना के बाद

اللهم صلی علی محمد وعلی ال محمد کما تحب وترضی امابعد

اعوذ باللّٰه من الشيطان الرجيم 0 بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم 0

قل کل يعمل علی شاکلة فوربکم اعلم بمن هو اهدیٰ سبيلا 0

قال النبي ﷺ انکم تموتون کما تنامون، وتحيون کما تستيقظون ثم انها الجنة ابداً اولنار ابداً اوکما قال النبی صلی اللّٰه عليه وسلم.

अल्लाह के क़ानून दो तरह के हैं:

मेरे भाईयो और दोस्तों! अल्लाह तआला ने एक क़ानून इस काएनात को दिया है, एक क़ानून इन्सानों को दिया है। काएनात को जो क़ानून उसका ज़ाब्ता यह है कि पूरी की पूरी काएनात उस क़ानून ताबे है, उसके ख़िलाफ़ कर ही नहीं सकती। इन्सान को जो क़ानून दिया है उसका ज़ाब्ता यह है कि इस पर इन्सान चल भी सकता है और उसके ख़िलाफ़ भी चल सकता है।

सारे जहां में अभी तक कोई ख़लल नहीं आया। निज़ामे काएनात उसी तरह ठीक चल रहा है। काफ़िर इस बात पर हैरान हैं कि इतनी बड़ी काएनात, इतनी मुहीत काएनात, इतने

पहलुओं में इतनी तेज़ी के साथ गर्दिश कर रही है इसमें ख़लल क्यों नहीं आता? क्यों यह टकरा नहीं जाती? जिन्हें अल्लाह का पता नहीं वे इस पर बिलयन डॉलर ख़र्च कर रहे हैं। हमारे लिए तो कोई मस्अला नहीं क्योंकि हम मानते हैं कि यह सब कुछ अल्लाह कर रहे हैं, अल्लाह के हुक्म से चल रहा है।

यह क्यों हो रहा है, किस लिए हो रहा है, क्योंकि जैसे हो रहा है ऐसे नहीं होना चाहिए। अक़्ल कहती है कि ऐसे नहीं होना चाहिए, यह सैयारे टकरा जाने चाहिएं। चार गाड़ियां हैदराबाद में ज़्यादा हो गईं तो एक्सीडेन्ट शुरू हो गए और यह काएनात इतनी वसी है कि फ़िज़ाओं में फिरने वाले सितारों में से हर सितारे का नाम रखा जाए और उसी को एक मर्तबा दोहराया जाए कोई फ़र्ज़ी नाम रख लिया जाए जैसे सूरज नाम रखा हुआ है, चाँद नाम रखा हुआ है, ज़ोहरा, अतारो, प्लोटो वग़ैरह ऐसे ही इन तमाम सितारों में हर एक को कोई नाम दें, अलिफ़, ब, त, स, या एक दो तीन चार वग़ैरह फिर उसको सिर्फ़ एक दफ़ा दोहराया जाए, सूरज चाँद, मरीख़ हर एक सैयारे को सिर्फ़ सेकण्ड दें तो इस पूरी सितारों की जो दुनिया है उसको सिर्फ़ एक दफ़ा गिनने के लिए तीन सौ खरब साल की ज़रूरत है, सिर्फ़ गिनने के लिए जो मैंने बताया यह सिर्फ़ इस काएनात के तीन फ़ी सद हैं, सत्तानवें फ़ी सद अन्धेरा है नज़र ही कुछ नहीं आता। जहां रोशनी है यह वहां की कहानी सुनाई है आपको।

फ़लकी अज्साम की रफ़्तारः

ये सिर्फ़ तीन फ़ी सद है। सत्तानवे फ़ी सद तारीकी है, तीन फ़ी सद रोशन है। इस तीन फ़ी सद में इतना जहान फैला हुआ

है यह भी सिर्फ़ उनकी देखी हुई के मुवाफ़िक़ है यह इन्तेहा नहीं और जो देखा है वह बहुत थोड़ा है और जो नहीं देखा वह सत्तानवे फ़ी सद है और इन फ़लकी अजूसाम की रफ़्तार इतनी तेज़ है कि यह सूरज छः लाख मील फ़ी घन्टे की रफ़्तार से दौड़ रहा है। ज़मीन छियासठ हज़ार मील फ़ी घन्टे की रफ़्तार से दौड़ रही है। इसमें सारी फैक्टरियां, सारी सड़कें, सारे समंदर, सारे सहरा सब के सब छियासठ हज़ार फ़ी घन्टे की रफ़्तार से दौड़ रहे हैं। साठ किलोमीटर की रफ़्तार से गाड़ी चले और सामने शीशे न हों तो आँखें फट जाएं और यह छियासठ हज़ार फ़ी घन्टे की रफ़्तार से भाग रही है और हमें खड़ी नज़र आती है। इस तरह इस काएनात में एक ख़ौफ़नाक सफ़र जारी है। यह इस बात का तक़ाज़ा करता है कि ये सब आपस में टकरा जाएं और मलियामेट हो जाएं और यह नहीं हो रहा है। हमारे पास तो जवाब है अल्लाह ही कर रहा है और काफ़िरों परेशान हैं यह क्यों नहीं हो रहा है।

सूरज का निज़ामः

एक सेंटीमीटर सूरज रोज़ अपनी जगह बदलता है लेकिन इसका जो निज़ाम है लेकिन इसका अपना जो निज़ाम है उससे यह एक सेंटीमीटर बढ़ जाए अगले दिन एक सेंटीमीटर और बढ़ जाए इसी तरह रोज़ाना एक एक सेंटीमीटर बढ़ता चला जाए तो चन्द हफ़्ते में सारी काएनात आपस में टकरा जाएगी। दो हफ़्तों में वह अपनी जगह से चौदह सेंटीमीटर सरक जाए जिस तरह वह अपने निज़ाम के मुवाफ़िक़ सरकता है। एक सेकण्ड पहले तुलू होने लग जाए और एक सेकण्ड बाद में ग़ुरूब होने लग

जाए या एक सेकण्ड बाद में निकलने या बाद में ग़ुरूब हो जाए, वक़्त के लिहाज़ से सेकण्ड और फ़ासलों के लिहाज़ से सेंटीमीटर, इसमें थोड़ी सी आगे पीछे हरकत शुरू हो जाए तो दो तीन हफ़्तों में सारी काएनात तबाह हो जाएगी तो सारी काएनात को अल्लाह तआला ने ऐसा क़ानून दिया है जो ज़र्रा बराबर भी इधर उधर नहीं होती ﴿الشمس تجرى لمستقرلها ذالك تقدير العزيز العليم﴾ सूरज अपने रास्ते पर चलता है। इसको रास्ता अल्लाह तआला ने दिया है, इसको आगे पीछे कौन करेगा?

यही सूरज थोड़ा सा नीचे आ जाए तो यह सारी काएनात उबल जाए, आलू की तरह फट जाए और यही सूरज थोड़ा सा ऊपर चला जाए तो सारे जहां में बर्फ़ की तह जम जाए। पहाड़ जैसी बर्फ़ें अगर शहरों में पड़ी हों तो कहां से कारोबार चलेगा। यह फैक्टरियां तो अल्लाह चला रहा है अगर अल्लाह मौसम बदल दें तो फिर हम क्या कर सकते हैं। सूरज के बाहर बारह हज़ार सेंटीग्रेड दर्जा हरारत है (यानी सूरज की ज़ाहिरी सतह पर) और सूरज के अन्दर सत्ताईस मिलयन दो करोड़ सत्ताईस लाख सेंटीग्रेड दर्जा हरारत है। सौ पर पानी खौल जाता है। यह अल्लाह है जिसने दर्मियान में इतनी बड़ी रुकावटें बनाई हुई हैं जिनमें इतनी छलनियां लगाए हुए हैं इसमें छनते छनते सूरज के बीस करोड़ हिस्से किए जाएं तो एक हिस्सा ज़मीन पर आ रहा है बाक़ी सब हिस्से हवा में ज़ाए हो रहे हैं अगर अल्लाह तआला इस एक हिस्से को सवा हिस्से कर दें, एक हिस्से की ज़रूरत को सवा हिस्से कर दें तो सारा निज़ाम ख़त्म हो जाएगा।

इन्सान की ग़लत सोचः

यह सारी काएनात का निज़ाम उसके रहम व करम पर है। हम कहते हैं कि हम कमाते हैं तो खाते हैं, हम अपनी मेहनत से इतने काम करते हैं अगर हम न करते तो कौन करता। अल्लाह तआला सिर्फ़ एक काम कर दें, ज़मीन की कशिश और सक़्ल वापस ले लें। ज़मीन अपनी कशिश और सक़्ल से हमको पकड़ा हुआ है। हम ज़मीन पर उलटे बैठे हुए हैं। एक दफ़ा मैं लेटा हुआ था छत यूं जा रही थी तो बड़ा हैरान हुआ बैठे बैठे मुझे ख़याल आया कि हम भी उलटे हैं, हम सब उलटे हैं। हमारे पाँव बन्धे हुए हैं और सिर हमारा हवा में है तो हमें ज़मीन की काशिश ने बांधा हुआ है और इतने अन्दाज़े के साथ है कि अगर यह ज़मीन छः गुना बढ़ जाए चौबीस हज़ार के बजाए छः गुना इसको बढ़ा दिया जाता तो इसके अन्दर कशिश और सक़्ल छः गुना बढ़ जाती तो जिस चीज़ का वज़न एक मन है वह छः मन हो जाता और जिसका क़द छः फ़िट है वह घट कर एक फ़िट हो जाता। पाँव ज़मीन से उठाया न जाता। ज़मीन अपनी तरफ़ खेंच कर रख लेती जैसे कि कीचड़ में पाँव उठाना मुश्किल हो जाता है लेकिन यहाँ फिर भी आदमी उठा लेता है। ऐसे अन्दाज़ के साथ बनाई है।

ख़ालिक़ का मख़लूक़ से सवालः

﴾امن﴿ किसने ज़मीन तुम्हें बिछा कर दी ﴾الم نجعل الارض مهادا﴿
﴾والارض فرشنها﴿ किसने ज़मीन को ठहरा दिया جعل الارض قرارا﴿
मैंने फ़र्श बिछाकर दिया कोई है मुझ जैसा बिछाने ﴾فنعم الماهدون﴿

﴿والارض بعد ذالك دحها. اخرج منها مائها ومرعها. والجبال ارسها. متاعا لكم ولانعامكم﴾ वाला यह अल्लाह तआला वह क़ानून बता रहा है जो काएनात को दिया है। ये आयतें इस तरफ़ इशारा कर रहीं हैं तो अल्लाह ज़मीन में से यह कशिश वापस ले लें अपनी कशिश को ख़त्म कर दें तो हम क्या कर सकते हैं आज तक यह सवाल हल नहीं हो सका कि ज़मीन में कशिश क्यों है? आईन स्टाईन की ज़िन्दगी के आख़री दस साल इस तहक़ीक़ में ख़र्च हुए कि ज़मीन में कशिश क्यों है? और दस साल के बाद यह लिख गया कि यह सवाल मेरे बाद भी कोई हल नहीं कर सकेगा लिहाज़ा इसमें मग़ज़ मारी न की जाए कि यह क्यों है?

कैमिस्ट्री यह है अगरचे किसी रियाज़ी के किसी दायरे में नहीं आती, जैसे फ़िजिक्स कैमिस्ट्री को फ़ार्मूला इसकी तसदीक़ नहीं करता किसी क़ायदे के तहत यह कोई नहीं लेकिन यह कहाँ से है ﴿امن جعل الارض قرارا، والارض فرشنها فنعم الماهدون﴾ यहाँ से है।

हमारे करने से कुछ नहीं होताः

अगर कशिश वापस हो जाए तो उसी वक़्त ज़मीन के तेवर बदल जाएंगे और उसका रंग बदल जाएगा। सूरज की तरफ़ सफ़र शुरू कर देगी और सूरज हम से नौ करोड़ तीस लाख मील है तो एक माह या पच्चीस दिन में ज़मीन सूरज की भट्टी में जा गिरेगी। आगे इसे जाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी क्योंकि सूरज के चारों तरफ़ शोले हैं जिनकी कम से कम लम्बाई एक लाख मीटर है यह सारा निज़ामे ज़िन्दगी ख़त्म हो जाएगा। हम तो कहते हैं हम करते हैं तो खाते हैं नहीं करेंगे तो कहाँ से खाएंगे उस वक़्त कमा के दिखाओ तो सब अल्लाह कर रहा है हमें तो थोड़ा सा

इख़्तियार दिया है जिसमें इम्तेहान है तो एक क़ानून ज़मीन और आसमान का है ﴿السمـاء بنينها بايدوانا لموسعون﴾ आसमान को कहा कि फैल जा तो वह फैल गया ﴿رفـع السـمٰـوٰات﴾ आसमान को बुलन्द किया तो वह बुलन्द हो गया ﴿بغير عمد﴾ सुतूनों के बग़ैर वह खड़ा हो गया ﴿سخر لكم الانهار﴾ दरियाओं का निज़ाम चलाया उनको बहा दिया ﴿هو الذى يرسل الرياح﴾ हवाओं का निज़ाम चलाया ﴿ان الله فالق الحب والنوى﴾ फल फूलों का निज़ाम चलाया। चाहो मेरी तरफ़ आ जाओ चाहो शैतान की तरफ़ चलो ﴿فسنيسره لليسرى﴾ मेरी तरफ़ चलोगे तो रास्ते खोल दूंगा और अगर शैतान की तरफ़ चलोगे तो उस तरफ़ भी रास्ते खुल जाएंगे। अल्लाह को क़ुदरत कामिल है वह किसी ज़ाब्ते का पाबन्द नहीं और हमें ज़ाब्तों का पाबन्द किया है लेकिन इसमें काएनात को बांध दिया और हमें इख़्तियार दे दिया।

मैयत की पुकारः

मेरे भाईयो! मर के मर जाते तो मस्अला आसान था, मर के न उठते तो भी मस्अला आसान था, मुसीबत यह है कि मर के मरना नहीं है। मर के फिर ज़िन्दा हो जाना है अगर यहाँ ग़फ़लत में मर गए तो वहाँ बड़े ख़ौफ़नाक अन्जाम का सामना करना पड़ेगा अगर कुछ लेकर चले गए तो बड़ी ख़ूबसूरत ज़िन्दगी है उसका आग़ाज़ तो है उसका अन्जाम कोई नहीं, उसकी इब्तेदा तो है उसकी इन्तेहा कोई नहीं। यह काएनात बड़ी तेज़ी के साथ अपने अन्जाम की तरफ़ चल रही है ﴿من مات فقد قامت قيامته﴾ जो मरता है उसकी क़यामत आ ही जाती है। एक क़यामत इस काएनात की भी आने वाली है, अन्क़रीब ख़त्म होने वाली है

और इसको मौत का झटका तोड़ने वाला है और हमें बिल्कुल बेबस कर दिया जाएगा, क़ब्र की चारदीवारी में फेंक दिया जाएगा जहां इन्सान चीख़ना चाहे चिल्ला नहीं सकता, बताना चाहे बता नहीं सकता। कहीं मय्यत होती है तो कहती है ﴿لا تقدموني﴾ मुझे न ले जाओ। पूरी काएनात उसका नोहा सुनती है ﴿لا تقدموني﴾ मुझे क़ब्र में न ले जाओ। इसका इख़्तियार ख़त्म हो चुका है और ऐसे भी है ﴿قدموني، قدموني﴾ मुझे ले भी जाओ, मुझे ले भी जाओ। यह भी कोई नहीं सुन सकता है। जनाज़ा सामने पड़ा है, भाई नहीं आया, बेटा नहीं आया वग़ैरह और वह कह रहा है ﴿قدموني﴾ मुझे जल्दी ले चलो लेकिन इसकी भी कोई सुनवाई नहीं तो मौत हमारे इख़्तियारात को सल्ब कर देगी तो इस लिए उस दिन के लिए तैयारी करना हर इन्सान के ज़िम्मे है, मौत के लिए कुछ तैयारी करें। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اطلبوا الجنة جهدكم﴾ जितनी ताक़त है उसे ख़र्च करो जन्नत के लिए और जितनी ताक़त है तो उसे ख़र्च करके जहन्नुम से बचो ﴿ان الجنة لا ينام طالبها وان النار لا ينام هاربها﴾ जन्नत का चाहने वाला कभी नहीं सोता, जहन्नुम से डरने वाला कभी ग़ाफ़िल नहीं होता।

ऐ इन्सान सोच कि क़ब्र में क्या होगा?

पूरी दुनिया इस ख़ौफ़नाक अन्जाम की तरफ़ बढ़ रही है। हम छोटे छोटे मसाइल को मसुअला बनाकर बैठे हैं। मर जाना है, यह भी तो बड़ा मसुअला है। हम तो पुरानी चादर को उतार कर बिस्तर पर नई चादर बिछवाते हैं और जिस वक़्त मिट्टी का बिस्तर होगा तो उस वक़्त क्या बात बनेगी और मिट्टी की

चादर होगी उस वक़्त क्या होगा? जब बल्ब फ़्युज़ हो जाए तो फ़ौरन बल्ब लगाओ वह क्या दिन होगा जब अन्धेरे के घर में जा पड़ेंगे। यहाँ घन्टी लगी हुई है नोकर बुलाने के लिए वह फ़ौरन आ जाता है वह क्या दिन होगा न कोई सुन सकेगा न कोई सुना सकेगा तो कितना ख़ौफ़नाक अन्जाम है। कपड़े पर दाग़ लगा तो उतारो, आज बदन पर कीड़े रेंग रहे हैं, घन्टों चेहरे को सजाया कितने साबुन, कितने शैम्पू, खुशबुएं कितनी और वह क्या दिन होगा इन आँखों को कीड़े खा रहे होंगे और इसी पर चल रहे होंगे। पूरा वजूद कीड़ों की ग़िज़ा हो चुका होगा। उन कीड़ों को दूसरे कीड़े खा रहे होंगे।

फिर लैल व नहार, मौसमों का बदलना, ज़मीन की करवटें बदलना, ऊपर को नीचे, नीचे को ऊपर कर देगा, क़ब्र की मिट्टी बाहर आ जाएगी। वह हड्डियां जो चूरा चूरा हो के पड़ी थीं मिट्टी बनी पड़ीं थीं, बाहर आयीं फिर हवा का झोका आया और उनको उठाकर ले गया। बादशाह सलामत के ख़्वाबों को ऐसे हवा में उड़ा के धकेल दिया जैसे कि वह कुछ न था और आज वह कुछ हो गया। जिस इन्सान का यह अन्जाम हो तो वह सोचें कि उस दिन के लिए क्या कर रहा हूँ। फिर वह अदालत होगी अल्लाह पाक की, सब पीछे हट जाएंगे सिर्फ़ वह ज़ात है जो अकेला हिसाब किताब लेता है और खुद पूछ रहें हैं लाओ आज क्या लाए हो ﴿ارنی ما قدمت﴾ आज दिखाओ क्या ले आए हो अगर कुछ नहीं है ﴿فذوقوا مس سقر﴾ फिर तैयार हो जाओ अज़ाब के लिए यह इन्सानियत बड़े ख़ौफ़नाक अन्जाम की तरफ़ बढ़ रही है।

क़यामत के बारे में क़ुरआन का लहजाः

जब क़ुरआन का रुख़ आख़रत की तरफ़ फिरता है तो एक दम उसका लहजा बदल जाता है, जब दुनिया की तरफ़ आता है तो एक दम लहजा बदल जाता है जब आख़रत की तरफ़ होता है तो एक दम लहजे में हैबत आ जाती है, एक रोब आ जाता है जैसे कि हम कहते हैं कि इसके सिर में दर्द है अब मेरा लहजा सुन रहे हैं। अब इसको कैंसर हो गया है इस लहजे में फ़र्क़ है। अरे भाई इसको कैंसर हो गया, अगला भी ताज्जुब से कहता है अच्छा उसको कैंसर हो गया, अल्लाह उस पर रहम करें तो जब क़ुरआन दुनिया को बयान करता है तो जैसे कि सिर में दर्द हो, जब आख़रत को बयान करता है तो उसका लहजा बदल जाता है। ﴿وما الحيوٰة الدنيا الا متاع الغرور﴾ छोड़ दो, यह छोड़ दो का इशारा इसकी हिक़ारत बता रहा है। ﴿لا يغرنك تقلب الذين كفروا فى البلاد﴾﴿متاع قليل﴾﴿متاع الغرور﴾﴿بيت العنكبوت﴾ इस दुनिया को क़ुरआन धोके का घर बता रहा है, मच्छर का पर बताता है, मकड़ी का जाला बताता है।

اضرب لهم مثلا الحيوٰة الدنيا كماء انزلناه من السمآء فاختلط
به نبات الارض فاصبح هشيما تذروه الرياح وكان الله على
كل شيء مقتدرا ط كمثل غيث اعجب الكفار نباته ثم يهيج
فتراه مصفرا، ثم يكون حطاما وفى الاخرة عذاب شديد
ومغفرة من الله ورضوان، وما الحيوٰة الدنيا الا متاع الغرور.

इतना हल्का करके क़ुरआन दुनिया को बताता है और जब आख़रत की तरफ़ फिरता है तो पुकारता हैः

القارعة ما القارعه وما ادرٰك ما القارعه ० هل اتٰك حديث

الغاشيه o وما ادرك ما هيه نا رحاميه، وما ادرك ما الحطمه، يوم تشقق السمآء با لغمام، نزل الملئكة تنزيلا، الملك يومئذن الحق للرحمٰن، وحملت الارض والجبال، فدكت الارض دكا دكا، فيومئذ وقعت الواقعه، وانشقت السمآء فهى يومئذ واهيه.

इतनी हैबत है अलफ़ाज़ में कि हम तो समझते नहीं क़ुरआन क्या कह रहा है ﴿القارعه﴾ वह आवाज़ तुम्हारे कानों के पर्दे चीर कर रख देगी क्या है वह ख़ौफ़नाक आवाज़ तुम्हें कुछ ख़बर भी है वह आवाज़ क्या है? ﴿الحاقة﴾ इस हक़ीक़त को देखो वह क्या है? यह जो आख़रत का तर्ज़े बयान है इसको अल्लाह तआला किसी और चीज़ में बयान नहीं किया।

इल्म बहुत बड़ी दौलत है:

﴿هل اتك، وما ادرك﴾ ये अलफ़ाज़ ऐसे हैं जैसे कोई बम मार रहा हो। यह हमारी बदक़िस्मती है कि हमने क़ुरआन समझा न क़ुरआन की ज़बान समझी। उस क़ौम की इससे बड़ी बदक़िस्मती और क्या होगी जो अपनी किताब जो उनको किनारे लगाने वाली थी न उसको समझा न जाना। हाय अफ़सोस ﴿فاصدع بما تؤمر، واعرض عن المشركين، انا كفيناك المستهزين﴾ इस आयत के अलफ़ाज़ में जो हरारत है। इसको एक बद्दू ने सुना वह अरब था अरबी जानता था जब यह आयत सुनी तो ऊँट पर जा रहा था ज़मीन पर जा गिरा, थर्रथरा गया, उसने कहा मैं गवाही देता हूँ कि मख़लूक़ ऐसा कलाम नहीं कर सकती। हमें तो पता कि हम से क़ुरआन क्या कहता है, कितनी हमारी बदक़िस्मती है, कि जिस चीज़ को समझना था उसको समझा नहीं, तालीम के नाम पर जहालत आम हो गई। रोटी कैसे कमानी है इसको इल्म बना

दिया। लोहे को कैसे ढालना है यह इल्म बन गया। अरे भाई इन्सानियत में कैसे ढलना है सबसे बड़ा इल्म यह है। इन्सान इन्सानियत के सांचे में कैसे ढले यह इल्म क़ुरआन देता है, यूनिवर्सिटियां यह इल्म नहीं देतीं, कॉलेज से निकल कर आया हूँ इस लिए दावे से कहता हूँ। जिसे समझना था उसे समझा नहीं, उसको पढ़ा नहीं, क़ुरआन जब आख़िरत खोलता है तो लरज़ा तारी हो जाता है।

इन्सान कमज़ोर और बेबस हैः

तो मेरे भाईयो! हम तो कमज़ोर हैं दुनिया के दुख नहीं सह सकते तो आख़िरत के दुख कैसे सह सकेंगे, अल्लाह जानता है कि इन्सान ज़ईफ़ है ख़ुद कहता है ﴿خلق الانسان ضعيفا﴾ ﴿خلق الانسان من عجل﴾ मैंने तुम्हे जल्दबाज़ बनाया, तो हमें ऐसा तरीक़ा ज़िन्दगी दिया जिस पर चलें तो दुनिया भी बनती है और आख़िरत भी बनती है और जिसको छोड़ कर दुनिया के चार दिन बनें और जिसमें चन्द सिक्के अल्लाह तआला दे देता है, लेकिन मौत के बाद कुछ नहीं सिवाए हलाकत, तबाही और बर्बादी के, वह अदालत जिसमें हमें अकेले खड़े होना है, जिसमें सिर्फ़ अकेली जान है।

मैदाने हश्र का हौलनाक तज़्किराः

आप तसव्वुर फ़रमाइए, पूरी काएनात खड़ी हुई है। आदम अलैहिस्सलाम की औलाद और शैतान की औलाद, नंगे बदन, नंगे सिर, नंगे पाँव और पीछे फ़रिश्तों का पहरा है और सामने जहन्नुम से धुंआ उठ रहा है और उसमें से आग की ख़ौफ़नाक

और भयानक आवाज़ें हैं ﴿تفور، تكاد تميز من الغيظ﴾ वह ग़ुस्से से वहशी जानवर की तरह फट रही है, बेलगाम हो रही है, मुंह ज़ोर हो रही है अगर अल्लाह तआला क़यामत के दिन जहन्नुम को न रोके तो जहन्नुम सबको निगल जाए, किसी को न छोड़े, जहन्नुम की ख़ौफ़नाक आवाज़ें ﴿وبرزت الجحيم﴾ इधर जहन्नुम दहक रही है ﴿وازلفت الجنة للمتقين﴾ उधर जन्नत की महक भी उठ रही है और जहन्नुम का धुंआ भी उठ रहा है, पुलसिरात भी लग चुका, हिसाब किताब के तराज़ू भी लग चुके ﴿ونضع الموازين القسط﴾ ऊपर अल्लाह तआला का अर्श भी आ गया ﴿ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية﴾ आठ फ़रिश्तों ने तेरे रब के अर्श को संभाला हुआ है और अल्लाह तआला का ऐलान होता है ऐ लोगों! ﴿اني انسيت لكم منذ ان خلقتكم الى يوم احييتكم هذا﴾ मैं चुप रहा और तुम्हें देखता रहा कि हैदराबाद में क्या कर रहे थे आज के दिन तक मैंने कुछ नहीं बोला, तुम्हारी आँखों ने ग़लत देखा तुम्हारी आँख को न फोड़ा, तुम्हारे हाथों ने ज़ुल्म किये मैंने तुम्हारे हाथ न काटे, तेरे पाँव अय्याशी की महफ़िलों की तरफ़ उठे मैंने तेरे पाँव न तोड़े, तू ज़िना की तरफ़ चला मैंने तेरी शहवत को सलब नहीं किया, तू झूठ बोलता रहा मैंने तेरी ज़बान को काली ज़र्ब नहीं लगाई, तू बहुत कुछ करता रहा मैं हाएल नहीं हुआ और देखता रहा, तुमने सच बोला हमने देखा, तुमने तक़्वा इख़्तियार किया हमने देखा, तुम ने मेरी मान कर ज़िन्दगी गुज़ारी हम ने देखा। हम ने अच्छे को भी देखा, बुरे को भी देखा, शर को भी देखा ख़ैर को भी देखा। आज तुम ख़ामोश रहोगे। तुम्हारे आमाल की फ़िल्म तुम्हें दिखाई जाएगी ﴿كل انسان الزمناه طائره في عنقه﴾ एक तरफ़ किताब होगी, तुम्हें कहा जाएगा कि पढ़ो, कोई ग़ल्ती है तो बताओ। यूं

एक एक अमल दिखला देंगे कि तुम ने फ़लॉं रात शराब पी थी यह देखो।

दोज़ख़ का तज़्किरा और काफ़िरों की पुकारः

यह उन लोगों के साथ किया जाएगा जो तौबा के बग़ैर मर गए जो तौबा करके मर जाते हैं तो अल्लाह तआला उनकी हर चीज़ धो डालता है, साफ़ कर देता है, मिटा देता है, उनको भी भुला देता है जो किए हैं तो उस वक़्त एक आदमी तराज़ू के सामने है उसको अल्लाह तआला का हुक्म होगा कि ले आओ इसके आमाल। पूरी काएनात की नज़र उस पर जम जाती है। उधर तराज़ू एक तरफ़ अच्छाई और दूसरी तरफ़ बुराई, सच व झूठ, पाकदामनी व ज़िना, हराम व हलाल यह सब रखा जा रहा है फिर वह तराज़ू छोड़ा जाता है। जहन्नुम का एक अंगारा सात आसमान और ज़मीनों से बड़ा है और जन्नत का एक नाख़ून के बराबर अगर ज़मीन में रखा जाए तो सारा जहां रौशन हो जाए। अब अगर झुक गया तो पलड़ा बुराई का और उठ गया बुराई का तो उसकी चीख़ होगी ﴿يٰلَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَابِيَهْ﴾ अब इस शख़्स को ज़रा तसुव्वर में लाएं जो एक दम पुकार उठेगा हाय हाय मेरी किताब मेरे उल्टे हाथ में क्यों आ गई ﴿مَا أَدْرِكْ مَا حِسَابِيَهْ﴾ मुझे नहीं पता था कि मेरा यूं हिसाब हो कर नेकी और बदी को तोल दिया जाएगा ﴿يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ﴾ ऐ मौत कहाँ है आजा मुझे मौत दे दे, किसी का कोई मर जाए तो उसका रोना लोगों का रुला देता है। यह मौत का क़िस्सा नहीं जहन्नुम का क़िस्सा है। किस दर्द से वह कह रहा होगा कि हाय मैं मर गया। ﴿مَا أَغْنَى عَنِّي مَالِيَهْ﴾ मेरी जाएदादें कहाँ चली गयीं ﴿هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِيَهْ﴾ मेरी

हुकूमत कहाँ चली गई और लोग उसको देख रहे हैं इतने में अल्लाह तआला की आवाज़ आएगी पकड़ लो इसको ﴿فغلوه﴾ जकड़ दो इसको ﴿ثم سلسلة﴾ ज़ंजीर ले आओ ﴿ذرعها سبعون ذراعا﴾ सत्तर हाथ लम्बी हो ﴿فاسلكوه﴾ इसमें इसको पिरो दो जिस तरह कबाब को सींख पर पिरो दिया जाता है, डाल दो इसको ﴿خذوه فغلوه ثم الجحيم صلوه﴾ फेंक दो इसको फिर अल्लाह तआला फ़र्द जुर्म लगाएंगे। ऐ! बन्दों इसको वैसे ही नहीं पकड़ रहा हूँ ﴿انه كان لا يؤمن بالله العظيم﴾ इसने मेरा इन्कार कर दिया ﴿ولا يحض على طعام المسكين﴾ मेरे ग़रीब बन्दों को रोटी नहीं खिलाई, न औरों को कहा कि खिलाओ, ग़रीब का हाल न पूछा। इतना बड़ा जुर्म है इसको अल्लाह तआला ने शिर्क के साथ रखा, अपनी ज़ात के इन्कार के साथ इसको जोड़ा है। इसको दोज़ख़ में इस लिए ले जाया जा रहा है कि यह न मुझे मानता था और न मेरे ग़रीब बन्दों को रोटी खिलाता था। फिर एक रोज़ नक़्शा क़ायम होगा। एक आदमी आया उसकी एक नेकी बढ़ी और गुनाह घटे तो एक दम नारा मारेगा ﴿هاوم، هاوم﴾ हा हूम का मतलब है आ जाओ, आ जाओ और ख़ुशी से उछलेगा।

एक वाक़ियाः

हमारी आठवीं जमात का पेपर था। रिज़ल्ट हुआ तो एक लड़का अब्दुल वाहिद उसका नाम था। होस्टल में उछला और कूदा कि मैं पास हो गया, मैं पास हो गया। यह नक़्शा अब तक मेरे सामने है। सन् 1965 ई० की बात है। यही नक़्शा यहाँ हो रहा है हा हूम। सारे महश्र को पुकारेगा कि आ जाओ, आ जाओ, फिर कहेगा कि मैं पास हो गया, मैं पास हो गया। अरे

वह कैसे! ﴿اقرؤا کتابیه﴾ मेरा पेपर देखो पूरे नम्बर हैं पूरे।

जन्नत का दिलफ़रेब मन्ज़रः

अरे तू कैसे पास हो गया ﴿انی ظننت انی ملق حسابیه﴾ मुझे यक़ीन कि मेरा पेपर अच्छा होगा, मैं तैयारी करता रहा, तो फिर ऊपर से आवाज़ आएगी ﴿فهو فی عیشة راضیة. فی جنة عالیه. قطوفها دانیه. بما اسلفتم فی الایام الخالیه﴾ ऊपर से आवाज़ आई कि यह मज़ेदार ज़िन्दगी का मालिक हो गया, यह आला जन्नत का मालिक हो गया। अब हैदराबाद की छोटी सड़के और गर्दालूद फ़िज़ा नहीं है, अब जन्नत है जिसकी ज़मीन सोने की, घास ज़ाफ़रान की, ख़ुशबुएं मुश्क की, ग़ुबार अंबर की, नहरें मुईन और सलसबील की, ज़ंजबील के, काफ़ूर के, तसनीम के चश्में, दूध की, शराब की नहरें ﴿عینان نضاختان. عینان تجریان﴾ फलों की बेशुमार क़िस्में ﴿من کل فاکهة زوجان. علی سرر.﴾ तख़्त बिछे हुए ﴿اکواب موضوعه﴾ जाम रखे जा चुके हैं ﴿ونمارق مصفوفه. وزاربی مبثوثه. مساکن طیبة فی جنت عدن﴾ ख़ूबसूरत घर है, एक ईंट मोती की एक ईंट याक़ूत की, एक ज़मुर्द की, मुश्क का गारा, ज़ाफ़रान की घास, फिर अल्लाह का अर्श उनकी छत बनेगा। उनकी नीचे नहरें चल रही हैं। मोतियों के पिलर, याक़ूत के पिलर, ज़मुर्द, के सुतून और उन पर सोने और चाँदी की ईंटों से अल्लाह तआला ने डिज़ाईन के साथ बनाए हुए हैं। उनकी तामीर अल्लाह तआला ने फ़रमाई है ﴿مساکن طیبة. وحور عین﴾ मोटी आँखों वाली लड़कियां उनके दाएं बाएं तरफ़ बिठा दीं ﴿قاصرات الطرف﴾ उनकी नज़रें झुकी हैं अपने ख़ाविन्द के सिवा किसी की तरफ़ नहीं उठतीं, अपने ख़ाविन्द के सिवा किसी को चाहतीं नहीं ﴿کانهن الیاقوت والمرجان﴾ अख़लाक़

वाली हैं ﴿ان____________﴾ ख़ूबसूरत हैं अगर अख़लाक़ न हों तो ख़ूबसूरती पर आचार डालेगा और क्या हो सकता है। अख़लाक़ पहले अल्लाह ने बताया। हस्सान हुस्न भी दोबाला है। किसी इन्सान और जिन ने उनको छुआ नहीं। ऐ मेरे नेक बन्दे कब तक इन्कार करोगे, कब तक अपने रब की नेमतों को झुठलाओगे, किस किस नेमत को झुठलाओगे तो यह सारा एक मन्ज़र है, तो वह ख़ुशी से उछलेगा कि "हा हुम" मैं पास हो गया, कामयाब हो गया।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम इन्सानों को वह रास्ता देकर गए हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी कामिल और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीन भी कामिल, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी ख़ूबसूरत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीन भी ख़ूबसूरत।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ़ बज़ुबान अम्मा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हाः

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को औरतों ने देखा तो हाथों पर छुरियां चलायीं लेकिन मेरे महबूब को देखतीं तो सीनों पर छुरियां चलातीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जमाल था ज़ाहिर भी बातिन भी। चेहरा-ए-अनवर चमकता था। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने घर में सुंई से कपड़ा सी रहीं थीं, अन्धेरा था चिराग़ नहीं था। इतने में सुंई अन्धेरे में गिर गई तो अब वह सुंई हाथ में नहीं आती। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा टटूल रही हैं कहाँ

गई कहाँ गई। इतने में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले आए और जब हुजरे में दाख़िल हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चेहरे के नूर से सुंई जगमगाने लगी। अबू तालिब ने कहा था

وابيض يستق الغمام يوجهه فمال اليتمى عصبة للأ رامل، عنادبه
اهلاك من ال هاشمى، فهم عنده فيه نعمة وفواضل

क़सीदा लामिया में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ़ कर रहा है। वह ख़ूबसूरत चेहरे वाला जो चाँद जैसा हो और जिस के तुफ़ैल बादलों से पानी मांगा जोता हो, ऐसा जमाल अल्लाह तआला ने दिया था, सारे अरब में निराला पैदा फ़रमाया। हर चीज़ में कामिल, मुकम्मल, अकमल। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मख़तून पैदा हुए, नाफ़ बरीदा था काटा नहीं गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वजूद मुबारक पर एक ज़र्रा बराबर भी ग़लाज़त नहीं थी। माँ के पेट से नहला कर बाहर लाए गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत के मौक़े पर जन्नत की हूरों को दुनिया में उतार दिया। आसमान के फ़रिश्ते ज़मीन पर उतर आए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आमद पर बादशाहों के तख़्त उलट गए, पत्थरों के बुत ज़मीन पर गिर गए। ईरान के बादशाह के महल में एक हज़ार साल से आग जल रही थी, ससानियों ने तेरह सौ चौंसठ (1364) साल हुकूमत की। इतनी लम्बी हुकूमत किसी को नहीं मिली और एक हज़ार साल से इसी आग को पूजा करते थे। इससे पहले आग के पुजारी नहीं थे। ज़हाक ईरानी बादशाह था जिसने आग की पूजा शुरू की थी। शिकार को निकला हुआ था अज़दहा सामने आया उसको मारा पत्थर, पत्थर आगे निकल

कर दूसरे पत्थर पर पड़ा तो आपस में रगड़ खाई तो उससे चिंगारी निकली, साथ में लकड़ी पड़ी थी तो उसमें आग लग गई जिससे वह साँप जल गया और मर गया। यहाँ से आतिश परस्ती शुरू हुई। एक हज़ार साल से वह आग जल रही थी। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए तो वह आग एक दम बुझ गई जैसे कि किसी ने पानी मार दिया। अब वह जला रहे हैं वह जलती नहीं। नौशेरवां के महल में एक ज़बरदस्त धमाका हुआ तो उसके महल के चौदह बुर्ज गिर गए। यह काएनात का सरदार आ रहा है, सारे आलम में तहलका मच गया। एक समंदर की मच्छलियों ने दूसरे समंदर की मच्छलियों को ख़ुशख़बरियां देनी शुरू कर दीं। ऐसी पैदाईश हुई आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की। जब माँ ने गोद में लिया, लेते ही एक बादल आया और उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने अन्दर छिपा दिया। बादल में से आवाज़ आई ﴿طوبوابه مشارق الارض ومغاربها﴾ इस बच्चे को मशरिक़ और मग़रिब का चक्कर लगवाओ ﴿يعرض باسمهٗ ونعته وصورته﴾ सारा जहां देखेगा कि यह कौन आ गया, जान लें कि यह कौन है, क्या नाम है, क्या सिफ़ात हैं ﴿واتوه لق آدمؑ﴾ जिसको आदम अलैहिस्सलाम का अख़लाक़ दो, ﴿معرفة شيثؑ﴾ शीस अलैहिस्सलाम की मारफ़त दो, ﴿شجاعة نوحؑ﴾ नूह अलैहिस्सलाम की शुजाअत दो, ﴿وخلة ابراهيمؑ﴾ इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दोस्ती दो, ﴿استسلام اسماعيلؑ﴾ इसमाईल अलैहिस्सलाम की क़ुर्बानी दो, ﴿فصاحة صالحؑ﴾ सालेह अलैहिस्सलाम की फ़साहत दो, ﴿حكمت لوطؑ﴾ लूत अलैहिस्सलाम की हिकमत दो, ﴿ورضاء اسحقؑ﴾ इस्हाक़ अलैहिस्सलाम की रज़ा दो, याक़ूब अलैहिस्सलाम की बशारत दो, यूसुफ़ अलैहिस्सलाम

की ख़ूबसूरती दो, ﴿وشدة موسىٰ﴾ मूसा अलैहिस्सलाम की शिद्दत दो, युशू अलैहिस्सलाम की जिहाद दो, ﴿وحبة دانيالٌ﴾ दानियाल अलैहिस्सलाम की मुहब्बत दो, इलयास अलैहिस्सलाम की वक़्क़ार दो, अय्यूब अलैहिस्सलाम का दिल दो, दाऊद अलैहिस्सलाम की मीठी ज़ुबान दो और ﴿طاعة يونسٌ﴾ यूनुस अलैहिस्सलाम दो, ﴿وعصمة يحيىٰ﴾ यहया अलैहिस्सलाम की पाकदामनी दो, ﴿وزهد عيسىٰ﴾ ईसा अलैहिस्सलाम का ज़हद दो, ﴿واخمصوه فى اخلاق النبينٌ﴾ तमाम नबियों के अख़लाक़ इस बच्चे के अन्दर उतार दो।

पैदा होते ही सवा लाख नबियों के अख़लाक़ तो ले लिए फिर तिरेसठ साल उसमें तरक़्क़ी होती रही, फिर हबीबुल्लाह बनें, हबीब का ताज सिर पर रखा, ख़त्मे नबुव्वत का ताज सिर पर रखा और कितनी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की परवाज़ है सिवाए अल्लाह पाक के कोई और नहीं जानता। पिछली किताबें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ़ में बोल रही हैं। शारे अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने फ़रमाया तेरे ज़ुबान पर वही नाज़िल होने वाली है। शारे अलैहिस्सलाम खड़े हुए जब अल्लाह का कलाम नाज़िल हुआ ﴿يا سماء اسمعى يا ارض انصتى﴾ ऐ आसमानों सुनो और ऐ ज़मीन चुप हो जाओ ﴿ان الله يريد ان يقضى امرا﴾ अल्लाह तआला एक काम को वजूद देना चाहते हैं और शान की तकमील चाहते हैं ﴿لا يقول خناء﴾ जो फ़ज़ूल बोलने वाला नहीं है, मुतवाज़े ऐसे हैं कि चिराग़ पर रखकर चलें तो चिराग़ बुझने न पाए, हमारी तरह नहीं ऐड़ी मार कर। इतना बड़ा बादशाह है कि जन्नत की चाबी उसके हाथ में है। ज़मीन पर इस तरह चलता है कि चिराग़ पर पाँव रखे तो बुझने न पाए।

﴿اجعلوه سكينة لباسه﴾ उसका पाँव ही नहीं पूरा वजूद ही मसकनत होगा ﴿ولبر شعاره﴾ नेकी उसकी पहचान होगी ﴿الحق منطقه﴾ हक़ उसका बोल होगा ﴿والوفاء طبعته﴾ सच और वफ़ाई उसकी तबियत होगी, ﴿المعاف خلق﴾ माफ़ करना उसके अख़्लाक़ होंगे ﴿الاسلام دينه﴾ इस्लाम उसका दीन होगा ﴿العدل سيرته﴾ अदालत उसकी सीरत होगी ﴿احمد اسمه﴾ अहमद उसका नाम होगा ﴿الفتح به اعيناً وقلوب الغفله﴾ मैं उसके तुफ़ैल अन्धों को बीना कर दूंगा और पत्थर दिल रौशन कर दूंगा। यह पहली किताबों में आपकी तारीफ़ हो रही है। जिसकी अल्लाह तआला करें उसके तरीक़े क़ाबिले तारीफ़ नहीं होंगे।

लोग सुन्नत की क़द्र नहीं करतेः

हम ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों को छोड़ दिया कि सुन्नत की कोई बात नहीं, यह सुन्नत है कोई बात नहीं, बहुत बड़ी बात है। ये बड़ी गाड़ियां खड़ी हुई हैं। किसी गाड़ी के टायर की हवा निकल जाए। वह हवा डालते हैं, एक टायर की एक रूपए की हवा निकल जाए तो पचास लाख की गाड़ी खड़ी है। सिर्फ़ एक पैसा की टायर में हवा नहीं तो उससे पूरी गाड़ी खड़ी हो जाती है। इस सुन्नत को हवा से भी ज़्यादा सस्ता न करें। एक रूपए की हवा भी ज़रूरी है गाड़ी चलाने के लिए। अरे मेरे भाईयो! सुन्नत भी ज़रूरी है, सुन्नत के बग़ैर ईमान की गाड़ी कहाँ चल सकती है। जिसकी अज़्मत के सामने अल्लाह ने सारी चीज़ों को झुका दिया, जिसको अल्लाह तआला ने सारे नबियों का इमाम बना दिया। ऊपर लाकर सारे पर्दे हटा अपने आप को दिखा दिया। इतना बड़ा ज़र्फ़ है आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कि सारी तजल्लियात पी गए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े कितने आलीशान होंगे। ज़मानत है गारन्टी है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा दुनिया और आख़रत की निजात है।

हर मुसलमान को अल्लाह का बन्दा बनाने की तमन्नाः

तबलीग़ का काम कोई जमात का काम नहीं है। एक घन्टे से जो बात मैंने आप के सामने रखी है कि हर मुसलमान अल्लाह का बन्दा बन जाए और अल्लाह के महबूब का उम्मती बन जाए। नौकरी क्या और नख़रा क्या, हमारे यहाँ मसल मशहूर है तो इस्लाम किया और नाफ़रमानी क्या?

تعصى الإاله وانت تظهر حبه، هذا العمرى فى خيال يديع، لو
حبك صادقاً لا طعته، إن لمحب لمن يحب مطيع.

यह कैसा इस्लाम है कि हमारे नबी सबसे अफ़ज़ल और आला हैं फिर उसके तरीक़ों को आग लगाते हो और यह कैसा इस्लाम है अल्लाह तआला को वाहिद मान के झूठ बोल रहे हैं, अल्लाह का रब मानते हुए सूद भी खाते हो, रिश्वत भी लेते हो अल्लाह का रब होना याद नहीं रहा। रब तो अल्लाह है, मुझे उस वक़्त पाला जब मैं माँ के पेट में था, जब तो अल्लाह को जानता भी नहीं था, अल्लाह तआला ने तुझको रोटी खिलाई, जब तू मुझे जान कर मेरे तरीक़े पर चलेगा तो क्या अल्लाह तआला तुझे भूल जाएगा।

तो मेरे भाईयो! तबलीग़ कोई तहरीक नहीं, कोई ऐसी तहरीक किसी ने तैयार नहीं की कि आदमी जिसमें आदमी अपने पैसे जेब में रख कर धक्के खाते फिरते, मुल्क मुल्क में फिरे, बस्ती

बस्ती फिरे। कोई जमात ऐसे अफ़राद तैयार नहीं कर सकती। पीछे तारीख़ उठा कर देखिए जो ईमान की बुनियाद पर तहरीक उठती हैं तो वह ऐसे अफ़राद पैदा करते हैं। यह इस बात की मेहनत है कि हर एक मुसलमान बन जाए। यह ऐसी बात नहीं जिसको किसी का दिल न माने, जैसे आप अपने वजूद से रोटी की तलब नहीं मिटा सकते। जो शख़्स पियास से मर रहा हो तो उसको गाना और रक़्स अच्छा नहीं लगेगा। अब उसे रोटी भी नहीं चाहिए, उसको सिर्फ़ पानी का क़तरा चाहिए उस वक़्त किसी भी चीज़ से मुतास्सिर नहीं होगा, वह सिर्फ़ पानी पानी कहता रहेगा, जिस तरह वजूद पानी के बग़ैर, रोटी के बग़ैर बेक़रार हैं इसी तरह वे रूहें जिनको अल्लाह का ताल्लुक़ नसीब नहीं वह इससे ज़्यादा बेक़रार हैं उनको औरत तसल्ली नहीं दे सकती, उनकी गाड़ियां, उनकी फ़ैक्ट्री, उनका इक़्तेदार यह रूह में नहीं उतर सकते। रूह में न औरत पहुँचती है, न शराब पहुँती है, न दौलत पहुँचती है, न इक़्तेदार पहुँता है। रूह में अल्लाह उतरता है अल्लाह, अगर रूह में अल्लाह को जगह नहीं दी तो खुदा की क़सम जैसे आप रोटी न मिले तो हर चीज़ से नफ़रत पानी न मिले तो हर चीज़ से बेज़ार, जिस रूह को अल्लाह नहीं मिलेगा तो वह सारी काएनात से बेज़ार होगी, जब तक उसको अल्लाह नहीं मिलेगा वह भटकता हुआ राही होगा जिसको मंज़िल का कोई पता ही नहीं, तो हम फ़ितरत की आवाज़ लगा रहे हैं।

नमाज़ का कोई नेमलबदल नहीं:

भाईयो! अल्लाह से जी लगाओ उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के तरीक़े पर आ जाओ ﴿وما اتاكم الرسول فخذوه الخ﴾ जो रसूल कहता है कि करो, जिस को छोड़ने को कहता है तो उसको छोड़ दो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक ज़िन्दगी दे कर गए हैं। मानने के लिए पहला काम यह है कि या अल्लाह तू है मान यह तेरा रसूल है मान और जो वह कहे तो उसको करो, कुछ इबादत का हक़ है जो अल्लाह के साथ ख़ास है। अल्लाह के साथ उसमें किसी को शरीक न हो। जिसमें नमाज़ सबसे अफ़ज़ल है। सबसे आला है, सबसे बेहतर है। नमाज़ का कोई बदल नहीं। नमाज़ पढ़ना भी ठीक है लेकिन। यह लेकिन का लफ़्ज़ पिछले की नफ़ी के लिए होता है। नमाज़ ठीक है अच्छी चीज़ है लेकिन। इस लेकिन ने नमाज़ को उड़ाकर रख दिया। कोई बदल नहीं है नमाज़ का। माथा जब तक नमाज़-ज़मीन पर नहीं जाता तब तक अल्लाह राज़ी नहीं होता। हदीस में आता है कि ﴿جعلت قرة عيني في الصلوة﴾ नमाज़ मेरी आँखों की ठन्डक है।

नमाज़ में शरियत की पाबन्दी ज़रूरी हैः

नमाज़ का कोई बदल नहीं, अपनी पूरी जिन्दगी नमाज़ बना लें। जैसे नमाज़ में हाथ मख़सूस जगह बंधते हैं ऐसे ही नमाज़ के बाहर भी हाथ मख़सूस दाएरे में हरकत करेंगे, उससे बाहर हरकत नहीं करेंगे। इसी तरह नमाज़ में निगाह एक जगह ही लगती है ऐसे ही नमाज़ से बाहर नज़र उस जगह फिरेगी जहाँ फिरने की इजाज़त है और जहाँ फिरने की इजाज़त नहीं है वहाँ नहीं फिरेगी, नमाज़ के अन्दर अपने इमाम का क़ुरआन सुनना चाहिए इसी तरह नमाज़ से बाहर हलाल बात सुनें हराम बातें

सुनें, हराम चीज़ों पर न भटकें। इस ज़ुबन से नमाज़ से बाहर हक़ इस्तेमाल करने पर इस्तेमाल करें कि बातिल करें कि बातिल नहीं बोल सकता, गाने नहीं, ग़ीबत नहीं, इससे हक़ बात निकले, नमाज़ में जिस तरह अपने पाँव एक मख़सूस जगह में रखता है इधर उधर नहीं कर सकता इसी तरह नमाज़ से बाहर आप के पाँव हलाल चीज़ों की तरफ़ चलें, हराम चीज़ों की तरफ़ न चलें। जैसे नमाज़ में अल्लाह को सोचता है अल्लाह ही के ध्यान में बैठता है ऐसे ही नमाज़ के बाहर दुकान में भी अल्लाह ही ध्यान में बैठे, घर में अल्लाह का ध्यान, हज़रत अबू रेहाना रज़ियल्लाहु अन्हु जिहाद से वापस आए काफ़ी अर्से के बाद, बीवी भी मुश्ताक़, मियां भी मुशताक़। इशा की नमाज़ पढ़ कर घर पहुँचे। घर में आकर दो रक्आत नवाफ़िल की नियत बांध ली और बीवी पास बैठी हुई है कि अभी दो मिनट में रुकू करके नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाएंगे यहाँ तक कि फ़ज्र की अज़ान हो गई। अबू रेहाना रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़ ख़त्म नहीं हुई। अज़ान पर जा कर सलाम फेरा। बीवी कहने लगी अबू रेहाना रज़ियल्लाहु अन्हु बड़ा ज़ुल्म किया मुझ पर ﴿أما لنا منك﴾ क्या मेरा हक़ तुझ पर अल्लाह ने नहीं रखा? कहने लगे ﴿نسيت والله﴾ अल्लाह की क़सम भूल गया एक कमरा, ख़िलवत, तेरा बन्दा कोई नहीं, कैसे भूल गया यहाँ तो चिल्ले में जाते हैं तो नहीं भूलते। उन्हीं के ख़याल में नमाज़ पढ़ते हैं। क्या नमाज़ थी उन लोगों की कैसे बदनसीब हैं हम कि हमें ज़िन्दगी में कभी ऐसी नमाज़ नसीब नहीं हुई। हमें क्या ख़बर कि ज़िन्दगी किस चीज़ का नाम है।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की कैफ़ियते नमाज़ः

मेरे भाईयो! अल्लाह की क़सम हम लुटे हुए मुसाफ़िर हैं, हम लुटे हुए राही हैं, हमें पता नहीं लज़्ज़त किसे कहते हैं, ज़िन्दगी किसे कहते हैं जो रोटी खाने की लज़्ज़त उठाता है उसे क्या ख़बर ज़िक्र की लज़्ज़त क्या है? जो नज़र उठाने की लज़्ज़त जानता हो तो उसे क्या ख़बर कि नज़र झुकाने की लज़्ज़त क्या है। जिस शख़्स को नमाज़ की लज़्ज़त महसूस नहीं उससे बड़ा भी कोई महरूम होगा। हाय हाय करोड़ों की आबादी में कोई ऐसा नज़र आए जिसको नमाज़ की लज़्ज़त नसीब है।

यह तो हम नमाज़ पढ़ने वालों पर रोते हैं जो नमाज़ नहीं पढ़ते उन पर ख़ून के आंसू रोएं तो भी कम हैं, जो नमाज़ पढ़ते हैं उन्होंने कभी बैठ कर सोचा है कि ऐ मौला तेरी मुहब्बत का सज्दा तुझे नहीं दे सका, तेरे ताल्लुक़ की एक रक्अत भी नहीं पढ़ सका। ऐ अल्लाह अब तो आ जा!

हर तमन्ना दिल से रुख़सत हो गई
अब तो आ जा अब तो ख़िलवत हो गई

इसकी दुआ ही कोई नहीं मांगता, दुआ मांगते हैं ऐ अल्लाह रोटी दे दें। सेहत दे दें, मुलाज़मत दे दें। यह भी मांगनी है। उससे से न मांगे तो किससे मांगे? लेकिन यह भी मांग लें कि या अल्लाह अपना ताल्लुक़ भी दे दें, ऐसी नमाज़ दे दें कि जब मैं अल्लाहु अक्बर कहूँ तो सबसे बेगाना हो जाऊँ। हज़रत अबू रेहाना रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मैं भूल गया। जब मैंने नमाज़ शुरू की तो मेरे सामने जन्नत खुल गई मुझे पता ही नहीं

चला कि मैं कहाँ खड़ा हूँ। यह इबादत दे गए। नमाज़ अज़ीमुश-शान अमल है। नमाज़ ठीक हो जाएगी तो पूरी ज़िन्दगी इस्लाम में आ जाएगी। यह नमाज़ियों की ज़िन्दगी इस लिए ठीक नहीं हैं कि नमाज़ ठीक नहीं है लेकिन ये न पढ़ने वालों से बदर्जाहा बेहतर हैं। जैसी भी पढ़ते हैं न पढ़ने वालों से इनको नहीं मिला सकते। यह सिर सज्दे में रखना ही होगा।

नमाज़ियों के पाँच दर्जे हैं:

इब्ने क़ीम रह० ने नमाज़ियों के पाँच दर्जे बताए हैं:-

1. पहला दर्जा सुस्त कभी पढ़ी कभी छोड़ दी यह जहन्नुम में जाएगा।

2. दूसरा दर्जा बाक़ायदा पढ़ने वाला अपने ध्यान में पढ़ता है, कभी अल्लाह तआला का ध्यान नहीं आया। इसकी डांट डपट होगी।

3. ﴿معاقه معفو عنه﴾ यह तीसरा है कि कोशिश करता है लेकिन ध्यान नहीं जमता कभी ध्यान आता है कभी निकल जाता है। यह रियायती नम्बरों से पास हो जाएगा। पैंतीस नम्बर तो दे दो, इसने कोशिश तो की है।

4. महजूर है अल्लाहु अक्बर कहता है तो दुनिया से कट जाता है अल्लाह से जुड़ जाता है। यह जो सलाम फेरते हैं उसकी हिकमत यह है कि जब आदमी अल्लाहु अक्बर कहता है तो ज़मीन से उठ जाता है और आसमानों में दाख़िल हो जाता है, अब वह ज़मीन पर नहीं बल्कि गया हुआ है। जब नमाज़ ख़त्म हुई तो वापस आया तो इधर वालों को भी सलाम करता है उधर

वालों को भी सलाम करता है। यह दर्जा चौथा है। यहाँ से नमाज़ का अज्र शुरू होता है। इस नमाज़ी की ज़िन्दगी कभी ख़राब नहीं होगी।

5. पाँचवा दर्जा नमाज़ का वह है जो मुक़र्रिबीन की नमाज़ अंबिया, सिद्दीक़ीन की नमाज़। उनकी आँखों की ठन्डक नमाज़ बन जाती है। जैसे हज़रत अबू रेहाना रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़ है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को तीर लगा तो सारा ज़ोर लगाया निकालने के लिए, नहीं निकल सका तो कहा छोड़ दो नमाज़ में निकाल लेंगे। नमाज़ की नियत बांधी तो उस तीर को निकाला गया और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के जिस्म पर जुंबिश भी नहीं आई। सलाम फेरने के बाद पता चला कि तीर निकाल लिया गया तो कहने लगे मुझे पता ही नहीं चला। यह नमाज़ मुक़र्रिबीन की है।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निज़ामें सलात देकर गए, मालदारों को ज़कात का निज़ाम देकर गए, ज़मींदारों का अश्र देकर गए, ज़्यादा पैसे हों हज देकर गए, रमज़ान के रोज़े देकर गए फिर इसके साथ अख़लाक़ देकर गए। नमाज़, रोज़े, ज़कात से इस्लामी माशरा वजूद में नहीं आता जब तक इस्लामी अख़्लाक़ वजूद में न आएं। इस्लामी अख़्लाक़ को वजूद में लाने के लिए तीन बुनियादी चीज़ें इर्शाद फ़रमायीं:

﴿صل من قطعك، تعطى من حرمك، وتعف عن من ظلمك﴾

जो तुझ से तोड़े उससे जोड़, जो न दे उसको दो, जो ज़ुल्म करे उसको मॉफ़ करो। यह अख़्लाक़ जब तक क़ायम नहीं होंगे तो उस वक़्त तक इस्लामी माशरा नहीं बन सकता। इस्लामी माशरा बनाने के लिए इन तीनों बातों पर अमल करना पड़ेगा।

दरगुज़र की एक मिसालः

इमाम ज़ैनुलआबिदीन रह० को एक आदमी गाली देने लगे तो दूसरी तरफ़ मुँह करके बैठ गए वह समझ रहा था उनको पता ही नहीं कि मैं इनको गालियां दे रहा हूँ, वह सामने आकर कहने लगा तुझे गालियां दे रहा हूँ तुझे! इमाम साहब रह० ने कहा मैं तुम्हें मॉफ़ कर रहा हूँ तुम्हें।

दरगुज़र का जज़्बा पैदा करोः

ज़ुल्म करने वाले को मॉफ़ करो। आप सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो मॉफ़ करेगा अल्लाह पाक उसे इज़्ज़त ज़रूर देगा। बदला लेने की भी इजाज़त है लेकिन इस्लाम का क़ानून कितना ख़ूबसूरत है? यहाँ चाकू मारा, निशान आ गया, ज़ख़्म पड़ गया। अब बदला लेने की इजाज़त है लेकिन अगर चाकू मारकर हड्डी तोड़ दी तो अब बदला लेने की इजाज़त नहीं है। अब उसका मुआवज़ा लिया जाएगा बदला नहीं क्योंकि हड्डी तोड़ने में इम्कान हैं कि ज़्यादा टूट जाए। लिहाज़ा अब शरिअ़त कहती है कि तुम्हें मुआवज़ा लेना होगा, बदला कोई नहीं। इतना अब्ल इस्लाम ने दिया है। बदले की इजाज़त लेकिन मॉफ़ करने की फ़ज़ीलत है अगर यह हदीस ज़िन्दा होती तो सिन्धी, पंजाबी झगड़े खड़े न होते। पठान मुहाजिर झगड़े खड़े न होते। एक हदीस को छोड़ने से यह आग भड़क गई। न मारने वालों को पता है कि मैं क्यों मार रहा हूँ और न मरने वाले को पता है मैं क्यों मर रहा हूँ। ये दोनों जहन्नुम में जा रहे हैं सिर्फ़ एक हदीस को छोड़ने से, मॉफ़ न करने से ये फ़साद रूनुमा होते हैं। कितने

ख़ानदान इसमें उजड़ गए, कितनी आबादियां इसमें वीरान हो गयीं। क़ुरआन में अल्लाह ने अपने हबीब की नमाज़ की तारीफ़ नहीं की, आपके रोज़े, आपकी ज़कात की और आपके जिहाद की तारीफ़ अल्लाह तआला ने नहीं की। सिर्फ़ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़्लाक़ की अल्लाह ने तारीफ़ की है। ऐ मेरे महबूब क्या कहता है तेरे अख़्लाक़ पर ﴿انك لعلى خلق عظيم﴾ आपके अख़्लाक़ की क़सम खाई। यह बहुत बड़ा अमल है जिससे माशरा बनता है माशरा।

इन्सान को मुकम्मल अख़्लाक़ का पैकर होना चाहिएः

इसके लिए मेहनत करनी पड़ती है कि अख़्लाक़ आली हों ﴿بعث لاتمم مكارم الاخلاق﴾ मैं अख़्लाक़ को बुलन्दियों तक पहुँचाने के लिए भेजा गया हूँ। एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दीन किसे कहते है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हुस्ने अख़्लाक़, फिर दूसरी तरफ़ आ कर बैठा दीन किसे कहते हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हुस्ने अख़्लाक़, फिर तीसरी तरफ़ से सवाल किया कि दीन किसे कहते हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हुस्ने अख़्लाक़। तीन मर्तबा पूछने पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक ही जवाब दिया। फिर वह आदमी पीछे आया और सवाल किया ﴿ما الدين﴾ दीन किसे कहते हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यूं पीछे मुड़कर देखा। क़ुर्बान जाइए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हिल्म पर। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अरे भाई तू कब समझेगा? ﴿وهو ان لا تغضب﴾ दीन यह है कि गुस्से न हुआ कर।

तो हुस्ने अख़्लाक़ दीन का बहुत बड़ा बाब है। नमाज़ सिर्फ़ पाँच हैं, फिर इशराक़, चाश्त, अव्वाबीन तहज्जुद हैं। टोटल मिलाकर नमाज़ें हमारी ज़िन्दगी में बीस तीस बनती हैं तो चलो रोज़ाना सौ नमाज़ें फ़र्ज़ करें तो बाक़ी वक़्त तो इन्सानों के साथ गुज़ारना है तो अख़्लाक़ अच्छे नहीं होंगे तो माशरा टूट जाएगा। तलवारों के लगे ज़ख़्म तो भर जाते हैं ज़ुबानों के लगे ज़ख़्म नहीं भरते। देखो कुफ़्र एक बोल ही तो है लेकिन हमेशा की जहन्नुम एक बोल से, कलिमा तौहीद एक बोल है हमेशा की जन्नत।

﴿فقولوللناس حسنا﴾ लोगों से अच्छी बात करो ﴿قل عبادی یقول التی ھی احسن﴾ मेरे बन्दों से अच्छी बात किया करो तो एक मेहनत यह है कि बदअख़्लाक़ अल्लाह तआला की नज़रों से गिरा हुआ होता है। एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा ﴿ای حسنة اعظم﴾ सबसे बड़ी नेकी क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हुस्ने अख़्लाक़।

दुनिया की नेमतें

इन्सान एहसान फ़रामोश न बनेः

मेरे भाइयो और दोस्तो! अपने मोहसिन के सामने झुकने इन्सान की फ़ितरत है और सारी मख़्लूक़ जानदार की फ़ितरत है। एहसान करने वाले के सामने सिर झुकाया जाता है। हम कुत्ते को एक रोटी खिलाते हैं और सारी ज़िन्दगी वफ़ा करता है, घोड़े को चारा डालते हैं सारी ज़िन्दगी साथ देता है निभाता है। इन्सान से भी अल्लाह तआला का यही मुतालबा है कि हम कुछ नहीं थे अल्लाह तआला ने हमें वजूद बख़्शा।

दिलों में मुहब्बत अल्लाह तआला ही डालते हैंः

अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर हैं। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि सब काम मैं करता हूँ। तुम्हारा अल्लाह यह करता है कि माँ बाप के दिल में तुम्हारी मुहब्बत डाल देता है और जब चाहता है ख़ींच लेता है जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा के दिल से मुहब्बत को खींच लिया था। फ़िरऔन को मूसा अलैहिस्सलाम के लिए दूध पिलाने के लिए दाया की ज़रूरत थी। उसने बहुत सी दायों को दरबार में तलब किया ताकि दूध पिलाएं बच्चे को मगर अल्लाह तआला ने फ़रमायाः "हम ने मूसा पर अपनी माँ के अलावा सबका दूध हराम कर

दिया।" बिलआख़िर एक औरत ने कहा जो उस मजलिस में थी मैं दाया को लेकर आऊँ? फ़िरऔन कहा हाँ। जब वह औरत दाया को लेकर आई वह दाया नहीं बल्कि हक़ीक़ी माँ थी। वह अपने जज़बात को क़ाबू में नहीं रख सकती थी। अल्लाह तआला ने फ़रमाया अगर मैं उस वक़्त उसके दिल से मुहब्बत को न खींचता तो बहुत हाल ख़राब कर देती।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का हैरत अंगेज़ वाक़ियाः

सुलेमान अलैहिस्सलाम के पास एक झगड़ा आ गया था। दो बच्चे खेल रहें हैं एक बच्चा झील में गिर कर मर गया और एक बैठा रहा। दोनों औरतों में से एक कहने लगी कि यह मेरा है। दूसरी कहने लगी कि यह मेरा है। गवाह किसी के पास नहीं। सुलमान अलैहिस्सलाम के पास लेकर आयीं। एक कहे कि यह मेरा है और दूसरी कहे कि मेरा। सूलेमान अलैहिस्सलाम ने कहा ऐसे तो फ़ैसला नहीं हो सकता तो ऐसा करो छुरी ले आओ इसके दो टुकड़े करके आधा एक को दे दो और आधा दूसरी को दे दो। जो असली माँ थी वह रोने लगी उसने कहा उसी को दे दो, उसी को दे दो। इसके दो टुकड़े मत करो। सुलेमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया इसको दे दो यह इसी का बेटा है। वह क्यों न चीख़ी यह क्यों चीख़ी? क्योंकि इसका अपना था वह कटा हुआ नहीं देख सकती थी। जिसका नहीं है वह चुप रही और जिसका था वह चीख़ पड़ी। माँ अपने जज़बात का इज़हार नहीं कर सकी तो यह कैसे हो सकता है ﴿لو لا ان ربطنا على قلبها﴾ हमने उसके दिल को बन्द कर दिया मुहब्बत ही नहीं नज़र आ रही है तो यह अल्लाह तआला है जो मुहब्बत दिल में डालता है

और दिल को नरम फ़रमाता है। मेरी माँ भी जागती है और मेरा बाप भी जागता है और फिर यह सारा निज़ाम परवान चल कर आदमी वजूद में आता है फिर आदमी परवान चढ़ता है।

माज़ी देखकर इबरत हासिल करें:

﴿لم ازل ادبر تدبيرا حتى ارادتي فيك﴾ और मैंने अपने इरादे को नाफ़िज़ किया ﴿وخرجتك انى دارك دنيا﴾ और तुझे दुनिया में लेकर आया ﴿فلما ترادعة﴾ जब तुझ में जवानी की लहरें दौड़ें ﴿وقدرت﴾ और क़द्दावर हो गया ﴿واشتد عضوك﴾ तेरे बाज़ू ताक़तवर हो गए, जवानी की ताक़त पैदा हो गई तो अब यह चाहिए था तो सारी पिछली ज़िन्दगी को देख कर मेरे सामने झुक जाता जैसे कुत्ता तुम्हारी एक रोटी खाता है और सिर झुका देता है। तुम उसको खाना खाते हुए बुलाओ रोटी छोड़ कर आ जाता है। उसको लात मारो, छुरी मारो सिर नहीं उठाता, घर का बच्चा भी उसकी पिटाई करे तो वह सिर नहीं उठाता। बाहर से बड़ा छः फुट का आदमी भी आ जाए तो उसकी टांगों को पड़ जाता है, जान की परवाह नहीं करता और रोटी की वफ़ा करता है। बुलाओ तो उठ कर आ जाता है, खाना खाते छोड़कर आ जाता है। अल्लाह तआला ख़ाली बैठे को बुलाता है, मस्जिद में आ जाओ कोई उठ कर नहीं आता। ख़ाली को बुलाता है आ जा, आ जा, कोई उठ कर नहीं आता तो अल्लाह जल्ले जलालुहु ने सारे एहसान गिनाए हैं कि मैंने यह किया, यह किया, यह किया। अब आगे तुमने क्या करना था, यह करना था कि तुम मेरी मान कर चलते।

यह सारा जहां इन्सान के नफ़े के लिए बना है:

﴿يابن آدم خلقت الاشياء لاجلك﴾ यह सारा जहां ऐ बन्दे तेरे लिए बनाया ﴿وخلقك لاجلي﴾ और तुझे मैंने अपने लिए बनाया तो अब यह होना चाहिए था कि इन सारे एहसानात को तू देखता है कि यह सारा निज़ाम अल्लाह तआला ने तेरे लिए चलाया है ﴿الشمس والقمر دائبين﴾ सूरज और चाँद तुम्हारे लिए दिन और रात का निज़ाम ला रहे हैं ﴿انّا صببنا الماء صبا﴾ बारिश तुम्हारे लिए बरस रही है ﴿ثم شققنا الارض شقا﴾ ज़मीन तुम्हारे लिए फट रही है ﴿فانبتنا فيها حبا وعنبا و زيتونا ونخلا و حدآئق غلبا وفاكهة وابا﴾ इसमें से ग़ल्ले और फल और फूल और सब्ज़ियां और चारा यह सब किस के लिए हैं ﴿متاعا لكم ولا نعامكم﴾ तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के लिए सब कुछ हो रहा है ﴿والارض بعد ذالك دحها﴾ ज़मीन तुम्हारे लिए बिछौना बिछा दी कोई रोलर नहीं चलाया न कोई बुलडोज़र, एक हुक्म से ज़मीन को बिछाया ﴿اخرج منها مآئها﴾ तुम्हें सबसे ज़्यादा पानी की ज़रूरत थी पानी निकाला ﴿ومرعها﴾ तुम्हें सब्ज़े की ज़रूरत थी अपने लिए जानवरों के लिए वह निकाला फिर ज़मीन हिलती थी ﴿والجبال ارسها﴾ कि वज़न को बराबर करने के लिए पहाड़ लगाए दिए क्यों ﴿متاعا لكم ولا انعامكم﴾ तुम्हारे लिए और तुम्हारे जानवरों के लिए। तू मांगता है मैं देता हूँ ﴿استغفرتني غفرت لك﴾ तू तौबा करता है मैं तेरी तौबा क़ुबूल कर लेता हूँ ﴿ان عقلتني عقلت لك﴾ तू फिर तौबा तोड़ता है फिर आकर तौबा करता है फिर मैं तौबा क़ुबूल कर लेता हूँ ﴿اهكذا جزاء من احسن اليك﴾ तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि फ़ैसला कर कि एहसान करने वाले के साथ यही किया जाता है जो तू मेरे साथ कर रहा है।

माँ बाप क्यों दुखी होते हैं जब औलाद नाफ़रमान होती है, एहसान याद दिलाते हैं कि यह किया, यह किया। अल्लाह का एहसान तो देखिए जिसने गन्दे पानी से ख़ूबसूरत इन्सान बनाया। कितना बड़ा एहसान है इस कुफ़्र की वादी में आपको इस्लाम की दौलत बख़्शी। कितनी बड़ा ज़ुल्म कितनी बड़ी हलाकत है कुफ़्र पर मर जाना। कितनी बड़ी हलाकत है कुफ़्र पर मरने जाने वाले कभी भी जहन्नुम से नहीं निकलेंगे ﴿وما هم بخرجين من النار﴾ कोई तो दिन आता जहन्नुम से निकलते, कभी नहीं निकलेंगे। कितना बड़ा एहसान अल्लाह तआला ने किया।

आज हर चीज़ की हिफ़ाज़त है मगर अपने ईमान की हिफ़ाज़त नहीं:

ईमान की दौलत दी सब से बड़ी दौलत ईमान है। इसको तो ज़ाए कर रहे हैं। दस डॉलर की चीज़ ख़रीद कर लाते हैं तो उसको भी पैकिगं करके लाते हैं कि कहीं ज़ाए न हो जाए। एक किलो गोश्त ख़रीदते हैं तो उसको भी लपेट कर लाते हैं कि कहीं ख़राब न हो जाए। इसकी हिफ़ाज़त के लिए फ्रिज बना कर रखे हुए हैं। दो चार डॉलर के कपड़े हैं उसकी हिफ़ाज़त के लिए अलमारियां बनी हुई हैं और बेग बने हुए हैं और उनको धोने के लिए लान्डरियां बनी हुई हैं कि कपड़े ख़राब न हो जाएं। मेरे भाईयो! दस डॉलर की चीज़ की हिफ़ाज़त का इन्तेज़ाम कर रखा है, ईमान को बचाने के लिए कोई इन्तेज़ाम नहीं है कि आँखों ने ग़लत देखा, ईमान लुटा, कानों ने गाने सुने तो ईमान लुटा, ज़ुबान ने झूठ बोला तो ईमान लुटा, हराम खाया तो ईमान लुटा,

अपनी शहवत को ग़लत जगह इस्तेमाल किया तो ईमान लुटा। सबसे बड़ी दौलत तो लुटा दी सबसे बड़ी दौलत तो बर्बाद कर दी तो पैसा कमा कर क्या करोगे। छोटे से छोटा अमल भी नेकी न छोड़ो, छोटी से छोटी नेकी भी न छोड़ो और छोटे से छोटे गुनाह से भी परहेज़ करो। हदीस में आता है ﴿يا عبادى لو اذنبت ذنبا فلا تنظر الى صغيره انظر الى من عصيته﴾ मेरे बन्दे जब कोई गुनाह करता है तो यह न देख कि छोटा है या बड़ा यह देखा कर कि नाफ़रमानी किसकी हो रही है। नाफ़रमानी तो बहुत बड़े रब की हो रही है न। उस ज़ात से असर लेकर चलना यह ईमान है। अल्लाह तआला के एहसानात हैं मेरे भाईयो! जिसने सबसे बड़ी दौलत इन्सान बनाया, सबसे बड़ी दौलत ईमान अता फ़रमाया और उससे बड़ा एहसान फ़रमाया हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मती बनाया। इतने एहसान के बावजूद हम इस डॉलर की ख़ातिर अमरीका की ख़ातिर, यहाँ के पासपोर्ट की ख़ातिर, यहाँ के ग्रीन कार्ड की ख़ातिर हम अल्लाह के दीन को छोड़ें। यहाँ के पैसे इकठ्ठे करके हम औलाद को कुफ़्र की वादी में धकेल दें। आप ने क्या कमाया।

मुसलमान का पौंड की ख़ातिर ईमान ख़राब करनाः

इंगलैंड में एक आदमी मिला। हमारी जमात को गई कहा जी पौण्ड कमा ले पर ईमान गंवा बैठे। औलादें हमारे हाथों से चली गयीं। अब इन पौण्डों को हम आग लगाएंगे या क्या करेंगे। इस वक़्त होश आया। जब होश आया तो चिड़ियां उड़ चुकी थी। अब लौट कर आना मुश्किल है। दावत व तबलीग़ का काम

करो इसमें अल्लाह तआला ने तासीर रखी है। अपने लौट कर आएंगे, पुराने दाख़िल होंगे। यह नबी की मेहनत का असार है। जहां नबी का काम होता है।

जहाँ दावत होगी वहाँ बरकत ही बरकत होगीः

जहाँ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मेहनत चलेगी वहाँ अल्लाह तबारकतआला कुफ़्र को भी तोड़ेगा अपने भूले हुओं को भी वापस लेकर आएगा और परायों के लिए भी इस्लाम का दरवाज़ा खुलेगा। आप को यहाँ रहते हुए ईमान बचाना है, अपनी औलाद को नस्लों को बचाना है अगर यहीं रहना है और यहाँ नहीं जाना है और अपनी नस्लों को ईमान पर बाक़ी रखना है तो मेरे भाईयो तबलीग़ का काम करो। तबलीग़ वह काम है जिससे ईमान बनता है और ईमान चढ़ता है औरों के लिए इस्लाम का दरवाज़ा खुलता है। यह अल्लाह के एक लाख चौबीस हज़ार नबियों की तारीख़ गवाह है जब नबी ने बुरे से बुरे माहौल में ﴿لا اله الا الله﴾ की दावत दी और आवाज़ लगाई तो क़ौमें टूट कर अल्लाह तआला की तरफ़ आयीं और क़बाइल के क़बाइल इस्लाम में आए और बातिल टूटा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मेहनत सारे आलम की मेहनत है, सारी इन्सानियत की मेहनत है, सारे जहानों पर मेहनत है अगर आप यहाँ रहते हुए इस काम को अपनी मेहनत समझेंगे, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आप उम्मती हैं। मैं भी हूँ आप भी हैं। हमारे नबी आख़री नबी हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी नहीं है। हम सब भूल गए हैं

हांलाकि हमने अपने अक़ीदे में शामिल किया है कि हमारे नबी के बाद कोई नबी नहीं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़री नबी हैं।

ख़ातिमुन-नबिय्यीन होने का सही मतलबः

आख़री नबी होने का मतलब क्या है कि अब क़यामत तक जो नबुव्वत का दावा करेगा वह बातिल है, वह काफ़िर है, वह मुरतिद है लेकिन इन्सानों को इस्लाम की बात समझाने और पहुँचाने का जो इन्तेज़ाम है वह किसके सुपुर्द किया जाएगा तो दो बातें थीं या तो यह था कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कुफ़्र बाक़ी नहीं रहेगा, कुफ़्र तो बहुत ज़्यादा बाक़ी है या यह था कि मुसलमान के मुसलमान होंगे कभी गुमराह नहीं होंगे। तो आप अपनी औलादों को देख रहे हैं कि वे इस्लाम छोड़कर ईसाइयत में जा रहे हैं। इस्लाम छोड़कर मुरतिद हो रहे हैं। अरबों की नस्लें मुरतिद हो गयीं तो हम तो अजमी हैं। साउथ अफ़्रीक़ा में लाखों अरब औलादें इसाई हो गयीं। पिछले साल हम आस्ट्रेलिया गए। कितने अफ़ग़ानिस्तान घराने और कितने अरब घराने उनके बच्चे बच्चियां बिल्कुल जिनको पता ही नहीं कि हमारे माँ बाप मुसलमान थे अरब नसल हैं लेकिन इस्लाम छोड़ चुकी हैं तो यह कोई बात नहीं है कि मुलसमान मुरतिद हो रहे हैं जो बाक़ी हैं ख़स्ता हालत में हैं, बड़ी कच्ची हालत में हैं। यह मुसलमान इस्लाम पर बाक़ी रहें जो भूल गए हैं वह वापस आजाएं जो नहीं हैं वे इस्लाम में आ जाएं इसके लिए अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत को ﴿الا فليبلغ شاهد الغائب﴾ का फ़रमान ﴿اخرجت للناس﴾

﴿تامرون بالمعروف وتنهون عن المنكر وتؤمنون بالله﴾ तुम सबसे बेहतर उम्मत हो कि तुम मेरा पैग़ाम दुनिया में पहुँचाने के लिए घरों से निकाले गए हो तो तबलीग़ का काम मेरे भाईयो यह कोई जमाती काम नहीं है हर मुसलमान जो यह कहता है कि मेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़री नबी हैं उनके बाद कोई नबी नहीं उसके ज़िम्मे है कि ला इलाहा इलल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह यह जो हमने कलिमा पढ़ा है हमें पाबन्द बनाता है कि अल्लाह तआला की मानो ﴿لا نبيا بعدى﴾ हमारे नबी के बाद कोई नबी नहीं यह बोल हमें पाबन्द बनाता है कि अल्लाह के दीन की तबलीग़ करें। उसके पैग़ाम को आगे ज़िन्दा करो। इसके लिए आलिम होना शर्त नहीं और मुक़र्रिर होना कोई शर्त नहीं ﴿بلغوا عنى ولو آية﴾ मेरी एक बात भी है तो आगे पहुँचाओ, पूरे क़ुरआन की एक अनपढ़ आदमी तबलीग़ कर सकता।

दावत व तबलीग़ बहुत आसान हैः

सारी आसमानी किताबों का ख़ुलासा, आसमान से चार किताबें आयीं, डेढ़ सौ छोटे छोटे किताबचे आए। छोटी किताबें डेढ़ सौ और बड़ी चार किताबें और पहली तीन किताबों का ख़ुलासा क़ुरआन पाक है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اوتيت المفاتحة مكان تورٰاة﴾ मुझे तौरात के बदले में अल्लाह तआला ने सूरहः फ़ातेहा अता फ़रमाई, ﴿والمائدة مكان انجيل﴾ और इन्जील के बदले में अल्लाह तआला ने मुझे सूरहः माएदा अता फ़रमाई, ﴿حٰم مكان الزبور﴾ और ज़बूर के बदले में अल्लाह तआला ने मुझे सूरहः हामीम अता फ़रमाई। हामीम की जितनी सूरतें हैं जो चौबीसवें सिपारे से लेकर छब्बीसवे सिपारे में

हैं ये कुल सात सूरते हैं ﴿حٰمٓ والكتاب مبين، حٰمٓ تنزيل من الرحمٰن الرحيم﴾ हामीम यह सात सूरते हैं जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ज़बूर के बदले में मुझे अता फ़रमायीं तो सारी किताबें हमारे क़ुरआन पाक की इन सूरतों में आ गयीं सूरहः फ़ातेहा, सूरहः माइएदा और सात सूरतें हामीम की हैं तो नौ सूरतों में सारी आसमानी ऊलूम अल्लाह तआला ने दे दिये ﴿فضلت بالمفصلت﴾ बाक़ी क़ुरआन के ज़रिए से अल्लाह तआला ने मुझे इज़्ज़त बख़्शी फिर सारे क़ुरआन पाक का खुलासा उलमा ने लिखा है सूरहः फ़ातेहा है। पूरे क़ुरआन का खुलासा किया जाए तो सूरहः फ़ातेहा है सूरहः फ़ातेहा का खुलासा किया जाए तो एक आयत है ﴿اياك نعبد واياك نستعين﴾ यह पूरे क़ुरआन का खुलासा है। अगर यूं कहा जाए कि ﴿اياك نعبد واياك نستعين﴾ सारे आसमान के उतरे हुए ऊलूम का खुलासा है तो यह बात ग़लत नहीं ﴿اياك نعبد﴾ ऐ अल्लाह तेरी मानेंगे, तेरी बन्दगी करेंगे। बन्दगी का क्या मतलब है कि नमाज़ पढ़ेंगे बाहर जाकर सूद पर काम करेंगे, शराब बेचेंगे नहीं ﴿اياك نعبد﴾ तेरी बन्दगी करेंगे यानी चौबीस घन्टे तेरी मानकर चलेंगे। बाज़ार में भी तेरी इताअत, दफ़्तर में भी तेरी इताअत, मक्का मुकर्रमा में भी तेरी इताअत थोथावे शिकागो में भी वही है। मदीने मुनव्वरा में भी वही है, पाकिस्तान में भी वही है, हिन्दुस्तान में भी वही है। यह अमरीका है तो है तो अल्लाह तआला के क़ानून के नीचे, अल्लाह तआला की ज़मीन की पर ज़मीन है तो अल्लाह तआला की माननी पड़ेगी, अमरीका की नहीं चलेगी ﴿تراذى كشفة الغبار افرس تحت رجلاعن حمار﴾ मौत पर आँख खुलेगी कि मैं किस पर बैठा था लेकिन उस वक़्त आदमी पछताए तो कुछ भी नहीं हो सकता।

क़ुरआन पाक का खुलासा एक आयत है:

क़ुरआन पाक का खुलासा मैं अर्ज़ कर रहा था ﴿اياك نعبد﴾ ऐ अल्लाह तेरी मानेगें ﴿واياك نستعين﴾ और ऐ अल्लाह तुझी ही से मदद चाहेंगे, पैसों से नहीं चाहेंगे, हुकूमत से नहीं चाहेंगे। हमारा काम तू बनाएगा पैसा नहीं बनाएगा, डॉलर नहीं बनाएगा, डाक्टर नहीं बनाएगा या अल्लाह तू बनाएगा। अब मैं इसको आसान करके बताता हूँ अगर आपने किसी शख़्स को यह कह दिया कि मेरा सब कुछ अल्लाह करता है लिहाज़ा अल्लाह तआला से मांगना चाहिए, अल्लाह तआला की मान कर चलना चाहिए और उसके नबी के तरीक़े पर चलना चाहिए और उसको आगे फैलाना चाहिए तो इन चार जुमलों में आपने सारे आसमानी इल्म की दावत दे दी, सारी हदीस की दावत दे दी ,सारी तौरात, इन्जील और ज़बूर की दावत दे दी अगर आपने यह चन्द जुमले बोल दिए भाई हमें अल्लाह की मान कर चलना चाहिए और अल्लाह ही से मांग कर चलना है और अल्लाह ही हमारे काम बनाता है और नबी के तरीक़े पर चलना है और उसको हमने आगे पहुँचाना है तो पूरा क़ुरआन और हदीस हमने आगे तक पहुँचा दिया तो यह तबलीग़ ऐसा आसान काम है कि एक अनपढ़ भी कर सकता है, आम आदमी भी कर सकता है, डाक्टर भी कर सकता है, इन्जीनियर भी कर सकता है और इस काम में अल्लाह के इन जुमलों में कुछ नज़र नहीं आता मैंने बोल बोला आपने सुन लिया। जाओ जाओ ऐसी बात बड़े बनाने वाले फिरते हैं लेकिन इस जुमले के पीछे बड़ी ताक़त है जब यह बोल चलता चलता हर घर तक पहुँचेगा तो अल्लाह तआला इस

काएनात को तोड़ेगा। यह बातिल चलेगा नहीं। इसके टूटने का वक़्त आया हुआ है। यह तरक़्क़ी याफ़्ता नहीं यह फूला हुआ है। डाक्टर जानता है यह मोटापा नहीं है इसके पेट में पानी भर चुका है यह मरने वाला है। मेरी नज़र देखेगी कि बड़ा मोटा ताज़ा आदमी है, बड़ी मोटी मोटी गालें हैं, बड़े मोटे मोटे बाज़ू हैं। जानने वाला डाक्टर कहेगा जनाब पानी भर चुका है, मरने वाला है, सही नहीं है आपको नज़र आ रहा है मोटा ताज़ा। मौत करीब है, मैं देख रहा हूँ इसके अन्दर का निज़ाम टूट चुका है। अल्लाह की ख़बर बता रही है कि जब क़ौमें बेहया हो जाती हैं तो और हया की चादर उतार देती हैं तो अल्लाह उसको तोड़ने का फ़ैसला कर देता है अगर हम तबलीग़ के काम को ज़िन्दा करेंगे तो हमें बचाएगा हमारी नस्लों को बचाएगा और इस्लाम को ज़िन्दा करेगा। आपको यहाँ के इस्लाम का ज़रिया बनाएगा। कोई मुल्क किसी को रोज़ी नहीं खिलाता बल्कि आपमें से एक एक आदमी ऐसा बैठा हुआ है जो पूरे अमरीका के लिए हिदायत का ज़रिया बन सकता है। आप अपनी क़ीमत ख़ुद नहीं पहचान रहे हैं, आप यह समझते हैं कि हमें अमरीका रोटी खिला रहा है मैं तो कहता हूँ अल्लाह की क़सम आप अमरीका को रोटी खिला रहे हैं अगर दुनिया से मुसलमान मिट जाए ﴿ونفخ في الصور﴾ अल्लाह पाक वहीं कयामत क़ायम कर देगा ﴿لا تقوم الساعة حتى لا يقال على الارض الله﴾ जब तक अल्लाह, अल्लाह कहने वाला एक मुसलमान मौजूद है तो सूरज चमकेगा, चाँद की चाँदनी आएगी, रात आएगी, दिन आएगा, हवाऐं चलेंगी, समन्दर से मौजें उठेंगी, ज़मीन ख़ज़ाने उगलेगी, फूल की पत्तियां महकेगीं लेकिन जब मुसलमान मर जाएगा तो अल्लाह की क़सम मेरा

ख़ुदा सारी काएनात को तोड़ देगा जैसे कि अण्डे के छिलके को तोड़ा जाता है।

اذا السمآء انفطرت o واذا الكواكب انتثرت o واذا البحار فجرت o
واذاالشمس كورت o واذا النجوم انكدرت o واذا الجبال
سيرت o واذا العشار عطلت o واذا الوحوش حشرت o واذا
البحار فجرت o واذا النفوس زوجت o واذا الموء دة سئلت o
باى ذنب قتلت o واذاالصحف نشرت o واذاالسمآء كشطت o
واذا الجحيم سعرت o واذا الجنة ازلفت o علمت نفس ما
احضرت o فلا اقسم بالخنس o الجوار الكنس o والليل اذا
عسعس o والصبح اذا تنفس o انه لقول رسول كريم o

यह पूरी क़यामत का नक़्शा ख़िंच कर आ रहा है कि तुम्हारे मरने की देर है कि जब तुम मर जाओगे तो मैं सारी काएनात का ऐसे तोड़ दूंगा सूरज, चाँद, हवाएं फ़िज़ाएं, ख़ला सारी काएनता ऐसी ख़त्म कर दूंगा जैसे कुछ न था। सब कुछ फ़ना कर दूंगा। तुम्हारी बरकत से दुनिया ज़िन्दा है, अपनी क़द्र पहचानों।

मुसलमान की बरकत से सब खा रहे हैं:

अपने आपको डॉलर का गुलाम मत समझो, अल्लाह तआला का गुलाम समझो मैं तो ऐसी मिसाल दिया करता हूँ। एक बारात जा रही है, पाँच सौ बराती साथ में, बाजे गाजे और दुल्हा मियाँ दर्मियान में और चारों तरफ़ बाराती और वह दुल्हा मियाँ पागल कभी इधर वाले से पूछता है कि आगे रोटी मिलेगी, कभी इससे पूछता है कि आगे रोटी मिलेगी। तेरा बेड़ा ग़र्क़ हो जाए तेरी बरकत से तो हमें मिलेगी, तू न हो तो हमें कोई रोटी

खिलाएगा? हाँ भाई दूल्हा बारात में से निकाल दिया जाए तो बारातियों को कोई रोटी देगा? कहेगा भाग जाओ, दफ़ा हो जाओ, कहाँ से आ गए हमारी रोटी खाने? उन्होंने कहा पागल तेरी वजह से तो हमें मिलेगी और तू कह रहा है आगे रोटी मिलेगी?। ऐ भाई आपकी बरकत से अमरीका खा रहा है, आपकी बरकत से यूरोप खा रहा है, आपकी बरकत से एशिया खा रहा है, आपकी बरकत से अफ्रीका खा रहा है आपकी बरकत से जज़ीरों वाले सहराओं वाले खा रहे हैं आप नहीं होंगे तो काएनात भी नहीं होगी। अपनी क़द्र पहचानों मेरे भाईयो। एहसासे कमतरी से निकलो। पैसे नहीं हुए तो यह कौन सी बड़ी बात है। क्या आपने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमा को देखा है।

हुज़ूरे सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शान बज़ुबान रब्बे दो जहान:

अल्लाह तआला ने किसी नबी की क़सम नहीं खाई सिवाए अपने हबीब की ज़ात के ﴿لعمرك﴾ ऐ मेरे नबी तेरी जान की क़सम। आपको नहीं पता हमारे उर्दू में भी जिससे मुहब्बत होती है हम उसकी जान की क़सम खाते हैं। तेरी जान की क़सम ﴿لعمرك﴾ ऐ मेरे नबी मुझे तेरी जान की क़सम। मूसा अलैहिस्सलाम पर एक तजल्ली पड़ी। चालीस दिन बेहोश, होश नहीं आया। ज़मीन से उठाकर अर्श पर पहुँचा दिया। सारे पर्दे हटाकर सामने खड़ा कर दिया ﴿يا حبيبي يا محمد ادن مني﴾ ऐ मेरे हबीब, ऐ मेरे मुहम्मद मेरे क़रीब हो जा। इतना क़रीब किया, ज़मीन से अर्श तक, फ़र्श से अर्श तक, जन्नत की चाबी हाथ में दी, नबियों का

सरदार बनाया, नबियों का इमाम बनाया, सारे नबियों को नमाज़ पढ़ाई, अपना झण्डा हाथ में पकड़ाया, जन्नत सारे नबियों पर हराम कर दी जब तक मुहम्मद मुस्तफ़ा का क़दम न पड़े। सारी उम्मतों पर जन्नत हराम कर दी जब तक मुहम्मद मुस्तफ़ा की उम्मत दाख़िल न हो जाए। इतने बड़े दर्जात नसीब फ़रमाए। पेट पर दो पत्थर बन्धवा दिए भूक की वजह से दो पत्थर। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने एक पत्थर बांधा और हमारे नबी दो जहां के सरदार ने दो पत्थर बांधे हैं क्या बादशाही है, क्या फ़ख़्र है। कितनी बड़ी बादशाही कि जन्नत की चाबी दे दी। कितना बड़ा फ़ख़्र है कि पेट पर दो पत्थर बंधे हुए हैं। अगर डॉलर नहीं है तो यह ज़िल्लत नहीं है। ज़िल्लत यह है कि अल्लाह तआला के नाफ़रमान हैं, यह ज़िल्लत है। इससे मेरे भाईयो अल्लाह तआला से तौबा करो, अल्लाह के वास्ते तौबा करोगे तो अल्लाह तआला से ज़्यादा मेहरबान किसी को नहीं पाओगे।

सच्ची तौबा करने वाले का एक क़िस्साः

एक क़िस्सा सुना कर बात ख़त्म करता हूँ। बनी इसराईल में एक नौजवान था बड़ा बदमाश शराबी जुआरी जैसे होते हैं तो शहर वालों ने उसे निकाल दिया कि निकाल दो। बुरे आदमी को जब बुरा कहा जाता हे तो वह और बुरा हो जाता है। नबियों का तरीक़ा यह है कि बुरे को बुरा न कहो उससे मुहब्बत करो, उसको क़रीब करो फिर उसको समझाओगे तो समझ जाएगा। इन्सानी फ़ितरत यह नहीं है कि उसके डण्डे मारो कि तू यह करता है। इन्सानी फ़ितरत है कि तुम उसे मुहब्बत करो। मुहब्बत करके उसको बात समझाओ। बहुत सी बेदीनी लोग फैला रहे हैं। हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह० फ़रमाते थे कि

बहुत सी बेदीनी दीनदार लोग फैला रहे हैं कि जब नफ़रत करते हैं तो लोग और दूर हो जाते हैं अगर मुहब्बत करोगे तो लोग क़रीब हो जाएंगे। लोगों ने उसको शहर से बाहर निकाल दिया। उसने कहा ठीक है मैं भी पक्का अपनी बात पर, जाकर उसने डेरा लगा लिया बाहर और वहाँ न कोई साथी न संगी न ग़िज़ा न कोई दवा तो आहिस्ता आहिस्ता असबाब टूटे। बीमार हो गया फिर मरने लगा, मौत के आसार महसूस किए तो आसमान को देखा दाएं देखा बाएं देखा कुछ नज़र नहीं आया। फिर आसमान की तरफ़ देख कर कहने लगा ऐ अल्लाह अगर मुझे पता होता कि मुझे अज़ाब देने से तेरा मुल्क ज़्यादा हो जाएगा और मॉफ़ कर देने से तेरा मुल्क घट जाएगा तो या अल्लाह! मैं मॉफ़ी नहीं मांगता और अगर मुझे अज़ाब देने से तेरा मुल्क ज़्यादा नहीं होता तो मुझे अज़ाब न दे मॉफ़ कर दे और मॉफ़ करने से तेरा मुल्क घटता नहीं है तो मुझे मॉफ़ कर दे। ऐ अल्लाह मेरा किसी ने साथ नहीं दिया, सब ने छोड़ दिया, कोई भी मेरा साथी नहीं बना, ऐ अल्लाह मैं मौत पर तौबा करता हूँ, सारी ज़िन्दगी गुज़र गई गुनाहों पर। ऐ अल्लाह सब ने तो साथ छोड़ दिया तू तो मत छोड़। यह कह कर उसकी जान निकल गई।

अल्लाह का बन्दे से प्यारः

अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि मेरा एक दोस्त फ़लॉ जंगल में मर गया है उसको जाकर गुस्ल दो, कफ़न दो, जनाज़ा पढ़ो और सारे शहर में ऐलान कर दो आज जो भी अपनी बख़्शिश चाहता है उसके जनाज़े में शिरकत कर ले उसको भी मॉफ़ करता हूँ। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ऐलान किया सारे लोग भागे भागे आए जाकर देखा तो वही

शराबी जुआरी, ज़ानी, डाकू, बदमाश। लोग कहने लगे या मूसा आप क्या कह रहे हैं यह तो ऐसा था कि हमने तो इसको शहर से निकाल दिया था। यह आपका रब क्या कह रहा है कि यह तो मेरा दोस्त है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा या अल्लाह तेरे बन्दे कह रहे हैं कि यह तेरा दुश्मन है तू कह रहा है मेरा दोस्त है आख़िर यह बात क्या है? तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि वह भी ठीक कह रहे हैं, मैं भी ठीक कह रहा हूँ। यह ऐसा ही था मेरा दुश्मन ाा लेकिन मौत के वक़्त जब उसने देखा पड़ा हुआ हूँ दाएं देखा ﴿فلم يرا قريبا﴾ कोई भी रिश्तेदार नज़र नहीं आया ﴿فيرا وشماله﴾ फिर उसेन बाएं देखा ﴿افلم يرا قريبا﴾ कोई भी नज़र नहीं आया तो जब चारों तरफ़ उसको बेबसी नज़र आई तो उसने मुझे पुकारा, मुझे शर्म आई इसे अकेले तन्हा को मैं इसके गुनाहों की वजह से पकड़ूँ। मुझे मेरी इज़्ज़त की क़सम वह तो छोटा सवाल कर बैठा अगर उस वक़्त वह मुझ से पूरी दुनिया की बख़्शिश मांगता तो मैं सब को मॉफ़ कर देता। ऐसी करीम ज़ात से हमारा वास्ता है। इस लिए मेरे भाईयो अल्लाह के वास्ते तौबा करो। यहाँ रहते हुए मुसलमान बन कर रहो और ईमान की दावत देते हुए चलोगे तो अल्लाह दुनिया भी बनाएगा और आख़रत भी बनाएगा। अल्लाह हम सब को अमल की तौफ़ीक़ बख़्शे और भाई नमाज़ों का पक्का एहतिमाम करें। जुमा को देखो कि मस्जिद भर गई जगह नहीं लोग खड़े हुए हैं। अल्लाह तआला इससे भी ज़्यादा कर दें लेकिन भाई पाँच नमाज़ें भी ऐसे ही पढ़नी हैं, ठीक है न भाई और आप तशरीफ़ लाइए।

□□□□□

शाने ख़ुदावन्दी

मेरे भाईयो और दोस्तो! अल्लाह तआला अपनी ज़ात व सिफ़ात में यकता है कोई उसका मिस्ल नहीं ﴿اذا تراه العيون﴾ कोई आँख नहीं जो वहाँ तक देख सके। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा ﴿ارنی انظر الیك﴾ ऐ अल्लाह मैं आपको देखना चाहता हूँ ﴿لن ترانی﴾ ऐसा नहीं हो सकता, बिल्कुल नहीं हो सकता। उन्होंने फिर कहा देखना चाहता हूँ। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया ﴿من يرانی حی الامات﴾ दुनिया में जो मुझे देखेगा सह नहीं सकेगा मर जाएगा ﴿ولا رطب الا تفرق﴾ कोई तर देखेगा तो वह बिखर जाएगा कोई ख़ुश्क देखेगा तो वह रेज़ा रेज़ा हो जाएगा। यहाँ मैं दिखाई नहीं दे सकता। ﴿انما يرانی اهل الجنة﴾ अलबत्ता जन्नत वाले मुझे देखेगें ﴿الذين لا تنام اعينهم﴾ उनकी आँखें नींद से पाक होंगी ﴿النوم اخت الموت﴾ नींद मौत की बहन है ﴿سوما﴾ तक़रीबन बराबर। तू जब मर जाएगा तो नींद भी मर जाएगी तो जन्नत में जब तक रहना है और वहाँ हमेशा ही रहना है वहाँ एक पल के लिए भी ऊँघ नहीं आएगी तो इस लिए जन्नत वाले मुझे देख सकते हैं ﴿لا تنام اعينهم﴾ उनकी आँख सोती नहीं ﴿ولا طبل ثيابهم﴾ उनकी जवानी और उनके कपड़े पुराने नहीं होते, हमेशा यकसां रहते हैं। आँख कुछ महदूद ताक़त रखती है लेकिन ख़यालाते इन्सानी बहुत ताक़तवर मख़्लूक़ हैं। एक पल में कहीं से कहीं पहुँच जाता है रोशनी से भी ज़्यादा तेज़ रफ़्तार

है ﴿ولا تخالف الظنون﴾ लेकिन कोई ख़्याल भी वहाँ तक नहीं जा सकता ﴿لا يغير في الحوادث﴾ हादसात उस पर असर नहीं रखते ﴿ولا يخشى﴾ जवानी के इन्क़लाब से वह डरता नहीं।

वह ऐसा है कि न उसे छत की ज़रूरत, न फ़र्श की ज़रूरत, न दीवारों की ज़रूरत, न उसे पंखों की ज़रूरत, न हवा की ज़रूरत, न पानी का मोहताज, न गर्मी का मोहताज, न आग का मोहताज, न किसी साथी का मोहताज, न किसी संगी का मोहताज, न मुहाफ़िज़ का मोहताज, न मददगार का मोहताज, न लश्करों का मोहताज, न फ़रिश्तों का मोहताज और न अर्श का मोहताज, न लौह का मोहताज, न क़लम का मोहताज, न जिबराईल का मोहताज, न इसराफ़ील का मोहताज, न मीकाईल का मोहताज, न इज़राईल का मोहताज, न अर्श के फ़रिश्तों का मोहताज, काएनात के किसी ज़र्रे का मोहताज नहीं तो यह मूसा आपका मोहताज कैसे होगा? ऐ इन्सान तू ही मोहताज है ﴿يا ايها الناس انتم الفقراء والله هو الغنى﴾ ऐ लोगों तुम ज़लील हो फ़क़ीर हो, हक़ीर हो, साइल हो और तुम्हारा अल्लाह ग़नी है तो मेरे भाईयो अल्लाह तआला अपनी ज़ात में बेमिसाल है।

अल्लाह तआला हर चीज़ से बेनियाज़ हैः

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं अन्क़रीब अपनी निशानियां उन्हें काएनात में दिखाएंगे कि वे बेक़ाबू होकर पुकार उठेंगे कि कोई हक़ बात है जो इस निज़ाम को चलाने वाला है जो किसी का मोहताज नहीं है और सब उसके मोहताज हैं और वह अल्लाह जो सब को खिलाता है, खुद खाने से पाक है, वह अल्लाह जो सबको पिलता है खुद पीने से पाक है, वह अल्लाह जो सबको

देता है और खुद लेने से पाक है, वह अल्लाह जो सबको पहनाता है और खुद पहनने से पाक है, वह अल्लाह जो सबको सुलाता है और खुद सोने से पाक है, वह अल्लाह जो सब को थकाता है और खुद थकने से पाक है, वह अल्लाह जो सबको मारता है और खुद मरने से पाक है, वह अल्लाह तआला जो सब को इम्तेहान में डालता है और खुद आज़माईश से पाक है, वह अल्लाह जो सब की ज़रूरतें पूरी करता है और खुद ज़रूरत से पाक है, वह अल्लाह जो सबको जोड़ा जोड़ा बनाता है खुद जोड़ से पाक है। इसी अल्लाह को आप कहना बे अदबी है और तू कहना अदब है और आप कहना बेअदबी है। आपस में अगर कोई तू कहे तो वह बेअदबी है और बड़े को छोटे को आप कहना अदब है अल्लाह तआला को आप कहना कोई अदब नहीं है। अल्लाह को तू कहना चाहिए तो इस लिए सारी दुआओं में मैं ने देखा कि अल्लाह का नबी जब अपने अल्लाह से बातें करता है तो कभी आप का लफ़्ज़ इस्तेमाल नहीं करता ﴿انتم﴾ नहीं कहता या अल्लाह आप बल्कि:

انت اللهم انت لاول اللهم انت قيم السموات والارض، اللهم
انت رب السموات والارض، اللهم انت الاول، اللهم انت
الظاهر اللهم انت الآخر اللهم انت الباطن انت.

तो वह जोड़े से पाक है लिहाज़ा कोई भी ऐसा लफ़्ज़ जिसमें शिराकत की ज़रा सी बू हो और के साथ उस लफ़्ज़ को अल्लाह तआला की तरफ़ मन्सूब करना यह अल्लाह तआला की शान में कमी है। लिहाज़ा अल्लाह तू ही से सजता है, तू और तेरे से ही सजता है आप से नहीं सजता। वह खुद अपने आप को कहता

है ﴿نحن نزلنا الزكرا وانا له لحفظون﴾ हम ने किया हम ने तो वह उसके लिए तकब्बुर का लफ़्ज़ है लेकिन उसकी तरफ़ हमारा ख़िताब होगा तो आप से नहीं, तू से होगा तो अल्लाह तआला ने सारी काएनात को जोड़ा बना दिया, खुद जोड़ से पाक है, सब की मुहब्बतें पैदा फ़रमायीं, खुद किसी का मोहताज नहीं, मियाँ बीवी को बनाया हर चीज़ का जोड़ा बनाया ﴿من كل زوجين اثنين﴾ हर चीज़ में जोड़ा जोड़ा ﴿والسمآء بنينها بايد﴾ हम ने आसमान को अपने हाथों से बनाया ﴿وانا لموسعون﴾ देखते नहीं हो कैसे फैला दिया ﴿والارض فرشنها﴾ क़िस्म क़िस्म की ज़मीन बिछा दी ﴿فنعم الممهدون﴾ कोई और है मेरे जैसा बिछाने वाला, ऐसा बिछा कर दिखावे जो भागती भी हो, घूमती भी हो, खड़कती भी हो और फिर भी तुम्हें महसूस न होने दे। ऐसा बनाने वाला कोई है ﴿فنعم الممهدون، ومن كل شئى خلقنا زوجين لعلكم تذكرون﴾ और हमने हर चीज़ को जोड़ा जोड़ा बनाया ताकि तुम्हें याद रहे कि तुम्हारा रब जोड़ से पाक है ﴿لم يتخذ صاحبة﴾ वह अल्लाह है ﴿ولا ولد﴾ वह अल्लाह है जिसका कोई बेटा नहीं ﴿لم يلد ولم يولد﴾ वह अल्लाह है जो न उससे कोई पैदा हुआ न वह किसी से पैदा हुआ और वही अल्लाह है ﴿ولم يكن له كفوا احد﴾ कि कोई उसका मिस्ल न हो सका, उसके मिस्ल न बन सका, उसकी शक्ल न बन सका, उसके मुक़ाबिल न बन सका, उसकी टक्कर न ले सका, उसके सामने न चल सका।

ऊँची ज़ात वाला ऊँची सिफ़ात से मुत्तसिफ़ होता हैः

बल्कि वही है जो सारी काएनात का अकेला मालिक भी है

ख़ालिक़ भी है, क़ादिर भी है, क़दीर भी है, मुतआल भी है, मुतदब्बिर भी है, अज़ीज़ भी है, क़वी भी है, मतीन भी है, राज़िक़ भी है, क़ुव्वतिल मतीन भी है और अपने ख़ज़ानों में ला महदूद और अपनी सिफ़ात में ला महदूद और मख़लूक़ सारी की सारी मोहताज, हक़ीर, फ़क़ीर, ज़लील इसका नाम मख़्लूक़ है। मख़लूक़ सिर्फ़ मक्खी नहीं यह सारे मख़्लूक़ बैठे हुए हैं। मख़लूक़ बोल रहा हूँ, हमारे बाल मख़्लूक़, पत्थर मख़्लूक़ है, बिखरा हुआ समन्दर मख़्लूक़ है, बारिश का क़तरा मख़्लूक़ है, पतंगा मख़्लूक़ है, अक़ाब मख़्लूक़ है, एक भेड़िया मख़्लूक़ है, और यह दहकता हुआ सूरज मख़्लूक़ है, जिबराईल मख़्लूक़ है, मीकाईल मख़्लूक़ है, इसराफ़ील मख़्लूक़ है, अर्श के फ़रिश्तें मख़्लूक़ हैं, सारे अबिंया मख़्लूक़ हैं और वह मख़्लूक़ है जो अल्लाह के बग़ैर बन न सके, जो अल्लाह के बग़ैर न रह सके, जो अल्लाह के बग़ैर न जी सके, जो अल्लाह के बग़ैर न मर सके, जो अल्लाह के बग़ैर न उठ सके, जो अल्लाह के बग़ैर न दे सके, जो अल्लाह के बग़ैर न ले सके, जो अल्लाह के बग़ैर न नुक़सान पहुँचाए न नफ़ा पहुँचाए, न इज़्ज़त का मालिक न ज़िल्लत का मालिक न ज़िन्दगी का मालिक न मौत का मालिक ﴿لا يملكون لا نفسهم ضرا ولا نفعا ولا يملكون موتا ولا حيوة ولا نشورا﴾ न ज़िन्दगी के मालिक न मौत के मालिक, न उठने के मालिक न नुक़सान के मालिक न नफ़े के मालिक बल्कि एक अल्लाह वहदहु ला शरीक है ﴿هو الذى فى السمآء اله وفى الارض اله﴾ वह अल्लाह है जिसकी सलतनत आसमान पर भी ज़मीन पर भी है ﴿فى السمآء عرشه﴾ अर्श आसमान का ﴿فى الارض سلطنه﴾ सलतनत ज़मीन पर ﴿فى البحر سبيله عقابه﴾ रास्ते समन्दर में ﴿فى الجنة رحمته﴾

जन्नत में उसकी रहमत है ﴿فى النار عقابه﴾ दोज़ख़ में उसका अज़ाब है ﴿فى الممات عتابه﴾ और मुर्दों में उसका अज़ाब है ﴿فيوم القيامة حسابه﴾ और क़यामत के दिन उसका हिसाब है ﴿فريق فى الجنة وفريق فى السعير﴾ एक तबक़ा जन्नत में जाएगा और एक जहन्नुम को जाएगा।

तकब्बुर अल्लाह तआला को ख़ुद अपनी ज़ात में पसन्द हैः

मेरे भाईयो सारी काएनात में बहर व बर में फ़िज़ा व ख़ला में ग़र्ज़ यह है कि मलाइका का जहां, इन्सानों का जहां, जिन्नात का जहां, सूरज, चाँद और सितारों का जहां, अन्धेरों का जहां, रोशनी का जहां, नबातात का जहां, जमादात का जहां, हैवानात का जहां, पतंगों का जहां, परवानों का जहां इन सब पर अल्लाह तआला की क़ुदरत और ताक़त का पहाड़ लगा हुआ है ﴿هو الذى﴾ कैसा तकब्बुर का लफ़्ज़ है ﴿هو الذى الله اكبر من ذاالذى﴾ अल्लाहु अकबर इसी लिए जो तकब्बुर करता है अल्लाह तआला उसको गर्दन से पकड़ कर ख़ाक में मिला देता है। तकब्बुर सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ात के लिए ख़ास है और किसी के लिए नहीं है ﴿الله الذى فرع سبع سموات، الله الذى خلق سبع سموات، الله الذى﴾ वह अल्लाह जिसने आसमान उठा दिए वह अल्लाह जिसने ज़मीन बिछा दी वह अल्लाह जिसने सूरज चमकाया, वह अल्लाह जिसने चाँद को घटा दिया, बढ़ा दिया और वह अल्लाह जिसने रात को अन्धेरा दे दिया वह अल्लाह जिसने दिन को रोशनी दे दी, वह अल्लाह जिसने सितारों को जगमगाहट दे दी, वह अल्लाह जिसने इन्सान में रूह डाल दी, वह अल्लाह जो हवा का मालिक, वह अल्लाह जो फ़िज़ा का मालिक, वह अल्लाह जो

बहर व बर का मालिक ﴿امن خلق السموات والارض﴾ जिसने ज़मीन व आसमान को बनाया। अल्लाह तआला खुद सवाल करता है ﴿وانزل لكم من السماء ماء﴾ पानी किसने उतारा ﴿فانبتنا به حدآئق ذات بهجة﴾ खूबसूरत सरसब्ज़ दरख़्त किसने लगाए ﴿ما كان لكم ان تنبتوا شجرها﴾ तुम सारे इन्सान इकठ्ठे हो कर एक दरख़्त अल्लाह के बग़ैर पैदा करके दिखा दो ﴿ءاله مع الله﴾ है कोई मेरे अलावा ﴿بل هم قوم يعدلون﴾ तो तुम्हारा क्या करूं। फिर तुम मुझे छोड़कर ग़ैर के पास चले जाते हो ﴿امن جعل الارض قرارا﴾ यह ज़मीन में क़रार किसने रखा ﴿وجعل خللها انهرا﴾ इसमें नहरें किसने चलायीं ﴿وجعل لها رواسى﴾ पहाड़ किसने गाड़े ﴿وجعل بين البحرين حاجزا﴾ कढ़वे मीठे पानी को किसने जुदा किया ﴿ءاله مع الله﴾ है कोई अल्लाह के सिवा ﴿بل اكثرهم لا يعلمون﴾ अब मैं क्या करूं तुम में से अक्सर को समझ नहीं, दीवाने हैं, पागल हैं, मख़लूक़ के पुजारी बन गए, ऐटम के पुजारी बन गए, लोहे के पुजारी बन गए, सोने चाँदी के पुजारी बन गए। अल्लाह तआला को छोड़ ही दिया।

ख़ालिक़ का मख़लूक़ से शिकवा और जवाबे शिकवा:

﴿امن يجيب المضطر اذا دعاه﴾ कौन है तुम्हारी पुकार सुनने वाला। उससे ताल्लुक़ बना लो जो हर वक़्त साथ है। सदर साहब अपने हैं उनसे बात करनी है तो इस्लामाबाद फ़ोन तो करना ही पड़ेगा आगे वह सो रहे हैं फिर जगाना पड़ेगा तो कितने घन्टे लग जाते हैं। वह डी. एस. पी. साहब अपने हैं कहीं ढूंढना पड़ेगा या कहीं जाना पड़ेगा आगे वह भी मेरे जैसा पेशाब पख़ाने वाला इन्सान है पता नहीं मेरा काम कर भी सकेगा या न कर सकेगा तो वह

हो जो हर वक़्त साथ है जिसको पुकारने के लिए ज़ुबान का हिलाना भी ज़रूरी नहीं सिर्फ़ दिल की सदा ही काफ़ी है और आपके दिल की एक सदा पर वह सत्तर दफ़ा कहे लब्बैक! लब्बैक! लब्बैक। आपने तो बड़े साहब को फ़ोन किया तो सत्तर मर्तबा डायल करने के बाद पता चला कि काम ही नहीं कर सकते। उनके बस का तो काम ही नहीं है। कौन है वह ज़ात, काएनात जिसके सामने ज़ेर व ज़बर हैं कौन जिसके वजूद से अर्श भी थरथराए है जिबराईल जैसा फ़रिश्ता चिड़ी बन जाए, अंबिया भी थर थर कांपें जिसकी हैबत व जलाल के सामने ﴿وان من شئ الا يسبح بحمده﴾ हर चीज़ उसका ज़िक्र करने में लगी हुई है। किसी का मोहताज नहीं, न इन्सान का न जिन्न का, न फ़रिश्ते का, जो किसी का मोहताज नहीं जिसका काम सबके बग़ैर होता है और जिसके बग़ैर किसी का कोई काम न हो सके। वह अल्लाह जब उसको उसका बन्दा जो गुनाहों में घिरा हुआ नाफ़रमानी में जकड़ा हुआ, शैतान की राहों पर चलता हुआ इस सब के बावजूद जब कहता या अल्लाह तो सत्तर दफ़ा जवाब आता है लब्बैक! लब्बैक! लब्बैक या अब्दी। ऐ मेरे बन्दे मैं हाज़िर हूँ। कब से तुम्हारी पुकार का मुन्तज़िर हूँ कि मुझे भी आज़मा कर देख ले तू रूपए को आज़माता रहा कभी रूपए बनाने वाले को भी तो आज़मा ले। पाँच सौ तलवारों को तू ने आज़माया, दुकानों और फ़ैक्ट्रियों को तू ने आज़माया, कभी इस काएनात को बनाने वाले को आज़मा के देख। ﴿ان ذكرتني ذكرتك﴾ तू मुझे याद रखता है मैं तुझे याद रखता हूँ ﴿ان نسيتني ذكرتك﴾ तू मुझे भूल जाता है मैं फिर भी तुझे याद रखता हूँ ﴿الي راولي﴾ तू मुझ से दोस्ती लगाकर देखना कैसे दोस्ती का हक़

अदा करता हूँ। यह भी देखना जो तेरे जैसा इन्सान है उसकी एक हद है जहां वह आजिज़ है उससे दोस्ती लगा जहां आजिज़ी है नहीं। ﴿انما امره﴾ अलफ़ाज़ ताक़त देखो कैसे समझाऊं?

लफ़्ज़े "कुन" की यह सारी कारसाज़ी हैः

انما امره اذا اراد شيئا ان يقول له كن فيكون فسبحن
الذى بيده ملكوت كل شئ واليه ترجعون ○

ताक़त तो देखो इसमें कि तेरे रब का जब फ़ैसला होता है कि कुछ करना है। अजीब बात है उसे कुछ करने के लिए कुछ करना नहीं पड़ता कि कुछ करने के लिए कुछ नहीं करना पड़ता, देने के लिए कहीं से लेना नहीं पड़ता बल्कि "कुन" हो जा जिबराईल "कुन" हो जा तो जिबराईल जैसा फ़रिश्ता वजूद में आ गया, ऐ अर्श "कुन" ऐ अर्श बन जा वह बिछता चला गया, उठता चला गया, ऐ आसमान ﴿ثم استوىٰ الى السماء وهى دخان﴾ धुंए से कहा आसमान बनाओ ﴿خلق سبع سمٰوٰت طباقا﴾ सात आसमान में तबदील कर दिया ﴿اوحى فى كل سماء امرها﴾ हर आसमान को अपने अम्र और अपनी ताक़त के साथ अलग अलग एहकाम देकर जकड़ दिया बांध दिया इतने बड़े अल्लाह को पुकारते ही नहीं, लेकिन जब आजिज़ हो जाते हैं फिर कहते हैं, अब तो अल्लाह ही करेगा। अच्छा पहले कौन कर रहा था अब तो अल्लाह ही शिफ़ा देगा, क्या पहले तू शिफ़ा दे रहा था।

दवाओं में शिफ़ा नहीं अल्लाह के अम्र में शिफ़ा हैः

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पेट में दर्द हुआ कहने लगे या अल्लाह पेट में दर्द है अल्लाह तआला ने कहा रेहान के पत्ते

उबाल कर पी लो। रेहान एक छोटा सा पौदा होता है। उन्होंने उसको रगड़ कर पीस कर पी लिया, ठीक हो गए। फिर कुछ दिनों के बाद दोबारा पेट में दर्द हो गया। अल्लाह तआला से नहीं पूछा, खुद ही जा कर रगड़ कर पीस कर पी लिया तो दर्द तेज़ हो गया एक दम तेज़। या अल्लाह यह क्या हुआ? अल्लाह तआला ने फ़रमाया तूने क्या समझा था इसमें शिफ़ा है, मुझसे क्यों नहीं पूछा ﴿وإذا مرضت فهو يشفين﴾ तेरा रब शाफ़ी है रेहान नहीं। तेरा रब शाफ़ी है देखो ना।

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु की आँख ख़राब होना फिर दरूस्त हो जानाः

क़तादा बिन नौमान रज़ियल्लाहु अन्हु एक सहाबी हैं। ओहद की लड़ाई में उनकी आँख में एक तीर लगा, अन्दर घुस गया तो सारी आँख चूरा चूरा हो गई, क़ीमा हो गया। आँख का वह क़ीमा उठा कर लाए। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मेरी आँख ज़ाए हो गई आप अल्लाह से दुआ करें कि अल्लाह तआला मेरी आँख को ठीक कर दें। उन्होंने कहा आँख लोगे या जन्नत लोगे? उन्होंने कहा दोनों लूंगा। अल्लाह तआला के पास क्या कमी है दोनों ही लूंगा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरी बीवी को बड़ा बुरा लगेगा कि मेरी आँख नहीं है। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुस्करा दिए। वही क़ीमा था उठाया उसको आँख के ढेले में रखा और यूं हाथ फेरा ﴿اللهم جعلها احسن عينين﴾ ऐ अल्लाह इस आँख को दूसरी से ख़ूबसूरत कर दे फिर वह आँख दूसरी से ज़्यादा ख़ूबसूरत हो कर चमक रही थी। शाफ़ी तो अल्लाह है जो चाहे कर दे तो भाई अल्लाह को साथ लो।

अल्लाह के बग़ैर ग़ैर कुछ नहीं कर सकताः

वह अल्लाह जब इरादा करेगा आप के काम बनाने हैं तो कोई उसको रोक नहीं सकेगा। सारा जहा आपके पीछे और अल्लाह आपके आगे तो सारा जहां क़रीब खड़ा नहीं हो सकता। सारा जहां आपके आगे आ जाए हिफ़ाज़त को और अल्लाह तआला का इरादा हलाकत का हो तो ये सब मिट्टी के मूरत साबित होंगे, कुछ नहीं कर सकते ﴿وان يمسسك الله بضر فلا كاشف له الا هو﴾ मैं मुसीबत में डाल दूं पाकिस्तान को तो सारी दुनिया के माहिरीन माशियात उस मुसीबत को दूर नहीं कर सकते। लोग पागल हैं अन्धों से पूछ रहे हैं कि रास्ता बताओ ﴿وان يردك بخير﴾ और अगर मैं भलाई का इरादा कर लूं तो सारा जहां मिलकर तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचा सकता। अमरीका ने यह कर दिया, वह कुछ कर सकता है उसकी ढील के बग़ैर। उसकी ढील है बातिल को, उसकी ढील है काफ़िर को जिस से वह नाच रहा है, कूद रहा है। मैं रहमत का दर खोलूं कोई बन्द नहीं कर सकता ﴿وما يمسك فلا مرسل له من بعده﴾ और मैं बन्द कर दूं तो कोई ऐटमी ताक़त से खुलवा नहीं सकता।

यह दुनिया काफ़िर की जन्नत है उस पर हसद न करोः

और काफ़िरों की ज़ेब व ज़ीनत से धोका न खाना कि वे तो मज़े में हैं और हम मुसीबत में हैं। क़ुरआन कह रहा है ﴿متاع قليل﴾ चार दिन के लिए दिया है कब तक, छोड़ दो उनका क़िस्सा ही छोड़ दो अगर समझो दफ़ा करो क्या ज़िक्र कर दिया तुम ने अगर जानवर को अच्छा खाने को मिले तो इन्सान को

अगर यह हसद होता है भाई एक गधा अच्छा खाना खा रहा है तो आपको हसद होगा, और वह दुलत्तियां मार रहा हो तो आपको कोई हसद होगा। वे तो जानवर हैं खा लें ﴿وليتمتع﴾ कुछ नाच लें ﴿يخوضوا ويلعبوا﴾ कुछ कूद लें, कुछ गा लें ﴿حتى يلقوا يومهم الذى يوعدون﴾ उस दिन जिस दिन मौत आए बस छुट्टी ﴿يا ايها المجرمون﴾ ऐ मुजरिमीन अलग हो जाओ, एक तरफ़ हो जाओ।

दुनिया की ज़ाहिरी तरक्क़ी कुछ नहीं:

चीज़ों का मिल जाना, सड़कों का खुला होना, अस्पताल बन जाना, दवाओं का पहुँच जाना इसी को आप कामयाबी व तरक्क़ी समझ रहे हैं। तरक्क़ी-याफ़्ता मुल्क कौन है जिसकी सड़के खुली हों, जिसके अस्पताल हों या तालीम हो, टेलीफ़ोन हो और सारी अय्याशी और फ़हाशी का सामान हो, वह तरक्क़ी-याफ़्ता मुल्क हैं? तरक्क़ी वाला मुल्क वह है जहां हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर ज़िन्दगी हो, बाक़ी सब बदमाशियों के अड्डे हैं। तरक्क़ी-याफ़्ता वह है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ पर, बाक़ी सब ज़वाल। क़रीब ही अल्लाह की पकड़ में आने वाले हैं ﴿وكذلك اخذ ربك اذا اخذ القرى ان اخذه اليم شديد﴾ अभी अल्लाह को पकड़ने तो दो पहले ही शोर मचाते रहे हो, होता ही नहीं, हो जाएगा। अल्लाह का निज़ाम है जब बेहयाई बढ़ती है फिर अल्लाह तआला छोड़ता नहीं उनको मौत तक मोहलत दी हुई है। हमारी मोहलत कोई नहीं अगर हम नाफ़रमानी करेंगे तो फ़ौरन हमारी पकड़ हो जाएगी। माँ बाप अपने बच्चे की पिटाई करते हैं

या गली के बच्चों को मारना शुरू कर देते हैं? गली के बच्चे खेल रहे हैं और माँ बाप ने निकल कर पिटाई शुरू कर दी तो वहां बड़ी लड़ाई शुरू हो जाएगी। वे अपने बच्चे से पूछते हैं कि पढ़ा है कि नहीं पढ़ा, स्कूल गए थे या नहीं गए, काम किया या नहीं, नमाज़ पढ़ी थी या नहीं पढ़ी। मुसलमान ग़रीब है यह बदमाशी करेगा फ़ौरन थप्पड़ आएगा, सीधे चलो वह काफ़िर गली का बच्चा है, छोड़ दो, खेलने दो, कूदने दो।

काफ़िर आख़रत में सख़्त अज़ाब में होंगेः

﴿ان جهنم كانت مرصادا﴾ जहन्नुम उनका इन्तेज़ार कर रही है, ﴿مابا﴾ ठिकाना है ﴿لبثين فيها احقابا﴾ इसमें हमेशा रहेंगे ﴿لا يذوقون فيها بردا ولا شرابا﴾ अब उन्हें कोई मस्ती नहीं सूझेगी, न ठन्डा पानी न ठन्डी ज़िन्दगी ﴿الا حميم﴾ खौलता हुआ पानी ﴿وغساق﴾ कांटे दार झाड़ियां ﴿جزاء وفاقا﴾ पूरा बदला ﴿انهم كانوا لا يرجون حسابا﴾ यह कहता था मिट्टी हो गया मर गया, कभी कोई उठा? कभी किसी को देखा कि उठकर आ गया? कोई ज़िन्दगी नहीं। ﴿هيهات هيهات لما توعدون﴾ मौत के बाद कोई ज़िन्दगी नहीं, अब देखो ऐ कुफ़्फ़ार की जमात यह देखो, यह देखो। यह दिन आ गया कि नहीं। ﴿وقترب الوعدالحق﴾ वह हक़ वायदा क़रीब आया कि नहीं आया। अब देखो तुम्हें यह नज़र आ रहा है ﴿ذالك ما كنت﴾ इसी से घबराता था और डरता था और अब ﴿انهم كانو لا يرجون حسابا وكذبوا بايتنا كذابا﴾ मुझे झुठला दिया मेरे दीन को झुठला दिया ﴿وكل شى احصينه كتابا﴾ और हम भी हर चीज़ लिखते रहे ﴿فذوقوا﴾ चखो ﴿فلن نزيد كم الا عذابا﴾अब तुम्हारा अज़ाब हमेंशा बढ़ेगा कभी कम नहीं होगा तो उन पर रश्क करना तो

ऐसा है जैसे खोटे पहाड़ पर देखो कितना अच्छा चारा गधा खा रहा है काश! मैं भी यह चारा खाता।

छोटे मुजरिमों के लिए छोटा अज़ाब बड़े मुजरिमों के लिए बड़ा अज़ाबः

हम अल्लाह के फ़ज़्ल से अल्लाह की नज़र में इन्सान हैं चाहे हम जितने भी बुरे हैं, अल्लाह हमें जानवर नहीं कहता हमें इन्सान ही कहता है और ये जितने अल्लाह को नहीं पहचानते और अल्लाह की ज़ात का शरीक ठहराते हैं ये जितने भी अच्छे हो जाएं अल्लाह की नज़र में हैवान हैं कि उन्होंने अल्लाह की पहचान और अल्लाह को जानने से इन्कार कर दिया। ये बड़े मुजरिम हैं, हम छोटे मुजरिम हैं। छोटे मुजरिम को तो दो चार थप्पड़ मार कर छोड़ दिया जाता है और बड़े मुजरिम का केस चलता है और पता नहीं कब जाकर वह फांसी चढ़ता है और जो छोटा मुजरिम होता है दो चार थप्पड़ मार कर वहीं से फ़रार करा दिया, चल भाग। यह जो दुनिया में जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अज़ाबों से गुज़र रही है यह हमारी नाफ़रमानी की वजह है अगर हम तौबा कर लें, अल्लाह की तरफ़ रुजू कर लें तो अल्लाह तआला ने यह काएनात अपने बन्दों के लिए बनाई है ﴾ان الارض يرثها عبادى الصلحون﴿ ज़मीन अल्लाह तआला की है और उसके वारिस अल्लाह के नेक बन्दे हैं ﴾ولو ان اهل القرىٰ امنوا واتقوا لفتحنا﴿ अगर ये लाहौर वाले तक़्वा इख़्तियार कर लें ईमान में पक्के हो जाएं तो ज़मीन व आसमान ﴾من فوقهم﴿ ऊपर आसमान ﴾ومن تحت ارجلهم﴿ ज़मीन से रिज़्क़ अता होगा यह अल्लाह का निज़ाम है कि अगर इताअत होगी तो दरवाज़े खुलेंगे, उनकी दुआओं से

मौसम बदलेंगे, उनकी दुआओं से हालात बदलेंगे, उनकी दुआओं से निज़ाम बदलेगा, उनकी दुआओं से हर नामुमकिन मुमकिन हो जाएगा। अल्लाह के बन जाएं बस अपने आपको अल्लाह का बना दें।

हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए समन्दर का थम जाना:

हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहु अन्हु समन्दर में जा रहे थे, तूफ़ान आ गया तूफ़ान ﴿اسکن یا بحر ھل انت الا عبد حبشی﴾ ऐ समन्दर थम जा तू काला हब्शी ही तो है। यह काला हब्शी क्यों कहा? समन्दर जब गहरा होता है तो पानी काला झाग देता है तो कहने लगे ठहर जा ऐ समन्दर तू काला हब्शी ही तो है इसके बाद दूसरी मौज नहीं उठी वहीं थम गया और किश्ती में सफ़र कर रहे थे और अपना क़ुरआन सी रहे थे। क़ुरआन के पन्ने सी रहे थे तो सूंई हाथ से गिर कर पानी में चली गई पानी में ﴿اعظمت علیک یا رب الا رد علیک عبرتی﴾ या अल्लाह मैं तुझे क़सम देता हूँ कि मेरी सूंई मुझे वापस कर कि मेरे पास दूसरी सूंई नहीं है तो वह सूंई पानी में यूं खड़ी हो गई, ऐसे। उस अल्लाह को साथ ले लें, उस अल्लाह को अपना बना लें और वह सब का बनने को तैयार है, काला, गोरा, मर्द, औरत सबसे मुहब्बत का ऐलान कर चुका है।

अल्लाह का नाफ़रमानों से मुहब्बत का तज़किरा:

ऐ दाऊद अगर मेरे नाफ़रमानों को पता चल जाए कि मैं उनसे कितनी मुहब्बत करता हूँ तो उनके जोड़ जोड़ जुदा हो

जाएं इस बात को सुन कर। जब नाफ़रमानों का यह हाल है तो बता फ़रमा बरदारों से मुहब्बत मेरी कैसी होगी। यह अलग बात है कि कभी आज़माने के लिए अल्लाह हालात ले आता है। देखो मेरे भाईयो अल्लाह को साथ लिए बग़ैर न किसी का बना है न बन सकेगा। यही तबलीग़ में मेहनत हो रही है यह कोई अलग जमात नहीं बन गई, हर मुसलमान की मेहनत है। हमने आज तक ज़िन्दगी ग़फ़लत में गुज़ारी। जब नमाज़ में अल्लाह याद न आए तो कब याद आएगा?

तबलीग़ का काम है अपने अल्लाह को साथ लेना हैः

अल्लाह से ताल्लुक़ बना लें अपने अल्लाह को अपना बना लें जिसकी वफ़ाओं का यह हाल हो कि या अल्लाह! एक बार कहे वह सत्तर मर्तबा कहता है मेरे बन्दे तू क्या कहता है। अच्छा एक आदमी दुआ मांगता है या अल्लाह तो अल्लाह तआला कहता है जल्दी दे दो जल्दी दे दो, सुनना नहीं चाहता, नाफ़रमान है, दे दो। एक आदमी रो रहा है या अल्लाह! या अल्लाह! दूसरी रात या अल्लाह! या अल्लाह! फिर तीसरी रात या अल्लाह! या अल्लाह! कभी कई महीने गुज़र गए, कभी साल गुज़र गए या अल्लाह! या अल्लाह! यहाँ तक कि फ़रिश्ते सिफ़ारिश करते हैं या अल्लाह तेरा फ़रमाबरदार बन्दा है उसे देता क्यों नहीं ﴿انــــى احــــب ان﴾। इसकी हाय हाय मुझे अच्छी लग रही है ज़रा रोने तो दो अगर दे दिया तो कब रोएगा हां दे दिया तो कब रोएगा अच्छा लग रहा है रोने दो इसका रोना मुझे पसन्द आ रहा है क्योंकि हमें दीन से गहरी वाक़फ़ियत नहीं है इस लिए हम हालात से परेशान हो कर अल्लाह ही के नाशुक्रे बन बैठे हैं और

कोई मिला नहीं अल्लाह को आज़माने के लिए हम ही रह गए थे। तो भाईयो यह तबलीग़ का काम अल्लाह को साथ लेने का काम है, उस ज़ुलजिला वल इकराम को साथ लिए बग़ैर न क़ौमें बन सकती हैं और न मुल्क बन सकते हैं और न अफ़सरान बन सकते हैं और न औरतें बन सकती हैं और न औलाद बन सकती है। अल्लाह तआला को साथ लेना पड़ेगा।

जब तू मेरा तो मैं तेराः

तू मुँह मोड़ जा, तू मुँह मोड़ जा फिर भी मैं तुझे बुलाता रहूंगा आ जा, आ जा, ﴿من تقرب الی تلقیته من بعید﴾ ऐ मेरे बन्दे जब तू मेरे ज़्यादा क़रीब होता है तो मैं तेरा कान बन जाता हूँ जिससे तू सुनता है ﴿وعين﴾ तेरी आँख बन जाता हूँ जिससे तू देखता है ﴿ويدع التی وبطشتها﴾ मैं तेरा बन जाता हूँ जिससे तू पकड़ता है ﴿ورجل التی يمشی بها﴾ मैं तेरा पाँव बन जाता हूँ जिससे तू चलता है। इतना ऊँचा मुक़ाम जो अल्लाह तआला की बारगाह में ले लेता है। जिबराईल अलैहिस्सलाम भी उसकी गर्द को देखते रह जाते हैं। इस ला इलाहा इलल्लाह में सब कुछ छुपा हुआ है यह इक़रारे मारफ़त, इक़रारे अबदियत, इक़रारे तौहीद, इक़रारे नबुव्वत है कि या अल्लाह बस हम तेरे हो गए हैं। अपनी सवारी को अल्लाह तआला की तरफ़ छोड़ दे और अपने महबूब की तरफ़ लौट जा।

बदन का हर अमल अल्लाह के लिएः

तो मेरे शौक़ ने मुझे पुकारा कि रुक जा, थम जा, ठहर जा, सामान रख तेरी मन्ज़िल आ गई कि तेरे महबूब का घर आ

गया। देखो भाईयो इन्सान मुहब्बत करने वाली मख़्लूक़ है यह मुहब्बत के बग़ैर नहीं रह सकता किसी न किसी पर ज़रूर दिल आएगा। यह दिल किसी पर ज़रूर आएगा। अल्लाह तआला चाहता है कि मुझ पर तेरा दिल आ जाए, तू दिल में मुझे बसा ले। यह अल्लाह हम से चाहता है ﴿والذين امنوا اشد حبا لله﴾ अल्लाह पर मर मिटे यह जज़्बा अल्लाह हमारे दिल में चाहता है ﴿ان صلوتي نسكي ومحيايي ومماتي لله رب العالمين﴾ मेरा जीना, मेरा मरना, मेरी नमाज़, मेरी क़ुर्बानी, मेरा सब कुछ मेरे अल्लाह के लिए बन जाए। अल्लाह तआला इस दिल में यह देखना चाहता है। देखो भाईयो जैसे वह अपनी ज़ात में शिरकत को बर्दाशत नहीं करता अपनी मुहब्बत में भी शिर्क बर्दाश्त नहीं करता, यह तो मख़लूक़ बर्दाश्त नहीं करती, औरत को सौतन से आर क्यों आती है कि मुहब्बत में शरीक दाख़िल हो गया, वह अन्दर ही अन्दर तड़प रही है और अन्दर ही अन्दर आग जल रही है और जो है ही ग़य्यूर ज़ात वहदहु ला शरीक ज़ात वह भी अपने बन्दे या बन्दी के दिल में किसी ग़ैर को देखना नहीं चाहता। अल्लाहु अकबर नमाज़ की नियत बांध कर खड़े हो जाइए अभी पता चल जाएगा कि दिल में अल्लाह है कि और। हमने ग़ैरों को बसाया हुआ है, इस दिल को वीरान कर दिया, बे आवाज़ कर दिया, जाले बन गए, घर में जाला नज़र आ जाए तो नौकर की शामत, बेगम की शामत कि ऐसी फुवड़ और बदतमीज़ है कि जाले लटके हुए हैं

हमारा दिल ग़ैर की मुहब्बत में ज़ंग आलूद हो चुका हैः

यह जो मेरे दिल में जाला बन गया है सालो साल का है, अल्लाह के ग़ैर की मुहब्बत का इसका ग़म कोई नहीं कपड़े पर

दाग़ नज़र आ जाएं हम अपने आपसे नफ़रत करने लग जाएं, बर्तन में बदबू आ जाए तो हम उसे उठाकर फेंक देते हैं अगर हमारे दिल की बदबू अल्लाह सुंघा देता तो हम दिल उठाकर बाहर फेंक देते। ये कितने गन्दे हो चुके हैं कि इसमें ग़ैर ही ग़ैर है वह नहीं जिसको इसमें बसाना था। अल्लाह की क़सम अर्श भी इसके सामने छोटा पड़ जाता है जिसमें अल्लाह की मुहब्बत उतर जाती है, अर्श भी छोटा है जिसमें अल्लाह आ गया जबकि सूंई की नाक से भी तंग है वह दिल जिससे अल्लाह निकल गया। जिससे अल्लाह का ताल्लुक़, मुहब्बत, मारफ़त, निकल गया सूंई के नाके से भी तंग है तो मरने से पहले अपने अल्लाह से जी लगा लें। अल्लाह की क़सम कोई काएनात की शक्ल, कोई नग़मा, कोई नेमत, कोई मशरूब, कोई ग़िज़ा, कोई तख़्त, कोई जलवा, कोई नज़ारा दिल की दुनिया को आबाद नहीं कर सकता यह आबाद सिर्फ़ अल्लाह से होता है अगर अल्लाह होगा तो यह आबाद होगा अगर अल्लाह न होगा तो काएनात का हसीन से हसीन मन्ज़र भी इसकी दुनिया को वीरान रखेगा। इसके दिल का दिया न जल सका न कोई जला सकता है न कभी जलेगा उसका दिल अल्लाह से कट गया है उसके दिल की शमा बुझी हुई है यह कभी न जलेगी न राग व रंग से न जलवों में न नज़ारों में, न काएनात की दौलत में, न अर्श व फ़र्श में इसको जलाना है इस दीप को रोशन करना है तो इसमें अल्लाह को ले लें अल्लाह को जो तैयार बैठा है कि मुझे बुला कि मैं आ जाऊँ। दुनिया के बादशाह से ताल्लुक़ जोड़ना है तो क्या क्या पापड़ बेलने पड़ते हैं और उस बादशाह से ताल्लुक़ जोड़ना हो तो बस दो लफ़्ज़ बोलने पड़ते हैं।

तौबा के बग़ैर अल्लाह से ताल्लुक़ मुमकिन नहीं:

या अल्लाह! मेरी तौबा, मैं तेरा हो गया ﴿يا ابن آدم كنت تزينا لناس فهل تزينني لاجلي﴾ मेरे बन्दे तू लोगों के लिए कितना बनता सवंरता है कभी मेरे लिए भी तू बन कर आया, कभी आगे देखे, कभी बाएं देखे, कभी दाएं देखे, कभी पीछे देखे, कभी कुर्ता देखे, कभी कुछ देखे, कभी पतलून देखे कि मैं कैसा लग रहा हूँ। इसी को अल्लाह तआला कह रहा है कि तू लोगों के लिए कैसे बनता है, मेरे लिए भी तो बन कर आ तो अल्लाह के लिए बनने का क्या मतलब है कि बड़े अच्छे कपड़े पहन लो, अल्लाह के लिए बनने का मतलब यह है कि दिल में अल्लाह की मुहब्बत ले लो और जिस्म में आंहज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा ले लो तो आज तक जो हम उसकी नाफ़रमानी और ज़ुल्म कर चुके हैं हम उससे तौबा करें हम ग़फ़लत में हैं, हम अन्धेरों में पड़े हैं। अल्लाह को लिए बग़ैर मुसलमान न फ़र्द कामयाब हो सकता है न क़ौम न मुल्क, यह अल्लाह का फ़ैसला है।

लाखों बरस के गुनाह एक पल में मॉफ़:

देखो मेरे भाईयो! अपने अल्लाह के सामने सिर झुका दो। अल्लाह मेरी तौबा मैं आ गया ﴿اذن فاقبلني﴾ मेरी तौबा बस तू क़बूल फ़रमा और उसका इधर भी खुला दरबार है ﴿لا اله الله﴾ शैतान ने कहा ﴿ما اضال لا ادرك عبادك﴾ तेरे बन्दों को मुसलसल गुमराह करूंगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया और मैं भी उन्हें मुसलसल मॉफ़ करूंगा जब तक वे तौबा करते रहेंगे। चल भाई

शैतान ने गुमराही का दर खोला और अल्लाह तआला ने मॉफ़ी दर खोला। उसने गुमराही के असबाब बनाए अल्लाह तआला ने तौबा के असबाब बनाए कि चल तौबा कर ले हज़ार बरस के हों या लाख बरस के हों तेरे एक बोल पर सब मॉफ़ कर दूंगा। कहाँ तक हों? आसमान की छत तक गुनाह चले जाएं इतने करेगा कौन और कौन कर सकता है और कैसे कर सकता है और कैसे हो सकते हैं पर अल्लाह कहता है कि तू सारे दिल के अरमान निकाल और काएनात को गुनाहों से भर दे आसमान की छत के साथ अपने गुनाहों को पहुँचा दे फिर तेरे एक बोल पर कि या अल्लाह मुझे मॉफ़ कर दे, मैं सारे मॉफ़ कर दूंगा मुझे कोई परवाह नहीं होगी। ﴿لا ابالي﴾ मुझे कोई परवाह ही नहीं। क्या हुआ अगर तू फिर तौबा करके तोड़े और मुँह मोड़ ले गुनाहों में आ जाए फिर तौबा कर ले फिर हम मॉफ़ कर दें फिर टूट गई फिर तौबा कर ले फिर मॉफ़ कर देंगे क्यों ﴿لا تضره الذنوب ولا تنقصه المغفرة﴾ हमारे गुनाहों से उसे नुक़सान नहीं होता मॉफ़ करने से वह कम नहीं पड़ता तो लिहाज़ा वह इन्तेज़ार ही में रहता है कि कब तौबा करे और हमारी मॉफ़ी का परवाना दे दिया जाए।

नेमत की नाशुक्री से बचना चाहिएः

भाईयो बग़ैर तौबा के कोई न रहे, यह ज़ुल्म न करे, यह ज़ुल्म न करे अल्लाह के वास्ते। उसका खा कर उसी को ग़ुर्राना कुत्ता भी नहीं करता, यह तो बिल्ली भी नहीं करती, यह तो शेर भी नहीं करता, यह जो चिड़ियाघर में या सर्कस वाले होते हैं वह उनको गोश्त खिलाते हैं वह उनके सामने बकरी बन कर रहता

है और फिर ज़मीन गुनाहों से जला दें, अल्लाह की हवाओं को इस्तेमाल करें और सारी फ़िज़ा में गुनाहों का धुंआ भर दें। आँखों की शमा उसने जलाई हम उससे ग़ैर औरतों को देखें, कानों के टेलीफ़ोन उसी ने दिए और हम उनसे रन्डियों के गाने सुनें, दिल व दिमाग़ उसी ने दिया और हम नाफ़रमानी में उसे इस्तेमाल करें, शहवत उसने रखी और वह ज़िना में इस्तेमाल हो, जिस्म उसने दिया और नाफ़रमानी में इस्तेमाल हो यह तो कोई अक़्ल की बात ही नहीं है। कुत्ता एक रोटी खाकर सारी ज़िन्दगी उसकी वफ़ादारी करता है। आप सोते हैं वह जागता है, सारी रात पहरा देता है तो मैं कुत्ते से भी नीचे चला जाऊँ जो एक रोटी पर ऐसी वफ़ा कर जाए और मैं सारी जहां की नेमतें खाकर उसको ठुकरा जाऊँ, यह इन्सानियत नहीं है।

अपने हबीब को हर चीज़ चुन चुन कर दीः

और भाई दूसरा क़दम क्या उठाना हे वह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुबारक तरीक़ा है न हम अपने अल्लाह को जानते हैं न अपने रसूल को जानते हैं, अल्लाह की शान जो सबसे बड़ी मोहसिन ज़ात है उनके बारे में कोई पता नहीं। किसी कारोबार-याफ़्ता का कारोबार है तो उस में एक घन्टा तक़रीर कर सकते हैं। किसी औरत से पूछोगे कि आपके घर की क्या तरतीब है तो एक घन्टा समझाने में लगा सकती है। किसी से अगर अपने अल्लाह का तार्रुफ़ कराने के लिए कहो तो भाई हमें पता ही नहीं, बस अल्लाह एक है। अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कोई पता बता दो क्या थे कौन थे, कैसे थे? पता ही कोई नहीं। जिसका पता न हो उसकी

अज़मत कैसे आएगी। अल्लाह ने सारी काएनात को देखा ﴿اختار العرب﴾ इसमें से अरबों को अलग किया ﴿تخير العرب﴾ फिर सारे अरब को देखा ﴿تختار المضر﴾ उसमें से क़बीले मुज़िर को अलग किया अब उसमें से एक छांटनी हो रही है ﴿تخير المضر، تختار القريش﴾ फिर मुज़िर को देखा उसमें से क़ुरैश को अलग किया ﴿تخير القريش﴾ फिर उसमें से क़ुरैश की छंटनी की ﴿تختار بني هاشم﴾ इसमें से हाशिम को अलग किया ﴿تخير بني هاشم﴾ फिर बनी हाशिम को देखा ﴿تختارني﴾ सारे बनी हाशिम को देखा उसमें से मेरे अल्लाह ने मुझे मुन्तख़ब किया ﴿فان خيركم ابن ونفسه﴾ मैं काएनात का सबसे आला और अफ़ज़ल हसब नसब वाला हूँ यह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पहला इन्तेख़ाब है। छांट में इतने ऊँचे पहुँचे सिर्फ़ छांटने में, इन्तेख़ाब में, काएनात को छांटा उसमें से इन्सानों को निकाला, अरबों का छांटा, उसमें से क़बीला मुज़िर को निकाला, मुज़िर को छांटा, उसमें से क़ुरैश को निकाला, क़ुरैश को छांटा उसमें से बनू हाशिम को निकाला, बनू हाशिम को छांटा उसमें से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वजूद बख़्शा। इतने आला नसब पर जो आए उसका तरीक़ा छोड़ दिया जाए हम खढ में नहीं जाएंगे तो कहां जाएंगे।

आपकी विलादत पर सारी दुनिया में हलचल मच गयीः

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने चुना और सारी दुनिया के बुत ज़मीन पर गिर गए और बादशाहों के तख़्त उलट गए, बुत ज़मीन पर जा गिरे, एक समन्दर की मच्छली ने दूसरे समन्दर की मच्छिलयों को मुबारक बाद दी कि

काएनात का सरदार आ गया है और किसरा के महल में एक हज़ार बकरा, फ़र्श अंबार, तीन हज़ार एक सौ चौसठ बरस तक वह सलतनत चली है। दुनिया की सबसे क़दीम सलतनत जिसने मुसलसल हुकूमत की है। ये अर्शीन थे जिसको किसरा कहा जाता है तीन हज़ार एक सौ चौसठ बरस। हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में उसने जा कर दम तोड़ा। वह अपने उरूज पर थी। नौशेरवां का ज़माना था और नौशेरवां आदिल के नाम से मशहूर था उसका ज़माना था और उसके महल में पिछले बाप दादा से एक हज़ार बरस से आग जल रही थी इस लिए कि वे आग के पुजारी थे एक दम पूरी आग बुझ गई और उसने एक सफ़ेद पत्थर का महल बनाया था उसके चौदह बड़े बड़े मीनार थे वे एक धमाके के साथ ज़मीन पर गिर गए तो सारी काएनात में हल चल मच गई एक यक़ीन के पैदा होने पर। एक यहूदी आया हुआ था मक्के में, कहने लगा आज कोई क़ुरैशी पैदा हुआ है? कहने लगे हाँ, फ़लां का बेटा। बाप ज़िन्दा है? कहने लगे हाँ। कहने लगा कि कोई ऐसा बच्चा बताओ जो आज पैदा हुआ हो और बाप उसका मरा हुआ हो। उन्होंने कहा हाँ अब्दुल मुत्तलिब का पोता, अब्दुल्लाह का बेटा पैदा हुआ है। कहा मुझे दिखाओ। ख़ुद गया जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बाहर लाया गया और शकल पर जो निगाह पड़ी तो ज़मीन पर उलट कर गिरा, कहने लगा ﴿ويـل الـنـبـى اسـرائـيـل﴾ हाय बनी इसराइल आले नबुव्वत तुम से निकल गई तो वह किसरा पेरशान, नौशेरवां यह क्या हुआ। उसने अब्दुल मसीह एक बहुत बड़ा इसाई पादरी था उसको बुलाया और उसको कहा क्या क़िस्सा है? कहने लगा मेरी समझ में तो

कुछ नहीं आ रहा है। मेरा एक मामू तौरात और इन्जील का आलिम है वह शाम में रहता है मैं उससे जा कर पूछता हूँ तो कहा जाओ पूछ कर आओ। अब्दुल मसीह को रवाना किया जब वह शाम पहुँचा तो मामू सकरात में थे कुछ ग़शी कुछ होश। जब यह पहुँचे तो उसको बुलाया कि मैं आपका भांजा अब्दुल मसीह आया हूँ तो उसको यूं देखा और उसके बोलने से पहले वह कहने लगा कि बादशाह ने तुझे भेजा है कि उसके बुर्ज टूट गए हैं और उसकी आग बुझ गई तो इस लिए तुझे भेजा है। कहने लगा हाँ हाँ इस लिए भेजा है तो कहा उससे जा कर कहोः

अन्क़रीब सारा जहां मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ग़ुलाम बन जाएगाः

क्या कहा कि जा कर कहो वह शख़्सियत ज़ाहिर हो गई जो क़ुरआन को ले कर आएगी और उसका क़ुरआन पढ़ा जाएगा और वादी समा वह पानी से भर जाएगी और बुख़रात ख़ुश्क हो जाएंगे, क़ुरआन आम हो जाएगा तो उसको बता दो कि शाम भी उसका ग़ुलाम बनेगा और ईरान भी आले साअसान के हाथ से निकल कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलामों के क़ब्ज़े में चला जाएगा फिर न मेरा शाम शाम है और न तेरा ईरान ईरान है। वह सब उसके ग़ुलामों का बन जाएगा और मुझे यह लगता है कि वह आख़िरी नबी आ गया है यह उसकी वजह से हो रहा है। यह बाहर हो रहा है और कमरे में क्या हो रहा है? जन्नत की हूरों को ज़मीन पर उतार दिया गया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाईश के वक़्त, आसमान के फ़रिश्ते उतर आए और वालदा ने देखा कि सितारे फ़र्श पर आ

गए, सितारे नीचे झुका दिए गए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस्तक़बाल के लिए। फ़रमाती थीं कि मुझे यों लगता था सितारे मेरे ऊपर गिर जाएंगे। मलाइका उतर आए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब पैदा हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाफ़ काटना नहीं पड़ा कटा हुआ था आंत के साथ जकड़े हुए नहीं थे, कटे कटाए। ख़तना किया हुआ और धुले धुलाए पैदा हुए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिस्म पर गंदगी का निशान नहीं था और पैदा होते ही सिर सज्दे में रख दिया और उंगली को आसमान की तरफ़ उठा दिया और जब हज़रत आमना रज़ियल्लाहु अन्हा ने गोद में लिया तो एक बादल आया जिस बादल ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने अन्दर छुपा दिया और बादल के अन्दर से आवाज़ आई ﴿طوفوا بها مشرق الارض و مغربها﴾ इस ब्रच्चे को मशरिक़ मग़रिब में फिराओ ﴿يعرف جسمه ونعته وصورته﴾ ताकि सारा जहां उसकी शकल व सूरत, ज़ात सिफ़ात को पहचान ले।

ज़ाहिर और बातिन दोनों को एक कर लोः

मुहब्बत एक लफ़ज़ पर राज़ी नहीं हो रही, कसरत अलफ़ाज़, मुहब्बत अक्सर अलफ़ाज़ को खेंचती है, मुहब्बत की शिद्दत को लाती है तो अल्लाह तआला ने एक नाम यह एक दफ़ा नहीं कहा तू मुहम्मद है, तो अहमद है, तू माही है, तो हाशिर है, तू साक़िब है, तू हातिम है, तू अबुल क़ासिम है, तू ताहा है, तू यासीन है और तू मेरा हबीब है तो यह तबलीग़ की मेहनत उस ज़ात की मेहनत है कि मुहम्मदी नज़र आने लग जाओ। मैं ने कल भी कहा था कि ज़ाहिर में भी मुहम्मदी बनना पड़ेगा और

बातिन में भी बनना पड़ेगा। यह ऐसे ही दोगली चाल नहीं चलेगी अल्लाह की बारगाह में बातिन का ठीक होना भी ज़रूरी है और ज़ाहिर का ठीक होना भी ज़रूरी है। शैतान ने जिहालत फैलाई है कि दिल साफ़ होना चाहिए ज़ाहिर की ख़ैर है। बिल्कुल साफ़ सुथरा गिलास लाया गया बिल्कुल साफ़ सुथरा उसके एक तरफ़ पेशाब का क़तरा है तो कोई पानी पिएगा? अपने लिए तो एक क़तरा गंदगी बर्दाश्त नहीं की इस पूरे वजूद को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े से हटा कर गंदा कर दिया तो अल्लाह इस वजूद को कैसे बर्दाश्त करेगा। कपड़ा मैला हो जाए तो हम उतार देते हैं कोई नापाक हुआ है सिर्फ़ उसका ज़ाहिर ख़राब हुआ है। मैं अपने लिए तो कहता हूँ ज़ाहिर भी अच्छा हो बातिन भी अच्छा हो और मुसलमान है कि मेरे ज़ाहिर को मत देखो मेरे अन्दर को देखो नहीं नहीं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े में ही कामयाबी हैः

वे अदाएं इख़्तियार करें जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इख़्तियार कर गए। बस उसी में दुनिया व आख़िरत की निजात और कामयाबी है इसके अलावा हलाकत है, तबाही है, बर्बादी है। अल्लाह की क़सम दो टके न बन सकेगें क़यामत के दिन अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तरीक़े छोड़ कर मर गए। हज़रत बिलाल सरदार बन गए मुहम्मदी होने की वजह से, अबू लहब मरदूद हो गया चचा हो कर, तरीक़ा छोड़ने की वजह से। तो यह तबलीग़ की मेहनत यह मेहनत है कि घरों से निकलो और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाली

ज़िन्दगी इख़्तियार करो। अल्लाह की मुहब्बत उसके हबीब की इताअत सीखने के लिए घरों से निकलना और दर दर इसकी सदा लगाना, आवाज़ लगाना। यह आवाज़ दिल पर भी असर करती है, आप पर असर होता है तो मेरे पर भी असर होता है और हर बोलने वाले का बोल उस पर भी असर करता है और उसके ग़ैर पर भी असर करता है। बोल में बड़ी ताक़त है। हम तबलीग़ में निकल कर कहते हैं कि सदा लगाओ। अल्लाह और रसूल की इतनी सदा लगाओ कि दिल व दिमाग़ अल्लाह अल्लाह पुकार उठे। यह घर बैठे हासिल नहीं होती इसके लिए निकलना पड़ता है। घर बैठने की गुंजाइश होती तो हम पहले अपने लिए निकालते ज़माना हो गया क़ुरआन व हदीस पढ़ते हुए तो हम अपने लिए कितनी गुंजाइश निकाल सकते थे। बच्चे किसको अच्छे नहीं लगते, घर किसको अच्छा नहीं लगता, गर्मी सर्दी में धक्के खाना क्यों? घर से निकाले हुए हैं या कहीं से पैसे मिल रहे हैं, कुछ अन्दाज़ा मिल रहा है कि चल भाई माल पराया चलो नाना जी के पास से हलवाई की दुकान कोई ऐसा क़िस्सा भी नहीं। फिर क्यों एक मजमे का मजमा खिंचा चला जा रहा है? यह एक मेहनत है कि अल्लाह और उसके रसूल के तरीक़ों को सीखना है मरने से पहले पहले। अल्लाह के सामने खड़े होने वाला हूँ आप भी मैं भी और कोई नबी नहीं आएगा, कोई पैग़ाम नहीं आएगा। अब हमें और आपको पैग़ामें इलाही घर घर जा कर पहुँचाना है या तो आप बताइए कि हमारे ज़िम्मे नहीं किसी और के ज़िम्मे है फिर अगर कोई और नज़र नहीं आए तो हिरे फिरे क़ुर्रा आप ही के नाम पर पड़ेगा।

ऐ मेरे नबी इन नाफ़रमानों से कहो कि तौबा करें:

तो अब सारा क़ुरआन देखें और सारी हदीस देखें यह उम्मत ज़िम्मेदार है दुनिया में इस्लाम फैलाने की और कोई अरब नहीं आएगा। अपनों को संभालना भी इन पर फ़र्ज़ और ग़ैरों का संभालना भी इनका फ़र्ज़ और काफ़िरों को तबलीग़ करने के लिए भी नबी आए और मुसलमानों को तबलीग़ करने के लिए भी नबी आए। बहुत से भाई कह देते हैं जाओ काफ़िरों को तबलीग़ करो मैं उनको बता रहा हूँ कि चार सौ नबी मुसलमानों को तबलीग़ करने के लिए आए कम से कम और ज़्यादा भी हो सकते हैं इससे कम नहीं हैं। इन मुसलमानों को दावत देने के लिए चार सौ नबी ऊपर नीचे, ऊपर नीचे अल्लाह तआला ने भेजे कि जाओ इन नाफ़रमानों से तौबा कराओ तो नाफ़रमान मुसलमान को भी दावत देने के लिए अल्लाह तआला ने नबी भेजे, काफ़िरों को दावत देने के लिए भी अल्लाह तआला ने नबियों को भेजा।

फ़क़ीर कौन है?

इसी तरह मेरे भाईयो यह उम्मत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद पूरी दुनिया के इन्सानों को अल्लाह तआला का पैग़ाम पहुँचाने के लिए चुन ली गई है ﴿هو اجتبكم﴾ हम ने तुम को चुन लिया है कि दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम लेकर फिरो। अब हम इस को तसलीम कर लें। यह तो बहुत बड़ी परेशानी की बात है कि हमारे ज़िम्मे तो है कोई नहीं, यह नसल आवारा हो गई। इस नसल को अल्लाह की तरफ़ न फेरा

जाए तो हम तो वह फ़क़ीर नहीं जिन के पास पैसे न हों फ़क़ीर वे क़ौमें हैं जिनकी नसलें डूब जाएं जिनकी नसल आवारा हो जाएं। वह क़ौम फ़क़ीर कौम है। दुनिया के सबसे बड़े फ़क़ीर अमरीका और यूरोप वाले हैं जिनकी नसल ख़तम हो चुकी हैं। यह आख़िरी हिचकियां हैं। फूला हुआ मरीज़ वरम वाला गुर्दे का मरीज़ फूल जाता है। मेरे जैसा कहेगा कि कितना मोटा ताज़ा ख़ूबसूरत है। डाक्टर कहेगा कि मरने वाला है। यह फूला हुआ मरीज़ है, यह कुफ़्र का वरम है जो चढ़ गया है जिसको अन्क़रीब तोड़ने वाला है। अंडे के छिलके से ज़्यादा आसानी से अल्लाह तआला इसको तोड़कर ज़िन्दा रहने वालों को दिखा देगा कि बेहया क़ौमो का अंजाम होता है। बेहया क़ौमों को ज़मीन पर जीने का कोई हक़ नहीं। दुनिया का सबसे बड़ा मुजरिम मेरे ख़याल से फ़िरऔन था। जिसने कहा कि मैं खुदा हूँ और आज तक कोई इन्सान नहीं आया जिसने कहा कि मैं ख़ुदा हूँ। अल्लाह तआला ने मिस्र के दरिया डाल दिया। समंदर में डाल दिया, क़ौमे आद मुतकब्बिर हुई उसे उड़ा दिया, क़ौमे समूद नाफ़रमान हुई फ़रिश्ते की चीख़ से उड़ा दिया, क़ौमे शुऐब आग की बारिश से हलाक कर दी गई और क़ौमें लूत बेहया थी, बुतों के पुजारी थे, बेहया थे, क़ौमे लूत को अल्लाह तआला ने ये पाँच अज़ाब मारे। इकठ्ठे किसी क़ौम पर इतने अज़ाब नहीं आए जितने लूत की क़ौम पर अज़ाब आए। ज़मीन पर ज़लज़ला आया, दीवारें उखाड़ दीं, ऊपर ले जाकर ज़मीन की तरफ़ लौटा के फेका, फिर पत्थरों की बारिश की, फिर चेहरों को मसख़ कर दिया, फिर आँखों का धंसा दिया। यह पाँच अज़ाब अल्लाह ने उन पर मारे। सब अल्लाह तआला ने क़ुरआन में ज़िक्र फ़रमाए

﴿جعلنا عاليها سافلها فطمسنا اعينهم﴾ यह सारे अज़ाब अल्लाह ज़ुलजिलाल की तरफ़ से उस क़ौम पर आए उनकी बेहयाई की वजह से। हमारी नसल बेहयाई की तरफ़ चल रही है। शराफ़त बाज़ार में अब देखने को नज़र नहीं आती।

तबलीग़ हमारा फ़रीज़ा हैः

इस वक़्त सबसे बड़ी ज़रूरत है कि हम फिर फिर के लोगों को इससे तौबा करवाएं अगर अल्लाह की पकड़ आ गई तो फिर कोई चीज़ न बचा सकेगी तो यह तबलीग़ को जमात का काम न समझें इसको अल्लाह का फ़रीज़ा समझें तो भाई मेरे ज़िम्मे है दीन पर चलना, दीन को फैलाना। वह तो नाम पड़ गया तबलीग़ी जमात। हर मुसलमान कारकुन है, हर मुसलमान इसको करने वाला है, माने या न माने नमाज़ तो सब पर फ़र्ज़ है वह माने या न माने नमाज़ तो सब पर फ़र्ज़ है पढ़े या न पढ़े। वह माने या न माने ख़त्मे नबुव्वत को मानने के बाद तबलीग़ उसके ज़िम्मे है। मेरा नबी आख़िरी नबी है उसके बाद कोई नबी नहीं यही अक़ीदा उसके ज़िम्मे तबलीग़ का कर लेता है। इस लिए मेरे भाईयो अल्लाह के यहां तौबा भी करें हरकत भी करें और एक बात बताऊँ तबलीग़ के लिए आलिम होना भी शर्त नहीं है दावत देने के लिए नेकी की बात करने के लिए खुद अमल भी शर्त नहीं है।

एक आयत की सही तफ़सीर और ग़लत फ़हमी का इज़ालाः

﴿لما تقولو ما لا تفعلون﴾ के तर्जुमे से ग़लत समझा जाए, आगे

ज़ुबान मुहावरा न जानने की वजह से सिर्फ़ तर्जुमा पढ़ कर वे ग़लत पटरियों पर चढ़ गए। तर्जुमे से कभी कोई बात समझ में नहीं आया करती। यह अल्लाह तआला यूं कह रहा है जिस चीज़ को करते नहीं उसका दावा मत किया करो ﴿ولم تقولون ما لا تفعلون﴾ जो तुम करते नहीं वह तुम क्यों कहते हो ﴿لما تبلغون﴾ तो नहीं कहा कि तुम क्यों दावत देते हो उसकी जो तुम करते नहीं हो। क़ौल और दावत इन अलफ़ाज़ का फ़र्क़ समझ में आए तो बात वाज़ेह हो जाती है कि दावत देने के लिए अमल शर्त नहीं। अमल निजात के लिए शर्त है। बाज़ मौक़ों पर एक कमज़ोर आदमी, नाफ़रमान का बोल भी ज़िन्दगियों को पलटने का ज़रिया बन जाता है। मैं कोई अमल की छुट्टी नहीं कर रहा हूँ कि अमल की छुट्टी हो गई। मैं एक इशकाल को हल कर रहा हूँ कि यह एक आम इशकाल है कि ख़ुद आमिल हो तो दावत दे, अगर ख़ुद अमल न हो तो कैसे दावत दें। अल्लाह तआला का क़ौल है ﴿لم تقولون ما لا تفعلون﴾ क़ौल है। क़ौल और दावत में फ़र्क़ है क्यों दावा करते हो इस बात का जो करते नहीं। तहज्जुद पढ़ता ही नहीं और आकर कहता है कि मेरी तहज्जुद कभी क़ज़ा ही नहीं हुई। यह किस की नफ़ी अल्लाह तआला फ़रमा रहा है। अरबी मुहावरे को नहीं समझा इस लिए ग़लत सुन कर और उस पर एक हदीस भी सुनाते हैं।

एक औरत का वाक़िया:

वह क्या है कि एक औरत आई कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरा बेटा गुड़ खाता है इसको कहिए कि गुड़ न खाया करे। ऐ बेटे मदीने में गुड़ तो साबित करो फिर हदीस भी

साबित हो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि कल आना। वह कल आई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि बेटा गुड़ न खाया कर तो कहा कि यह बात आप कल ही कह देते। कहा कल मैंने खुद गुड़ खाया था। यह बकवास है और अल्लाह के नबी पर बोहतान है। यहां तीस साल हो गए किताबों के साथ ज़िन्दगी गुज़ारते हुए कहीं नहीं मिली। यह सब झूठ है और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि जिसने यह झूठ बोला वह अपना ठिकाना जहन्नुम में बना ले। हाय! आवाज़ तो लगानी है ﴿رب مبلغ اوعى من سامع﴾ यह अल्लाह के नबी का क़ौल तो सारी हदीस की किताबों में मौजूद है, यह खुद इसकी निशान देही कर रहा है कि दावत देने के लिए अमल शर्त नहीं ﴿رب مبلغ اوعى من سامع﴾ अज़ान का वक़्त हो गया वरना तो मैं इसको बयान करता कि दावत देने के लिए अमल शर्त नहीं ﴿رب مبلغ اوعى من سامع﴾ किसी का बोल कान में पड़ता है यह कहना भी एक दिन अमल का दाग़ देगा। इसके लिए निकाला जाता है कि भाई निकलो निकलो, दीन का सीखना भी फ़र्ज़ है, फैलाना भी फ़र्ज़ है तो इसी लिए तबलीग़ी जमातों में निकलते हैं। कभी इज्तिमा करते हैं। अभी इज्तिमा हो रहा है अगले हफ़्ते की शाम से जो आ रहा है हफ़्ता। भाई अल्लाह की राह में निकलना चार चार महीने के लिए यह तो असल में बहाने हैं किसी तरह लोगों को निकाला जाए, निकलने का रिवाज ही निकल गया। घरों में पैदा हुए, घरों में परवान चढ़े, घरों में रहते हुए मर गए। भाई यह रिवाज टूटे। पैदा कहीं हों, परवान कहीं चढ़ें, मौत कहीं आए। जो अल्लाह के रास्ते में मरा वह अल्लाह के ज़िम्मे हो गया ﴿فقد وقع اجره على الله﴾ कहा

मेरे ज़िम्मे हो गया, मेरे ज़िम्मे हो गया। अल्लाह के ज़िम्मे लग कर मर जाएं। मर तो जाएंगे तब भी, अस्पताल में मरने के बजाए अल्लाह की राह में मर जाएं कि डिफ़ैन्स में मरने के बजाए अल्लाह की राह में मर जाएं कि अल्लाह के ज़िम्मे लग गए तो भाई इसके सारे भाई इरादे करो। इसका थोड़ा सा इज़्हार भी करो ताकि पता चल जाए कि कौन भाई इज्तिमा से अपनी अपनी मस्जिदों से डिफ़ैन्स से, इस मस्जिद से चार महीने, चिल्ले की जमाते कौन कौन भाई नक़द पेश करेगा, जल्दी बता दो।

وآخر دعوانا عن الحمد لله رب العلمين

□□□□□

काएनात के अजाएबात

जो नज़र आता वह हक़ीक़त नहीं:

मेरे भाईयों और दोस्तों! दुनिया में जो हाल आते हैं उनका पैदा करने वाला तो अल्लाह ही है। ख़ैर आए या शर इरादा इसमें अल्लाह ही का होता है, असबाब बनते हैं इन्सानों के ज़रिये से चीज़ों के ज़रिये से लेकिन इस दुनिया में फैली हुई चीज़ों की कमी ज़्यादती के ज़रिए से हालात का बनना बिगड़ना नज़र आता है। पानी में दरख़्त का साया नज़र आता है वह दरख़्त नहीं होता सिर्फ़ साया होता है। हालात अल्लाह तआला पैदा फ़रमाते हैं और चीज़ें भी अल्लाह तआला पैदा फ़रमाते हैं। हालात के ख़ज़ाने अल्लाह के पास अलग हैं और चीज़ों के ख़ज़ाने अल्लाह के पास अलग हैं। दुनिया में ज़ाहिरी तौर से एक दूसरे के साथ मिले हुए नज़र आते हैं, हक़ीक़त में ये दोनों अलग अलग हैं। जिस्म और जगह बनता है और रूह और जगह बनती है। रूह के बनने का निज़ाम और है और जिस्म के बनने का निज़ाम अलैहिदा है और अल्लाह तआला इन दोनों को माँ के पेट में जमा कर देता है। नज़र में दोनों एक लगते हैं हक़ीक़त में ऐसा नहीं है। जिस्म एक जगह से आया है और रूह दूसरी जगह से आई है। ऐसे ही मेरे भाईयों चीज़ें आयीं, इज़्ज़त आई, माल आया, माल आ गया इज़्ज़त आ गई, माल चला गया इज़्ज़त भी

चली गई, दवा आई सेहत भी आ गई, दवा चली गई सेहत भी चली गई, क़ुव्वत आई ग़लबा आ गया और क़ुव्वत हाथ से चली गई तो ग़लबा ख़त्म हो गया। अब यह बड़ा ज़बर्दस्त इम्तेहान है कि जो नज़र आता है वह हक़ीक़त में रहता नहीं, अण्डा फटता है तो बच्चा निकला। हम कहते हैं कि अण्डे ने बच्चा दिया, ज़मीन फटी दर्खत निकला, हम ने कहा दाना बोया दरख़्त बना, गुठली से दरख़्त बना। यह सारा नज़र का यक़ीन है, मुशाहिदे वाला यक़ीन है।

अल्लाह तआला ने हर चीज़ को बग़ैर नमूने के बनाया हैः

अल्लाह तआला क्या फ़रमाते हैं कि ﴿ان اللــه فالق الحب والنوى﴾ यह दाने और गुठली को फाड़ने वाला मैं हूँ, उसे दरख़्त बना दूं या इसके बग़ैर बना दूं। हर चीज़ का पहला नमूना अल्लाह तआला ने खुद बनाया। मर्द औरत के मिलने से बच्चा पैदा होता है, नज़र यह आता है। अल्लाह तआला क़ुरआने पाक में इसकी नफ़ी फ़रमाता है ﴿ءانتم تـخـلـقونه ام نحن الخالقون﴾ तुम्हारे मिलने से पैदाइश होती है या मैं पैदा करता हूँ। तुम्हारे बग़ैर भी पैदा कर सकता हूँ। फ़रिश्ते पैदा किए तो कोई माँ बाप नहीं, आदम अलैहिस्सलाम को पैदा किया तो कोई माँ बाप नहीं, हज़रत मरियम को बेटा दिया बाप के बग़ैर, जन्नत की लाखों करोड़ों हूरें पैदा की न उनका कोई बाप न उनकी कोई माँ है। जन्नत में हज़ारों ग़िलमान पैदा किए। अदना दर्जे का जो जन्नती है, सबसे छोटा जन्नती जो है उसकी जन्नत इस जहां से दस गुना बड़ी है और उस जन्नती को अस्सी हज़ार ख़ादिम मिलेंगे और इससे ऊपर वाले को पता नहीं कितने करोड़ों नौकर मिलेंगे, अदना दर्जे

के जन्नती को बहत्तर बीवियां मिलेंगी और आला दर्जे के जन्नती को पच्चीस लाख बीवियां मिलेंगी, उन सबको अल्लाह तआला ने पैदा किया। इसमें न मर्द ने न औरत ने कोई किरदार अदा किया। इतने गुलाम पैदा हुए, इतनी औरतें पैदा हुईं, इतने बड़े बंगले, कोई गारा नहीं, कोई मिट्टी नहीं, कोई ईंट, ईंटों के कारखाने, सीमेंट के कारखाने, मज़दूर इंजीनियर सारे लगते हैं तब जाकर बिल्डिंगे तैयार होती हैं कोई सौ मंज़िला कोई दस मंज़िला।

जन्नत के महल की वुसअतः

अल्लाह तआला ने जन्नत में ऐसे बड़े महल बनाए हैं कि अगर सारी दुनिया इसमें रखी जाए तो यह एक बकरी की तरह नज़र आएगी जैसा कि दुनिया में कोई एक बकरी खड़ी हुई हो। यह सारी दुनिया इस महल में रखी जाए तो बकरी की तरह नज़र आएगी। ऐसे हज़ारों महल अल्लाह तआला ने और भी बनाए हैं। फ़िज़ा में अल्लाह तआला ने अरबों खरबों सय्यारे पैदा किए हैं। पाँच अरब कहकशाएं हैं, एक एक कहकशा में कम से कम दस दस खरब सय्यारे हैं और यह सूरज ज़मीन से तेरह लाख गुना बड़ा है और सूरज से भी दस गुना बड़े सय्यारें फ़िज़ा में गर्दिश कर रहे हैं। अल्लाह तआला ने इन को बग़ैर किसी नमूने के बनाया और हुक्म दे दिया बन गए। नज़र आता है कि असबाब की दुनिया है हक़ीक़त में है अल्लाह तआला के अम्र की दुनिया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़िरऔन से कहा कि मेरा रब वह जो हर चीज़ को पैदा करता है फिर उसे हिदायत देता है।

बिल्ली की तरबियत कौन कर रहा हैः

बिल्ली हामला होती है तो वह कोना तलाश करने लगती है बच्चे देने के लिए। उसको उसकी माँ ने नहीं बताया कि तुझे बच्चा देना है तो किसी कोने में छिपने की जगह देखनी है। किसी टीचर सैन्टर से नहीं सीखा, किसी नर्सिगं होम से ट्रेनिगं नहीं ली। उसको ऊपर से इल्हाम है कि मैं एक ऐसी जगह बच्चा दे दूं कि वह ज़ाए न हो जाए। उसका कोई टीचर या उस्ताद नहीं है। अल्लाह तआला का ऊपर से निज़ाम है, उनको भी हिदायत देता चला आ रहा है। बिल्ली किसी कोने में जा कर बच्चा देती है तो बच्चे को नहीं पता कि मेरी माँ की छाती कहाँ है और उस में मेरी ग़िज़ा है, उसको माँ ने नहीं बताया।

हम तो ख़ुद अपने बच्चे को सीने से लगाते हैं और उसके मुहँ में छाती देते हैं, वह चूसता है, बिल्ली तो ऐसा नहीं करती। उसके बच्चे की आँखें बन्द होती है ख़ुद सरकता हुआ उधर को चल रहा है उसकी तक़दीर और अल्लाह की रबूबियत उसको इस तरफ़ ले जा रही है, उसके चूसने का तरीक़ा बता रही है। हम तो बच्चे के मुहँ में चुसनी दे देते हैं तो उसको चूसने का तरीक़ा आ जाता है और उसकी मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से तरबियत करते हैं तो वह सीखता है। बिल्ली का बच्चा है जिसने कभी देखा नहीं कभी सुना नहीं, वह ख़ुद ब ख़ुद छाती की तरफ़ लपकता है और दूध पीता है। यह सारा का सारा निज़ाम अल्लाह तआला ग़ैब के पर्दों से चला रहा है।

एक मादा है वह अण्डा देती है। अण्डा देने के बाद वह कीड़े को डंक मारती है ऐसे डंक मारती है कि वह मरे नहीं बेहोश हो

जाए। मर जाएगा तो गिर जाएगा सड़ जाएगा, तो इतना डंक मारती है कि बेहोश हो जाए मरे नहीं। वह इन कीड़ों को अपने अण्डे के पास रख लेती है और उनकी बेहोशी इतनी होती है कि जब तक वह बच्चे अण्डे से बाहर नहीं आते तो उनको होश नहीं आता। जब वह बच्चा अण्डे के अन्दर से निकलता है तो पहले से उसके लिए गोश्त का इन्तेज़ाम किया जा चुका होता है। वह माँ चली जाती है अण्डे से निकलने वाला बच्चा जब देखता है कि मेरे लिए खाना तैयार है तो फिर उसको खाता है, परवान चढ़ता है। फिर उसको पर लगते हैं, फिर पूरे गांव में बिखर जाते हैं। यह बच्चा जब बड़ा होकर अण्डे देने पर आता है तो इसी काम को करता है जो उसकी माँ ने किया था न वह अपनी माँ को देखता है न अपनी माँ से सुनता है न अपनी माँ से सीखता है।

अल्लाह तआला का अपनी मख़्लूक़ की रहनुमाई करनाः

यह अल्लाह तआला है अपनी मख़्लूक़ को उनकी ज़रूरियात की हिदायत देता चला जाता है और वे इतनी समझदार हैं कि इन्सानों से भी ज़्यादा। शेर के सामने घास रख दो तो वह कहेगा अरे भाई तेरे जैसा अहमक़ मैंने कभी नहीं देखा क्या मैं घास खाने वाला हूँ? मैं तो गोश्त खाता हूँ, यह मेरे परहेज़ की चीज़ है। गोश्त रख दो खाएगा, घास नहीं खाएगा। इन्सान इतनी अक़्ल के बावजूद बद परहेज़ी करता है। खुद डाक्टर भी है, शूगर भी है फिर भी मीठा खाता है मैं तो खा लूंगा कोई हरज नहीं। शेर इससे ज़्यादा अक़्ल वाला है वह बदपरहेज़ी नहीं करता, वह कभी भी घास नहीं खाता। बकरी के सामने गोश्त

रख दो तो वह कहेगी तेरा दिमाग़ ख़राब हो गया है मैं तो घास खाने वाली हूँ घास लाओ तो खाउंगी। ये तमाम जानवर पूरा परहेज़ करते हैं। इन्सान इस मामले में थोड़ा सा इनसे भी नीचे है। डाक्टर होकर शूगर का मरीज़ है औरों को कहता है कि मीठा नहीं खाना और खुद खाता है।

मच्छली को तरबियत कौन देने वाला है?

अल्लाह तआला हर चीज़ का निज़ाम समझाने वाला है, उसकी ज़रूरत की हिदायत देने वाला है और उसकी ज़िन्दगी की तरतीब बताने वाला है, समन्दर की तह में चलने वाली मच्छलियों की रहबरी करने वाला, समन्दर में एक मच्छली है वह बर बूढ़े के पास जाकर अण्डा देती है इसके अलावा किसी और जगह अण्डा नहीं देती। हज़ार मील का सफ़र करेगी बर बूढ़ा पहुँचेगी वहाँ अण्डा देगी, उसके अलावा इस पूरे समन्दर में उसके लिए और जगह ही नहीं कि वहाँ जा कर अण्डा दे। यह पूरे समन्दर में पाई जाती है और अण्डा देने के लिए बर बूढ़ा पहुँचती है और अण्डा देकर मर जाती है। बच्चों के ज़िन्दा होने तक भी ज़िन्दा नहीं रहती। अब वह बच्चा अण्डे से निकलता है तो उसके सामने खुला समन्दर है उसको पता नहीं कि मेरी माँ कहाँ है। उनमें से कोई बहरे हिन्द में होता है कोई बहरे औक़ियानूस में होता है कोई बहरे काहिल में होता है लेकिन तीनों सफ़र करते हैं। आज तक ऐसा नहीं हुआ कि यूरोप के समन्दर की व्हेल मच्छली अफ़्रीक़ा में चली गई हो और अफ़्रीक़ा की व्हेल मच्छली भटक कर यूरोप चली गई हो। बहरे हिन्द की व्हेल मच्छली भटक कर अमरीका चली गई हो। हर एक बच्चा

ठीक उसी मक़ाम पर चला जाता है जहाँ उसकी माँ रहती थी और रास्ते में किसी से नहीं पूछता है तीन हज़ार मील सफ़र करता है उसका कोई रहबर नहीं कि उसकी रहनुमाई करे। अल्लाह तआला ने उनको ऐसा निज़ाम दिया है कि उसका कोई रहबर नहीं, कोई रास्ता बताने वाला नहीं, सिर्फ़ एक अल्लाह है जो आसमान पर बैठ कर उसकी रहबरी करता है।

शहद की मक्खी की रहबरीः

अब अल्लाह तआला ने शहद की मक्खी को हुक्म दिया कि ﴿فاوحى ربك إلى النحل أن اتخذى من الجبال بيوتا ومن الشجر ومما يعرشون ثم كلى من كل الثمرات فاسلكى ذللا﴾ चल मैंने तेरे लिए रास्ता मुसख़्ख़र कर दिए तू चल शहद को तलाश कर, मेरे बन्दों को इसकी ज़रूरत होती है, वह शहद की मक्खी निकलती है शहद की तलाश में कई सौ मील चली जाती है। जहाँ देखती है कि यहाँ शहद मौजूद है वहाँ से अपने छत्ते तक बीस मील दूर है मशिरक़ की तरफ़ है या मग़रिब की तरफ़, सौ फ़ीट ऊँचाई पर या सौ फ़ीट निचाई पर, यह सारे नक़्शे वह अपने ज़हन में ले लेती है, फिर वहीं जहाँ उसने शहद को तलाश किया हुआ है उन्ही के थोड़ा ऊपर वह रक़्स करती है और उसमें वह अपनी जगह का पैग़ाम छोड़ देती है और उसके छत्ते में ऐसा सिस्टम है कि वह उस आवाज़ को क़ुबूल करती है और यह ऐसा ज़बर्दस्त निज़ाम है कि उसका छोड़ा हुआ जो पैग़ाम है उसको दूसरी शहद की मक्खी कैच नहीं कर सकती। यहाँ तो पाँच मीटर पर दूसरों की कैच कर लेते हैं लेकिन शहद की मक्खी को अल्लाह तआला ने ऐसा आला दिया हुआ है जो अपना पैग़ाम छोड़ती है तो सिर्फ़

उसी की मक्खियां उसको वसूल करती हैं, दूसरे छत्तों की मक्खियां उसे वसूल नहीं कर सकती हैं। उसके सिर के ऊपर एक ऐन्टीना है उसको वह इधर उधर घुमाती है, उसी को बस कुछ बताती है कि मैं मश्रिक़ में हूँ या मग़रिब में हूँ, सौ फ़ीट नीचे हूँ या सौ फ़ीट ऊपर हूँ तो वह पुकारती है कि आ जाओ तो वहाँ से तीस हज़ार मक्खियों का लश्कर निकलता है तो वे मक्खियां सीधी वहीं आती हैं, वहाँ आकर उसको लेकर वापस चली जाती हैं तो ऊपर वाली मक्खियां उसको चैक कर लेती हैं न उनकी कोई खुर्दबीन है न अल्ट्रा साउन्ड है बस उनकी आँख सब कुछ है। जिस मक्खी में ज़रा गन्दगी होती है उसके पर तोड़कर उसको नीचे फेंक देती है इस लिए शहद सौ साल पड़ा रहे तो ख़राब नहीं होता। हर चीज़ का ऐग्रीमेन्ट है, छः महीने बाद ख़त्म हो जाता है और उस चीज़ को फ़ेका जाता है। शहद का कोई एग्रीमेंट नहीं पक जाए, पके हुए को उतारा जाए तो दो सौ साल भी कुछ नहीं होता, यह अल्लाह का निज़ाम है।

अण्डे पर ख़ुदा का हुक्मः

अण्डा ख़ोल है उसके अन्दर बच्चा तैयार होता है जब अल्लाह तआला उसको बाहर निकालना चाहता है जो बच्चे की चोंच के नीचे एक सख़्त झिल्ली आ जाती है अगर वह सख़्त झिल्ली अल्लाह तआला पैदा न करे तो वह अण्डे को तोड़ नहीं सकता। वह सख़्त झिल्ली उसकी सख़्त ज़रूरत है उसके ज़रिए वह अण्डे को ठोंग मार कर तोड़ देता है फिर वह बाहर आता है। अब उस झिल्ली की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि उसके साथ वह दाना नहीं चुग सकता। यह झिल्ली उसके उसके दाना खाने में रुकावट

है जब बाहर आ जाता है तो यह झिल्ली टूट कर ख़त्म हो जाती है फिर उसकी अपनी चोंच बाक़ी रह जाती है अगर यह झिल्ली अन्दर न हो तो अण्डे से बाहर नहीं आ सकता और अगर वह झिल्ली बाहर भी रहे तो वह बच्चा दाना नहीं चुग सकता। यह अल्लाह तआला का निज़ाम है जो मख़्लूक़ के लिए भी हिदायत पर है और इन्सान के लिए भी हिदायत पर है यानी अपनी ज़रूरियात ज़िन्दगी पेरी करने की हिदायत अलाह तआला ने सब को दे रखी है।

तो मेरे मोहतरम भाईयो! अल्लाह ही अकेला बादशाह है। इस काएनात में आसमान से फैसले उतरते हैं ज़मीन में ज़ाहिर होते हैं अगर ज़मीन वाले फैसला करें और आसमान वाले न करें तो कुछ भी नहीं होगा और आसमान वाले फैसला कर लें और ज़मीन वाले न करें तो हो जाएगा।

बग़ैर इन्जन वाला जहाज़ः

तुम परिन्दों को नहीं देखते कि कैसे हवाई जहाज़ हैं जो हवा में फिरते रहते हैं। न उनमें कोई इन्जन है न कोई ईंधन की ज़रूरत है न उनको किसी बार्डर पर उड़ने की ज़रूरत है, वे अपनी उड़ान उड़ते हैं अल्लाह तआला उनको हवाओं में थामता हैं और उनके लिए लम्बे चौड़े एयरपोर्ट की ज़रूरत नहीं न रन वे की ज़रूरत है उतरने के लिए न चढ़ने के लिए। दरख़्त की एक छोटी सी शाख़ उसका एयरपोर्ट है, वह उस पर लैन्डिंग करता है बड़ी बुलन्दी साथ और बड़ी तेज़ी के साथ उसी शाख़ पर बैठता है जिसका वह इरादा करता है आपने नहीं देखा होगा कि वह गिरा हो आज कल के टैकनालोजी कभी ऊपर हवा में उड़ते रहते

हैं कि एयरपोर्ट मसरूफ़ है कभी आपस में टकराते हैं कभी नीचे गिर जाते हैं, कभी उलटे होते हैं इसी तरह कई हादसात होते हैं अल्लाह का बनाया हुआ छोटा सा जहाज़ एक छोटी सी शाख़ को अपना रन वे बनाता है और सीध वहां जा के उतरता है कभी ऐसा नहीं होता कि उतने में फिसल कर गिर गया हो, फिर उड़ने के लिए थोड़ा सा पर हिलाता है और हवा में नज़र आता है, न उसे कप्तान की ज़रूरत है न उसे इन्जन और ईंधन की ज़रूरत है। अल्लाह फ़रमाते हैं इनमें ग़ौर करोगे तो मेरी क़ुदरत नज़र आएगी।

पत्थरनुमा फल में अल्लाह की क़ुदरतः

इसी तरह नारियल का दरख़्त पचास फिट ऊँचा है उसके फल पत्थर जैसे हैं अल्लाह तआला ने उसको ऐसे पत्थर की तरह बनाया जिसके ऊपर तीन सुराख़ हैं मेरा बन्दा पिएगा तो इसका पानी इस सुराख़ से पी सकता है और उसके अन्दर ऐसा पानी रखा है कि वह पानी ज़मीन खोदें तो उस में नहीं। पत्तों को तोड़ें तो उसमें नहीं, दरख़्त को काटें तो उसमें नहीं, शाख़ों का चीरें तो उसमें नहीं, पानी वह नहीं जो ज़मीन वाला है, यह अन्दर ऐसा पानी है जो कई बीमारियों के लिए शिफ़ा और इलाज है। इसमें इस मालिक का निज़ाम है जिसने इस दरख़्त को हिदायत दी हुई है। अल्लाह की हुकूमत इसमें चलती है। आज हम समझते हैं कि अल्लाह ने यह दुनिया बनाई है और ख़ुद फ़ारिग़ हो कर बैठ गया है, अब जो करना है हम ने करना है। हुकूमत हमने चलानी है। कहते हैं जो करते हैं वह खाते हैं। हक़ीक़त में अल्लाह खिला रहे हैं।

अहकमुल हाकिमीन सिर्फ़ एक ही हैः

पैसे से कुछ नहीं होता और सब कुछ होता है, पैसे से इज़्ज़त नहीं मिलती है और हम देखते हैं कि इज़्ज़त पैसों से मिल रही है, फ़ौज, बड़े अस्लेहे की वजह से है और फ़ौजियों में अस्लेहे नज़र नहीं आता यह तो आप उनके ज़ाहिर की नफ़ी कर रहे हैं हां अल्लाह ने हमें कलिमे में यह बताया कि ﴿لا الٰہ الا اللّٰہ﴾ तलवार सब से ऊपर हो ﴿لا الٰہ﴾ कोई ख़ालिक़ नहीं, कोई नफ़ा देने वाला नहीं, कोई नुक़सान देने वाला नहीं, कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं, कोई ज़िल्लत देने वाला नहीं, कोई ज़िन्दगी देने वाला नहीं, कोई हालात के लाने वाला नहीं, कोई हालात के बनाने वाला और बिगाड़ने वाला नहीं, सब से हो "ला" यह "ला" की तलवार सब पर लटाकई, अर्श के फ़र्श के, फ़रिश्ते, इन्सान और जिन्नात हवाएं, पत्थर और पहाड़ व क़तरे से लेकर सबसे बड़ी मख़लूक़ जिबराईल अलैहिस्सलाम तक एक पत्ते से लेकर बड़े से बड़े जंगल तक, एक छोटे से छोटे मेंढक से लेकर मगरमच्छ तक, सब के सब पर अल्लाह का क़ब्ज़ा है यह सब उसके हाथ में हैं, अल्लाह के इरादे में हैं इनसे वही होगा जो अल्लाह चाहेगा, जो अल्लाह न चाहे वह नहीं होगा "इलल्लाह" उनसे कुछ नहीं होगा, यह नफ़ा नहीं दे सकते, ये नुक़सान नहीं दे सकते। ये सिफ़र हैं सिफ़र से पहले एक हो तो सिफ़र की ताक़त है और सिफ़र से पहले एक को हटाया जाए और पूरी कापी को सिफ़र से भर दिया जाए तो बेकार है, इस से कुछ नहीं होगा, अगर इस से पहले एक बढ़ा दें तो हर एक की ताक़त को बढ़ा देगा, कुछ न था 10 बन गया फिर उसके साथ सिफ़र लगाया जाए तो हर

सिफ़र काम देगा 10 से 100, 1000, 10000 वग़ैरह इन तमाम सिफ़रों के पीछे सिर्फ़ एक लगा हुआ है।

अल्लाह के बग़ैर कोई कुछ नहीं कर सकताः

मेरे भाईयो! अगर इस सारी काएनात के पीछे अल्लाह की ज़ात का हुक्म है तो इन सब में ताक़त नज़र आएगी और अगर अल्लाह अपने हुक्मों का हटा दें तो यह सब सिफ़र है। सोना भी सिफ़र है, पहाड़ भी सिफ़र है, ऐटम बम भी सिफ़र है, चियूंटी भी सिफ़र है, जैसे चियूंटी बेकार है ऐसे ही ऐटम बम भी बेकार है, जैसे हवा में उड़ती हुई मक्खी बेकार है इसी तरह बड़े बड़े हवाई जहाज़ जो तबहियां फैलाते हैं अल्लाह की नज़र में बेकार हैं अल्लाह के अमॄ के अलावा कुछ नहीं होता बल्कि जो कुछ होता है वह अल्लाह के इरादे से, अल्लाह के फ़ैसले, अल्लाह की चाहत से होता है।

अल्लाह तआला हथियार व असबाब का मोहताज नहींः

हालात करने के लिए इन हथियारों का अल्लाह मोहताज नहीं है, उसके इरादे का नाम हलाकत है, क्या क़यामत के लिए कोई ऐटम बम फटेगा? क्या क़यामत में कोई लड़ाई होगी? बस सिर्फ़ एक फ़रिश्ते की चीख़ की ज़रूरत है, एक फूंक से सब तोड़ देगा, अब्राह के लश्कर को मारा तो किसके ज़रिये से? क्या फ़रिश्तों के ज़रिए? उसके लिए सिर्फ़ एक छोटे छोटे परिन्दों को लाया जिन के मुँह में एक कन्करी और एक कन्कर नीचे फेंका हाथी के ऊपर, आदमी के सिर में लग गया और उसकी खोपड़ी को

चीर दिया और गर्दन में उतरा, फिर पेट में उतरा और पाख़ाने के रास्ते से निकल कर हाथी के अन्दर उतरा और हाथी के पेट को चीर कर नीचे उतर जाता था तो एक दम हाथी भी ख़त्म और आदमी भी ख़त्म और हथियारों का क्या इस्तेमाल किया? एक छोटा सा तिनका।

लुक़्मे का अल्लाह तआला से सवालः

सेहत देने के लिए दवाई का मोहताज नहीं, दवाई सेहत देने के लिए अल्लाह के हुक्म की मोहताज, निवाला मुँह में होता है और हम कहते हैं कि कमाया है तो खाया है। निवाला मुँह मे जाकर अल्लाह तआला से पूछता है कि या अल्लाह! साँस की नाली में जाऊँ या गिज़ा की नाली में जाऊँ? यहाँ एक पर्दा है जो साँस की नाली को बन्द कर देता है और एक फ़रिश्ता है जो उसको बन्द करता है, पर्दा नज़र आता लेकिन फ़रिश्ता नज़र नहीं आता अगर अल्लाह फ़रिश्ते को पीछे हटा दें तो अपने हाथ का कमाया हुआ मौत का पैग़ाम ले कर आएगा, फिर वह मैदे में जाता है कौन सी ताक़त है जिस से हम मैदे को हरकत देते हैं? कहते हैं कि करेंगे तो कुछ मिलेगा नहीं करेंगे तो कुछ नहीं मिलेगा, करेंगे तो काम बनेगां आप बताइए मैदे को इस्तेमाल करने के लिए कौन सा कारोबार इख़्तियार किया हुआ है।

अज़ाए इन्सानी दरसे इबरत हैंः

बोलिए भाई! अमरीका में कौन सा ऐसा कारोबार है जिससे मैदा हरकत करता है, आँखों की रौशनी को बरक़रार रखने के

लिए कौन सी दुकान खोली हुई है, एक छोटी सी आँख हे जिस में 130 कैमरे हैं, उन कैमरों को सैट करना, उनकी लाइट को सही रखना, फोटुओं को सही खींचना, इसके लिए आपने कौन सा स्टूडियो खोला हुआ है जो अपनी अपनी आँखों के नूर को बरक़रार रखते हैं? दिमाग़ सोचता है इसमें कितने करोड़ सैल्स हैं एक एक सैल्स पेरे निज़ाम को कन्ट्रोल कर रहा है इसके लिए हम ने कौन सा इन्तेज़ाम किया हुआ है। यह मुँह के अन्दर बत्तीस छुरियां हैं ज़ुबान को इन छुरियों से बचाने के लिए हम कौन सा काम करते हैं, यह अल्लाह की क़ुदरत है कि बत्तीस छुरियों में ज़ुबान हरकत करती है छुरियों से लगने नहीं देती, अल्लाह इन दांतों को निकालता है फिर एक जगह ख़त्म कर देता है अगर अल्लाह तआला इन दांतों को बढ़ाना शुरू कर दें, मुँह से बाहर कर दें तो हम क्या कर सकते हैं, ग़िज़ा पेट में जाती लेकिन पूरे जिस्म में हरकत करती है, दवा गई पेट में सिर का दर्द ख़त्म हो गया, यह दवाई का असर पेट से ले कर सिर तक डाक्टर ले जाता है, ख़ून के निज़ाम को अल्लाह चलाता है, चार महीने में पहला ख़ून ख़त्म कर के नया ख़ून पैदा कर देता है, दस बरस में पूरा जिस्म तब्दील हो जाता है, हम कहते हैं यह जिस्म वह जिस्म है, नहीं हर वक़्त हमारा जिस्म टूट रहा है और बन रहा है, टूट रहा है बन रहा है, पहले ख़लिए मर रहे हैं नए ज़िन्दा हो रहे हैं, दस बरस के अन्दर पूरा इन्सान ख़त्म हो जाता है नया इन्सान वजूद में आ जाता है, यह सारे निज़ाम को बरक़रार रखने के लिए हम ने कौन सी दुकान खोली हुई है, जो करते हैं तो खाते हैं इस गुमराही को हमने मिटाना है।

इन्सान की अन्दुरूनी साख़्त ख़ुदाई दलील हैः

हांलाकि यह सब कुछ अल्लाह के इरादे और अल्लाह के फ़ैसले से होता है। आप यह देखो न कि हम अपने जिस्म में कितने बेबस हैं, हमारा कोई बस नहीं चलता अपने जिस्म के ऊपर। फैक्ट्रियों की फैक्ट्री चलती हैं, कितनी ताक़त से अन्दर की हवा को साफ़ कर रही हैं और गन्दी हवा को बाहर फेंकती हैं और इस से ख़ून निकलता है साफ़ होता चला जाता है। यह दिलों का पम्प है इसकी सफ़ाई की कोई ज़रूरत ही नहीं होती यह दुनिया में जितने पम्प हैं उनकी चन्द दिनों में सफ़ाई करनी होती है और दिल का पम्प ख़राब ही नहीं होता जब ख़राब होता है तो अल्लाह को वापस बुलाना होता है, हर मशीन को काम करने के बाद सर्विस करना होता है अल्लाह ने माँ के पेट में दिल का पम्प बनाया है और उस वक़्त से यह पम्प धड़कना शुरू हुआ है, सालों से यह धड़कता रहता है आराम ही नहीं करता मैदा आराम मांगता है हर वक़्त हिलाने से यह बीमार हो जाएगा, दिमाग़ आराम मांगता है, आँख देखते देखते थक जाती है, कान सुनते सुनते थक जाते हैं आराम चाहते हैं। दिल का एक वज़ीफ़ा है अगर यह आराम करे तो फिर क़ब्र में जाएगा अल्लाह तआला इसको थकने नहीं देता। यह दिल रेशों से बना है यह नहीं थकता, चल रहा है। हम तो अपनी दुनिया में भी बेबस हैं। अपनी दुनिया में नज़र आता है कि सब कुछ अल्लाह कर रहा है, हम से कुछ नहीं हो रहा।

ज़बान के फ़ायदेः

जुबान में तीन हज़ार छोटे छोटे ख़ाने हैं जो हमें बताते हैं कि मीठा खा रहे हो या नमकीन खा रहे हो, गर्म खा रहे हो, सर्द खा रहे हो अगर अल्लाह तआला इन खानों को बन्द कर दें तो मुँह में मिट्टी रख दो या हलवा रख दो बराबर है। यह ख़ाने हमने नहीं बनाए यह अल्लाह तआला ने बनाए। यह अल्लाह ने हमारी ख़िदमत के लिए तैयार करके रखे हैं ताकि दुनिया की नेमतों से लुत्फ़ उठा सकें अगर अल्लाह तआला इन ख़ानों के ऊपर चमड़ा चढ़ा दें तो खाओ मिठाई लगे मिट्टी।

बालों की अजीब ख़लक़तः

हमें तो अपनी ज़ात में ऐसे बेबस हैं कि अपने बालों पर भी कन्ट्रोल नहीं कर पाते अगर अल्लाह तआला सिर के बालों की तरह सीने और पिन्डलियों के बालों को भी बढ़ा दें तो हम में ओर रीछ में क्या फ़र्क़ रह जाए। अल्लाह तआला यह बाल नहीं बढ़ाता और जिस्म के दूसरे हिस्से के बालों को भी नहीं बढ़ने देता। यह पलकों के जो बाल हैं उनको एक ख़ास मिक़दार में बढ़ा कर बन्द कर देता है, उनको बढ़ाना शुरू कर दें ﴿وفی انفسکم افلا تبصرون﴾ अल्लाह तआला कहता है कि अपने में भी कभी ग़ौर करो, सांइस में ग़ौर करता है, ऐटम में ग़ौर करता है, पानी में क्या है? पाख़ाने में क्या है? पेशाब में क्या है? अपने पेशाब पाख़ाने में सोचता है लेकिन ज़ात में नहीं सोचता है कि मुझ पर अल्लाह तआला के कितने ईनामात हैं तो इस काएनात में वह होगा जो अल्लाह चाहेगा ﴿لا اله الا الله﴾ मख़्लूक़ से कुछ

नहीं होता लिहाज़ा मख़्लूक़ से उम्मीदें हटा लो, उन से जी हटा लो, अल्लाह को मतलूब बना लो।

हमारी ज़रूरियात का इल्म अल्लाह तआला को है:

मेरे भाईयों! अल्लाह हमारी तमाम ज़रूरियात को जानता है आज हम अपनी ज़रूरतों को नहीं जानते। कल हमारी क्या ज़रूरत है? अल्लाह तआला हमारी कल की ज़रूरतों को, परसों की ज़रूरतों को भी जानता है, जो होता है उसको भी जानता है, जो होगा उसका भी पता है जो हो चुका है उसका भी पता है, जो हमारे लिए नुक़सान देह है उसको भी जानता है और जो हमारे लिए मुफ़ीद है उसको भी जानता है। इन सब के बावजूद हम से हमारी माँओं से सत्तर गुना ज़्यादा प्यार करता है फिर अगर वह यह कह दे यह काम कर लो तो यह काम हमारे लिए कैसे नुक़सान देह हो सकता है। अल्लाह तआला की ज़ाते अक़दस को लेने का जो रास्ता है कि अल्लाह तआला दुनिया व आख़िरत के काम बना दे वह कोई रुपया पैसे से काम नहीं बनते। हर खाने से पेट नहीं भरता, हर माल से इज़्ज़त नहीं मिलती, हर दवाई से सेहत नहीं मिलती। अल्लाह का इरादा होता है तो सेहत आती है।

ज़कात देने से माल महफ़ूज़ हो जाता है:

﴿واحفظوا اموالكم بالزكوة﴾ अपने अमवाल की हिफ़ाज़त करो ज़कात के साथ, रुपए बैंक में रखने से हिफ़ाज़त नहीं होगी अगर बैंक ही बैठ जाए तो कितनी बैंकें हैं जो बैठ गयीं अब अल्लाह ने दिखा दिया कि बैंकों में कोई हिफ़ाज़त नहीं और नबी की ख़ैर

है कि ﴿احسنوا اموالكم بالزكوة﴾ अपने माल की हिफ़ाज़त करो ज़कात के साथ।

ख़ुदा की हिफ़ाज़त करने का वाक़ियाः

सहारन पुर में एक साथी के घर में खड़ खड़ होती है तो देखा तो चोर लगा हुआ ताला तोड़ने में, उनकी आँख खुल गई, कहने लगे भाई यह ताला दो आने का है और इसमें जो पैसे पड़े हुए हैं उनकी ज़कात अदा हो चुकी है, मैं तो सो रहा हूँ सुबह तक तुम्हें इजाज़त है जो ज़ोर लगा सकते हो लगा लो। सुबह की अज़ान तक वह चोर ज़ोर लगाता रहा, न ताला टूटा और न दरवाज़ा खुला सुबह का घर का मालिक हज़रत शैख़ुल हदीस मौलाना ज़करिया रहमतुल्लाहि अलैहि वसल्लम के पास आया और सारा माजरा सुनाया। फ़रमाने लगे जिस माल की ज़कात अदा होगी वह ज़ाए नहीं हो सकता। बैंकों में ज़ाए हो जाएगी। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि अपने अमवाल की हिफ़ाज़त ज़कात के साथ करो।

सदक़े से इलाज करोः

﴿داوو بالصدقات﴾ और अपने मरीज़ों का इलाज करो सदक़ा देने के साथ। सदक़ा दो अल्लाह सेहत देगा, भाई इसका क्या ताल्लुक़ है कि कोई चीज़ पेट में जाएगी तो कुछ होगा और ग़रीब को देने से मेरी बीमारी कैसे जाएगी? यह तो नज़र नहीं आता वह नज़र आता है। जो आजकल का माहौल है गोली पेट में गई आराम आ गया सिर में। ग़रीब को सदक़ा देने का बीमारी के साथ क्या ताल्लुक़? यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि

वस्सलम की ख़बर है। यह आज़माई नहीं जाती। यह बग़ैर आज़माए सच और हक़ है। सदक़ा दो अल्लाह सेहत देगा, अपने ख़ज़ानों से देगा, अपनी क़ुदरत से देगा। सेहत देने के लिए किसी का मोहताज नहीं है।

दुआ से शिफ़ायाबीः

एक औरत आई लाहौर में, बड़े मालदार आदमी की बेटी थी और अभी भी ज़िन्दा है। उसके जिगर में कैंसर हो गया। वहाँ एक बुज़ुर्ग के पास गई कि मैं अमरीका में इलाज के लिए जा रही हूँ आप मेरे लिए दुआ करें। उन्होंने उसको एक छोटी सी दुआ दी ﴿يا بديع العجائب بالخير يا بديع﴾ यह पढ़ लिया करो। एक महीने तक उस औरत ने यह वज़ीफ़ा पढ़ा। एक महीने के बाद अस्पताल में चैक अप कराया तो डाक्टरों ने कहा कि यह वह मरीज़ नहीं जो पहले हमारे पास लाया गया था। अल्लाह तआला मुर्दों को ज़िन्दा कर सकता है तो नामुमकिन बीमारियों को सेहत भी दे सकता है।

बादशाह की ख़ुशी ग़मी में तब्दील होने का वाक़ियाः

यज़ीद बिन मलिक अमवी ख़लीफ़ा गुज़रे हैं। यह नए ख़लीफ़ा थे हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० के बाद आए थे। एक दिन कहने लगे कि कौन कहता है कि बादशाहों को ख़ुशियां नसीब नहीं होतीं। मैं आज का दिन ख़ुशी के साथ गुज़ार कर दिखाऊँगा। अब मैं देखता हूँ कौन मुझे रोकता है? कहा आजकल बग़ावत हो रही है, यह हो रहा है, वह हो रहा है, तो मुसीबत बनेगी। कहने लगा कि आज मुझे मुल्क की ख़बर न

सुनाई जाए, चाहे बड़ी से बड़ी बग़ावत हो जाए, मैं कोई ख़बर सुनना नहीं चाहता, आज का दिन ख़ुशी के साथ गुज़ारना चाहता हूँ। उसकी बड़ी ख़ूबसूरत लौंडी थी उसके हुस्न व जमाल का कोई मिस्ल नहीं था। उसका नाम हिबा था। बीवियों से ज़्यादा उससे प्यार करता था। उसको लेकर महल में दाख़िल हो गया। फल आ गए, चीज़ें आ गयीं, मशरूबात आ गए। आज का दिन अमीरुल मुमिनीन ख़ुशी से गुज़ारना चाहते हैं। आधे से भी कम दिन गुज़रा है हिबा को गोद में लिए हुए है, उसके साथ हंसी मज़ाक़ कर रहा है और उसको अंगूर खिला रहा है। अपने हाथ से तोड़ तोड़ कर उसको खिला रहा है एक अंगूर का दाना लिया और उसके मुँह में डाल दिया, वह किसी बात पर हंस पड़ी तो वह अंगूर का दाना उसके सांस की नाली में जा कर अटका और एक झटके के साथ उसकी जान निकल गई। जिस दिन को वह सबसे ज़्यादा ख़ुशी के साथ गुज़ारना चाहता था उसकी ज़िन्दगी का ऐसा बदतरीन दिन बना कि वह दीवाना हो गया, पागल हो गया, तीन दिन तक उसको दफ़न नहीं करने दिया तो उसका जिस्म गल गया, सड़ गया, ज़बरदस्ती बनू उमैया के सरदारों ने उसकी मैयत को छीना और दफ़न किया और दो हफ़्ते बाद दीवानगी में मर गया।

ख़ुशी और ग़मी सब अल्लाह तआला की तरफ़ से हैः

ख़ुशी इन्सान लेता है, ख़ुशी अपनी ताक़त से कोई ख़रीद सकता है? सब कुछ अल्लाह के ख़ज़ानों में है, तो मेरे भाईयो! यह है ﴿لا اله الا الله﴾ अल्लाह सब कुछ कर सकता है, मख़्लूक़ क्या कर सकती है अल्लाह के बग़ैर? यह सब कुछ तो असबाब

हैं अल्लाह का इरादा होगा तो इन से काम बनेगा। दुनिया के कितने करोड़पति इन्सान हैं उनको कोई जानता ही नहीं, दुनिया में कितने फ़क़ीर ऐसे हैं कि उनके पीछे दुनिया दौड़ती है, दुनिया में कितने हुक्मरान ऐसे हैं जिनके दिलों में नफ़रत के दाग़ उबलते हैं, कितने झोपड़ी में रहने वाले हैं जिनके लिए दिल क़ुर्बान होते हैं। यह कौन है जो इस निज़ाम को चला रहा है। दुनिया में कितने मालदार हैं जिनका हिर्स ख़त्म नहीं होता वे भूले बैठे हुए हैं और दुनिया में कितने फ़क़ीर बादशाहों से भी ज़्यादा ग़नी हैं जिनकी नज़र में दुनिया एक कौड़ी के बराबर भी नहीं है।

हज़रत सालिम रज़ियल्लाहु अन्हु का दुनिया से बेरग़बती का वाक़िया:

हिशाम बिन अब्दुल मलिक शामी ख़लीफ़ा तवाफ़ कर रहा था। उसके साथ हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पोते भी तवाफ़ कर रहे थे तो हिशाम ने कहा सालिम कोई ज़रूरत हो तो बताओ मैं पूरी कर दूं। हज़रत सालिम ने कहा ﴿اتق الله﴾ अल्लाह से डरता नहीं, मैं अल्लाह के घर में हूँ और तू मुझे अपनी तरफ़ मुतवज्जे करता है तो हिशाम चुप हो गया, जब बाहर निकले तो कहा अब तो बताओ। कहने लगे दुनिया की बताऊँ या आख़िरत की बताऊँ? हिशाम ने कहा कि दुनिया की बताओ आख़िरत की मैं क्या पूरी कर सकात हूँ तो कहने लगे ﴿ما سالت من يجعلها وكيف من يملكها﴾ दुनिया तो मैं ने दुनिया बनाने वाले से नहीं मांगी तो तुझ से क्या मांगूगा।

समन्दर पर हुकूमत रब्बानीः

बहुत से ऐसे फ़क़ीर हैं जो दिल के बादशाह हैं बहुत से बादशाह ऐसे हैं जो दिल के फ़क़ीर हैं। आप ग़ौर तो कीजिए नज़र की दुनिया खुद खुली नज़र आएगी और पता चल जाएगा कि उनसे कुछ नहीं हो रहा है, अल्लाह के इरादे से हो रहा है। रात को कौन लाता है, दिन को लाने वाला कौन है, चाँद को अल्लाह पाक ने बढ़ाता है तो लहरें उठती हैं जब घटाता है तो लहरें उैठती हैं इन मदो जज़र में अल्लाह समन्दर के पानियों को साफ़ व पाक रखते है, अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम उनको साफ़ करता रहता है, अल्लाह पाक ने खुद उनकी सफ़ाई का इन्तेज़ाम फ़रमा दिया और उसे कड़वा बना दिया, कड़वा पानी बदबू नहीं छोड़ता फिर लहरों की तेज़ी रख दी जो इसको साफ़ रखती है। एक बंगाली आया कहने लगा कि मैं जहाज़ में समन्दरी जहाज़ का काम करता था। एक लहर ने मुझे उठा कर समन्दर के दर्मियान में फेंक दिया दूसरी लहर आई उसने मुझे वापस जहाज़ में पहुँचा दिया, या अल्लाह पार लगा दे फिर कभी समन्दर में नहीं आऊँगा। ऐसी मौजे अल्लाह उठाता है। इस सारे निज़ाम में फ़ैसला कुन ताक़त अल्लाह पाक की है। अल्लाह इस सारे ग़ैबी निज़ाम के साथ हमारा बन जाए। अलहम्दुलिल्लाह इसके लिए न रुपया चाहिए न हुस्न चाहिए न ख़ानदान चाहिए सिर्फ़ एक हस्ती चाहिए मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दर्द हमारे अन्दर आ जाए। अल्लाह ने रास्ता बादशाह को भी बता दिया है और फ़क़ीर को भी बता दिया, मर्द को भी बता दिया औरत को भी बता दिया।

मेरा हबीब मुझे प्यारा है उसके सांचे में ढल जाओ तुम भी मेरे प्यारे बन जाओगे। जो भी ढल जाए।

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ईमान इस्लाम की ख़ुशीः

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु क़त्ल को आ रहे हैं बदतरीन इन्सान बन के आ रहे हैं, जब से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दामन पकड़ा ऐसा ऊँचा उठ गए कि आसमान से जिबराईल अलैहिस्सलाम आ गए और कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उमर के इस्लाम की ख़ुशी हो रही है। कहा हाँ आसमान के फ़रिश्ते भी ख़ुश हो रहे हैं उमर के इस्लाम लाने पर। यहाँ ज़िन्दगी की गन्दगी के ढेरों पर की गहराई पर पड़ा है और उधर हज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दामन पकड़ता है तो अर्श के ऊपर उसकी परवाज़ चली जाती है।

तीन सौ साठ बुतों के पुजारी हैं जब कहता है ﴿اشهد ان محمدا رسول الله﴾ तो फ़रिश्ते उसके क़दमों में आ कर बैठ जाते हैं।

हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हु के जनाज़े पर फ़रिश्तों की आमदः

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तबूक के सफ़र में थे, सूरज निकला बड़ा चमकदार, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया सूरज बड़ा चमकदार निकला क्या बात है? हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम आए कहा कि यह सूरज की चमक नहीं है मदीने में आपके साथी माविया बिन माविया का इन्तेक़ाल हो गया है उनके जनाज़े में सत्तर हज़ार फ़रिश्ते आए हैं यह उनका नूर है जो सारे जहान में फैला हुआ है कहा मैं उसका जनाज़ा

हाज़िर करता हूँ। हुक्म हुआ तो ज़मीन सिकुड़ती चली आई। थोड़ी देर में माविया रज़ियल्लाहु अन्हु का जनाज़ा तबूक में पहुँच गया।

ये तीन सौ साठ के पुजारी हैं जिन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुलामी ने इतना ऊँचा कर दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जनाज़ा पढ़ा फिर इशारा किया तो दोबारा जनाज़ा वापस मदीने में जा पहुँचा।

हज़रत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हु की मौत पर अल्लाह का अर्श हिल गयाः

साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हु जो मुसैब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु को निकालने के लिए आए थे। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसैब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीने मुनव्वरा में तबलीग़ के लिए भेजा था तो साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हु उनको मारने आए और निकालने आए। तुम हमारे दीन का ख़राब करने आए हो। जब उनका यानी हज़रत साद बिन माज़ का इन्तेक़ाल हुआ तो हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम आए या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आज कौन फ़ौत हुआ है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा पता नहीं कि क्या बात है? कहा अल्लाह तआला का अर्श हिल गया है उनकी मौत पर। ﴿اهتز عرش الرحمن سعد﴾ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया साद बीमार था उसका पता लो। पता किया तो उनका इन्तेक़ाल हो गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद से ऐसे तेज़ी के साथ निकले

के सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के जूतों के तस्में टूट गए और चादरें गिर गयीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप ने थका दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जल्दी करो मुझे ख़तरा है कि कहीं फ़रिश्ते साद को ग़ुस्ल न दे दें और हम महरूम हो जाएं। यह कौन हैं यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मानने वाले हैं। यह मक़ाम अपने पैसे नहीं, अपनी जाएदाद से नहीं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी से हासिल किया। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहुँचे तो कमरे में सिर्फ़ मैयत पड़ी थी और कमरा ख़ाली था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसे दाख़िल हुए जैसे कोई मजमा चीरता हुआ दाख़िल होता है। साद रज़ियल्लाहु अन्हु के सिरहाने के पास जा कर बैठ गए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह की क़सम यह सारा कमरा फ़रिश्तों से भरा हुआ है मेरे लिए कोई जगह नहीं थी इस लिए पैर सिकुड़े हुए बैठा हूँ आज साद के जनाज़े में ऐसे फ़रिश्ते उतरे हैं जिन्होंने कभी ज़मीन को छुआ नहीं। उनको अल्लाह तआला ने भेजा है कि जाओ मेरे साद का जनाज़ा पढ़ कर आओ।

यह इज़्ज़त हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी से मिली थी और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत से मिली थी। सांइस की तरक़्क़ी में क्या इज़्ज़त मिलती है? हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में दुनिया में इज़्ज़त और आख़िरत की हमेशा हमेशा की इज़्ज़त मिलेगी।

आक़ा ने हमें दो चीज़ें दी हैं:

मेरे भाईयो! हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमें दो बातें दे कर गए हैं एक अपनी ज़िन्दगी देकर गए हैं एक अपनी ज़िन्दगी को फैलाने का हुक्म दे कर गए हैं जो इन दो बातों को करेगा वह अल्लाह का महबूब बन जाएगा। आगे दो जहां की ग़ुलामी भी है और फ़रमाबरदारी भी है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी को में लाकर फिर दुनिया में उसको फैलाना है। सांइस की ताक़त मख़लूक़ की ताक़त है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में जो ताक़त है उसके सामने कोई ताक़त टिक नहीं सकती और यह अल्लाह की ताक़त है। यह ज़िन्दगी हमारी ज़िन्दगी में आ जाए तो अल्लाह साथ होगा। सांइस की ताक़त के साथ अल्लाह तआला नहीं है। सांइस की ताक़त क्या ताक़त है? छोटी छोटी ताक़त है। मिट्टी आग और पानी की ताक़त है।

अल्लाह की ताक़त क्या है?

अल्लाह की क्या ताक़त है बताऊँ?

अल्लाह ने ज़मीन को पैदा किया तो यह हिलती थी फिर अल्लाह ने पहाड़ लगाए। फ़रिशतों ने कहा या अल्लाह! इन पहाड़ों से ज़्यादा ताक़त वर क्या है? फ़रमाया ﴾الحديد﴿ पूछा ﴾اى شى من الحديد﴿ फ़रमाया ﴾نار تذيبه﴿ आग है जो उसको पिघला देती है, पूछा ﴾اى شى من النار﴿ फ़रमाया ﴾ماء يطفئها﴿ पानी है जो जो उसको बुझा देता है, पूछा ﴾اى شى من ماء﴿ फ़रमाया हवा जो उसको उठा कर ले कर चलती है। हवा इस काएनात में सबसे

ताक़त वर मख़लूक़ है, फिर उन्होंने पूछा हवा से ताक़तवर चीज़ क्या है? फ़रमाया जब मेरा बन्दा चुपके से मेरी रज़ा के लिए किसी की मदद करता है कि उसके बाएं हाथ को भी पता न चले कि दाएं हाथ ने क्या दिया है यह अमल इतना ताक़त वर है कि हवा को भी उड़ा देता है क्यों? इस लिए कि यह अमल मेरे गुस्से को ठंडा कर देता है। अच्छा यह अल्लाह के नाम पर माल ख़र्च करना इतना छोटा अमल है, इसके मुक़ाबले में फ़राईज़, वाजिबात, सुनन उनके कितने बड़े दर्जात हैं? जब नफ़ल में इतनी ताक़त है तो फ़र्ज़ में कितनी ताक़त होगी? यह तो क़ुव्वत के ऐतिबार से है और क़ीमत के ऐतिबार से ﴿من صام يوما تطوعا ثم بالا الخ﴾ जो नफ़ल रोज़े रखे फिर पूरी सोने से भरी दुनिया उसके नफ़ल रोज़े का बदला नहीं बन सकती जब नफ़ल की यह क़ीमत है तो फिर पूरे दिन में फ़र्ज़ रोज़े की क्या क़ीमत होगी?

सांइस ने अपने बानियों के मसाइल हल नहीं किए:

तो मेरे भाईयो! हमारी इज़्ज़त का दारोमदार सांइस की तरक़्क़ी पर नहीं, सांइस की ज़रूरत है ज़रूरत से किसको इन्कार है हम भी ये चीज़े इस्तेमाल करते हैं लेकिन ये ज़रूरत की चीज़ें हैं हमें इज़्ज़त नहीं दे सकतीं। ये चीज़ें हमारे मसाइल हल नहीं कर सकतीं जो इन चीज़ों के बानी थे उनके मसाइल हल नहीं हुए, हमारे कैसे होंगे।

अल्लह तआला की अपने हबीब से मुहब्बत:

मस्अलों का हल नबी का दर्द है जो मुहब्बतों की फ़िज़ाएं क़ायम करता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी

हमारे अन्दर ज़िन्दा हो दिन को भी रात को भी। रात में क्या हो ﴿قم الليل الا قليلا ورتل القران ترتيلا الخ﴾ यह बड़ी अजीब आयत है चूँकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सारा दिन दावत देते थे तो मौक़ा कम मिलता था अल्लाह के साथ राज़ो नियाज़ का, अल्लाह तआला ने आयत उतारी कि सारा दिन लोगों के लिए निकालते हो तो मेरे लिए भी कुछ दो न जब तू मेरा हबीब है। ﴿قم الليل﴾ सारी रात मेरे पास खड़े हो कर मुझ से बातें किया कर, फिर ख़्याल आया कि सारी रात तो खड़ा तो नहीं हो सकता ﴿الا قليلا﴾ अच्छा थोड़ा आराम भी कर लिया कर। मुहब्बत ने जोश मारा तो कहा कि सारी रात खड़े रहो, शफ़क़त ने जोश मारा तो इजाज़त मिल गई फिर मुहब्बत ने जोश मारा ﴿نصفه﴾ आधा मेरे सामने खड़ा होना पड़ेगा फिर शफ़क़त ने जोश मारा ﴿اوانقص منه قليلا﴾ निस्फ़ से भी थोड़ा कम वक़्त दे दो, फिर मुहब्बत ने जोश मारा ﴿اوزد عليه ورتل القرآن ترتيلا﴾ फिर इससे ज़्यादा वक़्त लगा लें। यह मुहब्बत और शफ़क़त आपस में लड़ती रहीं। कभी कहते हैं पूरी रात खड़े रहो, कभी कहते हैं आधी रात खड़े रहो, कभी सुलुस (तिहाई) रात, कभी इससे ज़्यादा कि इन दोनों आयतों में ऐसी मुहब्बत है कि कोई बात नहीं सकता।

तहज्जुद के फ़ज़ाइलः

मुहब्बत चाहती है कि रात सारी मेरे पास हो शफ़क़त चाहती है कि यह तो नहीं हो सकता, मेरे नबी को बीवी का भी हक़ अदा करना है और जिस्म का भी लेकिन रात का ज़्यादा हिस्सा मुझे दिया कर, क्यों? ﴿ان ناشئة الليل هي اشد وطأ واقوم قيلا﴾ रात को

कोई शोर गुल नहीं होता। रात को बात करेंगे मज़े से एक दूसरे को सुनाएंगे और यही हुक्म इस उम्मत को भी मिला है तुम पर फ़र्ज़ तो नहीं करता लेकिन तुम से मुतालबा ज़रूर करता हूँ कि रात को मेरी मुहब्बत में खड़ा तो ज़रूर हुआ कर, फ़ज़ाईल सुना दिए ﴿تتجافى جنوبهم عن المضاجع يدعون ربهم خوفاً و طمعاً﴾ रात को मेरे लिए खड़े हो मेरे लिए जब तुम मिसवाक करके तहज्जुद पढ़ोगे तो एक फ़रिश्ता आएगा और पाँव में पाँव रखेगा और कहेगा कि कुरआन सुना और क़ुरआन सुना। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कितना ख़ुशकि़स्मत होगा वह जो रात को उठता है कि वुज़ू करता है फिर बीवी को कहता है कि आ जा तू भी तहज्जुद पढ़ ले। बिस्तर से जुदा होता है और उसके मुँह पर छींटें मारता है फिर ये दोनों उठ कर नमाज़ पढ़ते हैं तो अल्लाह इनको देख कर खुश होता है। फ़रिश्तों से कहता है कि देखो ये क्या कर रहे हैं? अपने आराम को मेरे लिए क़ुर्बान कर रहे हैं। कितनी ख़ुशकि़स्मत है वह औरत जो रात को उठती है और वुज़ू करके नमाज़ की तैयारी करती है और शौहर को भी उठाती है दोनों मियां बीवी नमाज़ पढ़ते है अल्लाह उन दोनों को देख कर ख़ुश होता है। यह रात को अल्लाह के नबी के मुशाबे होता है, रात को रोना, रात की आहें। अब तो कोई रोने वाला ही नहीं रहा। दुनिया के साज़ो सामान में दुनिया के रंग व रौनक़ में रात की चमक को बुझा दिया हांलाकि हदीस में आता है कि मेरे आक़ा रातों को मेरी याद में उठते थे और ऐसे रोते थे और क़ुरआन पढ़ते थे कि हल्की सी गुनगुनाहट अर्श के गिर्द चक्कर लगाती थी। यह घर में कह रहा है ﴿الحمد لله رب العالمين﴾ ऊपर अल्लाह के अर्श के गिर्द यह कलिमा चक्कर लगाता है। अब

रात की फ़र्ज़ नमाज़ छोड़ दी तहज्जुद कौन पढ़े, फ़राईज़ छूट गए।

नमाज़ की बरकतें:

﴿قم فانذر وربك فكبر، وثيابك فطهر﴾ ऐ कम्बली वाले खड़े हो और लोगों को डराओ और अपने रब की बड़ाई बयान करो और अपने कपड़ों को पाक रखो और उनमें नमाज़ पढ़ कर मुझ से मदद तलब करो ﴿واستعينوا بالصبر والصلوة﴾ मसाइब और मुश्किलात आएंगी उन मसाइब का हल नमाज़ में रख दिया है। नमाज़ पढ़ लें तो मसाइल हल होते चले जाएंगे, नमाज़ पढ़ोगे तो काम बनते चलते जाएंगे, मसाइल हल हो जाएंगे। नमाज़ के पाँच दर्जे हैं।

नमाज़ मामूली चीज़ नहीं। सारी दुनिया की ताक़तों से ज़्यादा ताक़तवर नमाज़ है। हम समझते नहीं कि अल्लाह ने नमाज़ में क्या क्या रखा है। यह मुहब्बतों का माशरा लाता है। मुहब्बतों के माशरे के तीन उसूल हैं ﴿صل من قطعك، واعط من حرمك واعف عمن ظلمك وأحسن إلى من أساء اليك﴾

मसलकी इख़्तेलाफ़ात का आसान हल:

अख़्लाक न हों तो तमाम इबादतें इस्लामी माशरा क़ायम नहीं कर सकतीं। आज अपने मसलक को साबित करना इस्लाम की ख़िदमत समझा जाता है। क़ुरआन व हदीस गोया उसके मसलक को साबित करने के लिए आए हैं। मेरे मसलक के लोग जन्नती हैं बाक़ी सब जहन्नुमी, ऐसा ज़ुल्म हो रहा है। ऐसी जिहालत है कि उम्मत का टकरा दिया है आपस में हांलाकि आप सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने इस दीन में वुसअत रखी है। इन चीज़ों पर आज लड़ रहे हैं ।इन चीज़ों पर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम नहीं लड़ते थे। एक कहता है रफ़्अ-यदैन करना है दूसरा कहता है नहीं करना है। यह मुनाज़रा हो रहा है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम करते भी थे छोड़ते भी थे। वह कहते हैं कि हमारीदलील ज़्यादा क़वी है यह कहता है कि हमारी दलील ज़्यादा क़वी है इस पर झगड़ा हो रहा है। किसी सहाबी से साबित नहीं कि इस तरह झगड़ा किया हो कि फ़ातेहा के बग़ैर नमाज़ नहीं होती। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम इसमें कोई नहीं लड़ते थे। सूरहः फ़ातेहा नमाज़ में पढ़ते भी थे नहीं भी पढ़ते थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक लश्कर भेजा, फ़रमाया कि अस्र की नमाज़ बनू क़रीज़ा में जाकर पढ़ना। रास्ते में अस्र का वक़्त हो गया। एक जमात ने हदीस के ज़ाहिर पर अमल करते हुए वहाँ जाकर नमाज़ पढ़ी, दूसरी जमात ने इधर उतर कर नमाज़ पढ़ी। यह क़िस्सा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने पेश हुआ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम दोनों ने सही किया इसमें झगड़े की क्या बात है। आज ऐसी दलील दी जा रही है और मुनाज़रे का बाज़ार गर्म है।

इख़्तेलाफ़ उम्मत ख़त्म नहीं होगाः

एक दूसरे को मजबूर किया जाता है कि मेरे मसलक को मानो। हर एक का मिज़ाज अलग है, तबियत अलग है, ज़हन अलग अलग है, एक के पास कैसे जमा हो सकते हैं और लोग कहते हैं कि देखो जी कि ये दोनों मुसलमान एक बात पर जमा नहीं हो सकते हैं। इसको तो अल्लाह ने क़ुबूल ही नहीं किया

है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ की या अल्लाह मेरी उम्मत क़हत से हलाक न हो तो अल्लाह तआला ने क़ुबूल की, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ की मेरी उम्मत पर ऐसा बादशाह न आए जो इनको हलाक कर दे और ख़त्म कर दे। अल्लाह ने इसको भी मन्ज़ूर कर लिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ की या अल्लाह! मेरी उम्मत में इख़्तेलाफ़ न हो। अल्लाह तआला ने फ़रमाया मुझे मन्ज़ूर नहीं।

तमाम मसलक इख़्तेलाफ़ के बावजूद सही हैं:

अल्लाह पाक क़ुरआन ऐसा उतार सकता था कि हर लफ़्ज़ का एक मतलब बनता, दो न बनते, अल्लाह से ज़्यादा कलाम पाक पर क़ुदरत किसे हासिल है? अल्लाह ने क़ुरआन उतारा उसका एक लफ़्ज़ एक ही माईने रखता और उसके कई माईने न बनते, तो ख़ुद ब ख़ुद एक ही पर जमा हो जाते, क़ुरआन में आता है ﴿ولا مستم النسآء فلم تجدوا مآء فتيمموا صعيدا طيبا﴾ जब तुम औरत को छुओ और पानी न हो तो तय्यमुम कर लो अब यहाँ पर दो राए हो गयीं। इमाम शाफ़ई रह० ने फ़रमाया कि सिर्फ़ औरत को छूने से वज़ू टूट जाता है और इमाम अबू हनीफ़ा रह० ने फ़रमाया कि सिर्फ़ औरत को छूने से वज़ू नहीं टूटता और इमाम अबू हनीफ़ा रह० ने फ़रमाया ﴿لا مستم﴾ से मुराद जमा है, हमबिस्तरी है अगर औरतों से शहवत पूरी करो तो फिर ग़ुस्ल करो, पानी नहीं तो तय्यमुम कर लो। अल्लाह तआला अगर ﴿جامعتم﴾ कह देता तो ये दो ज़हन बन नहीं सकते थे क्योंकि ﴿جامعتم﴾ का मतलब और कोई बनता ही नहीं। एक और मिसाल है ﴿يتربصن بانفسهن ثلاثة قروء﴾ जिस औरत को तलाक़

हो जाए वह तीन हैज़ तक इन्तेज़ार करे, ﴿قروء﴾ का मतलब हैज़ भी है और ﴿قـــروء﴾ का मतलब पाकी भी है इमाम शाफ़ई रह० ने फ़रमाया इससे मुराद पाकी है और इमाम अबू हनीफ़ा रह० ने फ़रमाया इससे मुराद हैज़ है दोनों सही हैं अगर इनमें लड़ाई शुरू हो जाए एक कहे मेरी दलील सच्ची है दूसरा कहे कि मेरी दलील सच्ची है तो दोनों के पास दलील है यह तो आज की सुन्नत है कि हम उस पर लड़ते हैं और इसी को इस्लाम की ख़िदमत कर रहे हैं। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के ज़माने में यह नहीं था कि मेरी मानो, मेरा जो मज़हब है उसको इख़्तियार करो यह कोई नहीं था।

दिल बुरे आमाल से टूटते हैंः

अल्लाह ने वुसअत रखी है, तुम उलमा से पूछ पूछ कर चलो। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमें ऐसी पाक व साफ़ सुथरी ज़िन्दगी देकर गए हैं कि अगर हम उसको अपनी ज़िन्दगी बना लें तो मुहब्बत का माशरा वजूद में आएगा। आज वह कौन से बुरे आमाल हैं जो हम नहीं करते, सारा दिन ग़ीबत करते हैं, सूद खाते हैं, झूठ बोलते हैं, चोरी करते हैं, मुसलमानों के ऐब तलाश करते हैं, दिलों को तोड़ते हैं, दिलों के टूटने के आमाल अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में बताए हैं वह कौन से आमाल हैं। अगर ऐसा न हो तो पूरी दुनिया में दिन एक होना चाहिए, हर जगह चाँद अलग नज़र आता है। आपका अमरीका इतना बड़ा है यहाँ पर दिन एक नहीं है। दिनों का एक होना हमारी अलामत नहीं है लेकिन दिलों का एक होना हमारी अलामत है। अलजज़ाइर में एक वक़्त चाँद निकलेगा, मराकश में दूसरे वक़्त

चाँद निकलेगा, सऊदी अरब में किसी और वक़्त चाँद निकलेगा और न जाने क्या क्या है। नमाज़ का वक़्त एक मुक़र्रर नहीं। शाफ़ई, हंबली, मालिकी यह सारे आख़िर वक़्त में नमाज़ पढ़ते हैं और हनफ़ी अव्वल वक़्त में नमाज़ पढ़ते हैं। इनकी नमाज़ का वक़्त एक नहीं, तरीक़ा सब का अलग अलग है, कोई रफ़्अ-यदैन करता है कोई नहीं करता, कोई नीची आमीन कहता है कोई ऊँची आमीन कहता है, कोई इमाम के पीछे फ़ातेहा पढ़ते हैं कोई नहीं पढ़ते, किसी के नज़दीक़ कोई सुन्नत है किसी के नज़दीक़ कोई वाजिब है। इसके अन्दर मसाइल का इस क़द्र इख़्तिलाफ़ है लेकिन कोई तोड़ नहीं, मसाइल से कोई तोड़ पैदा नहीं हुआ करता, मसलक चार होने से कोई तोड़ नहीं होता, ये बाज़ आमाल ऐसे हैं जो दिलों को तोड़ देते हैं।

पाँच बुरे आमालः

हदीस पाक में है ﴿ولا تجسسوا، ولا تحاسدوا، ولا تدابروا، ولا تباغضوا﴾ ये पाँच आमाल हैं जो दिलों को तोड़ते हैं और छठा ﴿ولا يغتب بعضكم بعضا﴾ यह छः हुए अगर ये छः चीज़ें न हों तो आपके न्यूयार्क में दस दीन हो जाएं तो कुछ भी नहीं होगा मुहब्बतें ही मुहब्बतें होंगी अगर ये छः हों तो सारे के सारे एक ही मुसल्ले पर आ कर खड़े हो जाएं फिर भी बुग़्ज़ और नफ़रतों से भरे हुए होंगे। ﴿ولا تجسسوا﴾ किसी के ऐब तलाश न किया करो, किसी की बुराईयों की ताक झांक न किया करो, क्या करता है क्या नहीं करता। ﴿ولا تحاسدوا﴾ हसद न किया करो ﴿ولا تدابروا﴾ किसी को आगे बढ़ते हुए देख कर उसकी टांगे न खींचा करो। उस पर रश्क करें अल्लाह और दें अल्लाह और दें,

या अल्लाह मुझे भी दे इसे भी दे। हसद मत करो, तजसुस मत करो। ﴿ولا يغتب﴾ ग़ीबत मत करो बुग़्ज़ मत रखो, ये छः काम हैं होंगे तो उम्मत मुहब्बत से महरूम हो जाएगी, सारी उम्मत आपस में टूट पड़ेगी, चाहे सब के सब एक ही मुसल्ले पर नमाज़ क्यों न पढ़ रहे हों।

जोड़ पैदा करने वाले आमालः

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मत को टूटने के उसूल भी बता दिए कि ये छः उसूल हैं इनसे उम्मत टूट जाएगी और जोड़ के उसूल भी बता दिए। इसके चार उसूल हैं ﴿صل من قطعك﴾ तोड़ने वाले से जोड़ लें ﴿اعط من حرمك﴾ छीनने वाले को दें ﴿واعف عمن ظلمك﴾ ज़ुल्म करने वाले से दरगुज़र कर जाएं ﴿واحسن الى من اساء اليك﴾ जो तेरे साथ बुरा करे उसके साथ अच्छा बन जा। ये चार उसूल हैं जो उम्मत को जोड़ देंगे अब चाहे सारे इख़्तेलाफ़ी मसअले हों।

इमाम आज़म रह० और इमाम मालिक रह० का इल्मी मुबाहिसाः

इमाम अबू हनीफ़ा रहतुल्लाहि अलैहि और इमाम मालिक रहतुल्लाहि अलैहि में एक हदीस पर बहस शुरू हुई। इशा की नमाज़ पढ़ कर निकले, मस्जिदे नबवी के दरवाज़े पर। सर्दियों की रात थी। इमाम मालिक रहतुल्लाहि अलैहि ने एक हदीस बयान फ़रमाई, इमाम साहब रहतुल्लाहि अलैहि ने अपनी राय दी। फ़ज्र की आज़ान हो गई। दोनों एक ही जगह खड़े हुए हैं। वह बात कर रहे हैं यह भी बात कर रहे हैं। एक दूसरे का अज्र भी है।

अहले हदीस का हनफ़ी आलिम की क़द्र करनाः

दाऊद ग़ज़नवी रहतुल्लाहि अलैहि अहले हदीस के बहुत बड़े आलिम थे। अस्र की नमाज़ के बाद मुसल्ले पर बैठे हुए थे। मुफ़्ती फ़क़ीरुल्लाह साहब तशरीफ़ लाए जो मेरे उस्ताद के वालिद हैं, उनको देख कर मुसल्ले से उठे टोंटियों पर गए, पगड़ी उतार कर सिर पर मसह करके वापस आकर बैठ गए। वह जो साथ हुए ऐसे ही बुज़ुर्गों को ज़्यादा चमकाने वाले ﴾مریداں می برند پیـــــــــراں﴿ पीरों के पैर नहीं होते मुरीद पीरों को उड़ा देते हैं। उन्होंने कहा यह आपने क्या किया। अहले हदीस के नज़दीक पगड़ी के ऊपर मसह करना जाएज़ है तो वह फ़रमाने लगे कि वह शख़्स जो आया है ना उसके एहतिराम में जाकर मसह किया है, उसके नज़दीक पगड़ी पर मसह जाएज़ नहीं इस लिए मसह करके आया हूँ।

इमाम शाफ़ई रह० इमाम आज़म रह० की क़ब्र परः

इमाम शाफ़ई रहतुल्लाहि अलैहि जब बग़दाद में तशरीफ़ लाए तो जिस मस्जिद में नमाज़ पढ़ी वह मस्जिद इमाम अबू हनीफ़ा रहतुल्लाहि अलैहि की क़ब्र के नज़दीक है। वहाँ पर आप ने रफ़्अ-यदैन नहीं किया। कहा आपने रफ़्अ-यदैन नहीं किया? कहा इस क़ब्र वाले के एहतिराम में छोड़ा है और यहाँ ऐसा शिद्दत हो गई है कि उम्मत को भी तोड़ कर रख दिया है। सारा जिहाद इसी में है कि मुसलमान मुसलमान के पीछे पड़ जाए और इसी को जिहाद कहते हैं।

मुहब्बत से चलना इख़्तेलाफ़ के साथ भी हो सकता है चाहे

राय एक न हो लेकिन वे छः बातें हैं जो दिलों को तोड़ देती हैं और वे चार बातें हैं जो दिलों को जोड़ देती हैं। ये चार बातें दुश्मनों को भी अपना बना देंगी और ये छः बातें दोस्तों और अपनों को भी तोड़ कर रख देंगी, भाई भाई टूट जाएगा, दोस्त दोस्त का दुश्मन बन जाएगा। एक कलिमा पढ़ने वाले एक दूसरे का गला काटेंगे। ये चार बातें आपस में ज़िन्दा कर दें तो काफ़िर भी झुकते चले आएंगे।

बद्दू का आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़लाक़ से मुतास्सिर होकर इस्लाम लानाः

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सो रहे थे। एक बद्दू ने तलवार उठाई और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखें खुल गयीं उस बद्दू ने कहा आप को कौन बचाएगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह बचाएगा और कौन बचाएगा फिर इतने में हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और उसके सीने पर एक मुक्का मारा वह दूर जा कर गिर पड़ा और तलवार भी गिर गई फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तलवार उठा ली और फ़रमाया कि अब तुझे कौन बचाएगा? उसको अल्लाह का पता नहीं कहने लगा मुझे और कौन बचाएगा तू बचाएगा तू बचाएगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि चला जा, तू मुझे नबी मानता है या नहीं? कहा नहीं मानता। क़ौम के पास गया और उनको बतला कर आया फिर मुसलमान हुआ। मेरे भाईयो! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाले अख़लाक़ सीखो।

नबी वाले अख़लाक़ क्या हैं:

एक आदमी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु को गालियां दीं तो वह उसके पीछे गया दरवाज़े पर दस्तक दी के भाई जो कुछ आपने कहा है अगर यह सच है तो मेरे लिए मुसीबत है वरना अगर ग़लत है तो अल्लाह तआला तुझे माफ़ कर दे तो वह क़दमों पर गिर गया, नहीं नहीं मैं ने बकवास की। आप मुझे माफ़ करें ये हैं अख़लाक़े नबुव्वत।

इबादत, अख़लाक़, यक़ीन इन चीज़ों को लेकर दर दर जाकर सदा लगाना यह है मेरे भाईयो तबलीग़ का काम। इसकी हम दावत दे रहे हैं। कहते हैं हम नमाज़ पढ़ रहे हैं हमें क्या कहते हो। अरे! अपने नताइज सामने आएंगे तो रोते फिरोगे। अपने आप को यह कहना कि सब कुछ ठीक है यह सबसे बड़ा नुक़्स है, यह सबसे बड़ी जिहालत है। मैं जानता हूँ, मैं ठीक हूँ तो उससे बड़ा अहमक़ कोई नहीं जो ठीक होता है वह कहता है कि मैं सबसे बुरा हूँ।

तवाज़े रफ़्अत का सबब है:

अरे मेरे भाईयो! किसी ऐसी फल दार शाख़ को देखा कि ऊपर चली गई हो, फल दार शाख़ नीचे को आती है और जिस पर कुछ नहीं होता वह ऊपर को खड़ी होती है हत्ता कि बाज़ शाख़ें ज़मीन तक आ जाती हैं जितना फल ज़्यादा होता है उतना ज़मीन पर चली जाती हैं। आम के बाग़ात में गुच्छे ज़मीन तक नीचे आते हैं बाज़ बाग़ वाले आते हैं और उनके नीचे लकड़ियां लगा कर उन गुच्छों को ऊपर को करते हैं। इसी से वह हदीस

समझें ﴿من تواضع لله فقد رفعه الله﴾ जो अल्लाह के लिए झुक जाता है अल्लाह तआला उसको उठा लेता है जिस तरह आम वाला आम के गुच्छों का ऊपर उठा लेता है इसी तरह जो अल्लाह के लिए झुकता है अल्लाह उसको ऊपर उठा लेता है।

तो मेरे भाईयो! तबलीग़ एक मेहनत है और यह हमारा काम है और यह हमारी ज़िन्दगी का मक़सद है, हमारा काम है जो पूरी दुनिया में नबी वाली ज़िन्दगी ज़िन्दा हो जाए, नबी वाले तरीक़े ज़िन्दा हो जाएं, नबी वाले अख़लाक़ ज़िन्दा हो जाएं, उसके लिए अपनी जान व माल सब लगा लें।

आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पहलवान से मुक़ाबलाः

क़ुर्बान जाइए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर एक पहलवान आया उसका नाम था रुकामा, कहने लगा मैं तुझे उस वक़्त मानूं जब तू मुझ से कुश्ती करे। नबी की शान कितनी ऊँची है और अपनी शान से नीचे उतर कर कुश्ती के लिए अमादा है ताकि एक आदमी जन्नती बन जाए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुश्ती के लिए तैयार हो गए कि रुकामा जन्नती हो जाए।

रुकामा एक हज़ार आदमियों के बराबर थे। उसकी ताक़त का अन्दाज़ा उसके पोते से लगाओ। हज़रत अमीर माविया रज़ियल्लाहु अन्हु के पास एक घोड़ा लाया गया। वह घोड़ा उछलते उछलते अपने ऊपर से आदमी को गिरा देता था कोई उस पर सवार नहीं हो सकता था हत्ता कि किसी को उसने

ऊपर सवार नहीं होने दिया। मुहम्मद बिन यज़ीद ने रुकामा को बुलाया। उनसे कहा यह घोड़ा किसी के क़ाबू में नहीं आ रहा है आप इसको क़ाबू कर सकते हैं तो कर लें तो उसने उसी वक़्त उस पर छलांग लगाई और उस पर बैठ गया तो घोड़ा उसको गिराने के लिए एक दम उछल गया तो उन्होंने अपनी दोनों रानों से उसको दबा दिया तो उस घोड़े का पेट फट गया और आंते बाहर निकल गयीं। आप उसके दादा की ताक़त का अन्दाज़ा लगाइए कि वह कितने ताक़त वर थे चूँकि हर नसल के बाद ताक़त घटती है तो वह कितने ताक़त वर थे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि अगर आप कलिमा पढ़ लें तो मैं कुश्ती करता हूँ। कहा पहले आप मुझे गिरा दें चुनांचे कुश्ती हुई और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको उठा कर ज़मीन पर दे मारा तो उसने कहा यह क्या हो गया? मैं फिसल गया, फ़रमाया फिर आ जाओ फिर कुश्ती लड़ी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ोर आज़माई करके फिर उसको ज़मीन पर मारा। कहने लगा नहीं नहीं यह ग़लती से हो गया फिर लड़ो, अब गिरा दिया तो मुसलमान हो जाऊँगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फिर उठा कर ज़मीन पर दे मारा। कहा ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब से पैदा हुआ हूँ मेरी कमर ज़मीन पर किसी ने नहीं लगाई सिवाए तेरे, मान गया तू सच्चा नबी है। नबुव्वत की शान कितनी बड़ी बात है, उसको भी नीचे ले गए कि चलो इसकी जन्नत का सौदा हो जाए।

मक़सदे हयात क्या है?

तो मेरे भाईयो! तबलीग़ हमारी ज़िन्दगी का मक़सदे हयात है।

हम इसके लिए भेजे गए हैं। अल्लाह के पैग़ाम को लेकर दर दर की ठोकरें खाना और उसके लिए जान भी लगाना और सख़ी बन कर लगाना। मुसलमान बख़ील नहीं होता। जान लगाता है माल भी लगाता है। आज जान भी नहीं लग रही है माल भी नहीं लग रहा है। अपनी ख़्वाहिशात को इतना बढ़ाया है कि पैसे जेब से निकालते हुए डरता है कि फ़लॉ चीज़ ख़त्म हो जाएगी, फ़लॉ चीज़ ख़त्म हो जाएगी। बुख़्ल की इन्तेहा को पर उतर आया। मुसलमान क़र्ज़े लेकर सख़ावत करते थे यहाँ तो अपनी ख़्वाहिशात को छोड़ना मुश्किल हो गया है अरे भाई दिल को बड़ा करो तो अल्लाह तआला रिज़्क़ के दरवाज़े खोल देता है। जान भी लगे तबलीग़ में माल भी तबलीग़ में। मुसलमान की जान बड़ी क़ीमती है। ऐसे ही मामूली आदमी नहीं है मुसलमान।

मुसलमान का ख़रीदार अल्लाह है:

इस जान का ख़रीदार अल्लाह है अल्लाह ﴿ان الله اشترى من المؤمنين انفسهم وأموالهم بان لهم الجنة الخ﴾ मैंने तुम्हारे जान व माल को जन्नत के बदले ख़रीदा है।

यूँ नहीं कहा कि अपने जान व माल के बदले में जन्नत को ख़रीद लो। जन्नत तो बड़ी आला चीज़ है उसके सामने इन्सान की क्या हैसियत। अल्लाह कहता है मैंने तुम्हारे जान व माल को जन्नत के बदले में ख़रीद लिया है। जन्नत क़ीमत है मुसलमान की तो जिसकी क़ीमत जन्नत है वह मुसलमान कितना क़ीमती होगा। ख़रीदा भी है और वापस भी कर दिया है। वापस करके क्या करें? तो वह करें जो मैं कहता हूँ ﴿يقاتلون فى سبيل الله فيقتلون ويقتلون وعداً عليه فى التوراة والانجيل والقرآن﴾ मेरे पैग़ाम को लेकर

दुनिया में फिर जाओ मारो या मर जाओ हर हाल में कामयाब है और इसमें जन्नत का सौदा नक़द नहीं उधार है और उधार को भूल जाते हैं तो अल्लाह तआला ने दस गारन्टियां दी हैं। अल्लाह पाक की बात किसी गारन्टी की मोहताज नहीं लेकिन इन्सान क्योंकि जल्द बाज़ है उधार से घबराता है तो अल्लाह ने गारन्टी दी है और उधार इस लिए है कि दुनिया में जन्नत नहीं आ सकती। मसलन जन्नत की हूर है अगर यूँ देख ले तो हमारी आँखें फट जाएंगी हम बर्दाशत नहीं कर सकते।

दुनिया की आँख हूर को नहीं देख सकतीः

मिरी में हमारे एक दोस्त ने ख़्वाब में एक हूर देखी तो तीन महीने बेहोश रहा। सारे डाक्टरों ने पूछा कि क्या हुआ तो कहा कि हूर देखी है और कुछ नहीं, सच्ची बात है, जब ख़्वाब में नशा तारी हो गया तो वैसे देख लें तो क्या होगा? इसी लिए उधार रखना पड़ा, जिस सूरज की उंगली को सूरज नहीं देख सकता, उस हूर के चेहरे को हम कैसे देख सकते हैं।

अपनी मर्ज़ी को अल्लाह की मर्ज़ी पर क़ुर्बान करेंः

जिबराईल अलैहिस्सलाम से अल्लाह ने कहा कि जा कर मेरी जन्नत को देख लो। जब वह आए जन्नत को देखने के लिए तो नूर की तजल्ली पड़ी तो कहा सुब्हानल्लाह आज तो अल्लाह का दीदार हो गया, सज्दे में चले गए। सिदरतुल-मुन्तहा तक जिबराईल अलैहिस्सलाम की रसाई है। उससे आगे अल्लाह के अलावा किसी को नहीं पता वहाँ हर वक़्त अल्लाह की तजल्ली पड़ती है लेकिन जन्नत की तजल्ली देखी तो कहा सुब्हानल्लाह

आज तो अल्लाह का दीदार हो गया और सज्दे में गिर गए। आवाज़ आई ऐ रूहुल-अमीन कहाँ गिर गया सिर उठाकर तो देख जब सिर उठा कर देखा तो जन्नत की हूर मुस्करा रही है और उसके दांतों से जो चमक फूट फूट कर निकल रही थी उसे जिबराईल अलैहिस्सलाम ने समझा कि अल्लाह का दीदार हो गया तो अब बताइए दुनिया में जन्नत कैसे मिलेगी।

कहले लगे ﴿سبحان الذی خلقك﴾ क़ुर्बान जाएं उस पर जिसने तुझे पैदा किया, कहने लगी पता भी है मैं किसकी हूँ? कहा नहीं ﴿لمن الرمرضاة الله علی هوا﴾ मैं उसकी हूँ जो अपनी मर्ज़ी को छोड़ कर अल्लाह की मर्ज़ी में लग जाए।

अल्लाह तआला की जानिब से दस गारन्टियां:

मेरे भाईयो! तबलीग़ का काम हमें यहाँ से उठा कर जन्नतुल-फ़िरदौस की वादियों में पहुँचा देगा। तबलीग़ में माल जाता हुआ नज़र आता है और आता हुआ नज़र नहीं आता। इस लिए दिल घबराता है। इस लिए अल्लाह तआला ने दस गारन्टियां दी हैं। मेरी मान लोगे यह, यह, यह लफ़्ज़ हैं ﴿اشتراء عداء حقا فی التورات، والا نجیل، والقرآن، فاستبشروا ببیعکم الذی بایعتم به وذالك هو الفوز العظیم﴾ यह दस गारन्टियां हैं और मेरा सौदा सच्चा है, मैं अपने वायदे से नहीं फिरता तुम फिरते हो तो फिर जाओ। काम क्या है तबलीग़ है, आगे सिफ़ात बतायीं कि इन सिफ़ात के साथ करना है ﴿التائبون العابدون الحامدون السائحون الراکعون الساجدون الامرون بالمعروف والناهون عن المنکر والحافظون لحدود الله﴾ ये मेरे काम करने वाले हैं और अल्लाह की हुदूद पर क़ायम हैं उसकी नाफ़रमानी नहीं करते हैं।

क़ुरआन सारा तबलीग़ हैः

पूरा क़ुरआन तबलीग़ ही तबलीग़ है, अल्लाह की क़ुदरत है जिस चीज़ का अमल मिटता है उसका इल्म भी मिट जाता है। अब तबलीग़ का अमल मिट गया तो तबलीग़ का इल्म भी मिट गया। क़ुरआन पाक से तबलीग़ समझ में नहीं आती मुसलमान को, अल्लाह तआला ने सूरहः बक़रा में यहूद को दावत दी है ﴿ذالك الكتاب لا ريب فيه﴾ यहूदी शक करते थे तो कहा देखो इसमें कोई शक नहीं। सूरहः आले इमरान में अल्लाह तआला ने इसाइयों को दावत दी हैं वे कहते हैं कि तीन ख़ुदा हैं ﴿الم الله لا اله هو الحى القيوم﴾ अल्लाह एक है तीन नहीं आगे सूरहः निसा और सूरहः माइदा में अल्लाह तआला ने क़बाईले अरब को दावत दी है, सूरहः ईनाम में मजूस को दावत दी। मजूस कहते हैं दो ख़ुदा हैं एक नेकी का और एक बदी का ﴿الحمد لله الذى خلق السموات والارض وجعل الظلمت والنور﴾ बदी का ख़ालिक़ भी अल्लाह है और नेकी का ख़ालिक़ भी अल्लाह है। सूरहः एराफ़ में पूरे अक़वामे आलम को दावत दी है कि ऐ पूरी दुनिया के इन्सानों! मैं तुम को अपनी तरफ़ बुलाता हूँ। सूरहः अनफ़ाल में अल्लाह तआला ने तबलीग़ के चौदह उसूल बताए फिर सूरहः बरात में अल्लाह तआला ने ऐलाने जंग किया है कि मेरी बात को मान लो तैयार हो जाओ हलाकत है और बर्बादी के लिए। क़ुरआन का रुख़ ही दावत का है और यह उम्मत आई ही दावत के लिए। क़ुरआन ने साबक़ा अंबिया अलैहिस्सलाम के वाक़ियात क्यों सुनाए हैं अल्लाह तआला ने हमारे ज़हन को तैयार किया है।

क़ुरआन और मूसा अलैहिस्सलामः

तमाम अंबिया अलैहिस्सलाम दावत को लेकर आए थे। क़ुरआने पाक में एक सौ साठ मर्तबा मूसा अलैहिस्सलाम का नाम आया है, आठ पारों में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का तज़्किरा आया है और अल्लाह तआला एक दफ़ा सुना देता तो काफ़ी होता था? वजह इसकी यह है कि इस उम्मत को मूसा अलैहिस्सलाम के साथ तश्बीह है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम में काम करते थे कि अपनी नमाज़ ठीक करो और फ़िरऔनियों का कहा करते थे कि तुम कलिमा पढ़ो। यह उम्मत ऐसी ही है कि अपनों में काम करें, अपने ईमान को ठीक करें और काफ़िरों को दावत देंगे कि तुम कलिमा पढ़ो। हमारी मुशाबिहत हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से है। इसी लिए हमारी किताब क़ुरआन मजीद में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र बार बार आता है और अल्लाह ने ऐसी जर्बदस्त मदद फ़रमाई।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह की मददः

हमें ऐसा सुनाया कि जब तुम दीन के काम करोगे तुम्हारे साथ अल्लह की ऐसी मदद होगी जैसे मूसा अलैहिस्सलाम के साथ, मैंने तफ़सीर में पढ़ा तीन दिन तक फ़िरऔन के दरबार में जाने नहीं दिया गया कि तुम कैसे जाओगे अन्दर? तुम्हारे कपड़े फटे पुराने हैं, मुश्किल से तीसरे दिन अन्दर दाख़िला मिला। फ़िरऔन ने कहा अरे तुम कहाँ से आ गए, कहा कि मैं अल्लाह का नबी हूँ ﴿الم نربك فينا وليداً ولبثت فينا من عمرك سنين، وفعلت فعلتك التى فعلت وانت من الكفرين﴾ तू वही है जिसे मैंने अपनी गोद में पाला,

परवान चढ़ाया फिर मेरा बन्दा मार कर भाग गया फिर कहते हो कि मैं नबी हूँ, वह ज़माना गया, वह दिन गए, अब नबी बन कर आया, तुझे क़ैद में डाल दिया जाएगा ﴿ولو جئتك بشيء مبين﴾ कोई निशानी दिखाओ ﴿فأت به إن كنت من الصادقين﴾ कौन सी निशानी है लाइए। ﴿فألقى عصاه﴾ आपने लाठी को यूं फेंका ﴿فإذا هي ثعبان مبين﴾ वह बड़ा अज़दहा बना और ऐसा मुँह खोला कि फ़िरऔन का मैदा ऐसा मज़बूत था कि कई दिन उसे फ़रागत नहीं होती थी। जब अज़दहे ने उसकी तरफ़ मुँह किया तो वह तख़्त से नीचे गिरा और वहीं पाख़ाना निकल गया तो अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का क़िस्सा क़ुरआन पाक में बार बार ज़िक्र किया है।

इब्राहीम अलैहिस्सलाम और क़ुरआने पाकः

इकसठ मर्तबा इब्राहीम अलैहिस्सलाम का तज़किरा किया है। नबियों के नाम पर सूरते आयीं हैं। कितने नबियों के नाम पर सूरतें आयीं हैं। अल्लाह तआला हमारा ज़हन बना रहा है कि नबियों वाला काम करो तो उसमें माल भी कम होता है, घर भी छूठते हैं, बीवी बच्चे भी छूटते हैं। अल्लाह कहता है हम जो मामला नबियों के साथ करते हैं वह मामला करेंगे। तुम्हारे साथ अमरीका हो या अफ़्रीका हो। यह अमरीका है पाकिस्तान नहीं है, अच्छा अमरीका अल्लाह की ताक़त से आगे चला गया है, अल्लाह ने अमरीका में क़ानून ख़त्म कर दिया है? क्यों यहाँ डालर ज़्यादा हैं इस लिए क़ानून बदल दो नहीं बल्कि अल्लाह का क़ानून ऊपर से एक होता है, जहाँ अल्लाह के काम और नबी की सुन्नतों को हम ज़िन्दा करेंगे तो अल्लाह वहाँ भी सारी तन्ज़ीमों को तोड़ देगा।

उम्मते मुहम्मदिया की निशानीः

तो मेरे भाईयो! हम उन से बहुत ऊँचे हैं, हम नबी के नाएब हैं, क़यामत तक इस उम्मत को पुकारा जाएगा ﴿اين امتى النبى الامى ونبيها﴾ नबी उम्मी और उसकी उम्मत कहाँ है? और अल्लाह तआला इस उम्मत को अर्श के नीचे सबसे ऊँची जगह पर खड़ा कर देगा ऐसा ऊँचा दर्जा अल्लाह तआला ने हमें दिया है क्योंकि उन्होंने अपने घर छोड़ कर मेरे लिए धक्के खाए और आज के दौर में कोई यह काम करेगा तो उसे पचास सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का सवाब मिलेगा। बाबा हुसैन साहब के नाना (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमायाः

ان تمسك فيها اى خمسين منكم اجر خمسين منا،
واجر خمسين منكم، لا نكم تجدون على دينها اعوانا وانصارا

ऐ अबू तालिब जब वह दीन का काम करेंगे तो पचास का अज्र होगा तुम्हारे पचास का, कहा क्यों? इस लिए कि तुम अच्छी और नेक फ़िज़ा में हो, तुम्हारे मददगार हैं दीन पर चलने के लिए और वे ऐसी फ़िज़ा में होंगे जब वे दीन पर चलेंगे और दीन को फैलाएंगे तो उनका कोई मददगार नहीं होगा, माँ बाप मुख़ालिफ़ होंगे, बीवी मुख़ालिफ़ होगी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के भाई कौन हैं?

इस लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरा दिल चाहता है कि मैं अपने भाईयों की ज़ियारत करूं। सहाबा किराम रज़ियअल्लाहु अन्हुम ने कहा ﴿ولسنا اخوانا يا رسول الله﴾ क्या हम आपके भाई नहीं हैं? कहा नहीं ﴿انتم اصحابى، ولكن

﴿اخوانی الذین امنو بی ولم یروانی﴾ मेरे भाई तो वे जो मुझे देखेंगे नहीं लेकिन मुझ पर ईमान लाएंगे।

बिन देखे ईमान लाने वालों को सात दफ़ा मुबारकः

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे ﴿طوبی لمن ذاك یا رسول الله﴾ या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कितना मुबारक और कितनी बरकत वाला है वह शख़्स जिसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿طوبی ثم طوبی سبع مرات لمن امن بی ولم یرانی﴾ जिसने मुझे देखा और ईमान लाया उसके लिए एक दफ़ा बरकत जो मुझ पर ईमान लाया और मुझे देखा नहीं तो उसके लिए सात दफ़ा बरकत है। इसी पर बस नहीं आगे भी बढ़ाया था यह बेचारे झटके खा कर गिरते हैं, कभी बीवी पाँव खींचती है, कभी बच्चे टांग खींचते हैं, कभी माँ बाप पीछे पड़ते हैं। बड़ी क़ुर्बानियां हैं।

अरब नौजवानों की दीन पर इस्तेक़ामतः

एक अरब नौजवान यहाँ पर पढ़ता था एक तबलीग़ी ने कहा कि चिल्ला लगाओ। तबलीग़ में गए तो सारी फैमली पीछे पड़ गई कि दाढ़ी मुंडवाओ यह कोई वक़्त है दाढ़ी रखने का। जब मंगनी हुई तो लड़की वालों ने कहा कि हम लड़की नहीं देंगे पहले दाढ़ी मुंडवाओ तो वह नौजवान सिर पकड़ कर रो रहा था मैंने कहा क्यों रो रहे हो कहने लगा कि अमरीका में अल्लाह तआला ने मुझे हिदायत दी और अरब में गए तो वहाँ मुझे गुमराह कर रहे हैं। माँ बाप और सुसरालवाले कहते हैं कि शादी

करनी है तो दाढ़ी मुंडवाओ वरना लड़की नहीं देंगे। उन्होंने कहा गर्दन काट दो तब भी नहीं काटूंगा।

एक नौजवान के दिल में सुन्नत की क़द्रः

एक हमारे कराची का बच्चा कनाडा में पैदा हुआ। यहाँ परवान चढ़ा, यहाँ की गिज़ा खाई। यह बहुत बड़ा मालदार था। माँ उसकी यहाँ रही बाप उसको लेकर कराची आया। एक दिन जा रहा था कि हमारा कोई साथी उन से मिला मुहब्बत व प्यार से कहने लगा आप मस्जिद में आइए और हमारी बात सुनें तो वह साथ चला गया और बात सुनी, दिल को लगी तो उसने समझा कि हर मुसलमान तबलीग़ वाला है तो कहा मैं क्या तबलीग़ करूं? मुझे तो कुछ भी नहीं आता। उन्होंने कहा नमाज़ का तो पता है ना, बस अपने दोस्तों से कहा नमाज़ पढ़ो, नमाज़ पढ़ो। उसको अल्लाह तआला ने क़बूल किया। चलते चलते चार महीने लगे। जब दाढ़ी रख कर घर में आया तो बाप ने घर से निकाल दिया। एक साल तक घर में आने नहीं दिया फिर मिन्नत करके बाप को राज़ी करके घर में आया, उस बाप ने भी कहा कि बेटा तूने इस उमर में दाढ़ी रखी तुम्हें कौन लड़की देगा। उसने कहा मैंने जिस नबी की सुन्नत को इख़्तियार किया है उसको अल्लाह तआला ने बड़ी ख़ूबसूरत बीवियां दीं थीं मुझे भी अल्लाह देगा उसकी उमर पन्द्रह सोलह साल थीं आज हर तरफ़ से रुकावट है।

इस्लाह का आसान नुस्ख़ाः

एक साथी ने तबलीग़ में तीन दिन लगाए तो दाढ़ी रखने का

जज़्बा पैदा हुआ तो बीवी पीछे पड़ गई तो वह बड़ा परेशान हुआ कि क्या करूं। उसने एक तरकीब सोची और बीवी से कहने लगा सोच रहा हूँ दूसरी शादी करने की आप मेरे हक़ूक़ अदा नहीं कर रही हो। उसने कहा आप दाढ़ी रख लें शादी को छोड़ दें।

असल ग़र्ज़ः

मेरे भाईयो! आप को क्या बात बताऊँ हमारे साथी कैसी कैसी मुशक़्क़तों से गुज़र रहे हैं और मुशक़्क़तों के बग़ैर यह काम तमाम नहीं होता तो भाई इसके लिए बतओ हमारा का ख़त्मे नबुव्वत की वजह से है, दुनिया के इन्सानों को हमें दीन पहुँचाना हैं, समझाना है, बताना है। यह काम हमें करना है, अमरीका में रहते हुए भी और पाकिस्तान में रहते हुए भी, जहाँ कहीं भी हों पूरी दुनिया को कलिमा पहुँचाना हमारा काम है और हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम हैं। हाँ भाई इसके लिए बताओ, चार महीने नक़द मांगते हैं। पाकिस्तान के लिए हिन्दुस्तान के लिए कौन नक़द देगा? जाकर इस काम को सीख लो, भाई कौन तैयार है?

अल्लाह की बादशाहत

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه ونعوذبالله
من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله فلا مضل له
ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الاالله وحده لا
شريك له ونشهد ان سيدنا ومولٰنامحمدا عبده ورسوله وصلى
الله تعالٰى عليه وعلى اٰله واصحابه وبارك وسلم امابعد

हमारी सोच और तदाबीर नाकिस है:

मेरे भाईयो और दोस्तो!

आज कल दुनिया में हर इन्सान हालात का शिकार है और इन्सान अपने मसाइल का हल करना चाहता है। थोड़ी ज़िन्दगी है और इसके मसाइल भी थोड़े से हैं। असल मसाइल मौत के बाद शुरू होने वाले हैं और ऐसी ज़िन्दगी है जिसकी इन्तेहा अल्लाह ने नहीं लिखी। ﴿خالدين فيها ابدا﴾ जन्नत वालों के लिए भी ﴿ومن يعص الله ورسوله، فان له نار جهنم خالدين فيها ابدا﴾ दोज़ख़ वालों के लिए भी तो हम बड़े कमज़ोर हैं और यहाँ भी आफ़ियत चाहते हैं और आगे भी अल्लाह के अज़ाब से पनाह और आफ़ियत चाहते हैं। दुनिया भी बने और आख़िरत भी। दुनिया बनने का मतलब यह नहीं है कि हमें कोई बड़ी हुकूमत या कोई बड़ी दौलत मिल मिले बड़े माल और असबाब मिलें नहीं बल्कि आफ़ियत की ज़िन्दगी अल्लाह तआला नसीब फ़रमाए। अभी अल्लाह चाहे तो आफ़ियत मिल सकती है अगर अल्लाह न चाहे

तो नहीं हो सकता चाहे सारी दुनिया के दानिशवर इकठ्ठे हो जाएं और हो रहे हैं सारी दुनिया के माहिर माशियात इकठ्ठे हो रहे हैं, मजलिस लगती है मशवरे हो रहे हैं, स्कीमें बनायीं जा रही हैं, ऊपर वाला मौके पर फ़ैसला करेगा तो होगा और अगर फ़ैसला बदल ले तो कोई कुछ करवा नहीं सकता। अब एक तरतीब हम ने चलानी होती है कि अपने अपने मसाइल हल करने के लिए मुख़्तलिफ़ इख़्तियार करें। हमारी तदबीर यक़ीनन कमज़ोर और नाक़िस है और अल्लाह तआला की बताई हुई तदबीर यक़ीनन हक़ और सच है और अल्लह तआला का निज़ाम सौ फ़ी सद नतीजा देने वाला है, हमारी तदबीर इस लिए नाक़िस है कि हमारी अक़्ल नाक़िस है। हम कुछ देर सोच सकते हैं फिर थोड़ी देर बाद थक जाते हैं यह हमारी अक़्ल नाक़िस होने की अलामत है अगर फ़ैसला ज़्यादा देर चढ़ जाए तो हमारी सोच काम करना छोड़ देती है यह नाक़िस होने की अलामत है अगर बहुत ज़्यादा ख़ुशी हासिल हो जाए तो अक़्ल काम करना छोड़ देती है यह नाक़िस होने की अलामत है, कोई सदमा पहुँच जाए या बीमार हो जाए तो सोच काम करना छोड़ देती है यह इसके नाक़िस होने की अलामत है। सो जाए तो मर जाता है थोड़ी उमर ज़्यादा हो जाए तो बिल्कुल बच्चा हो जाता है। सारी चीज़ें हमारी सोच के नाक़िस होने की अलामतें हैं।

हम थोड़ी देर सोच के मालिक हैं और इसमें इतने नुक़सानात हैं और ऐब हैं तो अब ये सारे दानिशवर इकठ्ठे हो जाएं तो भाई जितने नाक़िस जमा होंगे उतना ही नुक़सान बढ़ जाएगा, जितने नाक़िस अक़्ल वाले बढ़ते चले जाएंगे तो दुनिया में उतने ही नुक़सानात बढ़ते चले जाएंगे। हक़ तआला ने इस नुक़सान

का अपने फ़ज़्ल से इन्तेज़ाम फ़रमाया कि अपने इल्म को नुक़सान तक पहुँचाया नबियों के ज़रिए।

हमारा मुशाहेदाः

अल्लाह ने कह दिया कि मैं तुम्हारे नुक़सान को पूरा कर दूंगा अगर तुम अपनी अक़्ल को फ़हम को फ़िरासत को तदबीरों को, तजुर्बों को मेरे ताबे करके चलो, मेरे हुक्म के ताबे करके चलो अगर हम अपनी तदबीरों को उसके हुक्म के ताबे करके चलें तो ज़ाहिर में उसके ख़िलाफ़ होता नज़र आता है और उसमें कमियां और कोताहियां नज़र आती हैं और अपनी मर्ज़ी पर चलें तो काम बनता नज़र आता हे इसकी मिसाल यूं है कि एक आदमी रुपए देता है सूद पर तो एक सौ बारह नज़र आता है एक आदमी सदक़ा देता है दस रुपए तो नब्बे बाक़ी रह जाते हैं एक तरफ़ एक सौ बारह दूसरी तरफ़ नब्बे रुपए हैं। इसमें हम सब कहते हैं कि एक सौ बारह ज़्यादा हैं और नब्बे कम हैं इसमें तमाम इन्सानी दिमाग़ और अक़्लों का इत्तेफ़ाक़ है कि एक सौ बारह ज़्यादा हैं और नब्बे कम हैं लेकिन अल्लाह तआला की ख़बर इसके ख़िलाफ़ आ रही है ﴿يمحق الله الربو ويربى الصدقات﴾ मैं सूद को घटाता हूँ और ख़ैरात को बढ़ाता हूं। अब यहाँ अल्लाह की ख़बर अक़्ल के ख़िलाफ़ है, इन्सानी अक़्लों, सोचों, तदबीरों और अक़्लों के ख़िलाफ़ हैं एक सौ बारह ज़्यादा हैं और नब्बे कम हैं लेकिन अल्लाह तआला कहता है कि ऐसा नहीं है अब अपनी सोच को असके ताबे करने के लिए अन्दर के ईमान की रौशनी चाहिए। जब तक वह रौशनी बेदार नहीं होती तब तक आदमी को एक सौ बारह ज़्यादा नज़र आते हें और नब्बे कम

नज़र आते हैं जब उसके ईमान की शमा रौशन हो जाए और जल जाए तो नब्बे ज़्यादा नज़र आते हैं और एक सौ बारह कम नज़र आते हैं। वह अल्लाह के इल्म की तसदीक़ अपनी नज़र से ज़्यादा करता है, अल्लाह पाक की ख़बर की तसदीक़ अपनी सोच से ज़्यादा करता है, अल्लाह तआला के नबी की ख़बर की तसदीक़ अपने फ़हम से ज़्यादा करता है।

एक बद्दू का वाक़िया और हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की गवाही:

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफ़र पर तशरीफ़ ले जा रहे हैं रास्ते में एक बद्दू से घोड़े का सौदा तय हुआ, क़ीमत तय हुई। आपने कहा मदीने में जाकर क़ीमत दे दूंगा। उसने कहा ठीक है आगे चल दिए। पीछे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु मिल गए अब सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को नहीं पता कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने घोड़े का सौदा कर लिया है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा घोड़ा खड़ा है। उन्होंने कहा हमें यह घोड़ा ख़रीदना है हम तुम्हें इतने रुपए दे देते हैं और यह क़ीमत हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ीमत से ज़्यादा बताई तो अब उस बद्दू की नियत बदल गई। उस ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घोड़ा लेना है तो ले लो वरना इनको बेच देता हूँ। रुपए मदीने मुनव्वरा पहुँच कर देना तय हुआ था, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। उस बद्दू ने कहा कोई मामला तय नहीं हुआ था। लेना हो तो पैसे दे दो वरना मैं आगे बेच देता हूँ, आप के पास गवाह कौन है कि मुआहीदा इस तरह तय हुआ था। सहाबा

रज़ियल्लाहु अन्हुम में से एक सहाबी हुज़ैफ़ा बिन साबित पीछे से खड़े हुए और कहा कि मैं इस पर गवाह हूँ कि सौदा इसी तरह तय हुआ था। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तू किस तरह गवाही देता है तू यहाँ था ही नहीं? सहाबी ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब आप आसमान की ख़बर देते हैं तो हम उनको सच और दरुस्त मानते हैं, अगर आप घोड़े की ख़बर दें तो हम उसको कैसे सच न कहें, यह तो नहीं हो सकता आप ने ऐसा ही किया जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कह रहे हैं चाहे मैं था या नहीं था। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत हुज़ैफ़ा की गवाही को दो के बराबर कर दिया। सारी दुनिया में इनकी गवाही दो के बराबर क़रार दी जाती थी।

तसदीक़ पर ईनामः

जब हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ुरआन लिखने का हुक्म दिया तो जब तक एक आयत दो दो आदमियों के पास लिखी नहीं होती थी तो उसको क़ुरआन में नक़ल न करते थे। कम से कम दो आदमियों के पास लिखी होनी चाहिए। क़ुरआन पाक की एक आयत सिर्फ़ हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास लिखी हुई थी और किसी के पास लिखी हुई नहीं थी न याद थी। लिखी हुई सिर्फ़ हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास थी सूरहः तौबा की आख़िरी आयत ﴿لقد جاءكم رسول من انفسكم عزيز عليه الخ﴾ यह आयत लिखी हुई सिर्फ़ हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास थी याद तो अकसर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को थी। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु क़ुरआन जमा

करने में मसरूफ़ हैं। जब यह आयत लेकर हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु आए तो हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा यह आयत सिर्फ़ आपके पास है और किसी के पास नहीं, ज़ाब्ते के मुवाफ़िक़ मैं इसको क़ुरआन में नक़ल नहीं कर सकता। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा आप मुझे जानते नहीं मैं कौन हूँ मैं दो के बराबर हूँ, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि हुज़ैफ़ा की गवाही दो के बराबर है फिर यह आयत लेकर क़ुरआन में लिखी गई।

अल्लाह का अज़ाब बहुत दर्दनाक हैः

मेरे भाईयो! हम अपनी सोच और अपनी अक़्ल हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़बर से हटा के इस्तेमाल कर रहे हैं इस लिए दुनिया भी ख़राब हो रही है और आख़िरत भी ख़राब होने वाली है ﴿ولنذيقنهم من العذاب الادنى﴾ मैं दुनिया में थोड़ा अज़ाब देता हूँ ﴿دون عذاب الاكبر﴾ बड़ा अज़ाब नहीं देता ﴿لعلهم يرجعون﴾ ताकि तौबा कर लें ﴿ولعذاب الاخرة اكبر﴾ आख़िरत का अज़ाब बहुत ख़तरनाक और दर्दनाक है।

मेरे भाईयो और दोस्तों बात दरअसल करने की इस वक़्त यह है हम सब के सब अल्लाह की तरफ़ रुजू कर लें। सारी दुनिया और आसमान की हुकूमत अल्लाह के हाथ में है और उसका कोई शरीक नहीं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से बनी इसराइल कहने लगेतेरा रब सोता है? हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को ग़ुस्सा आ गया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ठहरो मैं इनको समझाता हूँ तुम रात को प्याला लेकर खड़े हो जाओ। वह प्याला लेकर खड़े हुए। जब आधी रात को उसको ऊँघ आने लगी अरे प्याला

टूट जाएगा सोते हो? जब रात का आख़िरी वक़्त आया तो सो गए वह प्याला गिर कर टूट गया तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया तेरा रब रात को या दिन को किसी वक़्त सो जाए तो आसमान, ज़मीन, सूरज और चाँद के प्याले गिर कर टूट जाएंगे और तबाह हो जाएंगे

अल्लाह की क़ुदरत की निशानियांः

अल्लाह का इल्म भी सब से बड़ा है। मेरी और आपकी आवाज़ और जो सीनों में भेद हैं अल्लाह जानता है सब की एक वक़्त में सुनता है, सड़कों पर चलने वाली गाड़ियों के हर पुर्ज़े की हर आवाज़ को भी अल्लाह सुनता है, बिलों में जो च्युंटियां हैं बिच्छू हैं, साँप हैं, चूहें हैं उन सब की आवाज़ को हर वक़्त भी सुनता है और जानता भी है। जंगल में शेर हैं हाथी हैं, चीते हैं, गीदड़ है, कुत्ते हैं,सुअर हैं, बनमानुस हैं, गायों के रेवड़ हैं, बकरियों के रेवड़ हैं उन सबकी आवाज़ को हर लम्हे सुनता भी है और जानता भी है। सारी काएनात में उड़ने वाले परिन्दे, फ़िज़ा में गर्दिश करने वाले सय्यारे और सितारे फिर हवा के ज़र्रात, दरख़्तों के पत्तों की सरसराहट, हवा की सनसनाहट, समन्दर की मौजों का तलातुम इन सब की आवाज़ अल्लाह तआला इकठ्ठा सुनता है और सुनने में कोई दिक़्क़त नहीं और अल्लाह तआला कहता है ﴿لو ان اولكم وآخركم وانسكم وجنكم وحياكم وميتكم ورطبكم ويابسكم وصغيركم وكبيركم وذكركم وانثكم﴾ यह बारह क़िस्म की मख़लूक़ात हैं ﴿ثم تسئلونى﴾ यह अपनी अपनी ज़ुबान में मुझ से मांगते हैं। उनकी ज़ुबान एक नहीं है। अल्लाह तआला की एक क़ुदरत तो यह है कि उसको तर्जुमान की ज़रूरत नहीं,

दूसरी क़ुदरत यह है कि अल्लाह तआला सब की एक वक़्त में सुनता है, सबको अलग अलग सुनता है इसे सुनने में उसकी क़ुदरत की आख़िरी हद क्या है ﴿لا تغلطه كثرة المسائل﴾ तुम सबका इकट्ठा बोलना मुझे ग़लती में नहीं डालता है कि तुम्हारे सवाल ग़लत हो जाएं नहीं हर्गिज़ नहीं। हर एक का अलग अलग सुन रहा है, हर एक की पुकार अलग अलग सुन रहा है, हर एक की चाहत देख रहा है, फिर कहता है मैं सब की सुन रहा हूँ। ज़ुबान की तब्दीली पर, लहजे की तब्दीली पर, आवाज़ की तब्दीली पर फिर सबकी चाहत दे दूं ﴿مانقص ذالك مما عندى الا ماينقص اذا ادخل فى البحر﴾ मेरे ख़ज़ानों में इतनी कमी नहीं आती जितना सुंई के सिर को समन्दर में डालने से समन्दर में कमी आती। उस पर भी एक छोटा सा क़तरा लग जाता है लेकिन अल्लाह तआला के ख़ज़ाने में इतनी कमी भी नहीं आती। तुम सब को दे दूं तो कोई कमी नहीं आती। इतनी सारी जन्नतें अल्लाह तआला ने बनाई हैं कि उनको मुसलमानों को दें दे, काफ़िरों को भी दे दें तो भी अल्लाह तआला के ख़ज़ानों में किसी क़िस्म की कोई कमी नहीं आती।

हम पानी को ऊपर पहुँचाने में प्रेशर पम्प लगाते हैं वह मशीन पानी को ऊपर पहुँचाती है। दस फ़िट, बीस फ़िट, पचास फ़िट। अल्लाह तआला पाँच सौ फ़िट का दरख़्त बनाता है और ज़मीन के नीचे से पानी का इन्तेज़ाम करता है और दरख़्त के सबसे ऊपर वाले पत्ते पर पानी को पहुँचा देता है। पाँच सौ फ़िट ऊपर वाले पत्ते पर भी पानी पहुँचा हुआ है। नीचे कोई प्रेशर पम्प नहीं लगा हुआ है कोई मोटर मशीन नहीं लगी हुई है यह अल्लाह का निज़ाम है कि दरख़्तों का बनाया ज़मीन की रगों को

हुक्म दिया कि वे जड़ की तरफ़ चलती हैं, ग़िज़ा को ले जाती हैं फिर वह ग़िज़ा दरख़्त की रगों से हर हर पत्ते पर डाली पर और हर टहनी और हर शाख़ में जाता है और ज़मीन भी खुश्क, ज़मीन के अन्दर मिठास कोई नहीं, शहद कोई नहीं, शक्कर किसी नहीं डाली लेकिन अल्लाह तआला ने आम की मिठास को, केले की मिठास को, अमरूद की मिठास को निकालता है। उसने हलवा बना कर पर्दे में बन्द करके खड़ा कर दिया है। हम हलवा बनाते हैं कितनी मुसीबत पड़ती है अल्लाह तआला ने पहले से तैयार करके खड़ा कर दिया। बूढ़े भी खाएं जवान भी खाएं। यह न खुद ज़मीन से निकले न आसमान से उतरे यह सब अल्लाह के अमूर से वजूद में आता है। नारियल का दरख़्त खड़ा है और फल लगा हुआ है उसके अन्दर पानी भरा हुआ है दरख़्त को काटो तो पानी कोई नहीं, पत्ते चीरो पानी कोई नहीं, ज़मीन को चीरो पानी कोई नहीं लेकिन उस फल को चीरो तो उसमें ऐसा पानी भरा हुआ है न ज़मीन की रगों में है और न दरख़्त के अन्दर है और न पत्तों की रगों में है, बस यह अल्लाह का निज़ाम है। इस पानी की ज़रूरत है अपने बन्दों के लिए उसको फल के अन्दर पैदा फ़रमा दिया यह पानी न ज़मीन में है न बारिश में है न दरख़्त के अन्दर। मालिक ने इसको इसी फल के अन्दर पैदा फ़रमा दिया और उसको उसके अन्दर खड़ा करके मक्खन बना दिया। हमें मक्खन बनाने में कितने लम्बे चौड़े निज़ाम को बनाना पड़ता है। अल्लाह तआला ने एक दरख़्त को हुक्म दिया कि इसको मक्खन की शकल में तैयार कर दो तो वह मक्खन की शकल में तैयार हो गया। जब इस सारी ज़मीन पर, आसमान पर, शजर व हजूर पर अल्लाह की हुकूमत है तो

क्या लाहौर और कराची पर अल्लाह की हुकूमत नहीं होगी।

तमाम मसाइल का हल रुजू इलल्लाह है:

﴿افان الذين مكروا السيات، ان يخسف الله بهم الارض﴾ मैं तुम्हें ज़मीन में धंसा दूं तो तुम में से कोई रोक नहीं सकता है ﴿ويـاتيهم العذاب من حيث لا يشعرون﴾ आएगा मेरा अज़ाब तुम पर और तुम को पता भी नहीं चलेगा तो कोई रोक सकता है। अल्लाह जल्ले जलालुहु सारी काएनात का बादशाह है। अपनी ज़रूरियात और मसाइल उसके सामने पेश करें अगर अल्लाह चाहेंगे तो यह मसाइल हल होंगे और अगर अल्लाह न चाहें तो सारी दुनिया के इन्सान मिलकर भी ये मसाइल हल नहीं कर सकते हैं।

अल्लाह का दस्तूर:

मेरे भाईयो और दोस्तों! अब अल्लाह दस्तूर बता रहा है कि हालात कब बनाता हूँ और कब बिगाड़ता हूँ। ﴿كانت امنة مطمئنة﴾ एक बस्ती की कहानी सुनो। बड़े मज़े में रहते थे और बड़ा अच्छा खाते थे, बड़ा अच्छा पहनते थे ﴿ياتيها رزقها رغدا من كل مكان﴾ मैंने उनके चारों तरफ़ रिज़्क़ का दरवाज़ा खोला हुआ था। बड़े खुशहाल थे ﴿فكفرت بانعم الله﴾ अल्लाह के नाफ़रमान हुए ﴿فاذاقها الله لباس الجوع والخوف بما كانوا يصنعون﴾ जब अल्लाह के नाफ़रमान हुए तो अल्लाह तआला ने उन्हें भूक और ख़ौफ़ का लिबास पहना दिया, ज़िल्लत और पस्ती की मार दे दी। दूसरी जगह ज़ाब्ता बताया ﴿وكم اهلكنا من قرية﴾ कितनी बस्तियों को अल्लाह तआला ने हलाक और बर्बाद करके रख दिया क्यों? ﴿كانت ظالمة﴾ वह ज़ालिम थे यहाँ पर अल्लाह तआला हालात बनाने

और बिगाड़ने के असबाब रहे हैं। दुनिया के भी और आख़िरत के भी। बिगाड़ने के असबाब क्या हैं? अब काफ़िरों को एक तरफ़ कर दिया जाए क्योंकि मौत तक की उनको मोहलत है। जिस तरह एक बच्चा स्कूल में पढ़ता है तो स्कूल की पाबन्दियां उस पर लगती है उन बच्चों पर नहीं लगतीं जो गली कूचों में फिरते हैं, जो स्कूल में होता है वही धक्के खाता है, स्कूल के ज़ाब्तों का पाबन्द होता है क्योंकि आगे जा कर उसको कुछ बनना है इस वक़्त की पेरशानी बाद में राहत का सबब बनेगी और जो गली कूचों में घूमते रहते हैं वे इस वक़्त तो मज़े में हैं उन पर किसी क़िस्म की क़ानूनी पाबन्दी नहीं है आगे चल कर उनको परेशानी होगी, मसाइल पैदा होंगे। लिहाज़ा काफ़िरों की मिसाल उन बच्चों की सी है जो पूरा दिन गली कूचों में घूमते हैं और खेलते रहते हैं, अल्लाह तआला ने काफ़िरों को छुट्टी दे रखी है। दूसरी मिसाल यूं है कि एक मेरा बच्चा है मैं उसकी तालीम का ख़याल रखता हूँ, उसके अख़लाक़ की तरतीब का लिहाज़ रखता हूँ, बुरी सोहबत से बचाने की फ़िक्र करता हूँ, अच्छी आदत डालने की कोशिश करता हूँ, दूसरों के बच्चों की फ़िक्र नहीं। मुसलमान की शान अपने बच्चे और स्कूल के बच्चे की है और काफ़िर की मिसाल गली कूचों के बच्चे की है और बाज़ारी बच्चे की है उसको मौत तक छुट्टी मिल गई है।

जहन्नुम बहुत बुरा ठिकाना हैः

अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अल्लाह तआला फ़रमाता है ﴿لا يغرنك تقلب الذين كفروا فى البلاد، متاع قليل ثم ماؤهم جهنم

﴿بئس المهاد الخ﴾ आख़िरत में जहन्नुम काफ़िरों का ठिकाना होगा। यह बहुत बुरा ठिकाना है ﴿لهم من فوقهم ظلل من النار﴾ उनके ऊपर आग के पर्दे होंगे ﴿ومن تحتهم ظلل﴾ नीचे आग के पर्दे होंगे और आग के बड़े बड़े सन्दूक बनाए जाएंगे फिर काफ़िरों को उन सन्दूको में रखा जाएगा फिर उनके जिस्म में जितनी रगें हैं हर एक रग में कील गाढ़ी जाएंगी। फिर एक और आग के ताबूत में इस सन्दूक को डाला जाएगा फिर उसके बाद उनको जहन्नुम की दीवारों में,जहन्नुम के पहाड़ों में, जहन्नुम की वादियों में गाढ़ा जाएगा जिस तरह हम कील को दीवार में ठूंसते हैं। हमेशा हमेशा की बर्बादी उनके लिए मुक़द्दर कर दी गई और काफ़िर के लिए भी यह ज़ाब्ता बयान किया गया ﴿وما كنا معذبين حتى نبعث رسولا﴾ उसके पास नबी आता है, दावत देता है, उसको समझाता है, जब वह नहीं मानता और ठुकरा देता है तब जा कर अल्लाह की गिरफ़्त आती है। जब वह नबी की बात मान ले तो अल्लाह तआला मेहरबान होता है, कामयाब कर देता है जब न माने तो अज़ाब देता है।

अल्लाह की मदद हमारे साथ क्यों नहीं हैः

आज क्योंकि हम सारी दुनिया के बातिल को दावत नहीं दे रहे हैं तो अल्लाह तआला ने उनको मोहलत दी हुई है अगर उनको दावत दी जाए तो उनके रॉकेट और ऐटम उनके ख़िलाफ़ चलाएगा, उनकी ताक़तों को उन्हीं के ख़िलाफ़ इस्तेमाल कर देगा ﴿ولا يحيق المكر السيئ إلا بأهله﴾ उनकी ताक़तो उनके ऊपर मार कर अल्लाह तआला बर्बाद कर देगा ﴿بل نقذف بالحق على الباطل فيدمغه فاذا هو زاهق﴾ हम हक़ को बातिल के ऊपर मारते हैं तो बातिल का

भेजा निकल जाता है और वह दुनिया में मिट जाता है। बातिल को मिटाने के लिए अल्लाह तआला ने दावत को शर्त क़रार दिया है। वे भी अल्लाह के बन्दे हैं उनको भी अल्लाह तआला ने बनाया है, उन से भी अल्लाह तआला ताल्लुक़ की मुनासिबत रखता है। क़ारून को अल्लाह तआला ने सज़ा दी, पहले अल्लाह तआला हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को ज़मीन पर इख़्तियार दे दिया तो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ज़मीन को कहा क़ारून को निगल ले तो ज़मीन ने उसको धंसाना शुरू किया तो क़ारून मूसा अलैहिस्सलाम से कहता रहा कि मुझे बचा ले, मुझे मॉफ़ कर दे, मूसा अलैहिस्सलाम ज़मीन से कहते रहे कि इसको धंसा दे तो वह ज़मीन में धंसता धंसता ग़र्क़ हो गया। उसका जुर्म बहुत बड़ा था उसने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ज़िना की तोहमत लगाई थी यह उसका बदला था लेकिन अल्लाह की रहमत का अन्दाज़ा लगाइए। अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर वही उतारी कि मूसा तुझे पुकारता रहा अगर वह मुझे पुकारता तो मैं उसको निकाल लेता। एक दफ़ा कह देता कि या अल्लाह मॉफ़ कर दे तो उसी वक़्त निकाल कर बाहर रख देता। जब ऐसे मुजरिम के साथ अल्लाह का इतना ताल्लुक़ है तो आम काफ़िर के साथ क्यों नहीं होगा। हमारी दुआओं से काफ़िर नहीं मरेंगे। उनको जाकर दावत दें अरे भाई कलिमा पढ़ ले अल्लाह की वहदानियत को तसलीम कर ले, निजात का रास्ता कर ले। जब वह इसका इन्कार करेगा फिर अल्लाह तआला के अज़ाब का मुसतहिक़ होगा इससे पहले अज़ाब नहीं आएगा।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी और अल्लाह से मसाइल हल कराने का तरीक़ाः

मेरे भाईयो! अल्लाह से मसाइल हल करवाने का जो रास्ता है वह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी है अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को दुनिया व आख़िरत में अपने मसाइल हल करने को जन्नत में हमेशा की ज़िन्दगी के बनने का ज़रिया बनाया है और ऐलान कर दिया है कि जिस को कामयाबी चाहिए आराम व सकून वाली ज़िन्दगी चाहिए राहत व चैन चाहिए तो वह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में आ जाए यानी अपना ले। उसके अलावा सारे रास्ते और दरवाज़े बन्द हैं, सारी शरिअ़तें मन्सूख़ हैं ﴿اختم بكتابه الكتب و بدينهم الاديان شريعتهم الشرائع﴾ उसकी किताब पर सब किताबें ख़त्म उसके दीन पर दूसरे दीन ख़त्म, उसकी शरिअ़त पर दूसरी शरिअ़तें ख़त्म। अल्लाह तआला ने ऐसी इज़्ज़त बख़्शी कि सारे नबियों का सरदार बनाया, सारे नबियों का पेशवा बनाया ﴿انا نبی الاولین انا نبی النبیاء﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं तमाम नबियों का नबी हूँ सिर्फ़ हमारे नबी नहीं हैं। सवा लाख नबियों को बैतुल-मुक़द्दस में जमा करके हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनका इमाम बना दिया। उन पर नबुव्वत को साबित कर दिया। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आएंगे तो उम्मती बन कर आएंगे नबी बन कर नहीं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ﴿انا اولهم خلقا﴾ मैं सबसे पहले बनाया गया हूँ, आसमानों, ज़मीनों, सूरज,

चाँद, सितारों, सय्यारों, हवा फ़िज़ा, ख़ला से पहले बनाया गया हूँ। भेजने में सबसे बाद में पैदाइश में सबसे पहले। एक यहूदी आपकी शान में ग़ुस्ताख़ी की तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसको मारा। उस यहूदी ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में शिकायत की। पीछे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी आ गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि तुम ने इसे क्यों मारा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसने आप की शान में ग़ुस्ताख़ी की और मुझ से बर्दाशत नहीं हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿فاما انت يا عمر فارضه﴾ आप उसे राज़ी कर लें और यहूदी से कहा कि तुम मेरी बात मान लो।

मैं कहा करता हूँ कि अल्लाह के हबीब की शान को अल्लाहक के अलावा कोई नहीं समझ सकता, सारी काएनात नहीं समझ सकती। इतना ऊँचा मक़ाम है अल्लाहु-अकबर!!!

अल्लाह तआला की काएनात की वुसअत कोई नहीं जानताः

मूसा अलैहिस्सलाम पर अर्श से तजल्ली पड़ी। अर्श कितनी दूर है, इसका अल्लाह के अलावा किसी को कोई नहीं पता। यह जो आसमान है इसको आज तक किसी ने नहीं देखा, इसमें जो ख़ला है उसमें सत्तानवें फ़ी सद अन्धेरा है रौशनी नहीं है तीन फ़ी सद में रौशनी है, सत्तानवें फ़ी सद अन्धेरा है जो रौशन है उस में पाँच हज़ार कहकशाएं हैं और एक कहकशा में दस खरब सय्यारे हैं और जिस कहकशा में हम रहते हैं और हमारा निज़ामे

शम्सी जिस कहकशा में वाक़े है उस कहकशा का फ़ासला बीस लाख लाइट साल है जिसका मतलब यह है कि एक लाख छयास्सी हज़ार मील फ़ी सेकण्ड की रफ़्तार से बीस लाख साल सफ़र किया जाए तब जा कर हमारी कहकशा ख़त्म होगी और ऐसी पाँच अरब कहकशाएं हैं। हमारी कहकशा के साथ सत्रह कहकशाएं मिली हुई हैं। हम सत्रह कहकशाओं के मजमुए में रहते हैं। इन सत्रह कहकशाओं का फ़ासला एक लाख बीस हज़ार नूरी साल है। अब पाँच अरब का कौन हिसाब लगाए फिर आसमान के ऊपर इसी तरह दूसरा आसमान, तीसरा आसमान, चौथा आसमान, पाँचवा, छठा सांतवा आसमान फिर सांतवे आसमान के ऊपर जन्नत है फिर जन्नत उठी है अर्श तक फिर अर्श के ऊपर ﴿لا يعلمه الا الله﴾ उसके बाद अल्लाह ही जानता है। वहाँ से मूसा अलैहिस्सलाम पर तजल्ली पड़ी ﴿فلما تجلى ربه للجبل﴾ जब आपके रब ने तजल्ली ज़ाहिर की पहाड़ पर ﴿جعله دكا﴾ पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो गया ﴿وخر موسى صعقا﴾ और मूसा चालीस साल तक बेहोश पड़े रहे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बुलन्द मक़ामः

लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि यसल्लम के साथ क्या हुआ। उठाया बैतुल्लाह से चन्द लम्हात में बैतुल-मुक़द्दस पहुँचाया। दो रकअत नफ़्ल पढ़ीं, घोड़ा वहाँ बांधा और जिबराईल के साथ पहला क़दम पहला आसमान, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम इस्तिक़बाल के लिए खड़े हैं, दूसरे क़दम पर दूसरा आसमान हज़रत याहया और ज़क्रिया अलैहिस्सलाम इस्तिक़बाल के लिए खड़े हैं, तीसरे क़दम पर तीसरा आसमान हज़रत यूसुफ़

अलैहिस्सलाम इस्तिक़बाल के लिए तैयार हैं, चौथा क़दम चौथे आसमान पर हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम इस्क़िबाल के लिए तैयार हैं, पाँचवां क़दम पाँचवे आसमान पर हज़रत हारून अलैहिस्सलाम इस्तिक़बाल के लिए खड़े हैं, छठे क़दम पर छठा आसमान हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम इस्तिक़बाल के लिए तैयार हैं, सातवें आसमान पर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम बैठे हुए हैं, यह इस्क़िबाल के लिए नहीं उठे यह तो बाप थे, सफ़ेद लम्बी दाढ़ी बैतुल-मामूर से टेक लगा कर बैठे हुए हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह बड़े मियाँ कौन हैं। यह आपके दादा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं। बैतुल्लाह की सीध में सातवें आसमान पर बैतुल-मामूर है फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके क़रीब हुए। मेरा बेटा आ जा, मेरा बेटा आ जा। सब ने कहा ﴿مرحبا باخ صالح﴾ लेकिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा ﴿مرحبا بن صالح﴾ सुब्हानल्लाह क्या बाप की शान क्या बेटे की शान। फिर सिदरतुल-मुन्तहा पर पहुँचे यहाँ से आगे मख़लूक़ नहीं जा सकती। जिबराईल अलैहिस्सलाम ने भी यहीं माज़रत कर दी कि मैं आगे नहीं जा सकता तो ऊपर से एक तख़्त उतारा उस पर बिठाया अपने अम्र-ए-कुन की क़ुदरत के साथ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अर्श को चीरते हुए आगे चले गए। अर्श के ऊपर सत्तर हज़ार पर्दे हैं। सत्तर हज़ार पर्दों को अल्लाह तआला ने उठाया अपने सामने बिठा कर फ़रमाया ﴿حبيبى ادنى منى﴾ ऐ मेरे हबीब क़रीब आ जाओ। जिस रसूल का इतना ऊँचा मक़ाम हो तो उसके तरीक़े में कितनी ताक़त होगी? और जो उसके तरीक़े को छोड़ेगा कहाँ निजात पाएगा। उसको कौन सी दुकानें निजात देंगी जो ऐसे अज़ीम नबी के तरीक़े को छोड़ दे।

नबी का दामन पकड़ो अल्लह दुनिया में भी चमकाएगा और आख़िरत में भीः

मेरे भाईयो! लाहौर का ताजिर हो या न्यूयार्क का ताजिर हो या लन्दन और मास्को या सिंगापूर का कारोबारी हो या कोरिया का दुकानदार हो उसकी निजात हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े को इख़्तियार करने पर मिलेगी वरना अल्लाह की नज़र से गिर जाएगा। किसी को माल का मिल जाना उसकी बड़ाई की अलामत नहीं है किसी का इक़्तेदार का मिल जाना उसकी बड़ाई की अलामत नहीं है।

अल्लाह तआला ने क़ैसर और सासान का दो हज़ार साल हुकूमत दी थी जो हज़रत उमर रज़ियल्लहु अन्हु के हाथों ख़त्म हुई। यह हुकूमत का मिल जाना कोई बड़ी चीज़ नहीं है अल्लाह राज़ी हो जाए और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े ज़िन्दगियों में आ जाऐं यह कामयाबी की दलील हे जो सारी दुनिया के इन्सानों को मर्दों औरतों को कामयाबी चाहिए तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर आना पड़ेगा। अरब बुत परस्त थे जिन्हें न खाने को कुछ मिलता था आपस की लड़ाइयों और पस्ती में गिरे हुए थे लेकिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दामन पकड़ा तो अल्लाह तआला ने ऐसा चमकाया कि काएनात उसका नमूना पेश नहीं कर सकती जिनके जनाज़े पर फ़रिश्ते उतारे जा रहे हों। हज़रत साद बिन माज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु का जब इन्तेक़ाल हुआ तो हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए। फ़रमाने लगे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आज कौन फ़ौत

हुआ है, आज अर्शे इलाही खुशी से झूम रहा है कि आज किसी की आमद है। रूह अर्श पर जा कर सज्दा करती है ﴿اهتز عرش الرحمن﴾ अर्शे रहमान खुशी से झूम रहा है कौन है आने वाला। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि साद ज़ख़्मी था शायद उसका इन्तेक़ाल हुआ हो ﴿ما ذا فعل سعد﴾ साद का क्या हुआ, किसी ने कहा इन्तेक़ाल कर गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जल्दी चलो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तेज़ी से जा रहे थे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे दौड़ रहे थे उनकी चादरें कांधों से गिर रही थीं, जूतों के तसमें टूट रहे थे। उनमें से किसी ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ﴿اتعبتنا﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें थका दिया ज़रा आहिस्ता तो चलें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जल्दी चलो कि फ़रिश्ते हम से पहले साद को उठा न लें और ग़ुस्ल न कर लें और हम उस ग़ुस्ल से महरूम हो जाएं। ये कल तक बुत परस्त थे। माविया बिन माविया लैसी रज़ियल्लाहु अन्हु मदीने में हैं। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तबूक में हैं सूरज बड़ा चमकता हुआ निकला इतने में हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम आए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दर्याफ़्त किया आज सूरज में बड़ी चमक है क्या बात है? हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम कहने लगे नहीं या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह सूरज की चमक नहीं है आज आपके सहाबी माविया बिन माविया लैसी रज़ियल्लाहु अन्हु का इन्तेक़ाल हुआ है और उनके जनाज़े में ऐसे सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उतरे हैं कि जिन्होंने कभी ज़मीन पर क़दम

नहीं रखा और जनाज़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पढ़ाना है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं पढ़ाऊँ? मैं यहाँ वह मदीने में, उन्होंने कहा हुक्म यही है और जनाज़े को उठा कर सामने रख दिया। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जनाज़ा पढ़ा दिया तो हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम ने जनाज़े को उठा कर वापस मदीने पहुँचा दिया। कल बुतों के पुजारी आज इतने ऊँचे परवाज़ कर रहे हैं। उमर बिन जमू का शुरू में इस्लाम पर शरह सदर नहीं था, बेटा मुसलमान हो गया था। इन्होंने कहा मैं बुतों को नहीं छोड़ सकता। बेटा रात को आया बुतों को उठा कर बाहर कचरे में डाल दिया, जब सुबह को उठे तो देखा ख़ुदा ग़ाएब है। इधर उधर देखा तलाश में बाहर निकले तो क्या देखते हैं कि उनका ख़ुदा कूड़े के ढेर में पड़ा हुआ है, हाए मेरे ख़ुदा तेरे साथ किसने यह सुलूक किया अगर मुझे पता चल जाए तो मैं उसकी गर्दन उड़ा दूं। उठा कर लाए नहला धुला कर फिर घर में रख कर इबादत शुरू कर दी, अगली रात बेटे ने फिर उठा कर बाहर फेंक दिया, सुबह हुई तो ख़ुदा फिर ग़ाएब, कई दफ़ा ऐसा हुआ। एक दिन कहने लगे हाए मेरे रब मैं बूढ़ा हो गया हूँ तेरा पहरा नहीं दे सकता लिहाज़ा तलवार तेरे पास रख देता हूँ जो आएगा ख़ुद ही उसे निमटा लेना। अपनी तलवार अपने ख़ुदा के सामने रख दी और ख़ुद जा कर सो गए। यह सत्तर साल के बूढ़े थे जब बेटे ने रात को आ कर देखा तो तलवार साथ पड़ी है वह बाहर निकल गया और पूरे मदीने में घूमा तो एक मुर्दा कुत्ता पड़ा हुआ था उसका जिस्म फटा और फूला पड़ा था उसकी टांगे ऊपर उठ गयी थीं। उसको उठाकर घर लाए और उसकी टांगे

उस कुत्ते की टांग के साथ बांध कर फिर बाहर फेंक दिया। बाप जब सुबह को उठे तो ख़ुदा ग़ाएब, तलवार पड़ी है, हाय अफ़सोस बेड़ा ग़र्क़ हो जाए कौन मेरे ख़ुदा की तौहीन करता है? बाहर फिरते फिरते देखा तो कुत्ते के साथ टांगे बंधी पड़ी हैं। अरे तेरी अक्ल पर अफ़सोस है अगर यह ख़ुदा होता तो कुत्ते के साथ टांगे न बांधता। फिर इस्लाम पर शरह सदर हो गया। इस हालत में सत्तर साल गुज़र गए और कलिमा पढ़ कर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक साल गुज़र गया है। अब ओहद का मौक़ा आ गया और यह एक टांग से माज़ूर हैं और कहते हैं कि मैं भी जाऊँगा, शहीद हो जाऊँगा। बेटों ने मना कर दिया, इस तरह झगड़ा हुआ, मुक़दमा मस्जिदे नबवी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश हुआ, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आप माज़ूर हैं आप पर जिहाद फ़र्ज़ नहीं है तो कहने लगे कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरा दिल चाहता है कि मैं इस लंगड़े पाँव जन्नत में चलूं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इसे जाने दो, यह शौक़ीन है। सत्तर साल कुफ़्र के एक साल नबी की ग़ुलामी ने कहाँ तक पहुँचा दिया। ओहद की जंग में शहीद हो गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र इन लाश पर हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल ने फ़रमाया कि मैं इनको जन्नत की ज़मीन को रौंदते हुए देख रहा हूँ लंगड़े पाँव के साथ नहीं बल्कि सही पाँव के साथ।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के भाई कौन हैं?

आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿لـــو حـــــدت ان ارى

اخوانی﴾ मेरा दिल चाहता है कि मैं अपने भाईयों को देख लूं। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया हम आपके भाई नहीं या रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम। फ़रमाया ﴿انتم اصحابی﴾ तुम मेरे सहाबी हो मेरे दोस्त हो ﴿اخوانی الذین امنو بی ولم یرانی﴾ जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दुनिया से जाने का वक़्त आया तो एक हफ़्ते पहले सब को जमा किया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सब को दुआ दी ﴿آزکم الله حفظکم الله نصرکم الله رفعکم الله زادکم الله ایدکم الله قوکم الله سلمکم الله﴾ इतनी लम्बी दुआ दी उसके बाद फ़रमाया मेरे जाने का वक़्त क़रीब है मैं तुम्हें सलाम करता हूँ तुम्हारे बाद जो आएंगे उनको भी सलाम करता हूँ, उनके बाद जो आएंगे उनको भी सलाम करता हूँ और तुम गवाह रहो क़यामत तक जो मेरी उम्मत आएगी उन सबको सलाम करता हूँ।

हमें अपनी क़द्र क़ीमत पहचाननी चाहिएः

मेरे भाईयो! दुनिया और आख़िरत की इज़्ज़तें यहाँ छिपी हुई हैं। इसकी एक सुन्नत सातों आसमान और ज़मीन से ज़्यादा क़ीमती है जब किसी कपड़े के थान में या कपड़े में से कोई धागा गिर जाए तो उसकी क़ीमत गिर जाती है। ताजिर भाई जानते हैं सिर्फ़ एक धागा निकल जाने से क़ीमत गिर जाती है और क्वालिटी बदल जाती है। अब हम ख़ुद सोचें जो ज़ात इतनी ऊँची हो अगर उसकी एक अदा हम से निकल जाए तो हमारी क़ीमत अल्लाह के यहाँ गिरेगी या नहीं। हमारे ऊपर फ़र्ज़ ऐन है कि हम अल्लाह की माने और अल्लाह के नबी की मानें।

यह मानना हमारे अन्दर पैदा हो जाए और यह सीखने से अन्दर पैदा होती है बग़ैर सीखे पैदा नहीं होती।

हम ने अपने वजूद का इस्तेमाल इस तरह नहीं सीखा जिसकी डोर अल्लाह और उसके रसूल के हाथ में चली जाए। एक आदमी आपके साथ डीलिगं कर रहा है और अन्दर से थका हुआ है और परेशान है और दिल ही नहीं चाहता बात करने का लेकिन फिर भी ख़न्दापेशानी से बात कर रहा है। माल का लालच और इस की तमा इसकी तबियत को तोड़ कर आप से बात करवा रहा है और अपनी बात मनवा रहा है। इसी तरह एक आदमी दुकान पर बैठा हुआ है और ऊंघ रहा होता है वह आपको देख कर खड़ा हो जाता है। चाय की प्याली हाथ में होती है उसको रख कर खड़ा हो जाता है और उसके जिस्म पर माल का क़ब्ज़ा है। इधर आर्डर आता है वह उसी के मुताबिक़ अपने जिस्म को इस्तेमाल कर रहा होता है अगर अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से कोई आर्डर आ जाए तो उससे हमारे जिस्म में कोई हलचल पैदा नहीं होती क्योंकि हमने उसको सीखा ही नहीं। मसलन हम गाड़ी चलाना सीख जाते हैं, चलाने का निज़ाम दिल में आ जाता है। सामने कोई रुकावट आती है तो पाँव ख़ुद ब ख़ुद ब्रेक पर चला जाता है। अब उसको बताने की ज़रूरत नहीं कि ब्रेक मारो आगे रुकावट है ऐसा कोई नहीं करता क्योंकि हम ने वक़्त लगा कर इस को सीखा है तो पाँव और हाथ ख़ुद ब ख़ुद इस्तेमाल होते हैं। इसके लिए न कोई उसको बताता है वह इसके लिए ख़ुद अपने को तैयार करता है क्योंकि इस निज़ाम को सीखा हुआ है इस लिए हाथ और पाँव ख़ुद ब ख़ुद सही इस्तेमाल होत हैं।

आँख का ग़लत इस्तेमाल ईमान ले जाता हैः

अब दूसरी तरफ़ आ जाइए कोई आदमी बाज़ार में जा रहा है सामने लड़की खड़ी है अब यहाँ आँखों की ब्रेक लग जानी चाहिए, आँख झुक जाए और रुक जाए क्योंकि अन्दर का निज़ाम सही नहीं है, इस पर मेहनत नहीं हुई है, अन्दर का निज़ाम अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हवाले नहीं किया हुआ है, ख़्वाहिशात और शैतान के हवाले किया हुआ है इस लिए आँख खुली रहती है। गाड़ी टक्कर से आँख की टक्कर ज़्यादा ख़तरनाक है, गाड़ी की टक्कर जान लेगी और आँख की टक्कर ईमान लेगी। यह क्योंकि सीखा नहीं है इस लिए ब्रेक नहीं लगता। हाथ ग़लत तरफ़ जा रहा है उस पर अल्लाह और रसूल का क़ब्ज़ा हो तो खुद ब खुद उसको रोक कर पीछे ले जाता, इसी तरह ज़ुबान ग़लत बोलने लगती है, अल्लाह और रसूल का इस की ज़ुबान पर क़ब्ज़ा होता तो ज़ुबान पर ब्रेक लग जाता। ख़्वाहिश ग़लत जगह चलने लगती है अगर अल्लाह रसूल का क़ब्ज़ा होता तो वहीं रुक जाती।

एक बुज़ुर्ग का एक औरत को दावत देनाः

अरीक़ बिन हुसैन उनकी बुज़ुर्गी की बड़ी शोहरत हो गई। उसकी बुज़ुर्गी का चर्चा हुआ लोग दिलअज़ीज़ हो गए। कुछ वरग़लओ लागों ने एक औरत को पकड़ा कि इसको दरग़लाओ तो वह बड़े बनाओ सिंगार करके ख़ूब ज़ेब व ज़ीनत के साथ रात की तारीकी और तन्हाई में उसके पास चली गई और उसको दावत दी उन्होंने देखा और कहा बहन आज जिस हुस्न पर तुझे

नाज़ है उस दिन को याद कर जिस दिन तेरे ख़ूबसूरत चेहरे को कीड़े मकौड़े खा रहे होंगे और तेरी आँखों में कीड़े चल रहे होंगे जिससे तू लोगों को गुमराह करती है और तेरी आँखें बड़े बड़े कीड़ों की गिज़ा बन चुकी होगी और वह वक़्त जिस दिन क़ब्र तेरे जिस्म को एक झटके से रेज़ा रेज़ा कर देगी तेरे जिस्म की हड्डियों के टुकड़े टुकड़े हो जाएंगे। जब इन बुज़ुर्ग हस्ती की बातें सुनी तो बेहोश हो कर ऐसी गिरी कि तीन दिन तक होश नहीं आया और ऐसी तौबा की कि अपने वक़्त की सबसे बड़ी ज़ाहेदा और आबेदा औरत बनीं।

हम अपने वजूद को अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मर्ज़ी पर डालना सीखें:

और यह सीखा हुआ इन्सान है कि मेरी शहवत कहाँ जानी चाहिए और कहाँ रुकनी चाहिए और ब्रेक ठीक हो चुके हैं पीछे से अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से जो हुक्म आ रहा है उसकी वजह से जिस्म की हरारत में अराम और सुकून है। हमारा जिस्म इससे बाग़ी है, बग़ावत है अल्लाह और उसके रसूल के साथ। मेरे भाई इसको सीखना पड़ेगा। उस तरफ़ हमारी हरकत हो जिस तरफ़ अल्लाह चाहता है और उस चीज़ से रुक जाएं जिससे अल्लाह नाराज़ है। हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हो गए जब सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा को पता चला तो बड़ी तेज़ी से आयीं जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा आ रही हैं कहा उसको रोको। यह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी थीं कि हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को देख कर बे क़ाबू न हो

जाएं। हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु दौड़ कर गए यह उनके बेटे थे। अम्मा रुक जाओ, रुक जाओ। एक मुक्का मारा तो उड़ कर इधर जा गिरे। जब पीछे से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आवाज़ आई तो एक दम रुक गयीं और ब्रेक लगाई और कहा कि हम अल्लाह और उसके रसूल के अमूर पर राज़ी हैं तो हमारा यह सिसटम ख़राब हो चुका है। जिस गाड़ी का ब्रेक ख़राब हो आप उस पर सवार होंगे? चाहे एक करोड़ की गाड़ी हो कोई भी सवार नहीं होगा। मेरे दोस्तों हमारे वजूद की गाड़ी की ब्रेक फेल हो चुकी हैं फिर इसको लेकर क्यों जाते हो दुकान में, बाज़ार में। पहले उसे ठीक तो कर लें वरना ऐसी टक्कर होगी जिससे जहन्नुम के अलावा कोई ठिकाना नहीं मिलेगा। हम इस वजूद को अल्लाह और रसूल की मर्ज़ी पर डालना सीखें।

तबलीग़ हर वक़्त और हर मौसम में करनी हैः

और यह तबलीग़ का काम और अब नबी कोई नहीं आएगा। इसको पहचानना सीखिए। गर्मी हो सर्दी हो हम आ रहे हैं ब्रेक की पुकार पर हम जा रहे हैं। जब कभी किसी मस्जिद में बेचारे मौलवी साहब देर से आते हैं तो सारी मस्जिद में नमाज़ियों ने शोर मचाया होता है। पाँच मिनट की ताख़ीर बर्दाशत नहीं है और यही नमाज़ी साहब किसी बड़े से मिलने जाते हैं तो एक घन्टा बाहर बैठे हुए होते हैं कि अभी मुलाक़ात का वक़्त नहीं मिला है, गाड़ी के इन्तेज़ार में पौन घन्टे स्टेशन पर बैठे हुए हैं लेकिन हम ने जिस्म को इसका ताबे बनाया हुआ है और उस तरफ़ का ताबे नहीं बनाया है।

﴿بیوتیفی الارض المساجد﴾ अल्लाह कहता है मेरा घर ज़मीन में

मस्जिदें हैं ﴿مساری زوارها﴾ जो मेरे घर में आता है गोया मेरी ज़ियारत करता है ﴿فطوبی عن طظهر لبيته﴾ खुशख़बरी सुना दो जो मेरे घर में आ कर मेरी ज़ियारत करता है।

﴿حق علی من ذادنی ان يكرم زائره﴾ मेरे ऊपर वाजिब है कि मस्जिद में आने वाले की ज़ियारत करूं अगर जिस्म का निज़ाम इस तरफ़ चला हुआ हो तो जितनी देर मस्जिद में गुज़र जाए तो कोई परवाह न होगी अदालत के सहन में तीन तीन घन्टे बैठना गवारा है। हम च्युंट में थे दिसम्बर का महीना था तेज़ बारिश तेज़ हवाएं चल रही थीं सर्दी सख़्त थी। हम गश्त करते करते एक दुकानदार से मिले तो कहने लगे मौलवी साहब इस वक़्त में क्या कर रहे हो जाओ मस्जिद में बैठ जाओ मस्जिद में कौन सा हीटर लगा हुआ है। वहाँ भी सर्दी यहाँ भी सर्दी, तुम यहाँ क्या कर रहे हो जाओ घर में जाकर बीवी के साथ बैठ जाओ और चाय पियो, मज़े उड़ाओ। उसने कहा हमारी मजबूरी है कि दुकान खोलना है ख़्वाह कोई आए या न आए, हम ने कहा हमारी भी मजबूरी है, अल्लाह की सदा लगानी है चाहे कोई आए या न आए, कोई सुने या न सुने हमारी मजबूरी है चाहे बारिश हो, हवा हो, सर्दी हो, गर्मी हो, बर्फ़ हो, भाप हो अल्लाह की आवाज़ लगानी है।

तबलीग़ इस उम्मत के ज़िम्मे हैः

हमारे अन्दर वह निज़ाम फेल हो चुका है जिस में चैन व सुकून के साथ अल्लाह के अम्र में लगे हुए हों। इसको हम ने सीखा हुआ नहीं, सीखने के लिए कहते हैं कि जाओ भाई अल्लाह के रास्ते में घूमों और फिर ﴿ولا نبی بعدی﴾ मेरे बाद कोई

नबी नहीं ﴿لا امتی بعد امتی﴾ मेरी उम्मत के बाद कोई उम्मत नहीं।

مثلی کمثل الانبیآء من قبلی کمثل رجل بنی بیتا فا جمله
واحسنه الالبنة ترك خالية فجعل الناس بطوفون به ويعجبون له
يقولونه الا وضعت هذه فاالبنة الاخرة، وانا خاتم النبين.

हमारी मिसाल उस शख़्स की सी है जिसने ख़ूबसूरत घर बनाया लेकिन उसमें एक पत्थर नहीं लगाया। सारे लोग कहते हैं कि घर तो बहुत ख़ूबसूरत है अगर एक पत्थर और लग जाता तो कामिल हो जाता। आप ने फ़रमाया वह घर और वह महल नबुव्वत का महल है और वह पत्थर मैं हूँ मेरे अलावा नबुव्वत का घर नामुकम्मिल है, नाक़िस है। मेरे बाद नबी नहीं, तुम्हारे बाद उम्मत कोई नहीं। पहले नबी आ कर लोगों को दीन बताते थे, समझाते थे, सिखाते थे और अब कौन करेगा और यह ज़िम्मेदारी कौन लेगा?

इस लिए फरमाया ﴿فليبلغ الشاهد الغائب﴾ अब मेरी उम्मत यह काम करेगी ग़ाएबीन तक मेरे एहकाम व पैग़ाम पहुँचाएगी। लाहौर वाले पिन्डी वाले, कराची वाले पूरे आलम के मुसलमान मेरे पैग़ाम को ग़ैरों तक पहुँचाएंगे यह काम नबी ने हमारे ज़िम्मे लगाया है। तबलीग़ी जमात ने नहीं लगाया। यह कोई नस्ली काम नहीं कि फ़लाँ क़बीले वाले करेंगे।

दीन पर लाने की मेहनत एक अज़ीम मेहनत हैः

मेरे दोस्तो और भाईयो! जब मुस्तहब मिट रहा होता है तो तबलीग़ का काम मुस्तहब होता है अगर सुन्नतें मिट रही हों तो मसनून होता है, फ़र्ज़ मिट रहे हों तो तबलीग़ फ़र्ज़ होती है। बाज़ार में कितने लोग आते हैं और नमाज़ी कितने होते हैं

हांलाकि हमारे बज़ार में झलक होनी चाहिए ﴿لا تلهيهم تجارة ولا بيع عن ذكر الله الخ﴾ इधर अल्लाहु-अकबर हो उधर दुकानें बन्द होनी शुरू हो जाएं, क्या हुआ भाई तो आवाज़ आए कि बड़े अल्लाह ने बुलाया है जिसने दुकान दी है उसी ने बुलाया है जिसने रिज़्क़ दिया है उसने कहा आ जाओ शुक्र अदा करो मेरा, मेरे शुक्र के लिए मस्जिद में आ जाओ। यह मुसलमानों के बाज़ार हैं उसमें अज़ान के साथ ही यह आवाज़ होती कि चलो अल्लाह की तरफ़ चलो अल्लाह की तरफ़। सारी कारोबारी ज़िन्दगी मुअत्तल हो जाती है कि अल्लाहु-अकबर की पुकार आ गई।

कितने हमारे भाई ऐसे हैं कि जिनको एक हफ़्ते में एक सज्दा नसीब नहीं होता सिवाए जुमा के और कितने ऐसे हैं जिनको जुमा भी नसीब नहीं सिवाए ईद के और कितने ऐसे होंगे जिनको ईद की नमाज़ नसीब नहीं।

फ़ैसला बाद में हम गश्त करके दो आदमियों को मस्जिद में लाए हमारी दावत से बड़े मुतास्सिर हुए और कहने लगे कि हम ज़िन्दगी में पहली बार मस्जिद में आए हैं। हम ने कहा इस मस्जिद में पहली दफ़ा कहा नहीं नहीं मस्जिद में पहली दफ़ा आए हैं, हम ने कहा पहले कभी नमाज़ पढ़ी नहीं? उन्होंने कहा नहीं पढ़ी। चालीस साल के दर्मियान उनकी उमरें थीं। हम ने कहा जुमा की नमाज़, ईद की नमाज़? उन्होंने कहा न जुमा न ईद हम ने पढ़ी हैं।

इससे ज़्यादा अजीब बात एक दिन बैतुल्लाह से बाहर निकला सामने सड़क पार की, सामने टैक्सी थी। उनसे कहा फ़लाँ जगह जाना है। जब उनके साथ बैठा तो वह हर सामने से गुज़रने वाले को गालियां दे रहा था तो मैंने सोचा इसको दावत देना चाहिए।

जब दावत देना शुरू किया तो उसने कहा कि मैंने दस साल से बैतुल्लाह नहीं देखा तेरी क्या सुनूं।

बैतुल्लाह से सड़क पार करके टैक्सी स्टैन्ड है दर्मियान में फ़र्लांग का फ़ासला है। उसका दिल इतना सख़्त हो चुका है कि जिस बैतुल्लाह को देखने के लिए सात बर्रे आज़मों से लोग ख़िंच खिंच कर आते हैं और एक आदमी दस साल से बैतुल्लाह की ज़ियारत नहीं करता। उसकी बातें सुन कर मेरा चेहरा के आसार बदले तो उसने कहा कि क्यों परेशान होते हो मेरे जैसे यहाँ सैकड़ों हैं। मेरे भाईयो! दीन इस्लाम की क़द्र करो। शीशे में थोड़ा सा दाग़ पड़ जाता हे तो नौकर से कहते हैं कि शीशे को साफ़ करो, दिल पर कितने बड़े बड़े दाग़ पड़े हुए हें उनको साफ़ नहीं करना। कपड़ा मैला हो जाए तो उसको उतार कर फ़ेंक देते हैं और दिल को कितना गंदा किया हुआ है कि जिसमें ग़लाज़तों के गटर हैं दिल तो अल्लाह के लिए था ﴿لا اسى فى الارض ولا فى السماء﴾ इशदि बारी तआला है– न मैं आसमान पर आता हूँ और न ज़मीन पर बल्कि मैं अपने बन्दे के दिल में आता हूँ। मुसलमान का दिल अल्लाह का अर्श है जिसमें अल्लाह अपनी मुहब्बत को उतारता है अगर हम अपने लिए गंदा कपड़ा पसन्द नहीं करते तो अल्लाह के लिए गंदा दिल क्यों पसन्द किया हुआ है अपने दिल को बदलना होगा मेरे भाईयो!

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद सारी दुनिया के पास अल्लाह और रसूल का पैग़ाम लेकर जाना हमारी ज़िम्मेदारी है। सबसे पहले दीन इस्लाम की मेहनत ताजिरों ने की है। सबसे पहला मुसलमान मक्का का बड़ा ताजिर है रेशम का कारोबार करने वाला और सबसे पहले कलिमा पढ़ने वाला है और उससे

पहले कलिमा पढ़ने वाली हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं मक्का की बड़ी ताजिर हैं।

इस्लाम को उरूज और ज़वाल दो तब्क़ो से मिला है:

सबसे पहले इस्लाम को ताजिरों से सहारा मिला और अब ताजिर ही इसको तोड़ रहे हैं। दो तब्क़े इस्लाम को आबाद और बर्बाद करते हैं एक ताजिर दूसरा ज़मींदार। ये दोनों मिलकर ही इस्लाम की तामीर करते हैं मैं अपनी तरफ़ से नहीं हदीस से कह रहा हूँ ﴾اذا تبايعتم بالعينه﴿ यहाँ पर ताजिर आ गया ﴾ورضيتم اخذتم اذنا بالبقر وتركتم الجهاد سلط الله عليكم﴿ यहाँ ज़मींदार ﴾بالضرى الضلة﴿

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम परेशान हो कर हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आते हैं कि ऐ ख़दीजा मेरा बिस्तर उठा दो, मेरी राहत और आराम के दिन ख़त्म हो गए। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा क्या हुआ? मेरे रब ने मुझ से कहा अपनी क़ौम को डराओ ﴾قم فانذر وربك فكبر وثيابك فطهر الخ﴿ अभी तक छिप कर दावत दी जा रही थी अब खुल कर क़ौम को दावत देने का वक़्त आ गया है कि क्या करूं तीन सौ साठ मानने वालों को कैसी दावत दूं कि एक की मानो, दिल टूटा हुआ है परेशान और ग़मगीन हैं तो उस वक़्त हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ﴾انت اول تدعوا وانا اول اهتدى﴿ आप सबसे पहले दावत देने वाले हैं और सबसे पहले कलिमा पढ़ने वाली मैं हूँ। सबसे पहले एक ख़ातून ताजिर से इस्लाम को इज़्ज़त दी गई उसके बाद मक्का के बड़े ताजिर मर्द से इस्लाम को इज़्ज़त मिल

गई, खुलफ़ाए राशिदीन ताजिर हैं और अशरा मुबश्शरा सबके सब ताजिर हैं। आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक ही महफ़िल में बशारत दी ﴿ابوبکر فی الجنة، عمر فی الجنة، عثمان فی الجنة،علی فی الجنة، طلحة فی الجنة، زبیر فی الجنة،سعد فی الجنة، عبدالرحمن فی الجنة، سعید فی الجنة، ابوعیدہ فی الجنة﴾ ये दस अशरा मुबश्शर कहलाते हैं उनको एक ही महिफ़ल में जन्नत की बशारत सुनाई गई। ये दस के दस ताजिर हैं। इस्लाम के दस सुतून थे अब्दुर्रहमान की तिजारत सारे पाकिस्तान वाले मिल कर नहीं कर सकते हैं। जब उनका इन्तेक़ाल हुआ तीन अरब दस करोड़ बीस लाख दीनार का तरका छोड़ा है। दीनार काग़ज़ी नोट नहीं सोने के सिक्के हैं। आज के हिसाब से ज़रब तक़सीम करो। एक हज़ार घोड़े, दस हज़ार बकरियां, एक हज़ार ऊँट फिर सोने की ईंटें जिनको उनकी औलाद काट काट कर तक़सीम करने लगी तो काटते काटते आरियां टूट गयीं और यह उन ऊपर के दस सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु में से है।

मुलसमान मुसलमान बन कर ज़िन्दगी गुज़ारें:

हम कहते हैं कि आप इस्लाम के सुतून बन जाएं ताजिर बन कर न चलें बल्कि मुसलमान ताजिर बन के चलें, ज़मीनदार बन कर न चलें बल्कि मुसलमान ज़मींदार बन कर चलें, हाकिम बन कर न चलें, आफ़िसर बन कर न चलें बल्कि मुसलमान आफ़िसर बन कर चलें। जिनके अन्दर दो ग़म होते हैं एक यह कि मैं खुद भी दीन पर चलूं, दूसरों को भी दीन पर चलने की, दीन को फैलाने की दावत दूं, यह मेरी ज़रूरत है ज़रूरत से बढ़ कर मक़सद है हम कोई तहरीक नहीं चला रहे हैं या कोई जमात

नहीं बना रहे हैं बल्कि हम कहते हैं कि हर मुसलमान कलिमा पढ़ने के नाते इस्लाम पर चलने का पाबन्द है और ﴿لا نبی بعدی﴾ मेरे नबी के बाद कोई नबी नहीं इस अक़ीदे की वजह से इस्लाम को दूसरों तक पहुँचाने का पाबन्द है और यह आगे पहुँचाना अल्लाह ने हमारे ज़िम्मे किया है बाल बच्चों के हुक़ूक़ अल्लाह ने बताए, माँ बाप के हक़ूक़ अल्लाह ने बताए, घर उसके मसाइल अल्लाह ने बताए, हलाल कमाई के लिए अल्लाह ने कहा है और उसी अल्लाह ने हम से कहा है कि मेरे दीन को दूसरों तक पहुँचाओ और उसमें जो क़ुर्बानी देनी पड़े तो क़ुर्बानी से गुरेज़ न करो यह हक़तलफ़ी नहीं है कि बीवी बच्चे छोड़ कर कहाँ जाए?

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यतीम के साथ शफ़क़त करना:

मैं कहता हूँ यह जहाँ लिखा है वह आप पढ़ते नहीं जहाँ लिखा हुआ वह वहाँ पढ़ो तो सही कैसे बच्चों को छोड़ कर चले जाते थे। जहाँ लिखा हे वहाँ पढ़ते नहीं। डाइजिस्टों में थोड़ी मिलेगा, टॉइम्स न्यूज़ में थोड़ी मिलेगा यह सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की ज़िन्दगी पढ़ने से पता चलेगा कि कैसे छोड़ छोड़ कर चले जाते थे अगर वे न छोड़ते तो हम मुसलमान कैसे होते। हज़रत बशीर बिन अक़बा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरे बाप अल्लाह के रास्ते में शहीद हो गए और उस वक़्त यह मासूम बच्चे थे और इनकी माँ पहले मर चुकी थी। मक्का छोड़ कर मदीने में आए। इस मासूम बच्चे की किफ़ालत कौन करेगा और कोई रिश्तेदार नहीं है अगर इस के बाप अल्लाह के रास्ते में चले जाएं तो इस बच्चे की रखवाली कौन करेगा। इस मासूम

बच्चे को छोड़ कर बाप जा रहा है। जब लश्कर वापस आ गया तो यह बच्चा अपने बाप का इस्तक़बाल करने के लिए मदीने से बाहर निकल कर लश्कर के रास्ते में जा कर बैठ गया जब पूरा लश्कर गुज़र गया और उसका बाप नज़र नहीं आया तो दौड़ के हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने आकर पुरनम आँखों से देखते हुए पूछने लगे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे बाप कहाँ हैं? उस वक़्त ये सात साल के बच्चे थे। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे ऐराज़ करते हुए चेहरा-ए-अनवर दूसरी तरफ़ फेर दिया कि इसको को किस तरह बताया जाए। इसी तरह चार मर्तबा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चारों तरफ़ मुँह फेरते रहे और यह बच्चा चारों तरफ़ दौड़ते हुए पूछ रहे हैं कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे बाप कहाँ हैं। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों में पानी भर आया और चेहरा-ए-अनवर पर छलक पड़े और रोने लगे और यह बच्चा कहता है कि मैं समझ गया, मैं हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की टांगों में चिमट पड़ा और रोने लगा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब न मेरे बाप रहे और न मेरी माँ रही, अब मेरा कौन है? तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको उठा लिया और कहा कि आज के बाद मैं तेरा बाप हूँ और आएशा तेरी माँ है। हम को इस काम को छोड़े हुए सदियां गुज़र चुकी हैं इस लिए हम नहीं जानते। जिस काम को छोड़ दिया जाए उसका तरीक़ा क्या पता चलेगा? एक आदमी नमाज़ ही नहीं पढ़ता तो उसको क्या पता है कि सज्दा कैसे करना है, रुकू और क़याम कैसे करना है? तहारत और वुज़ू

क्या होते है? जब वह मस्जिद में आकर नमाज़ शुरू कर दे तो इन सब का पता चल जाएगा। हमें इज्तेमाई तौर दीन का काम छोड़े हुए सदियाँ गुज़र गयीं, इन्फ़िरादी तौर पर हर दौर में रहा मुहद्दिसीन के ज़रिए, मुफ़स्सीरीन के ज़रिए और फ़ुक़हा के ज़रिए लेकिन हर हर मुसलमान इस काम को लेकर उठे तो इस इज्तेमाई काम को छोड़े हुए ज़माना गुज़र चुका है। लिहाज़ा हमें पता नहीं है कि अल्लाह ने क्या हुक्म दिया है दीन को फैलाने के लिए। सबसे बड़ी मौत शहादत है अगर बीवी बच्चों के हुक़ूक़ लाज़मी होते तो शहादत इतनी बड़ी मौत क्यों होती।

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु की जिहाद में शिरकतः

हज़रत हंज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु की रात को शादी हुई सुबह को उठे सिर पर पानी डाला है और आवाज़ लगती है कि मुसलमानों को शिकस्त हो गई तो नहाए बग़ैर मैदान की तरफ़ भागे गए सिर्फ़ एक रात की शादी थी और अल्लाह के रास्ते में जा कर शहीद हो गए तो उनकी लाश हवा में उठ गई, आसमान के दर्मियान फ़रिश्ते आ गए और जन्नत के पानी से ग़ुस्ल दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि हंज़ला को ग़ुस्ल दिया जा रहा है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अरे यह क्या हो गया है शहीद को तो ग़ुस्ल नहीं दिया जाता तो फिर लाश नीचे आ गई। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने देखा कि सिर के ऊपर पानी टपक रहा है बाद में तहक़ीक़ करने से पता चला कि वह जनाबत की हालत में शहीद हुए थे तो अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों के ज़रिए ग़ुस्ल का इन्तेज़ाम फ़रमाया। उनकी बीवी के हुक़ूक़ का क्या हुआ? क्या उनके घर

उजड़ गए या नहीं? उनके घर तो वीरान हुए और हमारा ज़हन कहता है कि बीवी बच्चों को छोड़ कर चले जाना कहाँ का इस्लाम है। इस से आप हज़रात ख़ुद अन्दाज़ा लगाएं और फ़ैसला कर लें।

हमारे मक़ासिद ही बदल गएः

मेरे भाईयो और दोस्तों! इस्लाम को फैलाना और उस पर चलना भी हमारे ज़िम्मे है उसको सीखने के लिए हमें घरों से निकलना पड़ता है और उस ज़माने में माँ बाप ने अपने हुक़ूक़ मॉफ़ कर दिए थे कि जाओ दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाओ। जन्नत में इकठ्ठे रहेंगे दुनिया रहने की जगह थोड़े है यहाँ फिर आख़िरकार जुदाई है, कितना ज़िन्दा रहेंगे आख़िर मरेंगे ﴿عش ما شئتم ميتون﴾

हम में कौन ऐसे हैं जिन्होंने अपने बच्चों को तैयार कर दिया है कि जाओ दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाओ। हम तैयार कर रहे हैं डाक्टर बन जाओ, इन्जीनियर बन जाओ और ताजिर बन जाओ कारोबार को संभाल लो और वे तैयार कर रहे थे जाओ दुनिया में अल्लाह का दीन पहुँचाओ, ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचाओ।

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु का वाक़ियाः

हबीब बिन ज़ैद को हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भेजा मुसैलमा बिन कज़्ज़ाब के पास। मुसैलमा ने उनको ऐसी बेदर्दी के साथ शहीद किया कि पहले एक हाथ काटा फिर दूसरा हाथ काटा फिर एक पाँव फिर दूसरा पाँव फिर उनकी ज़ुबान

काटी। इस तरह उनके टुकड़े टुकड़े करके उनका सारा गोश्त पोस्त उतार कर अपने हाथ से उठाया जिस तरह बकरे के टुकड़े टुकड़े कर दिया जाता है। मुसैलमा का दावा था और वह उन सहाबी से यह बात कहलवाना चाहता था कि तुम मेरी नबुव्वत का इक़रार करो और वह कहते थे कि नहीं। इस तरह जब उनकी ज़ुबान को काटा तो सिर हिलाकर उसकी नबुव्वत का इन्कार करते रहे यहाँ तक कि शहीद हो गए जब यह ख़बर इनकी वालिदा हज़रत उम्मे आमरा रज़ियल्लाहु अन्हा को पहुँची कि तेरे बेटे को मुसैलमा ने शहीद कर दिया तो ग़ैरते ईमान से भरपूर माँ ने जवाब दिया कि इस दिन को देखने के लिए ही मैं ने इसको दूध पिलाया था ﴿لهذا اليوم ارضعته وعند الله احتسبته﴾ मैं भी अल्लाह की रहमत से उम्मीद करती हूँ कि मेरे बेटे की वजह से मेरी भी बख़्शिश हो जाएगी। हम में से किसी का बेटा डाक्टर बन जाए तो कहते हैं कि इसी दिन को देखने के लिए मैंने इसकी परवरिश की थी और पाला था।

हमारी हालतः

सदियां गुज़र गयीं कि उम्मत ने सिवाए कारोबार के और कोई मशग़ला ही न समझा। मेरे भाईयो यह निकल कर समझने की चीज़ है। सारी दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम पहुँचे, सारे जहां में हिदायत फैले, सारी दुनिया दीन की तरफ़ आए यह आपके ज़िम्मे है। मुसलमान ताजिर बन मुबल्लिग़ ताजिर बन कर दुनिया में अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाओ हर आने वाले को दावत दो हर जाने वाले को दावत दो। आप हैरान होंगे कि अल्लाह ने ताजिरों में सलाहियत रखी है। अशरा मुबश्शरा (दस सहाबा जिनको हुज़ूरे

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुनिया ही में जन्नती होने की बशारत दी थी) ताजिर थे, अन्सार ज़मींदार थे क़ुर्बानी के लिहाज़ से ज़्यादा क़ुव्वत होती है, तदबीर और तन्ज़ीम में ताजिर आगे होता है।

इस्लाम पर मुश्किल वक़्तः

एक ज़माना ऐसा आया है इस्लाम पर कि ऐसा लगता था कि अब इस्लाम सफें हस्ती से मिट जाएगा। यह छः सौ दस हिजरी की बात है जब बग़दाद की ईंट से ईंट बज गई और हलाकू खां ने सारे बग़दाद को तहस नहस कर दिया। वह अज़ाब बन कर और कहर बन कर नमूदार हुआ और छः सौ छियानवे में यह हलाक हो गया और यह नज़र आता था कि अब तीन चार दिन बाक़ी हैं थोड़ी देर बाद इस्लाम सफ़े हस्ती से मिट जाएगा।

तुर्कमानिस्तान के ताजिरों ने तातारियों में काम शुरू किया उस वक़्त तातारी इतनी बड़ी ताक़त बन चुके थे कि दुनिया की कोई ताक़त उनको ज़ेर नहीं कर सकती थी और यह मशहूर हो गया था कि कोई कहता कि तातारियों को शिकस्त हो गई तो कहा जाता था कि तुम झूठ बोलते हो।

चंगेज़ खां के चार बेटे थे, जोजी बड़ा बेटा था, जोजी, चुग़ताई, तुलोई। सबसे बड़े को उसने सलतनत रूस की दी थी, बग़ताई को अपना कैपिटल दिया था चुग़ताई को क़राकक का इलाक़ा दिया था और तुलोई को उसने तर्कमानिस्तान का इलाक़ा दिया था और यह हलाकू खां तुलोई का बेटा था। बड़ा बेटा जोजी था उसका पोता पतरगा था।

तुर्कमानिस्तान के ताजिर या मिस्र के ताजिर पतरगा खां को मेहनत करके इस्लाम में लाए। कुछ लोग ज़ोर दे रहे थे कि तातारी बुध मत में दाख़िल हो जाएं दूसरी तरफ़ ईसाई इतने छा चुके थे कि हलाकू खां की बीवी ईसाई थी और उसका सपहसालार क़दबू खां ईसाई था और क़रीब था कि सारी तातार में ईसाई मज़हब फैल जाता, उसकी बीवी के साथ सात पहियों वाला गिरजा होता था। हलाकू खां ने बीवी और सपहसालार की वजह से मुसलमानों पर ज़्यादा ज़ुल्म किया। कुछ ताजिरों के दिल में ख़याल आया कि सौदा बाद में बेच देंगे पहले इस्लाम को फैला दें सौदा बाद में करेंगे। इसके बाद जितना इस्लाम फैला यह सारा इन ताजिरों के खाते में जा रहा है जिन्होंने तातार को मुसलमान किया, पतरगा खां मुसलमान हो गया। अपने मुसलमान होने के बाद इतने ज़ोर से दावत का काम चलाया कि पूरे रूस की तातार क़ौम मुसलमान होती चली गई। कुछ दिन पहले रूस के एक तातारी यूसुफ़ खां से मुलाक़ात हुई तो मैंने उन से कहा कि तेरे दादा ने हम को मारा है क़त्ल किया है। तुर्कमानिस्तान की सारी क़ौम इस्लाम के साए रहमत में आ गई कुछ ताजिरों की बरकत से।

ताजिर अपने मक़सद को जानेः

तो यह ताजिर बिरादरी तन्ज़ीम चलाना जानते हैं अगर आप हज़रात दीन के काम को भी काम समझें तो अल्लाह तआला और भी ज़्यादा देगा और दुकानों की हिफ़ाज़त फ़रमाएगा और साथ साथ इस्लाम भी फैल जाएगा। इसको तबलीग़ में निकल कर सीखो। अल्लाह ने इस काम को दुनिया में ज़िन्दा कर दिया है।

हज़रत मुजद्दिद अलफ़ सानी रहमतुल्लाहि अलैहि ने लिखा है कि अगर किसी काम को उठाना हो तो लाहौर से उसकी इब्तेदा करो चाहे ख़ैर का हो या शर का हो ﴿خیر کم فی الجاهلیة و خیر کم فی الاسلام﴾ जो शर में आगे होता है वह ख़ैर में भी आगे होता है, जो दुनिया में आगे होता है वह दीन में आगे होता है। मुझे ख़याल आया अल्लाह दावत का मर्कज़ तो निज़ामुद्दीन है और मुजद्दिद अल्फ़ सानी रहमतुल्लाहि अलैहि के ज़माने में पूरा बर्रेसग़ीर एक ही था।

शेर शाह सूरी कहा करता था कि मेरे ज़हन में है कि मैं लाहौर शहर हटा दूं और सफ़े हस्ती से मिटा दूं। वह लाहौर की इस्तेदाद को समझता था। उसकी तीन ख़्वाहिशें थीं एक लाहौर को ख़त्म करना, दूसरे इब्राहीम लोदी का मज़ार बनाना एक बहरी बेड़ा तैयार करना। छः साल की मेहनत के बाद अल्लाह ने उसको उठा लिया। यहूदी भी इस जगह की निज़ाकत को समझते थे।

तबलीग़ करने का फ़ायदा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़मानत:

लिहाज़ा आप हज़रात तबलीग़ के काम को अपना काम बना लें तो सारे पाकिस्तान में दीन का काम फैल जाएगा और पूरी दुनिया में तबलीग़ का काम फैल जाए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़मानत दी है कि अल्लाह का वायदा है ﴿يخلفه فی اهله وماله﴾ मैं उसकी जान का वारिस हूँ और उसके घर का वारिस हूँ। दुनिया में अज़ाब आने नहीं दूंगा अल्लाह से बड़ा

कफ़ील कौन होगा अगर हमारे घर बार और दुकानों का वारिस हो जाए तो हमें क्या ज़रूरत है और इन्तेज़ाम करने की।

बनी इसराईल का एक वाक़िया:

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बनी इसराईल के एक आदमी का वाक़िया सुनाया कि बनी इसराईल में एक आदमी ने दूसरे आदमी से कहा कि मुझे नक़द रक़म चाहिए और मैं परदेसी हूँ मेरा घर दरिया के पास बस्ती में वाक़े है। दूसरे आदमी ने कहा इस पर गवाह कौन होगा। क़र्ज़ख़्वाह ने कहा ﴾وكفى بالله شهيدا﴿ अल्लाह मेरा गवाह है दूसरे ने कहा फिर आपका कफ़ील कौन है? जवाब दिया ﴾وكفى بالله وكيلا﴿ उसने कहा कि कितने चाहिए? क़र्ज़ख़्वाह ने कहा तीन सौ। उसको दे दिया और तारीख़ वापसी के लिए तय हो गई। जब वह क़र्ज़ वापस करने के लिए आए तो दरिया में ज़बर्दस्त तुग़्यानी चल रही थी कश्तियां खड़ी हुई हैं तो यह आदमी सिर पकड़ कर दरिया के किनारे बैठ कर फ़रियाद करने लगा कि या अल्लाह मैंने आपको गवाह बनाया था और वकील बनाया था अब वक़्त मुक़र्ररा पर न पहुँच सका तो तेरी गवाही झूठ साबित होगी जितना मुझ से हो सका मैंने कर दिया आगे काम तू कर देना। एक बड़ा तिनका पड़ा हुआ था उसको अन्दर से खोदा और पैसे की थैली उसमें डाली और साथ उस में पर्चा लिख कर डाला कि दरिया में तुग़्यानी की वजह से मैं आ नहीं सकता, इस लकड़ी में डाल रहा हूँ और जिसको कफ़ील और गवाह बनाया था उसको कह रहा हूँ कि वह इसको तुझ तक पहँचा दें और लकड़ी को दरिया में डाल कर खुद घर चला गया दूसरी तरफ़ दाईन

किश्ती के इन्तेज़ार में बैठा हुआ था जब कोई किश्ती नहीं आई तो अल्लाह को गवाह बनाया झूठा और वायदा ख़िलाफ़ निकला। जब वापस जाने लगा तो वह लकड़ी नज़र आई तो कहा कि चलो घर के लिए ईंधन तो हाथ आ गया। वह लकड़ी दरिया की मौजों को चीरती हुई उसके पास दरिया के किनारे खड़ी हो गई थी फिर उठा कर घर लाया फिर चीरने के लिए कुल्हाड़ा ले कर आया। दो तीन मर्तबा कुल्हाड़ा उस लकड़ी पर पड़ी तो छन छन करते हुए दरहम बाहर आ गए और पर्ची भी उठा कर पढ़ी और उसकी बक़ाया भी मिल गए।

कुछ अर्से के बाद वह आदमी और कहने लगा कि मेरे साथ यह वाक़िया हुआ था और मैंने इस तरह कर दिया था। अब अगर वह रक़म न पहुँची हो तो यह ले लो तो उसने कहा अल्हम्दुलिल्लाह जिसको तुम ने वकील बनाया और गवाह बनाया उसने वह रक़म भी पहुँचा दी और ईंधन भी पहुँचा दिया।

मेरे दोस्तो हम दीन पर चलें दीन का काम करें। अल्लाह की क़सम अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम हिफ़ाज़त करेगा। अब बताओ भाई इस काम के लिए कौन तैयार है उधार नहीं नक़द चाहिए। अब फ़रमाइए कौन कौन चार महीने और चिल्ले के लिए नक़द तैयार है।

हमारी पैदाईश का मक़सद

मेरे भाईयो! अल्लाह ने हमें सारी दुनिया में दीन ज़िन्दा करना और सारी दुनिया के इन्सानों को दीन की तरफ़ बुलाना और सारी दुनिया के इन्सानों पर माल व जान ख़र्च करके उसको दोज़ख़ से बचा कर जन्नत पर लाना। उसके लिए अल्लाह ने हमें मुन्तख़ब फ़रमाया है। यह उम्मत इस काम के लिए मुन्तख़ब हुई है हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तुफ़ैल उसे यह काम मिला है।

उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ुसुसियत:

इसी वजह से यह उम्मत सब से पहले पहले जन्नत में जाने वाली बनेगी और हदीस शरीफ़ में आता है कि जन्नत वालों की एक सौ बीस सफ़ें हैं उनमें अस्सी सफ़ें इस उम्मत की होंगी और चालीस सफ़ें बाक़ी नबियों की उम्मतों की होंगी। अल्लाह ने हमें यह काम दिया है इसको मद्दे नज़र रखते हुए कि भाई दुनिया में कैसे हर हर मुसलमान अल्लाह के हुक्मों पर चलने वाला बन जाए। राएविन्ड में हर साल इज्तेमा होता है। इस साल भी 6,7,8 नवम्बर को इज्तेमा होगा। मुख़तलिफ़ इलाक़ों से और सारी दुनिया से लोग आते हैं और फिर जमातें बन बन कर अल्लाह के रास्ते में फिरते हैं और लोगों को इस बात पर उठाते

हैं कि भाई यह मेहनत है कि हमारी ज़िन्दगी अल्लाह के हुक्मों पर और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों पर आ जाए। हम भी इसको सीख रहे हैं आप भी इसके लिए निकलें और अलहम्दुलिल्लाह फ़िज़ा और माहौल में जब आ आता है तो इन्सानों की ज़िन्दगियों में पलटा आता है फ़िज़ा न हो तो बात सुनने से ज़हन बनता है तबियत असर लेती है लेकिन अमली ताक़त माहौल से पैदा होती है इस लिए सिर्फ़ इजूतेमा पर जाना ही नहीं बल्कि इस इंजूतेमा से आगे अल्लाह के रास्ते में निकलने के इरादे भी करने हैं और जमातें बन बन कर जाएं जमातों को लेकर जाएं और खुद भी अपने इरादे लेकर जाएं कि या अल्लाह हम ज़रूर तेरे रास्ते में निकलेंगे। अभी नाम नहीं लिखाया तो घबराओ नहीं अल्लाह से मांगते रहो इन्शाल्लाह कभी न कभी वक़्त आएगा आप निकलने वाले बनेंगे। आप ही में से ऐसे लोग बैठे हैं जो सारी दुनिया में अल्लाह के दीन को फैलाने वाले बनेंगे। हिम्मत न हारो हौसला न हारो।

हालात के बिगड़ने पर लोगों की मुख़्तलिफ़ बातें:

एक किताब में मैंने एक बुर्जुग का क़ौल पढ़ा जब हालात बिगड़ते हैं तो एक बड़ा तबक़ा यूं कहता है कि भाई अब कुछ नहीं हो सकता जैसे हालात चल रहे हैं इस धारे में तुम भी चलो एक छोटा सा तबक़ा यूं भी कहता है कि भाई कुछ टक्कर मारो न करने से कुछ करना बेहतर है तो यह छोटा तबक़ा दीवानगी में और पागल पन में मजनूं बन के टक्कर लेता है और हालात से टक्कर लेता है तो यह आगे चल कर बड़े बड़े इन्क़लाबात को

वजूद देता है। लोग कहते हैं आज हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाली ज़िन्दगी नहीं चल सकती, आज इस पर काम नहीं हो सकते, अब इस ज़िन्दगी पर चलना मुश्किल है भाई तुम यूं कहो कि हम टक्कर तो लेंगे और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाली कलिमे की दावत देंगे जब अल्लाह हमारी क़ुर्बानी को क़ुबूल करेगा वह हवा चलाएगा तो इन्शाल्लाह दिल पलटा खाते चले जाएंगे, हम इस के लिए मेहनत करेंगे और उसको वजूद में लाएंगे। इस लिए अगर जिन लोगों ने वक़्त लगाए हैं चार चार महीने चालीस चालीस दिन अगर ये इज्तेमा के बाद अपनी अपनी मस्जिदों में बैठ जाएं और रोज़ाना इसकी दावत दें, रोज़ाना इसकी मेहनत करें, लोगों को इसके लिए तैयार करें बहुत फ़ायदा होगा तो पेशावर ऐसी जगह है यहाँ से पूरी दुनिया में जमातें जा सकती हैं आपके यहाँ तो लोगों की ऐसी मुहब्बत है और दीन से ऐसी निसबत है कि अगर उन लोगों पर मुहब्बत से मेहनत की जाए तो सारी दुनिया में दीन आप फैला सकते हैं लेकिन इसकी थोड़ी तरतीब है कि भाई हम निकल कर सीखें तीन तीन दिन के लिए निकलना हो, चार चार महीने, चालीस चालीस दिन के लिए निकलना हो। जब अल्लाह इतनी तौफ़ीक़ दे दे फिर बाहर मुल्कों में जाना हो। अल्लाह ने थोड़ी सी नक़ल हरकत से बाहर मुल्कों में मदरसे खुलवा दिए, मस्जिदें बन गयीं और अल्लाह के फ़ज़ल व करम से ऐसे ऐसे नौजवान सारी सारी रात कल्बों में नाचते थे, अब दाढ़ियां रखी हुइ हैं पगड़ियां बांधी हुई हैं और अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात करते हैं।

अरब नौजवान का अजीब वाक़ियाः

एक अरब जद्दा से आया बहुत बड़ा आलिम था कहने लगा जानते हो मैं क्यों आया हूँ? मैंने कहा फ़रमाइए, कहने लगा कि मै। जद्दा में हूँ और हमारे नौजवान सऊदी लड़के अमरीका पढ़ने के लिए जाते थे लेकिन उनके साथ में बड़े गन्दे अज़ाइम होते थे और पता नहीं शराब ज़िना में डूबे रहते थे लेकिन कुछ अर्से से मैं देख रहा हूँ कि उसमें से बहुत से लड़के आते हैं उनकी दाढ़ियां रखी हुई होती हैं, पगड़ियां बांधी हुई होती हैं और अल्लाह और रसूल की बातें करते हैं, रात को खड़े हो कर रोते हैं। हैरान हूँ कि जब ये हिज्जाज़ में थे तो बेदीन थे, अमरीका में गए तो और बेदीन होना था, वहाँ से नबी की सुन्नत ले कर आ रहे हैं यह क्या बात है तो मैं ने पूछा ।के यह क्या चक्कर है तो उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीन को ज़िन्दा करने की एक मेहनत हो रही है। वहाँ से जमातें अमरीका आती हैं हम उनके साथ वक़्त लगाते हैं। मैं भी वक़्त लगाने आया हूँ। मेरी उसके साथ तशकील हुई।

अरब शायिर के अशार का तर्जुमाः

एक नौजवान शायिर राएविन्ड के सालाना इज्तेमा क मौक़े पर आया। वह बहुत बड़ा शायिर था। उसने मजमा देखा वह ठहाठे मारता हुआ समन्दर तो खड़ा हो गया फ़ौरन बे सोचे समझे शेर कहना शुरू किया जिसका तर्जुमा यह हैः-

(1) अल्लाहु-अकबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीन रौशन हो रहा है और इस जगह पर उसके नूर के आसार

नज़र आ रहे हैं

(2) और अल्लाह की तरफ़ से रहमत और बरकत उन लोगों पर आ रही हैं जिन लोगों ने कसरत की वजह से ज़मीन तंग कर दी।

(3) और घरों को छोड़ कर आ रहे हैं, रातों को खड़े हो कर नमाज़ पढ़ रहे हैं और ऐसी बीवी को छोड़ कर आ रहे हैं जिस के पाँव के पाज़ेब की आवाज भी उनके कानों में गूंज रही है लेकिन फिर भी सीने पर पत्थर रख कर आ रहे हैं।

(4) घर छोड़ा, बीवी बच्चे छोड़े, वतन छोड़ा, वालदैन की जुदाई बर्दाशत किया अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने के लिए और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नूर को बुलन्द करने के लिए चल रहे हैं।

(5) कभी बयान हो रहा है, कभी तालीम हो रही है, कभी हिदायत हो रही है और उनकी फ़िकर की सवारियों में यह बात है कि सारी दुनिया दीने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मेहनत का मैदान बन जाए।

यह शेर उसने अचानक पढ़े जिनका तर्जुमा आप पढ़ रहे हैं। अभी इस साल फिर आया। यह हमारे यहाँ राएविन्ड में एक छोटा सा इजतेमा होता है जिसमें सिर्फ़ चार माह वालों को बुलाया जाता है। पुरानों का जोड़ साल में एक दफ़ा दस दिन का होता है। वह अरब जिसका नाम अहमद था, मैंने कहा शेख़ अहमद इसमें कुछ इज़ाफ़ा करो, इस पर कुछ और कहो, वह क़सीदा जो आपने पढ़ा था कुछ इस पर और भी कहो वह बहुत उम्दा था, इस पर कुछ शेर और बढ़ाओ। कहने लगाः-

शेयरों का तर्जुमाः

(1) कि आज मैं देख रहा हूँ कि काम यहाँ तक पहुँच गया है कि सरया सितारे से भी ऊँचा और फ़रक़द सितारे की खोपड़ी से भी ऊँचा (ये दोनों सितारे आसमान में हैं) कि तबलीग़ का काम इस से भी ऊँचा चला गया है।

(2) इन्सान जो तरक़्क़ी करता है ऊँचाई की तरफ़ वह मेहनत से करता है पैसों से नहीं सोने से नहीं बल्कि मेहनत से तरक़्क़ी करता है।

(3) जो अल्लाह के दीन की मदद करेगा अल्लाह उसकी मदद करेगा और अल्लाह तआला उसकी मेहनत को चमका के रखेगा।

(4) कल यानी क़यामत में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ और उनके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के साथ होगा। ऐश की ज़िन्दगी का साया हमेशा हमेशा की नेमतें।

मैंने कहा अरब अरब ही होते हैं।

जन्नत में दीदारे इलाही की मुद्दतः

हमेशा की ज़िन्दगी। इमाम ग़ज़ाली रह० की एक रिवायत मुझे उसकी सनद का इतना पक्का पता नहीं कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का पहला दीदार होगा आठ लाख बरस तक होता रहेगा। देख रहे हैं अपने रब को देख रहे हैं। अरे महबूबा के पास बैठा रहे रात गुज़र जाती है पता नहीं चलता तो वह तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रब है, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का रब है, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का

रब है, ख़लील का रब है, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का रब है जिसे देख कर औरतों ने फल काटने के बजाए ﴿قطعن ایدیھن﴾ हाथ काट दिए, वह रब कैसे हुस्न व जमाल वाला होगा कभी इस को भीतो सोचा करो भाई सारी ज़िन्दगी दुकानों को ही दे दी। कहते हैं कि कमाना फ़र्ज़ है कमाना फ़र्ज़ है अरे उस रब का पड़ौस लेना इस से भी बड़ा फ़र्ज़ है। अल्लाह अपना दीदार कराता हुआ हंसता हुआ सामने आएगा और कहेगा बता तेरा क्या हाल है? सोचो तो सही इस में क्या लज़्ज़त होगी जिसे बाबे इश्क़ से वास्ता पड़ा हो उसे ही ख़बर होगी भाई हमें तो पता ही नहीं। बस हदीस में पढ़ा है इस लिए तुम्हें सुना देते हैं क्या वह मन्ज़र होगा जब अल्लाह तआला तुम्हें अपना दीदार करा रहा होगा और जन्नत की हूरें नग़में गा रही होंगीं और अल्लाह तबारक-तआला फ़रमाएंगे ऐसा नग़मा कभी सुना है? फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ऐ दाऊद तू सुना। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम सुनाएंगे फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे बताओ ऐसा कभी सुना है। कहेंगे कभी नहीं सुना फिर कहेंगे ऐ मेरे हबीब अब तू सुना फिर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह का कलाम सुनाएंगे फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कभी ऐसा सुना? कहेंगे कभी नहीं सुना फिर अल्लाह तआला खुद इर्शाद फ़रमाएंगे अब मेरा कलाम सुनो मेरा जैसा तुम ने कभी नहीं सुना होगा फिर अल्लाह तआला जन्नतियों को अपना कलाम सुनाएंगे तो जन्नती मदहोश हो जाएंगे। इस कलाम को सुनने में ऐसी लज़्ज़त होगी जिसे कोई बयान कर ही नहीं सकता। सुनाएगा अपनी ज़ुबान से सुनाएगा।

मेरे भाईयों इस ज़िन्दगी की आज कोई दौड़ नहीं लगाता तो

भाई यह मेहनत का मैदान हम आपको देकर जा रहे हैं हम ने एक महीना यहाँ पर काम किया। आप हज़रात के सामने जैसा कहना चाहिए था, जैसे कहने का हक़ है वह हम से अदा नहीं हो सका। भाई जो कर सकते थे वह तो नहीं किया लेकिन शायद अल्लाह तआला आप हज़रात के इख़लास की बरकत से हमें भी क़बूल फ़रमा लें।

जिसे फ़िकर होती है वह मेहनत करता हैः

तो मेरे भाईयो! ज़िन्दगी हम ने आप को बता दी पता हमें भी कोई नहीं कि इस मंज़िल तक पहुँचना है कि नहीं पहुँचना यह तो मौत पर जा कर पता चलेगा लेकिन मेरे भाईयो अल्लाह की ज़ात करीम है जो रास्ते पर चलता है वह मंज़िल पर पहुँच जाता है जो मंज़िल की तरफ़ चले उन्हें मंज़िल मिला करती है ﴿مـــــن خاف ادلج ومن ادلج بلغ المنزل الا ان سعلة الله غالية الا ان سعلة الله الجنة. الـحـديـث﴾ जिसे फ़िकर होती है वह रात से सफ़र शुरू करता है, मुसाफ़िर शब से चलता है जो जाना दूर होता है जिसे दूर जाना होता है वह रात से रुख़्सत सफ़र बांधता है।

अली रज़ियल्लाहु अन्हु और फ़िकरे आख़िरतः

मेरे भाईयो! सफ़र बहुत लम्बा है। हज़रत अली बिन अबि तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु रो रो कर कहते हैं या अल्लाह सफ़र बड़ा लम्बा है तोशा मेरे पास कोई नहीं हांलाकि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि ऐ अली जन्नत में तेरा घर मेरे घर के सामने होगा।

तबलीग़ को मक़सदे ज़िन्दगी बनाओः

तो इस लिए मेरे भाईयो! हम अगर इस मेहनत को करने वाले बन जाएंगे और मस्जिदों के खूंटे बन जाएंगे। तबलीग़ को बयान बाज़ी न बनाओ कि जा कर शब जुमा में तक़रीर सुनी ओर वापस आ गए बल्कि अपने खाने बिस्तर ले कर जाओ रात को वहीं रहो और फ़ज्र का बयान सुनकर वापस आओ। रात का क़याम बड़ा ज़रूरी है वरना नीचे की तरफ़ गिरते चले जाओगे। सुन लो फ़रिश्तों का ईमान न बढ़ता है न घटता है, अंबिया अलैहिस्सलाम का ईमान दिन ब दिन ऊँची उड़ान, दिन ब दिन ऊँची उड़ान और हमारा ईमान कभी ऊपर जाता है कभी नीचे आता है। ईमानी माहौल में आता है तो ईमान ऊँचा हो जाता है, तुम यहाँ तीन घन्टे से बैठे हो क्यों नहीं हिल रहे हो? क्योंकि यहाँ ईमान की बात हो रही है और ईमान ज़्यादा हो रहा है अगर मैं इधर उधर की मारता तो आप में से आधे से ज़्यादा उठ कर चले जाते लेकिन मैं अल्लाह और रसूल की बात कहता हूँ इस लिए ईमान बढ़ रहा है आप थके हुए हैं लेकिन फिर भी बैठे हैं यह ईमान की तरक़्क़ी की अलामत है और जब बाज़ार के माहौल में जाएंगे तो ईमान नीचे जाएगा लेकिन अगर आप बार बार निकलते रहेंगे तीन दिन के लिए जा रहे हैं, दस दिन के लिए जा रहे हैं, चार महीने के लिए जा रहे हैं तो ईमान में तरक़्क़ी होगी अपने मर्कज़ में जा कर क़याम करोगे यह रात का क़याम का मामूली न समझो। यह शहर वाले गड़बड़ करते हैं बयान सुन कर घर वापस हो जाते हैं कुछ तो इशा अपनी मस्जिद में जा कर पढ़ते हैं यह मैं आप हज़रात से नहीं कह रहा

हूँ बल्कि चार महीने और चिल्ले लगाने वालों से कह रहा हूँ आप हज़रात महसूस न फ़रमाएं बेशक आप बयान सुन कर वापस आ जाओ कोई बात नहीं यह तो हम पुराने दोस्तों से कह देते हैं क्योंकि उनसे ताल्लुक़ है आपको तो हम सलाम करेंगे यह तीन चिल्ले वाले रात शबे जुमा में क़याम करें वरना ये नीचे को गिरेंगे। इनका ठहरना बहुत ज़रूरी है और रोज़ाना अपनी मस्जिदों में जुड़ो और रोज़ाना दावत दो।

आज रेढ़ी वाला आवाज़ लगा रहा है हम दीन की आवाज़ लगाते हुए शरमाते हैंः

मेरे दोस्तों मैं हैरान होता हूँ बाहर सब्ज़ी वाला आवाज़ लगा रहा है आलू की आवाज़ लगा रहा है छोले की आवाज़ लगा रहा है, प्याज़ लहसन की आवाज़ लग रही है, क़हवे और निसवार की आवाज़ लग रही है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आवाज़ लगाने वाला कोई नहीं उनका काम हमारी नज़रों से इतना गिर गया है कि लोग यह कहते हैं कि फ़ारिग़ लोगों का काम है, ये बेकार फिरते हैं, पागल लोग हैं, दीवाने हैं, फ़ारिग़ हैं, घरों से निकाले गए हैं, बेकार फिरते हैं यही लोग नबियों को कहा करते थे जो इस काम को करेगा उसे हौसला रखना पड़ेगा, उसे ये बातें सुननी पड़ेंगी।

हज़रत मौलाना इलयास रह० और फ़िकरे उम्मतः

हज़रत मौलाना इलयास रह० ने जब मेवातियों में गश्त शुरू किया तो वे मारते थे, गालियां देते थे। उलमा ने कहा कि मौलाना इलयास साहब ने इल्म को ज़लील कर दिया क्योंकि

काम वजूद में नहीं था किसी का पता नहीं था। उलमा ने कहा यह इल्म की ज़िल्लत है। मौलाना इलयास साहब ने कहा कि हाए मेरा हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो अबू जहल से मार खाता था मैं मुसलमान की मिन्नत करके कैसे ज़लील हो सकता हूँ मैं तो अल्लाह के इस कलिमे के लिए ज़लील हो कर इज़्ज़त हासिल करना चाहता हूँ कि अल्लाह के कलिमे के लिए ज़िल्लत भी इज़्ज़त है, ज़लील होना नहीं है, यह है इज़्ज़त और यही असल इज़्ज़त है।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक ख़ेमे में गए और उनसे दीन की बात की। उन्होंने कहा हमारा सरदार आ जाए फिर तेरे से बात करेंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन्तेज़ार में बैठ गए। इतने में उनका सरदार आया। पूछा यह कौन है? उन्होंने कहा यह वही क़ुरैशी नौजवान है जो कहता है मैं नबी हूँ और कहता है कि मुझे पनाह दो मैं अल्लाह का कलिमा पहुँचाना चाहता हूँ।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मसाएब बर्दाशत करनाः

मेरे भाईयो! बताओ भला हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पनाह की ज़रूरत थी जिसके साथ अल्लाह हो नही दुनिया दारुल असबाब है दुनिया का यह बताना है कि दीन का काम मेहनत से होगा वरना मुझे किसी की पनाह की क्या ज़रूरत। वह कहने लगा कि ये मैं हदीस के अलफ़ाज़ आपको सुना रहा हूँ नक़ल कुफ़्र कुफ़्र ना बाशद बजरा बिन क़ैस क़शैरी ने कहा (नऊज़ूबिल्लाह) कि इस पूरे बाज़ार में अगर सब

से बदतरीन कोई चीज़ है तो यह है और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि चला जा खड़ा हो जा यहाँ से अगर मेरी कौम तुझे यहाँ न बिठाती तो मैं अभी तेरी गर्दन उड़ा देता। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ुबाने मुबारक से तो एक बोल भी नहीं निकला। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी चादर उठाई, ग़मगीन परेशान उठे और ऊँटनी पर सवार होने लगे और ऊँटनी जब खड़ी हुई तो उस ख़बीस ने जो नीचे से नेज़ा मारा और ऊँटनी उछली, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उलट कर ज़मीन पर गिर पड़े फिर भी ज़ुबान से बददुआ नहीं निकली। लोग कहें क्यों ज़लील होते फिरते हो, अरे वह तो ऐसों से सामने गिरे लेकिन ज़ुबान से बददुआ नहीं निकली। अबू जहल ने मारा लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ुबाने मुबारक से अलफ़ाज़ नहीं निकले।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तकालीफ़ बज़ुबान सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हुः

एक सहाबी कहते हैं कि एक नौजवान है बहुत ख़ूबसूरत है लोगों को दावत देते फिरते हैं सुबह से चल रहा है कलिमे की तरफ़ बुला रहा है मैंने कहा यह कौन है? उन्होंने कहा क़ुरैश का एक नौजवान है जो बेदीन हो गया है। सुबह से वह आदमी बात करता यहाँ तक कि सूरज सिर पर आता तो एक आदमी ने उसके मुँह पर थूका और दूसरे ने गिरेबान फाड़ा, एक ने सिर पर मिट्टी डाली, एक ने आकर थप्पड़ मारा लेकिन नबी के ज़र्फ़ को देखो कि ज़ुबान से एक बोल बददुआ का नहीं निकला इतने में

हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा को पता चला तो वह ज़ारो क़तार रोते हुए प्याले में पानी लेकर आयीं जब बेटी को रोते हुए देखा तो आँखें ज़रा नम हो गयीं हाए बेटी अपने बाप पन ग़म न कर तेरे बाप की अल्लाह हिफ़ाज़त कर रहा है, मेरा कलिमा ज़िन्दा होगा। वह सहाबी कहते हैं जो बाद में मुसलमान हो गए थेउस वक़्त काफ़िर थे मै। ने कहा यह लड़की कौन है? कहा यह इसकी बेटी है।

मेरे भाईयो! रेढ़ी वाला आवाज़ लगा रहा है, पान सिगरेट वाला आवाज़ लगा रहा है तुम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि ासल्लम के उम्मती हो कर इस कलिमे की आवाज़ न लगाओ तो भाई हम क्या कहें अगर आप अपनी मस्जिदों में बैठ गए तो हम समझेंगे कि हमारा आना वसूल हो गया और अगर नहीं बैठोगे तो हम यह समझेंगे कि भाई हम से ही क़ुसूर हो गया कि हम आप को समझा न सके।

ताना देना फ़साद का ज़रिया हैः

मेरे भाईयो! मुसलमान को ताना देने से बचो, चाहे कितना गिरा पड़ा मुसलमान हो लेकिन ताना मत दो। देखो सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के ज़माने में एक बात नाज़ुक है लेकिन छेड़ ही दूं। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के ज़माने में सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में इख़्तिलाफ़ था लेकिन कोई किसी पर तान नहीं करता था कुछ मसाइल में इख़्तिलाफ़ था लेकिन कोई किसी पर तान नहीं करता था।

इख़्तिलाफ़ सहाबा के बावजूद आपस की मुहब्बतः

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के पास एक आदमी

आया कि हज़रत माविया रज़ियल्लाहु अन्हु वितर की एक रकअत पढ़ते हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा चुप रहो वह आलिम हैं, ख़बरदार! बात मत करो। यह तीन पढ़ते थे वह एक पढ़ते थे लेकिन झगड़ा नहीं किया।

मेरे भाईयो! ऐ दूसरे को ताना मत दो। अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक एक सुन्नत को ज़िन्दा कर रखा है इस लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सारे तरीक़ों को उम्मत में फैला दिया है, किसी पर ताना न करो। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ही सारी चीज़ें साबित हैं इन पर मत झगड़ो।

सुन्नत में इख़्तिलाफ़ की अजीब हिकमते रब्बीः

अल्लाह के वास्ते इन पर मत झगड़ो। अल्लाह तआला को अपने हबीब की एक एक अदा पसन्द थी लिहाज़ा मुसलमानों किसी एक जमात को एक सुन्नत दे दी, किसी जमात को दूसरी सुन्न्त दे दी। एक फ़िक़ह वालों को रफ़अ-यदैन करना सिखा दिया एक को तर्क सिखा दिया क्योंकि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोनों काम किए हैं अब अल्लाह तआला को पसन्द नहीं आया कि मेरे हबीब का एक तरीक़ा रहे दूसरा न रहे लिहाज़ा दोनों तरीक़े ज़िन्दा किए। जिसकी एक एक अदा पसन्द थी लिहाज़ा उसको तक़सीम कर दिया तो उस पर लड़ते क्यों हो यह कोई लड़ाई की चीज़ नहीं, अपने नफ़्स से लड़ो तेरा सबसे बड़ा दुश्मन तेरा नफ़्स है जो तेरे अन्दर बैठा हुआ है। सारे तरक़े अल्लाह को अपने हबीब के पसन्द थे, सारे ज़िन्दा कर दिए। आमीन कभी ऊँची कही, कभी पस्त कही। अल्लाह तआला ने

दोनों तरीक़े ज़िन्दा कर दिए ताकि मेरे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक एक सुन्नत ज़िन्दा रहे।

अपने ऐब देखो दूसरों के न देखोः

मेरे भाईयो! ताने से बचो एक दूसरे को ताना मत दो, किसी मुसलमान की ग़ीबत मत करो, किसी मुसलमान के ऐब तलाश मत करो, देखो मुसलमान के ऐब देखना बर्बादी है अपने ऐब तलाश करो मैं ख़ुद ही इतना बुरा हूँ, अपने अल्लाह व रसूल के हुक्म को सामने रख कर चलो, अपने बड़ों से जुड़ कर चलो, मशवरे के साथ चलो, तन्क़ीद से बचो, अपनी आज़ाद तबियत न बनाओ, ऐतिराज़ न करो, तरदीद न करो। यह बातें वे हैं जो उम्मत को बर्बाद कर रही है। तन्क़ीद, तरदीद और एतिराज़ तन्क़ीस। किताब के मुक़ाबले में किताब, तक़रीर के मुक़ाबले में तक़रीर यह वे बातें हैं तो दिलों को तोड़ती हैं नहीं भाई आपस में मुहब्बत से चलो प्यार से चलो अल्लाह तुम्हें नज़रे रहमत से देखेगा और आपस में सलाम को फैलाओ पख़ैर राग़ले मत कहो, पख़ैर राग़ले को कहीं दफ़न कर दो, सब एक दूसरे को सलाम करो। अल्लाह तआला ने पख़ैर राग़ले नहीं कहा ﴿سلاما سلما، سلم قولا من رب رحيم﴾ फ़रिश्ते भी सलाम करते हैं

﴿سلم عليكم طبتم فادخلوها خالدين، سلم عليكم بما صبرتم فنعم عقبى الدار﴾ (القرآن) और अल्लाह का नबी कहता है ﴿افشو السلام الحديث﴾ सलाम फैलाओ।

इस्लाम और हुस्ने अख़लाक़ः

अस्सलाम अलैकुम को रिवाज दो और एक दूसरे का इकराम

करो, एक दूसरे से मुहब्बत करो एक दूसरे को हदिए दो, एक दूसरे की तारीफ़ करो और तोड़ने वाले से जोड़ो, महरूम करने वाले को अता करो, ज़ुल्म करने वाले को मॉफ़ करो, बुराई करने वाले से अच्छाई करो। अल्लाह की क़सम सारे आलम का बातिल अन्डे के छिलके की तरह टूट जाएगा अगर ये सिफ़ात अपने अन्दर पैदा कर लो। ये सिफ़ाते नबुव्वत हैं तो हम समझेंगे कि हमारा आना ठिकने लग गया। नहीं हुआ तो मेहनत करते रहो करते रहो अल्लाह तआला कभी पहुँचा ही देगा और अल्लाह से मांगो कि या अल्लाह तू हमें इस काम के लिए क़बूल कर ले। यह नबियों वाला काम है हम इसके अहल नहीं थे। आज हमें अल्लाह ने यह हीरा दे दिया है हम नाक़दरे हैं जैसे बच्चे को हीरा दे दिया जाए तो उसको समझ नहीं होती, जैसे बच्चे के हाथ में दस करोड़ रुपए का चैक दे दिया जाए तो वह चैक की क़ीमत को नहीं जानता, जलेबी की क़ीमत जानता हैवह चैक को फेंक देगा जलेबी को खा लेगा हांलाकि उसे क्या ख़बर कि इस चैक के ऊपर कितने बड़े बड़े महल्लात हैं यही हमारा हाल है आज दीन की ख़बर नहीं हम इस मिठाई को देख रहे हैं जो शैतान ने बना कर दे दी है।

तबलीग़ के फ़वाएदः

तो मेरे भाईयों और दोस्तों! अल्लाह आपको सरसब्ज़ रखे, शादाब रखे अगर आप इस मेहनत को करने वाले बन जाओगे तो तुम्हारी दुनिया भी बनेगी और आख़िरत भी बनेगी। आज हमारा आख़िरी दिन था कल हमारी वापसी है। ऐसी मुहब्बत करने वाले न हम ने कहीं देखे न कहीं सुने। इतना अर्सा गुज़र

गया सोलह सत्रह साल हो गए फिर रहे हैं लेकिन जिस मुहब्बत से आप लागों ने सुना और जिस मुहब्बत से आप नाम देते हो ऐसा मजमा कहीं नहीं देखा। एक तो यह दर्ख़्वास्त है कि सब भाई आख़िर तक बैठे रहें ये मजलिसें फिर होंगी या नहीं और दोबारा फिर मिलना अल्लाह के इल्म में है फिर होगा या नहीं होगा तो इस लिए दुआ तक सारे बैठो और अल्लाह के रास्ते में निकलने के लिए नक़द नाम दो ताकि इस नबुव्वत वाली ज़िन्दगी और इस जन्नत वाली ज़िन्दगी को लेने के लिए हम नक़द तैयार रहें तो बताओ कौन कौन तैयार है अल्लाह तुम्हें ख़ुश रखे।

इस्मे मुहम्मद

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

बमुक़ाम आस्ट्रेलिया

दुनिया की हक़ीक़त

हम्द व सना और तऊज़ और तस्मिया के बाद फ़रमाया मेरे भाईयो और दोस्तों! इस जहां का बनाने वाला अल्लाह तआला है और बनाने वाले को पता होता है कि इसको बनाने में सरमाया कितना लगा है मेहनत कितनी हुई है उसकी क़ीमत कितनी होनी चाहिए। अल्लाह ने यह जहां बनाया और उसने हमें यह ख़बर दी है कि इसकी क़ीमत एक मच्छर के एक पर के बराबर भी नहीं है ﴿لو كانت الدنيا عند الله جناح بعوضة ماسقى منها كافرا شربة﴾ अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि दुनिया मेरे नज़दीक एक मच्छर के पर के बराबर भी क़ीमत रखती तो मैं काफ़िर को एक घूंट पानी के बराबर भी न देता यहाँ तो ज़्यादा दिया हुआ है। अल्लाह ने एक अजीब बात यह भी कही है ﴿ولولا ان يكون الناس امة واحدة﴾ और तुम्हारा ख़याल न होता कि तुम भी दीन छोड़ जाओगे ﴿لجعلنا لمن يكفر بالرحمن لبيوتهم سقفا من فضة ومعارج عليها يظهرون ولبيوتهم ابوابا وسررا عليها يتكئون وزخرفا﴾ मैं क्या करता काफ़िरों के दरवाज़े और सीढ़ियां सोने और चाँदी के बना देता, उनकी

चारपाइयां, उनकी कुर्सियां, उनकी छतें, उनके घर, उनकी दीवारें सोने और चाँदी की होतीं। हदीस में आता है कि उनके जिस्म लोहे के बना देता, लोहे का मतलब यह है कि न बीमार होते न बूढ़े होते।

यह सारा कुछ नहीं क्या? इस लिए थोड़े रह जाते, अक्सर फिसल जाते। अब भी इतने फिसल रहे हैं कि उनको इतना दे दिया हमें कुछ न दिया। अल्लाह ने कुछ हमें भी दे दिया और कुछ उनको भी दे दिया। कुछ उन पर हालात डाल दिए और कुछ हम पर हालात डाल दिए, उनकी मुसीबतें अलग कर दीं और हमारी मुसीबतें अलग कर दीं। बराबर उन्नीस बीस को फ़र्क़ रख दिया। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह दुनिया मेरे नज़दीक इतनी गई गुज़री चीज़ है कि सारी उनको दे देता तुम्हें कुछ न दे देता ﴿يا موسٰى ان لى عبادا لو سئلنى الجنة لا عطيتهم بحو الهها﴾ ऐ मूसा मेरे कुछ बन्दे ऐसे हैं कि जन्नत मांगे तो सारी दे दूं।

मेरे भाईयो! एक हदीस में आता हे कि जन्नत की एक औरत का दुपट्टा सातों ज़मीनों के ख़ज़ानों से ज़्यादा क़ीमती है सिर्फ़ एक दुपट्टा जो ख़ज़ाने इस वक़्त हैं और जो इस्तेमाल हो चुके हैं जो आइन्दा इस्तेमाल होंगे, इसके बाद जो बाक़ी रहेंगे और क़यामत आएगी तो ज़मीन के ख़ज़ानों से में से फिर भी थोड़ा ही हिस्सा इस्तेमाल हुआ होगा बाक़ी हिस्सा फिर भी पड़ा हुआ होगा, उसको निकाल दिया जाए जो निकल चुका है उसको भी वापस लाया जाए, इन सब को इकठ्ठा किया जाए तो एक दुपट्टे की क़ीमत ज़्यादा है तो सारी जन्नत कैसी होगी। अल्लाह कहता है कि जन्नत मांगे तो सारी दे दूंगा और दुनिया के बारे में कहा कि कपड़ा लटकाने के लिए एक लकड़ी चाहिए तो वह

भीनहीं दूंगा। ऐ अल्लाह एक लकड़ी दे दे ताकि दस से कपड़ा लटकाऊँ तो कहता है वह भी नहीं दूंगा। ﴿وليس ذالك لهوان لـه﴾ इस लिए नहीं कि वह मेरी नज़रों में छोटा है ﴿لا دخوله من على﴾ इस लिए कि मैं उसको क़यामत के दिन की ﴿كرامته يوم القيامة﴾ इज़्ज़त देना चाहता हूँ। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बाग़ में तशरीफ़ ले गए और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु साथ थे तो जो खजूरें दरख़्त से टपक जाती थीं और नीचे गिरी पड़ी हुई होती हैं उसको कौन उठाता है मगर उनको आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उठाकर साफ़ करके खाने लगे और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया तू क्यों नहीं खाता? उन्होंने कहा ﴿لا اشتهي﴾ मुझे भूक नहीं है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿بل انا اشتهي﴾ मुझे तो भूक है ﴿هذه الصبح رابعته ما ذقت شيئا﴾ आज चौथा दिन है मैं ने एक लुक़मा भी नहीं खाया।

अल्लाह तआला को अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्यारा तो काएनात में कोई नहीं सबसे महबूब तरीन अल्लाह को अपना हबीब ही है। भला अपने हबीब को कोई मुश्किल में डाल कर खुश हो सकता है? अल्लाह अपने बन्दे से चाहे काफ़िर हो या मुसलमान हो सत्तर माँओं से ज़्यादा प्यार करता है तो अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कितना प्यार करता होगा। अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि चौथा दिन है मैं ने एक लुक़मा नहीं चखा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अगर मैं चाहता तो अल्लाह मुझे सारी दुनिया के ख़ज़ाने दे देता अगर मैं चाहता तो अल्लाह तआला रूम व फ़ारस के ख़ज़ाने ढेर कर देता

लेकिन मैंने नहीं मांगा। अब्दुल्लाह एक ज़माना आएगा कि लोगों के घरों में साल साल की रोटी पड़ी होगी फिर भी कहेंगे कि और कहाँ से आएगी? उनका यक़ीन बर्बाद हो जाएगा ﴿ومهنا جمعي الدرهم ولا دينار﴾ और सुन ले मैं कल के लिए भी नहीं जमा करता। अल्लाह तआला ने दुनिया की हैसियत ऐसी रखी है कि मच्छर के पर के बराबर भी नहीं अगर होती तो काफ़िरों को पानी का घूंट भी न मिलता और हक़ीक़त बताई कि अगर तुम्हारा ख़तरा न होता कि अक्सर मुसलमान कच्चे ही हैं तो बहुत थोड़े पक्के हैं तो अक्सर मुसलमान फिसल जाते अगर तुम सारे पक्के होते तो मैं तम्हें कुछ न देता ﴿وان كل ذالك لما متاع الحيوة الدنيا والاخرة عند ربك للمتقين﴾ यह तो सारे का सारा दुनिया का चन्द रोज़ खेल तमाशा है असल अन्जाम मेरे पास अल्लाह से डरने वालों का है। अब इस दुनिया को बनाने वाला अल्लाह इस दुनिया की क़ीमत हमें बता रहा है कि ﴿وما الحيولة الدنيا لا متاع الغرور﴾ यह एक धोका है। धोका किसे कहते हैं? होता नहीं मगर नज़र आता है इसी को धोका कहते हैं यह दुनिया नज़र आती है, जवानी नज़र आती है। अल्लाह कहता है नहीं नहीं तुम्हारी नज़र का धोका है। आस्ट्रेलिया की ख़ूबसूरत वादियां नज़र आती हैं यह सब धोका है, बड़ी बिल्डिंगे नज़र आ रही हैं, हुकूमत नज़र आ रही है, ताक़त नज़र आ रही है, दौलत नज़र आ रही है, झूठी शक्ल है अच्छी या बुरी, हुस्न के नक़्शे हों या बदसूरती के नक़्शे हों, इज़्ज़त की चोटी हो या ज़िल्लत की पस्ती हो, अल्लाह तआला कहता है कि तुम्हारी नज़र का धोका है हक़ीक़त में कुछ भी नहीं। ﴿متاع الغرور﴾ धोके का घर ﴿جناح بعوذة﴾ मच्छर का पर। अल्लाह तआला ने इस दुनिया के तीन

नाम दिए हैं मच्छर का पर, धोके का घर, मकड़ी का जाला।

अगर कोई आदमी मच्छर के परों से झोली भर ले तो आप कहेंगे कि देखो भाई कितना ख़ुश नसीब है माल लेकर जा रहा है या यह कहेंगे कि कितना पागल है कि मच्छरों के परों से झोली भर कर जा रहा है।

तो भाई अल्लाह ने हमें ईमान दिया है। अल्लाह की रहमत की इतनी बड़ी बारिश हमारे ऊपर हुई है कि उसने हमें मुसलमान बनाया। सारी दुनिया के काफ़िर मुसलमानों की वजह से ज़िन्दा हैं, सारी दुनिया के मुश्रिक, इसाई, यहूदी मुसलमान की वजह से ज़िन्दा है। ईमान हो तो सारी काएनात तोड़ दी जाएगी। मुसलमान न हों तो ज़मीन व आसमान के नक़्शे टूट जाएंगे।

﴿لا تقوم الساعة يقال على وجه الارض الله الله﴾ जब तक एक मुसलमान भी ज़िन्दा है आप अन्दाज़ा लगाएं और यह मुसलमान भी वह होगा जिसको न नमाज़ का पता है और न रोज़े का, न हलाल का पता है न हराम का, सिर्फ़ वह ला इलाहा इलल्लाह मुहम्मदुर्रसूल अल्लाह पढ़ता है और उसे कुछ पता नहीं। अभी अल्लाह का फ़ज़्ल है कि हम उस सतह पर नहीं हैं कुछ अच्छे काम भी करते हैं कुछ बुरे काम भी करते हैं। जब तक मुसलमान ज़िन्दा है यह सूरज चमकेगा, यह चाँद घटेगा और बढ़ेगा, ये हवाएं चलती रहेंगी, ये बादल उठते रहेंगे, ये बारिशें बरसती रहेंगी और यह ज़मीन अपने ग़ल्ले उगलती रहेगी, ये मौसम बदलते रहेंगे, ज़मीन व आसमान की गर्दिश चलती रहेगी, फ़रिश्तों का आना जाना होता रहेगा, यह पूरा निज़ाम चलता रहेगा यह बन्द नहीं हो सकता जब तक यह मुसलमान मौजूद है। जब यह मरेगा तो अब अल्लाह का इस काएनात की कोई

ज़रूरत नहीं, सारी काएनात पर रौंदा फेर देगा तो मुसलमान इतना क़ीमती है। हम अपनी क़ीमत को महसूस करें, अहसासे कमतरी में मुबतिला न हों, आस्ट्रेलिया वाले आपकी बरकत से खा रहे हैं यह नहीं है कि हम इनकी बरकत से खा रहे हैं। अमरीका वाले यूरोप वाले, सातों बर्रे आज़म की च्यूंटिया तक मुसलमान की बरकत से रोज़ी खा रही है। शैतान को भी रिज़्क़ मुसलमानों की बरकत से मिल रहा है काफ़िर जिन्नात को भी मुसलमानों की वजह से मिल रहा है, परिन्दे, चरिन्दे, साँप, कीड़े मकौड़े मुसलमान की वजह से रिज़्क़ खा रहे हैं।

जब हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मती इस दुनिया से मिट जाएगा तो काएनात का निज़ाम भी तोड़ दिया जाएगा अल्लाह का किसी के साथ रिश्तेदारी नहीं है और अल्लाह ने यह दौलत मुफ़्त में हमें दी है बग़ैर मांगे दी है। अब हमारा फ़क़ीर से फ़क़ीर आदमी भी अमरीका के सदर से ज़्यादा खुश क़िसमत है कि उसने अल्लाह को पहचान लिया है और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी पहचान लिया है, हमारा अनपढ़ जाहिल जो अगूंठे लगाना भी नहीं जानता वह भी दुनिया के बड़े साइंस दान आइन स्टाइन से ज़्यादा समझ दार है उसने अल्लाह और रसूल को पहचान लिया है और उस पागल ने न अल्लाह को पहचाना न रसूल को पहचाना। सारे आस्ट्रेलिया के साइंसदानों से हमारा रेढ़ी लगाने वाला मुसलमान ज़्यादा समझदार है बह आख़िरत को जान गया, अल्लाह पर और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाया, वह इस काएनात के रब को जान गया और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम को उसका आख़िरी रसूल मान लिया और उससे ज़्यादा दुनिया में कोई अक़लमन्द नहीं

गारे मिट्टी की ज़िन्दगी में जुस्तुजू खपा देना यह तो अक़ल की कोई इन्तेहा नहीं मगर बे अक़ली ज़रूर है। एक दफ़ा गश्त में बात हो रही थी एक आदमी ने कहा लोग चाँद तक पहुँच गए लेकिन तुम लोग अभी तक नमाज़ रोज़े की बातें करते फिरते हो। हमारे एक साथी ने कहा कि जानवर बन कर चाँद पर फिरने से बेहतर है कि इन्सान बन कर ज़मीन पर चला जाए। हर एक चीज़ की तख़लीक़ में अलग अलग मक़सद है अल्लाह ने हमें एक मक़सद दिया है आप ग़ौर फ़रमाएं कि हम खुद पैदा होते हैं या हमें अल्लाह ने पैदा किया है? यह शकल मैंने अपनी मर्ज़ी से इख़्तियार की औंर मेरे माँ बाप से अल्लाह ने नहीं पूछा, हमें पंजाब में पैदा किया हम से मश्विरा नहीं लिया, आप लोगों को यहाँ आस्ट्रेलिया में पैदा किया आप लोगों से मश्विरा नहीं किया, अरबी को अरबी बनाया, अजमी को अजमी बनाया, मर्द को मर्द बनाया, औरत को औरत बनाया, रंग अलग, शक्ल अलग, किसी की नाक खड़ी, किसी की नाक चपटी, किसी की ऊँची किसी की नीची, कोई काला, कोई गोरा, कोई मोटा कोई पतला किसी से अल्लाह ने मश्विरा लिया? आसमान से फ़ैसला किया ﴿هو الذى يصوركم فى الارحام كيف يشاء﴾ अल्लाह वह रब है जो माँ के रहम में जैसा चाहता है तुम्हें शकल दे देता है। शकल उसने दी, सूरत भी उसने दी, ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा भी उसने दिया, पूरी दुनिया के उलूम इकठ्ठे किए जाएं तो उसमें एक जुमला भी ऐसा नहीं मिल सकता जो यह बताए कि मेरी ज़िन्दगी का मक़सद क्या है? जो आदमी अपनी ज़िन्दगी के

मक़सद को न पहचान सके तो उसके पास कौन सा इल्म है जो उसे निजात दे सकता है। ज़मीन क्यों है? हवा क्या है? लोहा किस लिए है? और क्या है वे सारी काएनात के ज़र्रे ज़र्रे की छान बीन में लग कर हम से ग़ाफ़िल हो गए कि मैं क्यों हूँ और क्या हूँ? यह तो सबसे बड़ा सवाल था हल करने वाला कि मैं क्यों हूँ और क्या हूँ?

काएनात का मक़सदः

मेरे भाईयो! आप यह ग़ौर फ़रमाएं कि हमारा वजूद अपना नहीं बनाने वाले ने उसे बनाया है और मक़सद भी उसी ने दिया है। सारी दुनिया के डाक्टर और साइंसदान बता नहीं सकते कि मैं क्यों पैदा हुआ हूँ? अल्लाह ने असल मक़सद बताया है कि यह काएनात क्यों पैदा हुई है और इसका मक़सद क्या है? इसी मक़सद पर आना ज़िन्दगी की मेराज है और इस मक़सद को हासिल करना कामयाबी है। माल का आना और चले जाना इस बात से कामयाबी और नाकामी का कोई जोड़ नहीं, कामयाब ज़िन्दगी वह है जो अल्लाह की मन्शा के मुताबिक़ है, जो शख़्स अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी से ग़ाफ़िल हो कर नफ़्स और शैतान की पूजा में लगा हुआ है, तो दरहक़ीक़त यह एक नाकाम ज़िन्दगी का तसव्वुर है। हमें ज़िन्दगी का जो तसव्वुर दिया गया है वह अल्लाह की तरफ़ से है। आज की दुनिया में तसव्वुरे ज़िन्दगी यह है कि माल व दौलत से बड़ी गाड़ियां, बड़ी बड़ी बिल्डिंगें, बड़ी बेहतरीन ज़िन्दगी है। कुछ नहीं इसका क्या पूछना, बड़ा ज़लील आदमी है, छोटा आदमी है, थर्ड क्लास आदमी है। ज़िन्दगी का यह रुख़ हमें अल्लाह की तरफ़ नहीं मिला।

दुनिया में कामयाब इन्सान कौन है?

अल्लाह ने जो रुख़ दिया है वह यह कि जो मेरी मान के चल रहा है और मेरे नबी की मान कर चल रहा है वह दुनिया का सबसे कामयाब इन्सान है जो मुझ से हट कर चल रहा है और मेरे नबी के तरीक़ों से दूर चल रहा है वह दुनिया का नाकाम तरीन इन्सान है। अल्लाह तआला कह रहा है ﴿الم يعلمو﴾ क्या तुम्हें पता नहीं है ﴿انه من يحادد الله ورسوله فان له جهنم خالدين فيها ذالك الخزى العظيم﴾ तुम्हें पता नहीं जो मेरा और मेरे रसूल का दुश्मन हो जाए वह जहन्नुम की आग में जाएगा, यही असल नाकामी है, यही बड़ी ज़िल्लत और रुसवाई है, हम समझते हैं कि फ़क़ीर हो गए तो ज़लील हो गए जब कि अल्लाह कहता है कि मेरे और मेरे रसूल के नाफ़रमान हो गए तो ज़लील हो गए। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में बैठ कर नमाज़ पढ़ रहे हैं एक नबी में चालीस आदमियों की ताक़त होती है और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में कितनी ताक़त होगी आप बैठ कर नमाज़ पढ़ रहे हैं, हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु आए या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ﴿بابى انت امى﴾ मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान आप बैठ कर नमाज़ क्यों पढ़ रहे हैं? पेट की तरफ़ इशारा करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि भूक भूक, हिम्मत नहीं है पाँव पर खड़े होने की। यह जो मेरा और आपका ज़हन है इसके मुताबिक़ बड़ी ज़िल्लत की बात यह है कि रोटी नहीं मिल रही है। सबसे ऊँची ज़ात जिसके इशारे से चाँद दो टुकड़े हो जाए, जहाँ सारी काएनात की ताक़तें ख़तम हो जाएं, काएनात की सबसे बड़ी मख़लूक़ हज़रत

जिबराईल अलैहिस्सलाम हैं, जिबराईल अलैहिस्सलाम की जहाँ सारी जिस्मानी और रुहानी ताक़ते ख़तुम हुयीं वहाँ से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिस्मानी परवाज़ शुरू हुई। मूसा अलैहिस्सलाम पर अर्श से एक तजल्ली पड़ी तो चालीस दिन बेहोश रहे और होश नहीं आया जब कि अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सामने खड़ा करके ख़िताब फ़रमाया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सारी तजल्लियात को बर्दाश्त किया है।

मेरे भाईयो! मैं यह अर्ज़ करना चाहता हूँ कि मुसलमान होना बहुत बड़ी दौलत है डॉलर, पाउन्ड से, गाड़ियों से, बंगलों से सबसे आला चीज़ यह है कि अल्लाह ने हमें ईमान की दौलत दी है।

अदना से अदना मुसलमान के लिए हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आंसू निकला हुआ है लिहाज़ा किसी को भी घटिया नहीं समझना चाहिए। मुसलमान को ज़लील करना बैतुल्लाह को गिराने से बड़ा गुनाह है (हदीस) बैतुल्लाह को किसी ने तोड़ दिया यह छोटा गुनाह है बनिस्बत इस बात के किसी मुसलमान को बेइज़्ज़त कर दिया यह बड़ा गुनाह है।

मोमिन जहन्नुम में नहीं जाएगाः

कमज़ोर से कमज़ोर मुसलमान के लिए भी क़यामत के दिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिफ़ाअत होगी। दुनिया की सबसे क़ीमती दौलत मुसलमान है। अदना से अदना मुसलमान भी जहन्नुम में रहेंगे तो अल्लाह पाक अंबिया अलैहिस्सलाम, सिद्दिक़ीन और शोहदा से कहेंगे जाओ जितने

इन्सान जहन्नुम से निकाल कर ला सकते हो तो निकालो। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिफ़ाअत पर बेशुमार मख़लूक़ निकलेगी। अब अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि अब मेरी बारी है तुम सब फ़ारिग़ हो गए ﴿لم يبق الا ارحم الراحمين﴾ अब अल्लाह तआला अपने दोनों हाथों से जहन्नुम के अन्दर से ईमान वालों को निकालेगा। इसी तरह तीन दफ़ा निकालेगा और जिस के दिल में ऐटम के करोड़वें हिस्से के बराबर भी ईमान होगा वह फिर भी रह जाएगा इसके बाद जहन्नुम से जिबराईल अलैहिस्सलाम को या हन्नान या मन्नान की आवाज़ आएगी। कहेंगे कि अभी एक अभी बाक़ी है इसकी बारी नहीं आई तो अल्लाह पाक कहेगा अरे भाई एक अटका हुआ आख़िरी क़ैदी है इस को निकाल दो तो वह जहन्नुम के अन्दर जाकर वापस आएंगे और कहेंगे कि दोज़ख़ ने अब करवट बदल दी है और हर चीज़ पलट दी है पता नहीं वह कहाँ है दोज़ख़ का एक पत्थर सातों बर्रे आज़म के पहाड़ों के ऊपर रख दिया जाए तो सारे पहाड़ पिघल कर सियाह पानी में तब्दील हो जाएंगे और दोज़ख़ की एक चट्टान सारी दुनिया के पहाड़ों से वज़नी और बड़ी है दोज़ख़ में अगर सुंई के बराबर सुराख़ हो जाए तो उसकी आग सारे जहाँ को जला कर राख़ कर देगी। दोज़ख़ से एक आदमी को भी निकाल कर एक लाख आदमियों में बिठाया जाए और वह एक साँस भी ले तो एक साँस की वजह से एक लाख आदमी ख़त्म हो जाएंगे।

पुल सिरात पर आग पुकारेगीः

यह क़ैद ख़ाना है कोई मामूली चीज़ नहीं है कि दो चार

थप्पड़ लगेंगे फिर उठा कर जन्नत में ले आएंगे, आसान मस्अला नहीं है अगर धुलाई होगी तो बड़ी ज़बर्दस्त होगी तो जिबराईल अलैहिस्सलाम आएंगे, अल्लाह तआला से अर्ज़ करेंगे कि पता नहीं चल रहा है कि वह कहाँ है अल्लाह तआला बता देगा कि जहन्नुम की फ़लाँ चट्टान के नीचे पड़ा है तो वह आएंगे चट्टान को उठाएंगे तो नीचे साँप बिच्छू में फंसा पड़ा होगा। एक दफ़ा जहन्नुम का साँप डंक मार दे तो चालीस साल तक तड़पता रहेगा, उसको छुटकारा देकर निकालेंगे फिर साफ़ हो जाएगा, उसको नहरे हयात में डाला जाएगा उससे वह चाँद की तरह से चमकता हुआ निकलेगा, पुल सिरात से उसको गुज़ारा जाएगा और वह पुल सिरात सिर्फ़ मुसलमानों के लिए है काफ़िरों के लिए नहीं उनको तो सीधा जहन्नुम के गेट से दाख़िल किया जाएगा ﴿وسيق الذين كفروآ الى جهنم زمرا، حتى اذا جاء وها وفتحت ابوابها﴾ यह काफ़िर के लिए ज़ाब्ता है कि अन्धे गूंगे बना कर उनको जहन्नुम में फेंक दिया जाएगा पुल सिरात मुसलमानों के लिए है इस पर उनको गुज़ारा जाएगा ताकि उनके ईमान का पता चल जाए। कुछ ऐसे गुज़रेंगे कि जहन्नुम की आग नीचे से पुकारेगी ﴿جز جز﴾ अरे अल्लाह के वास्ते जल्दी चल जल्दी ﴿اطفا نورك لهبى﴾ तेरे ईमान ने मुझे ठंडा कर दिया और कुछ ऐसे गुज़रेंगे मख़दूश कि उनके दोनों तरफ़ आरियां लग जाएंगी उसके कांटे उसके अन्दर फंसेंगे उसको कहा जाएगा कि चल वह कभी गिरेगा कभी चलेगा।

अल्लाह की शाने करीमीः

वह पुकारेगा कि या अल्लाह पार लगा दें, या अल्लाह पार

लगा दें, अल्लाह तआला फ़रमाएंगे एक वायदा कर ले तो पार लगा दूंगा, वह कहेगा क्या? तो बाहर जा कर अपने सारे गुनाह मान ले तो पार लगा दूंगा तो वह कहेगा पार लगा दें मैं सारे गुनाह मान जाऊँगा अब अल्लाह तआला पार लगा दें तो सामने जन्नत नज़र आ रही होगी और पीछे दोज़ख़ नज़र आ रही होगी। अल्लाह तआला फ़रमाएगा अब बता क्या किया था तो अब वह डरेगा कि मान गया तो दोबारा न फेंक दें तो वह कहेगा मैंने कुछ किया ही नहीं यानी आख़िर वक़्त तक दग़ा बाज़ी अल्लाह तआला कहेगा गवाह लाऊँ? तो वह तसल्ली के लिए इधर उधर देखेगा तो कोई नज़र नहीं आएगा जन्नत वाले जन्नत में हैं और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में हैं वहाँ कोई भी नहीं होगा फिर अल्लाह पाक उसकी ज़ुबान बन्द कर देगा और उसके जिस्म से कहेगा तू बोल, फिर उसके हाथों से उसकी रानों से आवाज़ें आएंगी तो वह कहेगा कि मेरा वजूद ही मेरा दुश्मन हो गया। वह कहेगा या अल्लाह बड़े बड़े गुनाह किए तो मॉफ़ कर दे दोबारा न भेज, तो उससे कहा जाएगा कि जा जन्नत चला जा जब जाएगा तो अल्लाह पाक उसको ऐसी जन्नत दिखाएगा जैसे कि वह सारी की सारी जन्नतियों से भरी हुई है।

तो वह देख कर वापस आ जाएगा तो वह अल्लाह तआला फ़रमाएंगे अरे तू जाता क्यों नहीं तो फिर जन्नत देख कर वापस आ जाएगा फिर कहा जाएगा जाता क्यों नहीं कहेगा आपने कोई जगह ख़ाली छोड़ी ही नहीं मैं कहाँ जाऊँ

अब अल्लाह उसकी क़ीमत देगा, अच्छा तो राज़ी है कि मैंने जब से दुनिया बनाई थी और जिस वक़्त वह ख़त्म हुई उसका दस गुना करके तुम्हें दूं, क्या तू राज़ी है तो उसका मुँह खुल

जाएगा ﴿استهزا بی وانت رب العالمین﴾ आप मेरे साथ मज़ाक़ करते हैं हांलाकि आप तमाम जहाँ के रब हैं तो उसको यक़ीन नहीं आएगा, अल्लाह फ़रमाएंगा ﴿بلی انا علی ذالك قدیر﴾ मुझे इस पर क़ुदरत है जा मैंने तुझे दुनिया और इसका दस गुना दे दिया।

कितनी बड़ी दौलत है ईमान की जो अल्लाह ने हमें अता फ़रमाई, फ़र्ज़ नमाज़ का एक सज्दा ज़मीन व आसमान से ज़्यादा क़ीमती है।

नफ़िल रोज़ों की क़ीमत और अज्र व सवाब:

हदीस में आता है ﴿من صام يوما تطوعاً ثم اعطى مل الارض ذهبا لمن توف ثوابه دون يوم الحساب﴾ जिसने नफ़िल रखा और इस नफ़िल रोज़े के बदले में सात बर्रे आज़म को सोने से भर कर कहा जाए कि यह तेरे रोज़े का बदला है तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ये सब रोज़े का बदला नहीं बन सकता यह तो नफ़िल रोज़े है तो फ़र्ज़ फिर नमाज़ रोज़े से भी ज़्यादा ताक़तवर और ज़्यादा क़ीमती है। जब अदना दर्जे का जन्नती जन्नत में जाएगा तो इस के लिए जन्नत का दरवाज़ा जन्नत का ख़ादिम खोलेगा तो उसके हुस्न व जमाल को देख कर यह सिर झुकाएगा और वह कहेगा तुम क्या कर रहे हो तो यह कहेगा तुम फ़रिश्ते हो तो वह कहेगा मैं आप का ख़ादिम हूँ और नौकर हूँ और उसके लिए जन्नत में क़ालीन होंगे उस पर यह चालीस साल तक चल सकता है और उसके दोनों तरफ़ अस्सी हज़ार ख़ादिम होंगे और वे कहेंगे कि हमारे आक़ा आप इतनी देर से आए हो तो वह कहेगा शुक्र करो कि मैं आ गया तुम्हें क्या ख़बर कि मैं कहाँ फसा हुआ था ऐसी धुलाई हो रही थी कि

मत पूछो। अस्सी हज़ार नौकरों की तनख़्वाह इनको नहीं देनी पड़ेगी। उनका सारा ख़र्चा अल्लाह के ज़िम्मे है फिर आगे जाएगा तो बड़ा चौड़ा मैदान है जिसके बीच में एक तख़्त बिछा हुआ है, उस पर उसको बिठाया जाएगा तो हर नौकर एक खाने की क़िस्म पेश करेगा और एक पीने की क़िस्म, अस्सी हज़ार क़िस्म के खाने की क़िस्म अस्सी हज़ार पीने की क़िस्म न पेट थके न न आंत थके न दाँत थकें न जबड़ा थके न ज़ुबान दाँतों के अन्दर कटे। यह सारा निज़ाम इस लिए चल रहा है और हर लुक़्में की लज़्ज़त उसके लिए बढ़ती चली जाएगी, हर मशरूब की लज़्ज़त भी उसके लिए बढ़ती चली जाएगी। दुनिया का पहला निवाला ज़्यादा मज़ेदार होता है फिर उससे कम फिर उससे कम फिर न पीने को दिल चाहता है न खाने को लेकिन जन्नत में इसका उलटा होगा। अल्लाह तआला ऐसी क़ुव्वत देगा कि खाता रहेगा पीता रहेगा। पेशाब कोई नहीं, पाख़ाना कोई नहीं। फिर ख़ादिम कहेंगे अब इसको इसके घर वालों से मिलने दो। वे सब वापस चले जाएंगे फिर सामने से पर्दा हटेगा ﴿فــــاذا يـــمــلك الاخـــرة﴾ एक और पूरा जहान नज़र आया पूरी जन्नत जैसे तख़्त ऐसा ही आगे एक तख़्त उस पर एक लड़की जन्नत की हूर बैठी होगी उसके जिस्म पर सत्तर जोड़े होंगे, हर जोड़े का रंग अलग होगा, ख़ुशबू अलग होगी, सत्तर जोड़ों में उसका जिस्म नज़र आएगा जब चेहरे को देखेगा तो उस में अपना चेहरा नज़र आएगा उसके सीने पर नज़र पड़ेगी तो उसमें भी अपना चेहरा नज़र आएगा। ऐसा शफ़्फ़ाफ़ जिस्म उसका होगा। चालीस साल उसको देखने में गुम सुम रहेगा। अभी अभी जहन्नुम के काले काले फ़रिश्ते देख कर आया था अभी एक हूर को देख कर

अपने आप को भी भूल जाएगा। चालीस साल देखने में लगा हुआ है फिर वह हूर उसकी बेहोशी को तोड़ेगी ﴿اما لك منى رغبة﴾ अरे वली क्या आपको मेरी ज़रूरत नहीं फिर उसको होश आएगा कि कहाँ बैठा है पूछेगा कौन है? वह कहेगी कि मुझे अल्लाह तआला ने तेरी आँखों की ठन्डक के लिए बनाया है तो भाई यह तो इस सेंटीमीटर के करोड़वां ईमान का हिस्सा है जो इसके अन्दर अटका हुआ है। यह जन्नत उसकी क़ीमत है। अब अमरीका वालों के पास क्या है, आस्ट्रेलिया वालों के पास क्या है तो हमें अहसासे कमतरी से निकलना चाहिए। हमारी बरकत से सारी काएनात को रिज़्क़ मिल रहा है। हम हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत हैं सारी उम्मतों की सरदार उम्मत ﴿انتم خيرها واكرمها﴾ तुम सबसे बेहतरीन उम्मत हो सब से अफ़ज़ल तरीन उम्मत हो अल्लाह की नज़र में। एक दफ़ा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा या अल्लाह मेरी उम्मत से कोई अच्छी उम्मत है? मेरी उम्मत मन-सलवा और बादलों का साया जैसी नेमतें ले रही है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿اما تدرى يا موسى ان فضل امة احمد على الامم كفضلى على خلقى؟﴾ या मूसा आप को पता नहीं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत को सारी उम्मतों पर वह इज़्ज़त हासिल है जो मेरी ज़ात को मेरी मख़लूक़ पर इज़्ज़त हासिल है। हमारे तो मज़े हो गए कि हम हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उम्मती बन गए ﴿من جآء بالحسنة فله عشر امثالها﴾ जो एक नकी करेगा उसको दस दूंगा।

حدثنى عبدالرزاق عن معمر عن زهرى عن عروة عن عائشة رضى الله عنها عن رسول الله ﷺ عن جبرائيل عن قال الله تعالىٰ انى

استحی ان اعذب ذاشیبۃ فی الاسلام وانی یثبت فی الاسلام.

मुझे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बताया उसको मौम्मर ने उसे ज़हरी ने बताया उसे उरवा ने बताया उसे हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उन्हें हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया उन्हें हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम ने बताया जिबराईल अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने बताया कि जब कोई मुसलमान इस्लाम में बूढ़ा हो कर मरता है तो अज़ाब देते हुए मैं उससे शरमाता हूँ ऐ अल्लाह तुझे पता है कि मैं इस्लाम में बूढ़ा हुआ हूँ ﴿وانی ثبت فی الاسلام﴾ मैं सत्तर साल का बूढ़ा हूँ तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि

صدق عبدالرزاق وصدع معمر وصدق زھری
وصدق عروۃ وصدقت عائشہ وصدق رسولی و
حبیبی وصدق جبرائیل ولنا اصدق القائلین.

इन सब रावियों ने सच कहा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी सच कहा जिबराईल अलैहिस्सलाम ने सच कहा और मैं सारे सच्चों का सच्चा हूँ इस लिए तुझे मॉफ़ किया।

अल्लाह तआला ने बहुत बड़ा ईनाम फ़रमाया कि ईमान की दौलत हमें दे दी, बे मांगे दे दी सारे ख़ज़ानों से क़ीमती दौलत।

अल्लाह का तारूफ़ कराना इस उम्मत की ज़िम्मेदारी:

भाई यह क़ीमत है कि लिए बहैसियत मुसलमान अल्लाह ने हमारी ज़िम्मे बहुत बड़ा काम लगाया है जो हर मुसलमान कर सकता है अपने दीन की दावत देना और अपने दीन पर जमना यह हमारा काम है बतौर मक़सद के यह हमें मिला है। ये सारे फ़ज़ाईल इस लिए हैं कि अल्लाह तआला ने एक लाख चौबीस

हज़ार नबियों का सिलसिला चलाया और उसका उरूज मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ख़त्म फ़रमाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ख़ात्मा हुआ। अब तो इन्सानियत को हर वक़्त ज़रूरत है नबुव्वत की ﴿فالهمها فجورها وتقواها﴾ इसके अन्दर बुराई भी है और अच्छाई भी है लिहाज़ा ये दोनों माद्दे टकराते रहेंगे। नबुव्वत तो ख़त्म हो गई हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अब कौन है जो इन्सानियत की रहबरी का काम करे? अल्लाह तआला ने एक लाख चौबीस हज़ार नबियों को चुन कर इस पूरी उम्मत को मुख़ातिब फ़रमाया ﴿هو اجتبكم﴾ अब मैंने तेरी उम्मत को लिया है ﴿هو سمى كم المسلمين﴾ इसका नाम भी रख दिया है मुसलमान, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اسماء من اسمآء الله تعالى سمى بها امتى﴾ अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत का नाम भी अपने नाम पर रखा ﴿سمى نفسه السلام﴾ अल्लाह का एक नाम सलाम है ﴿سمىٰ به مسلمين﴾ अल्लाह तआला मेरी उम्मत का नाम मुसलिमीन रखा। हम से पहली उम्मतों का नाम मुसलिमीन नहीं रखा गया, यहूद, नसारा, मुस्लिम सिर्फ़ इस उम्मत को ख़िताब मिला है ﴿سمىٰ نفسه المؤمن، سمىٰ امتى بالمؤمنين﴾ अल्लाह का नाम मोमिन है मेरी उम्मत का नाम अल्लाह तआला ने मोमिनीन रखा है। सारे नबियों पर जब तक मैं न चला जाऊँ और सारी उम्मतों में जब तक मेरी उम्मत जन्नत में न चली जाए। वे कहेंगे या अल्लाह! यह क्या हो रहा है ये लोग आए हमारे बाद और जा रहे हैं हम से पहले तो अल्लाह पाक फ़रमाएंगे ﴿ذالك فضلى اُت من أشاء﴾ यह मेरा फ़ज़ल है जिसे चाहूँ दूं।

अरे भाई बहैसियत मुसलमान, अल्लाहु-अकबर ख़ुदा की

क़सम सात ज़मीन व आसमान की दौलत इस के सामने हेच है कि मैं मुसलमान हूँ मेरे पाँव में जूते न हों, जिस्म पर कपड़े न हों, खाने को रोटी न मिले, दर दर की ठोकरें खाया हुआ हूँ फिर भी मेरे पास आसमान व ज़मीन से क़ीमती दौलत है।

अल्लाह ने ईमान दिया और ईमान की मेहनत दी। अब अल्लाह का तार्रूफ़ कराना इस उम्मत का काम बन गया है। पहले नबी का काम होता था कि जाओ लोगों को बताओ कि तुम्हारा रब अल्लाह है और आगे मौत है, हशर है, हिसाब व किताब है लिहाज़ा अल्लाह की मान कर चलो, अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम है। ख़बरदार करना नबी का ज़िम्मा था, जन्नत से जहन्नुम से ख़बरदार करना हर नबी का काम था। अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़त्मे नबुव्वत के तुफ़ैल यह काम इस उम्मत को दिया है कि यह अल्लाह और उसके रसूल का तार्रूफ़ करवाए। यह हमें बतौर काम के मिला है। ये जो कम्पनियों के ऐजेन्ट होते हैं ये जो कम्पनियों की दवा बेचते हैं कम्पनी इनको पैसा भी देती है और लाइसेंस भी देती है, घर भी देती है और गाड़ी भी देती है इसी तरह हम अल्लाह और उसके रसूल के सफ़ीर हैं अल्लाह का तार्रूफ़ कराना हमारा काम है। हमारे बड़े का भी छोटे का भी, नौजवान का भी बूढ़े का भी, अनपढ़ का भी पढ़े लिखे का भी, डाक्टर का भी, इन्जीनियर का भी, औरत का भी, मर्द का भी, ग़रीब का भी, अमीर का भी, चाहे हम अफ़्रीका में चले जाएं या दुनिया के किसी गोशे में चले जाएं तो हमारा काम नहीं बदला।

अल्लाह के सफ़ीर:

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उम्मती होने के नाते हमें बड़ा इज़्ज़त वाला काम दिया गया है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें अपना सफ़ीर बनाया, सफ़ीर की ताक़त उस हुकूमत की ताक़त के बराबर होती है। हम अल्लाह के सफ़ीर हैं हमारे पीछे अल्लाह की ताक़त है। आप जहां कहीं भी रहते हैं अल्लाह तआला ने आपको सिफ़ारत का काम दिया है। अरे भाई अब पूरी दुनिया को यह समझाना है कि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है। अब यह हमारा काम है इस वक़्त सबसे बड़ी गुमराही यह है कि लोग समझते हैं कि कमाएंगे तो पैसा आएगा, पैसा आएगा तो ज़रूरतें पूरी होंगी, ज़रूरतें पूरी होने से हमारे हालात दरुस्त हो जाएंगे। हम उनको यह बात समझाएं कि सारी काएनात पर बादशाही सिर्फ़ एक अल्लाह की है ﴿له ملك السموات، له ما في السموات وما في الارض وما بينهما وما تحت الثرىٰ﴾ यह बात हर इन्सान को समझानी है आसमान पर अल्लाह बादशाह है और ज़मीन पर भी अल्लाह बादशाह है और तहतुस्सरा में भी अल्लाह बादशाह है ﴿الله ما في السموات في الارض﴾ यह हमारे ज़िम्मे है कि हम हर घर में जा कर उनको यह बता दें कि अल्लाह की मान कर उसकी ज़मीन पर चलना ही कामयाबी है, अल्लाह का यह निज़ाम भी अजीब है कि अपने दीन का काम भी अक्सर ग़रीबों से लेता है और माल दारों से ज़्यादा नहीं लेता क्योंकि उनका गुमान है कि जब पैसा आए तो तबलीग़ करेंगे अल्लाह कहता है दुनिया में तो जितना थोड़ा उतना ही आसानी से क़ुर्ब नसीब होगा।

दो सरदार आए अक़रब बिन हाबिन और अऐना हस्न ख़ज़ारी हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में कि हम तेरी बात मान लेते हैं लेकिन इन ग़रीबों का उठा दो बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। ये ग़रीब लोग हैं छोटे लोग हैं इनकी उठाओ इनके साथ बैठना हमारी हतक है फिर हम आपकी बात सुनेंगे। एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम तो आपके ग़ुलाम हैं हम को उठा लें या हम को बिठा लें तो हम आप ही के हैं तो मुमकिन है कि हम को उठाने से ये बैठ जाएं और ये बात सुन कर ईमान ले आएं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बात है तुम आ ओगे तो ये नहीं होंगे। उन्होंने कहा आप हमें लिख कर दो तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे कहा लिखो। लिखने के वाले के आने से पहले अल्लाह तआला ने हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम को भेजा ﴿لا تطرد الذين يدعون ربهم بالغداوة والعشي﴾ इनको आप नहीं उठा सकते वे आएं या न आएं। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उमैया बिन ख़लफ़ से बात कर रहे थे और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मकतूम रज़ियल्लाहु अन्हु आ गए जो नाबिना भी हैं और ग़रीब भी। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसको समझा रहे थे और वह बड़ी तवज्जोह से आपकी बातें सुन रहा था इतने में अब्दुल्लाह बिन मकतूम रज़ियल्लाहु अन्हु आ कर फ़रमाने लगे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ﴿علمني ما علمك الله﴾ इतना सा ख़याल आया तो इधर से जिबराईल अलैहिस्सलाम आए ﴿عبس وتولى ، ان جاءه الاعمى.... كرام﴾

बـــــررة﴾ तक कलामे पाक पढ़ा। अच्छा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माथे पर त्योरी चढ़ गई, मुँह फेर लिया क्योंकि यह ग़रीब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आ गया, अन्धा आ गया जो कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिदायत का तलबगार है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कुछ सीखना चाहता है और यह बदबख़्त जिसको न आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़द्र है न दीन की क़द्र न मेरी पहचान और इसकी वजह से आप इस ग़रीब को छोड़ रहे हैं यह मुसलमान चाहे ग़रीब हो या अमीर हो अगर यह ठान ले कि मुझे दीन ज़िन्दा करना है तो अल्लाह इस से काम लेगा उसकी ग़रीबी न आड़े आएगी न उसका पैसा आड़े आएगा।

तबलीग़ करना हर एक के लिए ज़रूरी है:

मेरे कहने का मक़सद यह है कि हमें मुसलमान होने की हैसियत से अल्लाह ने बहुत बड़ा काम दे दिया है हम अपनी ज़िम्मेदारी को पहचानें। अल्लाह तआला ने आपका यहाँ मुक़द्दर लिख दिया और रोज़ी यहाँ लिख दी है इस में यह हिकमत थी कि अगर आप लोग यहाँ न होते तो यह इज्तिमा का नक़्शा कैसे होता, अल्लाह तआला ने आप लोगों को ज़रिया बना दिया, आप अपने को आस्ट्रेलिया के लिए चाबी समझें, अब यहाँ अल्लाह के कलिमे को ज़िन्दा करना आपकी ज़िम्मेदारी है। यह ज़िम्मेदारी तबलीग़ी जमात की वजह से नहीं आई है क्योंकि तबलीग़ कोई जमात नहीं है जो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आख़िरी नबी मानता है उसके ज़िम्मे है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैग़ाम को आगे ले जाए और यह ज़िम्मेदारी

हमें हज्जतुलविदा के मौक़े पर मिली है ﴿الا فليبلغ الشاهد الغائب﴾ पैग़ाम यह है कि इस काएनात का सिर्फ़ एक रब है जिससे डरा जाए और किसी से न डरा जाए ﴿لا رب ان يخشى، ولا رب يرجى﴾ और कोई रब नहीं जिससे उम्मीद लगाई जाए ﴿ولا حاجب يشفع﴾ उसके दर्मियान में कोई वास्ता नहीं जिसको सिफ़ारिश देकर या रिश्वत देकर काम निकाला जाए ﴿ولا وزير يعطى﴾ उसका कोई वज़ीर नहीं जिस पर काम डाला जाए।

﴿فقدرنا فنعم القدرون﴾ हम ही हैं अन्दाज़ा लगाने वाले और कौन है मेरे अलावा यह निज़ाम चलाने वाला? यह हमारा काम है भाई बतौर मुसलमान होने के इस काम को अपने ज़िम्मे समझें। अल्लाह तआला की किबरियाई सब को बयान करें।

मुबल्लिग़ का काम दावत पहुँचाना है:

अल्लाह का तार्रूफ़ कराना हमारा काम है हमारी सिफ़ारत है। अनपढ़ भी सफ़ीर पढ़ा लिखा भी सफ़ीर। इस सारे निज़ाम में एक अकेले बादशाह की हुकूमत है। हर एक के दिल में यह बात बिठाना, घर घर में जाना यह नबी का काम है नबी यह नहीं कहता कि मेरे क़रीब आओ नबी कहता है कि मैं ख़ुद आता हूँ। अबू जहल नहीं सुनता मुझे सुनाना है अबू लहब नहीं सुनता मुझे सुनाना है। वह पत्थर मार रहा है यह सुना रहे हैं, वह गाली दे रहा है यह सुना रहे हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बनू हनीफ़ा के पास तशरीफ़ ले गए। अल्लाहु-अकबर उन्होंने कहा हमारे सरदार आ जाएं तो बात कर लेना। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रखते थे कि उनका सरदार आ गया और कहा कौन है? वह क़ुरैशी है जो यह कहता है कि मैं रसूल

हूँ। उसने बहुत बड़ी गाली दी उठ जा और चला जा मेरे ख़ेमे में नज़र न आना वरना मैं तेरी गर्दन उड़ा दूंगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उठे ग़मज़दा ऊँटनी पर सवार हुए तो उसने ऊँटनी के पीछे नेज़ा मारा तो ऊँटनी बिदक गई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऊँटनी से ज़मीन पर जा गिरे फिर भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको दावत दी और कहा कि यह मेरा काम है। हमें मुसलमान होने की हैसियत आस्ट्रेलिया में क्या करना है? अल्लाह का तार्रुफ़ कराना है और इसी से थोड़ा सा वक़्त निकाल कर कमाई भी करना है। हम कमाने के लिए नहीं आए हैं आज से अपनी नियतें बदल लें जैसे ही आप नियत बदलेंगे तो अल्लाह की क़सम अल्लाह की निगा आप पर पड़ेगी। हाय अल्लाह मुहब्बत से देखेगा कितनी बड़ी बात है। अरे भाई हम तो बड़े इज़्ज़त वाले हैं अल्लाह की निगाह में हमारे पास एक कड़ी भी न हो तो हम इज़्ज़त वाले हैं हम अल्लाह को पहचानते हैं और उसके रसूल को पहचानते हैं अल्लाह को सब नबी प्यारे होते हैं क्योंकि वह अल्लाह की तारीफ़ करते हैं आज जो ऐसी आवाज़ लगाएगा वह भी अल्लाह को प्यारा होगा जैसे नबी प्यारे होते हैं। मूसा अलैहि के पास सोने के लिए बिस्तर नहीं था और फ़िरऔन सोने चाँदी की मसहरियों पर सोता था। क्या मूसा अलैहिस्सलाम छोटे बन गए? हमें अपने नबी का तार्रुफ़ कराना है, उसकी ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी में लाना है, अरे भाई ज़मीन व आसमान पर बादशाही अल्लाह के हाथ में है ﴿وتعز من تشاء وتذل من تشاء﴾ ज़िल्लत और इज़्ज़त पैसे से नहीं अल्लाह के इरादे से है फ़रमाया ﴿من اعتمد على ماله فقد ضل﴾ जो कहता है कि पैसे से काम बनता है उसके काम

हमेशा अधूरे ही रहते हैं ﴿من اعتمد على سلطانه فقد ضل﴾ जो कहता है हुकूमत से इज़्ज़त मिलती हे तो उसे हमेशा ज़िल्लत ही देखनी पड़ती है ﴿من اعتمد على علمه فقد ضل﴾ जो कहता है कि मैं बड़ा आलिम हूँ तो वह हमशा गुमराह ही रहता है ﴿من اعتمد على عقله فقد اعتل﴾ जो कहता है कि मेरी अक़्ल पूरी है तो उसकी अक़्ल ख़राब हो कर रहती है ﴿من اعتمد على الله فلا ضل ولا قل ولا بل ولا اختمل﴾ और जो कहता है कि मेरा अल्लाह मुझे काफ़ी है तो न उसाक माल कम होता हे न उसकी अक़्ल ख़राब होती है न वह ज़लील होता हे न वह गुमराह होता है अल्लाह उसको काफ़ी हो जाता है।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबार ज़िन्दगी को सीखनाः

सारी दुनिया के इन्सानों को यह बताना कि हालात भी अल्लाह के हाथ में हैं, चीज़े भी अल्लाह के हाथ में हैं ﴿القى بينهم العداوة والبغضآء سيجعل لهم الرحمن ودا﴾ मुहब्बत अल्लाह की तरफ़ से है, नफ़रत अल्लह की तरफ़ से है, हर चीज़ अपने वजूद में आने में अल्लाह की मोहताज है। यह बात हमें समझानी है। अल्लाह के ख़ज़ाने हमारे लिए खुल जाएं और अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम हमारे हक़ में हो जाए, अल्लाह हमारा हो जाए और हमारे लिए दुनिया व आख़िरत के फ़ैसले कर दिए जाएं इसके लिए हमें पैसा नहीं चाहिए। इसके लिए हमें हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी को सीखना है जो सैयदुल-अव्वलीन-वल-आख़िरीन हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿انا نبى الانبيآء بعثت إلى الأسود والأحمر، الى كل جن

जिन्नात के नबी, इन्सानों के नबी। अल्लाह ने अपनी किताब में किसी नबी की क़सम नहीं खाई लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उमर की क़सम खाई। उस नबी से निकला हुआ अमल कितना क़ीमती होगा। एक सुन्नत ज़मीन व आसमान से क़ीमती है। यह बात मुसलमान को समझानी है। दवाई में पाँच जुज़ हों तो उसमें से एक जुज़ निकाल दिया जाए तो दवाई की ताक़त घटती है या नहीं घटती? एक पुर्ज़ा मशीन में से निकाल दिया जाए तो मशीन की ताक़त घटती हे कि नहीं? और एक सुन्नत छोड़ने से कुछ नहीं होगा कि सुन्नत है कोई बात नहीं कर लो तो ठीक है न करो तो भी ठीक है। यह कैसे हो सकता है? अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में हर नबी को नाम लेकर पुकारा लेकिन अल्लाह ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब भी पुकारा है तो नाम नहीं लिया ﴿يايها الرسول، يايها النبي، يايها المزمل، يايها المدثر﴾ एक जगह भी नाम नहीं लिया और चार जगह नाम लिया है तो यह ख़िताब नहीं किया सिर्फ़ बताया है कि यह मेरे हबीब के नाम हैं और यह नाम अब्दुलमुत्तलिब ने नहीं रखा है न आमना ने रखा है यह नाम मैंने रखा है हज़ारों साल पहले पैदाईशे आदम से भी पहले अल्लाह तआला ने क़ुरआन पढ़ा उस वक़्त भी नामे मुहम्मद क़ुरआन में मौजूद था और जहाँ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम लिया है तो साथ ही रिसालत का ज़िक्र किया है ﴿محمد الا رسول﴾ नाम के साथ रिसालत ﴿ما كان محمد ابا احد من رجالكم ولكن رسول الله﴾ पहले नाम बाद में रिसालत ﴿هو الحق من ربهم﴾ फिर एक जगह अहमद आया है वह भी यह बताने के लिए कि यह नाम भी मैं ने ही रखा है ﴿ومبشرا برسول ياتي بعدى﴾

اسمه احمد﴾ रिसालत को पहले लाए मेरे बाद एक नबी आएगा उसका नाम अहमद होगा जिसका नाम अल्लाह ने रखा और क़ुरआन पाक में जिसको नाम से ख़िताब नहीं किया, लक़ब से ख़िताब किया तो उसका अल्लाह के यहाँ कितना बड़ा मक़ाम होगा और अपने नाम के साथ उनके नाम को जोड़ा जब मैराज में गए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शानः

क़यामत तक अल्लाह और उसके रसूल के नाम एक दूसरे से जुदा नहीं होंगे अल्लाह ने हर जगह अपने नाम के साथ अपने हबीब के नाम को जोड़ा है। भाई हमें यह बताना है कि तुम कामयाबी चाहते हो तो हमारे नबी के तरीक़े पर आ जाओ और अपनी ज़रूरतों को और हाजतों को नमाज़ के ज़रिये से पूरा कराओ। अल्लाह ने हमें सबसे बड़ा अमल दिया है। मेरे भाईयो अल्लाह ने अपने ख़ज़ाने से निकालने के लिए हमें नमाज़ अता फ़रमाई है। पहली उम्मतों पर सिर्फ़ दो नमाज़ें फ़र्ज़ थीं फ़ज्र और अस्र वह भी दो रकूअत। हमें अल्लाह ने पचास अता फ़रमायीं। पचास नमाज़ें पढ़ सकते थे, कौन पढ़ता? अल्लाह ने अपनी मुहब्बत बढ़ा दी इस उम्मत से इतनी मुहब्बत है कि यह सज्दे में पड़ी ही रहे उठे ही नहीं और अपना ताल्लुक़ बताना चाहता है कि यह उम्मत मस्जिद में ही रहे मस्जिद से निकले ही नहीं। जो माँ बाप का इकलौता बेटा होता है तो वालिदैन चाहते हैं कि यह हमारी आँखों में ही रहे इधर उधर न हो। अल्लाह तआला को अपने हबीब से प्यार और उसकी उम्मत से भी प्यार इस लिए यह मेरे सामने ही रहे। या अल्लाह हमें रोटी भी कमानी है और

तक़ाज़े भी पूरे करने हैं तो अल्लाह तआला ने पाँच ही देनी थीं। वह सारी चलवाई और मूसा अलैहिस्सलाम को ज़रिया बनाया। उन्होंने कहा कि ये पाँच भी नहीं पढ़ेंगे मेरी उम्मत पर दो फ़र्ज़ हुई थीं वह भी नहीं पढ़ सकी आप और भी कम करवा लें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे अपने रब से शर्म आती है। अल्लाह तआला ने आपको आसमान पर बुला कर अता फ़रमाई। एक दफ़ा कहा सुअर न खाओ, एक दफ़ा कहा शराब न पियो, एक दफ़ा कहा ज़िना न करो लेकिन दसियों दफ़ा कहा कि नमाज़ क़ायम करो।

जिबराईल अलैहिस्सलाम आए या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आसमान सजाए जा चुके हैं अल्लाह के अर्श पर आपका इन्तेज़ार हो रहा है फिर बैतुल्लाह से बैतुलमुक़द्दस पहुँचे। यह नमाज़ का तोहफ़ा अर्श से मिला। यह इतनी अज़ीमुश-शान चीज़ है। जहाँ नमाज़ का वक़्त हुआ अज़ान दे कर नमाज़ पढ़ें। जब अज़ान देंगे तो जहाँ जहाँ तक आवाज़ जाएगी क़यामत के दिन हर हर पत्थर आपकी गवाही देगा, हर दरख़्त और पत्ता आपकी गवाही देगा। जहाँ आप सज्दे में सिर रखेंगे तो तहतुस्सरा तक ज़मीन पाक हो जाती है। हदीस पाक में आता है कि जब आदमी ज़मीन पर सिर रखता है तो अल्लाह तआला के क़दमों पर सिर रखता है जब अल्लाहु-अकबर कहता है तो ज़मीन व आसमान का ख़ला नूर से भर जाता है, अर्श के पर्दे उठ जाते हैं, जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं और जन्नत की हूरें जन्नत के दरवाज़े खोल कर नमाज़ी को देखती हैं। जितना लम्बा क़याम करेगा उसकी मौत की सख़्ती आसान होती चली जाएगी लम्बी नमाज़ मौत की सख़्ती को तोड़ देती है। जब रुक्

करेगा तो जितना जिस्म का वज़न है इतना सोना सदक़ा करने का सवाब मिलेगा। जब रुकू से खड़ा होता है तो अल्लाह तआला मुहब्बत की निगाह से देखते हैं। सज्दे में जाता है तो सारे गुनाह उसके धुल जाते हैं, जब अत्तहियात पढ़ता है तो साबिरीन का अज्र मिलता है। जब नमाज़ में दरूद पढ़ता है तो अल्लाह पाक दस दफ़ा दरूद भेजता है। जब सलाम फेरता है तो गुनाहों से बाहर हो जाता है। अल्लाह तआला ने इतनी बड़ी नेमत अता फ़रमाई है कि अगर कोई तकलीफ़ है तो पढ़ नमाज़। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कोई तकलीफ़ होती तो फ़ौरन नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जे होते थे। ﴿قد افلح المؤمنون﴾ हर ईमान वाला नहीं पूरा कामयाब ﴿الذين هم فى صلوتهم خاشعون﴾ जिसकी नमाज़ ऐसी होगी वह कामयाब ﴿قد افلح من تزكى وذكر اسم ربه فصلى﴾ कामयाब हो गया वह जिस ने वुज़ू करके पाक हो कर अल्लाह को सज्दा किया वह कामयाब हो गया ﴿الا المصلين الذين هم على صلوتهم دائمون﴾ इन्सान बड़ा बे सब्रा, बड़ा बख़ील, बड़ा मुतकब्बिर है लेकिन नमाज़ी मुतकब्बिर नहीं होता अल्लाह गवाही दे रहा है ﴿ومن الليل فاسجد له وسبحه ليلا طويلا﴾ और अल्लाह अपने हबीब से कह रहा है कि हर रात मेरे पास आ जाया कर ﴿فاذا فرغت فانصب والى ربك فارغب﴾ रात को सारे सो जाएं तो मेरे पास आया कर कि नमाज़ में अल्लाह से बात करना है ﴿الصلوة صلة بين عبد ورب﴾ अब आप बताएं पचास साल हो गए नमाज़ पढ़ते हुए एक सज्दा भी ऐसा नहीं मिला जो अल्लाह के ध्यान के साथ हो तो वह नमाज़ कैसी नमाज़ होगी? फिर इसका इक़रार भी नहीं कि मेरी नमाज़ ख़राब है। दुनियावी मस्अला अटक गया तो दुआ कराते फिरते हैं कि मेरा मस्अला अटक गया है यह नहीं

दुआ कराते फिरते हैं कि मेरा मस्अला अटक गया है यह नहीं हो रहा है वह नहीं हो रहा है। चालीस बरस में नमाज़ में खुशु नहीं तवज्जे नहीं अल्लाह का हुज़ूर नहीं और उसके लिए कोई दुआ भी नहीं। अल्लाह से रो रो कर मांगों कि या अल्लाह मेरी नमाज़ ठीक कर दे। वह नमाज़ कैसी नमाज़ है जिसमें अल्लाह का ध्यान न हो। सब से आला नमाज़ है कि जब आदमी अल्लाहु-अकबर कहता है तो फिर अल्लाह ही अल्लाह हो, अल्लाह का ग़ैर न हो। अबू रेहाना रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़ का क़िस्सा पीछे गुज़र चुका है कि बीवी इन्तेज़ार में है कि आज रात हक़ूक़ की अदाएगी। दो रक्अत नमाज़ की नियत बांधी तो फ़ज्र की अज़ान हो गई और नमाज़ ख़त्म नहीं हुई। ऐसी नमाज़ों पर आना है और लाना है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे तौरात के बदले सूरह फ़ातेहा मिली है, इन्जील के बदले सूरह माएदा मिली है, ज़ुबूर के बदले में हामीम की सूरतें मिली हैं, मुफ़स्सलात के ज़रिए जो बाक़ी क़ुरआन है उसके ज़रिए मुझे इज़्ज़त मिली है। जन्नत में क़ुरआन पाक सुनाया जाएगा और कोई किताब नहीं। हर मुसलमान क़ुरआन को निकाले और पढ़े और सीखे क्योंकि यह अल्लाह की बात है। अल्लाह जन्नत में सब अव्वलीन व आख़िरीन को एक जगह इकठ्ठा करेगा, जन्नत में एक मैदान है जिसका नाम मज़ीब है उसकी चौड़ाई अल्लाह के अलावा जानता कोई नहीं। अल्लाह सब को बुलाएगा और बिठाएगा फिर उनको खाना खिलाएगा, पानी पिलाएगा, फल खिलाएगा, कपड़े पहनाएगा, उसमें खुशबु लगाएगा। शाही दरबार में जाने के लिए ख़ास लिबास होता है फिर उसके बाद अल्लाह तआला जन्नत

की हूरों से फ़रमाएगा आओ और मेरे बन्दों को आज जन्नत का नग़मा सुनाओ तो उनकी आवाज़ इतनी दिल फ़रेब होगी कि उनकी आवाज़ सुन कर सारे झूम जाएंगे।

अल्लाह का दीदारः

आख़िर में अल्लाह पाक पर्दे उठाएंगे अल्लाह को सामने देख रहे होंगे ﴿الى ربها ناظرة﴾ अरे मेरे भाईयो क्या बताऊँ, हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम अठ्ठारह साल बीमार रहे हैं। वह बीमारी किसी दूसरे पर नहीं आएगी फिर अल्लाह तआला ने सेहत दे दी, तन्दरुस्ती, तवानाई, क़ुव्वत दे दी। किसी ने पूछा कि बीमारी के दिन याद आते हैं फ़रमाने लगे जब मैं बीमार था तो अल्लाह तआला रोज़ाना पूछता था कि अय्यूब क्या हाल है उस एक बोल में ऐसी लज़्ज़त थी कि किसी चीज़ में नहीं थी।

और अल्लाह तआला देख रहा है और पूछ रहा हो। हदीस पाक में आता है कि जन्नत में से हर एक का अल्लाह नाम लेकर बात करेगा कि तेरा क्या हाल है, तेरा क्या हाल है। एक एक का नाम लिया जाएगा फिर अल्लाह को देखेंगे उनका कलाम सुनेंगे क्या लज़्ज़त होगी।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देख कर औरतों ने हाथों पर छुरियां चला लीं और यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को बनाने वाले के हुस्न को कोई नाप सकता है फिर अल्लाह पाक कलाम पाक सुनाएगा। यह वह क़ुरआन है जो अल्लाह पाक ने हमें अता किया है, मुसलमान क़ुरआन सीखें। अरबी में क़ुरआन पढ़ें, क़ुरआने पाक की तिलावत के लिए वक़्त निकाला जाए, अल्लाह के ज़िक्र के लिए वक़्त निकाला जाए। क़ुरआन क़यामत में

जाएगा जो क़ुरआन पाक को पीछे रखेगा उसको धकेल कर दोज़ख़ में डालेगा और भाई नबुव्वत वाले अख़लाक़ सीखें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿بعثت لأتمم مكارم الاخلاق﴾ मैं अख़लाक़ की चोटियों तक पहुँचाने के लिए आया हूँ। नबुव्वत के अख़लाक़ क्या हैं? ﴿صل من قطعك تعطى من حرمك، واعف عمن ظلمك، واحسن من اساء ك إليك﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो यह अख़लाक़ सीख लेगा उसको जन्नतुल फ़िरदौस में घर ले कर दूंगा। ﴿لمن حسن خلقه﴾ जो अपने अख़लाक़ को अच्छा कर ले तो मैं ज़ामिन हूँ जन्नतुल फ़िरदौस में घर ले कर दूंगा तो भाई अख़लाक़ ऐसी ताक़त है अगर कोई ख़ुशबू लगाए तो वह बताए या न बताए तो हर सूरत में आपको चल जाएगा। लिहाज़ा अगर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाले अख़लाक़ हमारे अन्दर आ जाएं तो यूं हवा में ईमान और इस्लाम फैलता चला जाएगा, नबुव्वत वाले अख़लाक़ को सीखें। ये अख़लाक़ बड़े से बड़े आदमी को गिरा देते हैं, बड़ी से बड़ी ताक़त को तोड़ देते हैं, बड़े से बड़े कुफ़्र को खोखला कर देते हैं तो भाई यह हमारा काम है अल्लाह का तार्रूफ़ कराना और अपने नबी का तार्रूफ़ कराना। नमाज़ को आला से आला तरीक़े से क़ायम करना औरों को नमाज़ों पर लाना, क़ुरआन पाक की तिलावत करना, अल्लाह का ज़िक्र करना, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाले अख़लाक़ को सीखना और सिखाना और उसकी दावत देना अल्लाह को राज़ी करने के लिए हर काम करना और अपने आपको हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाएब समझ कर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नियाबत में सारी दुनिया के इन्सानों को

अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने की नियत करके अपनी जान व माल से कोशिश करना। नियत करते ही अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम हमारे हक़ में हो जाएगा, ग़ैबी निज़ाम हमारे मुवाफ़िक़ हो जाएगा। दुनिया भी बनेगी और आख़िरत भी बनेगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हें पता है कि जन्नत में सबसे पहले कौन जाएगा? या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह आपको और आपके रब को पता है। कहा ﴿الفقراء المهاجرون﴾ फ़ुक़रा और मुहाजिरीन दीन के लिए हिजरत करने वाले जो मुसीबतें सहते हैं ﴿يموت احدهم وحاجته فى صدره﴾ वे मरते थे और ज़रूरतें उनके सीने में घुट कर रह जाती थीं। ज़रूरते पूरी न कर सके और मर गए। क़यामत के दिन अल्लाह फ़रिश्तों से कहेगा कि जाओ उनको सलाम करो। फ़रिश्ते कहेंगे या अल्लाह ये कौन हैं जिनको आप कह रहे हैं कि हम सलाम करें? अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ये वे लोग हैं जो मेरे दीन की ख़ातिर धक्के खाते फिरते थे। फ़रिश्ते आएंगे ﴿سلام عليكم بما صبرتم فنعم عقبى الدار﴾ कहेंगे हम आपको सलाम करने के लिए आएं हैं अल्लाह तआला ने आपको ऊँचा मक़ाम अता फ़रमाया है और अल्लाह तआला दीन की मेहनत करने वालों को वे दर्जात देते हैं कि घर में इबादत करने वालों को उसकी हवा भी नहीं लग सकती। जन्नत में नूर की चमक उठेगी सारी जन्नत रोशन हो जाएगी लोग कहेंगे यह नूर कैसा है? यह जन्नतुल फ़िरदौस के जन्नती के चेहरे का नूर है या अल्लाह इसको यह दर्जा कैसे मिला? अल्लाह फ़रमाएगा यह मेरे रास्ते में निकल कर मेरे दीन को फैलाता था और तुम घर बैठ के मुझे याद करते थे तुम और वह बराबर कैसे हो सकते हैं। एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु आए

या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं अल्लाह के रास्ते में माल ख़र्च कर दूं और ख़ुद न जाऊँ? क्या ख़याल है? मुझे अल्लाह के रास्ते में जाने का सवाब मिलेगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कितने पैसे हैं, कहने लगे छः हज़ार तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम अगर उनको ख़र्च कर दो तो जो आदमी अल्लाह के रास्ते में सोया हुआ है उसकी नींद के अज्र को भी नहीं हासिल कर सकते। अल्लाह तआला ने जन्नत को लफ़्ज़ "कुन" से बनाया और फ़िरदौस को अपने हाथ से बनाया है फिर इस पर मुहर लगा दी उसको किसी को नहीं दिखाया फिर दिन में पाँच दफ़ा कहता है ﴿ازدادی طیبا لا ولیائی وازدادی حسنا لا ولیائی﴾ ऐ जन्नत मेरे दोस्तों के लिए ख़ूबसूरत हो जा, मेरे दोस्तों के लिए पाकिज़ा हो जा। वह आगे से दुआ करती है ऐ अल्लाह मेरा फल पक गया नहरों का पानी बाहर निकल रहा है, किनारे छलक पड़े, ऐ अल्लाह जन्नत वालों की मुश्ताक़ हूँ, कब आएंगे जन्नत को आबाद करेंगे उनको मेरे पास भेज दें। दिन में पाँच दफ़ा हुक्म हो रहा है कि ख़ूबसूरत हो जा।

दीन की मेहनत पर दुनिया भी आख़िरत भीः

तो भाईयो! यह पूरी मेहनत से हासिल होगा और मेहनत भी अल्लाह तआला ने ख़ुद हमें दी। हमारे इलाक़े में एक ग़रीब आदमी का बेटा डाक्टर बन गया इसकी मिसाल देते थे कि देखा वह डाक्टर बन गया उसकी इ़ज़्ज़त है, कितनी उसकी शोहरत है तू भी ऐसा हो जाएगा। इसी तरह अल्लाह तआला भी काम बता रहे हैं और इसकी फ़ज़ीलत बता रहे हैं कि तुम मेरे काम को

करो दुनिया में भी इज़्ज़त आख़िरत में जन्नत और मेरी रज़ा ﴿رضوان من الله اكبر﴾ क्या ख़याल है भाई अल्लाह की रज़ामन्दी है। उससे तमाम मसाइल होंगे। दीन पर आना, दीन पर लाना यह हमारा काम है। अल्लाह तआला की पहचान कराना और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहचान करवाना इल्म और ज़िक्र की फ़िज़ाओं को क़ायम करना और करवाना यह हमारा काम है इस पर अल्लाह तआला कहता है कि दुनिया भी दे दूंगा और आख़िरत भी दे दूंगा। मुझे पता है आप ख़ाली जन्नत पर राज़ी नहीं होंगे तुम्हें मैंने ही बनाया है। जो अल्लाह का बन कर अल्लाह से मांगे उसे अल्लाह तआला दे देंगे लेकिन शर्त यह कि पहले उसके दीन पर चलना सीखें और दूसरों को सिखाएं उसके लिए आवाज़ लगती है कि कुछ वक़्त लगा कर इस काम को सीखा जाए।

दुनिया आज़माइश की जगह है

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من يهده الله فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد ان لا اله الله وحده لا شريك له ونشهد ان سيدنا ومولٰنامحمدا عبده ورسوله وصلى الله تعالٰى عليه وعلى اله واصحابه وبارك وسلم امابعد

فأعوذ بالله من الشيطن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم.

ام حسبتم ان تدخل الجنة ولما تأتكم مثل الذين خلوا من قبلكم مستهم البأسآء والضرآء وزلزلوا حتى يقول الرسول والذين آمنوا معه متى نصر الله الا نصر الله قريب،

وقال تعالٰى آلٓم احسب الناس ان يتركوا ان يقولوا امنا وهم لا يفتنون وقال تعالٰى ولنبلونكم بشئ من الخوف والجوع ونقص من الاموال والا نفس والثمرات وبشر الصٰبرين الذين اذا اصابتهم مصيبة قالو انا لله وانا اليه راجعون، اولٓئك عليهم صلوات من ربهم ورحمة، واولٓئك هم المهتدون

وقال النبى ﷺ مثل الدنيا من الا خرة ليس الامثل ما يجعل احدكم اصبعه فى اليم فلينظر بم يرجع قال النبى ﷺ الا وان أهل اسلام.

وقال النبى ﷺ الدنيا دار من دار له ومال من لا مال له ولها يجمع من لا عقل له اوكما قال صلى عليه وسلم.

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मेहनत का मैदानः

भाईयों और दोस्तों! अल्लाह जल्ले जलालुहू ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक मेहनत का मैदान देकर भेजा

है जिसे सारे आलम के लिए क़यामत तक के लिए क़ायम किया गया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबुव्वत का अरसा सबसे कम दिया गया है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेहनत करके एक उम्मत को तैयार किया जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के काम को लेकर चल सके और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाली सिफ़ात में ढल कर सारे आलम को हिदायत की दावत दे सके और ईमान की तरफ़ बुला सके। मेरे भाईयो पहले नबी आए और चले गए बाद में दूसरे आए ﴿ثم ارسلنا رسلنا تترا﴾ एक के बाद दूसरा आया ﴿ولكل قوم هاد﴾ हर क़ौम व क़बीले में नबी आया ﴿وان امة الا خلافيها نذير﴾ हर उम्मत में नबी आया जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आए तो बड़े अजीब अन्दाज़ से आए ﴿تبارك الذى نزل الفرقان على عبده ليكون للعلمين نذيرا﴾ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मेरे भाईयो सारी दुनिया के इन्सानों की हिदायत के लिए भेजा और सारे आलम की हिदायत के लिए भेजा इसके लिए मेरे भाईयो चाहिए तो यह था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसललम क़यामत तक ज़िन्दा रहते ताकि हर हर उम्मत और हर हर क़ौम का इस कलिमे का पैग़ाम पहुँचाते लेकिन अल्लाह की हिकमते बालग़ा ने आप को सिर्फ़ तेईस बरस में वापस बुला लिया। आप को तो अपने पास बुला लिया अब आइन्दा इन्सानों के लिए क्या इन्तेज़ाम किया है कि वे मुसलमान बनें और उनमें हिदायत आए और कलिमे को ले कर चलें और उनमें नबी वाली ज़िन्दगी आए, इसका क्या इन्तेज़ाम था? नबी अब कोई नहीं आएगा, न अब कोई रसूल आएगा, किताब अब मुकम्मल हुई:

اليوم اكملت لكم دينكم واتممت عليكم نعمتى ورضيت لكم الاسلام دينا. (القرآن)

मैंने इस्लाम को मुकम्मल किया और नबुव्वत को भी मुकम्मल किया ﴿مثلى ومثل الانبياء من قبلى كمثل الرجل بنى بيتاً فاجمله واحسن﴾ (الحديث) मेरी मिसाल और दूसरे नबियों की मिसाल जो मेरे से पहले आए उस शख़्स की तरह है जिसने घर बनाया और उसको बड़ा हसीन व जमील बना कर ﴿الا موضع لبنة فى زواية﴾ एक कोने में जगह छोड़ दी लोग कहते हैं यह कोना क्यों ख़ाली है और तुम सारे के सारे सुन लो इस नबुव्वत का जो महल था उसका जो आख़िरी पत्थर था वह मैं था मुझे लगाया गया ﴿انا اخر الانبياء لا نبى بعدى وانتم آخر الأمم لا امة بعد كم (الحديث) मैं आख़िरी नबी हूँ मेरे बाद कोई नबी नहीं तुम आख़िरी उम्मत हो तुम्हारे बाद कोई उम्मत नहीं।

नबियों वाली मेहनतः

मेरे भाईयो! क्योंकि कोई और नबी आना नहीं था इस लिए अल्लाह जल्ले जलालुहू ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह बता दिया कि अब मैं नबी नहीं भेजूंगा तुम एक उम्मत तैयार करो जो तुम्हारे जैसी क़ुर्बानी दे, जो तुम्हारी तरह पेट पर पत्थर बांधे, जो तुम्हारी तरह बीवी बच्चों की ख़ानदान की क़ुर्बानी दे, ख़्वाह वह तुम्हारी तरह दुनिया को ठोकर मारे और दुनिया को क़दमों में डाले लेकिन मेरे अम्र को सिर पर रखे और तेरी वाली सिफ़ात कोअपने अन्दर पैदा करें और फिर तेरे कलिमे को लेकर दर ब दर फिरें, गली गली, नगर नगर फिरेंजब यह उम्मत तेरे कलिमे को लेकर फिरेगी तो जो

मेरी मदद मेरे नबी तेरे साथ है मैं वही मदद उस उम्मत के साथ भी कर दूंगा और जैसे मेरी नज़्रे रहमत तेरे ऊपर है मैं उन पर भी वैसे ही नज़्रे रहमत करूंगा। जब तक ये तेरे काम को तेरे दीन को और तेरी सिफ़ात को लेकर चलते रहेंगे।

मेरे भाइयो और दोस्तो! हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्की ज़िन्दगी में माल इकठ्ठा नहीं किया बल्कि जो माल था वह भी लगवा दिया और उम्मत को तैयार करना शुरू किया कि मुझे एक उम्मत तैयार करना है जिसे मरते दम तक और क़यामत तक मेरे कलिमे को दुनिया में बुलन्द करना है और यह उम्मत ﴿اخرجت للناس﴾ है यह लोगों के नफ़े के लिए घरों से निकाली गई है इस लिए आप ने आपनी ज़ात से क़ुर्बानी के साथ साथ जो आता गया यह उसको ढालते चले गए तुम्हें दुनिया में काम करना है घरों का, बीवी बच्चों को छोड़ कर, लिहाज़ा बीवी बच्चों की मुहब्बत को निकाल कर मेरी और अल्लाह की मुहब्बत को दिल में पैदा करो ताकि तुम उसके लिए बीवी बच्चों को छोड़ कर दर ब दर की ठोकरें खा सको। इस लिए सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने भी इसको तय कर लिया, हम सब कुछ क़ुर्बान करेंगे लेकिन नबी के कलिमे को लेकर दुनिया में फिरेंगे, दुनिया हमें धोका नहीं दे सकती। शैतान ने अपने लश्कर भेजे जाओ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को गुमराह करो। वे सारे भाग दौड़ कर शाम को थके हारे वापस आए, कहने लगे ऐ हमारे आक़ा तुम ने हमें किस के पास भेजा वे तो ऐसे इन्सान हैं कि हमारा कोई दाँव उन पर चलता ही नहीं हम ने दुनिया को मुज़ैयन किया वे इसके धोके में न आए, हम ने औरतों को मुज़ैयन करके पेश किया वे इसके धोके में न आए, हम ने

औलाद को मुज़ैयन करके पेश किया वे औलाद के धोके में भी नहीं आए, हम ने मुल्कों को ख़ूबसूरत करके आगे वे इसके धोके में भी नहीं आए, उन पर हमारा बस नहीं चलता। शैतान ने कहा अरे ये आख़िरी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल के सोहबत याफ़्ता हैं तुम्हारे दाँव में नहीं आने वाले। तुम्हारे भाई आइन्दा वाले हैं। घबराओ नहीं लेकिन मेरे भाईयो और दोस्तों जब भी हम हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाली सिफ़ात को अपने अन्दर ले लेंगे तो अल्लाह पाक की मदद हमारे साथ भी ऐसे ही हो जाएगी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्की ज़िन्दगी से क़ुर्बानियां देना शुरू कीं नबुव्वत के मिलते ही आराम व राहत ख़त्म हुआ जब यह आयत नाज़िल हुई ﴿فاصدع بما تؤمر واعرض عن المشركين (القرآن)﴾ हमारी बात को ले कर खड़े हो जाएं और खुल्लम खुल्ला अब हमारी तरफ़ बुलाएं ﴿يايها المدثر قم فانذر وربك فكبر. وثيابك فطهر﴾ खड़े हो जाइए मेरी तरफ़ बुलाइए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर में तशरीफ़ लाए हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया ﴿خديجة! الفراش فإنه لا راحة بعد اليوم﴾ हज़रत ख़दीजा मेरा बिस्तर लपेट कर रख दे आज के बाद मेरी राहत का ज़माना ख़त्म हो गया, अब काम है, सारी इन्सानियत में कलिमे को फैलाना है। मेरे भाईयो! सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को भी क़ुर्बानी पर डाल रहे हैं और वे मार खा रहे हैं और पिट रहे हैं और कलिमे पर पक्के हो रहे हैं, माँ बाप की जुदाइयां बर्दाशत हो रही हैं, मन्सब हाथ से निकल रहे हैं, दुकानें हाथ से निकल रही हैं, क़त्ल उनको किया जा रहा है लेकिन कलिमा वे सीख रहे हैं और नबी के काम को दुनिया में फैलाना सीख रहे हैं। आख़िर वे भी इन्सान थे जब मार पड़ते

पड़ते हद हो गई तो एक दिन आए या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ﴿افلا تستنصر لنا على ما تدعولنا﴾ क्या अब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब दुआ नहीं कर देते, कहा अब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदद को उतरवा नहीं लेते, हम तो हलाक हो गए, मारे गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम टेक लगाए हुए बैठे थे एक दम सीधे हो गए, चेहरा सुर्ख़ हो गया कहा अभी से घबरा गए ﴿يؤت من كان قبلكم يحفر حفرا﴾ तुम से पहली उम्मतों को ईमान वालों को लाया जाता था और उसे गढ़ा खोद कर खड़ा किया जाता था ﴿يوضع منشار على مفرق راسه﴾ और उसके सिर पर आरे को रख दिया जाता था और उसे कहा जाता था या ईमान को बचा या जान को बचा फिर वह ﴿يشق شقتين﴾ वह दो टुकड़े तो हा जाता था ईमान को नहीं छोड़ता था। उनको ज़िन्दा खड़ा करके उनके अन्दर में लोहे की कंघियां डाल कर उनकी बोटी बोटी को नोच लिया जाता था, वह यह तो बर्दाशत कर लेता था लेकिन अल्लाह के अम्र को नहीं छोड़ता था, तुम अभी से घबरा गए, तुम्हें सारे आलम में कलिमे को फैलाना है सारे आलम को इस पर उठाना है, चलते रहो, चलते रहो, एक वक़्त आएगा किसरा क़दमों में आएगा और क़ैसर तुम्हारे क़दमों में आएगा और सारी काएनात के ख़ज़ाने लूट कर तुम्हारे क़दमों में आएंगे, तुम काम करने वाले बन जाओ।

मेरे भाईयो! लोग यह समझते हैं कि दुकान से तो हमारी दुनिया के काम चलेंगे और दीन से हमारी आख़िरत बनेगी। मेरे भाईयो नहीं, हुज़ुर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿يا ابا سفيان جئتكم بخير الدنيا وكرامة الاخرة﴾ ऐ अबू सुफ़यान मैं तुम्हारी हुकूमतें लेने के लिए नहीं आया, तुम्हारे माल लेने के लिए नहीं आया

बल्कि मेरी मानोंगे तो दुनिया में भी भलाइयां पाओगे, मेरी मानोंगे तो आख़िरत में भी इज़्ज़त पाओगे, मेरे ही रास्ते में दुनिया और आख़िरत बनेगी यह नहीं कि दुनिया के लिए कुछ और करो दीन के लिए कुछ और करो। मेरे रास्ते पर चल पड़ो दुनिया और आख़िरत बनती चली जाएगी।

तबलीग़ की मेहनत करना कामिल ईमान की निशानी हैः

मेरे भाईयो! सहाबा को भूख पर अमादा किया और सब इस पर तैयार हैं कि हम मर जाएंगे, घर छोड़ेंगे, मुल्क छोड़ेंगे, सब छोड़ देंगे लेकिन नबी की बात को नहीं छोड़ेंगे यहाँ तक कि अल्लाह पाक ने आज़माईश को उतारा, अब पहली आज़माईश बड़ी आई हिजरत करो, घरों को छोड़ो। मेरे भाईयो यह उम्मत कलिमें को फैलाने वाली है अगर यह घरों को छोड़ना न सीखेगी तो यह दुनिया में दीन कैसे चमकाएगी फिर तो यही कहेंगे कि नमाज़ पढ़ो, रोज़ा रखो, यही इस्लाम है। मेरे भाईयों दुनिया में इस्लाम यूं ही नहीं फैलता अगर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम यह सोच लेते। लिहाज़ा हिजरत की हिजरत करवाई कि निकलो घरों को छोड़ो, तुम्हें पता चले कि तुम हिजरत करने वाले हो और तुम सारी काएनात में कलिमे को फैलाने वाले हो।

एक सहाबी आए ﴾يا رسول الله! ما الاسلام؟﴿ इस्लाम क्या है? फ़रमाया ﴾سلم قلبك الله وان يسلم المسلمون من لسانك ويديك﴿ दिल को अल्लाह के हवाले कर दे दिल से ग़ैर को निकाल कर अल्लाह डाल दे, अपनी ज़बान और हाथ से मुसलमान की हिफ़ाज़त करो ﴾واى الاسلام افضل؟﴿ सब से बेहतरीन इस्लाम क्या है? जवाब मिला ईमान वह कहता है ﴾ما الايمان؟﴿ ईमान क्या है? आप ने

फ़रमाया ﴿ان تؤمن بالله وملئكته وكتبه ورسوله والبعث بعد الموت﴾ ईमान यह है कि अल्लाह पर, फ़रिश्तों पर, किताबों पर, आख़िरत पर ईमान लाओ वह कहता है ﴿واى الاسلام افضل؟﴾ सबसे बेहतर ईमान क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿الهجرة﴾ सबसे बेहतर ईमान अल्लाह के रास्ते की हिजरत है तो घर में बैठे ईमान कैसे आएगा और दुकान में बैठ कर ईमान कैसे चमकेगा जब तक ये घरों को छोड़ कर घरों की मुहब्बत को नहीं निकालेंगे ईमान कैसे आएगा? अब सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम घरों से निकल निकल कर और अपनी जान व माल की क़ुर्बानी देकर जा रहे हैं, माल को छोड़ कर, बीवी बच्चों को छोड़ कर। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा को लेकर निकले, बेटा गोद में, ख़ाविन्द बीवी, बेटा मक्के से हिजरत कर रहे हैं, पता चला कि हिजरत हो रही है आ गए लड़की वाले तुम नहीं ले जा सकते, लड़के वाले आ गए, लड़की वाले आ गए उन्होंने कहा तुम हमारी लड़की को नहीं ले जा सकते, लड़के वाले आ गए उन्होंने कहा हमारा पोता तुम्हारी लड़की के घर में नहीं रह सकता। बेटे को ले गए सुसराल वाले और लड़की को ले गए माँ बाप और अकेले अब्दुल्लाह कांधे पर चादर डाल कर बच्चे को भी रोता हुआ देखता है और बीवी के आंसू भी देखता है लेकिन वह कहता है कि मैं बीवी बच्चे की जुदाई को बर्दाश्त कर सकता हूँ लेकिन मैं अल्लाह के अम्र को क़ुर्बान नहीं कर सकता और अकेले हिजरत को जाते हैं। उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमातीं हैं दिन या महीने नहीं एक साल मुसलसल मैं टीले पर बैठ कर सारा दिन रोती रहती, ख़ाविन्द भी जुदा, बच्चा भी जुदा, न ख़ाविन्द की

शकल देखी यहाँ तक कि काफ़िरों को तरस आया अरे ज़ालिमों इस औरत का क्या क़ुसूर है कि इसको बच्चे से भी जुदा कर दिया ख़ाविन्द से भी जुदा कर दिया।

मेरे भाईयो! इस हाल में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीने पहुँचे कि मदीने वाले अच्छे भले खाते पीते थे, इन मुहाजिरीन को तो घरों से निकाला गया और उनके माल छुड़वाए, अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की दुकानें क़ुर्बान हुईं, उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की तिजारत क़ुर्बान हुई, उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लल्लाहु अन्हु की सरदारी क़ुर्बान हुई, हमज़ा रज़ियल्लल्लाहु अन्हु का वक़ार और वजाहत क़ुर्बान हुई। मक्का छोड़ छोड़ कर जा रहे हैं और सारे के सारे मदीने की तरफ़ दौड़ रहे हैं। अपनी कमाइयां छोड़ कर अपना सब कुछ छोड़ कर मदीने को जा रहे हैं। अन्सार खाते पीते उनको भी क़ुर्बानी पर खड़ा करके उम्मत के दो गिरोह पैदा किये, एक अन्सार बनाया और एक को मुहाजिर बनाया, न कोई ज़मींदार न कोई ताजिर, न दुकानदार न हाकिम, न सदारत न वज़ारत, उम्मत के दो तबक़े पैदा किये एक को अन्सार बनाया एक को मुहाजिर बनाया कि तुम दोनों के दोनों अल्लाह के नाम पर क़ुर्बान होने वाले हो, दुनिया पर ठोकर मारो और अल्लाह के नाम पर क़ुर्बानी दो। तुम्हारे ज़रिए से दुनिया में दीन वजूद में आ गया तुम जन्नत में आकर मेरे साथ मिल लेना और मेरा पड़ौस ले लेना। दुनिया से मुँह मोड़ लो और आख़िरत की तैयारी करो और दुनिया में दीन को फैलाने का इरादा करो। सहाबा किराम रज़ियलल्लाहु अन्हुम ने कहा हम सब कुछ क़ुर्बानियां करेंगे आपके हुक्म को क़ुर्बान नहीं करेंगे। अल्लाह तआला ने बदर के मैदान में आज़माइश ली कि देखता

हूँ कि कौन मेरे हुक्म को देखता है मेरे नबी पर क़ुर्बानी देता है या अपने दुकान और घर को देखता है।

मुबल्लिग़ के साथ अल्लाह की मदद होती हैः

मेरे भाईयो आज हमें घर और हर दुकान और हर तिजारत को नक़्शा और हर हुकूमत और वज़ारत को नक़्शा हमें दावत दे रहा है देख तू वज़ारत को चाहता है या नबी के तरीक़े को चाहता है, तिजारत को चाहता है या अल्लाह के अम्र को चाहता है। ईमान वाला कहता है कि मैं सब कुछ क़ुर्बान करूंगा अल्लाह का नाम नहीं क़ुर्बान करूंगा। बदर के मैदान में तीन सौ तेरह मुक़ाबले के लिए निकले मद्दे मुक़ाबिल एक हज़ार काफ़िर अल्लाह तआला ने क्या नहीं बतलाया ऐ मेरे नबी ﴿عالم الغيب والشهادة﴾ जो अल्लाह तआला हर चीज़ का जानने वाला है उसने क्यों नहीं बतलाया? ऐ मेरे नबी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अबू जहल से लड़ना है आप तैयारी करके जाइए यह क्या चक्कर है कि सिर्फ़ तीन सौ तेरह ले जा रहे हैं, तैयार हो कर जाओ, तैयार हो कर नहीं निकला, तीन सौ तेरह को निकाल दिया। बदर के मैदान से पहले खड़ा करके बतलाया अबू जहल मुक़ाबले के लिए आ रहा है। हैरान परेशान अब क्या करें न लड़ने की हिम्मत न हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म से भागने की हिम्मत, अब पता चल रहा है, एक तरफ़ बीवी बच्चे नज़र आ रहे हैं, एक तरफ़ नबी नज़र आ रहा है, एक तरफ़ घर नज़र आ रहा है एक तरफ़ अल्लाह का अम्र नज़र आ रहा है। मेरे भाईयो उन्होंने यह तय किया था कि हम ने दीन को फैलाना है, जान व माल को नहीं बचाना। लिहाज़ा

मिक़दाद बिन असवद खड़े हुए और कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम बनी इसराईल नहीं हैं कि यूं कह दें ﴿اذهب انت وربك فقاتلا انا ههنا قاعدون﴾ जा तू और तेरा रब लड हम तो यहाँ बैठे हैं, आप चलिए हम आप के आगे और पीछे दाएं और बाएं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जानें क़ुर्बान करेंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फिर पूछा कि बताओ क्या राय है? फिर पूछा क्या राय है? फिर पूछा क्या राय है? अन्सार कहने लगे मालूम होता है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारी राय लेना चाहते हैं। साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप हम से पूछना चाहते हैं कि हमारी क्या राय है तो सुन लीजिए ﴿تصلح بمن شئت﴾ जिससे चाहते हो जोड़ दें ﴿تقطع بمن شئت﴾ जिससे चाहते हैं तोड़ दें ﴿سالم من شئت﴾ जिससे चाहते हैं मिला दें ﴿هادم من شئت﴾ जिससे चाहते हो लड़ा दें ﴿آمنا بك﴾ हम आप पर ईमान ला चुके हैं ﴿صدقناك﴾हम ने आपकी तसदीक़ की आप की आसमान की ख़बरों को यक़ीनी जाना ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ﴿لو امرتنا ان نختار البحار ثم خصها لم يتخلف عنا رجل واحد﴾ अगर आप कह दें मैं समन्दर में छलांग लगाऊँ तो अल्लाह की क़सम हम में से एक भी पीछे नहीं ठहरेगा सब समन्दर में कूद जाएगें, आप फ़रमाएं आग में कूद जाओ तो आग में कूद जाएंगे, आप फ़रमाएं कि यमन तक घोड़े दौड़ाते चले जाओ तो हम अपने ऊँटों और घोड़ों को यमन तक दौड़ाते चले जाएंगे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मरना हमें मन्ज़ूर है लेकिन पीछे भागना मन्ज़ूर नहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अब अल्लाह की मदद आएगी।

मेरे भाईयो मुसलमान सिफ़ात वाला बन जाए तो सारे आलम में दीन फैल सकता है दीन का फैलाना मुश्किल नहीं है। हमें नबी वाली सिफ़ात पर आना पड़ेगा। जान को भी बेक़ीमत बना कर, माल को भी बेक़ीमत बना कर, ज़ात को भी बेक़ीमत बना कर, बीवी बच्चों को भी बेक़ीमत बना कर अल्लाह और रसूल की मुहब्बत दिल में डाल कर और यह तय कर लें कि हम ने कलिमे को दुनिया में ज़िन्दा करना है जान चली जाऐ मन्ज़ूर है, माल चला जाए मन्ज़ूर, अल्लाह राज़ी हो जाए।

मेरे भाईयो अब अल्लाह की नक़द मदद उतरी ﴿فاستجاب لكم انى ممدكم بالف من الملئكة مردفين. (القرآن)﴾ जब तुम ने मुझे पुकारा मैंने तुम्हारी पुकार को सुना और हज़ार काफ़िर थे हज़ार फ़रिश्ते तुम्हारी मदद के लिए मैंने आसमान से उतार दिए चूँकि वे क़ुर्बानी देने पर गए थे लिहाज़ा अल्लाह की मदद आई और काफ़िरों ने देखा जिबराईल अलैहिस्सलाम का घोड़ा आसमान से उतरता हुआ आ रहा है और उसकी हिनहिनाहट की आवाज़ आ रही है और ﴿اقبل یا هیذوم!﴾ ऐ हैज़ूम! आगे बढ़ो और उस घोड़े की आवाज़ आ रही है और एक हज़ार फ़रिश्ते ऊपर से नीचे उतरते चले आए और शैतान काफ़िरों के साथ हाथ में हाथ दिए हुए था ﴿لا غالب لكم اليوم من الناس وانى جار لكم﴾ आज तुम पर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता मैं तुम्हारे साथ हूँ। उसने जिबराईल अलैहिस्सलाम को उतरते हुए देखा भागा हाथ छुड़ा कर, कहा कहाँ जाते हो, कहा मैं वह देखता हूँ जो तुम नहीं देख रहे और जा कर समन्दर में छलांग लगाई और कहने लगा ﴿رب وعدك الذى وعدتنى﴾ या अल्लाह! तुझे अपना वायदा याद है कि तू ने मुझे क़यामत तक मोहलत दी है मुझे बचा उनका बेड़ा ग़र्क़ हो तो हो

मेरी जान बचा। उसे अपनी हलाकत का ख़ौफ़ पैदा हुआ। अल्लाह की मदद उतरी और अल्लाह पाक ने तोड़ के दिखा दिया कि जो मेरे नबी के इशारे पर और मेरे नबी के हुक्म पर खड़े हो जाते हैं मैं उनकी कैसे मदद करता हूँ। अल्लाह पाक के फ़रिश्ते उतरे और अल्लाह तबारक तआला ने दिखा दिया। तीन आदमी अतबा, शैबा, वलीद बाप बेटा और चचा मुक़ाबले के लिए निकले, आओ ऐ माज़, ऐ अब्दुल्लाह निकलो मुक़ाबले के लिए तीनों आए, उतबा कहने लगा कौन? कहने लगे अन्सार, उसने कहा अच्छे लोग हो आप पीछे हट जाओ ऐ मुहम्मद हमारी बिरादरी हमारे मुक़ाबले में भेजिए। ऐसे ताक़तवर (कुफ़्र का मुक़ाबला असान नहीं था) अली निकलो, हमज़ा निकलो, उबैदा निकलो तीनों निकल रहे हैं दो चचा के लड़के और एक चचा तीनों को मुक़ाबले के लिए भेजा कहने लगे कौन हैं? हमज़ा कौन हो? अली कौन हो? अबू उबैदा कौन हो? कहा हाँ हमारे जोड़ के हो। टक्कर हुई आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ उठे दुआ के लिए अल्लाह पाक की मदद उतरी और तीनों काफ़िर क़त्ल हुए और हज़रत अबू उबैदा की टाँग कटी और वह ज़ख़्मी हो कर गिरे और जान का आलम तारी हुआ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु उठा कर लाए, पाँव पकड़े हुए। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दमों पर गिर कर फ़रमाया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शहीद हूँ न? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों से आंसू निकले फ़रमाया बेशक मैं तेरे ऊपर गवाह हूँ चुनांचे उन्हें दफ़न किया गया। एक मर्तबा उस वादी से गुज़रे तो ख़ुशबू उठी बड़ी ज़बर्दस्त सहाबा

किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम कहने लगे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह ख़ुशबू कहाँ से आ रही है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम जानते नहीं अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र से यह ख़ुशबू आ रही है।

अगर तुम दीनदार बनोंगे तो मैं सुकून की बारिश कर दूंगाः

मेरे भाईयो! उन्होंने तय किया कि हम सब कुछ क़ुर्बान करेंगे लेकिन अल्लाह के हुक्म को क़ुर्बान नहीं करेंगे दुनिया को तो तोड़ा ओर अल्लाह के अम्र को सामने रखा। आप सल्लललाहु अलैहि वसल्लम ने अपने अन्दर के ग़म को उनके अन्दर मुन्तक़िल किया, दुनिया का ग़म निकाला ﴿من كان همه طلب الاخرة جمع الله عليه شمله وجعل غناه في قلبه وأتاه الدنيا وهي راغمة﴾ जो आख़िरत को ग़म बनाता है अल्लाह उसके सारे ग़म दूर कर देता है अल्लाह उसकी सारी पेरशानियां दूर कर देता है। मेरे भाईयो! मुसलमान कहता है पेरशान हूँ सुकून नहीं, अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं अगर तुम मेरे दीन की तरफ़ आ जाओ तो मैं तेरे सारे ग़म दूर कर दूंगा और ग़ना को तेरे दिल में डालूंगा, दुनिया तेरे पास नाक रगड़ कर आएगी ﴿ومن كان همه طلب الدنيا﴾ और जो दुनिया को ग़म बना लेता है ﴿فرق الله عليه شمله﴾ अल्लाह उसकी दुनिया को पेरशान कर देता है ﴿وجعل الفقر بين عينيه﴾ और उसके सामने ख़ौफ़ को कुफ़र को तारी कर देता है ﴿ولا يصيب من الدنيا الا ما كتب له﴾ और मिक़दार से ज़्यादा दुनिया उठा नहीं सकता। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने दुनिया को ठोकरें मारीं। अन्सार के खाते पीते बाग़ उजड़ गए, मुहाजिरीन के खाते पीते घर उजड़ गए, अन्सार भी भूके, महाजिर भी भूके, अल्लाह का

रसूल भी भूके लेकिन उनके दिल ईमान के नूर से रोशन और उनके घर कच्चे, घरों में चिराग़ नहीं लेकिन हिदायत को नूर घरों में रोशन है। मस्जिदे नबवी में नौ साल चिराग़ नहीं जला लेकिन मस्जिदे नबवी का नूर सारे आलम में फैल रहा है। अल्लाह का लाडला हबीब दुनिया से जा रहा है फ़रमाते हैं ﴿اخر يوم من الدنيا واول يوم من الاخرة﴾ दुनिया को आख़िरी दिन और आख़िरत को पहला दिन लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में इतना तेल नहीं जिसको जला कर चिराग़ जला कर रोशनी की जा सके और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में यह हाल है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िरह एक यहूदी के घर में रहन रखी हुई है आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिल्कियत में इतना पैसा नहीं कि उसको चन्द जोड़ दे कर वह ज़िरह उससे छुड़ा लें। मेरे भाईयो नबी का घर तो रोशन नहीं लेकिन नबी के घर का अन्दर का ईमान सारे आलम को रोशन कर चुका है। उन्होंने अपनी दुनिया को बड़ा न बनाया, पक्के मकानों के पीछे नहीं पड़े, महल्लात के पीछे न पड़े, कारोबार लम्बे न किए लेकिन मेरे भाईयो अल्लाह के दीन को दुनिया में फैलाने को काम बनाया, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़म को अपना ग़म बनाया, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दर्द को अपना दर्द बनाया, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रोने को अपना रोना बनाया और आप वाले कलिमे को लेकर सारे आलम में फिरना शुरू किया और यह देख लिया कि हमारा नबी क्या चाहता है यूं चाहता है कि दुनिया क़ुर्बान कर दें। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु दामाद हैं फ़ातेमा लड़की है, हसन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुम

लाडले हैं और यह हाल है कि फ़ातेमा रज़ियल्लाहु अन्हा बीमार हैं, घर में फ़ाक़ा भी है, तकलीफ़ भी है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूछने के लिए आते हैं, हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु साथ हैं, फ़रमाया बेटी मैं अन्दर आ जाऊँ मेरे साथ इमरान बिन हुसैन भी है? अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (ما اجد ما احجب به وجهه) मेरे पास इतना कपड़ा नहीं कि इससे चेहरे को छुपा सकूं और पर्दा कर सकूं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कन्धे से चादर उतार कर अन्दर की बेटी पर्दा करो, पर्दा किया, अन्दर आए बेटी क्या बात है? फ़ातेमा रज़ियल्लाहु अन्हा के आंसू निकले या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुत बीमारी है, पेरशानियां हैं, तकलीफ़ है, इन्सान हैं कब तक सब्र करे। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी रोने लगे। फ़रमाया बेटा मत रो, तेरा बाप भी तीन दिन से भूका है और यूं फ़रमाया अगर मैं चाहता तो सोने चाँदी के पहाड़ मेरे साथ चलते लेकिन मैं ने इन्कार कर दिया और फ़ातेमा ख़ुश हो जा अल्लाह तआला ने तुम्हें जन्नत की औरतों का सरदार बना दिया।

एक सहाबी की शादी और शहादत का वाक़ियाः

मेरे भाईयो! हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ये वाक़ियात इस लिए उम्मत में लाए गए कि उम्मत को पता चल जाए कि हम आए किस लिए हैं, कारोबार के लिए नहीं आए हमारे सामने अल्लाह के दीन को ज़िन्दा करना है और दीन को दुनिया में रिवाज देना है। मेरे भाईयो! शैतान तबलीग़ वालों को धोका देता है तुम कारोबार करोगे, लम्बे लम्बे पैसे कमाओगे

फिर तुम बाहर मुल्कों में साल साल के लिए जाओगे और बाहर मुल्कों में सफ़र करोगे। मेरे भाईयो! वे दावत वाले नहीं बनते, दावत वाले दावत पर पलते हैं, दावत वाले ज़ुहद पर चलते हैं, दावत वाले तक़्वे को बढ़ाते हैं, कारोबार नहीं बढ़ाते, तवक्कुल को बढ़ाते हैं मेरे भाईयो! माल नहीं बढ़ाते नमाज़ों को ऊँचा करते हैं कारोबार के लम्बे नक़्शे नहीं बनाते बल्कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक एक सुन्नत को अपने अन्दर लेकर ऊँचा उड़ते हैं, दुनिया को सामने रख नहीं चलते वे आख़िरत को सामने रख कर चलते हैं। यह ज़हन सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का बनाया कि तुम्हें दीन को ज़िन्दा करना है, कारोबार और घर को नहीं देखना। यह हर सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु के अन्दर में उतरा। एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु आते हैं हज़रत साद सुलैमी या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ﴿ايمنعني سوادی وسواد وجهی من دخول الجنة﴾ मेरा काला रंग मुझे जन्नत में जाने से रोक देगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्यों? क्या बात है अगर तू ईमान वाला है तो तुझे कौन जन्नत से रोक देगा? फ़रमाया बात यह है कि मैं ग़रीब आदमी हूँ, मेरा रंग काला है, मैं बदसूरत हूँ लेकिन मैं बने सुलैम के अशराफ़ में से हूँ। बनू सुलैम एक क़बीला था। अब बात यह है कि कोई मुझे लड़की नहीं देता मेरे काले रंग की वजह से, मेरी ग़ुरबत की वजह से। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اجد اليوم عمرو بن وهب الثقفی﴾ आज उमर बिन वहब सक़फ़ी आए हैं? (यह मदीने के चौधरी थे बड़े मालदार थे, बेटी उनकी बड़ी ख़ूबसूरत थी) मालूम हुआ कि आज मजलिस तो मौजूद नहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जाओ

उमरू से कहो अपनी लड़की तेरे निकाह में दे दे। हज़रत साद जा कर दरवाज़े पर पहुँचे सलाम किया वहाँ कौन से बड़े बड़े घर होते थे। एक कमरा होता था, छोटा सा सहन होता था, एक कमरा छोटा सा होता था। दरवाज़े पर दस्तक दी वह बाहर निकले। कहा क्या हुआ ﴿انا رسول الله ﷺ﴾ मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़ासिद हूँ तेरे पास तेरी बेटी की शादी का पैग़ाम लाया हूँ उन्हें यक़ीन नहीं आया बज़ाहिर। कहने लगे भाग जा कहाँ की बात करता है वह तो बेचारा पहले ही ग़रीब था ग़म खाया हुआ वह तो वहाँ से हटा। बेटी ख़ूबसूरत हुस्न व जमाल में मशहूर और मेरे भाईयो माल में मशहूर। बेटी के कान में बाप की और साद की आवाज़ पड़ी बेटी ने पीछे से कहा पीछे से आवाज़ दी ﴿يا ابا! ان النجاة النجاة قبل ان يأتيك الوحى﴾ ऐ अब्बा जान यह सोच लो क्या कह रहे हो तुम नबी की बात को ठुकरा रहे हो, हलाक हो जाओगे हलाक। मैं तैयार हूँ नबी के हुक्म के सामने काले गोरे को नहीं देख रही हूँ मैं नबी के हुक्म को देख रही हूँ जाओ मैं तैयार हूँ और कहो मैं शादी करूंगी। यह भागे जा कर पीछे बैठ गए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा थे जब देखा उमरू आएं हैं ﴿انت الذى رددت على رسول الله لما رددت﴾ तू ने ही अल्लाह के रसूल की बात को ठुकराया? उन्होंने कहा ﴿بابى انت وامى يا رسول الله﴾ मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ता हुई मॉफ़ फ़रमा दीजिए, हुक्म कीजिए क्या हुक्म है? फ़रमाया इसकी शादी करो। अर्ज़ किया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निकाह पढ़ा दीजिए। आप सल्लललाहु अलैहि वसल्लम ने निकाह पढ़ा, चार सौ दरहम मैहर मुक़र्रर हुआ। आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जाओ लड़की को ले आओ, कोई बारात तो होती नहीं थी मेरे भाईयो ओहो! कितने लाखों और करोड़ों रुपये इस पर आज मुसलमान के ख़र्च हो रहे हैं। बड़े बड़े दीनी समझ रखने वाले जब शादी का वक़्त आता है तो कहते हैं क्या करें बिरादरी से मजबूर हैं। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी बेटी की शादी की और शाम को हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा को बुलाया कहा उम्मे ऐमन जाओ मेरी दुख़्तर को अली के घर पर छोड़ कर आओ। फ़रमाया साद जाओ बीवी को लेकर आओ। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे पास तो एक दमड़ी भी नहीं है। मैं चार सौ कहाँ से पैदा करूं और उसको लेकर आऊँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा अच्छा चलो, घबराने की बात नहीं जाओ अली के पास उस्मान के पास और अब्दुर्रहमान के पास, उनसे कहो कि तुम्हें दो दो सौ दरहम दे दें। तेरे पास छः सौ दरहम हो जाएंगे चार सौ से मेहर अदा हो जाएगा और दो सौ से तुम अपना काम कर लेना न घर न दर कोई कपड़ा ही ले लेना तो फ़रमाने लगे बहुत अच्छा। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए, हज़रत उस्मान और अब्दुर्रहमान के पास गए। उन्होंने ख़ुश हो कर दो दो सौ से ज़्यादा दिया कितना ज़्यादा बस इतना लफ़्ज़ आता है ﴿ومازادو﴾ और उससे कुछ ज़्यादा। अब वह कितना ज़्यादा यह तो पता नहीं बहरहाल छः सौ से ज़्यादा हो गया, हज़ार हो गया नौ सौ हो गया, अब साद बड़े ख़ुश क्यों भाई एक नौजवान जो बड़ी ख़ूबसूरत लड़की से शादी करने वाला हो उसके जज़्बात को कोई समझ सकता है सिवाए उसके जिस पर यह ख़ुद गुज़र रही हो

क्या ख़याल है आपका? क्या जज़्बा होगा साद रज़ियल्लाहु अन्हु का। अब बड़े खुश कहने लगे लड़की लेने तो बाद में जाऊँगा पहले बाज़ार से कुछ सौदा तो ख़रीद लूं। चार सौ दरहम मेहर में गया बाकी का सामान ख़रीद लूंगा भाई ताकि कुछ काम चल सके। घर की शकल बन सके। जब बाज़ार में दाख़िल हुए, अब बाज़ार में पैसा ले कर चले, बाज़ार में क़दम रखा, कान में आवाज़ पड़ी ऐ अल्लाह के सवारों अल्लाह के रास्ते की पुकार है निकलो। मेरे भाईयो! वहाँ न बयान किए जाते थे न वहाँ पकड़ पकड़ कर तशकील की जाती थी और न मिन्नतें की जाती थीं। दुकान छोड़ कर तीन दिन के लिए अल्लाह और रसूल के दीन को सीखने के लिए चला जा। वहाँ तो अल्लाह के नबी ने ज़हन बनाया था जब मेरी आवाज़ तुम्हारे कानों में पड़े तो बाप हो या माँ हो, तुम बेटा हो या बेटी हो, तुम जो भी हो जिस हाल में भी हो मेरी आवाज़ पर लब्बैक कह दो जान चली जाएगी तो तुम्हारी जान बच जाएगी, माल चला जाएगा तो तुम्हारा माल बच जाएगा, माल ख़र्च करोगे तो भी तुम्हारा माल बच जाएगा ﴿يا ابن آدم افرغ من كنزك عندى لا سرقة ولا حرق ولا غرق﴾ मेरे बन्दे अपना पैसा मुझे दे दे अपना ख़ज़ाना मुझे दे दे, मेरे ख़ज़ाने में न चोरी होती है न डाका पड़ता है, मेरे ख़ज़ाने में न आग लगती है न ग़र्क़ होता है, जब तेरी बीवी साथ छोड़ देगी, बच्चे साथ छोड़ देंगे तेरे माँ बाप तुझ से दूर भागेगें ﴿يوم يفر المرء من اخيه وامه وابيه وصاحبته وبنيه لكل امرء منهم شأن يغنيه﴾ जिस दिन तो सब से टूट जाएगा और सब से कट जाएगा और सब की आँखें फिर जाएंगी उस दिन मैं कहूंगा आ मेरे बन्दे आ, तेरा ख़ज़ाना मेरे पास है यह ले ले आज तेरे काम आ रहा है क्योंकि यह समझ गए थे

कि जो माल अल्लाह के हुक्म और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम पर क़ुर्बान हो गया वह हमारा हो गया और जो कहीं और लग गया वह पराया हो गया। साद रज़ियल्लाहु अन्हु के कान में पड़ी आवाज़ ﴿يا خيل الله اركبى﴾ बस इतनी आवाज़ पड़ी और नहीं सुना ﴿فوقف موقفة﴾ साद रज़ियल्लाहु अन्हु के क़दम ज़मीन पर जम गए, सारे जज़बात सारे एहसासात को एक बोल ने ज़हन से निकाल कर अल्लाह और रसूल की मुहब्बत को दिल में डाल दिया। कोई है ऐसा ईमान वाला जो इतने बड़े जज़बात को अल्लाह और अल्लाह के रसूल की बात पर क़ुर्बान करे ﴿فنظر نظرة فى السماء﴾ आसमान पर यूं एक भर पूर निगाह डाली और यूं कहा ﴿اللهم اله السموات والارض﴾ ऐ ज़मीन व आसमान के अल्लाह ﴿وله محمد ﷺ﴾ और ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अल्लाह, अल्लाह को कह रहे हैं ﴿لا جعل الدنيا والدراهم فيما يحب الله ورسوله والمؤمنون﴾ अब मेरा यह माल शादी में नहीं लगेगा मेरा यह माल वहाँ लगेगा जहाँ तू भी राज़ी और तेरा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी राज़ी और मुसलमान भी ख़ुश हो जाएंगे। न शादी याद न रात का सोना याद रहा न मेरे भाईयो सुहागरात याद रही, न बीवी के पहलू में लेटना याद रहा तो अल्लाह का काम बस दिल व दिमाग़ में याद रहा, घोड़ा ख़रीदा, ढाल तलवार ख़रीदी और सवार हो कर चेहरे को ऐसे छिपा लिया ताकि पहचाने न जाएं सिर्फ़ आँखें नंगी थीं बाक़ी चेहरा छिपा हुआ था। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम कोई लम्बी चौड़ी सिर पर ख़ुद नहीं पहनते थे जैसे रोमियों की आदत थी। मामूली मामूली सामान होता था। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम कहने लगे अरे यह कौन है चेहरा छिपाए हुए? और मेरे भाईयों

आपको ख़बर है चेहरा क्यों छिपाया हुआ था अगर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देख लिया तो कहीं मुझे वापस न कर दें। कौन है भाई? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाने लगे हाय अल्लाह के बन्दो कोई होगा परदेसी तुम्हारे साथ आ गया तुम्हारे दीन की मदद के लिए छोड़ो। काफ़िरों के मुक़ाबले में उतरे। लड़ते लड़ते हज़रत साद के घोड़े को जो तीर लगा और घोड़ा उलट कर गिरा और हज़रत साद भी साथ गिरे और जल्दी से उठे। जल्दी जल्दी अपने बाज़ू ऊपर चढ़ाए। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बाज़ुओं को देखा ﴾فبان سواد ساعده﴿ इसे काले काले बाज़ू जब बाहर निकले आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा ﴾او سعد انت؟﴿ अरे तू तो मुझे साद नज़र आता है कहा ﴾بابی انت وامی یا رسول الله انا سعد﴿ मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हो जाएं ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं साद ही हूँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ख़ुशख़बरी ले लो तू जन्नती हो गया ﴾واصبحت سعيداً﴿ तू खुश बख़्त हो गया। बस इस ख़ुशख़बरी का सुनना था कि छलांग लगाई मजमे में यहाँ तक कि आवाज़ आई ﴾اصیب سعد، اصیب سعد یا رسول الله﴿ साद शहीद हुए। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दौड़े हुए आए और साद रज़ियल्लाहु अन्हु के सिर को अपनी गोद में रखा और आंसुओं की लड़ियां साद के ख़ून को पोछ रही थीं, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आंसू साद रज़ियल्लाहु अन्हु के चेहरे पर गिर रहे हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे हैं ﴾ما اطیب ریحك وأحب الی الله و رسوله، ما اطیب ریحك وأحب الی الله و رسوله﴿ ऐ साद तेरी खुशबू अल्लाह और रसूल को बहुत प्यारी हो चुकी है और ऐ साद तू

अल्लाह और रसूल को बे इन्तेहा प्यारा हो चुका है। रो रहें हैं रोत रोते आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुँह खोला ﴿ثم قال وصل الحوض ورب الكعبه﴾ रब्बे काबा की क़सम साद हौज़ पर पहुँच गया। अबू लुबाबा बिन मन्ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ﴿ما الحوض؟﴾ यह हौज़ क्या है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿حوض اعطانيه﴾ यह हौज़ है जो मेरे रब ने मुझे दिया है ﴿ماء اشد بياضاً من اللبن﴾ इसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद ﴿احلى من العسل﴾ शहद से ज़्यादा मीठा ﴿شرب شربة لا بعطش ابدا﴾ जो एक दफ़ा उसे पी लेगा कभी दोबारा प्यास न लगेगी। हदीस में आता है उस हौज़ के चार किनारे हैं एक किनारे पर अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु दूसरे पर उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु तीसरे पर उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु तीसरे पर अली बिन अबि तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ये चारों सहाबा किनारों पर खड़े हैं, उम्मत आ रही है ये पिला रहे हैं। हज़रत लुबाबा बिन मन्ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे अब ﴿وصل الحوض﴾ का मतलब समझ में आया कि इस हौज़ में साद पहुँच गया। हज़रत लुबाबा बिन मन्ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फिर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ﴿اری منك ثلاث خصال﴾ मैंने तीन बातें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुलाहिज़ा कीं, एक तो आप सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम रोए फिर आप हंसे फिर आप ने मुँह फेर लिया यह क्या चक्कर है? हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اما بكاء فبكيت شوقاً إلى سعد﴾ जो रो रहा हूँ अपने इस सहाबी की इस क़ुर्बानी पर उसके शौक़ पर रोया हूँ किस हाल में था किस तरफ़ को जा रहा था, किन जज़बों में जा रहा था और

कैसे यह मेरे अम्र पर क़ुर्बान हुआ मैं इस बात पर रो रहा हूँ ﴿واما الضحك فبمنزلته من الله﴾ और मैं हंसा इस बात पर हूँ जब मैंने जन्नत में उसका दर्जा देखा और अल्लाह की बारगाह में उसका दर्जा देखा तो मैं हंस पड़ा ﴿واما الاعراض منه﴾ और जो मैंने मुँह फेर लिया ﴿فلما رايت ازواجه من الحور العين يتبادرنه كاشفات سوقهن وباديات خلخالهن فاعرضت عنهن حياء﴾ मैं ने मुँह इस लिए फेरा कि मैं देखा जन्नत की हूरें यानी उसकी बीवियां दौड़ती हुई आ रही हैं और वह इतनी तेज़ी से दौड़ के आ रही हैं कि उनकी जो पिंडलियां हैं (पिंडली समझते हैं न भाई?) उनकी पिंडलियों से कपड़ा हट गया और पाँव में छन छन करती हुई पाज़ेब मुझे नज़र आ रही थीं मैंने शर्म की वजह से मुँह फेरा और फ़रमाया ﴿بلغ بلغ﴾ या कहा ﴿ابلغ﴾ या कहा ﴿ابلغ زوجة سعد﴾ जाओ साद की बीवी से कहो कि अल्लाह पाक ने साद को तेरे से ज़्यादा ख़ूबसूरत बीवियां अता फ़रमा दीं।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के तरीक़े पर जान व माल की क़ुर्बानी ज़रूरी हैः

मेरे भाईयो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मत तैयार की थी जो इस बात पर मर रही थी कि हम न बीवी के न बच्चों के न माँ बाप के न दुकान के न तिजारत के। हम तो सिर्फ़ अल्लाह और रसूल के हैं और उसी के नाम पर मरने वाले हैं हमारा काम तो अल्लाह के दीन को दुनिया में फैलाना है। हम मेरे भाईयों कारोबारी नहीं हैं।

जाबिर और अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुम दोनों बाप बेटे आपस में लड़ रहे हैं। जाबिर कहता है कि मैं जा कर अल्लाह

के रास्ते में मरूंगा, बाप कहता है कि मैं अल्लाह के रास्ते में मरूंगा। अब्दुल्लाह की सात बेटियां हैं और बीवी का इन्तेक़ाल हो चुका है और जाबिर पन्द्रह बरस का है। बेटे को ख़याल नहीं आता कि अगर मैं चला गया तो बूढ़ा बाप है सात बच्चियों का क्या बनेगा, बाप को ख़याल नहीं आता मैं चला गया तो पन्द्रह बरस का बच्चा इन सात बच्चियों को कैसे संभालेगा? भाईयो क़ुर्बान जाइए सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के जिन्होंने जान व माल की क़ुर्बानी दे कर हम तक कलिमा पहुँचा दिया अगर वे भी यही इस्लाम समझते जो हम समझ रहे हैं, दुकानें चमकाओ, कारोबार बढ़ाओ और बड़े बड़े मकानात बनाओ, बड़ी बड़ी बिल्डिंगे बनाओ तो मेरे भाईयों हम तक शायद इस्लाम कभी नहीं आता। अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा बेटा तू एक बेटा है लेकिन यहाँ जन्नत का मस्अला है मैं तुझे तरजीह नहीं दे सकता। बेटे ने कहा अब्बा जान जब तुम मुझे जन्नत में तरजीह नहीं दे सकते तो मैं आपको जन्नत में कैसे तरजीह दे सकता हूँ मैं भी जाऊँगा। चलो आओ बेटा क़ुर्रा डालते हैं जिसका नाम आ गया वह चला जाएगा। बाप क़ुर्रा डाल रहे हैं। दुकानों पर झगड़े ख़त्म, माल के झगड़े ख़त्म, कमाई के झगड़े ख़त्म आपस में हसद पैदा होता है जब कमाई की दौड़ लगती है, आपस में बुग़्ज़ पैदा होता है जब इक़्तेदार की दौड़ लगती है दुश्मनियां पैदा होती हैं जब मेरे भाईयो लोग कुर्सी के पीछे तिजारत के पीछे दौड़ते हैं तो हसद और बुग़्ज़ पैदा होता है और मेरे भाईयों जब दीन की दौड़ लगती है तो हर काले गोरे से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अहद लिया था कि जिस हाल में छोड़ कर जा रहा हूँ उसी हाल में मेरे पास तुम ने आना है और

दुनिया के चक्कर में न आना, दुनिया के धोके में न आना, मुसलमान के लिए इतना ही काफ़ी है कि गुज़ारे के लिए उसके पास रोटी खाने को हो।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद मुकम्मल दीन की मेहनत हमारे ज़िम्मे हैः

मेरे भाईयो दीन को मक़सद बनाया और इस पर मरे इस पर मिटे, अन्सार भी, मुहाजिर भी, दोनों पिस रहे हैं, दोनों मिट रहे हैं, बच्चों की फ़रियाद है, भूक से बीवी की फ़रियाद है, हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अन्हा तड़प रही हैं भूक से, हज़रत अबू तल्हा के बच्चे तड़प रहे हैं भूक से लेकिन हमें अल्लाह के दीन को दुनिया में ज़िन्दा करना है इस पर सबको लगा रहे हैं। अन्सार जब भूक से बेताब हो गए और कारोबार उजड़ गए तो कहने लगे क्या करें। उन्होंने कहा चलो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से छुट्टी ले लें ताकि थोड़े दिन के लिए हम अपना कारोबार ठीक कर लें फिर तबलीग़ का काम और फिर दुनिया में दीन का काम करेंगे चुनांचे छुट्टी लेने के लिए जब आए अल्लाह पाक ने क़ुरआन को उतारा ﴿وانفقوا في سبيل الله ولا تلقوا بايديكم إلى التهلكة﴾ ख़र्च करते रहो और मेहनत करते रहो अगर छुट्टी लेने का मुतालबा करोगे तो हलाक हो जाओगे। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ऐसे डरे कि छुट्टी का मुतालबा ही नहीं किया। बाग़ उजड़ रहे हैं, खेतियां उजड़ रही हैं लेकिन ख़ामोशी के साथ छुट्टी लिए बग़ैर चले गए फिर धूप ने तंग किया, परेशान किया कहने लगे अब क्या करें उन्होंने कहा ऐसा करो कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास चलो और

उन से यूं कहो या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बरकत की दुआ कर दीजिए और बरकत की दुआ का मतलब यह था कि रोज़ाना हमें एक वक़्त की रोटी मिल जाए और हम ज़्यादा नहीं चाहते, रोटी तो कम से कम खाने को मिल जाए चुनांचे अन्सार आए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैठे हुए थे मस्जिद में जब अन्सार के मजमे के बड़े बड़े चौधरियों और सरदारों ने दरवाज़े से अन्दर क़दम रखा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखकर फ़रमाया ﴾مرحبا لأنصار مرحبا لأنصار﴿ आओ भाई! आओ अन्सार! ﴾ما من شي سئلتموه الا اعطيتكموه﴿ आज तो जो तुम मागोंगे तुम्हें मिल जाएगा। अब अन्सार के चौधरी खड़े हो गए हाँ क्या करें? (तुम्हारे बाज़ारों के भी सदर होते हैं न कुछ फैक्टरी के सदर और चौधरी होते हैं) इस लिए दुआ करें या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोटी तो एक वक़्त की मिले। अब आप ने कहा मांगों क्या मांगते हो? आपस में कहने लगे क्यों भाई क्या ख़याल है? बोले दुनिया में तो भूके भी गुज़र जाएगी आख़िरत नहीं गुज़रेगी आख़िरत मांगो दुनिया को दफ़ा करो। कहने लगे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुछ नहीं मांगते, आप दुआ फ़रमा दीजिए अल्लाह हमारी मग़फ़िरत कर दे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल ने हाथ उठाए ﴾اللهم ارحم الأنصار﴿ या अल्लाह अन्सार को बख़्श दे ﴾وابناء الانصار﴿ उनकी औलाद की भी बख़्शिश कर दे ﴾وابناء ابناء الأنصار﴿ उनके पोतों की भी बख़्शिश कर दें। तीन नस्लों की बख़्शिश करवा कर चन्द साल के भूक और फ़ाके पर। मेरे भाईयो! दुनिया को मक़सद नहीं बनाया अल्लाह और उसके रसूल की ज़ात को लेकर चलते रहे और इसी पर मरते रहे, सब कुछ क़ुर्बान किया। हुनैन की

लड़ाई में आपने माल सबको दे दिया न क़ुरैश को कुछ दिया न मुहाजिरीन को कुछ दिया न अन्सार को कुछ दिया सारा क़ुरैशे मक्का को दिया और कुछ दूसरों को दिया आप में अन्सार नौजवान कहने लगे वाह ख़ून तो हमारी तलवारों से गिर रहा है और माल दूसरों को दिया जा रहा है। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पता चला तो आप ने साद बिन उबादा को बुलाया, साद क्या बात है जो मैं सुन रहा हूँ? कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हम लोग नहीं कह रहे हैं, यह हमारे छोकरे कह रहे हैं जिन्होंने यह बात कही है हम ने यह बात नहीं की, कहा अन्सार को जमा करो, अन्सार को जमा किया गया। एक ख़ेमे में जमा हुए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿الم تكونوا ضالين فهداكم الله بي﴾ मैं तुम्हारे पास किस हाल में आया जब तुम गुमराह थे और अल्लाह तआला ने तुम्हें मेरे ज़रिए से हिदायत दी ﴿الم تكونوا متشاقين فجمعكم الله بي﴾ क्या मैं तुम्हारे पास इस हाल में नहीं आया था कि तुम टुकड़े टुकड़े थे अल्लाह तआला ने तुम्हें मेरे ज़रिए से जोड़ा और तुम्हें इस्लाम की हिदायत दी और तुम्हें अन्सार बनाया? कहने लगे बेशक ﴿والمنة لله ولرسوله﴾ अल्लाह और रसूल का एहसान है। फ़रमाया अन्सार अब तुम भी कुछ कहो। उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम क्या कहें? कहा नहीं तुम भी तो कुछ कहो, कहा जी हम कुछ नहीं कहते, कहा नहीं नहीं तुम कह सकते हो ﴿الم تاتنا فريدا فاويناك ومكذبا فصدقناك ومخذولا فاكرمناك﴾ ऐ अन्सार अगर तुम चाहते तो मुझे कह सकते हो तुम हमारे पास घर से बे-घर हो कर आए, हम ने आपको ठिकाना दिया और आपको लोगों ने झुठलाया हम ने आप की तसदीक़ की और

आपका लोगों ने साथ छोड़ दिया हम ने आपका साथ दिया, ऐ अन्सार तुम यह कह सकते हो? अन्सार ने कहा हाँ। ﴿والمنة لله ورسوله﴾ ऐ अन्सार क्या हो गया तुम्हें कि तुम ﴿لاجل من الدنيا﴾ कहते हो वह दाने में से छोटी से शाख़ जो निकलती है दाना जब फूटता है तो उस में से एक छोटी सी शाख़ निकलती है जो बड़ी हक़ीर और बड़ी कमज़ोर होती है तुम इस गन्दी दुनिया की ख़ातिर यह बात कह रहे हो। ऐ अन्सार क्या तुम इस बात पर राज़ी नहो हो कि लोग तो भेड़ बकरियां ले जाएं और तुम अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को ले जाओ, ऐ अन्सार अल्लाह की क़सम ﴿لو لا الهجرة لكنت امرامن الانصار﴾ ऐ अन्सार अगर हिजरत की फ़ज़ीलत न होती तो मैं अन्सारी कहलाता और ऐ अन्सार अगर तुम एक तरफ़ चलो वे दूसरी तरफ़ चलें तो मैं तुम्हारा साथ दूंगा ﴿محى محياكم ومماتى مماتكم﴾ अब मेरा जीना और मरना तुम्हारे साथ है। अन्सार रोते रहे उनकी दाढ़ियां आंसुओं से तर हो गयीं। उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमें मुल्क नहीं चाहिए, हमें तो आप की बात चाहिए। चुनांचे जब फ़तेह मक्का हुआ और आप सफ़ा पर चढ़ कर खड़े हो रहे थे, आप ने दुआ मांगनी शुरू की तो अन्सार नीचे खड़े देख रहे हैं, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख रहे हैं आपस में कहने लगे मालूम होता है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वतन की मुहब्बत उभार रही है शायद अब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे साथ न चलें। आप पर वही उतर आई आपको बताया गया कि अन्सार क्या कह रहे हैं ﴿تو با إليه أيها الأنصار ما بلغنى عنك﴾ यह क्या कह रहे हो तुम ﴿ما اسمى اذن﴾ मेरा

नाम जानते हो मैं कौन हूँ, ﴿هل اسمي اذن﴾ मेरा नाम जानते हो मैं कौन हूँ? मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम से अहद किया था कि जीना मरना तुम्हारे साथ है, अब जीना भी तुम्हारे साथ मरना भी तुम्हारे साथ। अन्सार कहने लगे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम ने सिर्फ़ मुहब्बत में यह बात कही थी आप की जुदाई हमें बर्दाशत नहीं है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बेशक तुम सच कहते हो, तुम सच कहते हो।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का जज़्बा निफ़ाज़े दीन और दीगर सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का जज़्बा जिहादः

मेरे भाईयो! दुनिया को ठोकर मारी आख़िरत की बुनियाद पर उन्हें यह नहीं था कि हम महल बनाएं, मकान बनाएं, उन्हें यह था कि हम अल्लाह व रसूल के दीन को दुनिया में फैलाएं, मुल्क फ़तेह हुए मेरे भाईयो! काएनात में दीन फैलता चला जा रहा है और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु जमात दर जमात अल्लाह के रास्ते में निकल रहे हैं जब मुरतिदीन का फ़ितना उठा। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने सारा मदीना उठा कर बाहर फेंक दिया, सारे मदीने को निकाल कर बाहर फेंक दिया लोगों ने कहा बीवी बच्चों का क्या बनेगा, अज़वाजे मुताहरात का क्या बनेगा? फ़रमाया ﴿ولو اختطفني الكلاب﴾ सुन लो अगर मुझे कुत्ते खा जाएं और मुझे नोच लें और मेरी हड्डियां तोड़ दें फिर भी मैं अल्लाह की बात नाफ़िज़ करके रहूंगा मैं नहीं देखता बीवी कौन है? यह बच्चे कौन हैं हुकूमत क्या है? सुन लो मेरे भाईयो ख़लीफ़ा और

बादशाह में फ़र्क़ सुन लें। ख़लीफ़ा वह है जो अल्लह के अम्र को नाफ़िज़ करने में हुकूमत की परवाह न करे और बादशाह वह होते हैं जो हुकूमत को बचाने में दीन को ज़िब्हा करते हैं। ख़लीफ़ा हुकूमत को नहीं देखता, ख़लीफ़ा मेरे भाईयो यह देखता है कि अल्लाह क्या कह रहा है और उसका हबीब क्या कह रहा है। आप ने फ़रमाया कि मेरी जान जाए, मेरा घर लुटे सब कुछ बर्बाद हो जाए लेकिन यह नहीं बर्दाश्त कर सकता कि अल्लाह के दीन में कमी आए मैं यह काम करके छोड़ूंगा निकालो इस लश्कर को, निकालो इस लश्कर को। लश्कर निकला। हज़रत उमर रज़ियाल्लहु अन्हु तशरीफ़ लाए ऐ अबू बक्र अमीर तब्दील करो। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए ज़ोर थप्पड़ हज़रत उमर रज़ियाल्लहु अन्हु के सीने पर मारा ﴿ابكت عليك امك يا بن الخطاب﴾ ऐ इब्ने ख़त्ताब तेरी माँ तुझ पर रोए तू नबी की बात को कहता है कि तब्दील करूं उसामा को हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अमीर बनाया इब्ने क़हाफ़ा की क्या मजाल है ﴿اى سماء تكلنى اى ارض تحملنى واى سماء تؤوينى﴾ कौन सी ज़मीन मुझे उठाएगी, कौन सा आसमान मुझे पनाह देगा अगर मैं नबी की बात को ठुकराऊँगा। आज का मुसलमान दुकान चलाते हुए नहीं सोचता कि नबी की सुन्नत पर छुरी चलाऊँगा तो मेरा क्या होगा? लेकिन जन्नत में सबसे पहले जाने वाला और सिद्दीक़ का ख़िताब पाने वाला और इस उम्मत का सबसे अफ़ज़ल और जन्नत में सबसे पहले क़दम रखने वाला जिसके बारे में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿اما انت يا ابابكر فاوّل من يدخل من أمتى﴾ ऐ अबू बक्र जन्नत में सबसे पहले मेरी उम्मत में से तू क़दम रखेगा, वह यह कहता

है कि अगर मैंने नबी की बात को ठुकरा दिया तो मुझे न ज़मीन सहारा देगी न आसमान सहारा देगा लेकिन आज का मुसलमान इतना दिलेर है सब कुछ करके कहता है देखा जाएगाजो होगा हम ईमान की मौत मर चुके हैं। उन्होंने कहा सुनो ﴿تـم الـديـن وانقطع الوحى﴾ दीन मुकम्मल हो गया वही बन्द हो गई अल्लाह पाक ने अपने दीन को इतमाम (पूरा) कर दिया ﴿اينقص الدين وانا حى﴾ अल्लाह के दीन में कमी आए और मैं ज़िन्दा रहूँ, यह नहीं हो सकता, उसामा का लश्कर जाएगा। उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर को उठा कर रवाना कर दिया। सारा मदीना ख़ाली, थोड़े से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हम बचे हैं। अब मुरतदीन का हमला पेशे नज़र है। उन्होंने कहा ज़कात नहीं देंगे, नमाज़ नहीं पढ़ेंगे, बताओ क्या करें? सारे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम कह रहे हैं कि अब हालात ऐसे नहीं हैं लिहाज़ा हम थोड़ा सा सब्र करें। मेरे भाईयों मुसलमान हालात नहीं देखता अल्लाह और नबी के तरीके को देखता है, बताओ भाई क्या करना चाहिए? हज़रत उमर से हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा क्या करें? हज़रत उमर से हज़रत ने कहा अभी हम कमज़ोर हैं इन से अभी कुछ नहीं कहना चाहिए, हज़रत उसमान से पूछा क्या करें? हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हज़रत उमर हज़रत रज़ियल्लाहु अन्हु ठीक कहते हैं, हज़रत अली से पूछा क्या करें? उन्होंने कहा हज़रत उमर ठीक कहते हैं, मुहाजिरीन से पूछा बताओ क्या करें? उन्होंने कहा जी यही ठीक है, अन्सार से पूछा बताओ क्या करें? अन्सार ने कहा यही ठीक है, गुस्सा आया मेम्बर पर खड़े हुए अल्लाह की हम्द बयान की, सना पढ़ी फिर फ़रमाया ﴿ان الله بعث محمدا والحق كل شريد والاسلام غريب تريد قدر حبله

﴾وقل اهله﴿ अल्लाह पाक ने अपने नबी को भेजा जब इस्लाम कमज़ोर, इस्लाम को मानने वाले थोड़े, इस्लाम की रस्सी कमज़ोर फिर अल्लाह ने हमें हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जमा किया ﴾فجمعهم الله﴿ फिर अल्लाह ने जमा किया ﴾وجعلكم امة باقية امة وسطا باقية﴿ फिर अल्लाह ने तुम्हें उम्मत बनाया, हमेशा रहने वाली उम्मत बनाया, मैं अल्लाह की क़सम नबी की बात पर खड़ा हो जाऊँगा और अल्लाह के अम्र पर खड़ा हो जाऊँगा ﴾حتى انجز الله وعده احد﴿ यहाँ तक कि अल्लाह अपना वायदा पूरा करेगा और अल्लाह अपने क़ौल को सच कर दिखलाएगा और अल्लाह का वायदा है कि अगर ईमान को महमिल बना लोगे तो मैं तुम्हें ज़मीन की ख़िलाफ़त दे दूंगा अगर ईमान व अमल को बिगाड़ दोगे तो सारी दुनिया की ताक़तें मिल कर भी तुम्हें दुनिया में इज़्ज़त नहीं दे सकतीं ﴾والله لو منعوني عقالا مما كانوا يعطون رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم اقبل عمهم الشجر و الحجر والجن والانس لحدتهم حتى فقهت روح بالله﴿ अल्लाह की क़सम! अगर ये लोग हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में रस्सी देते थे वह भी अगर नहीं देंगे तो फिर मैं खड़ा हो जाऊँगा चाहे उनके मुक़ाबले में दरख़्त, पत्थर, पहाड़, इन्सान, जिन्नात अगर सारे इकठ्ठे हो कर आजाएं फिर मैं अकेला उनसे टक्कर लूंगा यहाँ तक कि मेरी जान चली जाए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा बेशक मैं समझ गया, अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु पर हक़ खोल दिया कहा निकलो। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु खुद निकल गए, मदीने को ख़ाली कर दिया। एक सफ़र फ़रमाया फिर वहाँ से वापस आए, आते ही दूसरा सफ़र फ़रमाया और ज़ुलक़आ एक जगह है वहाँ तक पहुँचे वहाँ से अपने

उम्माल मुक़र्रर किए और वहाँ से वापस आए तो तालाहा के भाई हब्बाल ने हमला करके मुसलमानों को क़त्ल कर दिया। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को पता चला तो तीसरी मर्तबा फिर निकले। जब मदीने से निकलने लगे तो हज़रत अली ने घोड़े की लगाम को पकड़ लिया कहा ﴿يا خليفة رسول الله﴾ ऐ ख़लीफ़ाए रसूल तुम्हें वास्ता देता हूँ उस बात का जो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको ओहद की लड़ाई में कही थी इसी वक़्त तलवार नीचे कर लो ﴿ولا تهلكنا بنفسك﴾ अपने क़त्ल से हमें बर्बाद न करो ﴿والله لئن قتلت﴾ अल्लाह की क़सम अगर आप दुनिया से उठ गए ﴿لا يكون حبل الاسلام ابدا﴾ फिर इस्लाम की रस्सी को कोई संभालने वाला नहीं होगा। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया ऐ अली मेरा रास्ता छोड़ दे ﴿لن اقبل نصيحتك في نفسي﴾ मैं अपने बारे में किसी की बात सुनने वाला नहीं हूँ और ख़ुद निकल गए और ज़ुलक़आ पर पहुँचे और फिर गए फिर चौथी दफ़ा फिर वहाँ से वापस आए चौथी मर्तबा फिर निकले। मेरे भाईयों सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम कहा करते थे कि कभी वह दिन भी आएंगा कि रात को चैन से सो सकेंगे और कभी वह दिन भी आएगा कि पेट भर कर खाना खा सकेंगे लेकिन मेरे भाईयों उनकी भूक प्यास ने आज हम को कलिमे वाला बना दिया अगर वे हमारी तरह दुकानों के नक़्शे सजाते और हमारी तरह कारोबार करते तो आपज दुनिया में दीन ज़िन्दा नहीं होता। चौथी मर्तबा निकले और सारे सहाबा को पूरे मुल्के अरब में फैला दिया। आऐ तो ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा जाओ तुम तलाहा की तरफ़, हज़रत इकरिमा बिन अबि जहल रज़ियल्लाहु अन्हु को

को भेजा मुसैलमा कज़्ज़ाब की तरफ़ और शिरजील इब्ने हस्ना रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा यमामा की तरफ़, हज़रत उमर बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा शाम की हुदूद की तरफ़ और हज़रत हुज़ैफ़ा बिन मोहसिन रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा मसक़त की तरफ़ और हज़रत अरज़जा बिन हरसमा रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा महर्रा की तरफ़ और हज़रत तईफ़ बिन हाजिज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा मक्का और मदीने के दर्मियानी इलाक़े की तरफ़ और हज़रत अला हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा बहरीन की तरफ़ और मुहाहिर बिन अबि उमैया को भेजा यमन की तरफ़ और हज़रत मुईब बिन नौमान नईम सुवैद बिन मुकर्रम को भेजा शुमाली यमन और हज़रमूत की तरफ़। गयारह लश्कर सारे मुल्क में फैला दिए, अकेले मदीने में चन्द लोग सारा मदीना ख़ाली। गयारह लश्कर सहाबा के चक्कर खा रहे हैं घर से दूर मुल्क से दूर। हज़रत इकरिमा रज़ियल्लाहु अन्हु को शिकस्त हुई और वह वापस लौटे। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का पैग़ाम आया तू अल्लाह के दीन के लिए मर जा, मुझे अपनी शकल मत दिखा। किसी को मदीने में आने की इजाज़त नहीं है जब तक कि अल्लाह का दीन क़ायम न हो जाए। चुनांचे एक साल के अन्दर अन्दर अल्लाह तआला ने पूरे मुल्के अरब में मुरतदीन को दोबारा इस्लाम में दाख़िल कर दिया। बेशुमार सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम शहीद हुए। यमामा की लड़ाई में तीन हज़ार बड़े बड़े सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम शहीद हुए जिस में सात सौ उलमा थे सात सौ क़ारी थे। सात सौ उलमा इस लड़ाई में शहीद हुए। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु बारह हज़ार का लश्कर और मुसैलमा एक लाख बीस हज़ार का लश्कर और

यह यमामा रियाज़ के पास एक जगह थी जिसमें बनू हनीफ़ा रहते थे। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद और ये सारे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम यूं कहते थे "मैदान ज़र्बदस्त गर्म है" और वे एक बाग़ में छुपे हुए हैं और मुसलमानों के क़दम उखड़ रहे हैं। हज़रत सालिम कहने लगे झण्डा मुझे दो। उन्होंने कहा तेरे क़दम न उखड़ जाएं कहा क़ुरआन इस लिए पढ़ा है कि क़दम उखड़ जाएं ﴿القرآن انا﴾ फिर मेरे से बुरा कौन होगा। क़ुरआन वाले ने गढ़े को खोदा और उसी में लड़ते लड़ते जान दी। हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने गढ़े को खोदा और उसमें गिर के जान दी लड़ते लड़ते शहीद हो गए। जब यूं देखा की मस्अला हल नहीं होता तो बड़े बड़े सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा ﴿خلصنا يا خالد﴾ ऐ ख़ालिद हमें अलग करो हमें अलग करो तीन हज़ार मुहाजिर और अन्सार अलग हुए और जान हथेली पर रख कर ये आगे बढ़े। एक सहाबी अबू अक़ील रज़ियल्लाहु अन्हु हैं ग़ुरबा में से फ़ुक़रा में से, सीने पर तीर लगा गिरे। जब हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा गया कि हमें अलग करो तो आवाज़ लगी ﴿يا للانصار يا للانصار﴾ ऐ अन्सार एक तरफ़ हो जाओ तो अबू अक़ील रज़ियल्लाहु अन्हु घिसटने लगे, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा अबू अक़ील रज़ियल्लाहु अन्हु कहां जाते हो? कहने लगे आवाज़ लग रही है ﴿يا للانصار يا للانصار﴾ उन्होंने कहा अरे तुम्हें थोड़े ही बुला रहे हैं वह तो जान दार सेहत मन्दों को बुला रहे हैं कहा नहीं नहीं उसने कहा है ﴿يا للانصار يا للانصار﴾ मैं तो जाऊँगा हर हाल में थोड़ा सा घिसटने लगे, ज़ख़्म फटा, ख़ून बहने लगा कहा ऐ इब्नम उमर मुझे पत्थर पर बिठा दो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर

रज़ियल्लाहु अन्हु ने पत्थर पर बिठा दिया। अबू अक़ील रज़ियल्लाहु अन्हु ने आवाज़ लगाई ﴿كـــرة ككرة حنين﴾ ऐ अन्सार! आज हुनैन की याद ताज़ा करो। बस क़ुर्बानी की आवाज़ जो लगी तो सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की एक टोली आगे बढ़ी बरा बिन मालिक और अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्हु, ख़ालिद बिन वलीद और बड़े बड़े सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम आगे बढ़े। हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा फेंको मुझे उनके अन्दर उन्होंने ढाल पर बिठाया और उठा कर अन्दर फेंक दिया। हज़रत बरा बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने जा कर दरवाज़े को खोला और मुसलमानों को फ़तेह नसीब हुई और मुसैलमा कज़्ज़ाब एक सौ चालीस बरस की उमर में क़त्ल हुआ और हज़रत वहशी रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे क़त्ल किया और इस्लाम लाने के बाद सबसे बुरे इन्सान को क़त्ल किया। इधर हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिल और उधर वहशी किस के क़ातिल मुसैलमा कज़्ज़ाब के। अरे भाईयों देखो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दर्द ग़म को। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक ही दर्द था कि उम्मत दोज़ख़ से बच जाए और मुसलमान जन्नत में जाने वाला बन जाए, एक एक काफ़िर जन्नत में जाने वाला बन जाए यह ग़म नहीं था, यह दर्द नहीं था कि उनकी रोटी का क्या बनेगा? उनके पानी का क्या बनेगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सख़्त मुशक़्क़त उठाई, नमाज़ लम्बी पढ़ते थे, लम्बी सूरतें पढ़ते थे, सलाम फेरा सब के सब गिर पड़े। फ़रमाया मुझे इसका ख़ौफ़ नहीं कि तुम गिर पड़े हो मुझे उस दिन का ख़ौफ़ है जब तुम दुनिया की दौड़ लगाओगे और उसमें हलाक हो जाओगे और

अगर तुम्हें पता चल जाए कि तुम्हारे रब ने इस फ़क्र व फ़ाक़े में क्या तैयार कर रखा है तो तुम कहो और ज़्यादा हो जाए।

हज़रत वहशी रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का क़िस्साः

हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु कौन हैं? चचा हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु कौन थे? रज़ाई भाई सौबिया का हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने दूध पिया था और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी दूध पिया था और हज़रत अब्दुल्लाह और अब्दुल मुत्तलिब का एक ही दिन निकाह हुआ और अपने बेटे का भी निकाह किया। अरबों में तो दस्तूर था बहुत सी शादियां करते थे तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालिद और अब्दुल मुत्तलिब की एक ही दिन शादी हुई। नई शादी की थी उससे हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु पैदा हुए और हज़रत अब्दुल्लाह से हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए हम उमर भाईयों की तरह दूध पिया। चचा भी, भाई भी, दोस्त भी, हबीब भी, अनीस भी और जब वादी में अबू जहल ने आपको हाथ से पकड़ कर घसीटा और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गिरेबान को फाड़ा और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को थप्पड़ मारे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गालियां दीं और सारे लोग देख रहे हैं कि अल्लाह का रसूल कैसी तकलीफ़ उठा रहा है तो हज़रत हमज़ा का बांदी यह तमाशा देख रही थी शाम को हमज़ा आए तो अरे अबू अम्मारा, अरे अबू अम्मारा अरे आज तू देखता तेरे भतीजे के साथ क्या सुलूक हुआ? कहने लगे क्या हुआ? कहा अबू जहल ने मारा और अबू जहल ने घसीटा और यह

किया कहा अच्छा कमान उठाई हरम में आए अबू जहल बैठा था सिर में ज़ोर से मारी तेरा सत्यानास हो तू मेरे भतीजे को कमज़ोर समझ कर मारता है मैं भी उसके कलिमे को पढ़ता हूँ और जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम लाए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब हरम मे नमाज़ होगी ज़ैद बिन अरक़म के घर में नमाज़ नहीं होगी तो दो सफ़ें बन कर हरम में दाख़िल हुए पहली सफ़ की क़यादत हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमा रहे थे और दूसरी सफ़ की क़यादत हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमा रहे थे। ये दोनों सरदार दाएं बाएं खड़े थे। उन्होंने कहा किसी की हिम्मत है तो मुसलमानों पर हाथ उठा कर देखे। ये दोनों ऐसे वजीह सरदार थे। ओहद की लड़ाई में हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ में तलवार दाएं हाथ में भी और बाएं हाथ में भी। बदर की लड़ाई में हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने वह काम किया कि बड़े बड़े सरदारों को क़त्ल किया। वहशी के सरदार उबई बिन्न ख़लफ़ ने उससे कहा कि अगर तू मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़त्ल कर दे या अली रज़ियल्लाहु अन्हु को या हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को क़त्ल कर दे, इन तीनों में से किसी एक को क़त्ल कर दे तो मैं तुझे आज़ाद कर दूंगा। वहशी ने कहा ठीक है मैं आया और एक पत्थर के पीछे हो कर बैठ गया कि जो भी ज़द में आएगा निशाना बनाऊँगा। हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के दोनों हाथों में तलवारें और दोनों हाथों से लड़ रहे थे जो सामने आता था गाजर मूली की तरह कटता था और सबसे आगे आगे बढ़ कर हमला कर रहे थे। काफ़िरों में से एक आदमी कह रहा था ﴿استوفق استوفق﴾ इनको

ख़ूब काटो क्योंकि शिकस्त के आसार ज़ाहिर हो चुके थे, मुसलमानों में खलबल मच गई थी, मुसलमान बिखर गए थे तो वह कह रहा था इनको घेर घेर कर मारो। हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा बदबख़्त मेरी तरफ़ आ तो मैं तुझे बताऊँ और तलवार का वार किया इस तेज़ी से तलवार घूमी कि उसकी गर्दन पर चलने वाली तलवार पर ख़ून भी नहीं लगा और उसकी गर्दन कट कर दूर जा पड़ी लेकिन अल्लाह की तक़दीर ग़ालिब आई जब आप हमलावर हुए तो वहशी की ज़द में आ गए। उसने जो बरछा उठा कर फेंका बस आपके पेट में लगा और जिगर और आंतों को काटता हुआ पार निकल गया तो गिरे और उसकी तरफ़ को बढ़े ख़ून की उल्टी आई और गिर पड़े। उन्होंने कहा मैं ख़ौफ़ की वजह से छुपा रहा जब देखा ठंडे हो गए तो आ गया और अपने बरछे को उठाया और भाग गया। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शोहदा को तलाश करने लगे तो देखा मेरा चचा भी नहीं है। कहा हमज़ा कहाँ हैं? हमज़ा कहाँ हैं? कहा जी शहीदं हो गए हैं। जब चचा की लाश पर आए तो और देखा कान भी कटे हुए हैं, नाक भी कटा हुआ है, सीना भी चाक जिगर चबा चबा कर फेंका हुआ है तो आप की चीख़ निकली और आप सल्लल्लाहु अलैहि वस्सलम इतना रोए कि मैं ने किसी हदीस में, किसी किताब में नहीं पढ़ा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिचकियों से रोए हों सिवाए चचा की लाश पर। इतना रोए की दूर तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रोने की आवाज़ आ रही थी। अल्लाह पाक की रहमत को जोश आया हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी रो रहे थे, सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम भी रो रहे थे। हज़रत

जिबराईल अलैहिस्सलाम उतरे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं ग़म मत कीजिए हम ने हमज़ा को अपने अर्श पर लिख दिया है ﴿حمزة اسد الله واسد رسوله﴾ हमज़ा अल्लाह और उसके रसूल का शेर है। सत्तर मर्तबा नमाज़े जनाज़ा अपने चचा के जनाज़े पर आपने पढ़ी सत्तर मर्तबा। सत्तर शहीद हुए थे। हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का जनाज़ा रखा हुआ है दूसरे जनाज़े आते हैं आप पढ़ते हैं हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का जनाज़ा पड़ा रहता है सत्तर मर्तबा जनाज़ा पढ़ा फिर दफ़न किया। जब मदीने में आए तो बनू हाशिम तो सारे मक्के में थे मदीने में तो कोई नहीं था तो सारे मदीने से घर घर से रोने की आवाज़ आ रही थी हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फिर रोने लगे कहने लगे ﴿اما حمزة فلا باكية له﴾ आज मेरे चचा पर रोने वाला नहीं सब के रोने वाले हैं लेकिन मेरे चचा पर रोने वाला नहीं है फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों से आंसू जारी हुए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर पहुँचे। हज़रत साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु को पता चला। आप ने अन्सार की औरतों से कहा जाओ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर जा कर आपके चचा पर रोओ, अभी रोना मना नहीं हुआ था यह उस वक़्त की बात है बाद में मना हुआ। ज़ोर ज़ोर से रोती हुई अन्सार की औरतें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरवाज़े पर आयीं। पूछा कैसे आई हो? या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपके चचा पर रोने के लिए आयीं हैं। चली जाओ चली जाओ अल्लाह तुम्हारा भला करे, वापस चली जाओ। जिस चचा का इतना ग़म खाया हो और जिसके लिए इतना दर्द उठाया होउसके क़ातिल के

बारे में क्या ज़हन में जज़्बात होंगे आप अन्दाज़ा लगाएं, उसके बारे में क्या जज़्बा होगा लेकिन फ़तेह मक्का पर वहशी भाग कर ताएफ़ चले गए। उन्होंने कहा मेरी जान की तो ख़ैर नहीं, ताएफ़ गए। जब ताएफ़ में पहुँचे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ताएफ़ का मुहासरा किया फिर वापस आए तो वहशी के पास आदमी भेजा, अरे भाई चिल्ले लगाने वालों! सुन रहे हो कि नहीं सुन रहे वहशी के पास आदमी भेजा कि ऐ वहशी कलिमा पढ़ ले तू भी जन्नत में चला जाए। अपने चचा के क़ातिल का भी दर्द है कि यह जन्नत में चला जाए, दोज़ख़ से बच जाए, आगे वहशी की सुनो वह कहते हैं मैं कलिमा पढ़ कर क्या करूं तेरा रब कहता है ज़िना करे, क़त्ल करे, शिर्क करे दोज़ख़ में जाएगा। मैंने ये सारे काम किए हैं ﴿هل تجد لي من رخصة﴾ कोई ओर रास्ता बताओ उस आदमी ने पैग़ाम सुनाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोबारा आदमी भेजा कि वहशी से कहो अल्लाह ने आयत उतारी है कि मेरा रब कहता है ﴿الا من تاب وامن وعمل عملا صالحا فاولئك يبدل الله سيئاتهم حسنات وكان الله غفورا رحيما﴾ जो ईमान ले आए तोबा कर ले अमल अच्छा करे उसकी बुराइयां नेकियों में तब्दील हो जाएंगी, वहशी अब तो ईमान ले आ। वहशी ने जवाब भेजा कि ये शर्तें बड़ी सख़्त हैं ईमान, तोबा, अमल मेरे से नहीं हो सकतीं कोई और रास्ता बताओ। मेरे भाईयों ज़हन में रखो यह बात किस से हो रही है? चचा के क़ातिल से, उससे जिसने सबसे बड़ा दर्द पहुँचाया। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ताएफ़ गए पत्थर खाए आपकी चीख़ें नहीं निकलीं, चचा की लाश को देख कर चीख़ें निकलीं फिर दोबारा आदमी भेजा कि ऐ वहशी! मेरा रब कहता

है ﴿ان اللّٰه لا يغفر ان يشرك به ويغفر ما دون ذالك لمن يشآء﴾ मैं शिर्क नहीं मॉफ़ करूंगा बाक़ी जिसे चाहूंगा मॉफ़ कर दूंगा, पता नहीं मुझे मॉफ़ करे या न करे। उसका नख़रा तो देखो। एक एक आदमी का दर्द देखो पैसा पैसा जोड़ना उम्मत को सिखाया है।

माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने का हुक्मः

मेरे भाईयो! आपने उम्मत का दीन का दर्द सिखाया था। हम चाहते हैं तबलीग़ वाले और हर हर कलिमा पढ़ने वाला दीन का दर्द ले ले, दीन का ग़म ले ले, मुल्क का ग़म निकाल दे, दीनार का ग़म निकाल दे वरना अल्लाह की क़सम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हाथ उठा कर बद्दुआ की है या अल्लाह पैसे के चाहने वालों को, माल के चाहने वाले को, दरहम व दीनार के चाहने वाले को हलाक कर दे और क़ब्रों की दौड़ लगाने वालों को हलाक कर दे या अल्लाह उसे मुँह के बल गिरा, ऐ अल्लाह उसे हलाक कर और उसे मुँह के बल ज़मीन पर गिरा, उसे कांटा भी लगे तो कोई उसका कांटा निकालने वाला न बने। माल से हटाया दीन का दर्द अन्दर में डाला, दीन का ग़म ले लें। अरे पैसा पैसा नहीं सुन्नत सुन्नत की क़द्र कर ले, एक एक सुन्नत की क़द्र कर लें। मुसलमान कहता है सुन्नत ही तो है जिसको अल्लाह तआला ने सबसे पहले पैदा फ़रमाया और आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश से भी पहले उसके नूर को वजूद दिया ﴿كنت نبيا و ادم بين الماء والطين﴾ जिसको अल्लाह ने पसन्द करके सबसे पहले वजूद दिया उसकी सुन्नत को आज कलिमे वाला कहता है सुन्नत ही तो है। ज़मीन व आसमान के

टूट जाने से ज़्यादा यह बोल सख़्त है। माल जमा करना नहीं सिखाया, दीन पर मरना सिखाया। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए देखा बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु कपड़ा डाला हुआ है। अरे बिलाल! यह क्या है? या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खजूरें हैं कल के लिए रखी हैं। ﴿يا بلال انفق، ولا تخشى من ذى العرش إقلالا﴾ ऐ बिलाल ख़र्च कर अर्श वाले से कमी का डर मत कर, दीन की क़द्र सिखाई माल की क़द्र नहीं सिखाई, दीन की क़द्र सिखाई। मेरे भाईयों यूं कहिए हम नमाज़ पढ़ते हैं, हम रोज़े रखते हैं, चिल्ले लगाते हैं और इस्लाम क्या है? इस्लाम इससे बड़ा दूर है ﴿ان تسلم قلبك لله﴾ यह इस्लाम है कि तेरे दिल में अल्लाह और रसूल की मुहब्बत के सिवा सारे जज़्बे निकल जाएं। यह इस्लाम है अगर माल की मुहब्बत है तो खोटा इस्लाम है, चाहे हज़ारों हज कर ले, हज़ारों नवाफ़िल पढ़ ले अगर दुकान कारोबार की मुहब्बत है तो खोटा इस्लाम है। खोटा पैसा तुम्हारे बाज़ारों में नहीं चलता, खोटा सोना तुम्हारे बाज़ारों में नहीं चलता, खोटा अमल रब के बारगाह में नहीं चलेगा। वहशी मेरा रब कहता है ﴿قل يا عبادى الذين اسرفوا على انفسهم لا تقنطوا من رحمة الله ان الله يغفر الذنوب جميعا﴾ ऐ वहशी मेरा रब कहता है ऐ मेरे बन्दों जिन्होंने ज़ुल्म किया घबराओ नहीं तोबा करो सारे गुनाह मॉफ़ करूंगा। वहशी कहने लगे ﴿هذه نعم اما هذه فنعم﴾ यह बात ठीक है। अब आए मदीना चेहरा छुपाए हुए। चेहरा छुपा हुआ है क्योंकि वहशी के क़त्ल का हर सहाबी ख़्वाहिशमन्द था। हर सहाबी की यह चाहत थी कि वहशी मिल जाए तो मैं क़त्ल कर दूं ताकि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम खुश हो जाएं। चेहरा छुपा हुआ है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने ध्यान में बैठे हुए थे आए और कपड़ा चेहरे से यूं हटाया और ﴿شهدت الحق﴾ और कलिमा पढ़ा ज़ोर से और खुद रिवायत करते हैं हज़रत वहशी ﴿فلم يروه الا قائلا اشده شداده الحق﴾ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी जगह यूं घबराए कि मैं कलिमा शहादत पढ़ रहा हूँ सहाबा तलवारें ले कर उठे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वहशी! तलवार हाथ में हैं। कहा ﴿دعوه﴾ हट जाओ पीछे ﴿لا اسلام رجل واحد احب إلى من قتل الف كافر﴾ एक आदमी का कलिमा पढ़ना मुझे हज़ार आदमियों के क़त्ल से ज़्यादा अच्छा लगता है। पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तवज्जो से देखते रहे फिर उंगली उठाई ﴿وحشى انت﴾ तू वहशी है? जी हाँ ﴿النعم﴾ बैठो बैठ गये कि यह तो बता तूने मेरे चचा को कैसे क़त्ल किया था? बीच में कितना अरसा गुज़र चुका है, आठ बरस का अरसा गुज़र चुका है लेकिन नबी का ग़म ताज़ा है वहशी तूने मेरे चचा को कैसे क़त्ल किया था? हज़रत वहशी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरा जी तो नहीं चाहता था लेकिन मैंने जब बयान करना शुरू किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखा से आंसू जारी हो गए और फिर आप रोने लगे फ़रमाया ऐ वहशी अल्लाह तेरा भला करे जा जैसे तूने अल्लाह और उसके रसूल के ख़िलाफ़ क़दम उठाया अब जा अल्लाह और उसके रसूल की मदद में क़दम उठा और वहशी एक मेरे ऊपर एहसान कर मेरे सामने मत बैठा कर तुझे देख कर मुझे मेरे चचा का ग़म और उनकी याद ताज़ा हो जाती है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सादगी और आप अलैहिस्सलाम के पहलू में दफ़न की ख़्वाहिशः

मेरे भाईयो! जिस की शकल देखने की हिम्मत नहीं है उसको भी हिदायत पर लाने कि फ़िक्र है। यह जज़्बा हम मुसलमानों में पैदा करना चाहते हैं। माल के जज़्बे निकल जाएं, जायदाद के जज़्बे निकल जाएं अरे मेरे भाईयो! ऊँचे ऊँचे महल्लात बनाने के जज़्बे निकल जाएं और मकानात बनाने के जज़्बे निकल जाएं और मेरे भाईयो! घर बनाने के जज़्बे निकल जाएं एक जज़्बा आ जाएं कि मैं अल्लाह व रसूल के अम्र पर क़ुर्बान हो जाऊँ और इसके ग़म को लेकर फिरने वाला बन जाऊँ और इसी ग़म को लेकर चलने वाला बन जाऊँ। बस यह है एक जज़्बा बन जाए। जब मुल्क फ़तेह हो गए और फ़तुहात के दरवाज़े खुल गए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने मशविरा किया कि अब यह बूढ़े हो गए हैं और फ़तुहात हो गई हैं, इनकी ज़िन्दगी बड़ी मुशक़्क़त वाली है। इन्हें चाहिए कि अच्छा खाएं, अच्छा लिबास पहने, कोई ख़ादिम रख लें जो खाना पकाया करे और लिबास व आराम का ख़याल किया करे। अली, उसमान, तल्हा, ज़ुबैर, साद रज़ियल्लाहु अन्हुम यह छः बड़े सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हुम आपस में मशविरा कर रहे हैं। उन्होंने कहा बात कौन करे? उन्होंने कहा हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहो जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी और उम्मुल-मोमिनीन हैं। हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास आए और बात अर्ज़ की कि अमीरुल-मोमिनीन को अब सख़्ती में नहीं रहना चाहिए, थोड़ी नरमी पर आ जाना चाहिए और

उनसे बात करें अगर मान जाएं तो हमारा नाम बता दीजिएगा अगर न मानें तो हमारा नाम न बताइएगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए, हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा अब्बा जान अब आप बूढ़े हो गए हैं अगर आप ख़ादिम रख लें जो आपके लिए खाना पकाया करे, लिबास अच्छा पहन लिया करें आपके पास वफ़्द आते हैं दूर दूर से, कुछ आराम कर लिया करें। फ़रमाया हफ़्सा यह बात किसने तुझे कही है फ़रमाया कि पहले आप यह बताओ मानते हो कि नहीं? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अगर मुझे यह पता चल जाए कि यह बात किन लोगों ने कही है तो मैं मार मार कर उनके चेहरे लहू लुहान कर दूं ऐ हफ़्सा! ﴿صاحب البيت ادری بما فيه﴾ घर वाले को पता होता है घर का हाल क्या है तू नबी की बीवी है तुझे अच्छी तरह याद है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया से तशरीफ़ ले गए और कभी पेट भर कर खाना नहीं खाया, ऐ हफ़्सा! तुझे अच्छी तरह याद रहे कि तूने एक मर्तबा छोटे से मेज़ पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए खाना रख दिया था और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आए थे तो आपके चेहरे का रंग बदल गया था और आप ने फ़रमाया था कि खाना नीचे रख मैं मेज़ पर नहीं खाऊँगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खाने को नीचे रख कर खाया था और हफ़्सा तुझे याद है हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक जोड़ा होता था जिसे वह धोकर पहनते थे ।ग कभी ऐसा होता था कि अभी वह कपड़ा ख़ुश्क नहीं कि नमाज़ का वक़्त हो जाता था और बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु आ कर कहते थे ﴿يارسول الله! الصلوة الصلوة﴾ और आप इन्तेज़ार

करते रहते थे यहाँ तक कि जोड़ा खुश्क होता था और उसी को पहन कर जाते थे और हफ़्सा तुझे अच्छी तरह याद है कि तेरे घर में एक टाट था जिसे तू दोहरा करके बिछाती थी रात को आराम के लिए एक रात को तूने चौहरा करके बिछा दिया था तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था ऐ हफ़्सा उस टाट को दोहरा कर दे उसने रात को खड़ा होने से मुझे रोक दिया और ऐ हफ़्सा तुझे अच्छी तरह याद है कि एक औरत ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दो चादरें हदिये में भेजी थीं एक चादर पहले दिन भेज दी दूसरी चादर देर से भेजी तो आपके पास कोई कपड़ा नहीं था उसी चादर को आप ने कांटों से और गांठ लगा कर उसे पहन कर जा कर नमाज़ पढ़ाई थी, ऐ हफ़्सा घर वाला अच्छी तरह समझता है और फिर रोना शुरू किया हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा की चीख़ें निकल रही थी और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की भी चीख़ें निकल रही हैं और फ़रमाया हफ़्सा सुन ले मेरी मिसाल और मेरे साथियों की मिसाल ऐसी है तीन राही हैं तीन मुसाफ़िर हैं एक उठा मंज़िल को चला एक रास्ते पर चला और वह चलता चलता मंज़िल मक़सूद तक पहुँच गया फिर दूसरा उठा मंज़िल को चला एक रास्ते पर चला और वह चलता चलता अपनी मंज़िले मक़सूद तक पहुँच गया अब तीसरे की बारी है और मैं तीसरा हूँ अल्लाह की क़सम मैं अपने को मुशक़्क़त पर रखूंगा और दुनिया की लज़्ज़तों से हटा कर चलूंगा यहाँ तक की मैं अपने साथियों के साथ मिल जाऊँ अगर मैंने अपना रास्ता जुदा कर दिया तो मैं अपने साथियों से नहीं मिल सकता मैं इसी तरह चलूंगा और मेरे भाईयो! फिर अल्लाह ने दिखाया कि अल्लाह तआला ने हज़रत

उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को साथ मिला दिया जब अबू लुलु ने ख़न्जर मारा और आप गिरे आंते कट गई और ख़ून बहने लगा, ग़िज़ा खिलाई तो आंतों से बाहर निकल गई पता चल गया कि अब नहीं बचते तो अपने बेटे को बुलाया ऐ अब्दुल्लाह जाओ हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा से जा कर इजाज़त लो अमीरुल-मोमिनीन नबी के पड़ौस में दफ़न होना चाहता है। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के हां हाज़िर हुए दरवाज़े पर दस्तक दी कहा अब्दुल्लाह हाज़िर है, अमीरुल-मोमिनीन यह इजाज़त चाहते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पड़ौस में दफ़न किए जाएं। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा रोने लगीं और फ़रमाने लगीं ऐ अब्दुल्लाह यह जगह मैं। ने अपने लिए रखी थी लेकिन मैं उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने ऊपर तरजीह दूंगी, उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को दफ़न कर दिया जाए। वापस जाकर बताया अब्बा जान ख़ुशख़बरी हो आपको इजाज़त मिल गई फ़रमाया बेटा नहीं नहीं हो सकता है कि मेरी शर्म में आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने इजाज़त दी हो जब मैं मर जाऊँ तो मेरे जनाज़े को दरवाज़े पर रखना फिर दोबारा इजाज़त मांगना अगर इजाज़त दे दें तो दफ़न कर देना वरना मुझे आम मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में डाल देना चुनांचे जब आपका इन्तेक़ाल हो गया तो हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। जब मौत का वक़्त क़रीब आया तो बेटे ने सिर को गोद में रखा हुआ था आप ने फ़रमाया बेटा मेरा सिर ज़मीन पर डाल दे। हज़रत अब्दुल्लाह को समझ नहीं आया क्या कह रहे हैं कहा बेटा मेरा सिर ज़मीन पर डाल दे अब मुझे याद नहीं क्या लफ़्ज़ फ़रमाया तो फ़रमाया ﴿تربت يداك﴾ या यूं

फ़रमाया ﴿ثكلتك امك﴾ तेरी माँ तुझे रोए तेरे हाथ टूटें मुझे ज़मीन पर डाल दे मैं अपने चेहरे को ख़ाक आलूद करना चाहता हूँ ताकि मेरे मौला को मेरे ऊपर रहम आ जाए। यह वह उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) हैं जिनके बारे में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरे बाद कोई नबी होता तो उमर होता। इन्तेक़ाल हुआ, जनाज़ा पढ़ा गया, जनाज़ा उठाकर हुज्रे मुबारक के सामने रखा गया। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा उम्मुल-मोमिनीन अमीरु-मोमिनीन दरवाज़े पर आ चुके हैं और अन्दर आने की इजाज़त मांगते हैं। हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया ﴿مرحبا امير المؤمنين، مرحبا امير المؤمنين﴾ बेशक अमीरु-मोमिनीन को अन्दर आने की इजाज़त है, अमीरु-मोमिनीन को अन्दर आने की इजाज़त है। मेरे भाईयो अल्लाह ने दिखाया कि जो नबी के तरीक़े पर चलता है मैं उसे कैसे साथ मिलाता हूँ चुनांचे हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने ओढ़नी सिर पर रखी और बाहर निकल गयीं और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पड़ौस में दफ़न किया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमे ने फ़रमाया कि मैं क़यामत के दिन उठूंगा और मेरे दाएं तरफ़ अबू बक्र होगा और बाएं तरफ़ उमर होगा और बिलाल मेरे आगे आज़ान देता होगा।

फ़क़ीर और मुहाजिर का अल्लाह के नज़दीक मुक़ाम:

मेरे दोस्तो! हम मुसलमान ताजिर नहीं, ज़मींदार नहीं, वज़ीर नहीं, सदर नहीं, हम मुहम्मदी हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम हैं। मेरे भाईयों हम तबलीग़ के ज़रिये से यह

चाहते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाली ज़िन्दगी ज़िन्दा हो जाए और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाला दर्द ज़िन्दा हो, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाला ग़म ज़िन्दा हो। मेरे भाईयो! कमाई के जज़्बे निकाल दें और दुनिया में तरक़्क़ी और दुनिया में इज़्ज़तें और दुनिया में लज़्ज़तें और दुनिया में ख़्वाहिशात और दुनिया में अय्याशी और दुनिया में मस्ती के जज़्बे निकाल कर अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए मरने और मिटने के जज़्बे बनाएं। मेरे भाईयो जब एक तबक़ा अल्लाह और रसूल पर मरने वाला वजूद में आ जाएगा और जो अपनी शोहरत को, अपने माल को, अपनी वजाहत को ठुकरा कर यूं कहेगा कि मैं तो अल्लाह और रसूल के नाम पर मिटने वाला हूँ अल्लाह उनको ज़रिया और उनको बुनियाद बनाएगा।अल्लाह जल्ले जलालुहू मेरे भाईयो दुनिया व आख़िरत की बुलन्दी और हमेशा का हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पड़ौस नसीब फ़रमाएगा आप ने फ़रमाया ﴾هل تدرون اول من يدخل الجنة﴿ तुम्हें पता है जन्नत में सब से पहले कौन जाएगा? ﴾قال: الله ورسوله اعلم﴿ उन्होंने कहा आप जाने और अल्लाह जाने फ़रमाया ﴾هم الفقراء المهاجرون الذين تتقى بهم لامكاره﴿ सबसे पहले जन्नत में वह जाएंगे जो दीन के लिए फ़क़ीर हुए मुहाजिर हुए, हिजरत की, बर्बाद हुए और मौत आई तकलीफ़ें बर्दाश्त करते करते मर गए और जब मौत आई तो अपनी ज़रूरतों, अपनी ख्वाहिशात को लेकर क़ब्रों में चले गए ﴾وان لم افد بمراد ساى وكم من حسرتى تحت ترابى﴿ अगर मेरी ख़्वाहिश पूरी न हो तो क्या हुआ यहाँ से तो हज़ारों इन्सान अपनी ख़्वाहिशात को लेकर क़ब्रों में चले गए

अगर अल्लाह के दीन और नबी के दीन और अल्लाह के अम्र पर और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीन को दुनिया में बुलन्द करने पर मेरे भाईयों अगर आपकी दुकानों पर चोट पड़ती है और आपके घरों पर ज़द पड़ती है तो आप से अफ़ज़लों पर पड़ चुकी है बड़े बड़े सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम इस चोट को बर्दाश्त कर चुके हैं लेकिन आप देखो उन्होंने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम पर क़ुर्बानी दी और अल्लाह के अम्र पर क़ुर्बानी दी और आपके दीन को ज़िन्दा करना अपना मक़सद बनाया तो अल्लाह पाक ने दुनिया में यह इज़्ज़त दी कि क़ैसरा व किसरा के ब्लाक तोड़ कर क़दमों में डाले और सारी दुनिया में अल्लाह ने दीन को चमकाया, क़ौमों की क़ौमों को अल्लाह पाक ने दीन में दाख़िल फ़रमाया और जानवर मान कर चल रहे हैं, हवाएं ताबे हो कर चल रही हैं , बादल इशारे से बरस रहे हैं, जानवर इशारे से चल रहे हैं, पानी इशारे से हरकत में है, दरिया इशारे से चलते हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़त पर दरियाए नील चलता है, अला हज़रमी की दुआ पर समन्दर रास्ते देता है, अबू मुस्लिम ख़ौलानी की दुआ पर दरिया पत्थर बन जाता है और मेरे भाईयो और दोस्तों! एक बुढ़िया की दुआ पर उसका बच्चा मर के ज़िन्दा हो जाता है और एक ताबई नबाना बिन नज़या नख़ई की दुआ पर गधा ज़िन्दा होता है। मेरे भाइयों आख़िरत को बनाया लोग यूं समझते हैं कि तबलीग़ आख़िरत के लिए है और दुकान दारी दुनिया के लिए। नहीं मेरे भाईयो! इस नबी वाले काम से अल्लाह दुनिया भी बनाएगा और इस नबी वाले काम से अल्लाह आख़िरत भी बनाएगा और इस नबी वाले काम से दुनिया की

इज़्ज़तें भी मिलेंगी और इसी नबी वाले काम से आख़िरत में भी इज़्ज़तें मिलेंगी, अल्लाह आख़िरत की सुल्तानी, आख़िरत की वजाहत देगा और दुनिया में इज़्ज़ते देगा। एक बात तय कर लो दुनिया से कमाई का जज़्बा निकल जाए और दुनिया से बड़ाई का जज़्बा निकल जाए, बेरग़बती पैदा हो जाए, दुनिया से ज़ोहद पैदा हो जाए, दुनिया की नफ़रत दिल में आ जाए और अल्लाह व रसूल के जज़्बे पैदा हो जाएं कमाई का जज़्बा निकल जाए वही अपनी तिजारत को सही चला सकता है जिसमें कमाई का जज़्बा न हो। पाकीज़ा रूह पाकीज़ा जिस्म में थी। उसे कहा जाएगा ﴿اخــرج﴾ निकलो तो मेहनत कर चुका थक चुका अब निकलो निकलो कहाँ तक जाओ ﴿البشــرى البشــرى﴾ खुश हो बशारत हो किस बात की ﴿بـريـح وريـحان ورب راض عنك غير غضبان﴾ खुशख़बरी ले ले अल्लाह तुझ से राज़ी हो चुका और जन्नत तेरे लिए तैयार हो चुकी है और जन्नत की हूरें तेरे लिए तैयार हो चुकी हैं और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब क़यामत का दिन आएगा और जन्नत के दरवाज़ों पर और महशर के मैदान में अल्लाह पाक फ़रिश्तों से कहेगा मेरे बन्दे जो खड़े हैं उनको जा कर सलाम करो ये अलग होंगे चेहरे चमकते हुए उनके नीचे सवारियां और अर्श के साए और उनको फ़रिश्तों के ज़रिया पानी पिलाया जा रहा है और उनको खाने खिलाए जा रहे हैं, फ़रिश्तें कहेंगे या अल्लाह उनको सलाम क्यों करें उनकी क्या ख़ुसूसियत है? अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि ये मेरे वे बन्दे हैं जो मेरे दीन के लिए फ़क़ीर हुए। अरे मेरे भाईयो! अल्लाह की क़सम पैसे तबलीग़ का काम नहीं होता इस धोके से निकल जाओ कि कमाईयां ज़्यादा करो ताकि बाहर मुल्कों में

जाओ आपके पेशावर की चार जमातें गयीं हैं बाहर मुल्कों में सब तुम्हारे लोग ग़रीब देहात के गए हैं पेशावर शहर का सिर्फ़ एक आदमी गया है यह काम पैसों से नहीं चलता क़ुर्बानी से चलता है अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत से चलता है यह काम माल की बुनियाद पर नहीं चलता तिजारत की बुनियार पर नहीं चलता अल्लाह और रसूल की इताअत पर यक़ीन और तवक्कुल पर चलता है। लिहाज़ा इस बात को सामने देखते हुए आप हज़रात फ़रमाएं कौन कौन भाई कितने वक़्त के लिए तैयार है?

जन्नत के हसीन मनाज़िर और अंबिया अलैहिस्सलाम के वाक़ियात

نحمده ونستعينه ونستغفره ونومن به ونتوكل عليه
ونعوذبالله من شرور انفسنا ومن سيئات اعمالنا من
يهده الله فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له ونشهد
ان لا اله الله وحده لا شريك له ونشهد ان سيدنا
ومولٰنا محمدا عبده ورسوله وصلى الله تعالىٰ عليه
وعلى اله واصحابه وبارك وسلم امابعد

ईमान वालों की हलाकत के सबबः

मेरे भाईयो, दोस्तों और बुज़ुर्गो! अल्लाह तआला ने जब भी बातिल को तोड़ा है, जब भी बातिल को मिटाया है इस कलिमे की मेहनत से मिटाया है और ला इलाहा इलल्लाह वालों की ईमानी क़ुव्वत से मिटाया है जब यह कलिमा अपने इख़लास के साथ, अपनी क़ुव्वत के साथ और अपनी हक़ीक़त के साथ वजूद में आता है तो उसके मुक़ाबले में जितना भी बड़ा बातिल होता

है अल्लाह पाक उसे तोड़ता चला जाता था। जब भी मेरे भाईयो कोई क़ौम हलाक हुई है मुसलमान हों या काफ़िर हों वे कभी इस लिए हलाक नहीं हुए कि उनके पास ताक़त की कमी आ गई थी बल्कि वे इसलिए हलाक हुए कि उनके हाथों में वे दुनियावी असबाब आ गए जो बातिल वालों के पास थे इस लिए ईमान वाले हलाक हो गए।

आमाले सालेहा में कमी का नुक़सानः

मेरे भाईयों! अल्लाह ने एक दस्तूर बनाया है और क़यामत तक के लिए चलाया है और क़यामत तक चलेगा कि जब लोगों के आमाल मेरे ख़िलाफ़ हो जाएंगे तो मै। उन्हें हलाक व बर्बाद कर दूंगा और फिर उन्हें दुनिया की कोई ताक़त हलाकत से बचा नहीं सकेगी। अल्लाह की सुन्नत मुबारका यह है ﴿بل نقذف بالحق على الباطل فيدمغه فاذا هو ذاهق. (القرآن)﴾ कि हम हक़ को बातिल पर फेंकते हैं जो बातिल के भेजे को फाड़ देता है बातिल का नाम व निशान तक मिट जाता है लेकिन यह हमेशा उस वक़्त होता है जब ईमान वाले और कलिमे वाले कलिमे को सीख लेते हैं और कलिमे का नमूना बन जाते हैं और कलिमें के मुताबिक़ उनकी ज़िन्दगी ढल जाती है और जब अल्लाह पकड़ने पर आते हैं तो इस वजह से नहीं पकड़ते कि उनके पास पैसों की कमी आ गई है या इक़तेदार की कमी आ गई है बल्कि ﴿الم يروا كم اهلكنا من قبلهم من قرن مكناهم فى الارض مالم نمكن لكم. (القرآن)﴾ तुम से पहले लोगों को मैंने बड़ी बड़ी हुकूमतें दीं, बड़े बड़े इक़तेदार दिए ﴿وارسلنا السماء عليهم مدرارا. (القرآن)﴾ और आसमान से उनके लिए बारिशों के निज़ाम चलाए ﴿وجعلنا الانهر تجرى من تحتهم﴾ और नहरें

उनके लिए मुसख़्ख़र कीं, उनके लिए हुकूमतें, उनके लिए ताक़तें, उनके लिए सारी क़ुव्वतें सब कुछ उनके लिए किया लेकिन जब ये मेरे नाफ़रमान हुए और मेरे अम्र से टकराए ﴿وكاين من قرية عتت عن امر ربها ورسله﴾ जब वे मेरे अम्र से टकराए और मेरे रसूलों से टकराए ﴿فحاسبنها حساب شديدا وعذبنها عذابا نكرا. (القرآن)﴾ फिर हमारा उन पर दर्द नाक अज़ाब आया।

क़ुरआन में नबियों के वाक़ियात का मक़सदः

मेरे भाईयो! अल्लाह जल्ले जलालुहू ने नबियों के क़िस्से सुना कर और नबियों के वाक़ियात बतला कर पूरी उम्मत मुस्लिमा को यह बताया है कि मैं जब किसी को पकड़ता हूँ तो मेरे पकड़ने की बुनियाद उनके असबाब की कमी नहीं होती बल्कि मेरे पकड़ने की बुनियाद उनके अन्दर की सिफ़ात की कमी होती है जो सिफ़ात मेरी रहमत को खींचती हैं। हदीस का मफ़हूम है कि जब तुम मेरे बन्दे बनते हो तो मैं राज़ी होता हूँ और जब मैं राज़ी होता हूँ तो बरकतें उतारता हूँ मेरी बरकत की कुछ इन्तेहा नहीं और जब तुम मेरे नाफ़रमान बनते हो तो मेरा ग़ुस्सा वजूद में आता है और जब मैं ग़ुस्से में आता हूँ तो मेरी लानत बरसती है और मेरी लानत तुम्हारी सात पुश्तों तक भी चली जाती है। (हदीस) अब कौन सी ताक़त ऐसी ज़ात से उस क़ौम को बचा सकती है जिस पर अल्लाह की लानत बरस रही हो और यह लानत इस लिए बरस रही है कि यह अल्लाह के अम्र के बाग़ी हैं और ये अल्लाह के नबी के तरीक़े के बाग़ी हैं। अल्लाह तआला ने क़ौमों को हलाक किया बर्बाद किया, ऐसा अल्लाह ने उनकी नाफ़रमानियों की बुनियाद पर किया।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की क़ौम और अज़ाबे इलाहीः

मेरे भाईयो! हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का एक बस्ती पर गुज़र हुआ देखा तो सब बर्बाद हुए पड़े हैं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया इस पर अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा बरसा है ﴿فصب عليهم ربك سوط عذاب. ان ربك لبا لمرصاد. (القرآن)﴾ तेरे रब के अज़ाब का कोड़ा बरसा लेकिन आज कुफ़्र पर अल्लाह के अज़ाब को कोड़ा क्यों नहीं बरस रहा है कि आज मज़बूत ईमान और इस्लाम वाले दुनिया में कोई नहीं, आज खरे कलिमे वाले कोई नहीं, जिस ज़माने में जिस वक़्त, माज़ी में, मुस्तक़बिल में, हाल में जब भी कलिमे वाले कलिमे की हक़ीक़त को सीख लेंगे तो अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा बड़ी से बड़ी माद्दी ताक़त पर बरसेगा चाहे वह ऐटम बम की ताक़त हो, चाहे तलवार की ताक़त हो, चाहे वह हुकूमत की ताक़त हो अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा उन पर बरसेगा लेकिन जब कलिमे वाले वजूद में आएंगे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमाने लगे यह सब अल्लाह की नाफ़रमानी की वजह से हलाक हुए हैं और आप को यह पता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की आवाज़ पर मुर्दा ज़िन्दा होते थे। आप ने आवाज़ लगाई ऐ बस्ती वालों! जवाब आया लब्बैक या नबी अल्लाह।

क़ौमे ईसा अलैहिस्सलाम की हलाकत के दो सबबः

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने पूछा तुम्हारा गुनाह क्या था और तुम किस सबब की वजह से हलाक हो गए? आवाज़ आई हमारे दो काम थे जिस की वजह से हम हलाक हुए एक तो हमें

दुनिया से मुहब्बत थी दूसरा तवाग़ियत के साथ मुहब्बत थी। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने पूछा तवाग़ियत के साथ मुहब्बत का क्या मतलब है? आवाज़ आई बुरे लोगों का साथ देते थे और बुरों की सोहबत में बैठते थे। पूछा दुनिया से कैसी मुहब्बत करते थे, दुनिया की मुहब्बत से क्या मतलब? आवाज़ आई दुनिया से मुहब्बत इस तरह थी जैसे माँ अपने बच्चे से मुहब्बत करती है। जब दुनिया आती थी तो हम ख़ुश होते थे और जब दुनिया हाथ से जाती थी तो ग़मगीन होते थे, हलाल हराम का ख़याल किए बग़ैर दुनिया की दौलत कमाते थे और जाएज़ नाजाएज़ का ख़याल किए बग़ैर दुनिया की दौलत ख़र्च करते थे, कमाई में हलाल व हराम नहीं देखते थे और ख़र्च करने में भी जाएज़ नाजाएज़ को नहीं देखते थे इस पर हमारी पकड़ हुई। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने पूछा फिर तुम्हारे साथ क्या हुआ? आवाज़ आई रात को हम सब अपने घरों में सोए हुए थे जब सुबह हुई तो हम सब "हाविया" में पहुँच चुके थे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने पूछा "हाविया" क्या है? जवाब दिया "सिज्जीन" है पूछा "सिज्जीन" क्या है? आवाज़ आई ऐ अल्लाह के नबी "सिज्जीन" वह क़ैद ख़ाना है जिसका एक अंगारा सातों ज़मीन से बड़ा है और हमारी रूहों को उसके अन्दर दफ़न किया गया और हम उसमें दफ़न पड़े हैं। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमाया तुम एक ही बोल रहे हो दूसरे क्यों नहीं बोलते? आवाज़ आई ऐ अल्लाह के नबी तमाम के तमाम लोगों के मुँह में आग की लगाम चढ़ी हुई है वे नहीं बोल सकते मेरे मुँह में लगाम नहीं है इस लिए बोल रहा हूँ। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तू क्यों बचा हुआ है? कहने लगा मैं "हाविया" के

किनारे पर बैठा हुआ हूँ और मेरे मुँह में लगाम भी नहीं है वजह इसकी यह है कि मैं उनके साथ तो रहता था लेकिन उन जैसे काम नहीं करता था तो उनके साथ रहने की वजह से मैं भी पकड़ा गया अब मैं किनारे पर बैठा हूँ लेकिन लगाम नहीं चढ़ी हुई है पता नहीं कब नीचे गिरता हूँ या अल्लाह अपने करम से मुझे बचाता है मुझे इसकी ख़बर नहीं है।

बातिल टूटने का ज़रियाः

मेरे दोस्तो और भाईयो! अब यही दस्तूर क़यामत तक चलेगा जब भी बातिल टूटेगा वह इस कलिमे से उस वक़्त टूटूगा जो कलिमा ईमान की हक़ीक़त वाला कलिमा होगा उसके अन्दर अल्लाह की ज़ात का यक़ीन होगा और नबी के तरीक़े पर यक़ीन होगा जब यह दावत देने वाला उठेगा तो बातिल टूटेगा।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और दावत व तबलीग़ः

मेरे भाईयो! हज़रत नूह अलैहिस्सलाम इस कलिमे को लेकर उठते हैं और सामने पूरी दुनिया का बातिल है, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में एक चीज़ मुश्तरिक है, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को भी सारी दुनिया की तरफ़ नबी बना कर भेजा गया था और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी सारी दुनिया की तरफ़ भेजा गया था सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है उस ज़माने में दुनिया सिर्फ़ इतनी ही थी जिस में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम भेजे गए थे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़यामत तक का ज़माना दे दिया गया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़यामत तक

के लिए इन्सानों के लिए रसूल बना दिए गए, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम सिर्फ़ अपने ज़माने के नबी थे और वह ज़माना वही था जिस में वह सारी इन्सानियत थी जो मौजूद थी और कहीं इन्सानियत नहीं थी। एक अकेले हज़रत नूह अलैहिस्सलाम इस कलिमे की दावत लेकर उठे हैं और इस हाल में उठे हैं ﴿رب انی دعوت قومی لیلا ونهارا. (القرآن)﴾ या अल्लाह मैं तेरे कलिमे को लेकर दिन में भी फिरा रात में भी फिरा। मेरे भाईयो! कलिमा ज़िन्दा हो जाए इसकी दुआ मांगो ﴿فلم يزدهم دعآءى الا فرارا. (القرآن)﴾ नूह अलैहिस्सलाम कह रहे हैं कि या अल्लाह मैं दावत देता रहा, ये मेरे से भागते रहे, मैंने इन्हें तेरी तरफ़ बुलाता रहा ये मेरे से दूर होते रहे, मैंने जब भी दावत दी ﴿وانی کلما دعوتهم لتغفرلهم جعلوا اصابعهم فی أذانهم واستغشوا ثيابهم واصروا واستكبروا استكبارا. (القرآن)﴾ मैं इन्हे तेरी तरफ़ बुलाता रहा मगर ये मुँह पर पर्दे डालते, कानों में उंगलियां देते, मेरे से दूर भागते लेकिन ऐ अल्लाह मैं इसके बावजूद भी दावत देता रहा।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की तबलीग़ की मुद्दतः

मेरे भाईयो! नबी का ज़र्फ़ भी अजीब होता है नबी का सीना भी अजीब होता है। साढ़े नौ सौ साल दावत दे रहे हैं और कोई नहीं मान रहा है लेकिन आपकी दावत चल रही है। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम यूं नहीं कहा कि या अल्लाह नतीजा तो कोई निकलता नहीं मेरे इस काम से क्या फ़ायदा? कुछ हमारे भाई कहते हैं तुम्हारे इस काम से क्या फ़ायदा नती जा तो कोई हमें नज़र नहीं आता मेरे भाई नतीजा अल्लाह ने अपने हाथ में रखा है। तुम्हें तो मेहनत का मुकल्लफ़ किया है तू मेहनत करता चला

अगर तू मेहनत करता रहेगा और करता ही चला जाएगा तू कामयाब है कोई माने या न माने। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम साढ़े नौ बरस तक तबलीग़ इस्लाम की दावत देते रहे ﴿فقلت استغفر واربك، انه كان غفارا. (القرآن)﴾ नबी अल्लाह की अज़मत लोगों के दिल में बिठाता है और याद रखना अल्लाह की अज़मत जब आती है तो फिर नबी की अज़मत दिल में उतरती है जब तक अल्लाह और उसके रसूल की अज़मत दिल में नहीं उतरती उस वक़्त अल्लाह और रसूल की बात मानना नामुमकिन है सुन लेगा पढ़ लेगा हमारी तरह बड़ी बड़ी किताबें भी पढ़ लेगा लेकिन जब तक इसका दिल अन्दर से अल्लाह की मुहब्बत और अल्लाह के नबी की मुहब्बत से भर नहीं जाएगा और अल्लाह और उसके रसूल की अज़मत से भर नहीं जाएगा उस वक़्त तक वह आदमी अमल पर नहीं आ सकता और वह क़दम नहीं उठा सकता, क़दम उठाने के लिए ईमान की ताक़त ज़रूरी होती है, क़दम के उठने के लिए दिल की ताक़त होती है जो इन्सान को अल्लाह और रसूल की बात पर उभारती है और हर नबी यही काम करते रहे हैं।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का अन्दाज़े बयान:

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम क़ौम को बला रहे हैं ﴿فقلت استغفر واربك، انه كان غفارا. (القرآن)﴾ तुम्हारी औलाद में तुम्हारे माल में बरकतें डालेगा तुम्हारी दुकानों में तुम्हारे कारोबार में बरकतें डालेगा तुम्हारे लिए बाग़ात में पानी की नहरों के जाल बिछा देगा तुम इस की तरफ़ आओ तो सही।

अज़मते बारी तआला :

नूह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया देखो मेरा रब कौन है? ﴿الم تروا كيف خلق الله سبع سموات طباقا. (القرآن)﴾ देखो तो सही रब कौन है? जिस ने सात आसमान ऊपर नीचे बना दिए। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿هل ترى من فطور﴾ मेरे आसमान में कोई कमी नज़र आती है ﴿فارجع البصر﴾ एक दफ़ा नहीं बार बार देखो ﴿ثم ارجع البصر كرتين ينقلب اليك البصر خاسئا وهو حسير. (القرآن)﴾ तू जितनी दफ़ा मेरे आसमान को देखेगा मेरे आसमान ऐब से पाक तेरी निगाह मेरे आसमान में कोई ऐब नहीं दिखा सकती और मैं ने ही आसमान को थामा हुआ है जब आसमान टूटेगा तो कोई आसमान को टूटने से रोक नहीं सकता, दावत चली टक्कर ली और अल्लाह की एक अजीब क़ुदरत है हमेशा अल्लाह नबियों को कसमपुरसी (कमज़ोरी) में भेजता है उन्हें ताक़त देकर नहीं भेजता कसमपुरसी में अल्लाह भेजता है यह बतलाने के लिए कि उनके साथ मैं हूँ, अल्लाह नबियों के साथ होता है। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को ताक़त देना मौजज़े की वजह से था हुकूमत दी तो मौजज़े के तौर पर है।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की दुआ:

जब हज़रत नूह अलैहिस्सलाम तबलीग़ करते करते साढ़े नौ सौ बरस गुज़र गए और देखा कि लोग नहीं मानते और अल्लाह तआला ने भी कह दिया कि अब ये नहीं मानेंगे तो उस वक़्त दुआ के लिए हाथ बुलन्द किए ﴿رب اني مغلوب فانتصر. (القرآن)﴾ या अल्लाह मैं दावत दे चुका इस क़ौम ने बात नहीं मानी, अब तू

बदला ले ले, कलिमे वाली दावत मुकम्मल हो चुकी है कलिमे ने ज़र्ब लगा दी अब सारे आलम का बातिल एक तरफ़ है उन्होंने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की दावत को ठुकरा दिया यह जो सूरह नूह है यह हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की दुआ है दो रुकू की दुआ है। लम्बी दुआ का मांगना क़ुरआन से साबित है बाज़ों ने ऐतिराज़ किया कि तबलीग़ वाले इतनी लम्बी दुआ मांगते हैं मैंने कहा देखो सूरह नूह सारी हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की दुआ है या अल्लाह यह क्या! यह क्या! अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया ﴿رب لا تذر على الارض من الكفرين ديارا. (القرآن)﴾ या अल्लाह बस ज़मीन पर एक भी चलता नज़र न आए।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का किश्ती का बनाना और उसमें सवार होनाः

अल्लाह तआला ने कहा बहुत अच्छा ﴿مما خطيئتهم اغرقوا فادخلو نارا فلم يجدوا لهم من دون الله انصارا. (القرآن)﴾ अल्लाह तआला ने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम से फ़रमाया किश्ती बनानी शुरू की, किश्ती बन गई अल्लाह तआला ने फ़रमाया किश्ती में हर जानवर का जोड़ा जोड़ा डाल दो। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने कहा या अल्लाह जोड़े जोड़े को क्या करूं? एक तरफ़ शेर एक तरफ़ गाय, एक तरफ़ भेड़िया, एक तरफ़ बकरी, एक तरफ़ बिल्ली, एक तरफ़ चूहा, ये तो एक दूसरे को खा जाएंगे तो ये बाक़ी बचेंगे कैसे? अल्लाह तआला ने फ़रमाया एक ऐ नूह उनमें दुश्मनी किसने डाली है? हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया या अल्लाह आपने डाली है। फ़रमाया फिर मैं उनमे मुहब्बत भी डालूंगा, ये एक दूसरे को कुछ नहीं कहेंगे जो तुम्हारी किश्ती में

आएगा वह बचेगा जो तेरी किश्ती से हटेगा वह बर्बाद हो जाएगा। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने सबसे पहले किश्ती में च्यूंटी के जोड़े को उठा कर रखा। कहते हैं कि तवाज़ेह इन्सान को कहीं का कहीं पहुँचा देती है, च्यूंटी मुतवाज़ेह है न!

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कौम और अज़ाबे इलाहीः

अब अल्लाह का हुक्म आया ﴿ففتحنا عليهم ابواب السمآء بمآء منهمر. وفجرنا الارض عيونا فالتقى المآء على امر قد قدر. (القرآن)﴾ बादल नहीं बरसा बल्कि फटा। इमाम बुख़ारी रह० की रिवायत किताब अदबुलमुफ़र्रिद में है कि यह है कि यह जो आसमान पर अन्धेरी रात में सफ़ेद निशान और सफ़ेद रास्ता नज़र आता है जिसे सांइसदान पता नहीं क्या क्या कहते रहते हैं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़ौल नक़ल करते हैं कि अल्लाह के रसूल जो फ़रमाते हैं वह सच है क्योंकि रसूल का क़ौल अल्लाह का क़ौल होता है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी तरफ़ से नहीं कह रहे हैं कि यह वह निशान है जहाँ से क़ौम पर अल्लाह तआला ने आसमान को फाड़ा और पानी बरसाया और पानी ऐसे बरसा, पानी पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर है लेकिन वह पानी इतना सरकश था कि पानी उस फ़रिश्ते के हाथ से भी बे क़ाबू हो गया ﴿انا لما طغى المآء حملنكم فى الجارية. (القرآن)﴾ मुफ़स्सरीन ने लिखा है कि जब पानी सरकश हुआ तो सरकश होने का क्या मतलब है? इसका मतलब है कि जो फ़रिश्ता उस पानी के निज़ाम को संभालता है उस फ़रिश्ते के हाथ से भी पानी बेक़ाबू हो गया था यानी उस वक़्त अल्लाह बराहे रास्त अपने अम्र से उसे चला रहा था।

आज कलिमे की सूरत है हक़ीक़त नहीं:

यह कलिमे की ताक़त का ज़हूर हो रहा है आज के कलिमे नमाज़ से कुछ नहीं होता हम भी यही कहते हैं लोग हम से कहते हैं तुम्हारे कलिमे नमाज़ से क्या होगा? हम कहते हैं कुछ भी नहीं होगा इस लिए कि कलिमे नमाज़ हक़ीक़त वाला कलिमा नमाज़ नहीं है यह तो सूरत है, हक़ीक़त होती तो कहाँ से कहाँ बात चली जाती।

एक गधे की दिलचस्प हिकायत:

एक गधे को शेर की खाल मिल गई उस ने शेर की खाल पहन ली उसने दिल में सोचा ले भाई मैं भी शेर बन गया। अब जब बस्ती को चला तो लोगों ने कहा इतना बड़ा शेर। बस्ती वाले सारे भाग गए। अरे शेर आया, शेर आया, अब गधा बड़ा खुश हुआ, दिल में सोचा कि मेरे से सारे डर गए, अब मैं थोड़ा सा गरजदार आवाज़ निकालूंगा तो ये और डरेंगे। अपनी हक़ीक़त को भूल गया कि मुझ से शेर वाली आवाज़ नहीं निकलेगी गधे वाली आवाज़ निकलेगी अब जो उसने अपनी तरफ़ से ज़ोर से आवाज़ निकाली तो बजाए दहाड़ मारने के वह तो ढेंचू ढेंचू करने लगा बस्ती वाले सारे निकल आए कि अरे तेरा बेड़ा ग़र्क हो यह तो गधा है और सब ने डंडे उठा कर उसकी मरम्मत की अब गधे साहब आगे आगे लोग पीछे पीछे। एक वक़्त था जब मुसलमान उठता था तो सारे काएनात के बातिल पर लरज़ा तारी हो जाता था और वे अपने ऐवानों में थर थर कांपते थे यह वह वक़्त था जब मुसलमान ने कलिमा सीखा

हुआ था आज मुसलमान ने कलिमा नहीं सीखा इस लिए कोई ताक़त उसे अल्लाह के हां सुर्ख़रू नहीं कर सकी।

शिरजील रज़ियल्लाहु अन्हु क़ुव्वते ईमानी:

हज़रत शिरजील बिन सफ़्फ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु एक दुबले पतले सहाबी थे "वही" के कातिब थे, "वही" लिखते थे मिस्र में एक क़िला फ़तेह नहीं हो रहा था। दिन बहुत ज़्यादा गुज़र गए रोज़ाना मुहासरा करते थे एक दिन जब शिरजील बिन सफ़्फ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत जोश आया घोड़े को ऐड़ लगा कर आगे बढ़े और फ़सील के क़रीब जा कर फ़रमाया ऐ क़िब्तियों! सुनों हम एक ऐसे अल्लाह की तरफ़ तुम्हें बुला रहे हैं अगर अल्लाह का इरादा हो जाए तुम्हारे इस क़िले को तोड़ने को जो आन के आन में तोड़ सकता है और ﴿لا الہ الا اللہ واللہ اکبر﴾ कह कर जो शहादत की उंगली उठाई सारा क़िला ज़मीन पर आ कर गिरा। उन्होंने यह कलिमा सीखा हुआ था कलिमा पढ़ कर और जब शहादत की उंगली उठाई तो सारा क़िला ज़मीन के साथ मिल गया। यह इस कलिमे की ताक़त थी। मैं आपको पक्की रिवायतें सुना रहा हूँ। उन लोगों ने यह कलिमा सीखा हुआ था ये वह गधे नहीं थे जिसने शेर की खाल को पहन रखा था हम गधे हैं जिन्होंने शेर की खाल को पहन रखा है और कहते हैं कि हम इस्लाम वाले हैं। अभी हम ने कलिमे को सीखा ही नहीं।

क़ौमें नूह अलैहिस्सलाम के तीन आदमियों पर अज़ाबे इलाही का निराला अन्दाज़:

जब कलिमा दिल में और ज़ुबान पे आता है तो बातिल ऐसे

टूटता है जैसे तुम अंडे के छिलके को तोड़ते हो तो जैसे अल्लाह ने क़ौमे नूह के बातिल को तोड़ा, उनमें से एक भी नहीं बचना मुश्किल है तीन आदमी ग़ार में छिपे, उन्होंने कहा यहाँ तो कोई नहीं आएगा, न पानी आएगा न कोई और आएगा, ऊपर से पत्थर रख लिया, ग़ार में छिप गए मुतमइन हो गए, अल्लाह अगर चाहता तो पानी बाहर से भी दाख़िल कर सकता था, वह अपनी क़ुदरत को दिखाना चाहता है तीनों को पेशाब आया ऐसे ज़ोर का पेशाब कि रोक नहीं सके, पेशाब के लिए बैठ गए। अल्लाह तआला ने पेशाब को जारी कर दिया, पेशाब बन्द नहीं होता निकलता जा रहा है हत्ता कि वे तीनों अपने पेशाब में ग़र्क़ हो कर मर गए। अल्लाह ने किसी को नहीं छोड़ा और अपने कलिमे वाली बात को सच्चा किया और अपने कलिमे वाले नूह को जिसे नूह अलैहिस्सलाम ने कहा था ﴿رب لا تذر علی الارض من الکفرین دیارا﴾ या अल्लाह एक भी चलता हुआ मत छोड़। अल्लाह पाक ने कहा मेरे नूह तू देख ले तेरे कलिमे पर मैंने एक को भी ज़िन्दा नहीं छोड़ा सब मरे पड़े हैं सब बर्बाद हुए पड़े हैं।

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की क़ौम का तज़किराः

मेरे भाईयो! आज इस कलिमे को ज़िन्दा करने की ज़रूरत है जब भी बातिल टूटा है कलिमे की ताक़त से टूटा है लेकिन कौन सा कलिमा है जो हक़ीक़ी माइनों में कलिमा हो नबी ने आकर इसी कलिमे की दावत दी है। हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ऐसी क़ौम के मुक़ाबले में आए जिनके बारे में इब्ने कसीर रह० लिखा है कि उनका बच्चा तीन सौ बरस में बालिग़ होता था ऐसे ताक़त वर हज़ार हज़ार बरस की उमरें, ऐसे क़द कि कोई तीस

हाथ, कोई चालीस हाथ का लेकिन टक्कर ली हूद से, हज़रत हूद ने कहा ﴿قولوا لا اله الا الله﴾ इस ला इलाहा इलल्लाह को सीख लो नहीं तो बर्बाद हो जाओगे। वह कहते थे ﴿من اشد منا قوة. (القرآن)﴾ कौन है हम से ज़्यादा ताक़तवर, हज़रत हूद अलैहिस्सलाम देते रहे दावत और वे लोग सरकश बनते रहे, दावत चलती रही आमाल बिगड़ते रहे।

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम का अन्दाज़े तबलीग़ः

अल्लाह तआला ने तीन बादल उठाए एक काला, एक सफ़ेद, एक सुर्ख़। फ़रमाया उनमें से पसन्द करो वफ़ूद ने मशविरा किया कि न सफ़ेद में पानी होता है न सुर्ख़ में, काले बादल में पानी होता है, कहा कि यह काला बादल हमें चाहिए। यह हम पर बारिश बरसाएगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया बस ठीक है! ﴿بل هو ما استعجلتم به. ريح فيها عذاب اليم. ودمر كل شيء بامر ربها فاصبحوا لا يرى الا مساكنهم. (القرآن)﴾ कहा जाओ आ रहा है बादल तुम्हारे पीछे पीछे। अब ये जो वतन पहुँचे और वहाँ बादल आया। अल्लाह तआला ने फ़रिश्ते से कहा हवा के ख़ज़ाने में सुराख़ करो और इस क़ौम को अब हलाक करो। फ़रिश्ते ने पूछा या अल्लाह कितना सुराख़ करूं, बैल के नथ्ने के बराबर सुराख़ करूं? अल्लाह तआल ने इर्शाद फ़रमाया अगर इतना सुराख़ करोगे तो सारी काएनात हलाक हो जाएगी फिर पूछा या अल्लाह कितना सुराख़ करूं? कहा एक अंगूठी के बराबर सुराख़ करो। एक अंगूठी के बराबर सुराख़ कर दिया तो वह हवा इतनी तेज़ी के साथ निकली कि जो फ़रिश्ता हवा को चलाता था वह भी आजिज़ आ गया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया

एक फ़रिश्ते हवाओं पर चलता है, जब हवा चली जिसको अल्लाह तआला ने क़ौम हूद पर चलाया ﴿بريح صرصر عاتية﴾ वह सरकश हवा ﴿عاتية﴾ का मतलब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया कि वह हवा फ़रिश्ते के हाथों से बे क़ाबू हो गई थी फ़रिश्ता भी आजिज़ हो गया था, अल्लाह का अम्र उस हवा को चला रहा था, वह हवा आई और चली भंवर में घूमी और उन सरकशों को उठाया और उठा उठा कर पहाड़ों पर मारा, उनको भेजे फाड़े, सिर अलग और धड़ अलग हो गए और उनको हवा ने उठा कर आपस में टकराया उनके सिर टकराऐ, उनकी खोपड़ियां फट गयीं ﴿فترى القوم فيها صرعى كانهم اعجاز نخل خاوية. فهل ترى لهم من باقية. (القرآن)﴾ सब को बर्बाद करके दिखाया। यह कलिमे की ताक़त को ज़ाहिर किया जा रहा है।

क़ौमे नमरूद का तज़किराः

नमरूद के मुक़ाबले में हज़रत इब्राहीम ने कलिमे की दावत को दिया अल्लाह तआला ने लंगड़े मच्छर से पिटवा कर दिखाया कि मैं हूँ नाफ़रमानों को सज़ा देने वाला, मच्छरों ने काट काट कर नमरूद के लश्कर को बर्बाद कर दिया, नमरूद भागा और अपने महल में पहुँचा और बीवी से कहा मेरे लश्कर को मच्छरों ने बर्बाद कर दिया और सब हलाक हो गए इतने में एक लंगड़ा मच्छर भिनभिनाता हुआ आया और कमरे में दाख़िल हुआ और यूं सिर पर घूमने लगा। नमरूद अपनी बीवी से कहने लगा वे ऐसे मच्छर थे जैसा यह है, जिन्होंने बर्बाद किया इस क़ौम को और वही मच्छर आ कर उसकी नाक में घुसा और दिमाग़ में

पहुँचा जब मच्छर की हरकत से दिमाग़ में तकलीफ़ होती तो लोगों से कहता कि मेरे सिर पर जूते मारो। वे लोग जूते मारते रहते और उसके सिर पर जूते पड़ते रहते, जूते पड़ते पड़ते भेजे के फटने की वजह से वह मर गया और अल्लाह ने कलिमे की ताक़त को दिखाया।

क़ौमे लूत अलैहिस्सलाम की तबाही का सबबः

हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम में जब बुरा काम फैला और औरतों का छोड़ कर लवातित का शिकार हुए। वह ऐसी बदबख़्त क़ौम थी जिन्होंने ऐसे काम को शुरू किया जो कभी किसी ने किया ही नहीं था। इस लिए जो अज़ाब क़ौमे लूत पर आया किसी क़ौम पर नहीं आया। जितने अज़ाब क़ौमे लूत पर आए किसी क़ौम पर नहीं आए। सबसे पहले अल्लाह जल्ले जलालुहू ने जिबराईल अलैहिस्सलाम को भेजा कि इन बदबख़्तों को उठाओ उन्होंने "पर" की नोक पर उठाया और पहले आसमान तक पहुँचाया यहाँ तक कि फ़रिश्तों ने उस बस्ती के मुर्ग़ों की आज़ाने सुनी फिर उलटा करके ज़मीन की तरफ़ फेंका और ऊपर से पत्थरों की बारिश की जिससे उनके चेहरे मसख़ कर दिए और आँखें अन्दर धंसा दी, आँखें अन्दर धंस गयीं, चेहरे मसख़ हो गए पत्थरों की बारिश ने ﴿جعلنا عاليها سافلها (القرآن)﴾ ज़मीन के ऊपर के हिस्से को नीचे कर दिया और नीचे के हिस्से को ऊपर कर दिया और फिर हमेशा हमेशा के लिए पानी के अज़ाब में भी मुबतिला कर दिया "बेराह मौत" सत्तर मील की एक झील है जिसमें कोई जानदार नहीं रह सकता जो इसमें जाता है मर जाता है आज तक वे इस अज़ाब में जल रहे

हैं। यह कलिमे की ताक़त थी जिसने क़ौमे लूत की ताक़त को तोड़ के रख दिया।

तज़किरा क़ौमे फ़िरऔनः

अल्लाह तआला ने फ़िरऔन की ताक़त को हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़रिए से कलिमे की ताक़त से तोड़ा। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम क्या ले जा रहे हैं अल्लाहु-अकबर बल्कि कह रहे हैं ﴿فاخاف ان يقتلون. (القرآن)﴾ मुझे डर है कि मुझे क़त्ल कर देंगे मैं क्या करूं? ﴿اننى معكما اسمع وارى﴾ इस पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया मैं जो तुम्हारे साथ जा रहा हूँ तुम चलो। फ़िरऔन के मुक़ाबले में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अकेले कलिमे को लेकर आए बनी इसराईल के आमाल बर्बाद हो चुके थे और उस क़ौम पर अल्लाह तआला ने फ़िरऔन को मुसल्लत किया हुआ था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम दो बातों की मेहनत कर रहे हैं एक फ़िरऔन को दावत दे रहे हैं और दूसरा बनी इसराईल के तक़्वे का बना रहे हैं और तवक्कुल को बना रहे हैं और बनी इसराईल के तवक्कुल के साथ उन लागों की नमाज़ों को ठीक कर रहे हैं और क़ौम को तवक्कुल सिखाते हुए फ़रमाते हैं ﴿على الله توكلنا.(القرآن)﴾ अल्लाह पर तवक्कुल बढ़ाओ ﴿ان تبوا لقومكما بمصر بيوتا واجعلو بيوتكم قبلة واقيمو الصلوة. (القرآن)﴾ एक तो तवक्कुल को इख़्तियार करो और दूसरे नमाज़ दरुस्त करो, कलिमा सीखो और नमाज़ को सीखो। कलिमा नमाज़ बन गया।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लिए दरिया का रास्ता देनाः

हज़रत मूसा अलैहिस्लाम को चालीस बरस लग गए, चालीस

बरस नबी की मेहनत, अंबिया की मेहनत चालीस बरस। अल्लाह तआला ने फ़रमाया बस अब निकलो अब तेरे कलिमे वाले पक्के हो चुके हैं। अब चलो सामने समन्दर और पीछे फ़िरऔन लश्कर के साथ। लोग घबराए क्या बनेगा। हज़रत मूसा अलैहिस्लाम ने फ़रमाया ﴿ان معى ربى سيهدين﴾ मेरा रब मेरे साथ है, अभी रास्ता दिखाएगा, बस जनाब हज़रत मूसा अलैहिस्लाम ने दरिया पर लाठी मारी और बारह रास्ते बन गए, अब वह जा रहे हैं और फ़िरऔन का सारा का सारा लश्कर समन्दर में ग़र्क़ हो गया।

वक़्ते पैदाइश मौजज़ात नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमः

मेरे दोस्तो और भाईयों! इसी तरह हर नबी के ज़माने में अल्लाह तआला ने कलिमे वालों से बातिल को तोड़ा यहाँ तक कि वह आया जिसके लिए इस काएनात को बनाया। सब सूरज ग़ुरूब हो गए लेकिन आफ़ताबे नबुव्वत जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत का सूरज है क़यामत तक के लिए चमकेगा। यह ग़ुरूब होने के लिए नहीं आया। हुज़ूरे सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आना इतना अजीब अन्दाज़ में हुआ, जिस दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम माँ के पेट में मुन्तक़िल हुए उस दिन तमाम बादशाहों के तख़्त उल्टे पड़े थे और तमाम बुत ज़मीन पर गिरे पड़े थे और तमाम जादूगर और साहिर जो थे उनसे सहर और जादू छीन लिया गया था और तमाम ज़मीनके काफ़िर बादशाह उस दिन के लिए गूंगे हो गए थे। इब्ने कसीर रह० की रिवायत है सब गूंगे हो गए थे उस दिन कोई बोल नहीं सकता था। उस दिन सब के तख़्त उलटे पड़े हुए थे और बुत

नीचे गिरे पड़े थे और जादूगरों के शैतान जो उनको आ कर चीज़ें सिखाते थे वे भी उनसे भाग गए थे एक दिन के लिए वे भी पता नहीं कहीं से कहीं चले गए और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया में तशरीफ़ लाए और दुनिया में वजूद में आए तो कमरे से नूर उठा और उठ कर आसमान तक चला गया और किसरा के महल के चौदह कंगूरे तड़ाक से टूट कर गिर गए, किसरा के बुतख़ाने में एक हज़ार साल से जो आग जल रही थी एक दम बुझ गई और बुझाने वाला कोई नहीं था, बुझाने वाला मक्का में पैदा हुआ है, आग ईरान की बुझ रही है। यह नबी सिर्फ़ अरब का नहीं हे बल्कि वह नबी है जिसके बारे में फ़रमाया ﴿قل يايها الناس انى رسول الله اليكم جميعا.(القرآن)﴾ ऐ दुनिया के इन्सानों मैं अरब का रसूल नही मैं सारी काएनात का अरब का, अजम का, इन्सानों का, जिन्नात का, जमादात का, हैवानात का, सारी काएनात का रसूल हूँ।

दरख़्त और पत्थरों की पुकारः

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जा रहा था आप सिज दरख़्त के क़रीब से गुज़रते जिस पत्थर के क़रीब से गुज़रते, जिस मिट्टी के ढेले के क़रीब से गुज़रते, दरख़्त ने पुकारा, पत्थर ने पुकारा, मिट्टी ढेले ने पुकारा ﴿الصلوة السلام عليك يا رسول الله﴾ आपकी नबुव्वत इतनी कामिल थी और इतनी जामे थी कि ऐसी नबुव्वत किसी को नहीं मिली और न मिलेगी।

एक पादरी का ख़्वाबः

नौशेरवां हैरान है कि यह मेरे बुतकदा की आग कैसे बुझ गई? और मेरे महल के चौदह कंगूरे कैसे टूट कर गिर पडे? उनका एक बड़ा पादरी आया और कहा मैंने ख़्वाब में देखा है कि दरियाए फ़रात खुश्क हो गया है और अरब घोड़े ईरानी घोड़ों को भगा कर ले जा रहे हैं। वह हैरान व परेशान है कि यह क्या हुआ? उस ज़माने में एक इसाई आलिम था उसको बुलाया, उससे ताबीर पूछी। उस आलिम ने कहा कि मेरा एक मामू शाम में रहता है उस से जा कर पूछता हूँ। शाम में आ कर उस मामू से पूछता है। उसने पूछे बग़ैर ही कहा मुझे पता है और मैं जानता हूँ कि बादशाह ने तेरे को किस लिए भेजा है? बादशाह ने तुझे इस लिए भेजा है कि उसके बुतकदे की आग बुझ गई और उसके चौदह कंगूरे टूट के गिर गए हैं, उसे जाकर बता दे कि जब वह नबी ज़ाहिर होगा और लकड़ी को लेकर चलेगा और क़ुरआन की तिलावत हर तरफ़ गूंजने लगेगी।

सुन लो मेरे भाईयों! ज़रा ग़ौर से सुन लो यह अलामत क्या बता रहा है कि किस वक़्त दुनिया में दीन फैलेगा जब क़ुरआन की तिलावत कसरत से होने लग जावेगी। जिसके हाथ में लाठी होगी फिर शाम भी उसका बन जाएगा और ईरान भी उसका बन जाएगा फिर आले सासान की हुकूमत भी ख़त्म हो जाएगी और कैसर व किसरा की हुकूमत भी ख़त्म हो जाएगी सिर्फ़ और सिर्फ़ उस नबी का कलिमा बुलन्द हो कर रहेगा।

यमन के काहिन का वाक़ियाः

यमन में एक काहिन रहता था, कभी बाहर नहीं निकलता

था। जिस दिन हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए तो वह काहिन घबरा कर बाहर निकला कि ऐ अहले यमन आज से बुतों का ज़माना ख़तम हो गया है, जिस दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए उस दिन बड़े बड़े बुत ख़ानों के बुतों से आवाज़ आई कि आज से हमारा ज़माना ख़त्म हो गया, अब आख़िरी नबी का ज़माना शुरू हो गया, बुतों को तोड़ने वाले का ज़माना आ गया है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैतुल्लाह का तवाफ़ फ़रमा रहे हैं तीन सौ साठ बुत उस वक़्त बैतुल्लाह में थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चलते जा रहे हैं और बुत का इशारा करते हैं ﴿جـآء الحق وزهق الباطل. ان الباطل كان زهـوقا. (القرآن)﴾ और इशारा करते ही बुत टूट कर गिरता है, बार बार इशारा फ़रमाते हैं और बुत टूट कर गिरते हैं तीन सौ साठ बुत जो बैतुल्लाह में रखे थे हाथ के इशारे से सब टूट गए हांलाकि उस वक़्त कमान हाथ में थी किसी बुत से कमान को लगया नहीं बल्कि इशारा करते जा रहे थे और बुत टूटते चले जा रहे थे।

मुसलमानों का बुतः

मेरे भाइयों! आज हर मुसलमान अपने दिल में बुत बनाये बैठा है। आज हमारे दिल व दिमाग़ में दुकान का बुत बैठा हुआ है मेरी दुकान के बग़ैर मेरा काम नहीं चलता, यह भी बुत है जो अन्दर में है, नौकरी का बुत, नौकरी के बग़ैर मेरा गुज़ारा नहीं होता, तिजारत का बुत, ज़राअत का बुत हत्ता कि हुकूमत का बुत कि हुकूमत के बग़ैर हमारा काम नहीं चलता, पैसे के बग़ैर हमारा काम नहीं चलता।

यक़ीन की पुख़्तगी का नतीजाः

मेरे भाईयों! अगर कलिमा हमारे दिलों में उतर गया तो अल्लाह तआला इन सब के बग़ैर काम करके दिखा देगा। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाला तरीक़ा ज़िन्दा हो जाए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत आलमी है जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत वजूद में आई तो सारे आलम में ज़लज़ला आ गया। सारे आलम के बुत गिरे सारे आलम के बादशाह गूंगे हो गए।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाइश और यहूदी का चिल्लानाः

एक यहूदी मक्के की गलियों में शोर मचाता फिरता है आज कोई बच्चा पैदा हुआ है? बताओ कोई बच्चा पैदा हुआ है? किसी ने कहा फ़लाँ का लड़का पैदा हुआ है। पूछा कि इसका बाप है ज़िन्दा है? कहा हाँ कहने लगा नहीं नहीं कोई ऐसा बच्चा बताओ जिसका बाप मरा हुआ हो। कहा हाँ अब्दुल मुत्तलिब का पोता पैदा हुआ है। कहा हाँ मुझे दिखाओ। जब देखा तो चीख़ निकली अरे बनू इसराईल तेरी हलाकत आज बनू इसराईल से नबुव्वत निकल गई और ऐ क़ुरैश की जमात तुम नबुव्वत को आज हम से ले गए। उसने कहा एक दिन आएगा, यह एक दिन टक्कर लेगा जिसकी टक्कर की आवाज़ मशरिक़ व मग़रिब में सुनाई देगी।

दावत मक़सदे नबुव्वत हैः

मौजज़ा दलीले नबुव्वत है, करामत दलीले विलायत है और

दावत मक़सदे नबुव्वत है और इत्तेबाए सुन्नत मक़सेद विलायत है। मक़सद की ताक़त मौजज़े की ताक़त से ज़्यादा होती है, मक़सद की ताक़त करामत की ताक़त से ज़्यादा होती है। मौजज़ा दलालत के तौर पर होता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस मक़सद को लेकर आए हैं वह मक़सद दावत था कि मैं दाई हूँ ﴿شاهداً و مبشراً و نذيراً. (القرآن)﴾ मैं दाई हूँ। दावत नबुव्वत का मक़सद है, कलिमे की तरफ़ बुलाना। मौजज़ा दलालते नबुव्वत है, मौजज़े में वह ताक़त नहीं जो मक़सद में ताक़त है और आपके मौजज़े की ताक़त यह है कि उंगली के इशारे से चाँद के दो टुकड़े हुए। जब आपके मौजज़े की यह ताक़त है कि चाँद दो टुकड़े हुआ तो आपका जो मक़सद था कलिमे की दावत जब वह मक़सद वजूद में आएगा तो मेरे भाईयों उसकी ताक़त का कौन अन्दाज़ा कर सकता है।

एक बकरी का जज़्बा इताअत रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमः

एक सहाबी बकरी को घसीट कर ज़िब्ह करने ले जा रहे हैं हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबी से फ़रमाया आप इसको नरमी के साथ ले जाओ और बकरी से कहा तू अल्लाह के हुक्म पर सब्र कर तो बकरी ने मैं मैं करना बन्द कर दिया, हिरनी को पता है कि मुझे ज़िब्ह किया जाएगा लेकिन वह नबी की बात पर दौड़ती हुई आ रही है और अपने बच्चों को छोड़ कर आ रही है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको बांध दिया और खुद खड़े हो गए। थोड़ी देर हुई तो वह सहाबी आ गए जो शिकार करके लाए थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने फ़रमाया भाई मैं एक सिफ़ारिश करता हूँ, एक दरख़्वास्त करता हूँ। सहाबी ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान। आप इसे खोल दें और मुझे हदिया दे दें। फिर उस सहाबी ने उसे खोला आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हवाले किया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी रस्सी को छोड़ा कि चली जा अपने बच्चों के पास।

दीन को ज़िन्दा करने का तरीक़ाः

मेरे भाईयों! ऐसा कामिल नबूव्वत वाला कोई आया जो लंगड़ा लूला होता है उसे सहारे की ज़रूरत होती है यह कामिल नबी का दीन है इसे किसी सहारे की ज़रूरत नहीं है यह अपनी ज़ात के साथ वजूद में आता है लेकिन उस वक़्त वजूद में आता है जब कलिमे वाले कलिमे पर क़ुर्बानी देते हैं और कलिमा दिल में उतारते हैं।

मौजज़ा नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमः

एक मर्तबा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जंगल में तशरीफ़ ले जा रहे हैं। फ़ारिग़ होने के लिए छोटी छोटी झाड़ियां थीं जिसके पीछे पर्दा नहीं होता था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया ऐ जाबिर जाओ उन झाड़ियों से कहो कि अल्लाह के रसूल फ़रमा रहे हैं कि मेरे लिए आपस में जुड़ जाओ। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु झाड़ियों के पास जा रहे हैं और उनसे कह रहे हैं कि अल्लाह के रसूल फ़रमा रहे हैं कि आपस में जमा हो जाओ,

झाड़ियां भागती हुई आयीं और आपस में जुड़ गयीं अब पर्दा हो गया आप तशरीफ़ ले गए, फ़ारिग़ हुए, खड़े हुए, झाड़ियां फिर चलते चलते अपनी जगह पर जा कर खड़ी हो गयीं।

कुफ़्र की ताक़त को ख़त्म करने का नुस्ख़ाः

मेरे भाईयों! आप को हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत को बता रहा हूँ आलमगीर नबुव्वत बता रहा हूँ कि इतनी बड़ी नबुव्वत दे कर रसूल को अल्लाह तआला ने भेजा और यह उम्मत अगर इस नबी वाली ज़िन्दगी को ले कर खड़ी हो जाए तो सारी काएनात में इस उम्मत के सामने कोई खड़ा नहीं हो सकता। आप सारी दुनिया के बातिल को माद्दे की ताक़त से नहीं तोड़ सकते, बातिल हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाली ज़िन्दगी से टूटेगा, बातिल हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाले तरीक़े से टूटेगा और वह तरीक़ा इस वक़्त हमारे पास है नहीं अगर वह तरीक़ा वजूद में आ जाए तो सारे आलम के बातिल टूट जाएंगे।

क़ुरआन की एक एक आयत ऐटम बम पर भी भारी हैः

मेरे भाईयों! खुदा की क़सम क़ुरआन की एक एक आयत सारी दुनिया के ऐटम बम पर भारी थी लेकिन कोई उसे दिल में तो लेता। जैसे मैं दो घन्टे से तक़वे की तक़रीर कर रहा हूँ लेकिन मैं आपको अपने अन्दर तक़वा दिखा दूं तो यह मेरे पास कोई नहीं, नमाज़ पर दो घन्टे तक़रीर करवा लो फिर मुझ से कहा जाए मौलवी साहब ज़रा ऐसी नमाज़ पढ़ के दिखा दो तो मैं एक रकअत भी पढ़ के नहीं दिखा सकता और यह क़ुरआन वह

है जो क़यामत तक के लिए है और जिसने सारी दुनिया के बातिल को तोड़ा लेकिन मेरे भाईयों! यह अलफ़ाज़ से कुछ नहीं होगा जब क़ुरआन दिल के अन्दर आ जाए फिर होगा जो अल्लाह ने ईमान व यक़ीन की आयात बनायीं हैं वे दिल में हों, ग़ौर व फ़िक्र की आयात दिमाग़ में हों आँखों की हया की आयत ﴿يغضو من ابصارهم.(القرآن)﴾ यहाँ आँखों में हों, कानों की आयत कानों में हो, हाथों की आयत अमली तौर हाथों में हो, पाँव की आयत अमली तौर से पाँव में हों ﴿يمشون على الارض هوناً. القرآن﴾ आजज़ी और तवाज़े पाँव से हो, मामलात और तिजारत बाज़ारों हो, शर्म व हया औरत के अन्दर हो और घरों में हो, क़ुरआने पाक की तिलावत की आवाज़ बजाए दुनियावी गानों के घरों से उठे, हमारे नौजवान और हमारे बूढ़े चलते फिरते क़ुरआन का नमूना नज़र आएं।

आज क़ुरआन अवराक़ में है जिस्म पर नहीं है:

मेरे भाईयों! तक़रिरी बात नहीं बल्कि तक़वा हो तो दिल में नज़र आए, तवक्कुल हो तो दिल में नज़र आए, ज़ोहद हो तो दिल में नज़र आए, इस्तेक़ामत हो तो दिल में नज़र आए, अल्लाह की मुहब्बत हो तो दिल में नज़र आए। क़ुरआन अवराक़ (पन्नों) में से निकल कर जिस्म में आ जाए, किताबों से निकल कर दिल में आ जाए, पूरे तीस पारे इन्सान के पाँच फ़िट के जिस्म पर आ जाएं फिर इस मुसलमान पर जिस किसी का हाथ उठेगा अल्लाह तआला उस हाथ को तोड़ देगा, जो पाँव उठेगा अल्लाह तआला उस पाँव को काटेगा, जो आँख उठेगी अल्लाह उस आँख को फोड़ देगा। जब यह मुसलमान हुज़ूरे

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाली किताब को लेकर खड़ा हो जाएगा तो अल्लाह तआल इसके साथ होगा।

एक सहाबी का अल्लाह की मुहब्बत में शराब और हसीन लड़की की ख़्वाहिश बद को पूरा न करनाः

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को क़ैद किया गया कि इसाई हो जाओ फिर लालच दिया गया कि इसाई हो जाओ कहा नहीं होता फिर सबसे ख़तरनाक हरबा इस्तेमाल आज़माया। यह नौजवान बड़े मज़ाकिया सहाबा में थे। यह सहाबी ऐसे थे कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी हंसाते हंसाते कहीं ले जाते थे इतना हंसाया करते थे और उनको सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम गधा कहा करते थे (अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा हिमार) एक दफ़ा किसी ने आ कर शिकायत की या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह अब्दुल्लाह बहुत मज़ाक करते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अरे उसे कुछ न कहा करो वह अल्लाह और रसूल से मुहब्बत करता है। अब इसाईयों ने आप पर आख़िरी हरबा आज़माया कि एक ख़ूबसूरत लड़की उनके साथ कमरे में बन्द कर दी शराब और सुअर का गोश्त साथ रख दिया गया और उस लड़की से कहा इसके साथ ज़िना कराओ जिस तरह भी हो तीन दिन और तीन रातें वह लड़की सारा ज़ोर लगाती रही कि किसी तरह यह मेरी तरफ़ देखे तो तब ज़िना की ख़्वाहिश पैदा होगी और जब देखेगा ही नहीं और आँख को अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ इस्तेमाल करेगा तो कैसे बुराई की तरफ़ जाएगा। अब यह क़ुरआन इन सहाबी के अन्दर ज़िन्दा है।

उन्होंने हमारी तरह तफ़सीरें नहीं पढ़ी थीं और न उस ज़माने में तफ़सीरें लिखी गई थीं वे तफ़सीरें नहीं जानते थे बल्कि वे क़ुरआन जानते थे वे आसार व रमूज़ नहीं जानते थे, बल्कि वे क़ुरआन जानते थे, वे बड़े बड़े लम्बे चौड़े मसाइल पर बातें नहीं किया करते थे वे कहते थे हमारे नबी ने यूं कहा हम भी ऐसे ही करते हैं हमें और कोई पता नहीं, इस मौक़े पर हमारे नबी ने कहा आँख को झुकाओ, अब अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की आँख का पर्दा झुका हुआ है, ये नबी के ग़ुलाम हैं। वह तो अकेले हैं लड़की ख़ूबसूरत है लेकिन उनके सामने दो आयतें आ रही हैं ﴿قل للمؤمنين يغضو من ابصارهم. (القرآن)﴾ मुसलमानों से कह दो कि आँखों को झुकाएं। अब यह आयत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ी हुई नहीं थीं बल्कि यह आयत उनके दिल व दिमाग़ में अमली तौर से बसी हुई थीं और दूसरी आयत उनके सामने यह आ रही थी ﴿وغلقت الابواب وقالت هيت لك قال معاذ الله انه ربى أحسن مثواى. انه لا يفلح الظلمون. (القرآن)﴾ हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का क़िस्सा सामने आ रहा है, एक तरफ़ अल्लाह का अम्र है आँखों को झुकाओ और नबी का तरीक़ा मालूम है कि इस मौक़े पर नबी ने क्या किया है, आँख झुकाने का हुक्म दिया है उधर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का क़िस्सा याद आ रहा है अल्लाह ने यह क़िस्सा क़िस्सा ख़्वानी के लिए नहीं सुनाया, अल्लाह ने यह क़िस्सा इस लिए सुनाया है कि ऐ मोमिन तेरी आँख ऐसे झुके जैसे हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने दामन को बचाया है ﴿وغلقت الابواب﴾ दरवाज़ा बन्द और वह मुज़ैयन ﴿وقالت هيت لك﴾ और वह दावत दे रही है कि आओ मेरी तरफ़ और सबके सब दरवाज़े बन्द हैं और ऐसे वक़्त में

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम अपने रब को याद करके अर्ज़ करते हैं मैं अपने रब की पनाह चाहता हूँ, मैं यह काम नहीं कर सकता अब एक क़ुरआन हम भी पढ़ते हैं लेकिन हम बस तफ़सीरें पढ़ते हैं वह सहाबी क़ुरआन दिल में लेते थे क़ुरआन कहीं लिखा हुआ नहीं था पूरे मुल्क में एक नुस्ख़ा होता था लेकिन दिल में हर एक के था। हक़ीक़त मुहम्मदी थे उनके अन्दर नबुव्वत की गुलामी थी तीन दिन लड़की ज़ोर लगाती रही कि अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की आँख तो उठ जाए, अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को क्या चीज़ रोक रही है। यह वे आमाल हैं जो अल्लाह की रहमत को उतारते हैं। हमारे मस्अले इन आमाल से हल होंगे, हमारे मस्अले ये दुनिया के असबाब से हल नहीं होंगे। आख़िर उस इसाई सरदार ने उस लड़की से अलैहिदा में कहा तूने उसको गुनाह पर अमादा क्यों नहीं किया तो वह कहने लगी कि उसने आँख उठा कर मुझे देखा ही नहीं तो मैं उसे गुनाह पर कैसे अमादा करती?

जिसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़द्र नहीं वह अल्लाह के नज़दीक बे क़द्र हैः

मेरे भाईयों! हम यूं नहीं कहते कि असबाब को तर्क किया जाए बल्कि हम यूं कह रहे हैं कि यह इन्सानियत है कि सिर्फ़ असबाब के पीछे दौड़ लगा कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत और आपके तरीक़े की परवाह न की जाए। अल्लाह ज़ुल जलाल की क़सम आप अमरीका और रूस से बड़े बड़े बम बना लो अगर इस वक़्त आप हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाफ़रमान होगे तो अल्लाह तुम्हें बर्बाद करके छोड़ेगा। यही

ख़न्नास तो ज़हनों में उतरा हुआ है, इसी ख़न्नास ने तो बर्बाद किया है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की परवाह नहीं है, एक एक पैसे की परवाह करता है, दस रुपए का हिसाब ऊपर नीचे हो जाए तो कम्प्युटर ढूंढता है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक एक तरीके को बर्बाद करके कहता है क्या हो गया अब ज़माना जदीद आ गया है।

सुन्नत की क़द्र का असल एहसास कब होगा?

فسوف ترى اذا انكشف الغبار أفرس تحت رجلك ام حمار

जब तेरी आँखों से दुनिया का पर्दा हटेगा और मौत आएगी और पर्दा खुलेगा ﴿فكشفنا عنك غطآءك﴾ जब तेरी आँख से पर्दा हटाऊँगा फिर तुझे पता चलेगा कि मेरे नबी की एक एक सुन्नत की क्या क़ीमत थी।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के दौर में क़िला फ़तेह नहीं हो रहा था। मेरे भाईयों! मुसलमानों की सोच देखो, उन्होंने किस बुनियाद पर क़ैसर व किसरा को तोड़ा आज उसको सोचो। आपस में सोच में पड़े कि क़िला फ़तेह क्यों नहीं हो रहा है कि मिसवाक की सुन्नत छूटी हुई है नतीजा यह निकला कि क़िला इस लिए फ़तेह नहीं हो रहा है कि मिसवाक की सुन्नत छूटी हुई है जिसे हम अदा नहीं कर रहे हैं। सारे लश्कर को हुक्म दिया मिसवाक करो और हम मज़ाक उड़ा रहे हैं कि ये लकड़ियां मुँह में ले कर फिरते हैं अब तो नया ज़माना है, अब तो बर्श करना चाहिए यह क्या तुम मुँह में लकड़िया लेते रहते हो तो ऐसों के साथ अल्लाह की मदद आएगी? मिसवाक की सुन्नत छूटने पर अल्लाह की मदद हट गई कि तुम ने मेरे हबीब की एक सुन्नत

को हल्का समझा लिहाज़ा मेरी मदद तुम से दूर होगी। सब ने मिसवाक की, दुश्मन ने देखा कि ये तो आज दांत तेज़ कर रहे हैं और हमें कच्चा खा जाएंगे तो वे सब भाग खड़े हुए और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को फ़तेह हासिल हो गई।

हुक्मे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में लापरवाही का नतीजाः

ओहद की लड़ाई में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर, हज़रत उसमान, हज़रत अबू अली, हज़रत ज़ुबैर, हज़रत तल्हा रज़ियल्लहु अन्हुम इतने बड़े बड़े सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं तीस सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म के ख़िलाफ़ किया और जान बूझ कर नहीं ग़ल्ती से या क़ौमी ग़ैरत से उनको ख़याल आया कि अब तो जंग ख़त्म हो गई और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हुक्म पूरा हो गया अल्लाह तआला ने फ़तेह को शिकस्त में बदल दिया।

अल्लाह के नज़दीक इज़्ज़त दार बनने का तरीक़ाः

मेरे भाईयों! एक एक सुन्नत पर जब तक मरना नहीं सीखेंगे उस वक़्त तक अल्लाह आपको हमको इज़्ज़त नहीं दे सकता। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाली ज़िन्दगी की हिफ़ाज़त करें कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक एक अदना तरीक़ा आप का बैठना, आप का उठना, आपका देखना, आपका बोलना, आपका लिबास, आपकी शक्ल व सूरत, आपकी गुफ़्तार हर एक को दिल में ले लो फिर चाहे तुम्हारे पास छोटी

तोप भी होगी तो अल्लाह तआला उसी को ज़रिया बना कर बड़े बड़े क़िलों को बर्बाद कर देंगे।

एक सहाबी की ईरान में आमद और दरबारियों से मकालमाः

जब सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ईरान में दाख़िल हुए और जब ईरान के बादशाह गरदीज़ के पास गए तो दरबारी हंसने लगे कि अच्छा इन तीरों से ईरान को फ़तेह करने आए। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के तीर छोटे छोटे थे और ईरानियों के तीर बड़े बड़े थे और कहा इन छोटी छोटी तलवारों से ईरान फ़तेह करोगे तो सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा तुम इसकी तूज़ी मैदान में देखोगे हमारे साथ अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम है कि हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम हैं आज वह बात हम से छूटी हुई है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हज़ाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की इस्तेक़ामतः

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हज़ाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु पर तीन दिन लड़की ने ज़ोर लगाया कि किसी तरह तो यह मेरी तरफ़ देखे तो सही तीन दिन के बाद बादशाह के पास गई और कहने लगी ऐ बादशाह तुम ने मुझे किस के पास भेजा था पता नहीं कि वह पत्थर था या लोहा न उसने मझे देखा न खाया न पिया तो मैं उसे कहाँ से गुमराह करती। बादशाह ने बुलाया और हुक्म दिया कि इसे खौलते हुए पानी में डाल दो। कढ़ाव आग पर चढ़ाया गया और उसमें तेल डाला कहने लगा जब तेल खौलने लगे तो

इसके दो साथियों को इसमें डाल दो अगर यह फिर भी इसाई न हो तो इसको भी डाल दो। जब दो साथियों को डाला गया और वे जल भुन गए फिर कहा इसाई हो जाओ। उन्होंने न माना कहने लगा हम तुम को इसमें डालेंगे फिर जब उनको डालने लगे तो ये रोने लगे तो बादशाह ने कहा यह क्यों रो रहा है उनको वापस लाओ, पूछा क्यों रो रहे हो? फ़रमाया मैं मौत के ख़ौफ़ से और न ज़िन्दगी के शौक़ में रो रहा हूँ फिर क्यों रो रहे हो तो फ़रमाया मैं इस लिए रो रहा हूँ कि मेरी सिर्फ़ एक जान है अब ख़त्म हो जाएगी मैं चाहता हूँ कि मेरे जिस्म पर जितने बाल हैं उतनी मेरी जानें होतीं और एक एक करके दीन के लिए क़ुर्बान हो जातीं। अब हमारे ये जज़्बे हैं, बाप चाहता है मेरा बेटा बड़ा आदमी बने, डाक्टर बने, बेशक बने लेकिन अगर वह मुहम्मदी नहीं बना तो वह बर्बाद व हलाक है हम चाहते हैं कि मुहम्मदी बन जाए।

क़ुरआन का ज़िन्दा मौजज़ाः

देखो मेरे भाईयों! सारे आलम पर जब क़ुरआन उतरा तो आसमान के दरवाज़े बन्द कर दिए गए अब कोई जिन्न ऊपर नहीं जा सकता, कोई शैतान ऊपर नहीं जा सकता कि नबी का क़ुरआन उतर रहा है जैसे सदर की सवारी गुज़रती हे तो ट्रैफ़िक बन्द हो जाता है और वज़ीर की सवारी गुज़रे तो कोई ट्रैफ़िक बन्द नहीं होता। पहले नबी आए वज़ीरों की तरह और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आए बादशाहों की तरह, सारे आसमान के दरवाज़े बन्द ट्रैफ़िक बन्द अब कोई शैतान ऊपर नहीं जा सकता ﴿ملئت حرسا شديدا﴾ बड़े ज़बरदस्त पहरे लगा दिए

गए ﴿الا من خطف الخطفه﴾ शैतान अब अपने बड़े सरदारों के पास आए इबलीस के पास आए कोई बहुत बड़ी बात दुनिया में हो गई है कि हमें ऊपर जाने नहीं दिया जा रहा है और मज़ीद यह कि हमें मार पड़ती है। इबलीस ने कहा तुम चक्कर लगाओ कोई बड़ी बात वजूद में आई है, कोई वाक़िया वजूद में आया है निसपेन एक जगह है शायद ईराक़ में है निसपेन की बस्ती शैतानों की जमात उड़ती उड़ती वहाँ तक पहुँची देखा फ़ज्र का वक़्त है और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अभी नमाज़ फ़र्ज़ नहीं थी, नमाज़ पढ़ रहे थे आप नियत बांध कर क़ुरआन पढ़ रहे हैं जब जिन्नात का गुज़र हुआ और क़ुरआन सुना ﴿انا سمعنا قرانا عجباً. يهدى الى الرشد فامنا به ولن نشرك بربنا احداً وانه تعلى جد ربنا مااتخذ صاحبة ولا ولداً﴾ इतना सुनना था कि वे जिन्नात चिल्लाने लगे ओ हो! अरे यही है यही है जिसने आसमानों के दरवाज़े हमारे बन्द करा दिए, वे सारे जिन्नात खड़े हो गए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़ुरआन सुनने लगे। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बात की, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत से सारे के सारे जिन्नात ईमान ले आए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अब जाओ अपनी क़ौम को दावत दो कि आख़िरी रसूल आ चुका है उसकी नबुव्वत के बग़ैर कामयाब नहीं हो सकते चुनांचे वही जिन्नात जो तहक़ीक़ करने के लिए आए थे वही नबी के दाई बन कर जा रहे हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तीसरा मौजज़ाः

मेरे भाईयों हमें क़द्र नहीं कि मदीने मुनव्वरा की बात है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा हैं एक बद्दू गुज़रने लगा यह कौन है? कहा यह वही नबी है जो आसमान की ख़बरें बताता है। कहा अच्छा! कहने लगा तू ही है नबुव्वत का दावा करने वाला? फ़रमाया हाँ मैं ही हूँ बद्दू ने कहा कि मेरी क़ौम ने अगर तेरे साथ अहद न किया होता तो मैं तुझे बुरे तरीक़े से क़तल करता। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को ग़ुस्सा आ गया। कंहने लगे है या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अगर इजाज़त हो तो गर्दन उड़ा दूं। फ़रमाया ऐ उमर नहीं सब्र करो, तुम्हें पता है की दरगुज़र करना नबुव्वत की शान है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ मेरे भाई बद्दू मेरी मजलिस में आ कर तू मेरी बेइकरामी करे यह बात मुनासिब नहीं बद्दू ने कहा अच्छा आगे से बाते भी बनाते हो। एक जानवर है जिसे गूह कहते हैं अरबी में उसे दब कहते हैं एक लम्बा सा बदसूरत जानवर होता है जो सहरा में होता है अरब उसे खाते थे वह शिकार करके लाया हुआ था ऊँट के पालान के साथ बांधा हुआ था, ग़ुस्से में आया और उसको खोला और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने फेंका और कहने लगा मैं तेरी नबुव्वत को नहीं मान सकता जब तक यह गूह तेरी नबुव्वत की गवाही न दे। तो उस गुह ने भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत की गवही दी और वह क़ायल हो गया।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम और फ़िकरे उम्मतः

मेरे भाईयों! हम ने हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से टक्कर ली हुई है अभी आप दिल से ख़याल निकाल दें कि हमें कोई माद्दी ताक़त नफ़ा पहुँचा सकती है हाँ माद्दी ताक़तों से होगा जब ज़िन्दगी हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर आ जाए और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा हमारी ज़िन्दगियों में चमकता हुआ नज़र आएगा फिर अल्लाह जल्ले जलालुहू दिखाएगा कि मैं कैसे सुर्ख़रू करता हूँ हमारे इरादे ऐसे हों कि या अल्लाह हम मर जाएंगे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीन से पीछे नहीं हटेंगे यह सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का ज़हन बना हुआ था खुद भूके, उम्मत भूकी, बेटी भूकी, दामाद भूका सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम भूक सारे असहाब सुफ़्फ़ा भूके, अन्सार भूके, मुहाजिरीन भूके क्या वे कमाइयां नहीं कर सकते थे?

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की जिस्मानी क़ुव्वतः

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से बढ़ कर कौन कमाई कर सकता है ख़ैबर के दरवाज़े को अकेले पकड़ कर उठा कर फेंक दिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ऐसे ताक़तवर थे कि ख़ैबर का दरवाज़ा जिसे चालीस आदमी खोलते थे उसे पकड़ा और उठा कर फेंक दिया वह कमाई नहीं कर सकते थे? दो बेटों को रोटी नहीं खिला सकते थे? वह किस बात पर क़ुर्बान हो रहे हैं कि हम ने कलिमे को सारे इन्सानों तक पहुँचाना है। चार दिन की भूक बर्दाशत कर लो कोई बात नहीं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और भूख की हालतः

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु सर्दी में बाहर फिर रहे हैं परेशान हैं। इतने में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी बाहर निकले आप ने फ़रमाया कि ऐ अली इस सर्दी में क्या कर रहे हो? अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं क्या करूं भूक इतनी सख़्त लगी हुई है कि घर में बैठा नहीं जा सकता ऊपर से सर्दी। सर्दी और भूक ने मुझे बाहर निकाला है आगे चले तो कुछ सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम बैठे हुए हैं आप ने पूछा यहाँ क्या कर रहे हो? कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भूख की शिद्दत ने घर से निकाल दिया है। फ़रमाया अच्छा भाई अब तो कुछ करना पड़ेगा। एक खजूर का दरख़्त सामने खड़ा है सर्दी का ज़माना है, सर्दी में खजूरें कहाँ से आतीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा ऐ अली जाओ इस खजूर के पेड़ से कहो कि अल्लाह का रसूल कहता है कि हमें खजूर खिलाओ। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु दौड़े दौड़े हुए गए खजूर के दरख़्त से खजूर गिराने के लिए कहा तो खजूर के पत्तों में से ताज़ा ताज़ा खजूरें गिरने लगीं। हम से तो खजूरें ही अच्छी थीं कि अल्लाह के रसूल का कहना मानती थीं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की झोली भर गई आप उठा लाए कि खाओ भाई। सब को खिलाया खुद भी खाया उनको भी खिलाया पेट भर गया कुछ बच गया, फ़रमाया जाओ फ़ातमा को भी दे कर आओ वह भी कई दिन से भूकी है। भूक पर उम्मत को उठाया।

आज हमने नबियों वाले काम को अपना काम नहीं समझाः

मेरे भाईयों! इस ज़िम्मेदारी को आज कौन उठा रहा है ताजिर कहता है कि मुझे अपने बीवी बच्चों से फ़ुर्सत नहीं है, मैं फ़ारिग़ नहीं हूँ, ज़मींदार कहता है कि मेरे ज़िम्मे काश्तकारी है मैं फ़ारिग़ नहीं हूँ, दफ़्तर वाला कहता है कि मेरा दफ़्तर है मैं फ़ारिग़ नहीं हूँ तो इस ज़िम्मेदारी को कौन उठाएगा जो सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पेट पर पत्थर बांध कर उठाई है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत की अलामतः

एक मर्तबा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में बैठे थे रंग बदला हुआ है। हज़रत काब बिन अजरा रज़ियल्लाहु अन्हु आए कहा मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुतग़ैयर देखता हूँ कि आप का रंग बदला हुआ है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ काब इस पेट में तीन दिन से एक दाना दाख़िल नहीं हुआ। क्या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कमा नहीं सकते थे तिजारत नहीं कर सकते थे। हज़रत काब बिन अजरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं दौड़ा हुआ गया एक यहूदी के ऊँट खड़े हुए थे उनको पानी पिलाया थोड़ी खजूरें मुआवज़े में ले कर आया। खजूरें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने रखीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया खजूरें उठायीं और फ़रमाया ऐ काब तू मेरे से मुहब्बत करता है? अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे मेरे रब की क़सम मेरा सब कुछ आप पर क़ुर्बान। फ़रमाया अच्छा अगर मेरी मुहब्बत में सच्चा है तो आज़माइश के लिए तैयार हो जो मेरे से मुहब्बत करते हैं उन पर

आज़माइश ऐसे आती हैं जैसे पानी ऊपर से नीचे की तरफ़ आता है। आज तबलीग़ में चला जाए और उनको कोई नुक़सान कारोबार में वग़ैरह में हो जाता है तो मुसलमान कहता है और तबलीग़ करो! देख लिया! याद रखना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत की निशानी है दुनिया का टूटना अल्लाह और रसूल की मुहब्बत की निशानी है, दुनिया का आना मुहब्बत की निशानी नहीं। यह दुनिया कभी अल्लाह मुहब्बत में भी देता है जैसे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को बाद में दिया, हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को दिया।

आज़माइश अल्लाह की मुहब्बत की निशानी हैः

लेकिन मेरे भाईयों और दोस्तों और बुज़ुर्गों! यह जो आज़माइश है यह तो अल्लाह पाक की मुहब्बत की ख़ास निशानी है। जब रोज़ाना दिन चढ़ता है तो आज़ामइश अल्लाह पाक से पूछती है या अल्लाह मैं आज कहाँ जाऊँ तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मेरे महबूबों के घर में चली जा, मेरे महबूबों और मेरे मानने वालों के घरों में चली जा, उनको परखूंगा, उनके सब्र का इम्तेहान लूंगा, उनके गुनाहों को मॉफ़ करूंगा, उनके दर्जात बुलन्द करूंगा, ऐ आज़माइश चली जा। आज़माइश अल्लाह से मुहब्बत करने वालों और अल्लाह के रसूल से मुहब्बत करने वालों के घरों में आती है।

बावजूद नाफ़रमानी के माल की कसरत अल्लाह का अज़ाब हैः

लोग यूं समझ रहे हैं कि जितना पैसा आ रहा है अल्लाह का

फ़ज़ल आ रहा है और अल्लाह का नबी कह रहा है:

اذا رايت الله عزوجل يعطى عبداً من الدنيا على معاصيه ما
يحب فانما هو استدراج ثم تلا رسول الله صلى عليه وسلم
فلما نسوما ذكروا به فتحنا عليهم ابواب كل شئ حتى اذا
فرحوا بما اوتوآ اخذنهم بغتة فاذا هم مبلسون. الحديث

जब तुम देखो कि एक आदमी अल्लाह और उसके रसूल का नाफ़रमान है फिर भी दुनिया उसके पास आ रही है तो याद रखो कि यह अल्लाह के दर्दनाक अज़ाब का शिकार हो चुका है यह बग़ैर तोबा के दुनिया से जाएगा, यह सबसे बड़ा अज़ाब है।

माल का होना यह कामयाबी नहीं है:

मेरे भाईयों माल का चले जाना या फ़क्र का आ जाना अल्लाह ज़ुल जलाल की क़सम यह कोई आज़माइश नहीं है, बग़ैर तोबा के दुनिया से चले जाना यह सबसे बड़ी हलाकत है और बर्बादी है कि अभी से क़ब्र के साँप बिच्छु उनको पकड़ेंगे कि उसकी चीख़ पुकार मशरिक़ व मग़रिब में सुनाई देगी लेकिन कोई भी उसकी चीख़ व पुकार को सुनने वाला नहीं होगा। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर जमना उम्मत से निकला हुआ है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का इख़लास:

अल्लाहु-अकबर अन्दाज़ा लगाइए कि हज़रत अली यहूदी के सीने पर चढ़े हुए है और उसे क़त्ल करना चाहते हैं और वह मुँह पर थूकता है, छोड़ कर पीछे हट जाते हैं कहा कि दोबारा आओ, कहा अब नहीं आऊँगा यहूदी हैरान अरे क्यों? कहा कि

पहले तुझे मैं अल्लाह और रसूल की वजह से क़त्ल कर रहा था। जब तूने मेरे मुँह पर थूका तो मेरे नफ़्स को ग़ुस्सा शामिल हो गया अब अल्लाह और रसूल की रज़ा नहीं थी अब अपने नफ़्स क ग़ुस्सा था। दोबारा न आए, यहूदी ने यह हालत देख कर कलिमा पढ़ लिया। आज तो मुसलमान मुसलमान को क़त्ल कर रहा है किस पर कि इसने मुझे गाली दे दी तो इन आमाल के साथ उम्मत कहाँ वजूद पकड़ेगी। इस क़िस्से को सुन कर या पढ़ का मैं हैरान हो जाता हूँ कि इतना ताल्लुक़ अल्लाह और रसूल से था कि छोड़ कर खड़े हो गए अब मैं तुझे क़त्ल नहीं करूंगा पहले मैं अल्लाह और उसके रसूल की वजह से कर रहा था अब मैं अपनी वजह से करूंगा।

ग़ज़्वा ख़न्दक़ और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की क़ुर्बानीः

ख़न्दक़ के मौक़े पर ज़बर्दस्त ख़ौफ़ का आलम भूक लगी हुई और सर्दी जबर्दस्त ऊपर से कपड़ा कोई नहीं और भूक की हालत है, रोटी कोई नहीं, ख़ौफ़ की हालत है और हथियार कोई नहीं लेकिन अल्लाह और उसके रसूल के साथ जुड़े हुए हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चौथा मोजज़ाः

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु ने देखा कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत भूक लगी है आप रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी बीवी के पास गए कहने लगे तेरे पास कुछ है कहने लगी यह बकरी का बच्चा है और यह थोड़े से जौ हैं, कहा जो पीसो बकरी के बच्चे को काटो और पकाओ। मैं हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लेकर आता हूँ।

आप आए अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तेरह आदमी और आप चौदहवे या यूं फ़रमाया चौदह आदमी आप पन्द्रहवे हो जाएं पन्द्रह आदमियों का मैंने खाना पकाया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले आएं और उस वक़्त ख़न्दक़ में डेढ़ हज़ार आदमी ख़न्दक़ खोद रहे थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अहले ख़न्दक़ जाबिर ने तुम्हारे लिए रोटी पकाई है। हज़रत जाबिर के तो पाँव उखड़ गए कि मारा गया मैंने तो पन्द्रह का कहा था यहाँ पन्द्रह सौ का हो गया, क्या चक्कर हो गया, भागे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पता चल गया कि क्यों भागा जा रहा है पीछे से आवाज़ दी फ़रमाया अरे मुझे भी पता है छोटी सी हांडी में तू ने पकाया होगा, हांडी को नीचे मत उतारना जब तक मैं न आऊँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले गए हांडी ऊपर थी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुद उतारा थोड़ा सा लुआब दहन डाला, रोटियां पास रख लीं, दस्तरख़्वान बिछा दिया, आओ भाई खाते जाओ, सालन निकाल कर दे रहे हैं और रोटी तक़सीम कर रहे हैं, खाने वाले खा रहे हैं, लोग जा रहे हैं, खा रहे हैं, डेढ़ हज़ार आदमियों ने खाया, वह छोटी सी हांडी में सालन पड़ा है वह सेर दो सेर जौ की रोटियां पक्की थीं वे रोटियां भी पड़ी हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो दस्तरख़्वान पर हड्डियां पड़ी हैं जमा करो। हड्डियों को जमा करके अपने सामने रख लिया हाथ उठा कर दुआ की अल्लाह तआला ने हड्डियों को फिर बकरी का बच्चा बना कर खड़ा कर दिया। फ़रमाया ले जाबिर हमें हमारे अल्लाह ने खिला दिया तू अपनी बकरी को भी संभाल और अपनी रोटियों को भी संभाल।

माल में बरकत न होने की वजहः

अरे मेरे भाईयों! आज यह बरकत क्यों नहीं, इस लिए कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमवाला तरीक़ा नहीं है। आज हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाली ज़िन्दगी नहीं है, आज हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाले अख़लाक़ नहीं हैं। अल्लाह का नबी कहता है कि जो तेरे से तोड़े तू उस से जोड़, जो तेरा हक़ मारे तू उसका हक़ अदा कर, यहाँ तो झूठे मुक़द्दमे करके लोगों की जाएदादें ज़ब्त कर रहे हैं तो उनकी नमाज़ों से उनको क्या नफ़ा मिलेगा और उनके हज करने से उनको क्या नफ़ा मिलेगा जो लोगों के माल हड़प करके अपनी जाएदादें बना रहे हैं उनकी नमाज़ों से उनको क्या नफ़ा मिलेगा, उनको रोज़े उन्हें कहाँ से कामयाब करेंगे और कौन सी हुकूमत आएगी जो तुम्हें इज़्ज़त नसीब कराएगी जब आप लोगों के माल हड़प कर रहे हैं और अल्लाह का लाडला रसूल फ़रमा रहा है कि जो तेरा हक़ मारे तू उसे भी अता कर और जो तेरे ऊपर ज़ुल्म करे तू उसे भी माफ़ कर और जो तेरे से बुरा करे तू उससे भी अच्छा कर। जब यह ज़िन्दगी वजूद में आ जाएगी तो सारा आलम दीन से चमक उठेगा।

आमाले नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताक़तः

मेरे भाईयों! जिसके जस्दे मुबारक के टेक लगाने से पहाड़ मोम हो जाए उसके जिस्म से जो आमाल निकलते हैं अगर वह अमल वजूद में आ जाएं तो आज के बातिल की क्या ताक़त है। आज हम ने पैसे की ताक़त को सीखा है, आप सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम के अमल की ताक़त को नहीं सीखा। एक दफ़ा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु से खुश हो कर फ़रमाया ﴾وجبت وجبت﴿ क्या मतलब ऐ तल्हा तेरे लिए जन्नत वाजिब हो गई, तेरे लिए जन्नत वाजिब हो गई।

हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत पर हुज़ूरे सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रोनाः

हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु आगे कुफ़्फ़ार से लड़ रहे थे और यह हुज़ूरे सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। हज़रत तल्हा और हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हुम आगे थे। वहशी की ज़द में आ गए दोनों हाथों में तलवार ले कर चल रहे थे कि वहशी ने पत्थर के पीछे से बैठ कर जो निशाना मारा और आप के पेट में बरछा लगा आंतें और जिगर कटा और आप गिरे और हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु उसकी तरफ़ को बढ़े, हज़रत हम्ज़ा वहशी की तरफ़ गिरते गिरते बढ़े तो वहशी कहने लगा मैं भागा कि कहीं मेरे ऊपर कोई हमला न हो लेकिन हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को उलटी आई और जान निकल गई। जब शोहदा की तलाश हुई आपने फ़रमया चचा कहाँ हैं किसी ने कहा शहीद हो गए। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और अपने चचा की लाश को देखा कि नाक कटा हुआ है, कान कटे हुए हैं, सीना फटा हुआ, कलेजा निकला हुआ, आंतें फटी हुयीं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इतना रोए इतना रोए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिचकियां बंध गयीं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रोने पर अल्लाह का तसल्ली देना:

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रोने पर सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम भी रोने लग गए सब रो रहे थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इतने ज़ोर ज़ोर से रो रहे थे यहाँ तक की हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलाम आसमान से आए और आ कर यूं अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला फ़रमा रहें हैं कि मेरे हबीब आप ग़म न करो हम ने आप के चचा को अपने अर्श पर रखा है ﴿اسد الله واسد رسوله﴾ हम्ज़ा अल्लाह और रसूल के शेर हैं। वहशी से कितना दुख उठाया होगा। सत्तर मर्तबा हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जब फ़तेह मक्का हुआ तो वहशी के क़त्ल का हुक्म दिया कि जो वहशी को पा ले क़त्ल करे लेकिन जब मदीना मुनव्वरा आए तो वहशी पर तरस आया कि क़त्ल हुआ तो दोज़ख़ में चला जाएगा, वहशी ताएफ़ चले गए। वहशी के पास ख़ास तौर पर एक आदमी भेजा कि वहशी अल्लाह का रसूल कहता है कि कलिमा पढ़ ले मुसलमान हो जा जन्नत में चला जाएगा। यह अख़्लाक़े नबुव्वत थे वहशी कहने लगे कलिमा पढ़ कर क्या करूंगा मैंने तो सारे काम किए हैं जिस पर तुम्हारे रब ने दोज़ख़ कहा है क़त्ल, ज़िना, शिर्क, शराब, मैं क्या करूंगा। उसने आकर जवाब दिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दोबारा भेजा फिर दोबारा भेजा किसके पास चचा के क़ातिल के पास। आख़िर कार एक मौक़े पर आ कर वहशी मुसलमान हो गए।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ुव्वते जिस्मानी पर दूसरा वाक़ियाः

ख़न्दक़ का मौक़ा ख़ौफ़, सर्दी, भूक और उमरू (जो काफ़िरों का पहलवान था) छलांग लगाता हुआ मदीना मुनव्वरा आया और आवाज़ लगाई कि है कोई मेरे मुक़ाबले के लिए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं तैयार हूँ। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अरे बैठ जा यह उमरू है जो एक हज़ार आदमियों के बराबर शुमार किया जाता है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु बैठ गए। वह फिर कहने लगा कोई है मुक़ाबले के लिए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फिर खड़े हुए, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की उमर चौबीस साल की थी और वह (उमरू) लड़ाइयों में फिरता फिराता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बैठ जा यह उमरू है। फिर तीसरी मर्तबा कहने लगा कोई है मुक़ाबले के लिए। अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मैं हूँ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बैठो। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया नहीं या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुझे जाने दीजिए चाहे उमरू ही है क्या हुआ जान जाएगी आप के नाम पर तो जाएगी। अली रज़ियल्लाहु अन्हु आए उमरू ने पूछा कौन हो कहा अली, कहा अब्दुमुनाफ़, कहा नहीं बिन अबि तालिब कहा भतीजा, कहा हाँ, अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा उमरू मैंने सुना है कि तुझे दो बातों की दावत दी जाए तो उसमें से एक ज़रूर क़ुबूल करता है, कहने लगा हाँ, फ़रमाया मैं तुझे यह दावत देता हूँ कि अल्लाह और रसूल के

साथ हो जा, नहीं नहीं यहाँ यह देखा जाएगा कि अल्लाह व रसूल किसके साथ है, उसके साथ हो जा, मुक़ाबले में चाहे बाप हो, चाहे बेटा हो, चाहे बिरादरी है, चाहे जमात है, चाहे तिजारत है, चाहे बीवी है मैं तो अल्लाह और उसके रसूल का ग़ुलाम हूँ। उसने घोड़े से छलांग लगाई ऐसे ग़ुस्से में जैसे आग को शोला होता है। ऐसे वक़्त में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी दुआ में लग गए या अल्लाह मदद फ़रमा इतने में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की तकबीर की आवाज़ सुनाई दी अल्लाह का दुश्मन क़त्ल हो गया, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की जो तलवार लगी तो उमरू के कई टुकड़े हो गए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने खड़े खड़े शेर पढ़े जिसका तर्जमा यह है:

(1) कि ऐ कुफ़्फ़ार की जमात पीछे हट जाओ तुम्हें पता चल गया है कि अल्लाह अपने रसलू को और उसके मानने वालों को अकेला नहीं छोड़े हुए।

(2) वरना मेरे जैसा उमरू को क़त्ल नहीं कर सकता था अल्लाह हमारे साथ है जिस ने उसको क़त्ल करके दिखाया कि मेरी ताक़त तुम्हारे साथ है।

कुफ़्फ़ार की कसरत के बावजूद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का जज़्बा ईमानी:

एक लश्कर मुल्के शाम में आठ हज़ार का रवाना हुआ और उमर बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु उस लश्कर के अमीर थे और उनके सामने एक लाख काफ़िर हैं। एक सहाबी असहाबे सुफ़्फ़ा में से कहने लगे हमारा हाल यह था कि जैसे काला बैल हो और

उसके ऊपर एक सफ़ेद नुक़ता हो ऐसे हमारी तादाद दुश्मन के मुक़ाबले में थी, बस हम ने यूं कहना शुरू किया ﴿يا رب محمد انصر امة محمد﴾ ऐ रब्बे मुहम्मद उम्मते मुहम्मद की मदद फ़रमा।

मेरे भाईयों वह उम्मत थी हम जमातें हैं, वह उम्मत थी हम गिरोह हैं, वह उम्मत थी हम टुकड़े टुकड़े हैं, वह उम्मत थी हम क़बीला क़बीला हैं, वह उम्मत थी हम में सूबाइयत, लिसानियत हैं। इस लिए उनकी पुकार अर्श से टकराई और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने देखा कि आसमान फट गया और उसमें से शहाबी रंग के घोड़े उतरने शुरू हुए और उन सवारों के सिरों पर पगड़ियां बंधी हुई थीं और उनके हाथों में नेज़े थे और उनके आगे आगे एक घोड़ा सवार था यूं कहता हुआ आ रहा था कि उम्मत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुश हो जाओ कि उम्मत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रब तुम्हारी मदद के लिए आ गया।

मेरे भाईयों! आज मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाले अख़लाक़ नहीं हैं और यह दुकानों पर बैठ कर नहीं आएंगे यह कारख़ाने चलाने से नहीं आएंगे, यह कारोबार चलाने नहीं आएंगे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाली ज़िन्दगी अल्लाह के रास्ते में निकल कर दर-ब-दर की ठोकरें खाने से आएगी इस पर दुनिया बनेगी इसी पर आख़िरत बनेगी। हम चलता फिरता हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नमूना बन जाएं।

यहूदियों के हज़रत बयज़ेद रह० से छब्बीस से ज़्यादा सवालातः

यहूदियों का एक बड़ा मजमा आरै उनका एक आलिम उनमें

तक़रीर कर रहा है। हज़रत बयज़ैद बस्तामी रह० जाकर उस मजमे में बैठ गए। उनके बैठते ही उनके आलिम की ज़ुबान बन्द हो गई। मजमे में शोर हुआ कि हज़रत बोलते क्यों नहीं। आलिम ने कहा ﴿دخل فينا محمدع﴾ कोई मुहम्मदी हमारे मजमे के अन्दर आया है जिसकी वजह से मेरी ज़ुबान बन्द हो गई ﴿دخل فينا محمدع﴾ हम में कोई मुहम्मदी आ गया ज़ुबान बन्द। अन्होंने कहा उसे खड़ा करके क़त्ल करेगे, कहा नहीं। भाई जो मुहम्मदी हो वह खड़ा हो जाए। हज़रत बयज़ैद बस्तामी रह० खड़े हो गए। यहूदी आलिम ने कहा मैं सवाल करूंगा आप जवाब देना। हज़ बयज़ैद बस्तामी रह० ने कहा दूंगा फिर हज़रत बयज़ैद बस्तामी रह० ने फ़रमाया एक सवाल मैं करूंगा तू जवाब देगा। यहूदी आलिम ने सवालात शुरू कर दिए। पहला सवाल कियाः

सवालः 1- एक बताओ जिसका दूसरा नहीं?

जवाबः फ़रमाया अल्लाह एक है उसके साथ दूसरा नहीं।

सवालः 2- बताओ वह बताओ जिसका तीसरा न हो?

जवाबः फ़रमाया ﴿الليل والنهار﴾ दिन रात उसका तीसरा नहीं।

सवालः 3- कहा तीन बतओ जिसका चौथ न हो?

जवाबः कहा लौह, क़लम और कुर्सी उनका चौथ नहीं।

सवालः 4- कहा चार बताओ जिसका पाँचवा नहीं?

जवाबः फ़रमाया तौरात, ज़ुबूर, इन्जील और क़ुरआन चार हैं उनका पाँचवा नहीं।

सवालः 5- कहा पाँच बताओ जिनका छठा नहीं?

जवाबः अल्लाह ने अपने बन्दों पर पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं छः नहीं।

सवालः 6- कहा छः बताओ जिनका सातवाँ नहीं?

जवाबः फ़रमाया ﴿خلق السموات والارض وما بينهما فى ستة ايام ثم على العرش﴾ छः दिन में ज़मीन व आसमान बनाए है सात में नहीं।

सवालः 7- कहा सात बताओ जिसका आठवां नहीं?

जवाबः फ़रमाया ﴿الم تروا كيف خلق الله سبع سموات طباقا وجعل القمر فيهن نورا وجعل الشمس سراجا﴾ मेरा रब कहता है कि मैंने सात आसमान बनाए हैं इस लिए आसमान सात हैं उसका आठवाँ नहीं।

सवालः 8- कहा आठ बताओ जिसका नवाँ नहीं?

जवाबः फ़रमाया ﴿ويحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية﴾ मेरे रब के अर्श को आठ फ़रिशतों ने पकड़ा हुआ है नौ ने नहीं।

सवालः 9- कहा नौ बताओ जिसका दसवाँ नहीं?

जवाबः फ़रमाया ﴿وكان فى المدينة تسعة رهط يفسدون﴾ सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम ने नौ बड़े बड़े बदमाश थे दसवाँ नहीं था अल्लाह ने नौ कहा है।

सवालः 10- कहा वह दस बताओ जिसका गयारहवाँ नहीं?

जवाबः फ़रमाया हज में कोई ग़ल्ती हो जाए तो अल्लाह तआला ने सात रोज़े वहाँ और तीन रोज़े घर पर रखे हैं ﴿تلك عشرة كاملة﴾ यह हैं गयारह नहीं।

सवालः 11- कहा वह गयारह बताओ जिसका बारहवाँ नहीं?

जवाबः फ़रमाया कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के गयारह **भाई थे बारह** नहीं थे।

सवालः 12- कहा वह बारह बताओ जिनका तेरहवाँ नहीं?

जवाबः फ़रमाया साल में बारह महीने होत हैं तेरह नहीं।

सवालः 13- कहा वह तेरह बताओ जिनका चौदहवाँ नहीं?

जवाबः फ़रमाया ﴿رایت احد عشره کوکبا والمشس والقمر رایتهم لی ساجدین﴾ हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने बाप से कहा कि मैंने गयारह सितारे देखे एक सूरज देखा एक चाँद देखा जो मुझे सज्दा कर रहे हैं चौदह नहीं।

सवालः 14- कहा कि बताओ वह क्या चीज़ है जिसको खुद अल्लाह ने पैदा किया फिर उसके बारे में सवाल किया?

जवाबः हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का डंडा, अल्लाह की पैदाईश, अल्लाह की पैदावार लेकिन खुद सवाल किया ﴿وما تلك بيمنك يموسٰى﴾ ऐ मूसा तेरे हाथ में क्या है।

सवालः 15- कहा सबसे बेहतरीन सवारी ?

जवाबः घोड़ा।

सवालः 16- कहा बताओ सबसे बेहतरीन दिन?

जवाबः जुमा।

सवालः 17- कहा सबसे बेहतरीन रात?

जवाबः लैलतुल-क़द्र।

सवालः 18- कहा बताओ सबसे बेहतरीन महीना?

जवाबः माहे रमज़ान।

सवालः 19- कहा बताओ वह कौन सी चीज़ जिसको अल्लाह ने पैदा करके उसकी अज़मत का इक़रार किया?

जवाबः अल्लाह ने औरत को मक्कार बनाया और उसके मकर का इक़रार किया। ﴿ان کیدکن عظیم﴾ फ़रमाया मैंने नहीं

देखा कि बड़े से बड़े अक़्लमन्द के क़दम उखाड़ने वाली हो सिवाए औरत के और कोई चीज़ नहीं। बड़ों बड़ों की अक़्लों पर पर्दा डाल देती है।

सवाल: 20- कहा बताओ वह कौन सी चीज़ है जो बेजान है मगर सांस लेती है?

जवाब: फ़रमाया ﴿والصبح اذا تنفس﴾ मेरा रब कहता है कि मुझे सुबह की क़सम जब वह सांस लेती है।

सवाल: 21- कहा वह कौन सी चौदह चीज़ें हैं जिन्हें अल्लाह पाक ने इताअत का हुक्म दिया है और उन से बात की?

जवाब: फ़रमाया सात ज़मीन सात आसमान ﴿ثم استوىٰ الى السماء وهى دخان فقال لها وللارض ائتيا طوعا او كرها. قالتا اتينا طائعين﴾ अल्लाह तआला ने सात ज़मीन सात आसमान बनाए और इन चौदह चीज़ों को ख़िताब फ़रमाया कि मेरे सामने झुक जाओ तो वे चौदह के चौदह ने कहा यह अल्लाह हम आपके सामने झुक रहे हैं।

सवाल: 22- कहा बताओ वह कौन सी चीज़ है जो अल्लाह ने खुद पैदा की फिर अल्लाह ने ख़रीद लिया?

जवाब: फ़रमाया अल्लाह तआला ने मुसलमानों को पैदा किया और उसको ख़रीद लिया जन्नत के बदले ﴿ان الله اشترى من المؤمنين انفسهم واموالهم بان لهم لجنة.﴾

अरे मुसलमान! अल्लाह की क़सम तू बीवी का है न तू बच्चों का न तिजारत का है, न सदारत का है, न हुकूमत का है, न तू किसी जमात का है तू अल्लाह और रसूल का है अगर तू अल्लाह और रसूल का बन कर चलेगा तो यह सारा नक़्शा तेरे

ताबे हो कर चलेगा और अगर अल्लाह और रसूल से टकराएगा तो अल्लाह ज़लील व ख़्वार करके छोड़ेगा।

सवालः 23- कहा वह कौन सी बेजान चीज़ है जिसने बेजान होकर बैतुल्लाह की तवाफ़ किया?

जवाबः फ़रमाया नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती पानी पर चली और चलते चलते जब बैतुल्लाह पर आई तो बैतुल्लाह के सात चक्कर लगाए।

सवालः 24- कहा बताओ वह कौन सी क़ब्र है जो अपने मुर्दे को ले कर चली?

जवाबः फ़रमाया यूनुस अलैहिस्सलाम की मच्छली जो अपने अन्दर में हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को बिठा कर चालीस दिन तक फिरती रही और वह क़ब्र की तरह थी, क़ब्र की तरह चल रही थी, क़ब्र की तरह चल रही है लेकिन अल्लाह की क़ुदरते क़ाहेरा ग़ालेबा कि हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को मच्छली के पेट में बिठा कर मरने नहीं दिया, न भूका रखा, न प्यासा रखा, न बीमार, न पेरशान किया बल्कि मच्छली को शीशे की तरह कर दिया। हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम मच्छली के पेट में बैठ कर सारे दरिया का तमाशा देखते रहे, अन्दर बाहर के सब मन्ज़र देखते रहे, मच्छली का एक ही मेदा और उसमें ग़िज़ा भी आ रही है लेकिन हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम अमानत हैं, आराम से बैठे हैं, मेदे की हरकत हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को तकलीफ़ नहीं दे रही है लेकिन मच्छली की ग़िज़ा भी खाई जा रही है हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम अमानत बन कर बैठे हुए हैं।

सवालः 25- कहा बताओ वह कौन सी क़ौम है जिसने झूठ

बोला फिर भी जन्नत में जाएगी?

जवाबः फ़रमाया हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई ﴿وجاؤا على قميصه بدم كذب. قال بل سولت لكم انفسكم امرا﴾ हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई शाम को आए और बकरी का ख़ून कुर्ते के ऊपर मल कर झूठ बोला कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को भेड़िया उठा कर ले गया लेकिन याक़ूब अलैहिस्सलाम के इस्तिग़फ़ार उनके तौबा करने पर अल्लाह उन्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगें।

सवालः 26- कहा वह कौन सी क़ौम है जो सच बोलेगी फिर भी जहन्नुम में जाएगी?

जवाबः यहूदी और इसाई एक बोल में सच्चे हैं यहूदी कहते हैं इसाई बातिल पर हैं और इसाई कहते हैं यहूदी बातिल पर हैं इस बोल में दोनों सच्चे हैं ﴿وقالت اليهود ليست النصرى على شي وقالت النصرى ليست اليهود على شي﴾ दोनों सच्च हैं इस बोल में लेकिन दोनों जहन्नुम में जाएंगे।

तो और भी सवाल हैं लकिन वक़्त बहुत हो गया इस लिए बाक़ी को छोड़ रहा हूँ।

जन्नत की चाबी किस के पास है?

अब हज़रत बयज़ैद बस्तामी रह० ने फ़रमाया कि अब मेरा भी एक सवाल है, मैं सिर्फ़ एक सवाल करूंगा जवाब दोगे? फ़रमाया ﴿ما مفتاح الجنة﴾ मुझे बता दे जन्नत की चाबी किसके पास है? यहूद आलिम ख़ामोश हो गए तो नीचे मजमे से लोगों ने कहा बोलते क्यों नहीं तुम ने तो सवालों की बौछार कर दी

और वह हर एक का जवाब देता रहा और आप एक का भी जवाब नहीं दे रहे हैं। कहा जवाब मुझे आता है लेकिन तुम मानोंगे नहीं। यही आज हम कहते हैं कि जनाब मुझे सारा पता है पता तो है मगर मानते क्यों नहीं कहते हैं क्या करें मजबूरी है इसी मजबूरी को तोड़ने के लिए कहते हैं कि अल्लाह के रास्ते में निकला जाए। यहूदी आलिम ने जवाब दिया तो मुझे आता है तुम मानोगे नहीं कहने लगे अगर तू कहे तो मानेंगे। कहा जन्नत की चाबी मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं।

क़यामत के दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शानः

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत की चाबी मेरे हाथ में है और जन्नत का झण्डा मेरे हाथ में है। सारी दुनिया के इन्सान मेरे झण्डे के नीचे जन्नत में जाएंगे कोई मेरे झण्डे से निकल कर नहीं जा सकता। जन्नत का दरवाज़ा बन्द और चाबी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ में कोई जा नहीं सकता जन्नत वाले जन्नत के दरवाज़े पर पहुँच चुके हैं ﴿وسيق الذين اتقوا ربهم الى الجنة زمرا. حتى اذا جآءوها وفتحت ابوابها﴾ आए हैं दरवाज़े पर, खड़े हैं, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पास आते हैं ऐ हमारे बाप तू ही हमारा जद, तू ही हमारा अव्वल है, तू ही हमारा सबसे बड़ा है, तू ही जन्नत का दरवाज़ा खुलवा। वह इर्शाद फ़रमाएंगे अरे मैंने ही तो मुम्हें जन्नत से निकलवाया था मैं तुम्हें कहाँ से दाख़िल कराऊँ, यह मेरे बस की बात नहीं है, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के पास आएंगे नूह अलैहिस्सलाम भी माज़रत करेंगे। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास आएंगे, फिर हज़रत इसा अलैहिस्सलाम के

पास आएंगे, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम कहेंगे कि मेरे बस की बात नहीं। नबी अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जाओ जिसके हाथ में जन्नत की चाबी है और जिसकी इत्तेबा में दुनिया की कामयाबी है। इतना भी आज ईमान नहीं कि अपनी दुकान से हराम को निकाल सके तो यह इस्लाम कहाँ से जिन्दा करेगा जब इतना ईमान नहीं है कि एक सुन्नत को सजा सके तो दुनिया में दीन कैसे ज़िन्दा करेगा, इसकी नमाज़े इसको क्या नफ़ा देंगी। दिल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाला नहीं है मॉफ़ करना दिल मेरा भी और आपका भी वही है। क़ारून वाला है कि माल हो, पैसा हो, दरवाज़ा बन्द है आज कोई खुलवा के दिखाए।

जन्नत के नायाब दरख़्त का तज़किरा खुसूसियत के साथः

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ऐ ईसा मैं तुझे अपने पास बुलाऊँगा फिर तुझे वापस भेजूंगा और तू मेरे आख़िरी नबी उम्मत के कारनामे देखेगा मैं ने उसके लिए तूबा तैयार कर किया हुआ है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम कहने लगे या अल्लाह! तूबा क्या है? फ़रमाया ऐ ईसा तूबा वह दरख़्त है जिसको मैंने अपने हाथ से लगाया है उसका तना सोने का है ऊपर जवाहिरात का है और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस तूबा की तारीफ़ एक दूसरी हदीस में फ़रमा रहे हैं कि उसका तना सोने का है और इतना बड़ा कि तू अपने पाँच साल के ऊँट पर सवार हो जा और वह ऊँट उस तने के गिर्द दौड़ना शुरू करे तो दौड़ते दौड़ते वह ऊँट बूढ़ा हो जाए, बूढ़ा हो कर उसकी हड्डियां टूट जाएंगी लेकिन उस तने की गोलाई को

नाप नहीं सकेगा उसका गोंद शहद है और उसका गोंद ज़ंजबील है और उसी शाख़ों में रेशम के जोड़े निकलते हैं और उसके पत्ते जब आपस में टकराते हैं तो उस में से ख़ूबसूरत और बड़ी बेहतरीं मौसिक़ी आवाज़ निकलती है और उसकी जड़ में से तीन चश्में निकलते हैं ﴿عيناً فيها تسمى سلسبيلا﴾ एक चश्मा सलसबील है और एक चश्मा मुईन है ﴿وكاس من معين. لا يصدعون عنها ولا ينزفون﴾ और एक चश्मा रहीक़ है ﴿يسقون من رحيق مختوم ختامه مسك وفي ذالك فليتنافس المتنافسون﴾ एक चश्मा मुईन, एक रहीक़ और एक सलसबील और ये चश्में ऐसे अजीब हैं अगर इन चश्मों के पानी का एक क़तरा उंगली पर लगा कर आसमाने दुनिया से नीचे कर दिया जाऐ तो इस एक क़तरे से सारा आलम मोअत्तर हो जाएगा तो जो जाम पर जाम चढ़ाएगा जो चश्मों पर बैठ कर पिएगा उसकी लज़्ज़त को कौन पहचान सकता है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम कहने लगे या अल्लाह वह पानी मुझे भी पिला दे, रिवायत इब्ने कसीर में है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ ईसा वह पानी हराम है सब नबियों पर जब तक पहले मेरा नबी उम्मी उसको पी न ले। यह है दौड़ का मैदान, अरे मुसलमान तो इधर की दौड़ में लगा हुआ है कहाँ दरहम, दीनार की दौड़ लगा बैठा। अल्लाह की क़सम इतनी मुहब्बत करने वाला रसूल बद्दुआ दे रहा है हांलाकि आप बद्दुआ नहीं देते थे लेकिन बद्दुआ देते हैं कि या अल्लाह जो पैसे के पीछे भागे, जो माल के पीछे भागे, जो कपड़े के पीछे भागे अल्लाह उसे हलाक फ़रमा दे। इतना शफ़ीक़ नबी लेकिन माल के पीछे दौड़ने वाले के लिए हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हाथ उठा कर बद्दुआ की है माल के पीछे मत दौड़ो बल्कि मुक़द्दर का तीर

पीछे दौड़ेगा तुम अल्लाह और रसूल को राज़ी करो

जन्नत के हसीन मनाज़िरः

उस दिन तू देखेगा कि जन्नत की चाबी हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ में है, दरवाज़ा बन्द है। अब सारे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जाएंगे कि जनाब अब आप दरवाज़ा खुलवाइए, जन्नत अल्लाह का मेहमान ख़ाना है अल्लाह अपने नबी से शुरूआत करवाएंगे, दरवाज़ा खोला जाएगा, दरवाज़ा खुलेगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दरवाज़ा खटखटाएंगे। जन्नत का दारोग़ा पूछेगा कौन है और उन से पहले जन्नत के दरवाज़ों पर कंगन लगे हुए है बजाएंगे उसमें से मौसिक़ी की आवाज़ निकलेगी। सारी जन्नत में फैलती चली जाएगी। यह घन्टी है, घन्टी यह जन्नत की घन्टी होगी जो जन्नत की सारी हूरों को पता चल जाएगी कि हमारे ख़ाविन्द आ गए वे ख़ुशी से पागल हो कर उठेंगी और ख़ादिम से कहेंगी दरवाज़ा खोलो। अन्दर के दरवाज़ा खुले बाहर का दरवाज़ा बन्द। हुज़ूरे सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ला रहे हैं दरवाज़ा खुलवाने के लिए और इससे पहले कहेंगे कि इस चश्में का पानी पी लो। पानी पिएंगे तो अन्दर की गन्दगी ख़त्म।

एक भंगी का वाक़ियाः

एक भंगी जब इतर वाले की दुकान से गुज़रा तो बेहोश हो कर गिर पड़ा। अब सारे इकठ्ठे हो गए कहने लगे कि क्या हुआ बेहोश हो गया, कोई कहता है कि केवड़ा लाओ, कोई कह रहा है गुलाब का अर्क़ लाओ, कोई कहता है ख़मीरा खिलाओ। इसी

रास्ते से एक और भंगी गुज़रा उसने देखा कि यह तो मेरी बिरादरी का है उसने कहा अल्लाह के बन्दों तुम्हें क्या ख़बर है पीछे हटो, वहाँ से थोड़ी सी गन्दगी उठा के लाया उसकी नाक को जो लगाई उसने सूंघी तो होश में आ कर बैठ गया। आज सारे मुसलमानों का यह हाल है जन्नत के नग़में भूल गया, क़ुरआन के नग़मे को भूल गया, अपने आपको दुनिया की गन्दगी में डुबो दिया। आज यह मुसलमान मौसिक़ी की धुन पर सिर हिला रहा है, अरे तेरा सिर कभी क़ुरआन पर हिला करता था और कभी तेरे आंसू क़ुरआन सुनने पर निकला करते थे लेकिन आज तुझे शैतान ने बर्बाद कर दिया। जब तू यहाँ अपने आपको हराम से नहीं बचा सकता, अल्लाह तुझे जन्नत के नग़मे कहाँ से सुनाएगा, जब तू यहाँ अपनी आँख को बेहयाई से नहीं बचाएगा अल्लाह तुझे अपनी ज़ात आली का दीदार कैसे कराएगा।

जन्नत की औरतों का गीतः

जन्नत से एक नग़मा निकलेगा और जन्नत की औरतें बीवियां वे दरवाज़े पर इस्तिक़बाल के लिए खड़ी हुई हैं और मिलकर एक गीत गाएंगी जिसका तर्जमा हैः

1- हम हमेशा ज़िन्दा कभी मौत नहीं।

2- हमेशा जवानी अब बुढ़ापा नहीं।

3- हमेशा सेहत अब बीमारी नहीं।

4- हमेशा मिलाप अब कभी जुदाई नहीं।

5- और हमेशा की सुलह अब कभी जुदाई नहीं।

जन्नत की हूरों की ख़ुसूसियतः

और उनको सीनों से लगाएंगी। जानों तुम्हें किन हाथों से गले लगाएंगी यह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसें बता रही हैं तुम्हें ख़बर नहीं तुम्हें किन हाथों से गले लगांएगी अगर उसकी उंगली के सामने एक पूरा सूरज आ जाए तो ऐसे गुरूब हो जाए जैसे सूरज के सामने सितारे ग़ुरूब हो जाते हैं अगर जन्नत की औरत समन्दर में थूक डाले तो वह शहद से ज़्यादा मीठे हो जाएं।

और ऊपर के दर्जे की जो जन्नतुल फ़िरदौस है उसकी हूरों का हुस्न व जमाल और है। ऊपर का और है नीचे का और है। एक आदमी खोखा लगाता है एक आदमी दुकान बनाता है, एक आदमी फैक्टरी बनाता है, एक कारख़ाना बनाता है, हर एक का नफ़ा अलग है। ऐसे ही जन्नत की दौड़ है, एक अपने नमाज़ रोज़े की जन्नत है, यह सबसे छोटी जन्नत, एक इससे बड़ी जन्नत है, एक अपना रोज़ा नमाज़ करो और साथ साथ दो तीन अपने पड़ौस वालों को भी कह दो। यह थोड़ी से उससे बड़ी जन्नत, एक और है।

जन्नतुल फ़िरदौस किसकी मुन्तज़िर है?

मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जन्नत जन्नतुल फ़िरदौस कि जो सारी दुनिया में कलिमा फैलाने का ग़म खाएगा, सारी दुनिया में दीन फैलाने की नियत करेगा, अल्लाह तआला कह रहा है मैं तुझे उस जन्नत में ले जाऊँगा जिसको मैंने अपने हाथ से बनाया है। जन्नतुल फ़िरदोस को अल्लाह तआला ने अपने हाथ

से बनाया है, नहरें चलायीं दरख़्त लगाए, यह तूबा का दरख़्त इसी में है। तूबा का दरख़्त जन्नतुल फ़िरदौस से नीचे नहीं है।

जन्नतुल फ़िरदौस की ख़ुसूसियतः

जो नीचे जन्नत हैं उसके महल्लाह सोने चाँदी के हैं और जो जन्नतुल फ़िरदौस है उसके महल्लात भी सोने चाँदी के हैं लेकिन ख़ास मुक़ाम इस फ़िरदौस में है जो पूरी जन्नत में नहीं है। एक ईंट सफ़ेद मोती की, एक ईंट सुर्ख़ याक़ूत की, तीसरी ईंट सब्ज़ ज़मुर्रद की, गारा कस्तूरी, इस पर मोती जड़े हुए हैं और घास ज़ाफ़रान की और अल्लाह का अर्श छत है। कहाँ भाग गया मुसलमान गारे मिट्टी के मकानों पर सारी ताक़त लगा दी। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम क्यों नहीं बड़े बड़े नक़्शे खड़े किए? अल्लाह के अर्श वाले महल नज़र आ रहे थे अर्शे रब्बी छत, यह फ़िरदौस के महल हैं।

जन्नत की बेइन्तेही हसीन हूर का तज़किराः

और उसकी एक हूर जिसका नाम ﴿لاعبـــــه﴾ है अल्लाह ने उनको चार चीज़ों से पैदा किया है मुश्क, ज़ाफ़रान, अंबर, काफ़ूर इसमें आबेहयात डाला (दुनिया में कोई आबे हयात नहीं यह ऐसे ही ग़लत रिवायत है) वह जन्नत में है ﴿ماء الحيوة﴾ आबे हयात डाल कर कहा खड़ी हो जा और वह खड़ी हुई उसका हुस्न व जमाल ऐसा है कि अगर कोई उसके हुस्न को देख लेता तो मर जाता ऐसा जमाल कि देख कर मर जाता मगर मौत अब ख़त्म हो चुकी है और तो और जन्नत की हूरें इस पर आशिक़ हैं यह मैं अपनी तरफ़ से नहीं बता रहा हूँ बल्कि हदीस के अलफ़ाज़

बता रहा हूँ, उसके हुस्न व जमाल की वजह से सारी जन्नत की हूरें उस पर आशिक़ हैं और उससे क्या कहती हैं उस के कन्धें पर हाथ मारती हैं ऐ लाएबा अगर तेरे हुस्न व जमाल का लोगों को पता चल जाए तो तुझे हासिल करने के लिए सब कुछ लुटा दें। उसकी गर्दन पर लिखा है एक रिवायत, दूसरी रिवायत उसकी आँखों के दर्मियान लिखा हुआ है जो यह चाहता है मुझे हासिल करे तो वह मेरे रब को राज़ी करके आए, मेरे रब के हुक्म को पूरा करके आए।

रज़ाए इलाही का नुस्ख़ाः

और मेरे भाईयों! रब की रज़ा कहाँ है? मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह, रब की रज़ा कहाँ है? ﴿قل ان كن تحبون الله فاتبعونى يحببكم الله﴾ मैं आपको फ़र्क़ बताता ख़लील का और हबीब का लेकिन मैंने वक़्त बहुत ले लिया है। इब्ने कसीर रह० की क़ब्र को अल्लाह ठंडा कर दे और जन्नत का बाग़ बना दे उसने जो इसे बयान किया है कि ख़लील किसे कहते हैं और हबीब किसे कहते हैं। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ख़लील थे और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हबीब थे तो मेरे रब को राज़ी करके आ जाए और रब की रज़ा कहाँ छुपी हुई है? दुकानों में नहीं, मकानों में नहीं, बीवी में नहीं, बच्चों में नहीं, हुकूमत में नहीं, सदारत में नहीं, वज़ारत में नहीं, अरे मुसलमान अल्लाह के वास्ते सब पर ठोकर मार दे मगर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े को ठोकर मत मार वरना हलाकत ही हलाकत है और यह बात तक़रीर से क़ाबू में नहीं आएगी यह निकल कर सीखनी पड़ेगी। हम निकलने की दावत क्यों दे रहे

हैं, क्यों आख़िर में कहते हैं निकलो यह बात निकले बग़ैर क़ाबू में नहीं आ सकती निकलना पड़ेगा। अल्लाह तआला दुनिया की मीरास मुफ़्त में दे देता है लेकिन सिफ़ात मुफ़्त में नहीं देता, सिफ़ात मेहनत से मिलती हैं।

जन्नत के महल का तज़किराः

अब महल में दाख़िल हुआ अन्दर गया सब्ज़ चट्टानों के रास्ते बन हुए हैं, सफ़ेद मोती के चट्टानों के रास्ते, सोने की चट्टानों के रास्ते, चाँदी की चट्टानों के रास्ते बने हुए हैं और उनके साथ चलता हुआ महल में आएगा। महल कितना ऊँचा फ़र्श से ले कर छत एक लाख हाथ ऊँचा होगा। एक बहुत बड़े तख़्त पर आएगा जिसका नाम अरीक़ा है। अरीक़ा उस तख़्त को कहते हैं जिसके चारों तरफ़ कोनों पर लकड़ियां खड़ी करके और ऊपर से छत तक उसे ख़ूबसूरत मुज़ैयन किया जाए। उसे अरीक़ा कहते हैं। इस अरीक़ा पर सत्तर मसेहरियां होंगी। हर जन्नत की औरत पर सत्तर जोड़े होंगे, हर जोड़े का रंग अलग अलग होगा, हर जन्नत की औरत पर सत्तर क़िस्म की ख़ुशबुएं होंगी और सत्तर जोड़ों में से उसका जिस्म उसे चमकता हुआ नज़र आएगा, ऐसी हुस्न व जमाल वाली उनमें पेशाब नहीं, पाख़ाना नहीं, ख़ून नहीं, विलादत नहीं, उनकी बकारत नहीं टूटती, हमेशा कुंवारी हैं, कुंवारी हैं हम उमर हैं, इश्क़ की इन्तेहा, मुहब्बत की इन्तेहा, हमेशा कुंवारी रहने वाली।

जन्नत के फूलों का तज़किराः

अब आगे तख़्त पर बैठेगा देखेगे ऊपर ﴿وجنا الجنتين دان﴾

जन्नत के फल क़रीब क़रीब ऊपर का मन्ज़र तो फलों का है कि फल क़रीब क़रीब हैं हर शहद से मीठा, हर फल मक्खन से ज़्यादा नरम, दूध से ज़्यादा चमक, गुठली उसमें कोई नहीं, अंगूर का एक एक ख़ोशा इतना बड़ा कि एक को एक महीने अड़े बैठे नहीं, दाएं बाएं जाए नहीं, मुड़े नहीं और सत न पड़े, एक महीने तक उतारता रहे तो अंगूर का एक ख़ोशा ख़त्म न होगा। यह फ़रमाने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है मैं अपनी तरफ़ से नहीं कह रहा, अल्लाह के नबी ने कहा है, होगा हमारा ईमान बिलग़ैब है, हम ईमान बिलग़ैब को देखते हैं हम अक़ल नहीं देखते, ऊपर फलों की बहार, सामने परिन्दो की क़तार ﴿ولحم طير مما يشتهون﴾

जन्नत के परिन्दो का तज़किराः

परिन्दे उड़ते हुए जा रहे हैं और मज़े की बात, उड़े हुए जा रहे हैं भागते हुए आ रहे हैं और जन्नती से कह रहे हैं या वली अल्लाह मुझे खाओ, दूसरा आएगा कि नहीं इसे नहीं मुझे खाओ, तीसरा आएगा परिन्दे लड़ रहे हैं मुझे खाओ, मुझे खाओ, आपस में झगड़ा कर रहे हैं, तुम्हारे घर की मुर्ग़ी तुम्हारे हाथ नहीं आती जब ज़िब्ह करने लगो हाँ और यहाँ परिन्दे झगड़ा कर रहे हैं मुझे खाओ, मुझे खाओ। उनमें से एक परिन्दा कहता है ऐ अल्लाह के दोस्त मैंने जन्नतुल फ़िरदौस का घास खाया और तूबा दरख़्त के नीचे जो चश्मा है सलसबील है उसका पानी पिया है मेरा एक तरफ़ भुना हुआ है और एक तरफ़ शोरबे वाला है क्या करोगे खाओगे या नहीं खाओगे जिसको चाहोगे खाओगे। सामने परिन्दों की क़तार और फलों की बहार नीचे नहरों की अनहार, दूध की नहरें, शराब की नहरें, शहद की नहरें, पानी की नहरें,

कैसी? मिट्टी से नहीं एक किनारा याक़ूत एक किनारा मोती, ज़मीन के नीचे कस्तूरी याक़ूत और मोती, कस्तूरी उसका गारा और वे नहरें जो चलती हैं तो आप के महलों से आ कर टकराएगी।

जन्नत के महल्लातः

मकान बनाओ सादा और जन्नत का बंगला चुन लो, जन्नत के किनारे पर अल्लाह तआला ने महल्लात के अलावा बंगले बनाए हैं जो साठ मील लम्बा और चौड़ा है, साठ मील लम्बा और चौड़ा एक मोती का। जन्नत के अन्दर महल्लात की हूरें अलग जब सैर करते कराते, फिरते फिराते नहरों के किनारे आएगा और जी चाहेगा थोड़ी देर बैठूं लेकिन थकावट की वजह से नहीं वैसे ही जब बैठना चाहेगा तो सामने बंगला आ जाएगा। उसका दरवाज़ा ही कोई नहीं। जब जाएगा तो उसी वक़्त दरवाज़ा बनेगा और खुलेगा जब अन्दर में जाएगा नूर देखेगा कि ﴿حور مقصورات فی الخیام﴾ कि वहाँ जन्नत की बीवियां बैठी हुई हैं अल्लाह तआला कहेंगे देख ले मैंने कहा था ﴿لم یطمثهن انس قبلهم ولا جان﴾ कि किसी इन्सान और जिन्न ने उनको न देखा और न छुआ देख ले ये बन्द थीं, इसके अन्दर मैंने तेरे लिए दरवाज़ा खोला, अब यह तेरी ही है। साठ मील के एक मोती के बंगले अल्लाह तआला ने बना दिए हैं।

जन्नत की नहरें:

जन्नतुल फ़िरदौस में एक नहर और है जिसका नाम रयान है जिस पर एक मरजान का शहर है जिसके सत्तर हज़ार दरवाज़े

सोने चाँदी के हैं और वह शहर हाफ़िज़ क़ुरआन को दिया जाएगा। लोग कहते हैं कि मुल्ला बनाएंगे तो हमारे बेटे को क्या मिलेगा और ताजिर बनेगा तो क्या कुछ कमाएगा और भाई अगर नबी का क़ुरआन सीने में लेगा तो इतना बड़ा महल मिलेगा।

जन्नत में एक नहर और है जो जन्नतुल फ़िरदौस से चलते चलते आख़िरी जन्नत तक आ जाती है उसके किनारे पर जन्नत की ख़ूबसूरत लड़कियां खड़ी हैं जिनके हाथों में जन्नत के साज़ हैं और वे कोई काम नहीं करतीं सिर्फ़ जन्नत वालों के लिए नग़मे गाती रहती हैं, मद्हम आवाज़ में मौसिक़ी जन्नत में चलती रहती है। यहाँ हराम से बच जाओ वहाँ तुझे अल्लाह ऐसा सुनाएगा जो कभी सुनी ही नहीं होगी। नहरों के जाल उसकी चाबी किसके पास है? मुंहम्मदर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

दावत व तबलीग़ वाला काम मुसलमानों को ही करना हैः

मेरे भाईयों और दोस्तों! इस मेहनत को दुनिया में वजूद लाने के लिए मुसलमान ही को खड़ा होना है, हम और कहाँ से लाएं? आप यूं कहते हैं तिजारतों से फ़ारिग़ नहीं हैं, वज़ारतों से फ़ारिग़ नहीं, सदारतों से फ़ारिग़ नहीं तो एक दिन आपको फ़ारिग़ कर दिया जाएगा। एक वक़्त आने वाला है आपको फ़ारिग़ कर दिया जाएगा, वह वक़्त अल्लाह के यहाँ लिखा जा चुका है ﴿ان اجل الله اذا جاء لا يؤخر﴾ जब वह आएगी तो मौख़्ख़र नहीं हो सकती सिवाए नबी के और सिवाए हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिबराईल अलैहिस्सलाम और आप सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम से इजाज़त मांगी या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला फ़रमा रहें हैं इजाज़त हो तो ले चलूं नहीं तो आप और ज़िन्दा रहना चाहें तो रह लें और किसी को कोई इजाज़त नहीं है वह तो आएगा और गर्दन पकड़ कर ले जाएगा, न सदारत रहेगी, न वज़ारत रहेगी, न यह मुल्क रहेगा, न यह दौलत रहेगी, न यह माल रहेगा, रहेगा तो बस एक अल्लाह का नाम रहेगा ﴿كل من عليها فان. ويبقى وجه ربك ذو الجلال والاكرام﴾ इस सारे आलम को हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों पर लाना है और ख़ुद भी उस पर आना है और सारी इन्सानियत को हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़ों पर लाना है।

उम्मत को इस काम के लिए निकलना होगाः

मेरे भाईयों! इसको हम कह रहे हैं तबलीग़ में निकल कर जान लगाओ माल लगाओ और इसको सीखो और उम्मत को जोड़ो आज उम्मत टूट रही है आपस में मुहब्बत फैले जान व माल की क़ुर्बानी देकर जब ये फिरेंगे तो अल्लाह पाक हिदायत के नक़्शे सारे आलम में फैलाएगा। इस पर हमारे दोस्तों आजिज़ाना दरख़्वास्त है आज हमारा आख़िरी दिन है कल हमारी वापसी है। ऐसी मुहब्बत करने वाले हम ने कहीं देखे न हम ने कहीं सुने, ऐसे ध्यान से सुनने वाले हम ने कहीं भी नहीं देखे इतना अरसा गुज़र गया सोलह सत्रह साल से फिर रहे हैं लेकिन मेरे भाईयों जिस मुहब्बत से आप लोगों ने सुना और जिस मुहब्बत से आप नाम देते हैं ऐसा मजमा कहीं नहीं देखा एक तो यह दरख़्वास्त है कि सब भाई आख़िर तक बैठे रहें यह मजलिसें

फिर होंगी या नहीं और दोबारा फिर मिलना अल्लाह के इल्म में है फिर होगा या नहीं होगा तो इस लिए दुआ तक सारे बैठे रहो और अल्लाह के रास्ते में निकलने के लिए नक़द नाम दो कि हम नबुव्वत वाली ज़िन्दगी को और जन्नत वाली ज़िन्दगी को लेने के लिए नक़द तैयार हैं।